Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Mukta Nov-Dec 1982 G.K.U.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
110688
Acc RF 931
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

433
16-3-85

32 9/2
21/5/86
9 Am 21.5.86

4531
29.5.86

39
14/3/92

ASP/ECIL/8249

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

110688
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
(3)

इसिटीवी हमारा लक्ष्य

Half-Monthly.

श्रेष्ठता

Semi-Monthly
110688
पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी
110687

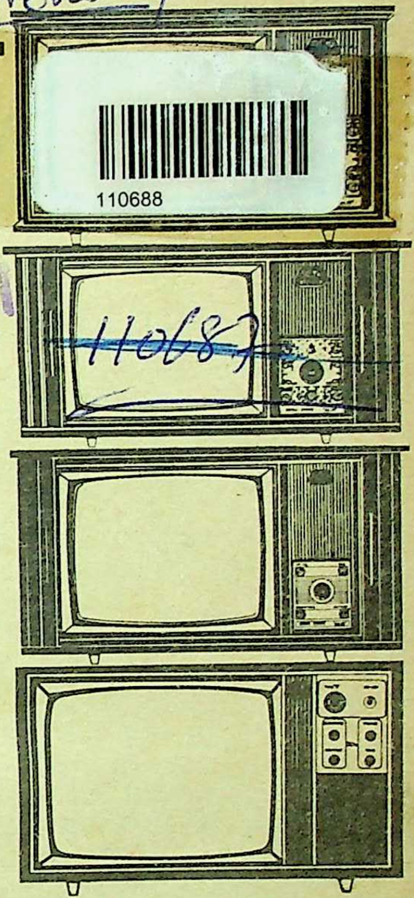

हमारा लक्ष्य था और आज भी है–श्रेष्ठता ECtv के हर एक टी वी में उत्तमता प्रदान करना । 'रिसर्च और डेवलपमेन्ट विंग' के निरंतर प्रयास और 'क्वालिटी कन्ट्रोल' के कड़े परिक्षण की बदौलत आज ECtv, टी वी टेक्नोलोजी के क्षेत्र में एक विश्वसनीय नाम है ।

उत्कृष्ट कार्यकारिता : बिना किसी नुक्स के चलनेवाला आपका मनोरंजन का साधन । इसकी स्पष्ट आवाज़ और साफ चित्रों का प्रसारण, ECtv की बेजोड़ टेक्नोलोजी का प्रमाण हैं ।

सर्विस: ECtv के सर्विस केन्द्र सारे देश में फैले हुए हैं । यह ही नहीं ECtv फैक्टरी में प्रशिक्षित सर्विस इंजीनियर ही आपके टी वी की सर्विस करेंगे, आपके घर में या सर्विस केन्द्र में । ECtv सर्विस विश्वसनीय और जल्द

विशेषताएँ : • ऑल सालिड स्टेट • मल्टी चैनल • डयूएल-कोन हाई-फाई स्पीकर • अधिक एम-टी वी-एफ।

ECtv इका EC
इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
हैदराबाद–५०० ७६२

ASP/ECIL/8249

21
15-12-82
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने सरदर्द के लिए
मैंने क्या-क्या नहीं किया,
पर बात बनी सिर्फ़ इस एक से !

सेरिडॉन
ट्रेडमार्क 'रोश'

शक्तिशाली. सुरक्षित.
सिर्फ़ एक काफ़ी है.

Saridon

HTB-RPL-7797

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

संपादक व प्रकाशक विश्वनाथ

दिसंबर (द्वितीय) 1982

अंक : 393

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

लेख

महिलाओं को सैन्य...	18	विवेक सक्सेना
इंटरफेरोन से कैंसर...	30	रणबीर सिंह
ग्रैंड कैन्यन	38	अजय सिन्हा
हीरों का व्यापार	44	आरती भार्गव
समस्या और ही है दहेज	51	शीतल सहगल
आर्थिक मामलों...	63	सिंधु गोयल
पश्चिमी यूरोप में...	70	हवासिंह हुड्डा
बाड़ौली के मंदिर	78	प्रभातकुमार
विनोद मेहरा	83	सुरभि
कल के सितारे आज...	86	नवरूप छाबड़ा
यौन विशेषज्ञ...	116	केवल धीर
गांधी	138	प्रतिनिधि

कथा साहित्य

निराली वधू	24	चंद्रशेखर दुबे
शोधकार्य	58	प्रदीप कौर
पेशे की पवित्रता	74	विश्वनाथ
युद्ध भूमि	99	महेंद्र अधिकारी
लौटते कदम	130	दिलीप जैन

कविताएं

सदियों से रोता आया	35	प्रदीप वर्मा
जोबन उकसे देह से	98	पूरम सरमा

स्तंभ

संपादक के नाम	7	96	सावधान
मुक्त विचार	14	110	दुनिया भर की
शाबाश	50	115	दास्ताने दफ्तर
ये शिक्षक	67	125	धूपछांव
ये लड़के लड़कियां	85	126	युवा गतिविधियां
मैं क्या करूं	92	144	चित्रावली

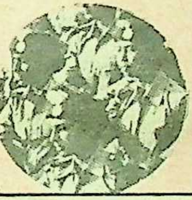

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55. दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स.प.प्रा.लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मुक्ता नाम रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है. मुक्ता में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. द्वारा सुरक्षित हैं. © **दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. 1982**

मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपए. एक वर्ष : 72.00 रुपए. विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 अमरीका में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 400.00 रुपए. यूरोप में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 325.00 रुपए. **मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान** : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. **व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग** : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001. **बंबई कार्यालय** : 79ए, मित्तल चैंबर्स, नारीमन पाइंट, बंबई-400021. **मद्रास कार्यालय** : अपार्टमेंट नंबर 342, छठी मंजिल, 31/2 ए पैंथल रोड, खलील शिराजी एस्टेट, मद्रास-600008.

मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी किताबें, मेरी बिल्ली मेरा मरफ़ी

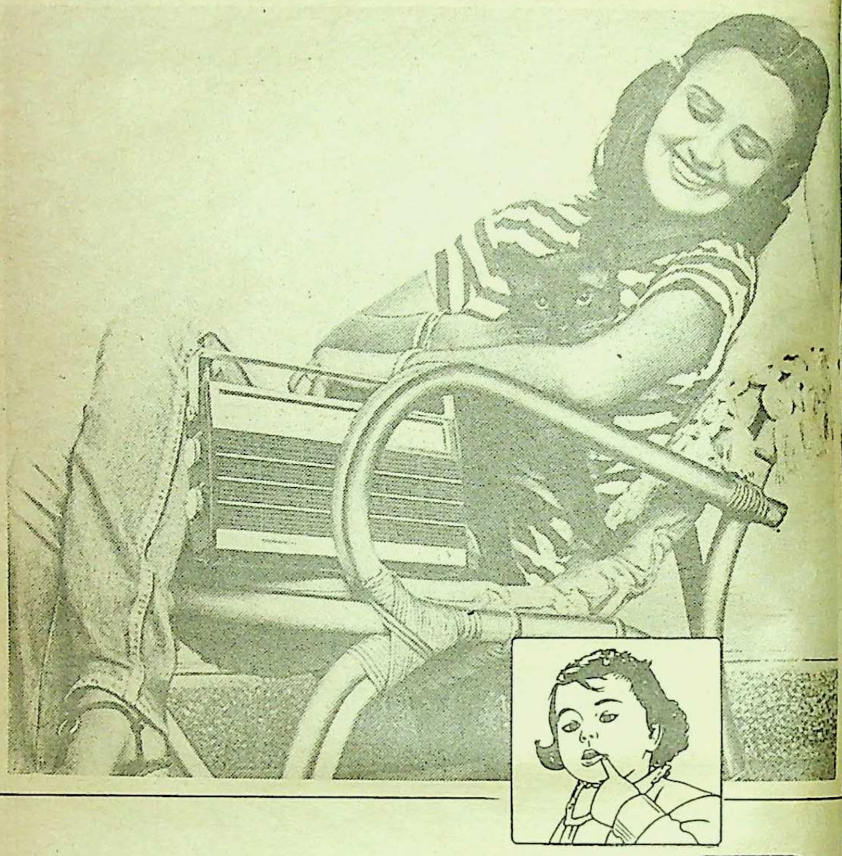

मरफ़ी

आपका सुरीला साथी

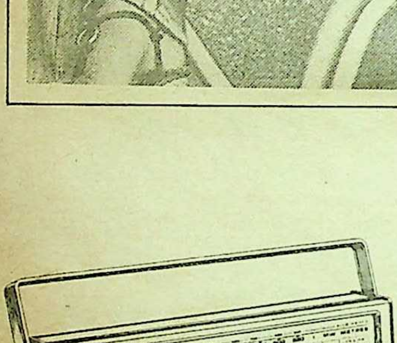

मरफ़ी मोनार्क डीलक्स

...२ बैण्ड का लाजवाब ट्रांज़िस्टर !
भारतीय ट्रांज़िस्टरों के सबसे बड़े समूह में से मेरी अपनी पसंद का सेट ।
मेरा मोनार्क...मेरा मरफ़ी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम

बीमार उद्योगों के संबंध में आप के विचारों (मुक्त विचार/नवंबर/द्वितीय) से मैं पूर्णतया सहमत हूं.

इस समय अधिकांश सरकारी उद्योग घाटे में चल रहे हैं. तिस पर भी देश की गरीब जनता से कर ले कर उन में लाभांश दिए जा रहे हैं. इन संस्थानों में अनुशासन व परिश्रम का स्थान अनियमितता और भ्रष्टाचार ने ले लिया है. हर छोटेबड़े उद्यमों में ट्रेड यूनियनों के घुस आने से कारखाने अब राजनीति के दलदल बन गए हैं. अब यदि कोई मजदूर दिन भर फैक्टरी में ताश खेलता रहे तो भी संबंधित अफसर उसे डांट नहीं सकता, क्योंकि अगर उस मजदूर ने ट्रेड यूनियन को शिकायत कर दी तो उस अफसर को काफी मुसीबत का सामना करना पड़ सकता है. मजदूरों को बस यही चिंता लगी रहती है कि किस तरह हड़ताल व धरना दे कर अधिक से अधिक वेतन व सुविधाएं प्राप्त की जाएं.

बंबई की कपड़ा मिलों की हड़ताल टूटने का नाम नहीं ले रही है. इसलिए मिल मालिकों ने नए मजदूरों की भरती शुरू कर दी है और हड़ताली मजदूरों को चेतावनी दे दी है कि यदि वे काम पर नहीं लौटेंगे तो उन्हें बरखास्त कर दिया जाएगा. यह बिलकुल सही कदम है.

माना कि अपनी मांगें मनवाने के लिए हड़ताल करना मजदूरों का अधिकार है, लेकिन इस समय इस अधिकार का सर्वत्र दुरुपयोग ही किया जा रहा है. इन हड़तालों से न कोई समस्या सुलझती है और न ही किसी को फायदा होता है. उलटे करोड़ों का उत्पादन रुक जाता है. मजदूर भूखे रहते हैं. सरकार को राजस्व की भारी हानि उठानी पड़ती है और स्वयं उन उद्योगों की हालत पंगु हो जाती है जो आगे चल कर देश के लिए सिरदर्द बने रहते हैं.

भारत के करोड़ों लोग बेरोजगार हैं. इसलिए तत्काल ही कोई ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए, जिस से जहां हड़ताल हो वहां के सभी कर्मचारी बरखास्त कर दिए जाएं ताकि बेरोज़गारी की बाढ़ उतरे और दूसरे मजदूर कभी हड़ताल करने की जुर्रत न कर सकें.

—दिवाकर भुईंया

*

'पहले मार फिर मरहम' (मुक्त विचार/नवंबर/द्वितीय) टिप्पणी बेहद तथ्यपूर्ण व रोचक लगी. किंतु आप एक सत्य कहने से चूक गए. जनता पर महंगाई की मार उस समय भी पड़ती है जब राजनीतिबाज अपना इलाज कराने विदेश जाते हैं. आज एक चपरासी को तो नौकरी प्राप्त करने के लिए डाक्टरी प्रमाणपत्र चाहिए, लेकिन देश के राजनीतिबाजों के लिए गुण, स्वास्थ्य और

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग,
मुक्ता,
ई-3, रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

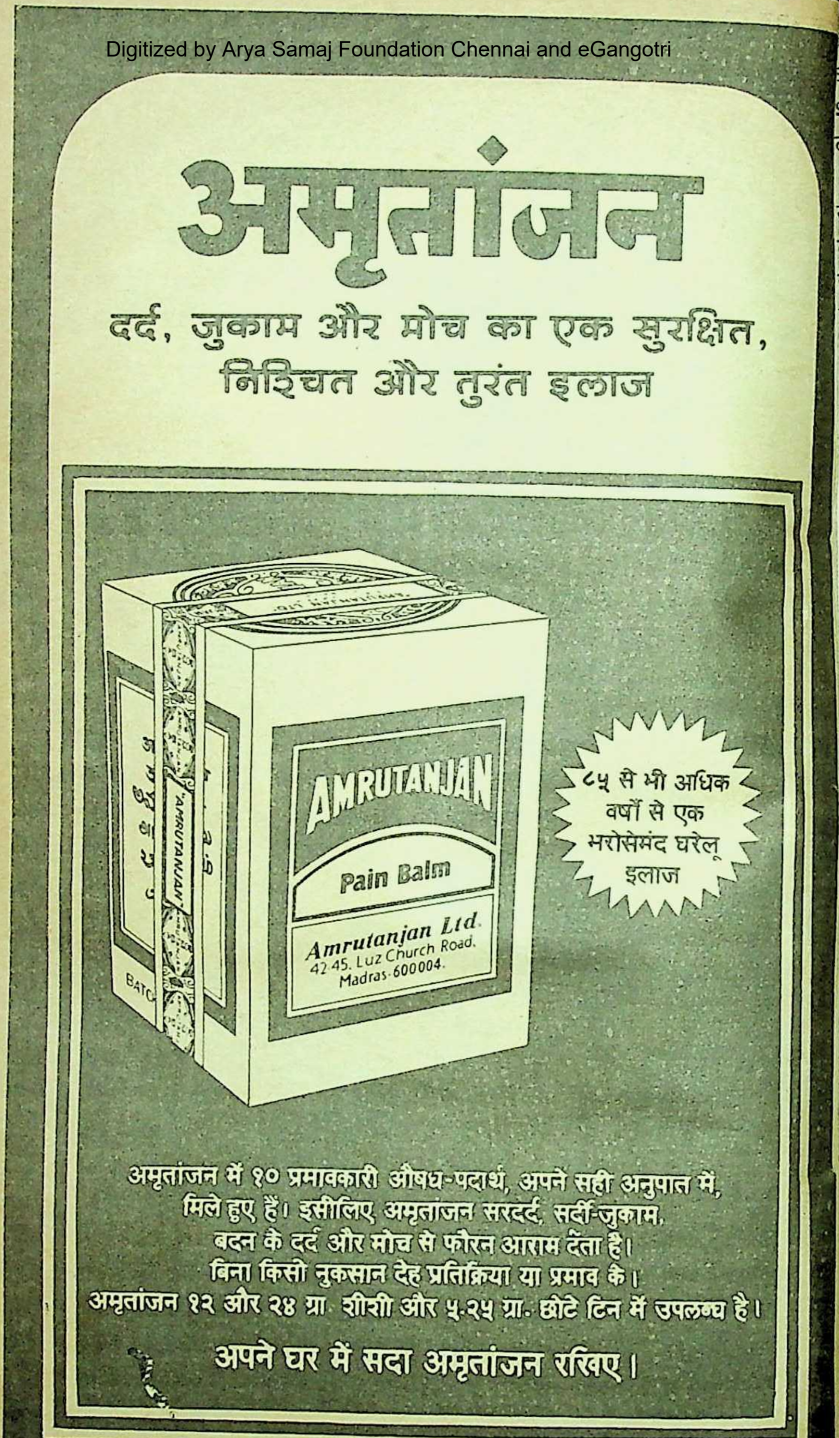

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बौद्धिक स्तर का कोई मापदंड नहीं है. यह कैसा पक्षपात है? प्रशासन के डर से जनता अपना शोषण मूक हो कर देखती रहती है.

'हाय, मार डाला' टिप्पणी में आप ने सही लिखा है. आत्महत्या करने का कारण कुछ भी हो, लेकिन नजरिया एक है और वह है दहेज. इस 'दहेज' शब्द को सुनतेसुनते कान पक गए हैं. **—सुधा गोयल**

*

अकालियों के संबंध में आप के निर्भीक विचार (मुक्त विचार/नवंबर/द्वितीय) स्वागत योग्य हैं. अलग देश की मांग स्वीकारने का तो कोई प्रश्न ही नहीं है. प्रश्न तो यह है कि इस तरह की मांग रखने वालों के साथ कैसा सलूक किया जाए. आज अगर सरकार नरम पड़ती है तो कल स्वतंत्र तमिलनाडु या बंगालिस्तान की मांग को क्या वह रोक पाएगी? जरूरत है कि सरकार देश की अखंडता के लिए प्रयास करे. इस सिलसिले में गैर अकाली सिखों ने इस बेबुनियाद मांग को गलत करार देते हुए अन्य सिखों को सही दिशा दी है, जो प्रशंसनीय और राष्ट्रहित में है. **—कुमार पवन**

*

अकालियों के संबंध में आप का यह कहना कि सिख नेताओं की मांगों का यह ही मतलब है— अलग राष्ट्र, देश का विभाजन. इस से मैं सहमत नहीं हूं.

—राजेंद्रसिंह नारंग

*

अकालियों के बारे में इतनी अच्छी पत्रिका में इतने संकीर्ण विचारों को पढ़ कर मैं हतप्रभ रह गया. लगता है आप का सामान्य ज्ञान और खासकर पंजाब के बारे में ज्ञान न के बराबर है.

आप ने जो भी लिखा है ठीक नहीं है. भारत में सिखों के साथ नौकरियों में ही नहीं, हर जगह द्वितीय श्रेणी के नागरिकों जैसा व्यवहार होता है. यह मेरा निजी तजरबा है. रही बात गुरुद्वारों और लाउड स्पीकरों की, तो इस में देवी के जागरण करने वाले सब से आगे हैं जो न सोते हैं, न सोने देते हैं.

अकालियों ने कभी भी भारत से अलग होने की बात नहीं कही. पता नहीं आप को कैसे पता चल गया. मैं तो कहूंगा कि हिंदू अखबार ही हिंदू राष्ट्र के सपने देखते हैं. आम हिंदू यह समझता है कि दिल्ली में उन का ही राज्य है. **—डा. ब.प. सिंह**

*

अकालियों से संबंधित आप के विचारों से मैं सहमत नहीं हूं. अकालियों की कई मांगें

मुक्ता

स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने रोचक अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजने के लिए अलगअलग लिफाफा प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है. एक ही लिफाफे में एक से अधिक स्तंभों में प्रकाशन योग्य सामग्री भेजी जा सकती है.

सामग्री भेजते समय स्पष्ट अथवा सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. साथ ही यह भी लिख कर भेजें कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है. भेजी हुई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में और रोचकतापूर्ण होनी चाहिए.

सभी स्तंभों के लिए सामग्री एक ही लिफाफे में रख कर इस पते पर भेजें: संपादन विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलात्कार, हत्या, डकैती, तस्करी, जालसाजी, वेश्यावृत्ति, की कहानियां –

क्या आप का सही मानसिक विकास करती हैं?

क्या आप का सही मनोरंजन करती हैं?

क्या आप को सही राह दिखाती हैं?

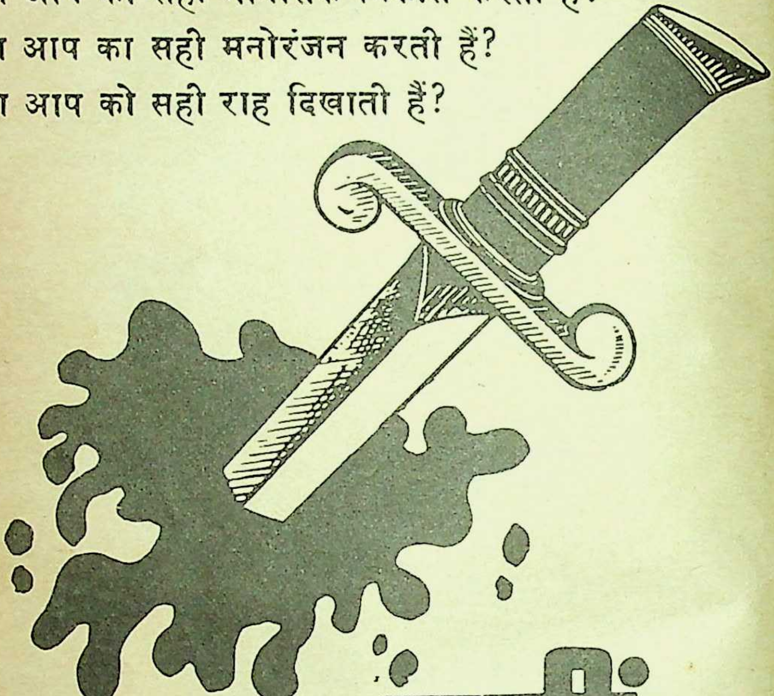

नहीं...

वे सिर्फ क्षणिक रोमांच देती हैं...

गलत दुनिया में भटकाती हैं...

चरित्रहीनता की ओर ले जाती हैं...

सुरुचिपूर्ण, स्वस्थ मनोरंजन के लिए प्रेरक और उद्देश्यपूर्ण साहित्य पढ़ें.

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं
ज्योति नए युग की घरघर जगाएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ऐसी हैं कि जिन्हें आधारहीन नहीं कहा जा सकता. लेकिन इस [illegible] नहीं डाला जा सकता था कि स्वायत्तता संबंधी आनंदपुर साहिब प्रस्ताव को, जो 1973 में पारित किया गया था, अकालियों ने 1977 में भी क्रियान्वित कराने का कोई प्रयास नहीं किया.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकाली वार्ता समिति के एक सदस्य के अनुसार श्रीमती इंदिरा गांधी ने पंजाब को चंडीगढ़ देने के बारे में पहले अपनी 'हां' कर दी थी, किंतु बाद में वह बदल गईं.

—नरेंद्रसिंह नारंग

*

हिंदी फिल्मों की खलनायिकाओं से संबंधित लेख (नवंबर/द्वितीय) में लेखिका ने अधूरी जानकारी दी है. जैसे कुछ पुरानी खलनायिकाएं कुलदीप कौर, कुक्कू, श्यामा, ललिता पवार तथा नई खलनायिकाओं में लक्ष्मी छाया, अरुणा ईरानी, अर्पणा चौधरी, लीना दास इत्यादि को नजरअंदाज कर दिया गया है.

इस के अलावा वैजयंतीमाला (देवता) के अलावा वहीदा रहमान (सी.आई.डी.), राखी (धुआं तथा शरमीली), विद्या सिन्हा (जोश) नंदा (इत्तफाक) तथा हेमा मालिनी ने (लाल पत्थर तथा सुनहरा संसार) में कुछ हद तक खलनायिका का रोल किया है.

—सुखरामसिंह तोमर 'आनंद'

*

भारत और भूटान से संबंधित लेख (नवंबर/प्रथम) में एक स्थान पर लिखा है—''क्या भूटान को पूर्ण रूप से (विदेश नीति और प्रतिरक्षा के मामले में) नेपाल और बंगला देश की तरह मुक्त कर दिया जाए?''

मुक्ता के लेखक

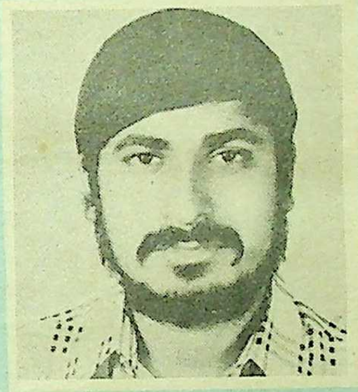

प्रदीप वर्मा 'सोना'

इस अंक में प्रकाशित कविता 'सदियों से रोता आया' के रचयिता प्रदीप वर्मा 'सोना' विदिशा (मध्य प्रदेश) में अधिवक्ता हैं. कविताओं के अलावा आप राजनीतिक व आर्थिक विषयों पर लेख भी लिखते हैं. लेखन के साथसाथ भ्रमण में भी आप की दिलचस्पी है.

प्रभात कुमार सिंघल

इस अंक में प्रकाशित लेख 'बाड़ौली के मंदिर' के लेखक प्रभातकुमार सिंघल सूचना केंद्र कोटा (राजस्थान) में सहायक जनसंपर्क अधिकारी हैं. आप विशेष रूप से ऐतिहासिक विषयों को अपने लेखन का आधार बनाते हैं. पुरातत्व में आप की विशेष रुचि है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस को पढ़ते ही मुझे हंसी आ गई. शायद लेखक को इस मामले में कम ही जानकारी है क्योंकि नेपाल को कभी किसी ने विदेश और प्रतिरक्षा के मामले में मुक्त नहीं किया, बल्कि यह देश शुरू से ही इस विषय में स्वतंत्र, स्पष्ट और अलग विचार रखता है.

दूसरी ओर लिखा था– "चीनी अजदहे का कूटनीतिक और (अगर युद्ध हो तो) सामरिक परिस्थितियों में मुकाबला करने के लिए हमें नेपाल और बंगला देश के साथ भूटान से सहयोग मिलना अत्यावश्यक है." इस विषय में भारत का आशावादी होना बेकार है. **–प्रदीप सिंह**

*

एशियाई खेल विशेषांक (नवंबर/प्रथम) में एशियाई खेलों से परिचय कराया गया है. उन में एथलेटिक्स के मुकाबलों की कुल संख्या 52 बताई गई है, जब कि पुरुष व महिला दोनों वर्गों में कुल मिला कर 40 मुकाबले होने थे– 24 पुरुष वर्ग में व 16 महिला वर्ग में. इन्हीं खेलों के अंतर्गत आगे बताया गया है कि 20 किलोमीटर की तेज चाल चौथे वर्ग की एकमात्र स्पर्धा है. परंतु इस वर्ग में 50 किलोमीटर की तेज चाल के रूप में एक और स्पर्धा थी. सम्मिलित खेलों में भी महिलाओं की स्पर्धा पेंटेथलोन (पांच खेल) ही बताई है जब कि पिछले वर्ष टोकियो की चौथी एशियाई एंड फील्ड प्रतियोगिता से महिलाओं के लिए पेंटेथलोन के स्थान पर हेंटाथलोन (सप्तखेल) नामक नई स्पर्धा शुरू हुई है जिस में महिला प्रतियोगियों को पहले दिन 100 मीटर की दौड़, गोला फेंक, ऊंची कूद और 200 मीटर के रूप में चार स्पर्धाएं व दूसरे दिन लंबी कूद, भाला फेंक और 800 मीटर की दौड़ करनी पड़ती है. इन सातों प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली खिलाड़ी चैंपियन बनती है.

–विनयकृष्ण वार्ष्णेय

*

देश में भ्रष्टाचार का यदि कोई सब से बड़ा अड्डा हो सकता है तो निस्संदेह वह भारतीय खाद्य निगम ही है. अनाज की खरीद और वितरण से भी अधिक क्षमता वह भ्रष्टाचार और अवैध कमाई के क्षेत्र में प्राप्त कर चुका है. संसद के पिछले बजट सत्र में खाद्य निगम की इस भूमिका के प्रति स्वयं कृषि मंत्री सहित लोकसभाध्यक्ष ने गहरी चिंता व्यक्त की थी.

भ्रष्टाचार के इन अड्डों से ऐसा लगता है कि खाद्य निगम के गोदामों और अनाज व्यापारियों की तिजोरियों में एक दिन जनता की खाद्यान्न संबंधी सारी जरूरतें ही बंद हो कर रह जाएंगी. क्या इस स्थिति को सुधारा नहीं जा सकता? **–किशोर**

*

धार्मिकता राष्ट्र के माथे पर कलंक, धनजन की होलिका, परस्पर विद्वेष की जीतीजागती तसवीर, राष्ट्र की सुखशांति, व्यवस्था व एकता की शत्रु है.

भारत में विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं, लेकिन इन विभिन्न धर्मावलंबियों के बीच भी विभिन्न वर्ग हैं जो परस्पर लड़ते रहते हैं. जैसे मुसलमानों में शिया और सुन्नी. लेकिन इस के मूल में कौन सा कारण है? अगर सही रूप से कहा जाए तो इस सामाजिक समस्या का मूल कारण है– राजनीति. राजनीति में भी सत्तारूढ़ नेता ही इन धार्मिक झगड़ों को अपने हित के लिए उभारते हैं. इसी प्रकार हिंदू मुसलिम झगड़े के कारण अंगरेज दो सौ वर्षों तक इस देश पर राज्य कर गए. इतना ही नहीं, जातेजाते देश का विभाजन भी कर गए.

कांग्रेस की नीति प्रारंभ से ही मुसलिमपरस्ती की रही है, जिस का ज्वलंत उदाहरण है लाखों हिंदुओं को धार्मिक झगड़ों में मौत के घाट उतार देने पर भी कांग्रेस का उफ तक न करना. गणेशशंकर विद्यार्थी तथा स्वामी श्रद्धानंद कांग्रेस की मुसलिमपरस्ती की नीति पर ही शहीद हुए.

जनसंघ के नेता के रूप में अटलबिहारी वाजपेयी इजराइल को मान्यता देने के पक्ष में रहे, किंतु जनता पार्टी के शासन में जब वह विदेश मंत्री के पद पर नियुक्त हुए तो अरबों के प्रबल समर्थक बन गए. यह राजनीति का ही चमत्कार है. **–वीरेंद्र राव** ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब लीजिये आर्निका फूलों के लाजवाब गुणों से भरा भारत का पहला शैम्पू

इमामी शैम्पू

आर्निका—विश्व विख्यात भेषज सत्व जो बालों के पोर-पोर में समा कर रक्त का संचार करता है—और स्वस्थ एवं सघन बालों का राज भी यही है।

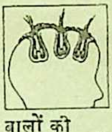
बालों की क्षतिग्रस्त जड़ें

आप बहुत से शैम्पू आज़मा चुके हैं—प्रोटीन कंडिशनर, शिकाकाई, ऐन्टी डैन्ड्रफ और दूसरे अनेक तथाकथित "नैचॅरल" भी। फिर भी आपके बालों में वैसी सघनता तथा चमक नहीं आई। आपके बालों का असमय पकना और झड़ना रुक नहीं पाया।

अधिकांश शैम्पू सिर्फ बालों को धोकर साफ कर देते हैं। किन्तु, बालों की जड़ों में रक्त का संचार नहीं बढ़ा पाते।

आर्निका सत्व बालों की जड़ों में रक्त का संचार बढ़ाता है

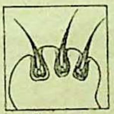
आर्निका की मदद से फिर से होने लगता है स्वस्थ, सतेज और कान्तिमान बालों का विकास

अब आर्निका फूलों के अनोखे सत्व से भरा इमामी शैम्पू सीधे बालों की जड़ों में पहुँच कर रक्त का संचार बढ़ाता है। आपका सपना पूरा होता है-आपके बालों में आ जाती है तरुणाई और कान्ति।

इमामी शैम्पू बालों की सफाई के लिये देता है भरपूर झाग एवं इसकी भीनी-भीनी मोहक सुगन्ध घंटों दिलो-दिमाग पर छायी रहती है।

अब १६० मि०ली० इकॉनोमी पैक में उपलब्ध।

adcircle/kc/9-82

इमामी शैम्पू – बालों की खूबसूरती का नया अन्दाज

यही तो है आर्निका के गुणों का असली राज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्त विचार

हाकी: हारे तो क्या हुआ?

एशियाई खेलों में हाकी में भारत को [पा]किस्तान ने बुरी तरह से रौंदा है. एक गोल [के] मुकाबले सात गोल कर के उस ने भारत को [सा]फसाफ बता दिया है कि मास्को ओलंपिक [में] पश्चिमी गुट के देशों के न होने के कारण [य]दि वह स्वर्ण पदक पा गया तो क्या हुआ, [हा]की में उस का स्थान छठासातवां ही है.

खेलों में हाकी भारत की प्रतिष्ठा का [प्र]श्न बनी हुई है. कई दशकों से भारत केवल [इ]सी खेल में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करता [र]हा है. अब यह भी सपना बन कर रह गया है.

इस के लिए कौन जिम्मेदार है, कौन [न]हीं, यह लंबी बहस का विषय है. यह बहस [ह]र हार के बाद दोहराई जाती है और थोड़े [स]मय बाद भुला भी दी जाती है. इतनी फुरसत [कि]से है कि वक्तबेवक्त इन बातों में [मा]थापच्ची करे.

हाकी के नाम पर राजनीति से समय [मि]ले तो बात है. अधिकतर शक्ति और समय [तो] हाकी महासंघ के पदों पर बने रहने के लिए [ही] खर्च कर दिया जाता है. अधिकारी हो या [प्र]शिक्षक, खिलाड़ी हो या मंत्री, सब सरकार [से] पैसा पाने और विदेश जाने की उधेड़बुन में [ल]गे रहते हैं. खेल की ओर ध्यान देने का समय [भ]ी किस के पास है?

लेकिन इस में आश्चर्य की बात नहीं है. [ह]मारे सरकारी संस्थानों में उत्पादन के स्थान [प]र यही होता है. प्रशासन में बजाए जनता के हित के लिए काम करने के एकदूसरे की टांग खींचने पर जोर रहता है. सर्वोच्च पदों पर भी यही होता है. इंदिराजी बजाए जनता की तकलीफों को दूर करने का प्रयत्न करने के अपना अधिकतर समय सत्ता में बने रहने की उधेड़बुन में ही लगाती हैं.

फिर हाकी ने ऐसा क्या बिगाड़ा है कि उस के अधिकारी तन मन धन से खेल के प्रति निष्ठावान हों? हाकी में रजत पदक तो पा ही लिया है. 35 सालों के राज के बाद कांग्रेस देश को संसार के सब से गरीब देशों में नीचे से तीसरेचौथे नंबर पर ला कर भी तो आराम से राज कर ही रही है.

रोजगार के लिए पूरा देश एक

गोआ में हाल ही में कन्नड़ (कर्नाटक राज्य के) लोगों को ले कर भारी उपद्रव हुए थे, क्योंकि गोआ के पुराने पुर्तगाली संस्कृति से प्रभावित लोग नहीं चाहते थे कि बाहरी व्यक्ति वहां आ कर बसें. इसी प्रकार पहले बंबई में गुजरातियों को और उड़ीसा में मारवाड़ियों को भगाने के लिए उपद्रव व दंगे होते रहे हैं.

इस बारे में श्रीमती इंदिरा गांधी का यह स्पष्ट कथन कि भारत में किसी भी भारतीय को कहीं भी रह कर रोजीरोटी कमाने का पूरा अधिकार है, सराहनीय है. एक बड़ा देश होने का देशवासियों को सब से अधिक लाभ यही है कि अपने मन मुताबिक काम पाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अवसर उन्हें ज्यादा विस्तृत क्षेत्र में मिल जाते हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब के सिख सारे देश में टैक्सी व ट्रक चलाते हैं. बहुत सारे शहरों में व्यापार राजस्थान के मारवाड़ियों के हाथ में है. उत्तर भारत में लाखों टाइपिस्ट क्लर्क केरल से आए हुए हैं. पंजाब में मजदूर बिहार ही उपलब्ध करा रहा है.

जिस की जैसी क्षमता होती है, इतना बड़ा देश होने के कारण उसे वैसी नौकरी कहीं न कहीं मिल ही जाती है. अब यदि कुछ लोग भाषा, प्रदेश या जाति के नाम पर इस आबादी के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने पर नियंत्रण लगाना चाहेंगे तो इस का सब से बड़ा नुकसान उन्हीं के साथियों को होगा, क्योंकि दूसरे लोग उन्हें अपने राज्य में नहीं आने देंगे.

यदि गोआनी कन्नड़ लोगों को गोआ में नहीं बसने देंगे तो कर्नाटक में या अन्य कहीं भी बसने का उन का अधिकार कहां रहेगा? आज बंबई में जो इतने सारे गोआ वाले काम कर रहे हैं उन का क्या होगा?

इसलिए जरूरी है कि जहां भी इस प्रकार के विवाद हों, उन्हें बुरी तरह कुचल दिया जाए.

विदेशी नीति में संतुलन

श्रीमती इंदिरा गांधी इस वर्ष संसार की सभी बड़ी शक्तियों के प्रमुखों से थोड़ेथोड़े अंतराल के बाद मिली हैं. पहले उन्होंने अमरीका की यात्रा की, फिर रूस के तत्कालीन राष्ट्रपति ब्रेजनेव से मिलीं. लंदन में भारत महोत्सव के दौरान वह इंगलैंड की प्रधान मंत्री मार्गरेट थेचर से मिलीं. श्री ब्रेजनेव की मृत्यु पर वह पुन: मास्को गईं और रूस के नए सर्वोच्च नेता श्री आंद्रोपोव से मिलीं और अब फ्रांस के पिछले वर्ष चुने गए राष्ट्रपति मितरा और मिस्र के राष्ट्रपति मुबारक दिल्ली आए.

इन मुलाकातों से और कोई लाभ हो या नहीं, यह अवश्य लग रहा है कि भारत अब पहले जैसा रूसी पिट्ठू नहीं रहा है. काफ[ी] समय तक इंदिराजी रूस की हर बात में हां [में] हां मिलाती रही हैं और अमरीका की हर नीति को गलत ठहराती रही हैं. इसी कार[ण] अमरीका और अन्य पश्चिमी देश भारत [को] रूसी गुट का अनौपचारिक सदस्य ही मान[ते] थे.

अफगानिस्तान के मामले में रूस [का] मूक समर्थन कर के हम ने रूस के तो वहां पां[व] जमने दिए और अपने लिए मुसीबत मोल [ले] ली. अफगानिस्तान पर रूसी कब्जा हो जा[ने] पर अमरीका ने पाकिस्तान को भा[री] आधुनिक हथियार देने शुरू कर दिए औ[र] बदले में भारत को अपने लिए उसी स्तर [के] हथियार खरीदने के लिए भटकना पड़ा.

अब लग रहा है कि इंदिराजी रूस [से] विमुख होती जा रही हैं. पिछली ब्रेजनेवइंदि[रा] वार्ता में समझा जाता है कि इंदिराजी ने रू[स] को अफगानिस्तान से हट जाने का अनुरो[ध] किया था. इसी का यह परिणाम था [कि] पाकिस्तान के राष्ट्रपति जिया उल ह[क] अफगानिस्तान की तरफ से कुछ कम चिंति[त] नजर आ रहे थे और अमरीका से मिलने वा[ले] एफ-16 विमानों को प्राप्त करने में को[ई] जल्दबाजी नहीं मचा रहे हैं.

श्री जिया उल हक न केवल एक रोज [के] लिए भारत रुके, उन्होंने तो यहां तक क[ह] दिया कि अगर भारत मिराज या कोई औ[र] विमान खरीदता है तो पाकिस्तान को उस [से] भय नहीं है.

रूस और अमरीका महाशक्तियों [के] बीच अपना स्वतंत्र स्थान बनाए रखने [की] फ्रांस ने सदा ही कोशिश की है. उत्त[र] एटलांटिक संधि संगठन (नाटो) का सदस्[य] होते हुए भी फ्रांस जनरल दिगाल के समय [से] ही रूस के विरोध का मतलब अमरीकी पिट्[ठू] होना नहीं मानता.

भारत को भी कुछ ऐसी ही नीति अपनानी चाहिए और इसी लिए श्री मितर[ा] की भारत यात्रा महत्त्वपूर्ण है. यदि भारत रू[स] के चंगुल से निकल सके तो हमारी बहुत सी समस्याएं कम हो जाएंगी, क्योंकि फि[र]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ाकिस्तान का अमरीका पर निर्भर रहना रूरी नहीं रहेगा.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशी मुद्रा से गेहूं

भारत सरकार गेहूं के दाम न बढ़ने देने लिए अमरीका से 15 लाख टन गेहूं और रीद रही है. इसी साल लगभग 25 लाख टन हूं पहले भी खरीदा जा चुका है. सरकार को र है कि कहीं सूखे या अतिवृष्टि से गेहूं की पज कम हो गई तो गेहूं के दाम बढ़ जाएंगे ौर उस की प्रतिक्रियास्वरूप सभी चीजों के म बढ़ते चले जाएंगे.

विदेशी गेहूं भारत के लिए कोई नई त नहीं है, क्योंकि पहले भी अमरीका से न में आया करोड़ों टन गेहूं भारत ने खाया . देश में किसी चीज की कमी हो तो उस ो बाहर से मंगाने में वैसे तो कोई हर्ज नहीं गता, पर गेहूं के आयात से कई और परिणाम सामने आते हैं. सब से बड़ा परिणाम यह है कि आयातित गेहूं के कारण ारतीय किसान के उगाए गेहूं का दाम कम हता है. यद्यपि अमरीकन गेहूं देसी गेहूं से ागत में महंगा होता है पर सरकार उसे सस्ते म पर बेचती है ताकि बाजार भाव न बढ़े.

सातवें दशक में जब गेहूं की पैदावार हुत कम थी, तब यदि अमरीकी गेहूं न होता गांवों में गेहूं के अतिरिक्त मूल्य के कारण तना पैसा आ जाता कि वे तभी कृषि की थति को सुधार लेते. लेकिन यह तब संभव आ जब अमरीका ने मुफ्त गेहूं देना ही बंद र दिया.

लगभग ऐसी ही स्थिति अब है. ाजकल भारत सरकार के पास विदेशी मुद्रा छ ज्यादा ही है, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा ोष ने उसे 5,000 करोड़ रुपए की रकम धार दी है. बजाए उस रकम को पूंजी समझ र ऐसे स्थान पर लगाने के जहां से आगे ाभ हो, हमारे नीति निर्धारक रोजमर्रा की जें खरीद कर इस रकम को बेकार कर रहे

जब कपड़ा, चीनी या अन्य औद्योगिक वस्तुओं की कमी होती है और दाम बढ़ते हैं तो कौन सा कहर मच जाता है? उस से ही तो उद्योगपतियों को उन क्षेत्रों में नएनए कारखाने लगाने की प्रेरणा मिलती है. यदि कमी होते ही उन वस्तुओं का आयात कर लिया जाए तो कौन नया उद्योग लगाने की मुसीबत मोल लेगा?

यही कृषि का हाल है. यदि किसान को चार पैसे ज्यादा मिलेंगे तो वह अधिक पैदावार के लिए और मेहनत करेगा. जब उसे लगेगा कि दाम उतने ही मिलने हैं तो वह अतिरिक्त उत्पादन के लिए अधिक मगजपच्ची क्यों करेगा?

हमारे गांवों में पैसे की इतनी कमी है कि वहां पूंजी निवेश न के बराबर हो रहा है. किसान न अपने खेत को सुधारने में पैसा लगा पाता है, न जीवन स्तर को सुधारने में.जब तक लगातार चारपांच वर्ष उसे खासा अतिरिक्त पैसा नहीं मिलता रहेगा, गांवों की स्थिति नहीं सुधर सकती. आयातित गेहूं इस दिशा में सब से बड़ी रुकावट है.

एशियाई हां, ओलंपिक न

भारत सरकार ने आशा से कहीं अधिक कुशल ढंग से एशियाई खेलों का आयोजन किया है. न केवल दिल्ली शहर इन दिनों साफसुथरा, चमकदार रहा, खेलों के स्टेडियम भी सुव्यवस्थित रहे और खेल सुचारू रूप से चले. यद्यपि इस में विदेशी पर्यटक बहुत कम संख्या में आए, पर जो विदेशी खिलाड़ी व अधिकारी आए, उन में से किसी को भी लंबीचौड़ी शिकायत नहीं हुई.

इस सफलता से प्रभावित हो कर अब सरकार ओलंपिक खेलों के आयोजन के बारे में सोचने लगी है. ओलंपिक खेल हर चार वर्ष में एक बार होने वाला संसार का सब से बड़ा खेल मेला है और वर्षों पहले खिलाड़ी, मेहमान और मेजबान इस की तैयारियां करते हैं. अब 1984 में ये अमरीका के लास एंजेलेस शहर में होंगे और 1988 में दक्षिण कोरिया की राजधानी सियोल में. भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनेता व खिलाड़ी अधिकारी 1992 में इन खेलों को भारत में [illegible] कर रहे हैं. इस में संदेह नहीं कि ओलंपिक खेलों को आयोजित करने वाले देश की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ जाती है. यदि भारत इन्हें कर लेता है तो संसार के लोग शायद भारत को भूखेनंगों का गंदा, बदबूदार देश मानना छोड़ दें. यह भी हो सकता है कि पिछले ओलंपिक में मात्र एक–आध पदक पाने वाले हमारे खिलाड़ी 10-12 छोटेबड़े पदक ले जाएं.

ओलंपिक खेलों से हमें प्रबंध कला की भी कुछ अकल आ सकती है और कमप्यूटर आदि की नई से नई तकनीक भी भारत को आसानी से मिल जाएगी.

फिर भी इतने लाभों के बावजूद क्या यह ठीक रहेगा कि हमारे शासक वर्षों तक देश की गरीबी को दूर करने की योजनाओं के स्थान पर 15 दिन के तमाशे के लिए स्टेडियमों के डिजाइनों को तय करने में समय लगाएं, योजनाओं का प्रारूप समय न होने के कारण अधूरा रहे और आधुनिक स्कोर बोर्डों की खरीद के मामले ही देखे जाते रहें? उधर लाखों फाइलें दफ्तरों में सड़ती रहें और इधर नेता लोग खिलाड़ियों को पानी पिलाने के प्रबंध को सुधारने के आदेश देते रहें?

एशियाई खेलों का आयोजन इसलिए सफल रहा है क्योंकि श्रीमती इंदिरा गांधी और उन के पुत्र राजीव गांधी ने सैकड़ों घंटे इस तमाशे के प्रबंध पर लगाए हैं.

नहरों, मकानों को मिलने वाला सीमेंट स्टेडियमों में लगाया गया. विदेशी मुद्रा से उत्पादन की मशीनों के स्थान पर बिजली के बढ़िया लट्टू खरीदे गए.

वैसे एशियाई खेलों में हमारी थोड़ी जिम्मेदारी भी है. हमारा देश एशिया का दूसरा सब से बड़ा देश है. कुल वार्षिक आय की दृष्टि से हमारा देश एशिया में तीसरे नंबर पर है. हर एशियाई खेल में हमारा बहुत बड़ा दल जाता है. जब कई बार मेहमान बने तो एक बार मेजबान भी बनना चाहिए.

किंतु ओलंपिक खेलों के प्रति हमारी ऐसी कोई जिम्मेदारी नहीं है. ये अमीर यूरोपीय व अमरीकी देशों के खेल हैं, वही [illegible].

हर देश को अपना पांव अपनी चाद[र] देख कर ही फैलाना चाहिए. चादर फटी हो त[ो] मखमल की थेगली लगा कर बड़ों की बिरादरी में आने की कोशिश नहीं करनी चाहिए वरना वही हाल होगा जो परमाणु परीक्षण करने व उपग्रह छोड़ने पर हुआ: मिलामिलाया कुछ नहीं और बेकार में अरबों की चपत लग गई.

हायहाय सरमायादार

जब मजदूर नेता किसी कंपनी या उद्योग में लंबी हड़ताल, घेराव, हिंसा या ब्लैकमेल के जरिए वेतन बढ़वा लेते हैं या अनुशासनहीनता का अधिकार पा जाते हैं तो बहुत खुश होते हैं कि शोषण करने वाले सरमायादार पर विजय पा ली. यदि सरकार और प्रशासन भी ऐसे समय मजदूरों का साथ देता है तो उसे क्रांति ही समझ लेते हैं.

1967 के बाद 10-12 साल पश्चिमी बंगाल में ऐसा ही वातावरण रहा और इसी के सहारे मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट सत्ता में आए लेकिन अब लोगों को इस का खमियाजा भुगतना पड़ रहा है. पिछले 10 सालों से पश्चिमी बंगाल में नए उद्योग ही नहीं लग रहे. इसी नवंबर में मुख्य मंत्री ज्योति बसु ने रोना रोया कि उद्योगपति अपने लाइसेंसों का पश्चिमी बंगाल में उद्योग लगाने के लिए इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं, जब कि लाइसेंस पाने के लिए उन्होंने पहले लाखों की रिश्वत दी थीं.

यही हाल अब अन्य कई जगह होने लगा है. बंबई में दत्ता सामंत जैसों के कारण महाराष्ट्र का औद्योगिक विकास रुक गया है. उत्तर प्रदेश ने दिल्ली के निकट गाजियाबाद में बड़े उत्साह से विशाल उद्योगों को जगह दी थी. लेकिन वहां भी मजदूर नेताओं की ज्यादतियों पर प्रशासन की विवशता देखते हुए हजारों उद्योग बंद पड़े हैं और लाखों गज औद्योगिक जमीन खाली पड़ी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • विवेक सक्सेना

महिलाओं को सैन्य प्रशिक्षण : कितना उपयोगी?

'**लड़कियों** के हाथों में चूड़ियां ही ज्यादा अच्छी लगती हैं, बंदूक संभालना उन के बस की बात नहीं है. ये पंक्तियां किसी व्यक्ति विशेष की कही गई नहीं हैं, बल्कि यह विचार समाज के एक बहुत बड़े वर्ग का है जो आज भी ऐसा समझता है कि महिला खुद इतनी असुरक्षित व कोमल होती है कि उस के द्वारा देश की रक्षा में अपना योगदान दे पाना तो बहुत दूर की बात है, वह खुद अपनी रक्षा कर पाने में भी असमर्थ है.

ऐसे विचार रखने वाले लोग यह भूल जाते हैं कि जब भी चूड़ियां पहनने वाली कलाइयों ने बंदूक थामी है तो ऐसा कहर ढाया है कि अच्छेअच्छों के रोंगटे खड़े हो गए, चाहे गोलियों की यह बौछार लोगों की जान बचाने के लिए की गई हो या जान लेने के लिए. फिलस्तीनी मुक्ति संगठन की एक सक्रिय छापामार सदस्या लैला खालिद ने अपनी गतिविधियों में पुरुषों को भी बहुत पीछे छोड़ दिया था.

आज समय की यह मांग है कि जब हर क्षेत्र में महिलाएं पुरुषों से कंधे से कंधा मिला कर चल रही हैं, तब उन्हें भी पुरुषों के समान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

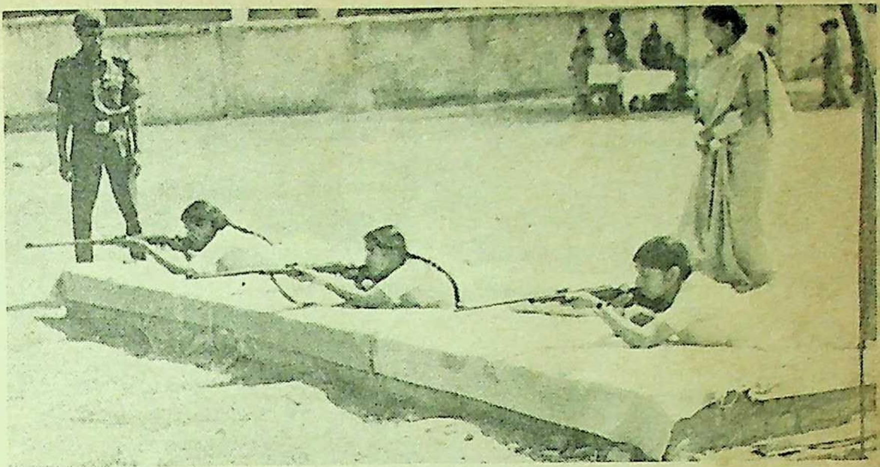

बेहतर प्रशिक्षण के लिए प्रतिदिन का अभ्यास जरूरी है.

हथियारों को चलाने का प्रशिक्षण दिया जाए, जिस से वे अपनी व राष्ट्र की सुरक्षा में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकें.

अब सब से बड़ा सवाल यह उठता है कि यदि इस बात को स्वीकार कर लिया जाए कि महिलाओं को भी मौका पड़ने पर पुरुषों के समान हथियार चलाना, अपनी व अपने देश की रक्षा कर सकना आना चाहिए तो उन्हें इस योग्य बनाने की जिम्मेदारी किस की है? यदि गहराई से देखा जाए तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जहां एक ओर गांवों में हथियारों की संख्या व इन की आवश्यकता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है, वहीं शहरों में इन के महत्त्व पर बहुत ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता.

जब गांवों में पुरुषों का जीवन इतना असुरक्षित रहता है तो महिलाओं की क्या स्थिति होती होगी, इस का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है. इस के बावजूद अभी भी

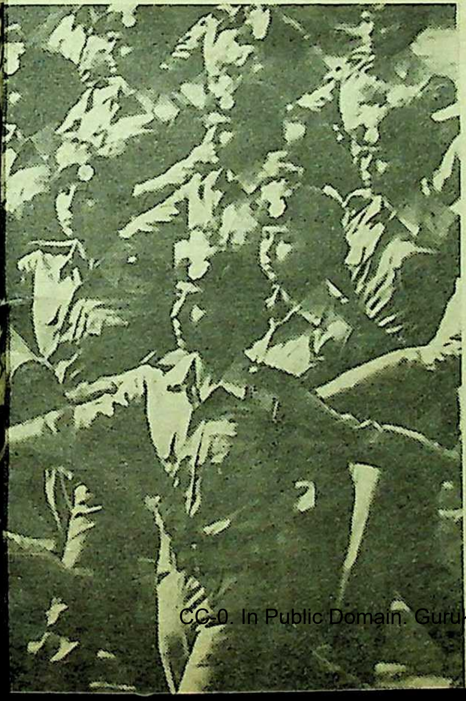

महिलाओं को दिए जाने वाला सैन्य प्रशिक्षण क्या उन के भीतर असुरक्षा की भावना को खत्म कर के नया आत्मविश्वास नहीं जगाता?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गांवों में बहुत कम परिवार ऐसे हैं, जिन में महिलाओं को बंदूक चलाने के बारे में कोई जानकारी होगी.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां तक शहरों का सवाल है, यहां महिलाओं द्वारा बंदूक चलाना महज एक शौक से बढ़ कर और कुछ नहीं. और यह शौक भी एक वर्ग विशेष तक ही सीमित हो कर रह गया है, जिसे उच्च वर्ग कह सकते हैं. शहरों में रहने वाली युवतियों या महिलाओं के लिए राइफिल या बंदूक चलाना सीखने का एक मात्र साधन राइफिल क्लब ही होते हैं, जहां निशानेबाजी का यह खेल सीख सकना हर महिला के लिए संभव नहीं होता, क्योंकि शौक के रूप में यह काफी महंगा साबित होता है.

आत्मविश्वास की जरूरत

यहां ध्यान देने योग्य एक बात यह भी है कि केवल हाथ में बंदूक पकड़ा देने या उसे चलाना सीख लेने का यह अर्थ बिलकुल नहीं कि महिला में उसे चला सकने का साहस भी है. कोई भी युवती या महिला उस का उपयोग तब तक नहीं कर सकती, जब तक उस में पूरा आत्मविश्वास पैदा न किया गया हो.

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए नेशनल कैडेट कोर (एन.सी.सी.) द्वारा एक लंबे अरसे से स्कूल व कालिजों में पढ़ने वाली छात्राओं को राइफिल चलाने का प्रशिक्षण देने, उन के अंदर आत्मविश्वास पैदा करने, उन में नेतृत्व की भावना जगाने व कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना कर सकने की योग्यता पैदा करने के उद्देश्य से उन्हें एक योजनाबद्ध प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है.

एन.सी.सी. द्वारा प्रदान किया जाने वाला यह प्रशिक्षण सही अर्थों में व्यावहारिक होता है. उदाहरण के लिए इस के अंतर्गत छात्रछात्राओं के अंदर नेतृत्व की भावना, आत्मविश्वास पैदा करने का प्रयास किया जाता है, जब वे अपने जीवन में सीखने व समझने की प्रक्रिया से गुजर रहे होते हैं. वे अपनी पढ़ाई के साथसाथ कुछ अतिरिक्त योग्यता के अलावा अपने अंदर विशिष्ट गुणों का भी विकास कर लेते हैं.

एन.सी.सी. द्वारा महिलाओं या दूसरे शब्दों में छात्राओं को उन के स्कूली जीवन से ही यह प्रशिक्षण देना प्रारंभ कर दिया जाता है, इस के लिए छात्राओं को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है, जो क्रमशः जूनियर व सीनियर वर्ग कहलाते हैं. जूनियर वर्ग में स्कूलों की छात्राओं को यह प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, जब कि सीनियर वर्ग में कालिज की छात्राओं को. जूनियर वर्ग के लिए चयन की न्यूनतम आयु 13 साल व सीनियर में 17 साल होना जरूरी है.

आम तौर पर एन.सी.सी. का प्रशिक्षण हर साल अगस्त से प्रारंभ हो जाता है व फरवरी तक चलता है. लंबी छुट्टियों के दौरान छात्राओं को शहर में या उस से दूर शिविरों में ले जाया जाता है. इन शिविरों में रहने वाली छात्राओं को सैनिक जीवन की अनुभूति होती है. इस का एक बड़ा लाभ उन्हें यह भी मिलता है कि उन के अंदर अनुशासन की भावना पैदा हो जाती है. जो किसी भी व्यक्ति समाज या राष्ट्र की प्रगति के लिए बहुत आवश्यक है.

सीनियर वर्ग की छात्राओं की साल में 120 व जूनियर वर्ग की छात्राओं की 115 कक्षाएं लगती हैं. आम तौर पर साल में सीनियर व जूनियर वर्गों की छात्राओं को क्रमशः 50 व 40 दिन प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है. नेशनल कैडेट कोर के भी सेना की तरह ही तीन अंग हैं– जल, थल व वायु. छात्राएं इन में से किसी भी अंग की क्यों न हों, उन्हें राइफिल चलाने, अपनी रक्षा कर सकने, नागरिक सुरक्षा, संकेत भेजने, नक्शों को पढ़ सकने आदि के बारे में जानकारी प्रदान की जाती है. हर विंग की अपनी अलग वरदी होती है.

छात्राओं को राइफिल चलाना सिखाना इस प्रशिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है. इस के अंतर्गत 10 कक्षाएं लगती हैं, जिन में पहले छात्राओं को राइफिल के विभिन्न हिस्सों व उस के प्रयोग के बारे में बताया जाता है. इन के बाद उन के जीवन का रोमांचकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

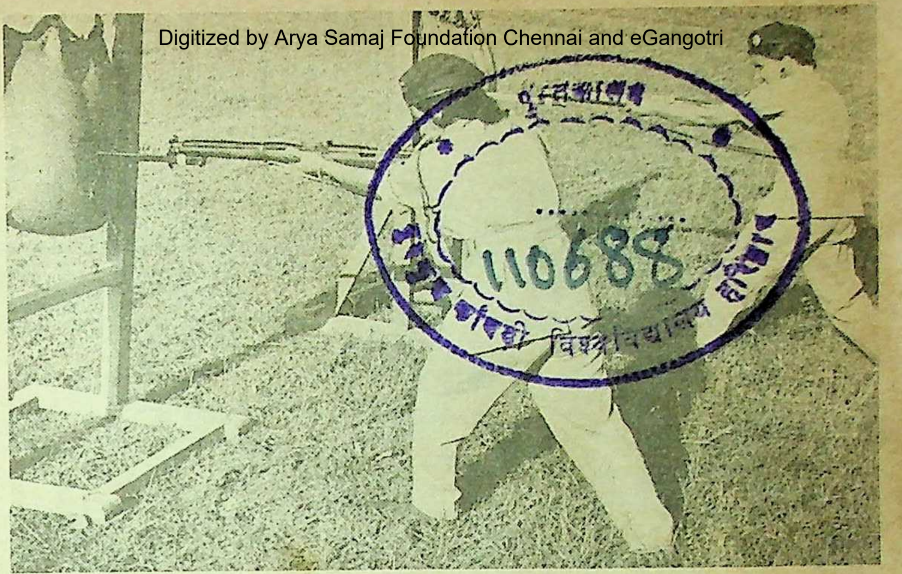

निशाने पर जमी तेज नजरें.

अनुभव शुरू होता है. तब चूड़ियां पहनने वाले नाजुक हाथ पहली बार राइफिल से गोलियों छोड़ते हैं. छात्राओं से साल में 10 चक्र गोलियां चलवाई जाती हैं अर्थात हर छात्रा 10 बार राइफिल से गोली चलाती है. इस में प्रशिक्षक इस बात का भी ध्यान रखते हैं कि प्रतिभाशाली छात्राओं को निशानेबाजी का अभ्यास करवाया जाए. इस के लिए वे उन्हें राइफिल क्लब में भी निशानेबाजी का अभ्यास करवाते हैं. सीनियर वर्ग की छात्राएं 303 की राइफिल से गोलियां चलाती हैं.

विशेष शिविरों में प्रशिक्षण

आम तौर पर साल में दो बार छुट्टियों के दौरान छात्राओं को विशेष शिविरों में ले जाया जाता है. ये शिविर शहर से दूर किसी एकांत कोने, गांव या निर्जन स्थानों पर लगाए जाते हैं. यहां उन्हें सैनिक जीवन की एक झलक मिलती है व जीवन का खट्टामीठा अनुभव प्राप्त करने का मौका मिलता है. अपने परिवार से कभी भी अलग न होने वाली लड़कियां, जब इन शिविरों में अपने घर वालों से दूर रहती हैं तो उन के मन में आत्मनिर्भरता की भावना पैदा होती है.

ये शिविर सैनिक शिविरों के समान तंबुओं में लगाए जाते हैं. इन तंबुओं के अंदर छात्राओं को ज्यादातर जमीन पर सोना पड़ता है. इन शिविरों में आने वाली छात्राओं को कड़े अनुशासन का पालन करना पड़ता है. सुबह सात बजे उन्हें दौड़ लगानी पड़ती है. जूनियर वर्ग की छात्राओं को दो व सीनियर वर्ग की छात्राओं को चार किलोमीटर दौड़ना पड़ता है. जब वे दौड़ कर लौटती हैं तो उन्हें फल व दूध दिया जाता है. कुछ समय के विश्राम के बाद उन की ड्रिल शुरू हो जाती है. सुबह 9.30 बजे उन्हें नाश्ता दिया जाता है और फिर सुबह 10 बजे से दोपहर एक बजे तक उन का प्रशिक्षण और कवायद चलती है. इस के बाद वे सामूहिक रूप से भोजन करती हैं. सैनिकों के समान ही वे भी तामचीनी की प्लेटों व मग में खाना खाती हैं.

दोपहर 2.30 बजे विभिन्न विंग की छात्राएं नौकायन, ग्लाइडिंग, विमानों के माडल आदि का प्रशिक्षण प्राप्त करती हैं व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यह प्रशिक्षण रोमांचकारी होता है' : इंद्राणी.

शाम को वे सांस्कृतिक गतिविधियों में व्यस्त हो जाती हैं. कभी सामूहिक गान होता है तो कभी लोकनृत्य प्रस्तुत किए जाते हैं. शहरों में रहने वाली छात्राओं को रात को लालटेन की रोशनी में आग जला कर तापते हुए गाना, नाचना एक अनोखी सुखद अनुभूति प्रदान करता है.

इन शिविरों के अलावा छात्राओं को पर्वतारोहण जैसे विशेष अभियानों पर भी ले जाया जाता है, जो काफी रोमांचकारी होते हैं. एन.सी.सी. के प्रतिभावान कैडेटों को विभिन्न छात्रवृत्तियां भी मिलती हैं. इस के अलावा चुने गए विशिष्ट कैडेटों को हर साल कनाडा में आयोजित होने वाले युवा शिविरों में भी भेजा जाता है. इस के लिए उन्हें कड़ी प्रतियोगिता का सामना करना पड़ता है व सामान्य ज्ञान आदि की परीक्षाएं पास करनी पड़ती हैं.

ऐसे ही एक शिविर में भाग लेने वाली सीनियर वर्ग की एक कैडेट व दिल्ली विश्वविद्यालय के कमला नेहरू कालिज की छात्रा इंद्राणी ने बताया कि यह शिविर व एन.सी.सी. का प्रशिक्षण बहुत ही रोमांचकारी होता है. यहां आ कर उन्हें अनुशासन में रह कर समस्याओं से जूझने का अवसर मिलता है. इन शिविरों में तंबुओं में सोने का एक अलग ही आनंद आता है. इंद्राणी एयर विंग की है और वह ग्लाइडिंग का प्रशिक्षण भी प्राप्त कर रही है.

इंद्राणी ने बताया कि वह भविष्य में विमान चालक बनना चाहती है. उसे इस के लिए अवसर मिल पाएगा या नहीं, यह एक अलग बात है, पर फिलहाल उसे इस बात की खुशी है कि उसे भी पुरुषों के समान ही अपनी प्रतिभा विकसित करने का अवसर मिल रहा है.

अभिभावकों का नजरिया

विभिन्न छात्राओं ने यह बात स्वीकार की कि अभी भी उन के घर वाले उन्हें इन शिविरों में जाने या राइफिल चलाना सीखने के लिए बहुत ज्यादा प्रोत्साहित नहीं करते. उन के मन में यह धारणा अभी भी बनी हुई है कि बहुत से क्षेत्र ऐसे हैं, जहां लड़कियों को प्रशिक्षण देने का कोई लाभ नहीं है.

शायद इन कैडेटों के मातापिताओं के मन में बसी इस धारणा के पीछे एक बहुत बड़ा कारण यह भी है कि इतना प्रशिक्षण प्राप्त कर लेने के बाद भी छात्राओं के लिए पुरुष कैडेटों के समान आगे के सभी मार्ग खुले नहीं होते. जहां एक ओर छात्र कैडेट एन.सी.सी. में प्राप्त हुए अपने अनुभव व योग्यता का लाभ उठा कर जल, थल या वायु सेना में प्राथमिकता प्राप्त कर सकते हैं, वहीं छात्राओं के लिए सेना में कोई स्थान नहीं है.

केवल मिलिटरी नर्सिंग सर्विस में ही उन को अपने इस अनुभव का लाभ मिल सकता है. पर इस क्षेत्र में आने वाली छात्राओं की संख्या बहुत सीमित होती है. हां, यह बात अलग है कि यदि कोई पुलिस में जाना चाहे तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घरपरिवार के बंधनों के साथसाथ आत्मविश्वास की भावना भी जरूरी है.

उसे एन.सी.सी. का प्रशिक्षण प्राप्त होने पर प्राथमिकता दी जाती है और वहां इस प्रशिक्षण का खास तौर पर राइफिल आदि चला सकने की योग्यता का सही उपयोग भी हो पाता है.

इन शिविरों की एक खासियत यह होती है कि यहां छात्राओं को बहुत कम सुविधाएं उपलब्ध होती हैं. न तो उन्हें मिलने वाला खाना बहुत अच्छे स्तर का होता है और न ही पर्याप्त. उदाहरण के लिए सुबह चार किलोमीटर की दौड़ लगाने के बाद उन्हें दो केले व एक प्याला दूध मिलता है. सुबह 9.30 बजे नाश्ते में केवल चार स्लाइस व आलू की सब्जी मिलती है व खाना दिन में दो बजे मिलता है.

हो सकता है कि ऐसा जानबूझ कर किया जाता हो, जिस से वे वास्तव में कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अनुशासनबद्ध रह कर उन से जूझने की ताकत अपने अंदर पैदा कर सकें. छात्राएं भले ही स्कूल या कालिज में पढ़ाई समाप्त करने के बाद भविष्य में बंदूक को हाथ भी न लगाती हों, पर उसे चलाना सीखने की प्रक्रिया के दौरान उन के अंदर जो साहस व आत्मविश्वास पैदा होता है, वह उन्हें जीवन के हर मोड़ पर कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करने की हिम्मत प्रदान करता है, जो अपनेआप में कोई साधारण उपलब्धि नहीं है. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

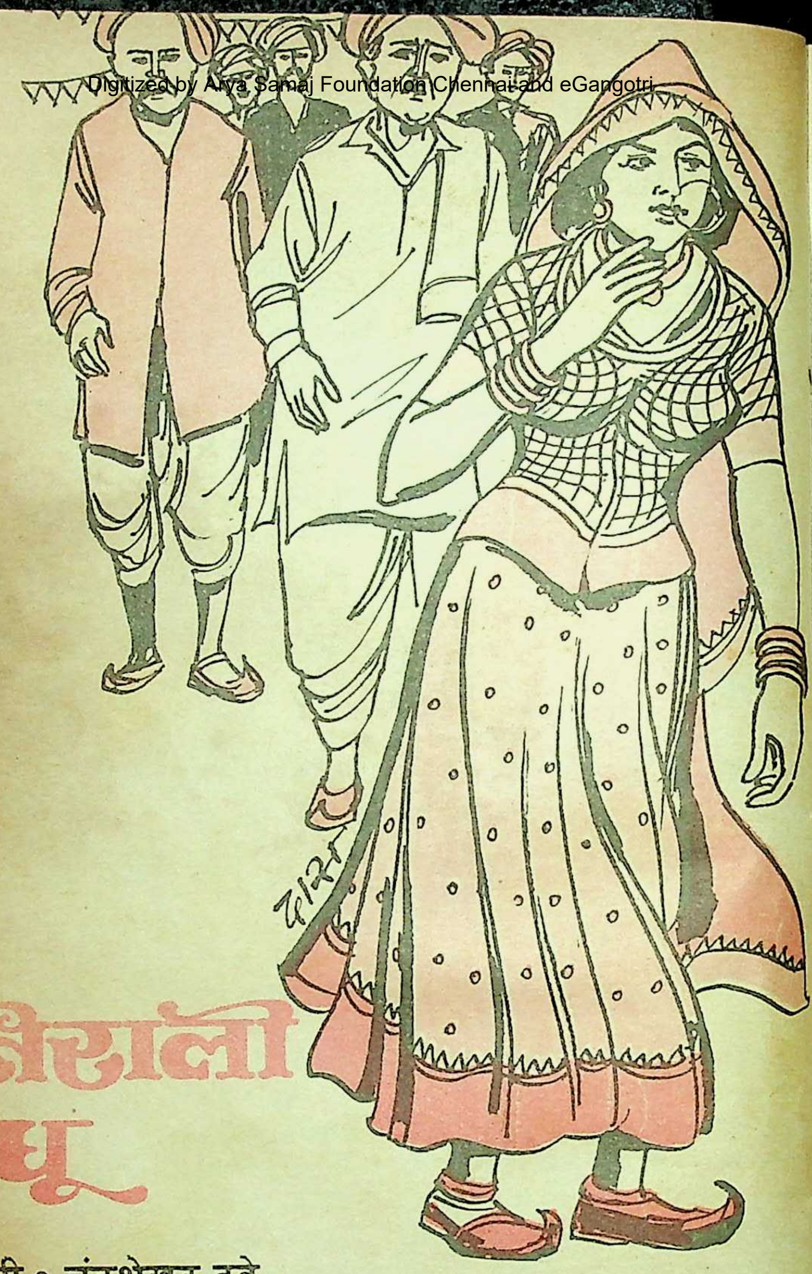

निराली वधू

कहानी • चंद्रशेखर दुबे

उन्हें जिस बात की आशंका थी, आखिर वही हुई, लक्ष्मी ने रोने से साफ इनकार कर दिया. उसे रिश्तेदारों एवं घर के सारे लोगों ने रात भर इतना समझायाबुझाया था, मगर वह सब बेकार गया. उस ने सब गुड़गोबर कर दिया. उस ने कुल की लाज, जगहंसाई, मानमर्यादा आदि किसी भी बात की परवाह नहीं की. कुछ देर बाद ही उस ने अपना मुंह उघाड़ लिया और साफ कह दिया, ''हम से नहीं रोया जाता. हम नहीं रोएंगे.''

सारी रात माथापच्ची करने के बाद तो वह जैसेतैसे रोने का नाटक करने को राजी हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

थी. बड़ीबूढ़ियों ने उसे बारबार समझाया था, ''बेटी, हम बनजा[illegible] हम लोगों में ब्याह होने के बाद दुलहन इस तरह रोती ही है. पीढ़ी दर पीढ़ी से यह रोने की परंपरा चली आ रही है. जो लड़की जितनी ज्यादा रोती है, वह उतनी ही गुणवान और चरित्रवान समझी जाती है. ऐसे मौकों पर जो लड़की कम रोती है, उस के चरित्र पर उंगली उठाई जाती है, उसे बेशर्म कहा जाता है. इसलिए तू ऐसी नादानी मत कर. रुलाई नहीं आए तो भी रुलाई का नाटक तो कर, बेटी?''

लक्ष्मी ने झुंझलाते हुए पूछा था, ''रुलाई का नाटक कैसे करूं?''

उन भुक्तभोगी महिलाओं ने उसे समझाया था, ''यह तो बहुत आसान है, बेटी. हम खुद भले ही न रोएं, पर घूंघट को रोना चाहिए. बस, इस से रुलाई का नाटक हो जाता है.''

लक्ष्मी ने आश्चर्य से पूछा था, ''घूंघट कैसे रोता है?''

बड़ीबूढ़ियों ने उस की नादानी पर हंसते हुए कहा था, ''बेटी, घूंघट के भीतर कौन देखता है कि हम हंस रहे हैं या रो रहे हैं? घूंघट के बाहर बस रुदन फूटता रहना चाहिए.''

लक्ष्मी फिर भी नहीं समझ पाई थी. उस ने बड़े भोलेपन से पूछा था, ''घूंघट के भीतर नहीं रोएंगे, तो बाहर रुदन कैसे फूटेगा?''

''मुंह से फूटेगा?''

''मुंह से?''

लक्ष्मी द्वारा लिए गए निर्णय को सुन कर सारे लोग भौंचक्के रह गए. किसी को भी उम्मीद नहीं थी कि वह वर्षों से चली आ रही परंपरा को इस तरह से ठुकरा देगी.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

''हां, मुंह से.''

''मगर मुंह से भी रुदन तभी फूटता है जब मन रोता है.''

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मी की बुद्धि पर तरस सा खाते हुए बड़ीबूढ़ियों ने उसे राज की बात बताई थी, ''पगली, मन भले ही न रोए, पर मुंह से तो फिर भी रोया जा सकता है. इसी का नाम तो रुलाई का नाटक है. घूंघट इसी तरह तो रोता है.''

घर की बड़ीबूढ़ियों ने इसी संदर्भ में तब कई रहस्य उजागर कर दिए थे. उन्होंने बतलाया था कि घंटों इसी तरह रोया जाता है. सचमुच का हृदय से फूटा रुदन तो पांचसात मिनट तक चल सकता है. चारचार, पांचपांच घंटों तक चलने वाला बनजारों का यह रुदन तो बस घूंघट के बल पर ही होता है.

लक्ष्मी की एक स्वभाव से चंचल मामी ने तो इसी बीच दूसरे टांडों (बनजारों की बस्ती) की कई बहुत रोने वाली वधुओं की सफलता के किस्से ही सुना दिए थे. रुदन के मैदान में ख्याति अर्जित करने वाली ये बनजारा वधुएं कैसे इस कामयाबी की मंजिल तक पहुंच पाई थीं, इसे उन्होंने हूबहू नकल सी कर के दिखा दिया था.

इस नकल से लक्ष्मी को खूब हंसी आई थी. बनजारा समाज में रुदन का कीर्तिमान स्थापित करने वाली इन दुलहनों का कच्चा चिट्ठा और अधिक न खोलने के लिए इन मामीजी को यदि बड़ीबूढ़ियों ने न रोका होता तो लक्ष्मी का हंसहंस कर शायद बुरा हाल हो जाता.

मामी के इस प्रस्तुतिकरण से ही लक्ष्मी अपनी बिदाई के समय रुदन का यह नाटक करने को राजी हो गई थी. इन मामी ने उसे समझाते हुए बड़ी मार्के की बात कह दी थी. उन्होंने कहा था, ''फिल्मों में काम करने वाली औरतें जिस तरह ग्लेसरीन के आंसू बहाती हैं, तुम भी इसी तरह बहा देना. यह समझना कि तुम कालिज में नाटक कर रही हो.''

लक्ष्मी ने इसी वर्ष कालिज में हुए एक नाटक में रोने का अच्छा अभिनय किया था, इसी लिए वह मामी की बात से रोने को तैयार हो गई थी.

लक्ष्मी को रोने के लिए राजी होते देख, घर भर के लोगों में खुशी की लहर सी दौड़ गई थी. उन्हें लगा था कि चलो, चार जनों में अब लाज रह जाएगी. लक्ष्मी यदि बिलकुल नहीं रोती तो नाक कट जाती. लोग तरहतरह की बातें करते. कोई कुछ कहता, कोई कुछ. किसी का मुंह तो पकड़ा नहीं जा सकता था. माना लक्ष्मी कालिज में पढ़ी है, उस का दूल्हा भी उस के जैसा ही शिक्षित है, मगर फिर भी दोनों हैं तो बनजारे ही. पढ़लिख जाने के बाद भी जाति व समाज के रीतिरिवाजों का थोड़ा-बहुत पालन तो करना ही पड़ता है. भले ही समय के अनुसार रीतिरिवाजों में कुछ परिवर्तन लाया जा सकता है, पर सारे रीतिरिवाजों को तो नहीं छोड़ा जा सकता है. अभी बनजारा समाज इतना आगे नहीं बढ़ पाया है.

विदाई के समय रोने के इस रिवाज के बाबत लक्ष्मी के घर वालों ने उस से बारबार पूछा था. उस से सवाल पर सवाल हुए थे, ''भई, इस रिवाज में क्या खराबी है? विदाई के समय तो पत्थर भी द्रवित हो जाता है. जो अपना सब कुछ छोड़ कर अजनबी लोगों में जा रही हो उस का हृदय कैसे नहीं भर आएगा?''

लक्ष्मी ने इन सवालों के जवाब में बेझिझक कहा था, ''किस ने कहा कि हृदय नहीं भर आएगा? हर बेटी की आंखें इस समय नम हो जाती हैं.''

''तो फिर तू रोने से क्यों इनकार कर रही है?''

''मैं घंटों चलने वाला रोने का यह नाटक नहीं कर सकती. स्वाभाविक रूप से जब रुलाई भीतर से फूटेगी तो रोऊंगी ही. ऐसे समय भी यह जरूरी नहीं है कि मैं जोरजोर से रोऊं. सच्चा रुदन बेआवाज भी हो सकता है.''

''तो फिर अभी तक जो लोग यूं रोते आए हैं, वे सब बेवकूफ थे क्या? तू ही अनोखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''हम से नहीं रोया जाता, हम नहीं रोएंगे,'' अचानक लक्ष्मी ने अपना घूंघट उघाड़ते हुए कहा.

अकलमंद पैदा हुई है?''

''यह मैं ने कब कहा?''

''तो फिर क्या कहा?''

''यही कहा कि अब ऐसे भौंडे रुदन की जरूरत नहीं है.''

''क्यों नहीं है?''

''बात यह है कि अब छोटी उम्र में शादी नहीं होती है और दूसरी बात यह है कि बनजारों की अब पहले जैसी परिस्थितियां भी नहीं रहीं.''

''क्या मतलब?''

''मतलब यह कि अब बनजारों के टांडे स्थायी हो गए हैं. अब बनजारे भी दूसरों की तरह खेतीबाड़ी या अन्य काम करने लगे हैं. अब सारे देश में इधर से उधर माल ढोना उन का काम नहीं रहा. वह युग अब बीत गया.''

''तो इस से क्या हुआ?''

''कुछ नहीं हुआ?''

''बता न क्या हुआ? हैं तो अभी भी हम बनजारे ही?''

''अब नाम के बनजारे रह गए हैं, इसलिए अब बेटी का पहले की तरह रोनाधोना बेमानी है.''

''क्या मतलब?''

''मतलब यह कि पहले छोटी उम्र में ब्याह होता था तो लड़की को उस उम्र में अपने पीहर से जुदा होना अखरता था. पर अब बड़ी उम्र में विवाह होने पर वह इस विछोह के लिए तैयार सी रहती है.''

''बेशर्म कहीं की.''

''तुम भले ही मुझे कुछ कहो. मैं ने तो आम बात की है. इस के अलावा दूसरी बात यह है कि बनजारों की बेटी भी अब ससुराल से पीहर चाहे जब आ सकती है.''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

''पहले नहीं आती थी क्या?''

''सोचो जरा, पहले कैसे आ पाती होगी? एक टांडा बालद (बैलों पर सामान) भर के न जाने किस दिशा में जाता था और दूसरा न जाने कौन सी दूसरी दिशा में. ऐसी हालत में ससुराल पीहर के इन टांडों का आमनासामना शायद ही कभी हो पाता था. इसी लिए एक टांडे में ब्याह कर जाने वाली लड़की फूटफूट कर घंटों रोती थी. उस का यह रुदन तब स्वाभाविक था. वह इसी लिए रोती थी कि अपने घर वालों से दुबारा भेंट होगी या नहीं.''

लक्ष्मी की इन बातों से उस के घर वाले प्रभावित हुए थे. किंतु फिर भी विदाई के समय उस से रोने की रस्म पूरी करवाने की वे जिद ठाने हुए थे. ब्याह की अन्य रस्मों के पालन में उन्होंने ऐसी जिद नहीं ठानी थी और वरवधू की रुचिअरुचि के सामने वे नम्र पड़ गए थे.

जैसेतैसे जब लक्ष्मी रोने को राजी हुई थी तो भाभी ने फौरन उस का लंबा सा घूंघट निकाल दिया था. बड़ीबूढ़ियों और नातेरिश्ते वाली सभी स्त्रियों ने लक्ष्मी के आसपास घेरा सा बना लिया था. टांडे की अन्य स्त्रियां भी इसी घेरे की बाहरी दीवार सी बनाए हुए थीं. अल्पवयस्क अविवाहित कन्याएं इन सब स्त्रियों के बीच में यहांवहां घुस कर अपनी पढ़ीलिखी दीदी का रुदन देखने को व्यग्र हो रही थीं. पुरुष भी आसपास ही खड़े थे. वर पक्ष के लोग सब से आगे खड़े थे.

रंगबिरंगे वस्त्रों में सजी धजी इन स्त्रियों के बीच में लक्ष्मी सब से अलग नजर आ रही थी. वह शहरी स्त्रियों की तरह पेटीकोट, ब्लाउज, साड़ी आदि धारण किए हुए थी. अन्य बनजारी स्त्रियों की तरह उस ने रंगबिरंगा लहंगा, चूनर आदि कुछ नहीं पहना था. उस के शरीर पर आभूषण भी एकदो ही थे. अन्य स्त्रियों की तरह न तो उस ने पूरी बांह का हाथी दांत का चूड़ा ही धारण किया था, न गले में हंसली. सिर पर बोर या पैरों में झमझम बजने वाले आंवले, कड़ी आदि आभूषण ही उस ने पहने थे.

उस का दूल्हा भी पचरंगी पाग, कसदार अंगी, पल्लेदार धोती आदि के बजाए पैंट आदि ही पहने था. उस के कानों में भी न तो मोती का छल्ला था, न हाथों में चांदी के कड़े. हां, उस के सिर के बाल अवश्य दूसरे बनजारे युवकों की तरह गरदन तक झूल रहे थे. किंतु यह बाल विधिवत मशीन से सैट किए गए थे. दूसरे बनजारों की तरह ये पाग के बाहर नहीं झूल रहे थे.

झीने घूंघट के भीतर से लक्ष्मी ने मामी के सिखाएपढ़ाए अनुसार घर की देहरी पर सिर रख के रोना शुरू कर दिया. अपने घर की देहरी से दूर जाने के खयाल से एकदो मिनट में उस के भीतर से स्वाभाविक रूप से रुलाई का सोता फूट पड़ा था. वह फफककफफक कर रोने लगी. उस की मां भी उसे बांहों में भर कर जारजार रोने लगी. उस के आंसू घूंघट के बाहर होंठों को छूते हुए टपटप टपकने लगे.

दूसरी स्त्रियों ने समवेत स्वर में विलाप सा करते हुए तान छेड़ दी. बीचबीच में अस्फुट स्वर में वह कहने लगीं, ''हाय री लछमी, तू अब पराई हुई. तुझ से अब जाने कब मुलाकात होगी? तू अब वन की चिरैया सी उड़ चली री, बाबुल का देस तू ने छोड़ दिया री, अब तुझे भूख लगने पर कौन रोटी को पूछेगा? मां होती तो पूछती, सास से तू कह न पाएगी, तुझे प्यास लगेगी तो तू किस से पानी को कहेगी. ननद बैरन तुझे पानी को क्यों पूछने लगी? बहन होती तो दौड़ कर पानी पिलाती...''

इसी रौ में स्त्रियां घूंघट के भीतर से कभी गीत छेड़ रही थी तो कभी स्यापे के बोल. एकएक नातेरिश्ते वाली उसे बांहों में भर के इसी तरह रोने का स्वांग कर रही थी. उन के घूंघट के भीतर झांकझांक कर लक्ष्मी देख रही थी. उसे उन की आंखों में कहीं आंसू नजर नहीं आ रहे थे. कोईकोई तो रोने का स्वांग करतेकरते घूंघट के भीतर मुसकरा रही थी.

यह सब देख कर लक्ष्मी रोना भूल गई. उस के भीतर से फूटा रुदन का सोता जैसे सूख

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वजूद

मुझे तलाश करोगे तो
मिल ही जाऊंगा,
मेरा वजूद है बाकी
अभी सदाओं में.

—मुशीर झंझानवी

गया. वह आश्चर्य से आंखें फाड़े अपने आसपास के इस अजीब दृश्य को देखने लगी. पास ही खड़े दूल्हे से जब उस की नजरें चार हुईं तो उस ने पाया कि वह भी अरुचि से इस स्वांग को देख रहा है.

तभी एकाएक लक्ष्मी ने अपना घूंघट उघाड़ दिया और कह उठी, ''हम से नहीं रोया जाता है. हम नहीं रोएंगे.''

पास ही खड़ी मामी ने लक्ष्मी का चेहरा ढकते हुए कहा, ''यह क्या नादानी कर रही है, लक्ष्मी?''

लक्ष्मी ने कहा, ''नादानी मैं कर रही हूं या तुम लोग कर रही हो? मुझे कोई कसाई ले जा रहा है, जो तुम इस तरह रो रही हो? यहां से दोतीन मील दूर ही तो मैं जा रही हूं... फिर काहे का रोनाधोना? सासननद, रोटीपानी नहीं देंगी तो मैं खुद अपने हाथों से ले लूंगी. मैं बच्ची नहीं हूं. तुम मेरे लिए अपने आंसू मत बरबाद करो.''

सारे टांडे में सन्नाटा छा गया. ऐसा अभूतपूर्व दृश्य इस टांडे में कभी नहीं देखा गया था. बेटी की विदाई के समय लोग रोरो कर बेहाल होते रहे थे. रोने में यहां की औरतें सारे बनजारे समाज में मशहूर रही थीं.

उसी टांडे की लड़की लक्ष्मी आज विदाई के समय न तो खुद रो रही थी और न दूसरों को रोने दे रही थी. मेहमानों के सामने वह इस टांडे की नाक कटवाने पर तुली थी.

लक्ष्मी के घर वालों की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें? यह नाजुक गुत्थी उन से सुलझ नहीं रही थी. वह भीतर ही भीतर जैसे धधक रहे थे. अपनेआप पर नियंत्रण रखना उन के लिए कठिन सा हो रहा था. पर जरा उत्तेजित होते ही बात बढ़ने की संभावना थी.

इस अप्रिय स्थिति से लक्ष्मी के दूल्हे ने ही सब लोगों को उबारा. अपने दुपट्टे के छोर से दुलहन के आंचल की गांठ बांधते हुए वह बोला, ''मैं ने ही इन्हें रोने से मना किया था. तहसीलदार साहब हमारे यहां अभी आने वाले हैं. इसलिए मैं ने यह रुदन रोकने को कह दिया था. हमें जाने दीजिए. हम जल्दी में हैं.''

दूसरे लोग इस पर कुछ प्रतिक्रिया व्यक्त करें, इस के पूर्व ही दूल्हा आगे बढ़ चला. दुलहन भी दुपट्टे के छोर से बंधी होने के कारण आगे बढ़ चली. जातेजाते दूल्हादुलहन आसपास खड़े सभी बुजुर्गों को नमन करने लगे.

सारा रोष भूल कर बड़ेबूढ़े आशीर्वाद के फूल बरसाने लगे.

कार में बैठ कर जब दूल्हादुलहन जाने लगे तो टांडे के बच्चे बड़ी दूर तक उन के पीछेपीछे गए. बरातियों को विदा करते समय इस टांडे के पुरुष जब इस नई घटना पर माफी मांगने लगे तो उधर के लोग बोले, ''काहे की माफी? ऐसी निराली वधू पर तो हमें नाज है.''

लक्ष्मी के पिता और वर के पिता तो गले मिलमिल कर रोए जा रहे थे. रोतेरोते वे कह रहे थे, ''दूल्हादुलहन न रोए तो हम ही रो लिए. पर ये खुशी के आंसू हैं. हमारे बेटेबेटियों ने हमें राह दिखा दी.''

दोनों समधियों की इस बातचीत को सभी लोग मुग्ध से सुन रहे थे. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लेख • रणबीर सिंह

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब इंटरफेरोन से होगा कैंसर का इलाज

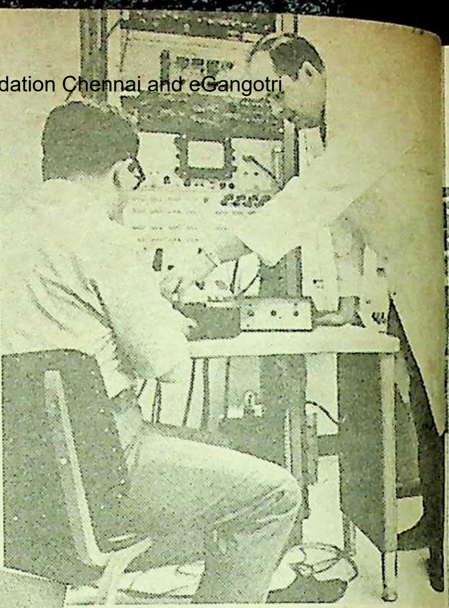

कैंसर के लिए परीक्षण व उपचार (ऊपर), अत्यधिक बढ़ गया कैंसर (बाएं).

मानव कैंसर से युद्ध जारी है. वैज्ञानिक अरबों रुपए व्यय कर के दुनिया भर की प्रयोगशालाओं में काफी समय से कैंसर के उपचार के लिए रामबाण दवा खोज निकालने के लिए अनुसंधानरत हैं. वैज्ञानिकों का वर्षों का प्रयत्न और बेपनाह खर्च अब कुछ रंग लाया है. कैंसर जैसी भयानक बीमारी के उपचार के लिए एक रामबाण दवा खोज ली गई है. खोजकर्त्ताओं ने इस दवा का नाम इंटरफेरोन रखा है.

विश्व में प्रतिवर्ष कैंसर से लाखों व्यक्तियों की मृत्यु होती है. इंटरफेरोन दवा से अब बिगड़े हुए कैंसर के मरीजों को भी काफी हद तक बचाया जा सकेगा. दुनिया भर के डाक्टरों में इंटरफेरोन को ले कर भारी उत्साह है. भविष्य में इंटरफेरोन अगर अनेक बीमारियों के लिए नंबर एक दवा बन जाए तो कोई आश्चर्य न होगा. इंटरफेरोन की खोज और उस का इस्तेमाल चिकित्सा जगत में एक नई क्रांति का सूत्रपात करेगा.

इंटरेफेरोन की प्रामाणिकता, व्यावहारिकता और प्रभाव के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए अकेले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

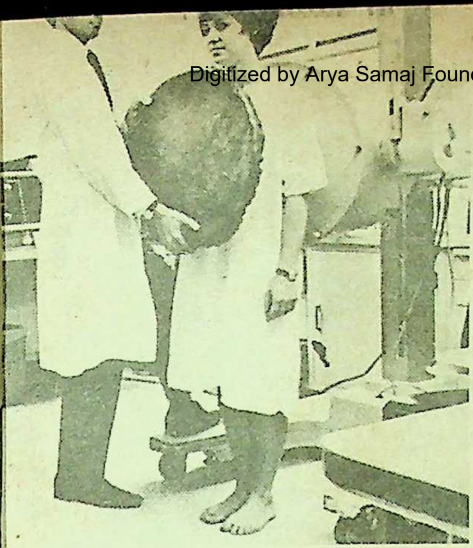

काले धब्बों के रूप में कैंसर रोग की कोशिकाएं (नीचे).

लगातार परीक्षणों के बाद वैज्ञानिकों ने एक ऐसी दवा खोज निकाली, जिस की सहायता से कैंसर जैसी असाध्य बीमारी से बचा जा सकता है.

अमरीका में ही 10 बड़े हस्पतालों में बड़े पैमाने पर परीक्षण किए जा रहे हैं. इस के अलावा स्विट्जरलैंड में ज्यूरिक विश्वविद्यालय तथा इजराइल में येरुशलम के हैब्रू विश्वविद्यालय में और इंगलैंड में भी इंटरफेरोन के बारे में अनुसंधान हो रहा है.

अमरीकी हस्पतालों में कैंसर की अंतिम अवस्था में पहुंचे मरीजों को इंटरफेरोन की थोड़ी खुराक दी जा रही है. कड़ी निगरानी

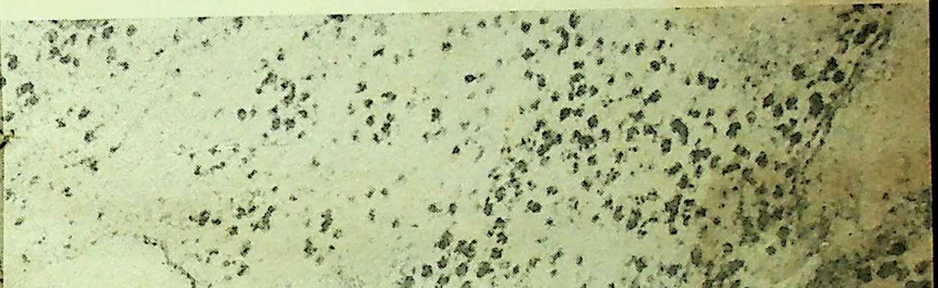

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रख कर अनुसंधानकर्मी मामूली से मामूली घटना का भी ख्याल रखते हैं. इन मरीजों का इलाज करने के लिए अमरीकी कैंसर सोसाइटी ने 16 करोड़ रुपए का अनुदान दिया था. इस धन से केवल कुछ ही ग्राम इंटरफेरोन खरीदी जा सकी थी. मार्च, 1980 के तीसरे सप्ताह में परीक्षण से पहले नतीजे देखे गए तो यह पाया गया कि स्तन के कैंसर से पीड़ित महिलाओं में से एक चौथाई महिलाएं तेजी से स्वास्थ्य लाभ कर रही थीं. 70 में से सात मरीज आधे से अधिक और पांच पूरी तरह ठीक हो गए थे. इन्हें हड्डी का कैंसर था. इंटरफेरोन से उन के कैंसर ट्यूमर भी काफी हद तक सिकुड़ गए थे.

उत्साह जनक परिणाम

प्रारंभिक परीक्षणों का परिणाम उत्साहजनक रहा है. विश्व की औषाध निर्माता कंपनियां इंटरफेरोन के महत्त्व को जान चुकी हैं. अनेक कंपनियां इंटरफेरोन को व्यावसायिक स्तर पर बनाने और बेचने के लिए 20 अरब रुपए की राशि मशीनरी व अन्य सहायक निर्माण सुविधाएं जुटाने पर खर्च कर चुकी हैं.

इंटरफेरोन की खोज आज से 25 साल पहले दो अज्ञात से जीवाणु वैज्ञानिकों–ऐलिक इस्साक्स व जोन लिंडनमान ने की थी. दुर्भाग्य से 1967 में दिमागी ट्यूमर होने से 45 वर्ष की आयु में ही इस्साक्स का देहांत हो गया था. पर इंटरफेरोन पर आगे अनुसंधान का रास्ता वह पहले ही प्रशस्त कर गए थे.

लंदन में राष्ट्रीय चिकित्सा अनुसंधान संस्थान में इस्साक्स का परिचय लिंडननमान से हुआ था. इस दौरान दोनों वैज्ञानिकों की रुचि इस बात में बढ़ गई थी कि सूक्ष्म जीवाणु (वायरस) से हुई किसी बीमारी से पीड़ित शरीर, किसी अन्य जीवाणु अन्य बीमारी से साथ ही साथ रोगग्रस्त नहीं हो सकता. पर क्यों?

इस 'क्यों' का उत्तर खोजने के लिए उन्होंने अनेक परीक्षण किए. अंडे के खोल की भीतरी और महीन झिल्ली के ऊतक (टिशू) को उन्होंने रासायनिक घोल में बढ़ने दिया और कुछ समय बाद उन्होंने संबंधित

कैंसर शरीर के किसी भाग में भी हो सकता है, गले या मुंह में भी.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैंसर शोध प्रयोगशाला में कार्यरत वैज्ञानिक.

कोशिकाओं पर अन्य बीमारी के जीवाणु छोड़ दिए. उन की धारणा के ठीक अनुकूल संवर्द्धित कोशिकाओं ने दूसरी बार छोड़े गए जीवाणुओं का शतप्रतिशत प्रतिरोध और बहिष्कार किया था.

तत्पश्चात दोनों वैज्ञानिकों ने संवर्द्धित कोशिकाएं और जीवाणु विशेष रूप से तैयार रासायनिक घोल में से पूरी तरह निकाल दिए. स्वच्छ घोल को उन्होंने फिर नई कोशिकाओं को ग्रहण करने दिया. जब ऐसा हो गया तो वैज्ञानिकों ने एक नई बीमारी के जीवाणुओं को नई कोशिकाओं पर हमला करने के लिए छोड़ दिया. यह देख कर वैज्ञानिकों को आश्चर्य हुआ कि कोशिकाओं में बीमारी के जीवाणुओं से लड़ने और उन्हें भगाने की शक्ति उत्पन्न हो गई थी.

रहस्य की परतें अब प्याज के छिलकों की तरह उतरने लगी थीं. यानी प्रथम जीवाणु संक्रमण की अवस्था में नई कोशिकाएं एक ऐसे पदार्थ का निर्माण कर चुकी थीं, जिस ने दूसरी बीमारी के जीवाणुओं के प्रवेश में बाधा डाल दी थी.

लिडनमान और इस्साक्स ने इस नए पदार्थ का नाम इंटरफेरोन रखा. यह 'इंटरफेरेंस' और 'आन' का संक्षिप्त रूप है. इंटरफेरोन की खोज तो हो गई. यह भी पता लग गया कि यह किस तरह बनती है. अब समस्या आई कि इंटरफेरोन अधिक मात्रा में किस तरह बनाई जाए और इसे किस प्रकार कोशिकाओं से पृथक किया जाए ताकि यह रासायनिक परीक्षण के लिए अनुसंधान-कर्मियों को उपलब्ध कराई जा सके.

पिछले दो दशक से दुनिया भर की प्रयोगशालाओं में बड़े पैमाने पर इंटरफेरोन बनाए जाने के प्रयत्न होते रहे हैं. परीक्षणों की सफलताएं उत्साहवर्धक रही हैं. इस दौरान यह भी मालूम हो गया कि इंटरफेरोन 'स्पेसीज स्पेसिफिक' रही है, यानी एक प्राणी जैसे मनुष्य की कोशिकाओं में बनी और पृथक की गई. इंटरफेरोन सिर्फ मनुष्य के ही काम आ सकती है, अन्य प्राणियों के नहीं. इसी प्रकार बंदरों से प्राप्त इंटरफेरोन मनुष्य के काम नहीं आ सकती. इस प्रकार की कुछ चुनौतियां मार्ग में आईं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंटरफेरोन प्राप्त करने के लिए नए स्रोत ढूंढ़े जाते रहे. 1960 के दशक में एक महत्त्वपूर्ण बात यह पता लगी थी कि इंटरफेरोन एक प्रोटीन है जो किसी जीवाणु द्वारा उत्तेजित किए जाने पर निर्मित होती है.

अभी तक केवल तीन तरह की इंटरफेरोन का पता लग चुका है. पहली इंटरफेरोन ल्यूकोसाइट्स यानी श्वेत रक्त कोशिकाओं द्वारा बनाई जाती है. दूसरी तरह की इंटरफेरोन का निर्माण फाइब्रोब्लास्ट से होता है. फाइब्रोब्लास्ट वे कोशिकाएं हैं जो खाल को अन्य अंगों से जोड़ने वाले तंतुओं को बनाती हैं. तीसरी प्रतिरोधात्मक इंटरफेरोन हैं. इसे टी लिंफोसाइट्स से बनाते हैं. विशेष बात यह है कि प्रत्येक इंटरफेरोन केवल उन्हीं कोशिकाओं की कैंसर आदि से रक्षा करने में समर्थ है, जिन से इसे बनाया गया है.

हाल ही में अमरीका में एक बायोटेक्नोलौजी कंपनी 'जैननटैक' और वाशिंगटन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा एक प्रकार के 'यीस्ट' से 'जैनेटिक' विधि से बड़ी मात्रा में ल्यूकोसाइट इंटरफेरोन बनाने की बात का पता लगा है. वैज्ञानिक अब आसानी से मानव जीवन सूत्र (जींस) को आवश्यक निर्देश दे कर और विभाजित कर के ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करने लगे हैं जिस से मानव कोशिका स्वयं ही इंटरफेरोन का निर्माण कर ले. जीवाणु जनित प्रोटीन विषाक्त न बने इसलिए इन्हें बनाने वाली कंपनियां ऐसी विधियां विकसित कर रही हैं, जिस से इन्हें विशुद्ध करना संभव होगा.

इंटरफेरोन एक जटिल रसायन है, जो प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट के संयोजन से बनता है. इसे किसी भी तरह कृत्रिम रूप से संश्लेषित नहीं किया जा सकता. यह केवल प्राकृति रूप में ही उपलब्ध है. इस का निर्माण प्राणी के रक्त में उपस्थित श्वेत रक्त कोशिकाओं में ही होता है, अन्यत्र नहीं.

श्वेत रक्त कोशिकाओं से इंटरफेरोन निकालने का श्रेय फिनलैंड के एक उत्साही वैज्ञानिक कैरी कैंतल को है. ये महोदय 20 वर्ष तक अपने काम में डूबे रहे. कैंतल के प्रयासों का ही यह परिणाम है कि आज दुनिया में जहां भी इंटरफेरोन की खुराक मरीजों को दी जा रही है, वह अधिकांश उसी की बनाई हुई.

इंटरफेरोन बनाने की प्रक्रिया जटिल है. हैलसिंकी की केंद्रीय जनस्वास्थ्य प्रयोगशाला में विश्व की अधिकतर इंटरफेरोन बन रही है. यह प्रयोगशाला हर साल इंटरफेरोन की 40 अरब इकाइयां तैयार करती है. अभी तो इंटरफेरोन बहुत महंगी है, इस की एक छोटी से छोटी खुराक की कीमत 800 रुपए के लगभग है. केवल जुकाम का इलाज कराने के लिए इंटरफेरोन की एक खुराक की कीमत 16 हजार रुपए है, पर भविष्य में इंटरफेरोन व्यावसायिक स्तर पर अधिक मात्रा में बना लिए जाने की वैज्ञानिकों को पूरीपूरी आशा है. वैज्ञानिक यह भी कहते हैं कि इंटरफेरोन से न केवल कैंसर का उपचार संभव है, बल्कि इस से यकृत रोग (हैपाटीटिस), अलर्करोग (रेबीज) व दाद इत्यादि का भी इलाज हो सकेगा. इस के अलावा आपरेशन के दौरान या अंग प्रत्यारोपण के समय भी इंटरफेरोन अद्भुत प्रतिरोधात्मक शक्ति उत्पन्न कर, शरीर की इंफैक्शन से रक्षा कर सकती है.

कुल मिला कर यही कहा जा सकता है कि इंटरफेरोन एक ऐसी दवा है, जिस से लाइलाज रोगियों का कल्याण होगा. आशा की जानी चाहिए कि इंटरफेरोन शीघ्र ही न केवल व्यावसायिक स्तर पर काफी मात्रा में बन सकेगी और सस्ती उपलब्ध होगी, बल्कि अनुसंधान द्वारा वनस्पति से प्राप्त इंटरफेरोन का भी मानव उपचार के लिए उपयोग हो सकने की कोई विधि ज्ञात कर ली जाएगी.

उड़न तश्तरियां क्या हैं?

रूसी वैज्ञानिकों ने उड़न तश्तरियों के रहस्य का पता लगा लिया है. उन्होंने सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूस में सिद्ध कर दिया है कि उड़न तश्तरियां वास्तव में धूल के ऐसे बारीक कण होते हैं जो भंवर के रूप में आकाश में कुछ देर मंडराने के बाद गायब हो जाते हैं. इन्हीं से उड़न तश्तरियों का भ्रम होता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदियों से रोता आया है

तुम्हारी हंसी जिसे मैं ने,
प्यार किया है,
तुम्हारा यौवन जिसे मैं ने
जीने का अधिकार दिया है.

तुम्हारे नयन जिन्हें मैं ने,
दृष्टि दे कर साकार किया है.
तुम्हारी प्यास जिसे
तृप्त करने को मैं ने
तुम्हें अभिसार दिया है.
तुम्हारे वक्ष जिन्हें मैं ने
नारी का संसार दिया है,

आज वे सब तुम
मुझ से ले रही हो,
मेरे यौवन के बदले मुझे
दुख का संसार दे रही हो,

कोई बात नहीं-
प्यार के इतिहास में
ऐसा सब होता आया है
इनसान प्यार कर के
हंसने की सोचता है
मगर
सदियों से रोता आया है.

—प्रदीप वर्मा 'सोना.'

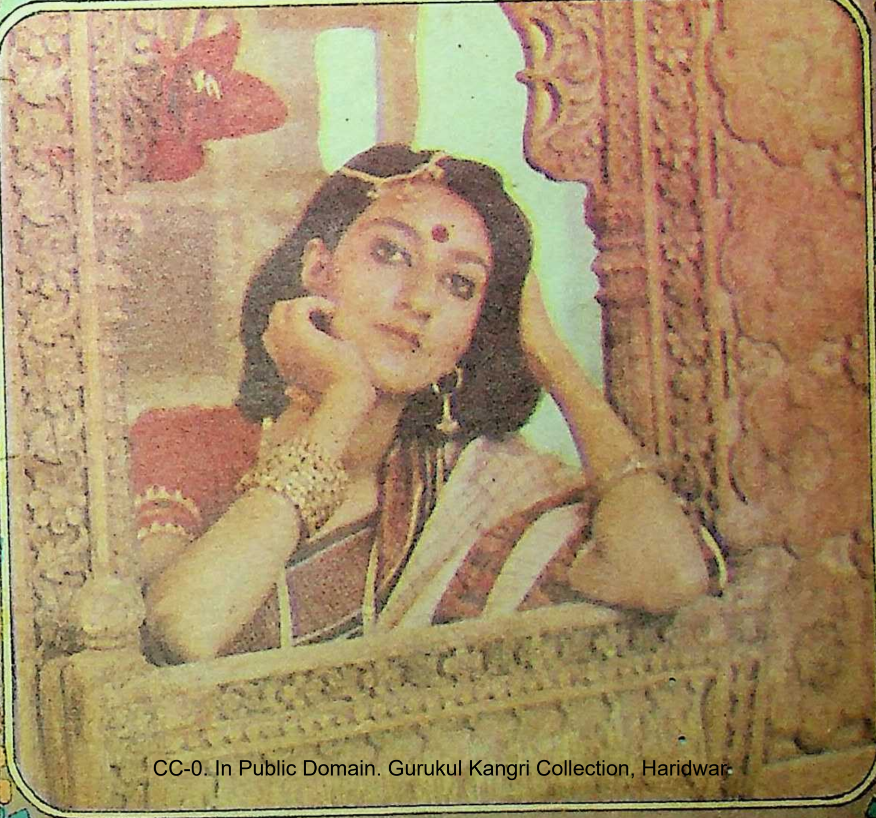

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर आपके मुन्ने के लिए फ़ैरेक्स को बेहतर ठोस आहा क्यों मानते हैं ?

बेहत
आप
कमी
शिशु
'विश्व
आहा
प्रोटीन
बनाये
भरपूर
विकास

बेहत
डिब्बे
मुका
आय
मात्र
"जन्म
भंडार
धीरे-ध
एक अ
कमी
आहा
वाले

फ़ैरेक्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेहतर इसलिए कि फ़ैरेक्स आपके मुन्ने को प्रोटीन की कमी से बचाता है.

शिशु को प्रोटीन की कमी से बचाने के लिए 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' ने डिब्बे-बंद ठोस आहारों को तैयार करने और उनमें प्रोटीन की मात्रा के बारे में कुछ नियम बनाये हैं. फ़ैरेक्स के आहार प्रोटीन से भरपूर होते हैं. प्रोटीन आपके मुन्ने के विकास के लिए बहुत ही ज़रूरी है.

बेहतर इसलिए कि अन्य डिब्बे-बंद ठोस आहारों के मुक़ाबले फ़ैरेक्स में आयरन की मात्रा कहीं ज़्यादा है.

"जन्म के समय बच्चे को माँ से जो आयरन भंडार प्राप्त होता है वह जन्म के बाद धीरे-धीरे घटने लगता है. हालाँकि दूध एक अच्छा आहार है फिर भी आयरन की कमी के कारण यह अपने आप में पूर्ण आहार नहीं है इसलिए बच्चे को आयरन वाले ठोस आहार चाहिए."

— डॉ. सुभाष सी. आर्य

फ़ैरेक्स में अधिक आयरन है जो मुन्ने के स्वस्थ खून, उसकी प्रतिरोधक क्षमता, उसके स्वास्थ्य और समुचित विकास के लिए बहुत ही ज़रूरी है.

बेहतर इसलिए कि फ़ैरेक्स में कैल्शियम और फ़ॉसफ़ोरस सही अनुपात में हैं, जो दाँत और हड्डियों के लिए बहुत ही ज़रूरी है.

दाँत और हड्डियों के विकास के लिए आपके मुन्ने को चाहिए कैल्शियम और फ़ॉसफ़ोरस. लेकिन उसके लिए ये तभी लाभदायक सिद्ध होंगे जबकि ये २:१ के अनुपात में हों. सिर्फ़ फ़ैरेक्स ही एक ऐसा डिब्बे-बंद ठोस आहार है जिसमें मुन्ने की स्वस्थ हड्डियों और मज़बूत दाँतों के लिए ज़रूरी ये दोनों तत्व आदर्श अनुपात में हैं.

बेहतर इसलिए कि फ़ैरेक्स में किसी प्रकार का कृत्रिम स्वाद नहीं मिलाया गया है.

जहाँ तक हो सके शिशु को कृत्रिम स्वाद से बचायें. फ़ैरेक्स में किसी प्रकार का कृत्रिम स्वाद नहीं है. यह दूध, शकर और आप के मुन्ने की पसंद के अन्य ठोस आहारों में आसानी से घुल-मिल जाता है.

फ़ैरेक्स®

ग्लैक्सो उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

GASGLF-37-173 HIN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमेरिका का ग्रैंड कैन्यन:

भूगोल के अध्ययन की खुली किताब

लेख • अजयकुमार सिन्हा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रैंड कैन्यन की ऊंची-नीची चट्टानें और मीलों गहरी खाईयां दर्शक को आश्चर्यचकित कर देती हैं. इन के बनने का रहस्य क्या है?

पूरे संसार में केवल एक ही स्थान पर यह रोमांचकारी, विस्मयजनक और भयोत्पादक दृश्य देखने को मिलेगा. यह दृश्य है अमरीका के एरिजोना प्रांत में बहुत ऊंची चोटियों और बहुत गहरे खड्डों के समूह का, जिसे 'ग्रैंडकैन्यन' कहते हैं. यहां ऊंचीनीची व एकदम सीधी खड़ी चोटियों और मीलों गहरे खड्डों को देख कर लोग दांतों तले उंगली दबा लेते हैं.

ग्रैंड कैन्यन अपनी रूपरेखा और आकार की दृष्टि से ही नहीं, अपितु इसलिए भी दर्शनीय है कि यह संसार की कहानी को अपनी चमकदार क्षितिजीय पट्टियों द्वारा उजागर करता है.

इस की हर पट्टी करोड़ों वर्ष पुरानी है. इस का तल दो अरब वर्ष पुराना है. उस पर हर युग की प्रतीक एक परत चढ़ती चली गई है. दर्शक के सामने ये परतें किसी बृहत्काय पुस्तक की भांति फैली हुई हैं. कहींकहीं इस के पन्ने सिकुड़े हुए भी हैं, वहां समुद्र बने और सूख गए हैं. एवरेस्ट से भी ऊंचे पर्वत शिखर उठ खड़े हुए और हवा और वर्षा से अनवरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋतुओं के बदलने के साथसाथ यहां की छटा भी बदलती रहती है. (नीचे व दाएं).

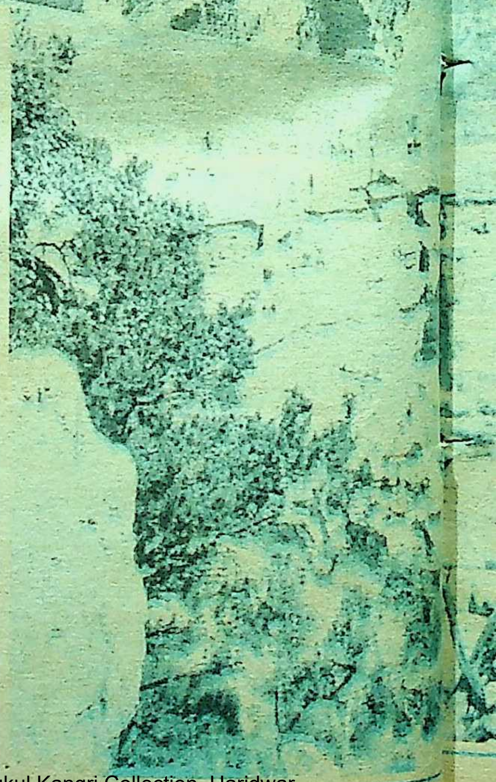

संघर्ष में फिर जमीन में मिल गए हैं.

यह अपूर्व दृश्य-पृथ्वी पर रंगों, आकारों और विभिन्न बनावटों का एक विशाल नमूना है. यहां चट्टानों और शिलाखंडों, स्तंभों, मीनारों, पर्वत चोटियों और पठारों, खाइयों, दर्रों, खड्डों और घाटियों का अजीब जमाव है.

यहां दरारों, पीलेसफेद और हलके काले चूने के पत्थरों, लाल गेरुए रंग की शिलाओं और सफेद बलुआ या स्लेटी पत्थरों के भंडार हैं. नुकीली पत्तियों की सदाबहार झाड़ियां और देवदार के वृक्षों के विशाल जंगल हैं.

ग्रैंडकैन्यन एक अलौकिक दृश्य है. यदि इसे संसार का आठवां आश्चर्य कहा जाए तो अत्युक्ति न होगी. अंतर मात्र इतना है कि अन्य आश्चर्यों को मनुष्य ने बनाया है, किंतु इसे प्रकृति ने. दूसरे, इस का निर्माण करोड़ों वर्षों में हुआ.

अत्यंत तेज बहती नदियों, नालों व जलप्रपातों ने अपने लाखों वर्षों के कठोर श्रम से, अनवरत प्रवाह रूपी अपनी छैनी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मार कर के इन रंगबिरंगी ऊंची पर्वत चोटियों और अनंत गहरे खड्डों का निर्माण किया है.

यहां चित्रकारी का सब से सुंदर और प्रभावपूर्ण प्रदर्शन है. यहां रंगों के अद्भुत मेल से बना ऐसा विशाल रंगपट्ट है, जहां कल्पनाएं भी पीछे रह जाती हैं. इस का मानव इंद्रियों पर अचूक प्रभाव होता है. इस का जादुई सौंदर्य मन को बरबस बांध लेता है. यहां की निस्तब्धता दर्शक के मनमस्तिष्क में असीम शांति भर देती है. किंतु इस के पीछे एक जबरदस्त उत्सुकता भी छिपी होती है कि आखिर यह सब कैसे बना है. यहां के दृश्य देख कर मन में प्रकृति के प्रति श्रद्धा और प्रशंसा के भाव उमड़ पड़ते हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋतुओं के साथ साथ यहां की छटा भी बदलती रहती है. यहां तक कि एक ही दिन में यहां दो रूप देखने को मिलते हैं. जैसे पाश्चात्य महानगरों में सुबह का फैशन कुछ और होता है और शाम का कुछ और.

ग्रैंड कैन्यन के मनोभावों में परिवर्तन स्पष्ट दिखलाई पड़ते हैं. भोर में जब सूर्य धीरेधीरे प्रकाश बिखेरता है तो पर्वतों की चोटियां जैसे गहरे अंधेरे से स्नान कर के निकलती हुई प्रतीत होती हैं. इस क्षेत्र में चौबीसों घंटे, प्रकाश व अंधकार तथा रंगों व शिलाओं के बीच आंखमिचौनी चलती रहती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

है. रहस्य बनते, प्रकट होते रहते हैं. यह प्रकृति का वह रहस्य है जो अपना रहस्योद्घाटन भी स्वयं करता है.

जब सूर्य दोपहर में अपनी प्रखर किरणों से चट्टानों को घूरता है तब यहां उन की क्रोधाग्नि विभिन्न रंगों में स्पष्ट दिखाई देती है. अनेक युग बीत गए, पर यहां वही दिनचर्या चली आ रही है.

इस क्षेत्र में मंदिरों जैसी रंगबिरंगी चोटियां व शिलाएं हैं. ये तांबे के रंग की चूने और बालू के पत्थरों की चट्टानें हैं, जो चार से छः हजार फुट ऊंचे शिलाधारों पर टिकी हैं. इन में से ज्यादातर चट्टानें त्रिकोण के आकार की हैं, जिन के शिखर को हवा और बारिश ने चपटा कर दिया है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रैंड कैन्यन पिछले दो अरब वर्षों से बन, बिगड़ रहे हैं. इन्हें सब से पहले एशिया वासियों ने देखा था, जो एशिया से साइबेरिया और उत्तरी अमरीका को जोड़ने वाले बेरिंग जलमार्ग द्वारा उत्तरी अमरीका गए थे. आज के अमरीकी रेड इंडियन इन्हीं एशिया वासियों के वशज हैं. इन को पश्चिम के लोगों ने 1540 में देखा था, जब कि स्पेन वासियों का एक दल यहां पहुंचा था.

ग्रैंड कैन्यन की खाई 217 मील लंबी व चार से 18 मील तक चौड़ी है. इस के घेरे में अनेक स्थल हैं, जहां से विविध दृश्य दिखाई देते हैं. ये एक मील से अधिक गहरे हैं. यहां 1919 में बना नेशनल पार्क भी है.

ग्रैंड कैन्यन कोलोराडो नदी की देन है

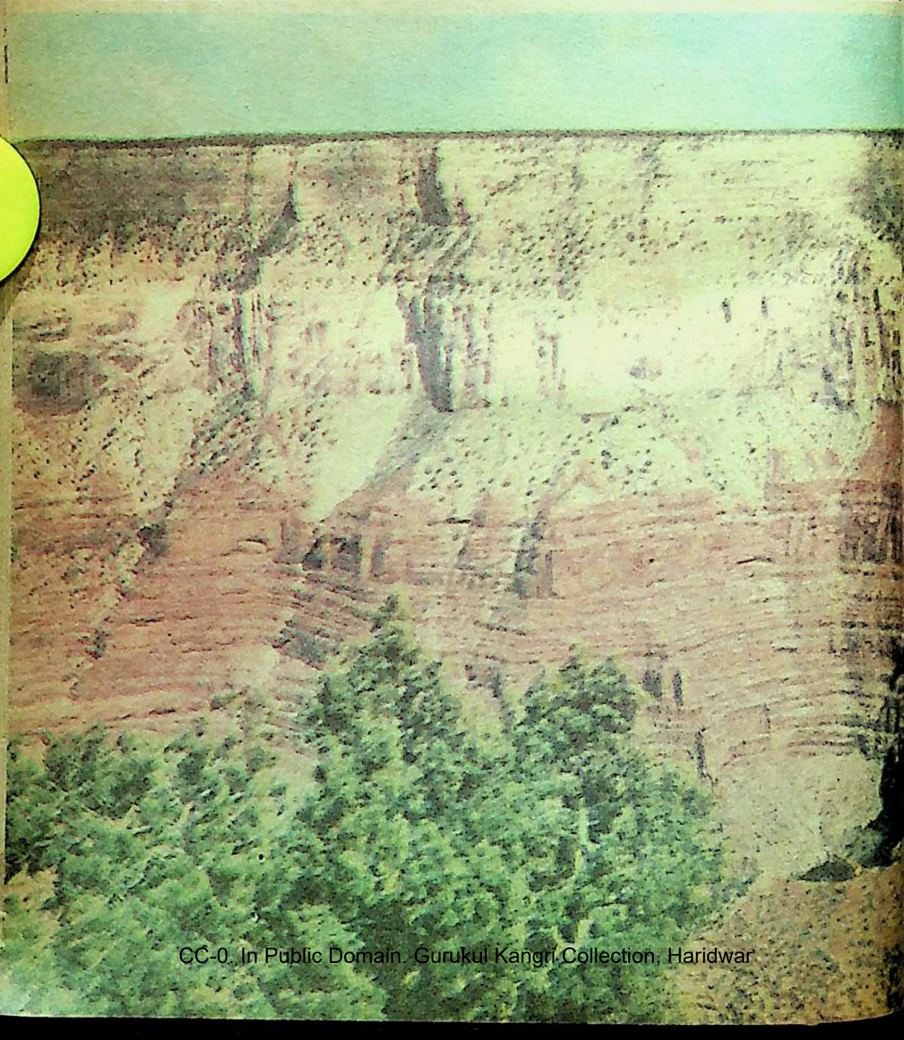

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृति की कई लाख वर्षों की मेहनत ने यहां अलौकिक दृश्य उपस्थित किए हैं जिन्हें देख कर दर्शक भावविभोर हो जाता है. (नीचे व दाएं)

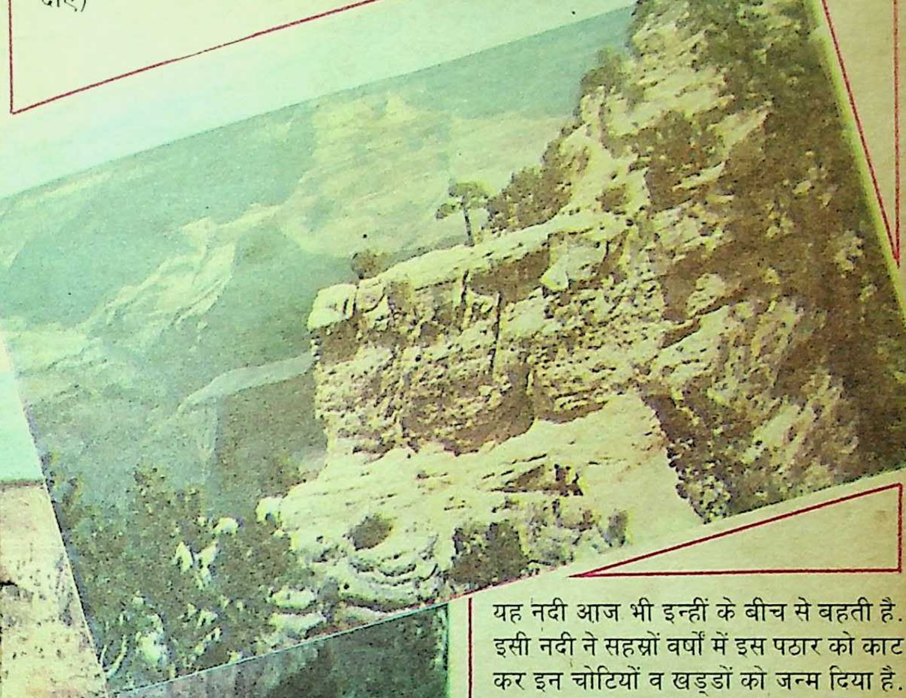

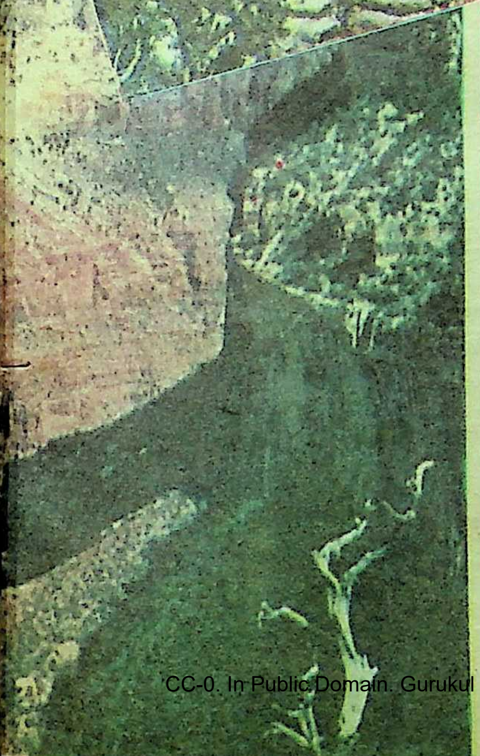

यह नदी आज भी इन्हीं के बीच से बहती है. इसी नदी ने सहस्रों वर्षों में इस पठार को काट कर इन चोटियों व खड्डों को जन्म दिया है. इस नदी की यात्रा में अनेक लोग जान से हाथ धो चुके हैं क्योंकि यह यात्रा अत्यंत कठिन और जोखिमपूर्ण है. इस में नौकाओं के रूप में लकड़ी के लट्ठों, जिन्हें रैफ्ट कहते हैं, का प्रयोग किया जाता है. एक समय में सिर्फ या 15 यात्री ही रैफ्ट पर जा सकते हैं. साथ में पथप्रदर्शक भी होते हैं, जो छिपी हुई नुकीली चट्टानों से यात्रियों को बचाते हैं.

भूगर्भशास्त्री ग्रैंडकैन्यन में मिट्टी के कटाव का, शिलाओं, खड्डों व चोटियों के निर्माण का तथा परतदार चट्टानों के रंगों का अध्ययन कर के इन के काल का पता करते हैं. यह भूवैज्ञानिकों का एक प्रिय स्थल है, जो उन के लिए एक खुली प्रयोगशाला का काम करता है. यह भूगोल के अध्ययन की एक खुली पुस्तक है, जो पढ़ने वालों के लिए सदैव उपलब्ध है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीरों का व्यापार

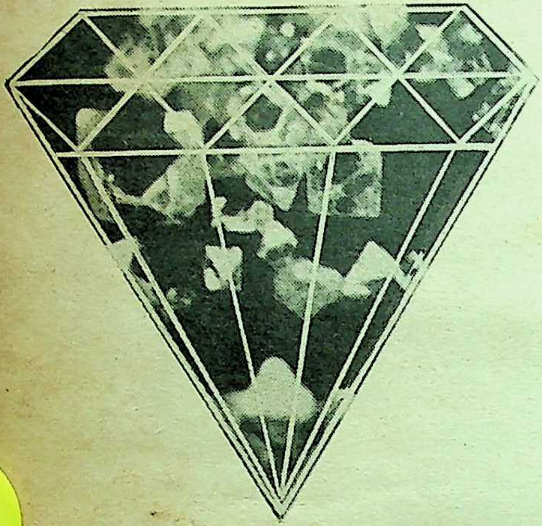

कितना सस्ता, कितना महंगा

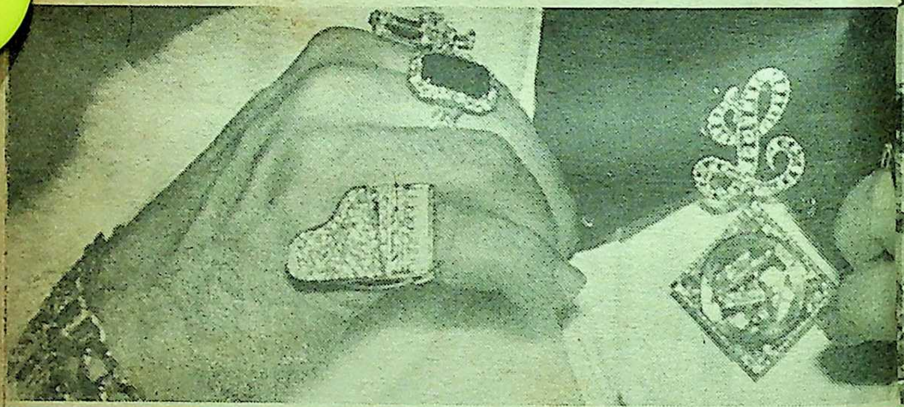

इस शताब्दी के पांचवें दशक के अंत में हीरों के संबंध में बड़े जोरशोर के साथ यह प्रचार किया जाता था कि 'हीरे हमेशा के लिए होते हैं.' धीरेधीरे इस का पर्याप्त असर भी पड़ा और इस बहुमूल्य रत्न की बिक्री भी बढ़ने लगी थी. सन 1970 के बाद तो लोग इसे आभूषणों के लिए और साथ ही पूंजी लगाने योग्य बहूमूल्य रत्न समझने लगे थे.

लेकिन पिछले वर्ष विश्व भर में हीरों की भरमार हो गई. हीरों के थोक विक्रेताओं के यहां अनघड़ (रफ), तराशे हुए तथा पालिश किए हुए हीरे बहुत अधिक संख्या में जमा हो गए. बाजार में मांग से कहीं अधिक हीरे उपलब्ध होने के कारण पूंजी लगाने योग्य हीरों का मूल्य भी गिर गया. हीरों के अंतरराष्ट्रीय बाजार में बिना किसी दोष वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक कैरेट हीरे का मूल्य सन् 1900 में 62,000 डालर (करीब 6 लाख 20 हजार रुपए) था. लेकिन आज इस का मूल्य घट कर मात्र 15,000 डालर या इस से भी कम रह गया है. इस तरह इस के मूल्य में दो ही वर्ष में 75 प्रतिशत की गिरावट आई है.

हीरों के मूल्यों में आई इस गिरावट का असर भारत द्वारा निर्यात किए जाने वाले हीरों के मूल्य पर भी पड़ा है. हीरे व जवाहरात निर्यात प्रसार परिषद के एक अधिकारी ने बताया है कि हालांकि गत वर्ष भारत से हीरों के निर्यात में वृद्धि हुई है, लेकिन इस के मूल्यों में गिरावट आई है. यह पूछे जाने पर कि मूल्यों में कितने प्रतिशत की गिरावट आई है, उस अधिकारी ने कुछ भी बताने से इनकार कर दिया.

पर हीरों के व्यापारियों (जौहरियों) का अनुमान है कि इस दौरान हीरों के मूल्यों में 40 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट आई है. इतने पर भी हीरों की खुदरा बिक्री के मूल्य लगभग स्थिर ही हैं.

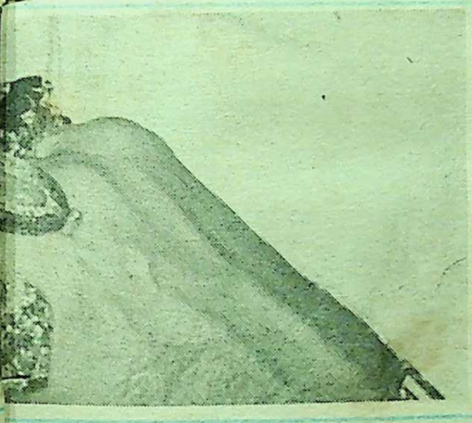

संसार में हीरों का उत्पादन अकसर देशों की सरकारें ही करती हैं और वही उन की मालिक भी होती हैं, परंतु हीरों के उत्पादन संघ की अध्यक्षता दक्षिण अफ्रीका की प्रख्यात कंपनी 'डी बीयर्स' करती है. वह विश्व के अधिकतर हीरों के उत्पादन व बिक्री को केंद्रीय बिक्री संगठन (सी.एस.ओ.) के माध्यम से नियंत्रित करती है.

हीरों के निर्माण से ले कर उस की बिक्री तक की कहानी अत्यंत रोचक है. विश्व का यह महत्त्वपूर्ण रत्न किस तरह बनता है और बिकता है?

जैसे ही हीरों के नए स्रोत का पता चलता है, उक्त संगठन जो कई कंपनियों का समूह है और डी बीयर्स का बिक्री संगठन है, उसे अपने अधिकार में ले लेता है. संभवत: आभूषणों में काम आने वाले हीरे जवाहरात का लगभग 80 प्रतिशत व्यापार यही संगठन करता है.

डी बीयर्स लंदन के हीरा बाजार में 17 चार्टरहाउस स्ट्रीट से अनघड़ हीरों की बिक्री करता है. इस के लकड़ी के भारी दरवाजों में हीरे की शक्ल के शीशे के टुकड़ों को देख कर ही अनुमान लगाया जा सकता है कि अंदर किस वस्तु का व्यापार होता होगा. केंद्रीय बिक्री संगठन वहां हर साल विभिन्न तरह के दो से तीन करोड़ के हीरे बेचता है.

डी बीयर्स साल में 10 बार हीरों की बिक्री करता है. वहां हीरों की नीलामी होती है. इस नीलामी में भाग लेने और बोली लगाने के लिए विश्व भर के करीब 300 प्रमुख जौहरी आमंत्रित किए जाते हैं. इस विशिष्ट नीलामी को 'साइट' नाम से जाना जाता है. इस में सिर्फ वही लोग प्रवेश पा सकते हैं, जिन्हें आमंत्रित किया गया हो.

आमंत्रित लोगों को 'साइट होल्डर' कहते हैं. प्रवेश से पहले उन की तलाशी ली जाती है. पहले ऐसी प्रथा थी कि यदि कोई आमंत्रित जौहरी किसी एक 'साइट' में नहीं पहुंचता तो फिर उसे अगली बार आमंत्रित नहीं किया जाता था.

हर नीलामी से पहले भाग लेने वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जौहरियों को कुछ निश्चित तरह के हीरों का आर्डर देना होता [illegible] तरह के मिलेजुले हीरे एक समूह में रखे होते हैं. हर समूह की कीमत पहले से निर्धारित रहती है. विशिष्ट हीरे 10.8 कैरेट या इस से अधिक वजन के होते हैं और उन के दामों के बारे में ही मोलभाव किया जा सकता है.

हालांकि जौहरी हीरों की किस्मों को ले कर मोलभाव कर सकते हैं, लेकिन इस का कुछ फायदा नहीं होता, क्योंकि अंत में उन्हें हीरों का या तो पूरा बक्स खरीदना पड़ता है या फिर कुछ नहीं. खरीद के समय ही पूरा मूल्य नकद चुकाने का नियम है. यदि किसी जौहरी से डी बीयर्स को असुविधा होती है तो अगली नीलामी की सूची से उस व्यापारी का नाम कट जाता है.

'साइट' में भाग लेने वाले जौहरी अपने अनघड़ हीरे अपनी पसंद के हीरे तराशने वाले को भेज देते हैं या फिर बेच देते हैं. हीरों के काटने व तराशने के प्रमुख केंद्र एंटवर्प, [illegible] अवीव, न्यूयार्क तथा बंबई में हैं. भारत में गुजरात के सूरत व नसवारी स्थान पर भी हीरे काटे और तराशे जाते हैं. इन स्थानों पर विशेषज्ञों की देखरेख में इन अनघड़ पत्थरों को चमकते हुए हीरों में परिवर्तित किया जाता है, फिर उन्हें आभूषण बनाने वालों के हाथ बेच दिया जाता है.

हीरों की थोक बिक्री के मूल्य हर जगह लगभग समान रहते हैं, लेकिन हीरों के खुदरा मूल्यों के संबंध में यह बात नहीं है.

दिल्ली में हीरों के थोक व्यापारी बद्री मेहरा ने बताया, "श्रेष्ठतम तराशे हुए हीरों पर अमरीका का एकाधिकार है. इस का कारण यह है कि अमरीकी इस कीमती पत्थर से श्रेष्ठतम किस्म का हीरा प्राप्त करने के लिए इसे बेदर्दी से काटने व तराशने में रत्ती भर भी नहीं हिचकते. यहां के कटे व तराशे हीरे पूर्ण रूप से या लगभग दोषरहित होते हैं.

हीरे से बने आभूषण महिलाओं की सुंदरता को और बढ़ा देते हैं.

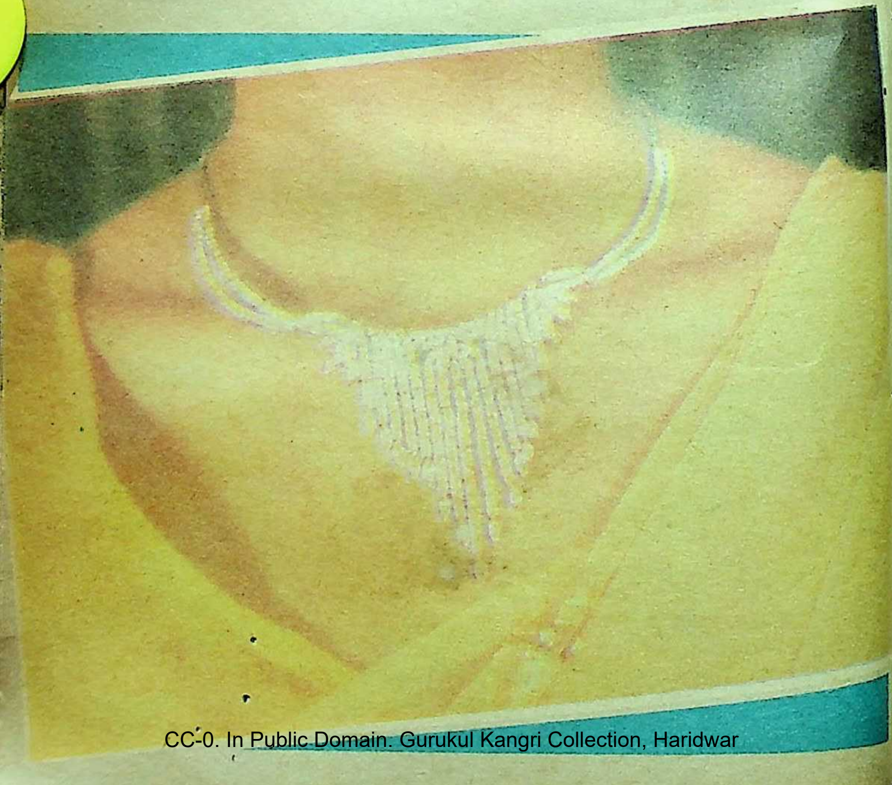

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

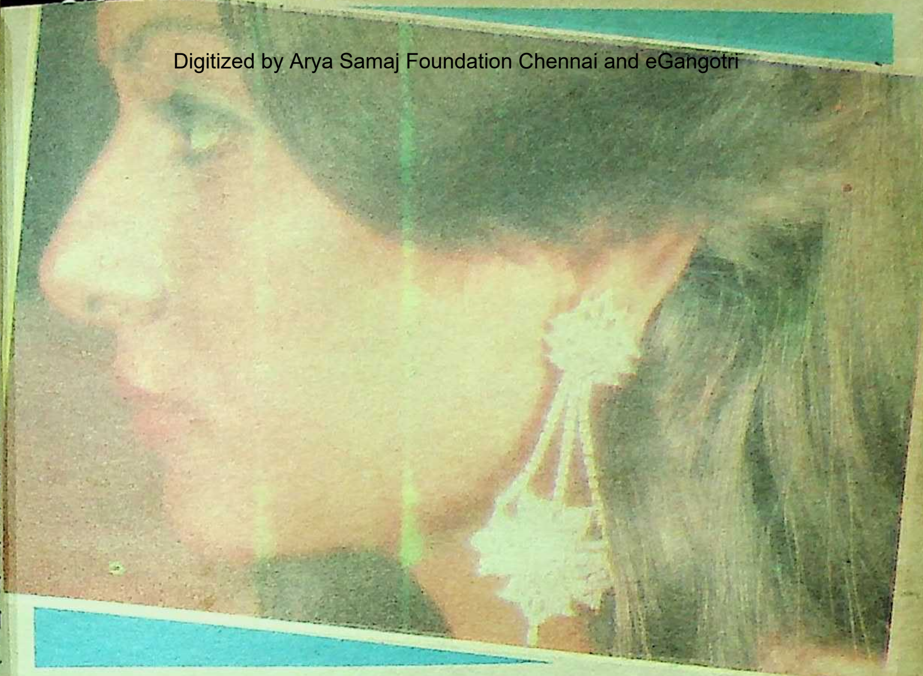

कानों में पहने जाने वाले टाप्स आदि में भी हीरे का स्थान प्रमुख होता है.

यही कारण है कि अमरीका के हीरे विश्व में सब से महंगे हैं. इसी कारण वहां खुदरा बिक्री और थोक बिक्री के हीरों के मूल्य में 40 प्रतिशत का फर्क होता है.

"लेकिन भारत में हम लोग हीरों के वजन पर अधिक ध्यान देते हैं, भले ही उन के तराशने में दोष हो. इसी लिए भारतीय हीरों का दाम अन्य देशों के हीरों की तुलना में कम होता है. एक कारण यह भी है कि यहां हीरों के तराशने में व्यय भी कम होता है, क्योंकि यहां मजदूरी की दर कम है. यहां मजदूर आसानी से मिल जाते हैं."

मुद्रा स्फीति का असर

1970 के दशक के अंत में मुद्रा स्फीति के कारण सोने, चांदी व हीरों के मूल्यों में असाधारण तेजी आ गई थी. लोग बजाए रुपया रखने के सोने, चांदी, हीरे आदि खरीद कर रखने में अधिक रुचि लेने लगे थे. लोगों ने सब से अधिक रुचि सोना खरीदने में दिखाई थी. इस का परिणाम यह हुआ कि सोने का बाजार मूल्य 132 डालर प्रति औंस से बढ़ कर 875 डालर प्रति औंस हो गया और चांदी का मूल्य चार डालर से बढ़ कर 50 डालर प्रति औंस हो गया. 1979 में एक कैरेट डी (निर्दोष) हीरे का मूल्य 23,000 डालर से बढ़ कर 62,000 डालर हो गया था. इसी तरह भारत में भी इन के मूल्यों में वृद्धि हुई.

पूरे विश्व के व्यापारियों ने हीरों में अपनी पूंजी लगाना उचित समझा. इजराइल में लगभग एक चौथाई कैरेट के पालिश किए हुए हीरों, एंटवर्प व अमरीका में बड़े आकार के हीरों तथा भारत में एक कैरेट से कम के हीरों की भारी मांग थी. इस मांग के कारण व्यापारियों ने केंद्रीय बिक्री संगठन से नीलामी में खरीदे हीरों को वास्तविक मूल्यों से काफी अधिक दामों पर बेचा. खरीदारों की कोई कमी नहीं थी, क्योंकि लोग इस महंगे पत्थर को खरीदने के लिए लालायित थे.

लेकिन हीरों की जमाखोरी की प्रवृत्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा हीरों के मूल्य में और तेजी की संभावना ने हीरों के व्यापार पर डी बीयर्स के नियंत्रण के लिए संकट पैदा कर दिया. कुछ जौहरी जो पहले और हीरों की खरीद के लिए उत्सुक थे, अब अपने पास बिना बिके हुए रह गए हीरों के कारण इस में अरुचि दिखाने लगे. उन के पास जो माल जमा था, उस पूंजी पर भारी ब्याज उन्हें देना पड़ रहा था और माल जमा हो जाने से भाव गिरने लगे थे.

इस कारण ये जौहरी बहुत परेशान हो गए. बाजार में हीरों की अधिकता के कारण बाजार में बिलकुल मंदी आ गई और दाम निरंतर गिरते गए.

हीरों की इस बहुलता के कारण ही डी बीयर्स ने अब बड़े व अच्छे किस्म के हीरों तथा कुछ ऐसे छोटे हीरों का ही उत्पादन करने का निर्णय लिया है, जिन की अभी मांग है. जो खानें डी बीयर्स के स्वामित्व में नहीं हैं, उन से भी वह लाभ उठा रही है. इस बारे में एक समझौता हुआ है.

समझौते के अनुसार डी बीयर्स प्रत्येक हीरा उत्पादक से निश्चित मात्रा में हीरे खरीदती है. इस का परिणाम यह हुआ है कि अनेक देशों के पास बिना बिके हुए हीरे पड़े रह गए हैं. बोत्सवाना के पास, जो स्वतंत्र रूप से हीरों का उत्पादन करने वाले महत्त्वपूर्ण देशों में से एक है, 10 करोड़ डालर मूल्य के बिना बिके हीरे जमा हो गए हैं. डी बीयर्स के अध्यक्ष हैरी ओपेनहाइमर के अनुसार बात्सवाना की ज्वानेंग की नई हीरा खान संभवतः किंबरली की खोज के बाद हीरों की सब से महत्त्वपूर्ण खान है.

ऐसी आशा है कि इस नई खान से दक्षिणी अफ्रीका और रूस के हीरों से भी ज्यादा बड़े हीरे निकलेंगे. 1982 में हीरों का अनुमानित उत्पादन 30 लाख कैरेट है. अगले वर्ष से 45 लाख कैरेट वार्षिक उत्पादन का अनुमान है. यह डी बीयर्स के कुल उत्पादन का चौथाई है.

अमरीका व दक्षिणी अफ्रीका जो बड़े हीरों की पालिश के लिए विख्यात हैं, हीरों में आई मंदी के कारण काफी संकट महसूस कर

हीरा

हीरा सब रत्नों में सब से अधिक कीमती रत्न है. मूल रूप में यह क्रिस्टल के रूप में कार्बन ही होता है. इस के बनने में हजारों साल लग जाते हैं. पृथ्वी की सतह के पास पहुंचने से पूर्व यह काफी गहराई में भूगर्भीय जल और गैसों में तैरता रहता है. यह गहरी नदियों की कंकरीली सतह पर भी मिल सकता है और पृथ्वी की सतह से सवा तीन मील की गहराई में भी.

चट्टान की जिस परत में हीरा होता है, वह खुदाई के बाद एक पतली सी परत की तरह बिखर जाती है. खुली हवा तथा नमी के कारण यह अंश मुलायम हो जाता है और इस का रंग भी नीला हो जाता है. इसी लिए इसे 'ब्लू ग्राउंड' भी कहते हैं. इस के बाद इसे तोड़ा जाता है और इस से चिपके अन्य खनिजों आदि को हटा कर साफ किया जाता है.

दिल्ली के मशहूर जौहरी बद्री मेहता ने हीरे की सफाई की विधि के संबंध में बताया "जिन पत्थरों में हीरा होता है, उन्हें तोड़ कर ऐसी मेज पर रखा जाता है, जिस पर ग्रीस की छः इंच मोटी तह होती है. यह मेज हिलती रहती है. हीरे मेज पर बहुत मजबूती से चिपक जाते हैं. फिर पानी की एक बहुत मोटी धार मेज पर छोड़ी जाती है. हीरे इतनी दृढ़ता से ग्रीस से चिपके रहते हैं कि उसे छोड़ कर बाकी सभी चीजें मोटी धार में बह जाती हैं. हीरे ग्रीस से बड़ी दृढ़ता से चिपकते हैं इसलिए इन्हें बाद में भी हाथ से अलग किया जाता है. इस के बाद इस पर से ग्रीस साफ करने के लिए इसे बहुत तेज अम्ल में उबाला जाता है. सफाई के बाद हीरों को उन के आकार, रंग व निर्मलता के अनुसार छांटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं. वहां बहुत कम कारखाने अपनी सामान्य क्षमता से काम कर रहे हैं.

रूस अपने प्रतिस्पर्धियों की तुलना में कुछ कम मूल्य पर पालिश किए हुए हीरे बेचता है. लेकिन हीरों के लिए उस की कोई मान्य नीति नहीं है. बेल्जियम में हीरों की स्थिति अच्छी होने की संभावना है, क्योंकि वहां हीरे तराशने की लागत में कमी आई है.

भारत में हीरेजवाहरात के थोक बाजार में यह धारणा है कि विश्व में हीरों में आई इस मंदी का भारत को काफी लाभ हो सकता है. भारत में हीरे तराशने की मजदूरी विश्व में सब से कम है, क्योंकि यहां मजदूरी अभी बहुत सस्ती है. इस कारण भारतीय हीरों का मूल्य अंतरराष्ट्रीय बाजार में काफी कम रह सकता है.

हीरों के मूल्य में गिरावट

बद्री मेहरा ने बताया, "विश्व में हीरों के मूल्यों में जो भारी गिरावट आई है, वह भारतीय हीरों के निर्यात के लिए लाभदायक सिद्ध होगी. यह ठीक है कि विश्व के बड़े जौहरियों का मुकाबला करने के लिए भारत को अपने हीरों के मूल्यों में और कमी करनी पड़ेगी, लेकिन इस से हमारा नुकसान लगभग नहीं के बराबर होगा, क्योंकि यहां हीरे तराशने की मजदूरी सब से कम है."

'त्रिभुवनदास भीमजी जवेरी' फर्म के किशोरभाई जवेरी भी बहुत आशावान हैं. उन का कहना है, "पश्चिमी एशिया के हीरा बाजार पर से इजराइल की पकड़ ढीली पड़ने का सब से ज्यादा लाभ भारत को ही होगा. कुछ समय पहले पश्चिमी एशिया के अरब देशों में इजराइली माल पर प्रतिबंध लगा दिया गया है, इसलिए वहां भारतीय हीरों की मांग बहुत बढ़ गई है. हमारे हीरों का निर्यात भविष्य में और बढ़ेगा."

कुवैत ने भारत की 14 कंपनियों से हीरों के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया है, क्योंकि ये भारतीय फर्में हीरों को इजराइल से आयात कर उन्हें भारत में तराश कर फिर कुवैत को निर्यात करती थीं. **(शेष पृष्ठ 135 पर)**

लिया जाता है. फिर निर्मलता व रंग के अनुसार ही उन्हें विभिन्न श्रेणियों में बांट दिया जाता है."

अधिकतर हीरे रत्न की श्रेणी के नहीं होते. यहां तक कि सर्वश्रेष्ठ किस्म के रत्न भी अपनी प्राकृतिक अवस्था में अनघड़ आकार के हो सकते हैं और उन पर फिल्म या 'स्किन' चढ़ा हो सकता है, जिस से ये कपड़े धोने वाले सोडे की तरह दिखाई देते हैं. शायद यही कारण है कि मध्य युग के दौरान हीरों को माणिक या पन्ना से निम्न स्तर का समझा जाता था.

सब से पहले हीरा भारत में पाया गया. धीरेधीरे इस की खोज और जगह भी होती गई और आज ब्राजिल, दक्षिण अफ्रीका, किंबरली, टांगानीका, पश्चिमी, मध्य व पूर्वी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, साइबेरिया (रूस) तथा अमरीका में इस का बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है. हीरे का वजन बहुत महत्त्व रखता है. इस का वजन नापने की इकाई कैरेट है. एक कैरेट 200 मिलीग्राम के बराबर होता है. हर दृष्टि से पूर्ण हीरे को पहले पानी का हीरा कहते हैं. यह पूरी तरह से दोषरहित होता है.

दूसरे स्तर के हीरे वे होते हैं, जिन्हें तराशने व पालिश करने के बाद लगभग पूरी तरह दोषरहित बना दिया जाता है.

तीसरे स्तर के हीरे पीले, हरे, भूरे या सफेद शेडों में बिलकुल साफ या धब्बेदार हो सकते हैं. जिन हीरों में अधिक धब्बे होते हैं, उन्हें औद्योगिक हीरों के रूप में प्रयोग किया जाता है. हीरों के विषय में पहले लोगों का विश्वास था कि हीरे काटे नहीं जा सकते. लेकिन भारतीय जौहरियों ने हीरे को काट कर इस विश्वास को झुठला दिया.

हीरे को तराशने की सब से लोकप्रिय शैली को 'ब्रिलिएंट कट' कहते हैं. इस ढंग से तराशने पर हीरा अपने सब से सुंदर रूप में आ जाता है. इस शैली का आविष्कार वेनिस के एक जौहरी ने किया था. इस शैली से तराशे गए हीरे में 58 फलक होते हैं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाबाश

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

ग्रामीण ने डकैत मारा

कानपुर में सिकंदरा थाने के ग्राम दुर्गापुर में ग्रामीणों एवं डकैतों के मध्य हुई एक मुठभेड़ में एक डकैत मारा गया. मृतक 1978 से डकैती कर रहा था तथा आधी दरजन से अधिक डकैतियों के सिलसिले में पुलिस उस की तलाश में थी.

पुलिस के अनुसार लाठी, डंडों तथा बंदूकों से लैस एक दरजन सशस्त्र डकैतों ने अचानक दुर्गापुर के एक निवासी के यहां धावा बोल कर लूटपाट करनी शुरू कर दी. जैसे ही डकैतों के आने की सूचना ग्रामवासियों को हुई, उन लोगों ने उस ग्रामीण के मकान को घेर कर डकैतों को ललकारा. इस से पूर्व कि डकैत कुछ समझें, वहीं का एक 20 वर्षीय निवासी शिवकुमार अपने घर से लाइसेंसी बंदूक ले कर आ गया और उस ने गोलियां चलानी शुरू कर दीं, जिस से उक्त डकैत घटना स्थल पर ही मर गया तथा शेष भागने में सफल हो गए.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक : अशोककुमार सोनी)

*

भाई की प्राण रक्षा के लिए बहन का शौर्य प्रदर्शन

किरंदुल के निकट एक 10 वर्षीय बालिका ने विचित्र शौर्य प्रदर्शन कर अपने छः वर्षीय चचेरे भाई देवा को चीते के आक्रमण से बचा लिया. उक्त बालिका अपने भाई के साथ गाय चरा कर लौट रही थी कि सामने से चीते ने उस के भाई पर हमला कर दिया. बालिका ने चीते को पत्थरों से मारमार कर भगा दिया. **—आज, वाराणसी (प्रेषक: रमेशकुमार तलेजानी)**

*

भाभी की प्राण रक्षा के लिए ननद ने जान दे दी

बुलंदशहर में सशस्त्र डाकुओं के एक गिरोह से अपनी भाभी को बचाने के लिए एक ननद ने अपनी जान दे दी. फिर भी डाकू उस की भाभी को गंभीर घायल कर लगभग 40 हजार रुपए मूल्य के संपति लूट कर भागने में सफल हो गए.

प्राप्त जानकारी के अनुसार शिकारपुर थाने के तैयबपुर गांव में लगभग एक दरजन बदमाशों का गिरोह एक ग्रामीण के मकान में घुस आया और अंधाधुंध गोलियां चला कर पहले तो ग्रामीणों को आतंकित किया, फिर घर की महिलाओं के साथ मारपीट शुरू कर दी.

डाकुओं ने जब उस ग्रामीण की पत्नी के साथ मारपीट की तो उस की ननद अपनी भाभी को बचाने के लिए डाकुओं से जूझ गई और उस ने [illegible] डाकू को अपनी बांहों में जकड़ लिया. इस पर डाकुओं ने उस की गोली मार कर हत्या कर दी.

—[illegible]नगण, जोधपुर (प्रेषक : हरीशकुमार)

(सर्वोत्तम)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या और ही है दहेज के सिवा

रेडियो, टेलीविजन और पत्र-पत्रिकाओं में प्रायः दहेज के खिलाफ बहत कुछ पढ़नेसुनने को मिलता है. कम दहेज देने के कारण बहू की हत्या कर दी गई; बहू का इतना अधिक उत्पीड़न किया गया कि उस ने तंग आ कर आत्महत्या कर ली या पिता के घर जा कर रहने लगी, पति ने पत्नी को छोड़ दिया आदि समाचार आए दिन प्रकाश में आते रहते हैं.

इस तरह की घटनाओं का कारण दहेज को बताते हुए, विवाह में लेनदेन की समस्या का जो भयंकर चित्र खींचा जाता है, वह वास्तव में दिल दहला देने वाला होता है. दहेज को एक भयंकर समस्या मान लेने से पहले यह विचार करना चाहिए कि क्या वास्तव में यह समस्या इतनी विकराल है, जितनी बताई जाती है.

आपसी मनमुटाव, दांपत्य संबंधों में टूटन और तलाक जैसी समस्याओं के पीछे दहेज की वजह बता कर उस का रोना रोया जाता है पर क्या सचमुच इन सब के लिए दहेज जिम्मेदार है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harid

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

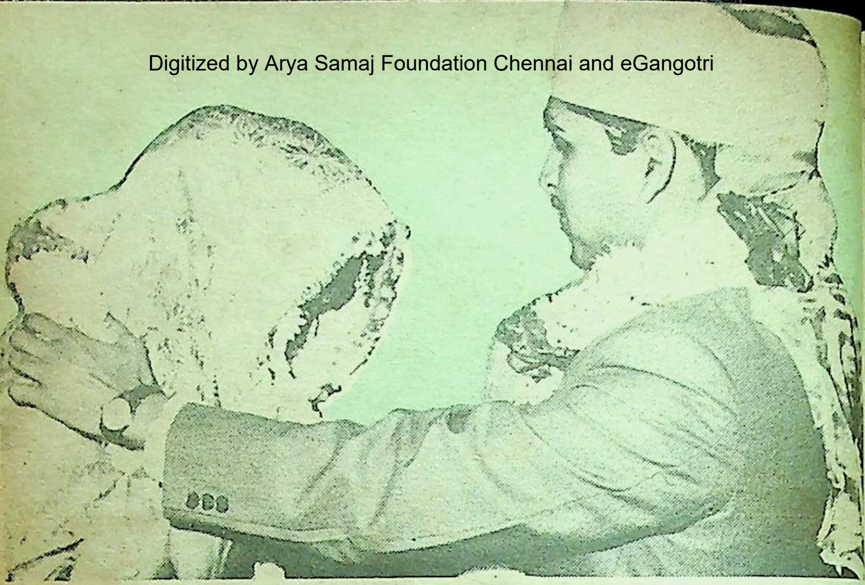

सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ विवाह बाद में आपसी कटुता का कारण क्यों बन जाता है?

हमारे देश में सैकड़ों जातियां हैं. सभी जातियों में ब्याहशादी के रिवाज अलगअलग हैं. कुछ ही जातियां ऐसी हैं जिन में लड़की वालों से दहेज ठहराया जाता है. लड़के की बोली सी लगाई जाती है और सौदा तय होता है. बहुत सी जातियां ऐसी भी हैं जिन में लड़के वाले लड़की वाले को भेंट, उपहार या लड़की की कीमत देते हैं. बहुत सी जातियां ऐसी भी हैं, जिन में लेनदेन के बारे में कोई बात तय नहीं होती. अतएव निर्विवाद रूप से यह कहा जा सकता है कि दहेज प्रथा कुछ ही जातियों में प्रचलित है. यह प्रथा अगर सचमुच समस्या है तो कुछ जातियों के लिए ही है. इसे प्रत्येक परिवार की समस्या नहीं कहा जा सकता.

जब कभी इस प्रथा की शुरुआत हुई थी तो उस का रूप विवाह के समय लड़की को भेंट या उपहार के रूप में, पिता की संपत्ति में से उस का हिस्सा देना ही था. उस वक्त लड़की को जो कुछ दिया जाता था, वह पिता की संपत्ति में से उस का हिस्सा देने के अलावा यह भी समझा जाता था कि लड़की को अपना परिवार बसाने के लिए पिता की ओर से मदद की जा रही है.

विवाह के बाद लड़की को पिता की संपत्ति में से कोई हिस्सा नहीं दिया जाता था. पिता के मरने पर संपत्ति का बंटवारा पुत्रों के बीच ही होता था.

संशोधित हिंदू कानून अधिनियम के अनुसार लड़की भी पिता के धन में बराबर की भागीदार है, किंतु व्यवहार में ऐसा शायद ही कहीं होता है. पिता के मरने पर उस की छोड़ी हुई संपत्ति लड़के ही आपस में बांट लेते हैं. दहेज प्रथा को समूल नष्ट करने की बात कहने वाले लोग क्या विवाहित लड़की को उस के पैतृक धन में समान हिस्सा दिलवाने की जिम्मेदारी लेंगे?

दहेज प्रथा के बारे में इस सचाई से इनकार नहीं किया जा सकता कि इस का स्वरूप विकृत हुआ है और लड़के वाले कन्या पक्ष की हैसियत से ज्यादा माल वसूल करने की कोशिश करते हैं. लेकिन इस के लिए केवल लड़के वाले ही दोषी नहीं हैं. लड़की वाले भी अपने परिवार में किसी लड़के की शादी के समय वैसा ही रवैया अपनाते हैं जैसा कि लड़की की शादी के समय उन के प्रति अपनाया गया था. हर परिवार की हालत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यह है कि लड़की की शादी के समय तो अभिभावक दीनहीन बन कर अपनेआप को दहेज से त्रस्त बताते हैं किंतु लड़के की शादी के समय शेर बन कर झपट्टा मारने के लिए उतारू रहते हैं. ऐसी हालत में दहेज प्रथा में आई विकृतियों को कौन दूर करे? क्योंकि हरेक व्यक्ति लड़के और लड़की की शादी के समय अलगअलग मुखौटा पहन कर चेहरा बदल लेता है.

औरों की बात छोड़िए, जो लोग दहेज के खिलाफ बढ़चढ़ कर बोलते, बातें करते और सिद्धांत बघारते हैं, वही लोग लड़की के समय तो अटल सिद्धांतवादी बनने का ढोंग रचते हैं और लड़के की शादी के समय सिद्धांतों को केंचुली की तरह उतार कर फेंक देते हैं.

दहेज प्रथा की शुरुआत बुरे उद्देश्य से नहीं हुई, आज भी उस में उतनी बुराई नहीं आई है जितनी बताई जाती है. एक समाज सेविका होने के नाते लेखिका के पास कई परिवारों के लोग अपने आपसी झगड़े सुलझाने के लिए आते रहते हैं. इन झगड़ों में जिन का संबंध दहेज से बताया जाता है. उन का अध्ययन और विश्लेषण करने के बाद यही निष्कर्ष सामने आया कि अधिकांश झगड़ों का दहेज से कोई सीधा संबंध ही नहीं होता.

पारिवारिक झगड़ों का कारण

अधिकांश पारिवारिक झगड़े पतिपत्नी में तालमेल न बैठ पाने के कारण होते हैं. न जाने क्यों पति और पत्नी दोनों में अहं की भावना इतनी ज्यादा भरी होती है कि दोनों ही एक दूसरे के सामने किसी हालत में झुकना नहीं चाहते. तालमेल बिठाने का तरीका तो यह है कि एक पक्ष ज्यादा अड़ा हुआ है तो दूसरा झुक जाए. पतिपत्नी दोनों ही अपने स्वभाव में इतना लचीलापन ले आएं तो परिवार बड़े मजे से चलता रहता है. लेकिन

रोजरोज पड़ौसियों से बहू के बारे में बात करने से आपसी रिश्तों में कडवाहट आ जाती है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा नहीं हो पाता और छोटीछोटी बातें तूल पकड़ लेती हैं, पतिपत्नी के संबंधों में दरार पैदा हो जाती है. आखिरकार संबंध टूटने की नौबत आ जाती है और कह दिया जाता है कि लड़की को दहेज के लिए सताया जा रहा है.

झगड़ा किसी भी बात पर हो, कारण दहेज ही बताया जाता है. लेखिका के पास ऐसी कई घरेलू समस्याएं आती रहती हैं जिन का सिरपैर कुछ नहीं होता. थोड़ी सी गलतफहमी या नासमझी होती है, लेकिन उस की वजह से पारिवार टूटने की नौबत आ जाती है.लेखिका के पास आनी रहने वाली समस्याओं में से दोतीन का उल्लेख ही यहां किया जा रहा है :

एक पिता अपनी लड़की को ले कर आया और अपने दामाद की शिकायत करने लगा, ''उस में बात करने का सलीका नहीं है. उस के घर में टेलीविजन, फ्रिज यहां तक कि पंखे भी नहीं हैं.'' लेखिका ने पूछा कि ''जब आप ने अपनी लड़की की शादी की थी तो ये चीजें उन के पास थीं.''

वह बोला, ''नहीं.''

''जब शादी के पहले ये चीजें दामाद के पास नहीं थीं और आप को यह भी मालूम था कि लड़का कम पढ़ालिखा है तो आप ने उस से अपनी बेटी के शादी ही क्यों की?'' लेखिका के इस सवाल का लड़की के बाप के पास जवाब नहीं था.

एक दिन बिना सूचना दिए जब लेखिका लड़की की ससुराल गई तो देखा कि उन के घर में पंखे नहीं थे. मईजून के दिन थे, झुलसाने वाली गरमी पड़ रही थी. सब लोग बिना पंखे के बैठे थे, लेकिन लड़की, जो उस परिवार की बहू थी, अपने कमरे में सो रही थी. घर वालों ने उस के कमरे में टेबलफैन रखवाया था.

देख कर यह आश्चर्य हुआ कि ससुराल वाले बहू का कितना ध्यान रखे हैं और लड़की के बाप की अकल पर तरस भी आया कि वह ससुराल वालों की त्याग भावना को भुला कर किस लिए शिकायत करने आया. हो सकता ... निकली हो, ... लड़की ने गलतफहमी में आ कर पिता सामने इस रूप में रखा हो कि वह उसे दाम की ओर से मांग समझ बैठा हो.

एक दिन एक वकील साहब अपनी ... को तलाक दिलवाने के लिए आए. लेखिका कहा, ''आप तो खुद वकील हैं. कोर्ट में जा तलाक दिलवा सकते हैं. यदि समझौता क चाहें तो हम आप की मदद कर सकते हैं उन्होंने कहा, ''समझौता तो हम करना नहीं चाहते. आप के पास इसलिए आए हैं कोर्ट जब तक फैसला करेगा तब तक दह का सामान खराब हो जाएगा. वह साम हमारे पास सुरक्षित पहुंच जाए, इस के लि आप की मदद चाहिए.''

जाहिर है कि वकील साहब अपनी ... का तलाक किन्हीं और कारणों से चाहते किंतु दहेज का प्रश्न इस तलाक का कारण होते हुए भी दूसरे रूप में इस समस्या में जु हुआ था.

एक समस्या प्रेम विवाह के दो मही बाद ही तलाक की थी. लड़की जिस ने ... विवाह किया था, दो महीने बाद ही पति झगड़ कर एक सहेली के साथ लेखिका के पा आई. सहेली उस के पति को जानती ... लेखिका ने उस से लड़की के पति के बारे पूछा तो उस ने बताया कि कुछ दिनों पहले उस की जानपहचान लड़की के पति से ... थी. एक बस दुर्घटना में चोट लगने पर ... व्यक्ति ने सहेली की सहायता की, ... हस्पताल पहुंचाया. ऐसा रहमदिल इन्सा किस तरह अपनी पत्नी पर अत्याचार ... सकता है.

बाद में पता चला कि लड़की बह जबान चलाती थी और अलग रहना चाह थी. पति मांबाप से अलग नहीं होना चाह था, किंतु पत्नी का मन रखने के लिए ... मांबाप से अलग रहने को भी तैयार हो गया उस ने केवल इतना चाहा था कि वह बस कु दिन रुक जाए और किसी बहाने से अलग हो जैसे कहीं और काम मिलने या तबादला हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के आधार पर मातापिता के सामने अलग रहने का प्रस्ताव रखा जाए. पर लड़की तुरंत अलग होने पर जोर दे रही थी. इसी बात को ले कर दोनों में तकरार हुई और लड़की विवाह संबंध तोड़ने की बात सोचने लगी.

इस तरह की कई छोटीमोटी नासमझियां होती हैं जिन के परिणाम पारिवारिक कलह, संबंध टूटने और पति या पत्नी में से किसी के भी आत्महत्या कर लेने के रूप में सामने आते हैं. ऐसे मामलों के लिए भी दहेज को जिम्मेदार ठहराया जाता है. कुछ मामलों में तो जानबूझ कर ऐसी दुर्घटनाओं के लिए दहेज का कारण बताया जाता है. इस संदर्भ में एक घटना का उल्लेख करना उपयुक्त होगा. लेखिका के पड़ोस में एक बहू, जो दो बच्चों की मां भी बन चुकी थी, जल कर मर गई.

उस परिवार को हम अच्छी तरह जानते हैं, उन सभी के आपसी संबंध बहुत मधुर थे उस लड़की को पति का प्यार और सासससुर का लाड़दुलार भी भरपूर मिल रहा था. जिस समय वह जल कर मरी , उस समय सासससुर गुरुद्वारे गए हुए थे. बहू स्टोव पर साबुन गरम कर रही थी. असावधानीवश उस के कपड़ों में आग लग गई और बुरी तरह जल जाने से उस की मृत्यु हो गई.

इस घटना ने परिवार के लोगों और पड़ोसियों को भी शोकसंतप्त कर दिया. जब बहू की अर्थी ले जाई जाने लगी तो उस के मातापिता ने आरोप लगाया कि उन की बेटी को दहेज के लिए सताया जाता था और अब उसे जला कर मार दिया गया है.

ठीक इसी तरह की एक और दुर्घटना घर के अन्य सभी लोगों की अनुपस्थिति में घटी पर फर्क इतना था कि लड़की ने खुद अपने हाथों से अपने कपड़ों में आग लगा ली थी. उस ने आत्महत्या इसलिए की थी कि उसे पति ने श्रीनगर जाने से रोक दिया था. यह घटना घटने के बाद दाह संस्कार के समय लड़की के अभिभावकों ने दहेज के लिए हत्या का आरोप लगाया.

किसी दुर्घटना में हुई बहुओं की

अस्वाभाविक मौत या आत्महत्या के लिए लड़की के अभिभावक ससुराल वालों को दोषी ठहराते हैं, हालांकि इस का कारण कुछ और ही होता है. दहेज के लिए उत्पीड़न या हत्या के आरोप का एक ही उद्देश्य होता है कि लड़की वाले शादी में दिया गया सामान वापस लेना चाहते हैं. वे सोचते हैं कि लड़की तो अब रही नहीं. उस परिवार से जो भी संबंध था, वह लड़की के कारण ही था. कन्यादान के रूप में दिया गया 15–20 हजार रुपए का सामान वापस लिया जा सकता है तो क्यों न लें.

कई बार ऐसा भी होता है कि शादीब्याह के समय लड़की वालों और लड़के वालों में किन्हीं बातों को ले कर तनाव की स्थिति पैदा हो जाती है. ऐसे अवसरों पर अधिकांश मामलों में लड़की वालों को झुकना पड़ता है किंतु मन में प्रतिशोध और वैमनस्य की गांठ तो पड़ ही जाती है. संयोग से लड़की की अस्वाभाविक मौत हो जाती है तो उस के अभिभावकों को प्रतिशोध का अच्छा मौका मिल जाता है. दहेज में दिया गया सामान वापस लेने का लोभ उस प्रतिशोध की आग में घी का काम करता है और सासससुर पर बहू को दहेज के लिए मार डालने का आरोप लगा दिया जाता है.

हो सकता है कुछ बहुएं वास्तव में दहेज कम मिलने के उलाहने सुन कर तंग आ जाती हों और अपनी जिंदगी से खिलवाड़ कर बैठती हों, किंतु सभी बहुएं दहेज के कारण मरती हैं या नए बनते परिवार केवल दहेज के कारण ही टूटते हैं, यह कहना तिल को ताड़ नहीं पहाड़ बना कर बताने जैसा है.

दहेज की विभीषिका जितनी बढ़ाचढ़ा कर बताई जाती है, वास्तव में यह समस्या उस के अंश बराबर भी भयकर नहीं है. यह परंपरा विकृत जरूर हो गई है. विकृतियों को हटाया जाए और दहेज को कन्यादान, बेटी का उपचार, पिता की संपत्ति में हिस्से के रूप में रहने दिया जाए तो कोई हर्ज नहीं है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता मुक्ता विस्तार योजना में भाग लीजिए

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं किया फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. आ भी हजारों वर्ग मील भारतीय भू विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पूर्ति लिए बहुत बड़े पैमाने पर सामूहि सहयोग और सद्भाव की आवश्यक होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्थान, व पूंजीपति या राजनीतिक दल से संबंधि नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रकार व सहायता स्वीकार करती है. यह केव एक ही वर्ग की सहायता और बलबूते प निर्भर है. और वह हैं सरिता के पाठव इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्साहन सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती है

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी पूंजी सरकार का और देशी व विदेशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3–ई, रानी झांसी मार्ग, नई दिलली–110055.

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बार जब मैं मायके आई तो मां ने एक चौंकाने वाली खबर से मेरा स्वागत किया. मैं अभी हाथमुंह धो कर चाय पीने बैठी ही थी कि वह बोलीं, "सुमि तेरी सहेली स्मिता की सगाई हो गई है. अगले महीने शादी है."

मैं ने पूछा, "पर वह तो रिसर्च कर रही थी और कहती थी कि जब तक रिसर्च पूरी नहीं होगी, शादी नहीं करूंगी. क्या पीएच.डी. पूरी हो गई?"

"यह तो मुझे पता नहीं, बेटी" मां कह कर खाना बनाने में लग गईं.

मैं मन ही मन बहुत व्याकुल हो उठी. स्मिता मेरी हाई स्कूल से ले कर एम.ए. तक सहपाठी रही थी. मैं और वह दोनों हमेशा प्रथम आते थे. कभी उस का एक नंबर ज्यादा तो कभी मेरा. एम.ए. में भी हम दोनों का एक ही विषय 'अर्थशास्त्र' होने के कारण हमारी घनिष्ठता बहुत बढ़ गई थी. दोनों का इरादा एम.ए. के बाद रिसर्च करने का था.

जब हम दोनों इंटर में थे तो अपने नाम के आगे डाक्टर लिखलिख कर देखा करते थे. इरादे दृढ़ थे. मेहनत से घबराते नहीं थे. अतः हमारा पीएच.डी. करने का कार्यक्रम बिलकुल पक्का था.

पर अफसोस कि मेरी शादी एम.ए. करते ही हो गई. मैं ने बहुत मना किया, परंतु हमारे मध्यमवर्गीय परिवारों में एक तो अच्छे लड़के मिलते ही बहुत मुशकिल से हैं. दूसरे अधिक पढ़ीलिखी लड़की के लिए लड़का उस से भी अधिक पढ़ालिखा चाहिए. अतः पिताजी की इस मजबूरी के आगे मुझे अपनी जिद छोड़नी पड़ी. पीएच.डी. करने की इच्छा दिल ही में रह गई.

नए अंकुर

शोधकार्य

कहानी • प्रदीप कौर

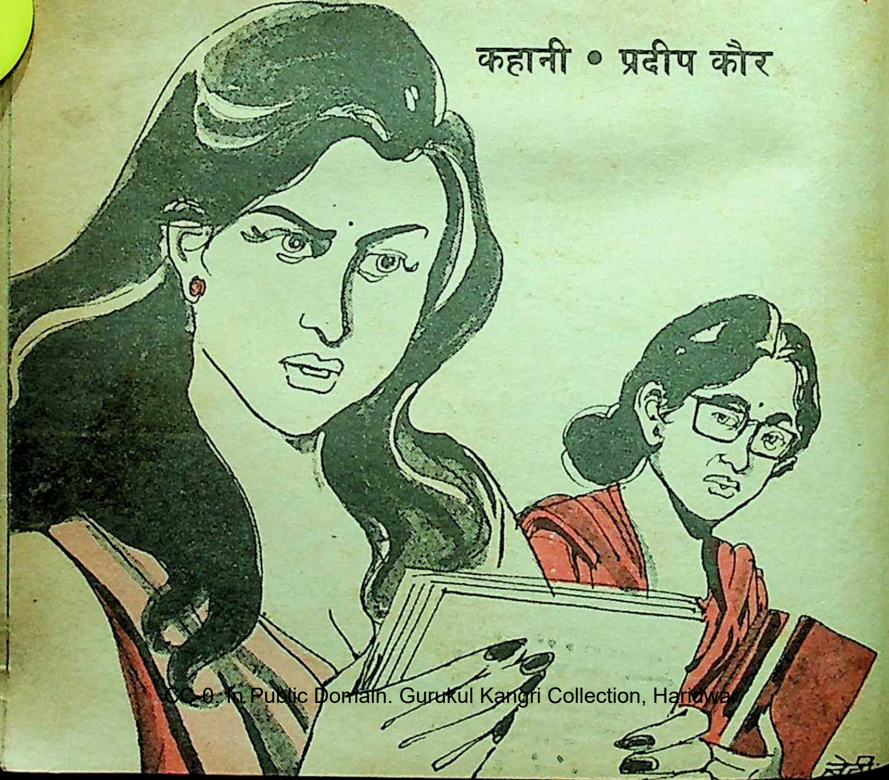

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

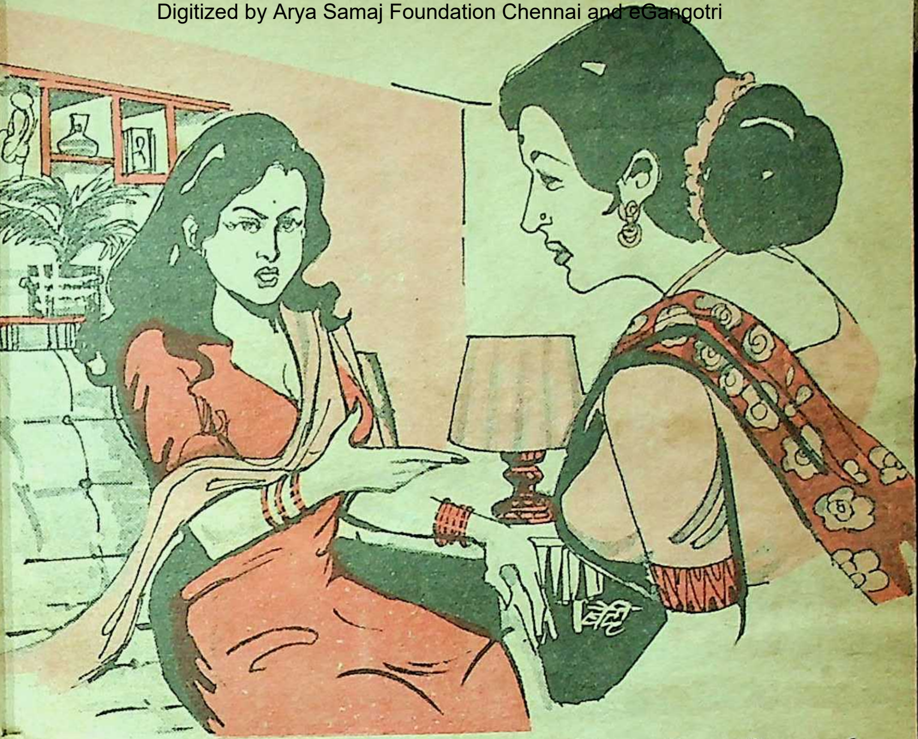

"पीएच.डी. मेहनत से नहीं होती, या तो इस के लिए नोट चाहिए या फिर तगड़ी जानपहचान" स्मिता ने उत्तेजित हो कर कहा.

यद्यपि मुझे बहुत नेक व पढ़ालिखा पति मिला है, पर आज भी मन में टीस उठती है कि मेरा शोध करने का सपना अधूरा ही रह गया. परंतु स्मिता के पिताजी मेरे पिताजी से अधिक स्वतंत्र विचारों के हैं. शायद यह फर्क इसलिए भी है कि वह दफ्तर में बाबू हैं और मेरे पिताजी एक दुकानदार. इसलिए वह उस के पीएच.डी. करने के विरोध में नहीं थे. जब स्मिता ने पीएच.डी. करनी शुरू की थी तो मेरे मन में और भी पीड़ा हुई थी. शायद यह ईर्ष्या की भावना ही थी कि एम.ए. तक बराबर रहने के बाद वह मुझ से आगे निकल रही थी.

मेरी ससुराल काफी दूर है. एक तो मायके जल्दीजल्दी आ नहीं पाती थी. दूसरे काफी अरसे के बाद आने के कारण परिचितों से मिलनाजुलना [illegible] था. वजह की कमी के कारण स्मिता से मिले मुझे डेढ़ साल हो चला था.

जब मैं पिछली बार उस से मिली थी तो उस ने अपनी शोध की रूपरेखा (सिनापसिस) विश्वविद्यालय भेजी हुई थी. उसी ने बताया था कि आजकल में उस का पंजीकरण पत्र आने वाला है. उस के बाद वह काम शुरू कर देगी. तो क्या उस ने डेढ़ वर्ष में ही काम पूरा कर लिया? कर लिया होगा. वह थी तो प्रारंभ

सुमि और स्मिता दोनों ने खूबसूरत भविष्य के सपने संजोए थे, पर अचानक ही उन के सपनों का महल चरचूर हो गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

से ही मेधावी. बिना... Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri ...रूपकार्य पूरा किए उस का शादी का इरादा बिलकुल नहीं था. साथ ही वह अत्यंत दृढ़ निश्चयी भी थी. इन्हीं विचारों में मुझे नींद आ गई.

शाम को उठी थी तो सब से पहला खयाल स्मिता से मिलने का आया. मुझे इतनी उत्सुकता स्मिता से मिलने या उसे सगाई की बधाई देने की नहीं थी, जितनी उस की पीएच.डी. के बारे में मालूम करने की थी. क्योंकि पीएच.डी. मेरे जीवन का भी एक उद्देश्य थी, जिसे मैं पूरा नहीं कर पाई थी. मैं कपड़े बदल कर उस के घर चल पड़ी. जैसे ही मैं शंकर रोड पहुंची, स्मिता मुझे अपने घर के दरवाजे पर ही खड़ी मिल गई.

मुझे देख कर वह चहक उठी, "अरे सुमि, तू कैसे, कब आई? जीजाजी भी आए हैं?" उस ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी.

"अंदर तो आने दे" मैं ने उसे हलके से धकेला और अंदर प्रवेश किया. स्मिता की माताजी रसोई में थीं. मेरी आवाज सुन कर वह भी बाहर आ गईं.

"नमस्ते चाचीजी" मैं ने अभिवादन किया.

"जीती रहो बेटी" उन्होंने कहा और मेरा कुशलक्षेम पूछने लगीं. थोड़ी देर बाद वह चाय बनाने चली गईं और स्मिता मुझे अपने कमरे में ले आई.

"बधाई हो" मैं ने कहा तो वह हंस पड़ी.

"हूं, तो मुबारकबाद देने आई है."

"हां, मुबारक देने भी और तुझ से मिलने भी" मैं ने कहा.

"जीजाजी नहीं आए?"

"नहीं, वह अगले हफ्ते आएंगे, अभी छुट्टी नहीं मिली. अच्छा स्मिता यह तो बता तेरी पीएच.डी. हो गई? मुझ से रहा न गया तो मैं ने पूछ ही लिया.

"हां."

"पूरी हो गई?" मैं ने हैरान हो कर कहा.

"और क्या" उस ने छोटा सा उत्तर दिया.

"तब फिर तो तू डाक्टर बन गई डाक्टर स्मिता, है न" मैं ने कहा.

"अरे कहां, कैसी डाक्टर?" उस ने गहरी सांस लेते हुए उत्तर दिया.

"क्यों? क्या अभी थीसिस (शोध प्रबंध) भेजी नहीं."

"थीसिस? तू भी क्या बात करती है सुमि, मेरा तो अभी पंजीकरण ही नहीं हुआ" वह भरे स्वर में बोली.

"दो साल में पंजीकरण भी नहीं हुआ" मेरे आश्चर्य की सीमा न थी.

"और क्या सुमि, तू समझती है पीएच.डी. बच्चों का खेल है."

"पर, तू तो बहुत मेहनती थी."

"पीएच.डी. मेहनत से नहीं होती, या तो इस के लिए नोट चाहिए या फिर तगड़ी जानपहचान." उस ने उत्तेजित हो कर कहा.

"क्या डा. निर्मला ने तेरी सहायता नहीं की?"

"डा. निर्मला" वह व्यंग्य से मुसकराई और बोली, "उसे पीएच.डी. करानी आती ही कहां है. उस ने खुद भी पीएच.डी. नहीं की है."

"मगर फिर वह डाक्टर कैसे लिखती है अपने नाम से पहले. विभागाध्यक्ष कैसे है वह?" मैं ने पूछा.

"सुमि, सुनना चाहती है तो सुन, डा. निर्मला के पति ने उन्हें रिसर्च कराई है और वह भी किसी की सामग्री चुरा कर डा. निर्मला को खुद तो रिसर्च का क, ख, ग, भी नहीं आता. पहले मुझे खुद ही विषय दिया—'राजकोषीय नीति की भूमिका.' एक साल तो एक पेज की रूपरेखा लिखवाने में लगा दिया. 'कल आना', 'एक हफ्ते के बाद आना,' 'अभी समय नहीं है,' 'अगले महीने चैक कर दूंगी.'

"ऐसी बातों में एक साल बीत गया. जब थकहार कर मैं ने खुद ही रूपरेखा लिख कर भेजी तो रिसर्च डिगरी कमेटी ने मेरा विषय ही बदल दिया. नया विषय दिया 'राजकोषीय नीति की भूमिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्फीति नियंत्रण में.' वहां से आदेश आया रूपरेखा दोबारा भेजो. मैं डा. निर्मला के पास गई. उन्होंने थोड़ा बहुत ध्यान दिया. मैं ने नए सिरे से रूपरेखा लिखी. फिर भी पंजीकरण नहीं हुआ. डा. निर्मला से बात की तो बोलीं, 'यहां के डिगरी कालिज के अर्थशास्त्र के प्रोफेसर डा. श्रवणकुमार रिसर्च डिगरी कमेटी के सदस्य हैं. वह मुझ से चिढ़े हुए हैं. इसी लिए तुम्हारा काम नहीं हो रहा.'

''तो तुम ने डा श्रवणकुमार से बात क्यों नहीं की? शोध उन के निर्देशन में कर लेतीं.'' मैं ने उत्तेजित हो कर कहा.

''उन के पास भी गई थी,'' उस ने एक ठंडी सांस ले कर बताया, 'पता चला कि वह पंजीकरण कराने के 1,000 रुपए लेते हैं और थीसिस पूरा कराने के 5,000. निर्देश देने की फीस 200 रुपए महीना. अब तू ही बता, मैं क्या करती? दो साल बरबाद करने के बाद मैं ने रिसर्च का विचार ही छोड़ दिया.''

मैं चाय पी कर लौट आई. मुझे लगा जैसे स्मिता के साथसाथ मेरी भी रिसर्च पूरी हो गई है और हमारा विषय है–'डा. निर्मला व डा. श्रवणकुमार का चारित्रिक विश्लेषण.''

हिंदी गुलामों गंवारों जाहिलों की भाषा है न?

तभी तो आप

- हिंदी की बोलचाल में और हर वाक्य में दो तीन शब्द अंगरेजी के जरूर रखते हैं. हर दूसरा वाक्य अंगरेजी का बोलते हैं.
- अपने नाम का संक्षिप्तीकरण अंगरेजी अक्षरों में करते हैं बी.पी. शर्मा, एस.एन. वर्मा, के.एम. गुप्ता, आई.एम. दास......
- अपने सांस्कृतिक, सामाजिक, पारिवारिक और निजी उत्सवों एवं सम्मेलनों के निमंत्रण पत्र अंगरेजी में छपवाते हैं, चाहे आप और आप के आमंत्रित अंगरेजी के चार वाक्य भी सही रूप में न लिख सकें और न समझ सकें.
- अपना निजी पारिवारिक पत्रव्यवहार अंगरेजी में करते हैं.

अंगरेजी साहबों की भाषा है. आप पूरी नहीं बोललिख सकते तो आधीअधूरी ही सही, साहबी कुछ तो दिखाई देगी ही!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवजागरण की पाक्षिक पत्रिका

भूभारती

राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक घटनाओं में सीधे घटनास्थल से खोजपूर्ण जानकारी.

हर पक्ष नई घटनाएं, नए समाचार.

हर पक्ष 5 लाख लोग भूभारती पढ़ते हैं.

भूभारती पढ़िए—जागरूक व जिम्मेदार नागरिक बनिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्थिक मामलों में विश्वास

लेख • सिंधु गोयल

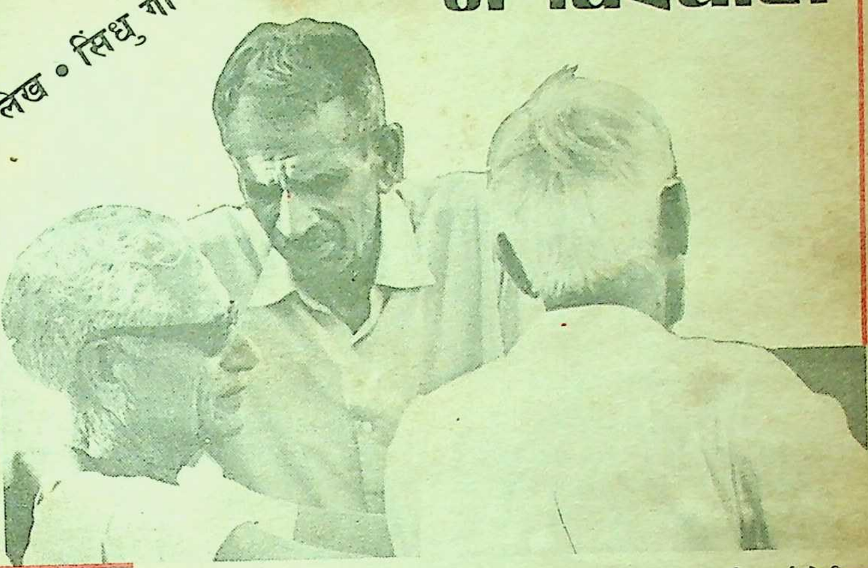

विश्वास के आधार पर किए गए आर्थिक लेनदेन कभीकभी आपसी कटुता और विश्वासघात को भी जन्म देते हैं पर इन से बचा जा सकता है.

बाबू रघुवरदयालजी बचपन से ही लकड़ी की टाल वाले सेठजी के यहां काम करते आए थे. पहले साधारण से नौकर थे, पर फिर सेठजी ने उन की प्रतिभा व ईमानदारी देख कर उन्हें मुनीम बना दिया था. पगार भी छः सौ रुपए माहवार कर दी थी.

गांव में रघुवरदयाल की 10 बीघे में खेती थी, जिसे उन्हीं का सगा छोटा भाई जोनतावोता था. नतीजा यह कि तीनचार हजार रुपए सालाना व घर के खर्च के लिए अनाज खेती से मिल जाता था यानी उन की गृहस्थी आराम से चल रही थी.

दो साल पहले जब सेठजी ने जंगल खरीदा तो पचासियों लाख रुपए की लकड़ी से संबंधित हिसाबकिताब रखने के लिए उन्हें रघुवरदयालजी से अच्छा आदमी नजर नहीं आया और एक वफादार नौकर की तरह वह अपने मालिक का इशारा पा कर जंगल की देखरेख करने वहीं चले गए.

डेढ़दो महीने के अंतर से वह घर भी आते रहते थे.

होली की छुट्टी में वह घर आए तो उन के भाई ने गन्ने की फसल से प्राप्त पैसा उन्हें देते हुए कहा कि उन के बाहर रहने के कारण लगान, चीनी मिल की गन्ने की पर्ची के भुगतान व कोल्ड स्टोरेज में माल रखने आदि में बड़ी परेशानी होती है और यदि उस के हक में जमीन की बाबत एक मुख्तारनामा आम लिख दिया जाए तो सब बवाल खत्म हो जाएगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रघुवरदयालजी ने कहा कि " तुम्हें परेशान होने की [illegible] मैं सेठजी को हिसाब बताने में व्यस्त रहूंगा, इसलिए तुम मेरी तरफ से अपने हक में एक मुख्तारनामा आम वकील साहब से लिखवा लो, मैं चल कर रजिस्ट्री करवा दूंगा."

सगे भाइयों का मामला था, अतः रघुवरदयाल ने बिना पढ़े ही मुख्तारनामे पर दस्तखत कर दिए व उस की रजिस्ट्री भी करवा दी.

उन्हें क्या मालूम था कि उन का छोटा भाई उस दस्तावेज द्वारा अपने दस्तखतों से जमीन को बेचने का अधिकार भी हासिल कर चुका है.

जब मई में आने पर उन्हें पता चला कि अभी तक न तो गांव से गेहूं आए हैं और न ही फसल का कुछ रुपया, तो वह गांव गए, और यह जान कर उन के पांव तले की जमीन ही सरक गई कि उन का सगा छोटा भाई उन की जमीन बेचने के बाद गांव छोड़ कर किसी बड़े शहर में जा चुका है.

अत्यधिक विश्वास आखिर उन का सब कुछ ले कर ही रहा.

एक बार मैं उपर्युक्त किस्से का जिक्र अपने एक वकील मित्र से कर रहा था, पर जब मैं किस्सा सुना चुका तो वह बड़े शांत स्वभाव से सहज स्वर में बोले, "इस में क्या बात है?"

"क्या मतलब" मैं ने चौंक कर कहा था.

"भाई के विश्वासघात ने भाई को कंगाल कर दिया. कृतघ्नता की इस पराकाष्ठा में भी आप को कोई खास बात ही नजर नहीं आती?"

वकील मित्र हंस कर बोले, "अरे 45 साल मेरे सीनियर ने वकालत की थी और 13 साल मुझे हो गए दीवानी की अदालतों में झक मारतेमारते. तुम्हें यह जान कर ताज्जुब होगा कि जायदाद के 80 फीसदी मुकदमे सगे भाइयों, बापबेटों व करीबी रिश्तेदारों में ही चलते हैं, खराब नीयत रिश्तानाता नहीं देखती."

फिर धन व संपत्ति के मामलों में वि[illegible] मेरे दिमाग में प्रश्न उभरा.

राधे बाबू खांड का व्यापार करते बाजार में ठहराव आया और उन की ख गोदाम में इकट्ठी हो गई, पर बिक नहीं पा ऐसे समय में एक अत्यधिक जरूरी देनदारी लिए उन्हें करीब 25 हजार रुपए की जरू पड़ी.

ऐसी हालत में उन्हें बाजार से 25 रु भी उधार नहीं मिल सकते थे. मजबूरी उन्होंने अपनी जमीन के 100 मीटर के टु को मेरे हाथ बेचना तय किया.

वास्तव में मुझे जमीन की जरूरत न थी, पर चूंकि जमीन के इस टुकड़े का बाज भाव करीब 40 हजार रुपए था व उन मजबूरी का फायदा उठाते हुए अन्य क व्यक्ति 20 हजार रुपए से ज्यादा देने तैयार नहीं था, मैं ने 25 हजार में सौदा कर लिया.

इकरारनामा लिखा गया, पर जब की रजिस्ट्री कराने की बात आई तो राधे ब अनुनय के स्वर में बोले, "भाईसाहब, समय मुझे एकएक पैसा भारी है. रजि कराने में लंबा खर्च पड़ जाएगा. दस्तावेज तो मैं ने लिख ही दिया है, चार लो के सामने जबान दे दी है, क्या बरसों दोस्ती में इतना भी आपसी यकीन नहीं?

इस के अलावा अन्य लोगों ने भी क कि 'राधे काबिले एतबार है, फिर यह का तो इकरारनामे के साथसाथ रुक्का भी गया है.'—और मैं मान गया.

करीब डेढ़ महीने बाद खांड के मूल्यों अप्रत्याशित गिरावट आई और राधे बाबू अपना दीवाला निकाल दिया.

इस पर सारा शहर भौचक्का रह गय मंडी वालों को तो सांप सूंघ गया, क्योंकि से पहले किसी व्यापारी ने ऐसा काम न किया था.

चूंकि मेरा इकरारनामा पंजीकृत न था, अतः वह अदालत को मान्य नहीं हुआ पर वकीलों की भारीभरकम बहस के पश्चा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे रुक्के की मान्यता मिल गई और अदालती फैसले से जब हर रुपए की चवन्नी की अदायगी के आदेश हुए, तब मुझे महज छः हजार रुपए पर सब्र करना पड़ा.

वास्तव में हम लोग अत्यधिक भावना प्रधान हैं, परंतु व्यापार व धन के मामलों में भावना का कोई स्थान नहीं होना चाहिए.

प्रायः व्यापारिक संबंधों में भी भावनाओं को यह सोच कर प्रधानता दी जाती है कि यदि लिखतपढ़त या किसी कानूनी व्यवस्था की बात कही जाएगी तो अमुक शख्स इसे विश्वास की कमी मानेगा और इस का आपसी ताल्लुकातों पर बुरा असर पड़ने की संभावना रहेगी.

दूसरे, चूंकि लिखाईपढ़ाई व कानूनी व्यवस्था में कुछ खर्च भी आता है, अतः प्रायः कुछ धन बचाने के लोभ में इस प्रकार की पक्की व्यवस्था को नजरअंदाज कर दिया जाता है.

पर ये दोनों ही बातें हमेशा झगड़े को जन्म देती हैं.

कानन की व्यवस्थाएं वास्तविकता पर आधारित होती हैं, न कि भावनाओं पर. कानून में मित्रता, रिश्तेदारी, अहसान आदि की कोई कीमत नहीं है और न ही इन को आधार बना कर कोई कानूनी लड़ाई जीती जा सकती है.

धन संबंधी मामलों में कानूनी मान्यता प्राप्त करने के लिए जो भी व्यवस्था आवश्यक है, उसे अवश्य ही पूरा कर लेना चाहिए. इस से संबंध भी अच्छे बने रहते हैं व दिमाग में निश्चितता भी बनी रहती है.

मेरी एक परिचिता कौसरजहां ने शहर में एक छोटा सा मकान खरीद रखा था व वह स्वयं ही उस में रहती थीं.

जहां वह नौकरी करती थीं वहीं के एक अधिकारी से उन के बहुत मधुर संबंध थे. वह उन को रक्षाबंधन पर राखी भी बांधती थीं.

दो वर्ष के विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम में कौसरजी पश्चिमी जरमनी जाने वाली थीं. उन के अधिकारी चाहते थे कि उस मकान में वह रहने लगें और कौसरजी के विदेश से

आपसी लेनदेन के लिए की गई कच्ची लिखापढ़ी बाद में परेशानी पैदा करती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौटने पर मकान उन के लिए पर्ववत खाली कर दें.

जब मुझे पता चला तो मैं ने कौसरजी को सलाह दी कि एक किरायानामा (भले ही नाममात्र का) सब शर्तों को खोलते हुए लिखवा लें, ताकि मकान की वापसी में कोई दिक्कत न आए, पर 'अधिकारी क्या सोचेगा कि मेरा इतना भी विश्वास नहीं,' 'उस की भावनाओं को चोट पहुंचेगी,' 'उस का विश्वास तो राखी के धागों में बंधा है.' जैसी आदर्शवादी भावनाओं के वशीभूत कौसरजी ने किरायानामा लिखना जरूरी नहीं समझा.

कौसरजी के जरमनी से भेजे पत्रों का वह अधिकारी नियमित रूप से जवाब भेजता रहा, पर स्वदेश लौटने पर कौसरजी ने उसे एक नए अधिकारी के रूप में देखा, जो किसी भी हालत में मकान खाली करने को तैयार नहीं था. कहता था, ''कहीं और मिल ही नहीं रहा.''

उस ने तो यहां तक कह डाला, ''दीदी, आप तो जरमनी से खासा माल ऐंठ कर लाई होंगी, उस से एक क्या चार मकान खरीद सकती हैं, इस मकान को तो अपने मुंह बो भाई के लिए एक तुच्छ भेंट समझ कर छो दो.''

एक तो जबरदस्ती कब्जा, ऊपर बेशरमी. कहां गए वे संबंध और राखी धागों का विश्वास?

काश, इन सब के स्थान पर ए सीधासादा किरायानामा होता तो मकान बचा रहता और संबंध भी नहीं बिगड़ते.

आजकल परिभाषाएं गलत हो गई और लोग गीता के 'कर्म सिद्धांत' के अनुसा 'कर्म' करने का अर्थ—छलकपट, जालसा विश्वासघात आदि करने से लेते हैं औ 'फल' यानी कानूनी कारवाई, निंद सामाजिक बहिष्कार, दूसरे को हानि पहुंचा की चिंता नहीं करते हैं.

अतः गांठ बांध लीजिए. आप का चा कोई कितना ही सगा व घनिष्ठ क्यों न हो धन संपत्ति के मामले में उस के साथ लिखतपढ़ करने से कभी मत हिचकिचाइए, क्योंकि कानूनी औपचारिकताएं ही विश्वास औ संबंधों को बनाए रख सकती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये शिक्षक

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए एवं सर्वोत्तम पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

हमारी उपप्रधानाचार्या भूगोल की अध्यापिका भी थी. उन का स्वभाव काफी अच्छा था. एक बार हमारी भ्रमण यात्रा का कार्यक्रम बना और हम लोग फीरोजाबाद गए. शाम को कुछ लड़कियां एक होटल में चाय पीने बैठ गईं. जब वे चाय का बिल चुकाने लगीं तो हमारी अध्यापिका की नजर उन पर पड़ गई. तभी उन्होंने कहा, "बच्चो रुको, पैसे मैं दूंगी."

इस पर प्रधानाचार्या ने उन से कहा, "छोड़ो भी, तुम किसकिस का बिल देती रहोगी?"

तब उन्होंने प्रधानाचार्या से कहा, "दीदी, ये मेरी लड़कियां हैं."

वास्तव में जो लड़कियां उन से भेंटस्वरूप किताबें, ड्रेस, जूते आदि पाती रहीं और जिन्हें हमारी वह अध्यापिका हमेशा सही निर्देश देती रहीं, वे कभी भी उन्हें नहीं भूल पाएंगी.

—मीरा देवी

*

तब मैं चौथी कक्षा का विद्यार्थी था. हमारी एक अध्यापिका पढ़ाई के अलावा भी बहुत सी अच्छीअच्छी बातें बताया करती थीं.

हमारी कक्षा में एक हरिजन छात्र भी था. मैं अकसर उस के यहां पढ़ने जाता था. लेकिन एकाएक जब मेरी दादीजी को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने मुझे उस के घर जाने से मना कर दिया.

यह बात जब हमारी अध्यापिका को मालूम हुई तो उन्होंने मुझ से अकेले में करीब एक घंटा बात की. उन्होंने कहा कि हमें ऊंचनीच, छुआछूत को नहीं मानना चाहिए. हम और वे सब हिंदू ही हैं. अगर हम उन से इस तरह का व्यवहार करेंगे तो वे हिंदू धर्म छोड़ देंगे और कोई दूसरा धर्म अपना लेंगे. फिर वे हमारे ही दुश्मन बन जाएंगे. इसलिए तुम सब भाईभाई की तरह रहो."

यह बात उन्होंने आठ वर्ष पूर्व कही थी और आज यही हो रहा है.

—कटारिया ज्ञानदेव

*

मेरी एक अध्यापिका मित्र एक छात्रा को ट्यूशन पढ़ाती थी. वार्षिक परीक्षा हो जाने के कुछ दिनों बाद उस छात्रा के पिता मेरी उस अध्यापिका मित्र के पास अपनी बेटी के अंक बढ़वाने के लिए आए, जिस से उन की लड़की का कक्षा में पहला स्थान आ जाए. वैसे एक निर्धन हरिजन छात्रा ने कक्षा में सब से अधिक अंक पाए थे.

छात्रा के पिता ने बहुत आग्रह किया तो मेरी अध्यापिका मित्र ने कहा, "मैं व्यापारी नहीं हूं. आप की पुत्री ने [illegible] किए हैं. वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे स्थान पर है और दूसरे स्थान पर ही रहेगी. मेरा शिक्षक धर्म मुझे गड़बड़ी की आज्ञा न देता."

ट्यूशन फिर से पाने का लालच छोड़ कर मेरी अध्यापिका मित्र अपने निर्णय पर अंत तक दृढ़ रहीं.

—ममता गो

*

तब मैं आठवीं कक्षा का छात्र था, बहुत शरारती था और हर लड़का मेरी शिकायत करता था. कभीकभी मैं शिक्षक को भी पत्थर मार देता था. एक बार मैं एक शिक्षक को पत्थर मार रहा था कि उन की नजर मुझ पर पड़ गई. उन्होंने मेरी जम कर पिटाई की.

मुझे इस पर बहुत गुस्सा आया और मैं ने उन्हें मजा चखाने की ठान ली. मैं ने सोचा जिस रास्ते यह शिक्षक महोदय जाते हैं, उसी रास्ते में कहीं छिप जाऊंगा और जैसे ही वह उधर से निकलेंगे, उन के मुंह पर कपड़ा डाल कर तीनचार घूंसे जड़ कर सइकिल से भाग निकलूंगा.

योजनानुसार मैं एक पेड़ के पीछे छिप गया. जैसे ही वह शिक्षक उधर से निकले मैं ने पर कपड़ा फेंकने की कोशिश की लेकिन तभी पेड़ के तने से लिपटे एक बिच्छू ने मुझे डंक मार दिया. वह मुझे साइकिल से हस्पताल ले गए.

जब मुझे होश आया, तो मेरे मांबाप के अलावा मेरे शिक्षक वहां भी खड़े थे.

मेरी आंखों से पश्चाताप के आंसू निकल पड़े. दूसरे दिन मैं ने स्कूल जा कर शिक्षक व छात्रों से अपनी गलती के लिए माफी मांगी.

— संजयकुमार गोस्वा

*

महाविद्यालय की परीक्षाएं शुरू होने वाली थीं. प्रधानाचार्य ने चेतावनी दी थी कि कोई छात्र नकल नहीं करेगा. जो नकल करेगा, उस के खिलाफ कड़ी काररवाई जाएगी.

शिक्षक वर्ग भी नकल रोकने पर कटिबद्ध हो गया. इस से चिढ़ कर कुछ छात्रों ने प्राध्यापक के पुत्र का अपहरण कर लिया.

पुत्र के अपहरण का समाचार सुन कर प्राध्यापक ने कहा, "एक पुत्र क्या दोतीन पुत्र शहीद हो जाएं तब भी मैं नकल नहीं करने दूंगा."

नतीजा यह हुआ कि अपहृत छात्र को छोड़ दिया गया और नकल भी नहीं हुई.

—ममता श्रीवास्

*

छात्रावास में मैं और मेरा एक दोस्त एक ही कमरे में रहा करते थे? हमारी एक बहुत बुरी आदत थी कि हम अपना कमरा साफ नहीं रखते थे. एक दिन हमारी अनुपस्थिति में कोई हमारा कमरा साफ कर गया. किताबें भी ठीक तरह से अलमारी में लगा दी गई थीं. कुल मिला कर कमरा अच्छा लगने लगा था.

दो दिन बाद फिर कमरे की पहले जैसी ही हालत हो गई. लेकिन तीसरे दिन कमरा फिर साफ हो गया. हम ने सोचा शायद चपरासी पैसों के लालच में यह कर रहा हो. लेकिन उस से पूछने पर उस ने साफ मना कर दिया. इस बार हम ने सोच लिया था कि पता लगा कर ही रहेंगे कि कौन कमरा ठीक कर जाता है.

जब कमरे की हालत फिर से खराब हो गई तो हम बाहर जा कर खिड़की के पास छिप गए. कुछ देर बाद हमें एक आदमी आता दिखाई दिया. उस के हाथ में झाड़ू थी. पर जब हम ने उसे देखा तो बहुत लज्जित हुए. वे हमारे छात्रावास के अधीक्षक थे. उस दिन से हम अपना कमरा खुद ही साफ रखने लगे.

—रवींद्रसिंह आहूजा (सर्वोत्तम)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

50 लाख बच्चों की प्यारी
रंगीन पत्रिका

चंपक

9 भाषाओं में

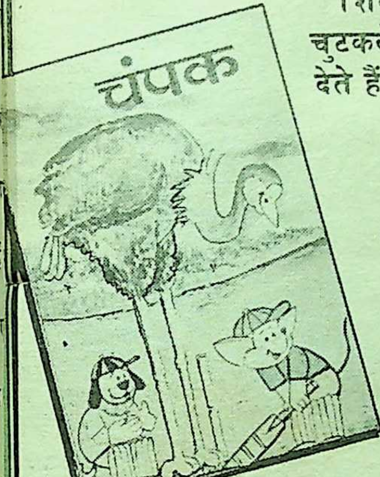

हर पक्ष चंपक में प्रकाशित मनोरंजन व शिक्षाप्रद कहानियां, कविताएं, पहेलियां, चुटकले और लेख बच्चों को नई जानकारी देते हैं, उन का चरित्र संवारते हैं और नए स्वरूप में ढालते हैं.

चंपक, पंजाबी और बंगाली भाषा के अलावा अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगु और मलयालम भाषाओं में भी प्रकाशित होता है.

अपने बच्चों को चंपक लेकर दें – उन का मनोरंजन भी करें और भविष्य भी संवारें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दिल्ली प्रेस प्रकाशन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख

हवासिंह हुड्डा

पश्चिमी यूरोप में बेरोजगारी की भयंकर स्थिति

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद से पश्चिमी यूरोप बेरोजगारी से बुरी तरह पीड़ित है. अकेले ब्रिटेन में ही बेरोजगार श्रमिकों की संख्या 30 लाख तक पहुंच गई है. इटली में 20 लाख, फ्रांस में 18.4 लाख तथा पश्चिमी जरमनी में 14 लाख श्रमिक बेरोजगार हैं. बढ़ती हुई बेरोजगारी समाज को सभी स्तरों पर कुरेद रही है. व्यक्तिगत आत्मसम्मान का विनाश हो रहा है और वर्ग संघर्ष ने तनाव अधिकतम स्तर पर ला दिया है. ये सभी ऐसी बातें हैं, जिन से नैतिकता सामाजिक उसूलों का ह्रास हो रहा है औ से आधुनिक अर्थव्यवस्था रुग्ण होती ज है.

पश्चिमी यूरोप में बेरोजगारी क भयंकर स्थिति का सब से अधिक शि नवयुवक हुए हैं, जिन में आधे ऐसे हैं, जि आयु 25 वर्ष से भी कम है और बहुत से अ प्रथम नौकरी की तलाश में हैं. तीव्र ग बढ़ती बेरोजगारी के परिणाम और अ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही बताते हैं कि इस की वजह से निराशा की जो भावना उत्पन्न होती है वह यही सिखाती है कि हिंसा का सहारा ले कर समाज के ढांचे को बदल दिया जाए. हिंसा से आतंकवाद, मद्यपान की लत, अपराध तथा राजनीति में उग्रवाद को प्रोत्साहन मिलता है. वर्तमान बेरोजगारी के परिप्रेक्ष्य में हुए आतंकवाद को देख कर आश्चर्य नहीं होता क्योंकि जब तक शिक्षित युवा पीढ़ी बेरोजगार रहेगी, आतंकवाद की प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलता रहेगा.

में आए थे. पश्चिमी जरमनी के संविधान [illegible] एक धारा है जो राजनीतिक, धार्मिक य[illegible] सामाजिक कारणों से अपने देश में सता[illegible] जाने वाले लोगों को पश्चिमी जरमनी में अ[illegible] कर रहने पर जीवन की सुरक्षा तथा आमदन[illegible] की गारंटी देती है. संविधान में इस प्रावधा[illegible] के कारण पश्चिमी जरमनी में आप्रवास[illegible] श्रमिकों की तादाद इतनी अधिक हो गई [illegible] पश्चिमी जरमनी के पास 'सताए हुए लोग[illegible] को रोजगार देने के साधन भी तकरीबन चु[illegible] गए. रोजगार कार्यालयों के बाहर 'मेहमा[illegible]

नौकरी से हताश और परेशान युवा पीढ़ी.

1945 के बाद विश्वयुद्ध के घावों को यूरोप ने भरा, उस ने अपने नष्ट हुए उद्योगों का फिर से निर्माण किया और इस प्रकार सब से समृद्धशाली युग में प्रवेश किया.जब ऊर्जा सस्ती थी तथा विदेशों से कच्चा माल कौड़ियों के मोल मिल जाता था, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का विकास प्रति वर्ष नियमित रूप से पांच प्रतिशत से अधिक की दर से होता रहा. प्रत्येक के लिए उचित रोजगार प्राप्त करना कठिन नहीं था और कारखानों में श्रम के कार्य अधिकतर आप्रवासियों को दिए गए, जो विकासशील देशों से रोजगार की तलाश

लगातार बढ़त[illegible] बेरोजगारी ने पश्चिम[illegible] यूरोप में विस्फोटक स्थिति पैदा कर दी है. नौकरी के अभाव में भटकते युवा आज किस तरह गलत रास्ता अपना रहे हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

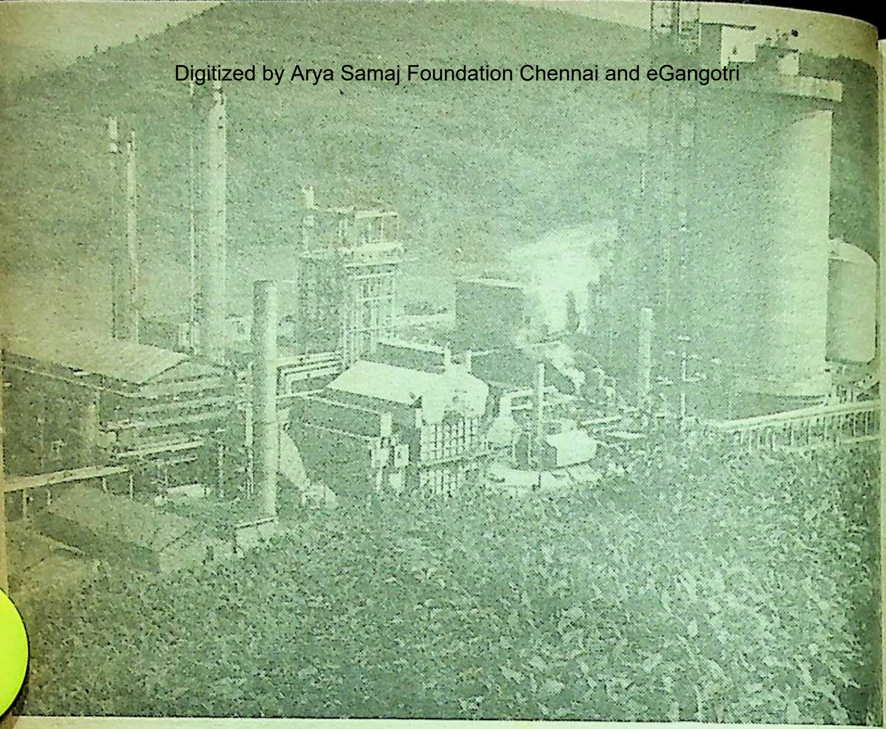

विश्वयुद्ध के बाद नष्ट हुए उद्योगों का पुनर्निर्माण यानी पश्चिमी यूरोप का समृद्धशाली युग में प्रवेश.

र्मचारियों' की लंबी कतारें लगी रहती हैं. स से पहले किसी भी यूरोपीय सरकार ने ार प्रतिशत से अधिक बेरोजगारी नहीं देखी े.

1970 के दशक में तेल की कीमतों में ाव्र गति से वृद्धि हुई, जिस के कारण जो धन ाष्ट्रीय विकास में लगाया जाता था, वह ऊर्जा लिए अरब देशों की ओर बहने लगा. ढ़ती हुई मुद्रास्फीति ने अर्थव्यवस्था को कड़ लिया. ब्रिटिश लेखक गिल्स मैरिट ने पनी ताज़ा पुस्तक 'जाब्स क्रंच' में लिखा – "औद्योगिक अर्थव्यवस्था डगमगा गई . किंतु यह डगमगाहट अस्थायी सिद्ध होगी गर इस्पात जैसे भारी आधारभूत उद्योगों र नई पूंजी लगाई जाए."

1979 के बाद से प्रत्येक छः में से एक र्माण उद्योग ने अपना अस्तित्व खो दिया है. ास में पिछले वर्षों से प्रति वर्ष औद्योगिक त्र से 1,08,000 तथा कृषि-क्षेत्र से 48,000 रोजगार समाप्त हो रहे हैं. आर्थिक सहयोग तथा विकास संगठन के अनुसार जिस के सदस्य विश्व के प्रमुख औद्योगिक राष्ट्र हैं, उस के सदस्य देशों में बेरोजगारों की संख्या पिछले वर्ष 240 लाख थी, जो अब बढ़ कर 260 लाख हो गई है. दूसरे महायुद्ध के बाद की एक आदर्श स्थिति में पहुंचना है तो बेरोजगारी की दर को घटा कर हर हालत में दो प्रतिशत करना होगा तथा सकल राष्ट्रीय उत्पादन में सात प्रतिशत की दर से वृद्धि कर के उसे व्यावहारिक स्थिति में लाना होगा.

समाधान क्या है?

समस्या का समाधान अत्यंत कठिन है क्योंकि इस का सीधा संबंध विश्व के व्यापारिक ढांचे में मूलभूत परिवर्तन से जुड़ा हुआ है. पश्चिमी यूरोप के आधारभूत उद्योगों ने, जिन में इस्पात, वस्त्र तथा जहाज निर्माण उद्योग उल्लेखनीय हैं, विदेशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंपनियों विशेषकर जापानी कंपनियों के मुकाबले में मात खा ली है. यूरोपीय उद्योगों में लगी मशीनें इतनी पुरानी पड़ गई हैं कि उन में उत्पादन के लिए श्रम की लागत बहुत बढ़ गई है. पिछले दशक की विश्वव्यापी मंदी, अत्यधिक मुद्रास्फीति तथा ब्याज की ऊंची दरों ने बहुत सी कंपनियों को विनाश के गर्त में धकेल दिया है. इस से अनेक रोजगार समाप्त हो गए हैं.

पश्चिमी यूरोप में बेरोजगारी ने अधिक स्थायी रूप ले लिया है, अमरीका में कुल बेरोजगारों में 13 प्रतिशत ही ऐसे हैं जो छः महीने से ज्यादा समय से खाली बैठे हैं, जब कि ब्रिटेन में 47 प्रतिशत, फ्रांस में 54 प्रतिशत तथा आयरलैंड में यह अनुपात 50 प्रतिशत है. दरजनों औद्योगिक क्षेत्रों में बेरोजगारी अपनी चरम सीमा तक पहुंच गई है. ब्रिटेन में बेरोजगारों की राष्ट्रीय दर 14.3 प्रतिशत है, किंतु उत्तरी आयरलैंड में यह दर 19.8 प्रतिशत और इंगलैंड के उत्तरी क्षेत्र में 16.2 प्रतिशत है. इंगलैंड के लिवरपूल क्षेत्र में जो प्राचीन औद्योगिक क्षेत्रों में गिना जाता है, बेरोजगारों की संख्या 20 प्रतिशत है. लेकिन कुछ वर्गों में– जैसे अश्वेत युवकों में, यह दर शतप्रतिशत है. इस क्षेत्र में पिछले तीन वर्षों में 10 हजार रोजगार प्रति वर्ष के हिसाब से समाप्त हो रहे हैं.

तटस्थ सरकारें

इसी प्रकार की हालत दक्षिणी इटली तथा पूर्वी फ्रांस के पुराने औद्योगिक केंद्रों से वालेनिया और नीदरलैंड तक है. पश्चिमी यूरोपीय राष्ट्र 'कल्याणकारी राज्य' हैं. इस कारण बेरोजगार पूर्ण दरिद्रता में धंसने से बच जाते हैं. किंतु बढ़ती हुई बेरोजगारी के कारण समाज पर जो मनोवैज्ञानिक घाव हो रहे हैं, उन के लिए इन देशों की सरकारों के पास कोई उपचार नहीं है. सब से अधिक कठिनाइयां 50 वर्ष से अधिक आयु के ऐसे श्रमिकों को हैं, जिन का रोजगार फैक्टरी बंद होने के कारण छूट गया हो. उन के लिए सरकार कुछ नहीं कर सकती. इस का परिणाम उदासी, निराशा तथा आत्मग्लानि के रूप में प्रकट होता है.

महिलाओं के लिए हालत अधिक कठिन है. पश्चिमी जरमनी में पुरुषों की अपेक्षा बेरोजगार महिलाओं की संख्या दोगुनी है. अन्य पश्चिमी राष्ट्रों में तो स्थिति इस से भी बुरी है. महिलाओं में इस बात को ले कर काफी आक्रोश है कि महिलाओं को पुरुषों के बाद ही रोजगार मिलता है. बेरोजगारी से निराश हो कर पिछले वर्ष मा[...] में दो युवकों ने जिन की आयु 18 और 19 व[...] थी, चेशायर में एक चुराई हुई कार [...] आत्महत्या कर ली थी. मरने से पहले वे ए[...] पुरजा छोड़ गए थे, जिस पर लिखा था कि उ[...] के आत्महत्या करने का कारण कोई का[...] उपलब्ध न होना है.

बढ़ते अपराध

ब्रिटेन में आधे से ज्यादा बेरोजगा[...] युवक राजनीतिक परिवर्तन के लिए हिंसा [...] मार्ग को उचित मानते हैं. दो वर्ष पहले ऐ[...] युवाओं की संख्या 30 प्रतिशत थी. ब्रिटेन [...] दंगों के पीछे ऐसे ही युवकों का हाथ [...] मार्गरेट थैचर सरकार की आर्थिक नीतियों [...] कारण बेरोजगारी का ज्यादा असर ऐसे नग[...] पर अधिक पड़ा है जहां एशियाई त[...] अफ्रीकी मूल के लोग रहते हैं. सवाल यह [...] कि बेरोजगारी की विस्फोटक स्थिति से बच[...] के लिए पश्चिमी यूरोप की सरकारें क्या क[...] इस का उत्तर है विस्तृत कार्यक्रम चालू कि[...] जाएं, निर्माण उद्योगों पर अधिक पूंजी लग[...] जाए. अवकाश प्राप्ति की आयु घटा दी जा[...] ओवरटाइम पर पाबंदी लगा दी जाए त[...] कार्य अवधि को घटा कर 35 घंटे प्रति सप्त[...] कर दिया जाए. अगर मुद्रास्फीति पर नियंत्र[...] पा लिया जाए और उत्पादकता को बढ़ा लि[...] जाए तो एक अच्छा समय आने की बात सो[...] जा सकती है. वास्तविकता पर चाहेअनच[...] ध्यान देना ही पड़ता है. इसलिए यूरोप[...] सरकारों को अगर बेरोजगारी की विस्फो[...] स्थिति से निबटना है तो उन्हें इस का को[...] कोई समाधान खोजना ही पड़ेगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ोशे की
ावित्रता

ानी • विश्वनाथ यादव

लकपट और भेदभाव से दूर कर लिए गए सिकंदर लोदी निर्णय किस प्रकार लोगों को ानदार बने रहने के लिए रत करते थे.

ुलतान सिकंदर लोदी सन 1488 में दिल्ली के तख्त पर बैठा था.

ा का बचपन का नाम निजाम खान था. ा को उस समय के एक प्रसिद्ध विद्वान ने क्षा दी थी.

वह सामाजिक कुरीतियों व धविश्वासों से चिढ़ता था. उस ने अपनी तनत में बहराइच के सालार मसूद गाजी नेजे (झंडे) के जलूस पर, जो कि बड़े भव्य के से निकलता था, रोक लगा दी थी, ोंकि इस जलूस के बहाने युवकयुवतियां त उद्देश्य की पूर्ति करते थे.

उस ने मुसलमान औरतों के पीरफकीरों दरगाहों पर जाने पर भी प्रतिबंध लगा ा था, क्योंकि लोगों के धार्मिक विश्वासों फायदा उठा कर बहुत से नकली मजार ोंरात बनते जा रहे थे, जहां पर साधारण चढ़ावे के रूप में कीमती वस्त्र, पैसे व मिठाइयां आदि चढ़ाते थे और कुछ लोग उन का मनमाना उपयोग करते थे. सिकंदर लोदी ने ऐसे मजारों को नष्ट करवा दिया था.

उस ने अपने साम्राज्य में चेचक की पूजा व मन्नत पर रोक लगा दी थी.

उस ने मथुरा में हिंदुओं के एक पवित्र माने जाने वाले तालाब को भी, जहां दूरदूर से अंधविश्वासी लोग आ कर चढ़ावा चढ़ाते थे, नष्ट करवा दिया था.

उस ने बंधुआ मजदूरी की प्रथा खत्म कर दी थी. उस ने गरीबों और किसानों को मालगुजारी तथा अधिकारियों के जुल्मों से राहत दिलवा दी थी. उस के राज्य में साधारण से व्यक्ति को भी कोई अधिकारी आंखें नहीं दिखा सकता था. वस्तुस्थिति यह थी कि गरीब लोग, किसान व मजदूर खुश थे. अतः सूती कपड़ों, सिल्क, चांदीसोना, भेड़ों, घोड़ों

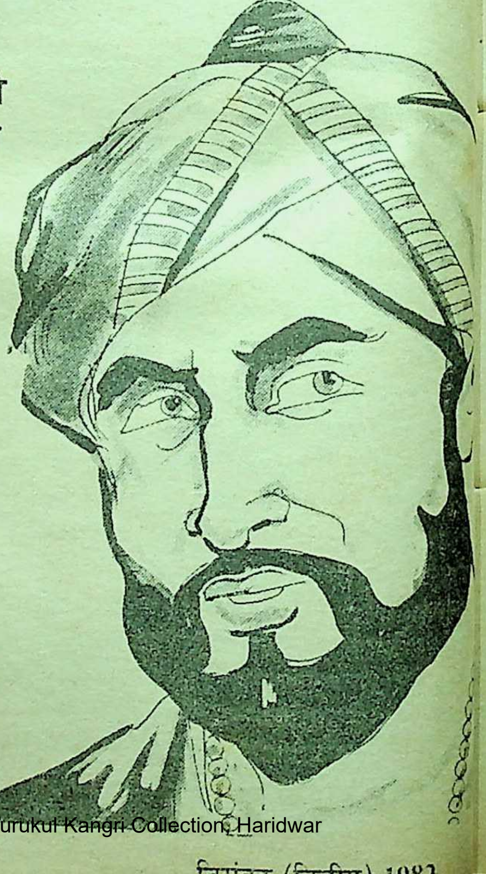

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

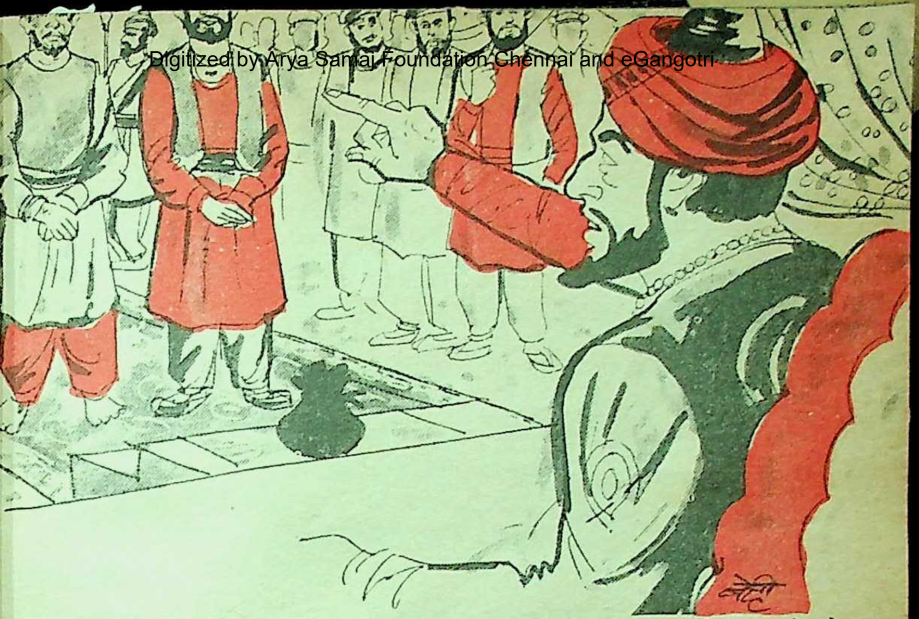

सुलतान के फैसले से गोताखोर के चेहरे पर मुर्दनी छा गई. पर धनी व्यक्ति इस फैसले पर प्रसन्न हो गया.

व ऊंटों या और किसी भी तरह की अत्यावश्यक वस्तुओं का अभाव नहीं था, सभी चीजें सस्ते मूल्य में सर्वत्र सुलभ थीं. उस के सामाजिक व आर्थिक प्रगति की दिशा में बढ़ाए गए कदमों ने उस की सल्तनत को समृद्ध किया था.

राज्य में सामाजिक व आर्थिक प्रगति तभी संभव है जब कि न्याय की शीघ्र व दोषमुक्त व्यवस्था का बंदोबस्त हो. अतः उस ने साधारण अदालत के अलावा आगरा में दो अपील अदालतों का भी गठन किया था. पहली अपील अदालत में वजीर विचार करते थे तथा सर्वोच्च अदालत के रूप में दूसरी अपील अदालत में अपील की जा सकती थी. दूसरी अपील अदालत का कार्य सुलतान सिकंदर लोदी खुद देखता था.

कानून सब के लिए एक सा था. साधारण से साधारण व्यक्ति भी अपील अदालतों में जा सकता था. प्रत्येक मामले में इसलामी शरीअत के अनुसार निर्णय लिया जाता था. फैसला करते समय आदमी के सामाजिक व धार्मिक [illegible] के कारण कोई भेदभाव नहीं किया जाता था. हिंदुओं ने भी इस कानून को स्वीकार कर लिया था. यहां तक कि वादी व प्रतिवादी दोनों हिंदू होने पर भी इसलामी शरीअत के अनुसार ही न्याय पाने के लिए अदालत में जाते थे. सुलतान सलाहकारों की सहमति से ही मामले का फैसला करता था. ये सलाहकार इसलामी कानून के जानेमाने विद्वान होते थे.

उस ने आगरा शहर का निर्माण करवाया था. दिल्ली और आगरा दोनों उस की राजधानियां थीं. दिल्ली को वह मुख्य राजधानी तथा आगरा को द्वितीय राजधानी का दर्जा देता था.

एक बार सिकंदर लोदी आगरा में अपने दरबार में बैठा हुआ था. एक मामले की सुनवाई चल रही थी. मामला वजीरों की अदालत से फैसला होने के बाद अपील के रू[illegible] में उस के पास आया था. सलाहकार ध्यान [illegible] मामले को सुन रहे थे. मामला यह था

एक धनी व्यक्ति नाव से यमुना न[illegible] पार कर रहा था. उस के पास सोने की मुह[illegible] से भरी एक चमड़े की थैली थी. नदी के प्रवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वादा

किस के वादों का
आखिर यकीं कीजिए,
वो भी कहते थे
वादा निभाएंगे हम.

—सलीम अश्क

। नौका डगमगा कर उलट गई थी. धनी यक्ति ने किसी तरह तैर कर अपनी जान चाई, किंतु सोने की मुहरों से भरी चमड़े की ली यमुना नदी में ही डूब गई थी. धनी यक्ति ने ऐलान करवा दिया था कि यदि कोई यक्ति उस की सोने की मुहरों से भरी थैली दी से निकाल कर उस के सुपुर्द कर देगा तो ह उसे मुंहमांगी मुहरें इनाम में देगा.

एक निर्धन गोताखोर ने नदी में डुबकी लगा कर चमड़े की उस थैली को ोज निकाला था और उस ने उस धनी यक्ति के सामने आधी मुहरों की मांग रख दी ी. पर उस की इस मांग को धनी व्यक्ति ने ीकार नहीं किया था. मामला निचली दालत से पहली अदालत में वजीरों के पास पील के रूप में जा चुका था. पर इस पहली पील अदालत के फैसले से भी संतुष्ट न हो र धनी व्यक्ति ने सर्वोच्च अदालत में ील कर दी थी.

सुलतान ने मामले को अच्छी तरह मझ कर धनी व्यक्ति की तरफ मुखातिब हो र पूछा था, ''क्या यह सच है कि आप ने ताखोर को इस शर्त पर काम पर लगाया कि अगर वह सोने की मुहरों से भरी थैली यमुना नदी से निकाल कर आप के सुपुर्द र देगा तो आप उस को मुंहमांगी रकम ?''

''जी आलीजाह, यह सच है,'' धनी क्ति ने कहा था.

''क्या आप ने यह सोचा था कि काम के पूरा हो जाने पर गोताखोर आधी या पूरी रकम की मांग कर सकता है?'' सुलतान ने पूछा.

''नहीं हुजूर, मैं ने ऐसा नहीं सोचा था,'' धनी व्यक्ति बोला.

सुलतान सिकंदर लोदी एक क्षण के लिए कुछ सोचने लगा. गोताखोर के चेहरे पर प्रफुल्लता थी. दरबार में पूर्णतः खामोशी छाई हुई थी. अब सुलतान ने गोताखोर की तरफ देखते हुए कहा, ''क्या यह सही है कि इस अमीर आदमी ने काम के हो जाने पर मुंहमांगी रकम देने का वादा किया था?''

''जी हजूर. काम की यही शर्त थी,'' गोताखोर ने जवाब दिया था.

''इस का मतलब यह हुआ कि सोने की मुहरों की इस थैली से तुम जितनी मुहरें इस अमीर आदमी को वापस कर दोगे, वही उसे मंजूर करनी होंगी.''

''जी आलीजाह.''

''तुम गोताखोर हो, आम तौर से तुम्हारे काम की क्या शर्त रहती है.''

''हुजूर, काम हो जाने पर मुझे मजदूरी मिलती है, कभी कोई आदमी खुश हो कर बख्शीश भी दे देता है.''

''क्या तुम गोताखोरी के अलावा कोई दूसरा काम भी करते हो?''

''नहीं हजूर.''

''गोया गोताखोरी ही तुम्हारी रोजीरोटी, तुम्हारा ईमान है?''

''जी हजूर.''

''तब तो तुम अपने पेशे में काफी ईमानदारी बरतते होगे?''

''जी हजूर. मैं कभी भी बेईमानी नहीं करता.''

''ठीक है. तुम इस थैली से सोने की सौ मुहरें गिन कर ले लो. यही मेरा फैसला है.''

सुलतान के फैसले से गोताखोर के चेहरे पर मुर्दनी छा गई. धनी व्यक्ति इस फैसले से पलकें झपकाने लगा.

सुलतान ने सलाहकारों की तरफ देख कर कहा, ''इस शख्स का काम गोताखोरी है. इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम की मजदूरी की एक हद है. यह गरीब भी है. इस की जरूरत भी महदूद (सीमित) है यानी अमीर आदमी ने यही सोचा होगा कि जब वह इस शख्स को मनमानी रकम लेने के लिए कहेगा तो वह अपनी महदूद जरूरतों को ध्यान में रख कर उस से कुछ ज्यादा की ही मांग करेगा. ऐसी हालत में मैं सोचता हूं कि इस शख्स को उस की मेहनत और उस का इनाम दोनों मिला कर एक सौ सोने की मुहरें देना ही इंसाफ का तकाजा है."

गोताखोर सिर झुकाए खड़ा था. सुलतान ने उस की तरफ देख कर कहा, "सुनो, किसी के घर में चोरी होती है तो उस के पास के थाने के थानेदार का काम होता है— चोरी के माल का पता लगा कर उसे उस के मालिक तक पहुंचाना. अगर चोरी गए माल के मालिक ने इस तरह का ऐलान (घोषणा) कर भी दिया कि वह माल का पता लगाने वाले या माल उस तक पहुंचाने वाले को भरपूर इनाम देगा, फिर भी चोरी गए माल का मालिक थानेदार को इनाम देने के लिए मजबूर नहीं है, क्योंकि थानेदार ने माल को उस के असली मालिक के पास पहुंचा कर अपना फर्ज पूरा किया है. इसी तरह तुम गोताखोर हो, तुम्हारा काम है नदीतालाबों में डूब गई चीजों को निकाल कर उन के मालिकों को सौंपना और अपनी मजदूरी ले लेना. यह तुम्हारे पेशे का फर्ज है. अमीर आदमी के मनमानी रकम देने का एलान करने के बाद भी तुम उसे पाने के हकदार नहीं हो."

सुलतान ने सलाहकारों से अपने फैसले का अनुमोदन करने का अनुरोध किया. सलाहकारों ने आपस में विचारविमर्श कर के सुलतान के फैसले का अनुमोदन कर दिया.

सुलतान सिकंदर लोदी उस गरीब गोताखोर के पक्ष में निर्णय दे कर सस्ती वाहवाही लूट सकता था, किंतु इस से हर व्यक्ति को लूट व मनमानी करने का बहाना मिल जाता, जिस से सामाजिक विशृंखलता को ही बढ़ावा मिलता. •

लेखकों के लिए सूचना

- सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.
- प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.
- प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.
- प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.
- **स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.**
- **मुक्ता और सरिता में पूर्णविराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.**

रचना इस पते पर भेजें :
संपादकीय विभाग
मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाड़ौली के मंदिर:

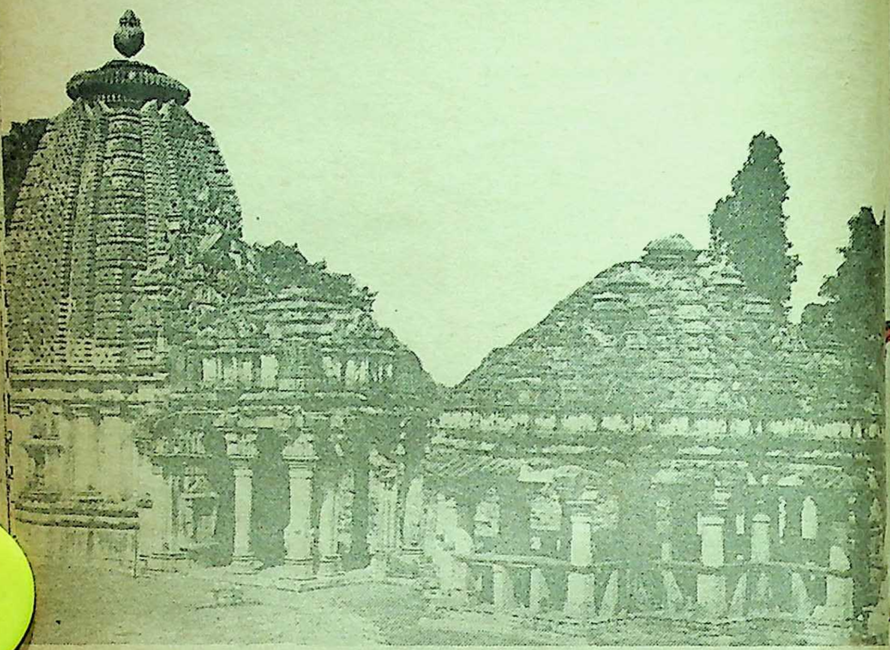

लेख • प्रभातकुमार सिंघल

उस दिन शाम को करीब 4 बजे हम बाड़ौली के उन मंदिरों में थे जो आज भी कला के मूर्तरूप बने सूने जंगल में अपने वैभव की कहानी कह रहे हैं.

इन मंदिरों की बाहरी दीवारों पर तराशी गई मूर्तियां, खजुराहो की कल्पना साकार करा देती हैं. ये मूर्तियां गुप्त काल में बनाई गई मूर्तियों से काफी मिलतीजुलती हैं. इन मंदिरों का वास्तु शिल्प उड़ीसा में बने मंदिरों के शिल्प के समान हैं. यह छोटीछोटी ईटों से उसारा गया है

प्रधान मंदिर लगभग 18 मीटर (60 फुट) ऊंचा है. यह घंटेश्वर महादेव का मंदिर है. प्रवेश द्वार पर बने तोरण से जयपुर के निकट आमेर घाटी में बने मंदिरों की याद ताजा हो आती है. तोरण द्वार पर दो स्तंभ हैं, जिन पर गंगा एंव यमुना की आकृतियां खुदी हैं. द्वार के एकदम ऊपर ताडंव मुद्रा में शि की मानवाकार मूर्ति है. नृत्य मुद्रा में शिव यह स्वरूप निश्चय ही पर्यटकों को बांध ले में सक्षम है. मंदिर की भीतरी तथा बाह सभी दीवारों पर देवीदेवताओं की मूर्ति विभिन्न मुद्राओं में खोदी गई हैं. बाहर ब ओर एक गुंबद में महादेव की मूर्ति है, जिन गले में नर मुंडों की माला तथा शेष सा हाथों में विभिन्न अस्त्रशस्त्र हैं, इस का ए हाथ खंडित हो गया है. बाईं तरफ ए योगिनी रूधिर पान करती हुई बड़ी वीभत्स मुद्रा में तराशी गई है. इसी के द ओर आसन पर मृत्यु की देवी की मूर्ति है जिस की मेहराब भी अत्यंत आकर्षक बन गई है. मंदिर के मध्य में नंदेश्वर की मूर्ति है

प्रधान शिवालय के सामने करीब 1 मीटर (40 फुट) लंबाई का वर्गाकार मंडप है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जंगल में उपेक्षित पड़ी कला

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह लगभग 6.5 मीटर (20 फुट) ऊंचे गोल खंबों पर टिका है. खंभे क्या हैं, लगता है कोई मादक संगीत इन खंभों पर सचित्र मैथुनरत से फूटा पड़ रहा हो. खंभों पर काम की इस क्रीड़ा को शिल्पकारों ने अनुपम रूप में प्रस्तुत किया है. मूर्तियों में उन अंगो के उभार, विभिन्न मुद्राएं, तीखे नाकनक्श तथा निर्वसना अथवा कहींकहीं अधोवस्त्र धारी स्वरूप मन को लुभा कर ही छोड़ते हैं. कलाकारों की दक्षता और

संरक्षण के अभाव और उपेक्षा के कारण ऐतिहासिक महत्त्व रखने वाले ये मंदिर किस प्रकार अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं?

कुशलता उस समय सार्थक हो उठती है, करने वाली कही जाने वाली यह देवी अपने शेष हाथों की सुरक्षा भी जब दर्शक घंटों इन्हें देखता रहता है.

मंदिर के खंभों पर तराशा गया शिल्प.

इस मादक स्थल को 'शृंगार चंवरी' के नाम से जाना जाता है. इसे राजा हूण की चंवरी भी कहा जाता है. खंभों पर राजा हूण व उस की रानी पिंगल को शिवपार्वती के रूप में ढाल कर शिल्पकारों ने विभिन्न रूपों में तराशा है. और अपनी हथौड़ी व छैनी का कमाल दिखाया है.

प्रधान मंदिर के बाईं ओर करीब 9 मीटर (30 फुट) ऊंचे एक मंदिर में अष्ट भुजा देवी की मूर्ति है. प्राचीन समय में मूर्ति पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्किटेक्ट

इन्टीरियर डेकोरेटर

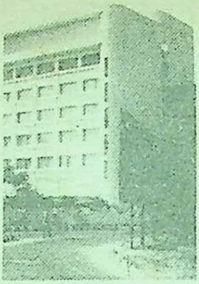

फाइव-स्टार होटल

गृहिणी

सब के सब एक बात से सहमत हैं...

सैनिटरीवेर लेने हों तो पैरीवेर ही लिया जाये !

वर्षों से कायम उच्च गुणवत्ता के कारण पैरीवेर का नाम एक स्थायी ख्याति बन गया है। पैरीवेर के सभी नमूनों पर आइ एस आइ निशान अंकित है और ये सफ़ेद तथा अन्य कई मोहक रंगों में उपलब्ध हैं।

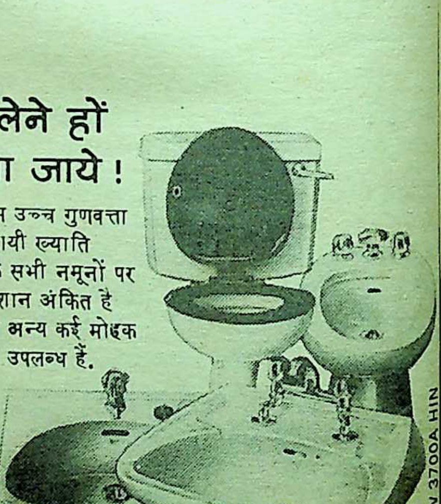

Parryware VITREOUS

ई. आइ. डी.-पैरी (इंडिया) लि.
सेरामिक्स डिविज़न
डेअर हाउस, मद्रास ६०० ००१

हमारे सभी उत्पादनों की क्वालिटी - सुपरफाइन

EID PW 3700A HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

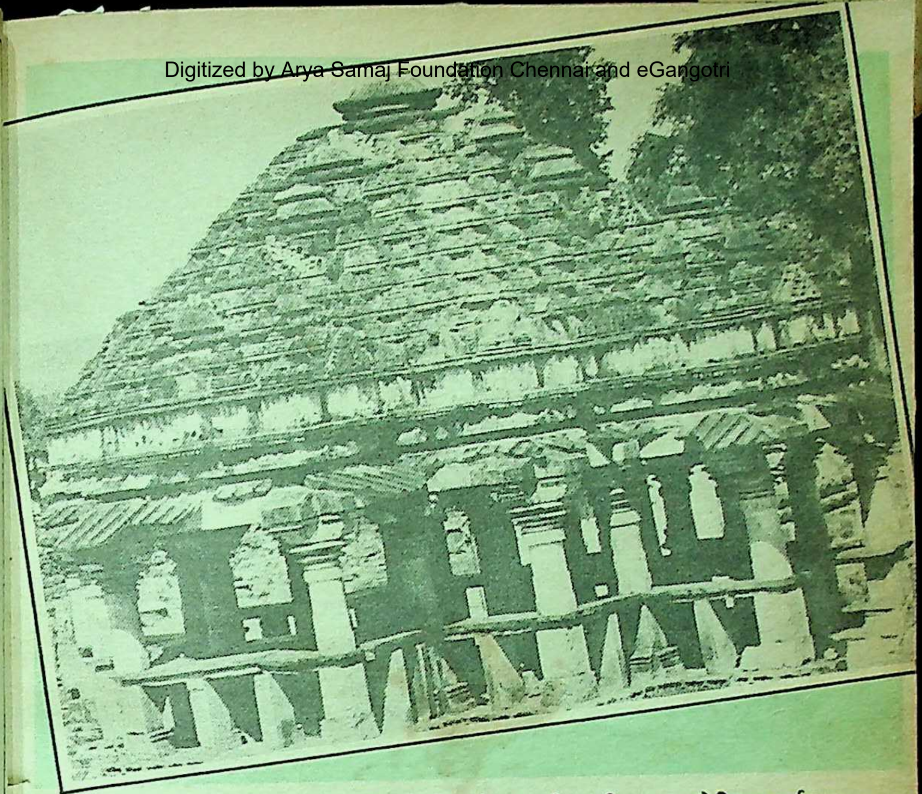

प्रधान शिवालय के बाहर बनी चौकी: गौरवमयी अतीत का उपेक्षित वर्तमान.

मूर्ति थी, परंतु मुसलिम आक्रांताओं की कट्टरता की शिकार यह मूर्ति आज अपनी दुर्दशा पर आंसू बहाती सी लगती है. यह केवल एक हाथ में ढाल धारण किए है, सब की सुरक्षा न कर सकी. मस्तक का कुछ हिस्सा भी टूटा है. वहां आक्रमणकारी की तलवार का वार हुआ स्पष्ट नजर आता है. मूर्ति महादेव की छाती पर अपने विकराल स्वरूप में खड़ी है. महादेव के मस्तक पर भी आक्रांता का क्रोध झलक रहा है. अलबत्ता योगिनी और अप्सराओं की मूर्तियां अपने मूल कलात्मक वैभव के साथ खड़ी हैं.

पास ही गणेशजी का मंदिर है जिस का ऊपरी भाग तथा मूर्ति की सूंड टूटी हुई है. शेष मूर्ति जो आदमकद है, बड़ी ही सौम्यता लिए लगती है. मंदिर का विध्वंस हुआ हिस्सा फिर निर्माण कराया गया है.

प्रधान देवालय एवं शृंगार चंवरी के पश्चिम में त्रिमूर्ति और शेषशायी विष्णु नारायण के रूप में विराजे हैं. त्रिमूर्ति भी कई जगह से खंडित है. शेषशायी विष्णु की केवल चौकी रह गई है तथा मूर्ति कोटा संग्रहालय की शोभा बढ़ा रही है.

उक्त सभी मंदिर एक ही अहाते में बने हैं. प्रधान शिवालय के पीछे करीब 16 मीटर (50 फुट) की दूरी पर एक नागराज की खंभ मूर्ति है. मूर्ति की चौड़ाई 30 सेंटीमीटर के लगभग है. मूर्ति का निचला हिस्सा जमीन में गड़ा है. यह मूर्ति अपने मूल स्थान से करीब तीन मीटर (10 फुट) दूरी पर पुनः स्थापित की गई है.

वापस सड़क की ओर आने पर एक वर्गाकार जलकुंड के बीच एक शिव मंदिर है. जलकुंड में इस शिवालय की सुंदरता में चार चांद लग जाते हैं. पास ही आम व पीपल के बड़ेबड़े वृक्ष हैं, जहां मई की सुलगती गरमी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

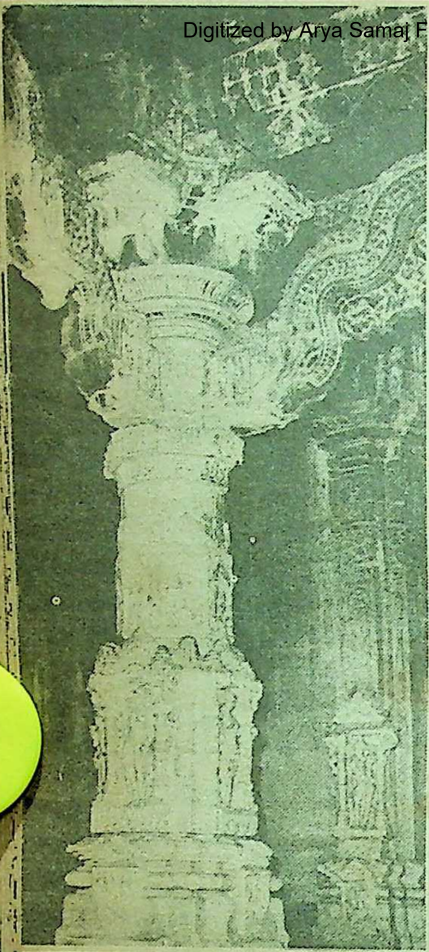

मंदिर में लगे खंभः अद्वितीय कला के प्रतीक.

ो पर्याप्त शीतलता का अनुभव होता है.

प्राकृतिक छटा से परिपूर्ण जंगलों में इस द्वितीय कला पुंज का नाम बाड़ौली क्यों ड़ा, इस का कोई इतिहास नहीं मिलता. परंतु जा हूण से, जो अंगदसी के नाम से विख्यात , इस का संबंध माना जाता है.

प्राप्त जानकारी के अनुसार तवींआठवीं शताब्दी में परमार वंश के मय इन कलापूर्ण देवालयों का निर्माण हुआ ा. लगभग 1,500 वर्ष पुराने ये मंदिर आज ी शिल्पकला के अनूठे और जीतेजागते नमूने हैं. जहां सोमनाथ मंदिर की कला को महमूद गजनवी ने अपनी धर्मांधता का शिकार बना डाला था, वहां बाड़ौली के इन मंदिरों अलाउद्दीन खिलजी तथा औरंगजेब का कहर टूटा था. 1955 से ये देवालय केंद्रीय सरकार के पुरातत्व विभाग के संरक्षण में हैं तथा राष्ट्रीय स्मारक घोषित किए जा चुके हैं.

यह कला जंगलों में उपेक्षित पड़ी है. इसका पुरातत्व के साथसाथ पर्यटन की दृष्टि से भी महत्त्व समझना आवश्यक है. इस कलापूर्ण धार्मिक स्थल को, जहां प्रत्येक शिवरात्रि पर मेला भी लगता है, पर्यटन की दृष्टि से और आकर्षक बनाया जाना चाहिए. देवालय व मूर्तियां जहां से खंडित हो गए हैं, उन का पुनः जीर्णोद्धार करा कर जाली स्थलों पर संग्रहालयों से मूर्तियां ला कर पुनः स्थापित करानी चाहिए. फूलों से भरे रंगबिरंगे लान में फव्वारे लगाए जाएं तो निश्चित ही यह स्थल शीघ्र ही पर्यटकों का आकर्षण केंद्र बन सकता है. इस से एक ओर राज्य में पर्यटक बढ़ेंगे, वहीं यह ऐतिहासिक महत्त्व के मंदिर रमणीक स्थलों में बदल जाएंगे.

कहां ठहरे, कैसे पहुंचे

कोटा, राजस्थान की राजधानी जयपुर से एंव राज्य के प्रत्येक जिला मुख्यालय से जुड़ा है. यह दिल्लीबंबई बड़ी रेलवे लाइन पर प्रमुख जंकशन है. दिल्ली से 470 किलोमीटर, बंबई से 920 किलोमीटर, जयपुर से 250 किलोमीटर, अजमेर से 192 किलोमीटर तथा उदयपुर से 347 किलोमीटर दूर है. कोटा से यह 43 किलोमीटर दूर रावतभाटा मार्ग पर है. यहां बसें उपलब्ध हैं. टैक्सी भी यहां आसानी से मिल जाती है. नवरंग टैक्सी स्टैंड का फोन नंबर 5858 है.

यहां के अच्छे होटलों में पायल, नवरंग, जगदीश, चमन तथा माहेश्वरी हैं. पर्यटकों की सुविधा के लिए बनाया गया चंबल टूरिस्ट बंगला भी (फोन नंबर 6527) ठहरने का अच्छा साधन है. वहां शाकाहारी व मांसाहारी दोनों प्रकार का भोजन उपलब्ध है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोद मेहरा

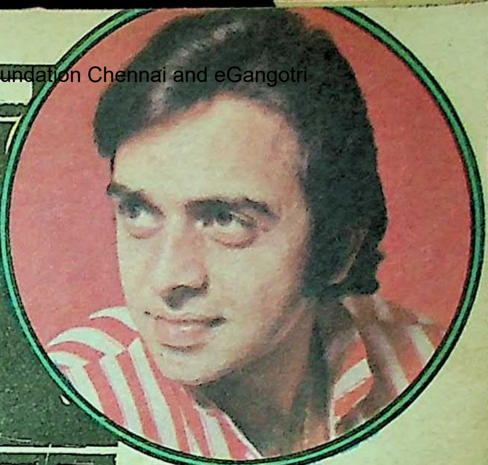

विनोद मेहरा एक बिकाऊ अभिनेता है और चोटी के चंद कलाकारों में उस का स्थान है फिर भी वह आज तक किसी भी फिल्म में कोई यादगार भूमिका क्यों नहीं दे सका?

लेख • सुरभि

फिल्म अभिनेता विनोद मेहरा अपने हंसमुख और विनम्र स्वभाव के कारण अपने साथियों में ही नहीं पत्रकारों में भी काफी लोकप्रिय है. वह सब से एक सा व्यवहार करता है. भले ही वह निर्मातानिर्देशक हो या कोई छोटामोटा कलाकार, उस को हरेक पसंद करता है.

उस में जरा भी दंभ नहीं है. वह अत्यंत सहयोगी स्वभाव का है. शूटिंग पर सही समय पर पहुंचता है और बड़ी लगन से काम करता है. वह पूरे आत्मविश्वास और अत्यंत संतुलित कदमों से अपनी फिल्मी यात्रा पूरी कर रहा है. भले ही वह 'नंबर वन' स्टार नहीं है पर नंबर वन के आसपास ही बना हुआ है. यह एक आश्चर्यजनक बात है कि उस ने इतनी फिल्मों में काम किया है पर किसी भी फिल्म में उस की कोई भी भूमिका यादगार नहीं बन सकी है. इस बारे में उस का कहना है, "कुछ ऐसी फिल्में जिन्हें ले कर मेरी चर्चा होती, उन का श्रेय अन्य कलाकार ले गए और फिर मैं कोई 'नंबर वन' स्टार तो हूं नहीं कि अपनी मन पसंद भूमिका चुनूं. जिस तरह की भूमिका भी मिलती है उसे जीजान से निभाता हूं. दर्शक मुझे पसंद भी करते हैं क्योंकि मेरी मांग है. मेरी फिल्में खूब आसानी से बिक जाती हैं."

उस ने अपनी पहली पत्नी मीना ब्रोका से तलाक ले कर बिंदिया गोस्वामी से शादी कर ली है. उस ने बिंदिया गोस्वामी के साथ फिल्म 'दुनियादारी' में काम किया था. बस तभी से वह बिंदिया की ओर आकर्षित हुआ था. लेकिन तब बिंदिया बहुत छोटी थी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

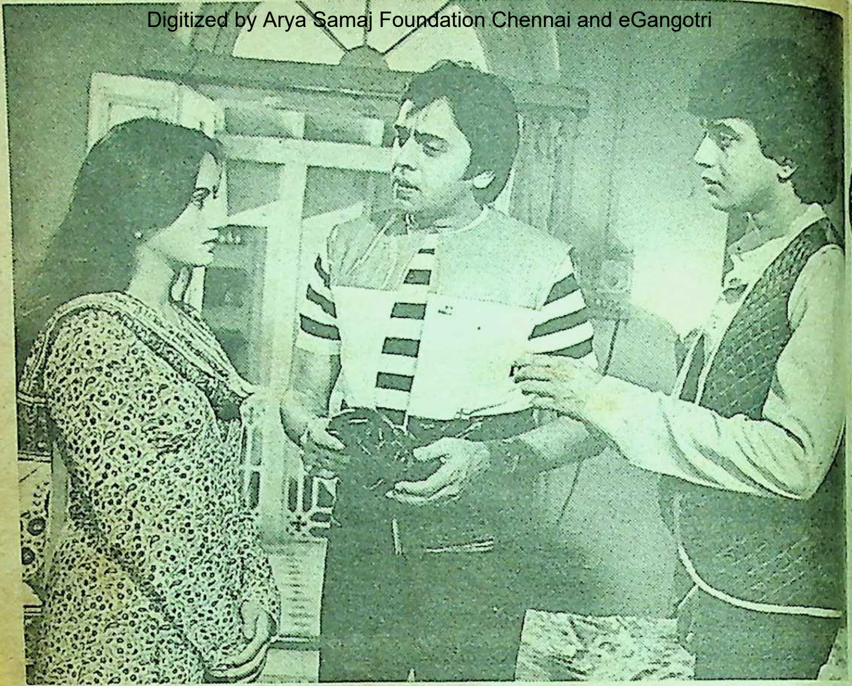

फिल्म 'उस्तादी उस्ताद से' के एक भावपूर्ण दृश्य में रंजीता, विनोद मेहरा व मिथु चक्रवर्ती.

वह भी उसे जीवनसंगिनी बनाने के बारे में निश्चय नहीं कर पाया था. इस बीच उस के परिवार वालों ने उसे विवाह के लिए लड़कियों के चित्र दिखाने शुरू कर दिए. कई चित्र नापसंद करने के बाद मीना से उस की शादी हो गई. पर उस से उस की निभ क्यों नहीं सकी, यह वह किसी को नहीं बताता. बहरहाल, आजकल बिंदिया के साथ उस का जीवन सुखपूर्वक बीत रहा है. उस के अनुसार, "आज मैं मानसिक तनाव में नहीं हूं. बिंदिया बहुत अच्छी और समझदार जीवनसंगिनी है, हमारा ब्याह तो पहले ही होना चाहिए था पर पता नहीं मीना क्यों बीच में आ गई, अब तो बिंदिया के बिना रहने की मैं सोच भी नहीं सकता."

उस की नजर में उस की 'अनुराग', 'स्वर्गनरक' व 'अमरदीप' जैसी फिल्में अच्छी हैं. हालांकि उस की कई फिल्में आ रही हैं, पर वह उन के बारे में कुछ भी कहना नहीं चाहता क्योंकि, "अकसर जिस फिल्म से उ होती है वही दगा दे जाती है और जिस से आशा नहीं होती वह बाक्स आफिस प हो जाती है. वैसे मुझे अपनी कुछेक नई फि से बड़ी आशाएं हैं. इन में मुझे अलग त मान्यता मिलने की उम्मीद है."

वर्तमान से असंतुष्ट

वह फिल्मों में अपनी वर्तमान स्थि संतुष्ट भी नहीं है. वह फिलहाल संतुष्ट भी नहीं चाहता क्योंकि उस का कहन "संतुष्ट हो जाऊंगा तो प्रगति रुक ज और अभी तो मुझे बहुत लंबा रास्ता करना है."

उस की आने वाली फिल्में 'वैरिस्टर,' 'रामपुर का दादा,' 'कारन 'अग्नि की सौगंध,' 'चकोरी,' 'आप के में,' 'जानेपहचाने,' 'हिसाबकिता 'डायल-900,' 'दिल ही दिल में' आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये लड़के ये लड़कियां

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी, पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता:
संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

बात उस समय की है जब मैं नवीं कक्षा में पढ़ता था. हमारे हिंदी के अध्यापक बहुत ही एकाग्रता से पढ़ाया करते थे. एक दिन वह कबीर के दोहों का अर्थ समझा रहे थे. उन्होंने पहला दोहा पढ़ा– "काल करै सो आज कर, आज करै सो अब, पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब."

इस दोहे का अर्थ समझा कर वह अगला दोहा पढ़ने ही वाले थे कि एक छात्र ने खड़े हो कर कहा–

"मास्टरजी, यह दोहा हमारे सामान्य जीवन में तो गलत है."

"वह कैसे?" अध्यापक ने पूछा.

वह लड़का बहुत चंचल प्रवृत्ति का था, बोला, "मास्टरजी, खेत में पानी देने के लिए हमारी बारी कल है, फिर भला हम आज कैसे पानी दे सकते हैं?"

–विश्वजीतराम श्रीवास्तव

*

गृहविज्ञान की प्रायोगिक कक्षा थी. एक लड़की अपनी सिलाई की मशीन नहीं लाई थी. वह दूसरे की मशीन पर कपड़ा सी रही थी. परीक्षक ने सिलाई की मशीन के एक पुरजे की ओर इशारा करते हुए पूछा, "बताओ, इसे क्या कहते हैं?"

लड़की ने अनभिज्ञता प्रकट करते हुए सिर हिलाया. परीक्षक ने उस से मशीन के अन्य पुरजों के बारे में पूछा, किंतु किसी भी प्रश्न का जवाब न मिलने पर वह झुंझला कर बोले, "आखिर तुम्हें मालूम क्या है?"

लड़की ने कहा, "मुझे कुछ नहीं मालूम, क्योंकि मशीन मेरी नहीं है."

–कृष्णा यदु

*

मेरा एक मित्र गणित में बहुत कमजोर है. एक बार हम दोनों बाजार में केले खरीद रहे थे. दुकानदार ने केलों का दाम 50 पैसे जोड़ा बताया.

हमारे पास ही एक लड़की भी केले खरीद रही थी. मेरे मित्र ने उसे सुनाते हुए जोर से मुझ से कहा, "बहुत महंगा दे रहा है. आगे चल, वहां तीन रुपए दरजन के हिसाब से केले मिल जाएंगे."

उस की बात सुनते ही आसपास खड़े सभी लोग हंस पड़े.

अपनी भूल का एहसास होते ही मेरा मित्र झेंप गया, क्योंकि 50 पैसे जोड़े के हिसाब से केले तीन रुपए दरजन ही बनते थे.

–विनय असावा •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लेख • नवरूप छाबड़ा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल के सितारे आज गर्दिश में

अपनी पहली ही फिल्म से दर्शकों का ध्यान खींचने वाले फिल्मी सितारे आज अचानक ही फिल्मी दुनिया की चकाचौंध में गुम क्यों हो गए?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म उद्योग के कलाकारों का जीवन बड़ा अस्थिर होता है. छोटे तो छोटे, चोटी के कलाकार भी कब अंधेरे में गुम हो जाएंगे, नहीं कहा जा सकता. फिल्म उद्योग की चकाचौंध से प्रभावित हो कर युवक व युवतियां इस उद्योग में प्रवेश पाने के लिए बंबई आते हैं और वहां के कठिन संघर्ष और प्रतिकूल परिस्थितियों से घबरा कर वापस लौट जाते हैं.

लेकिन फिल्म उद्योग में प्रवेश पाने के इरादे से आने वाले सभी युवक असफल नहीं होते. इन में से कुछ ऐसे भी होते हैं जो बड़ी

रामेश्वरी (बाएं) **व मौसमी चटर्जी** (नीचे) : **कल की सफल फिल्मों की आज यादें भर रह गई हैं.**

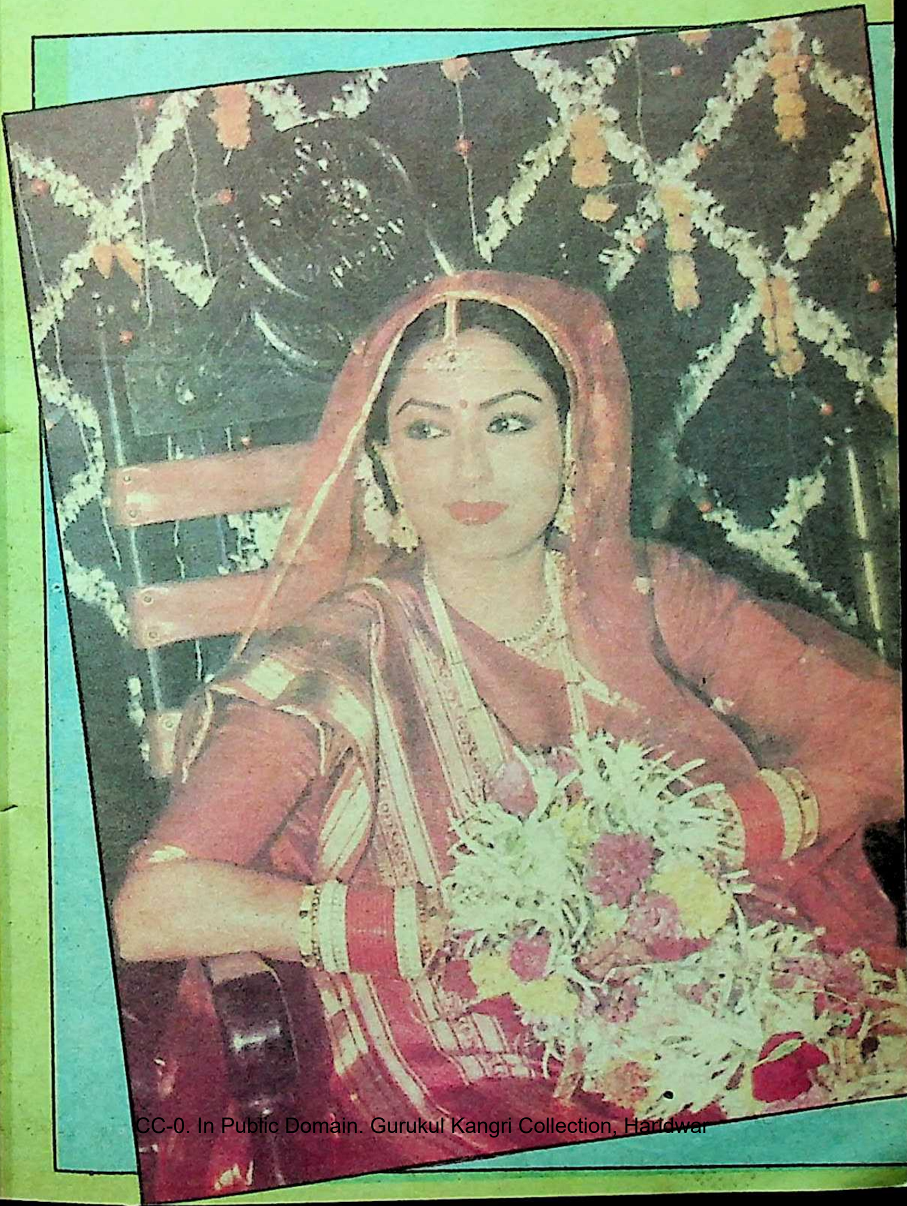

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

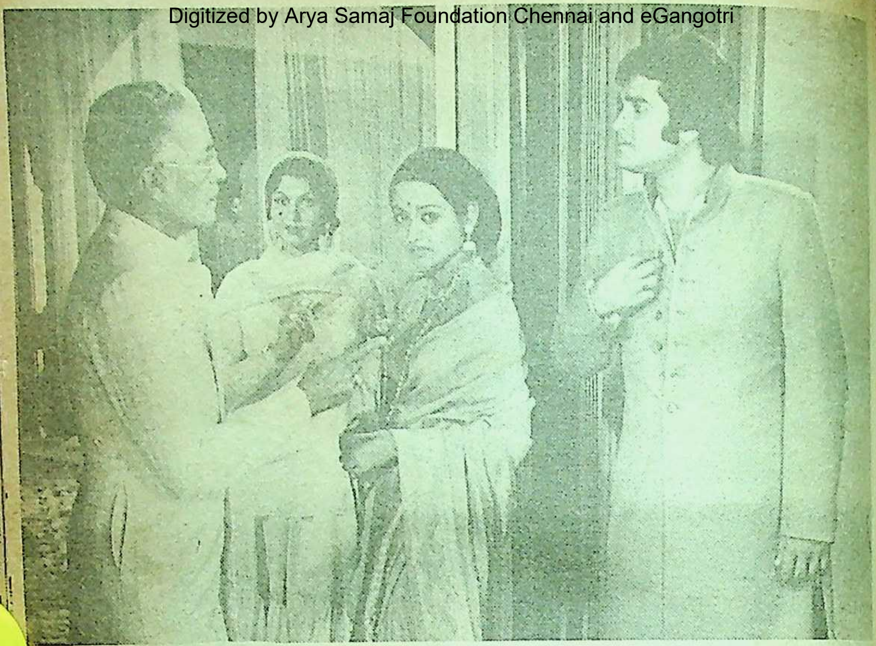

अपनी पहली फिल्म 'दुल्हन वही जो पिया मन भाए' के एक दृश्य में रामेश्वरी.

तड़कभड़क के साथ फिल्मों में प्रवेश पाते हैं और बाद में उन की स्थिति दयनीय हो जाती है. ये वे कलाकार होते हैं जिन की पहली फिल्म काफी सफल होती है, लेकिन बाद की फिल्में पिट जाती हैं और फिल्मों में काम पाने के लिए इन्हें पुनः संघर्ष करना पड़ता है. अपनी पहली फिल्म की सफलता से ये जिस ऊंचाई तक पहुंचते हैं, उस ऊंचाई तक पहुंचने के लिए ये फिर एड़ीचोटी का जोर लगाने में व्यस्त हो जाते हैं.

रामेश्वरी : हादसे की शिकार

इसी तरह की एक फिल्म अभिनेत्री रामेश्वरी है. रामेश्वरी की पहली फिल्म 'दुलहन वही जो पिया मन भाए' थी. यह फिल्म बहुत सफल हुई थी. फिल्म दर्शकों ने उस के विषय में बड़ीबड़ी उम्मीदें बांधी थीं. लेकिन उन की उम्मीदों पर पानी फिर गया, क्योंकि इस फिल्म में अच्छे अभिनय और फिल्म कीजबरदस्त सफलता के बावजूद वह अधिक फिल्मों में काम नहीं पा सकी.

रामेश्वरी की असफलता के दो मुख्य कारण हैं. पहला यह है कि दर्शकों को रामेश्वरी की अभिनय शैली जयाभादुड़ी की अभिनय शैली से मिलतीजुलती लगी और उन्होंने सोचा कि रामेश्वरी जया की नकल करती है. रामेश्वरी के बारबार यह वक्तव्य दिए जाने के बावजूद कि वह जया की नकल नहीं करती, दर्शकों को संतुष्टि नहीं हुई.

दूसरा कारण उस के साथ घटी एक दुखद घटना है. एक दुर्घटना में उस की आंख में घाव हो गया. उस की एक आंख की पलक सूज गई और उस की आंख भैंगी दिखने लगी. इस कारण उसे फिल्म 'अमरबीन' की भूमिका से हाथ धोना पड़ा. इस भैंगेपन से छुटकारा पाने के लिए उसे आपरेशन करवाना पड़ा. आंख को सामान्य होने में पूरा एक साल लग गया. इस बीच फिल्मों में उस की स्थिति डावांडोल हो गई.

रामेश्वरी का अपने विषय में कहना है "हर कोई मुझे सीधीसादी नायिका की भूमिका में देखना चाहता है, क्योंकि मैं ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'दुलहन वही जो पिया मन भाए' में ऐसी ही भूमिका की थी लेकिन अब मैं दर्शकों में बनी अपनी इस छवि को तोड़ने के लिए तरहतरह की भूमिकाएं स्वीकार कर रही हूं.''

निस्संदेह रामेश्वरी एक प्रतिभावान युवती है. 'सुनयना' में उस ने अंधी लड़की की भूमिका की थी और काफी सफल रही. उस की फिल्म 'आशा' ने भी जबरदस्त सफलता प्राप्त की, लेकिन इस फिल्म में वह नायिका नहीं थी. इस की नायिका रीना राय थी और फिल्म की सफलता का श्रेय भी लोगों ने रीना राय को ही दिया. हालांकि रामेश्वरी का अभिनय भी काफी अच्छा था, लेकिन दर्शकों ने उधर अधिक ध्यान नहीं दिया.

रामेश्वरी फिल्म 'सती सावित्री' से अपनी छवि बदलने की कोशिश कर रही है. इस फिल्म में वह एक आधुनिक और स्वच्छंद युवती की भूमिका कर रही है. अपने इस प्रयास में वह कहां तक सफल होगी, यह समय ही बताएगा.

रंजीता : सचाई क्या है?

रंजीता भी एक ऐसी अभिनेत्री है, जिस की पहली फिल्म 'लैला मजनू' ने तहलका मचा दिया था. इस फिल्म में उस का नायक ऋषिकपूर था. लोगों ने सोचा था कि अब रंजीता और ऋषिकपूर की जोड़ी फिल्मों में अधिक सफल रहेगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ. 'लैला मजनू' के बाद उसे अधिक फिल्में नहीं मिलीं.

रंजीता के विषय में एक अफवाह यह है कि वह नशीली दवाओं की आदी है. उसे फिल्में न मिलने का यह भी एक मुख्य कारण था. निर्माता उसे अपनी फिल्मों में लेने से कतराने लगे थे कि कहीं ऐसा न हो कि वे सेट लगाए बैठे हैं और वह उधर नशे में सो रही हो.

रंजीता ने निर्मातानिर्देशकों के दिमाग से यह अफवाह निकालने की पूरी कोशिश की, अपनी छवि बनाने के लिए उस ने अपना पूरा जोर लगा दिया. अंत में वह फिल्म 'अंखियों के झरोखों से' में नायिका की भूमिका पाने में सफल हो गई. इस फिल्म में उस ने कैंसर के मरीज की भूमिका की थी और इस भूमिका के साथ उस ने पूरा न्याय भी किया था. यह फिल्म भी सफल रही और रंजीता को एक बार फिर फिल्मी दुनिया में स्थापित होने का मौका मिला.

लेकिन सफलता ने हमेशा उस के साथ आंखमिचौनी की है. फिल्म 'दामाद' के बाद उस की फिल्में असफल होने लगीं. मजबूर हो कर उस ने छोटीछोटी भूमिकाएं स्वीकार करनी शुरू कर दीं. 'क्रोधी' और 'पति, पत्नी और वह' इस के उदाहरण हैं.

इधर कई नए चेहरों के आ जाने के कारण रंजीता के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा का समय आ गया है. लेकिन वह इस से घबराई नहीं है और अब पूरी तरह इस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार है.

वह बड़ी दृढ़ता से कहती है, ''मैं ने फिल्म उद्योग में कदम रख दिया है और मुझे यहां रहना है. मुझे चोटी पर पहुंचना है, चाहे इस के लिए मुझे कितना ही संघर्ष क्यों न करना पड़े.''

मौसमी चटर्जी की भी कमोबेश यही स्थिति है. उस की पहली फिल्म 'बालिका वधू' बंगला में थी. इस फिल्म में उस ने उस वक्त काम किया था जब वह किशोर वय की थी. उस के अच्छे अभिनय के कारण यह फिल्म काफी चली.

बंगला फिल्मों की सफलता के बाद उस

मूंछों के कारण मुकदमा

फ्रांस के लोम्पोई योल नामक एक सैनिक ने शेन दोरे नामक नाई पर 50 हजार का मुकदमा इसलिए दायर कर दिया कि गलती से उक्त नाई ने योल की एक मूंछ काट दी थी. मूंछ कट जाने से योल की मंगेतर ने उस से विवाह करने से इनकार कर दिया और एक अन्य युवक से उसी समय गिरजाघर जा कर विवाह कर लिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ो फिल्म 'अनुराग' से हिंदी फिल्मों में कदम रखा. इस फिल्म में उस ने अंधी लड़की की भूमिका कर के दर्शकों का मन जीत लिया. मौसमी के सौंदर्य और अभिनय प्रतिभा को देख कर लोगों ने अनुमान लगाया कि एक दिन यह अभिनेत्री निश्चित रूप से चोटी की कलाकार बनेगी लेकिन इस के साथ भी सफलता ने आंखमिचौनी की. इस का कारण यह है कि मौसमी हिंदी फिल्मों में प्रवेश के बाद कार्य के प्रति लापरवाह तथा बातूनी लड़की के रूप में प्रसिद्ध हो गई. इस के अतिरिक्त उस पर यह आरोप भी लगाए गए कि वह इस से, उस से प्रेम करती है और उस का गैरजिम्मेदाराना रवैया दूसरों के लिए कभीकभी हानिकारक साबित होता है. हालांकि वह शादीशुदा है, फिर भी उस पर इस तरह के आरोप लगाए गए.

उदाहरण के तौर पर एक बार योगिता बाली ने लोगों से शिकायत की कि मौसमी ने उस के विषय में विनोद मेहरा से पता नहीं क्याक्या कह दिया कि उस की लगीलगाई शादी टूट गई.

अपने गैरजिम्मेदाराना व्यवहार के कारण ही उसे गुलजार की प्रसिद्ध फिल्म 'कोशिश' से हाथ धोना पड़ा. गुलजार ने बाद में यह भूमिका जया भादुड़ी को सौंपी.

रंजीता: क्या नशीली दवाओं का सेवन ही सफलता में बाधक बना.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल हालत यह है कि मौसमी को मध्यम दरजे की फिल्में ही मिल पा रही हैं. इन फिल्मों में उस की भूमिकाएं ऐसी होती हैं, जिन में उसे कुछ कर दिखाने का अवसर ही नहीं मिलता.

उस के विषय में ताजा खबर यह है कि वह आजकल दक्षिण भारतीय फिल्मों की ओर रुख कर रही है और कुछ दक्षिण भारतीय फिल्मों में उसे काम मिल भी गया है.

लेकिन मौसमी की कुछ सफल फिल्में भी हैं, जिन में 'ज्योति बने ज्वाला,' 'मांग भरो सजना,' 'स्वर्ग नरक' तथा 'स्वयंवर' प्रमुख हैं. यदि मौसमी अब भी अपने कार्य के प्रति जिम्मेदारी महसूस करे तथा व्यवहार ठीक कर ले तो हिंदी फिल्मों में सफल हो सकती है.

रणधीर कपूर : दर्शकों से दूर

रणधीर कपूर ने भी बड़ी तड़कभड़क से फिल्मों में प्रवेश किया था. उस की पहली फिल्म 'कल आज और कल' थी. इस फिल्म में तीन पीढ़ियों का टकराव दिखाया गया था. यह फिल्म अपनी अच्छी विषय वस्तु के कारण सफल रही. लोगों ने अनुमान लगाया कि रणधीर कपूर, कपूर परिवार के अन्य कलाकारों की तरह सफल होगा, लेकिन लोगों का अनुमान गलत निकला.

उस की असफलता का कारण यह है कि उस में वह आकर्षण नहीं है, जो दर्शकों को अपनी ओर खींच सके.

उस ने फिल्मों में 'जोकर नायक' की छवि बनाने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं रहा. उस की अधिकतर फिल्में पिट गईं. एकआध फिल्म जो सफल हुई, वह भी नाममात्र के लिए. उस ने 'पोंगापंडित,' 'रामपुर का लक्ष्मण,' 'रामभरोसे' तथा 'जवानी दीवानी' आदि फिल्मों में काम किया. इन में सिर्फ 'जवानी दीवानी' ही थोड़ी सफल रही. उस की आने वाली फिल्में 'हरजाई,' 'इंस्पेक्टर' तथा 'डाकू और वह' हैं.

नायक के रूप में सफल न हो पाने के कारण वह फिल्म निर्माण व निर्देशन के क्षेत्र में कदम रख रहा है. यदि उस ने मेहनत से

रणधीर कपूर: अभिनय के बाद अब फिल्म निर्माण की ओर.

काम किया तो इस क्षेत्र में वह सफल हो सकता है.

फिल्म उद्योग में इस तरह के बहुत से अन्य कलाकार भी हैं, जो पुनः सफलता प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं. उन की इस स्थिति को देख कर ऐसा लगता है जैसे फिल्म उद्योग एक जंगल की तरह है, जहां लोग गिरते हैं और फिर उठ कर चलने की कोशिश करते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं क्या करूं?

अपनी समस्याएं भेजिए. इस स्तंभ के अंतगर्त नीरजा द्वारा आप की समस्याओं का समाधान किया जाता है.
भेजने का पता : संपादकीय विभाग
ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली -110055.

मैं 22 वर्षीया शिक्षित युवती हूं. जब मैं 15 साल की थी तो मेरे एक अध्यापक ने मेरी अज्ञानता का लाभ उठाते हुए बहलाफुसला कर मेरे साथ मुंह काला कर लिया. मैं ने डर के मारे किसी को कुछ नहीं बताया. मैं गर्भवती हो गई और जब तक यह बात घर वालों को पता चली, तब तक काफी देर हो चुकी थी. उन्होंने मेरा बच्चा चुपचाप किसी को दे दिया. इस के कुछ समय बाद मेरे वक्ष एकदम ढीले पड़ गए हैं. अब मेरे मांबाप मेरी शादी करना चाहते हैं, पर मुझे तो अब पुरुष जाति से ही भय लगता है. मुझे इस बात का भी डर है कि अगर मेरे पति को इस बारे में पता लग गया तो जिंदगी बरबाद हो जाएगी. मैं बहुत परेशान हूं. कृपया बताएं कि मुझे क्या करना चाहिए.

आप के साथ जो कुछ भी हुआ वह निस्संदेह एक दुखद घटना है, पर इसे भूल जाना ही बेहतर होगा. आप अपने मन से इस डर को बिलकुल निकाल दें कि शादी के बाद आप के पति को इस बारे में कुछ भी पता लग सकता है. इस घटना के बारे में किसी से कोई बातचीत न करें. अपने पति को इस बारे में बिलकुल भी न बताएं और यदि कभी उन्हें इस का पता भी चल जाए तो आप इसे सच मानने से साफ इनकार कर दें. जहां महिला को सब से अधिक खतरा पुरुष से है, वहीं वह उस का एकमात्र रक्षक भी है. इसलिए आप शादी करने से न घबराएं. अपने वक्षस्थल के विकास के लिए आप किसी महिला डाक्टर से या सौंदर्य विशेषज्ञ से सलाह ले सकती हैं.

*

मैं इंटरमीडिएट का छात्र हूं. पढ़ने में बहुत तेज था, पर अपनी तीन महीने की लंबी बीमारी के कारण अब पढ़ाई में काफी पिछड़ गया हूं. विज्ञान का छात्र होने के कारण मैं प्रायोगिक कक्षाओं में भी भाग नहीं ले सका. मेरी बीमारी पर घर वालों का काफी पैसा खर्च हो चुका है. इस कारण उन का व्यवहार भी मेरे प्रति अच्छा नहीं है. अगर मैं आगामी परीक्षाओं में बैठता हूं तो मेरा असफल होना निश्चित है. मैं बहुत परेशान हूं. मैं क्या करूं?

आप का यह सोचना ठीक नहीं है कि आप को आगामी परीक्षाओं में सफलता नहीं मिल पाएगी. आप बिलकुल भी परेशान न हों, इस संबंध में अपने शिक्षकों व सहपाठियों से बात करें, वह आप को पिछला पाठ्यक्रम पूरा कराने में अपना सहयोग जरूर देंगे. अपने मन में बसे इस डर को आप जब तक नहीं निकालेंगे, तब तक आप का मन पढ़ाई में नहीं लगेगा. पैसे की कमी के कारण घर वालों के व्यवहार में परिवर्तन आ जाना कोई अस्वाभाविक बात नहीं है. आप को पढ़ाई के लिए मेहनत करता देख कर उन के मन में आप के प्रति अपने आप प्यार पैदा हो जाएगा.

*

मैं 21 वर्षीय युवक हूं. मेरे घर वालों ने मेरा विवाह मुझ से बिना पूछे ही एक ऐसी लड़की के साथ कर दिया जो कि मुझ से तीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साल बड़ी है. उस के उम्र में बड़ी होने की वजह से मैं बहुत परेशान हूं. मेरा मन आत्महत्या करने को करता है. मेरा उचित मार्गदर्शन करें.

वैवाहिक संबंधों की सफलता आपसी प्यार व एकदूसरे को समझ सकने की योग्यता पर निर्भर करती है, उम्र के अंतर पर नहीं. पत्नी के आयु में बड़ी होने से किसी भी तरह का कोई अंतर नहीं पड़ता. वैसे भी महिलाओं का आकर्षण (यौवन) पुरुषों की तुलना में बहुत जल्दी ढलने लगता है. आप अपने मन में बसी इस हीन भावना को एकदम निकाल दें. आप पत्नी पर अपना पूरा अधिकार जमाएं. वैसे भी अगर पत्नी पति से उम्र में बड़ी हो तो वह उसे ज्यादा प्यार करती है.

*

मैं 22 वर्षीय वाणिज्य का स्नातक हूं. मुझे खेलकूद या शिक्षा के क्षेत्र में कभी भी कोई विशेष सफलता प्राप्त नहीं हुई. मैं औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहता हूं, पर वहां मुझे प्रवेश मिल पाना संभव नहीं है, क्योंकि न तो मेरे अंक बहुत अच्छे हैं और न ही मैं वहां के अधिकारियों को रिश्वत दे सकने की हालत में हूं. अब मैं अपना मार्ग खुद चुन सकने में स्वयं को असमर्थ पा रहा हूं, कृपया मुझे उचित सलाह दें.

आप वाणिज्य के स्नातक हैं. अतः आप के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में प्रवेश लेना बहुत लाभदायक नहीं होगा, क्योंकि यहां कम शिक्षा प्राप्त युवकों को तकनीकी शिक्षा दी जाती है. आप टाइप व शार्टहैंड सीखें, जिस से आप को नौकरी मिल सकने में आसानी हो. इस के साथ ही आप किसी अकाउंटेंट के साथ रह कर अकाउंट्स का काम सीख सकते हैं. इस से आप को पार्ट टाइम काम कर के भी अच्छी आमदनी हो सकती है.

*

मैं 27 वर्षीय दो बच्चों का बाप हूं. अब मेरी पत्नी बीमार रहती है और मेरी काम इच्छा शांत कर सकने में असमर्थ है. अपने बच्चों व भावुकता के कारण मैं उसे तलाक भी नहीं दे सकता हूं. किसी अन्य स्त्री के साथ शारीरिक संबंध रखने से बदनामी का डर लगता है. मैं इसी तरह से घुटता रहूं या वेश्याओं से संपर्क करूं?

हम आप को न तो वेश्याओं से संपर्क करने की सलाह देंगे और न ही किसी अन्य स्त्री से. इस स्थिति में आप को संयम से काम लेना चाहिए. आप के पत्र से ऐसा नहीं लगता कि आप की पत्नी को कोई असाध्य रोग है. अतः आप को उस के स्वस्थ होने की प्रतीक्षा करनी चाहिए, क्योंकि यदि आप इस के अतिरिक्त कोई भी कदम उठाते हैं तो वह आप के तथा आप के परिवार के लिए हानिकारक हो सकता है.

*

मैं 24 वर्षीय नौकरीपेशा युवक हूं. मुझे एक 16 वर्षीया लड़की से प्यार हो गया है. हम दोनों के मांबाप शादी के लिए तैयार हैं, पर मैं एक अज्ञात भय के कारण शादी करने से हिचकिचा रहा हूं. मैं ने सुना है कि स्त्री को 40 साल की आयु में संभोग की तीव्र इच्छा होती है, जब कि उस समय पुरुष की शक्ति बहुत कम रह जाती है. हम दोनों में आठ साल का अंतर है. मैं यह सोच कर डरता हूं कि कहीं आगे चल कर इस कारण हमारे पारिवारिक संबंध न बिगड़ जाएं. क्या मुझे उस लड़की से शादी कर लेनी चाहिए.

इस तरह की सुनीसुनाई बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए. सेक्स की इच्छा हर व्यक्ति में, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, एकसमान नहीं होती. न तो प्रत्येक स्त्री किसी आयु में बहुत अधिक कामुक हो जाती है और न ही पुरुष 40 साल के बाद शारीरिक संबंध स्थापित करने के अयोग्य हो जाता है. आप दोनों की आयु में जो अंतर है, वह असामान्य नहीं है, पर अभी उस लड़की की आयु शादी योग्य नहीं है. जब तक वह अपनी उम्र के 18 साल पूरे न कर ले, तब तक उस से शादी करना ठीक नहीं होगा.

—नीरजा ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिसंबर,
1982

नए नमूनों व
रंगीन चित्रों से सजासंवरा

गृहशोभा

बुनाई विशेषांक

परिवार के सभी सदस्यों को ध्यान में रख कर
हमारे बुनाई विशेषज्ञों द्वारा विशेष रूप से तैयार
किए गए 16 से अधिक मनमोहक डिजाइन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- हलके नीले रंग में गहरे नीले व सफेद तिकोनों वाला कार्डीगन
- गुलाब के फूलों से सजा शाल
- बच्चे का कंबल
- गाजरी रंग का सामने से खुला कार्डीगन
- तिरंगा व गोल गले का ब्लाउज
- आकर्षक शीशा से सजा स्वेटर
- बिल्ली के मोटिफ वाला स्वेटर
- मोटिफ जोड़ कर बनाई गई वाल हैंगिंग
- जबजब ऊन बचे चिड़िया रानी सजे
- ऊन का बुना हुआ कुत्ता

इन के अतिरिक्त अन्य कई आकर्षक नमूने, नए डिजाइन, सरल विधियों, बहुरंगे चित्रों व ग्राफों सहित इस ढंग से प्रस्तुत किए जा रहे हैं कि पत्रिका में उन्हें देखते ही आप बनाना शुरु कर देंगी.

साथ ही साजसज्जा, बागबानी, स्वास्थ्य व सौंदर्य, पकवान, दांपत्य व फिल्मों पर सचित्र सामग्री, घरगृहस्थी की समस्याएं सुलझाने वाली कहानियां व व्यंग्य

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराएं

रंजन से भरपूर
लाओं को रिझाने वाली संपूर्ण पत्रिका.

दिल्ली प्रेस प्रकाशन

विश्वविजय/प.शा. 110

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Ha dwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावधान

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

रक्षक ही भक्षक

फैजाबाद जिले में अयोध्या रेलवे स्टेशन पर चार पुलिस कांस्टेबलों को एक व्यक्ति रिवाल्वर, नगदी और घड़ी छीनने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है.

रेलवे पुलिस के अनुसार इन पुलिसकर्मियों ने उस व्यक्ति को पकड़ कर उस का स माल छीन लिया.

सावन के मेले के संबंध में नियुक्त इन चार कांस्टेबलों को बंदी बना लिया गया है, जब चार अन्य भाग गए हैं.

—दैनिक भास्कर, ग्वालियर (प्रेषक : रामस्वरूप याद

*

महिला के वेश में अपराधी

रीवा में पुलिस ने जिले के चितमंड गांव में एक कुख्यात अपराधी को महिला के वेश गिरफ्तार किया है.

प्राप्त समाचार के अनुसार भैरवा के थानाप्रभारी नंद किशोर और उन के अ सहयोगियों ने गांव के अपराधी के घर पर छापा मारा. पुलिस की आहट पा कर अपरा महिला का वेश धारण कर गोद में एक नवजात शिशु को ले कर खिलाने लगा.

यह देख कर पुलिस अधिकारी चक्कर में पड़ गए कि अपराधी कहां गया? अंत में सं होने पर उन्होंने ज्यों ही महिला का मुंह देखा तो अपराधी हरेंद्रराय पकड़ा गया. पुलिस को मामलों में उस की तलाश थी.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक : तोताराम लखा

*

छद्मवेशी लुटेरे

बलिया में हलधरपुर थाने के एक गांव में चार युवक लुटेरों ने सुंदर युवतियों का रू धारण कर चूड़ियां बेचने के बहाने एक संभ्रांत व्यक्ति के घर में दिनदहाड़े घुस कर लूटपाट और हजारों का सामान ले कर चंपत हो गए.

लुटेरों ने घर की औरतों के हाथपैर बांध दिए और उन के मुंह में कपड़े ठूंस दिए. घर पुरुष बाहर बैठे रहे और भीतर यह लूटपाट होती रही.

—स्वतंत्र भारत, लखनऊ (प्रेषक : देवनारायण गिरि

*

अंधविश्वास में ग्रामीण लूटा गया

ग्रामीणों को आज भी व्यापक रूप से अंधविश्वास ने जकड़ रखा है, जिस के फलस्वरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उन्हें अनेक कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं. इसी अंधविश्वास का लाभ उठा कर पाली से 20
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किलोमीटर दूर एक ग्रामीण को एक ओझा ने ठग लिया.

बताया जाता है कि एक ग्रामीण कष्ट से छुटकारा पाने के लिए ओझा के पास आया. ओझा ने उसे कष्ट से छुटकारा दिला ने का आश्वासन दिया. झाड़फूंक के पश्चात ओझा रात के समय उस ग्रामीण को गांव से बाहर तालाब के किनारे ले गया, जहां उस के गले में पहनी हुई एक तोले सोने की कंठी को, जिस पर लगभग चार तोला चांदी की चेन लगी थी, स्वयं रख लिया. तत्पश्चात उस ने ग्रामीण से कुछ दूर आंख बंद कर चलने को कहा.

इस बीच ओझा वहां से गायब हो गया. आंखें खोलने पर वहां ओझा को न पा कर उस ग्रामीण को अपने लुट जाने का आभास हुआ. **—नवभारत, रायपुर (प्रेषक : इंद्रजीत)**

*

अश्लील फोटो से छात्राओं के साथ ब्लैकमेल

मुरादाबाद में पुलिस ने उच्च घरानों की संपन्न छात्राओं को ब्लैकमेल कर के उन से पैसा ऐंठने वाले तीन व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है.

पुलिस सूत्रों के अनुसार ये तीनों व्यक्ति जिन में से एक फोटोग्राफर है, किसी तरह संपन्न परिवार की युवतियों के चित्र संग्रह कर के उन के चेहरे अश्लील चित्रों पर चिपका कर चालाकी से कुछ अश्लील चित्र तैयार कर लेते थे. उन चित्रों में असलीनकली का पता ही नहीं चलता था.

बाद में इन चित्रों के आधार पर ये तीनों व्यक्ति उन युवतियों तथा उन के अभिभावकों को ब्लैकमेल कर के हजारों रुपए ऐंठ लेते थे.

—दैनिक अग्निबाण, इंदौर (प्रेषक : गुरविंदरसिंह नारंग)

*

डाकघर में जाली टिकट

राजस्थान के सीकर जिले के लक्ष्मणगढ़ कसबे में पुलिस ने पोस्टमास्टर को जाली टिकट बेचने के अपराध में गिरफ्तार किया है.

बाद में उस के पास से एक हजार 50 रुपए के जाली डाक टिकट पकड़े गए.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक: जगदीश सिंघल)

*

पति को वश में करने के चक्कर में महिला डाक्टर ठगी का शिकार

कानपुर में पति को वश में करने के चक्कर में एक महिला डाक्टर एक ठग का शिकार बन गई.

यह महिला डाक्टर गोविंदनगर स्थित अपनी क्लिनिक में बैठी रोगियों का परीक्षण कर रही थी कि जैसे ही उस ने अधेड़ उम्र के व्यक्ति की नब्ज पकड़ी, उस ने बड़े ही विचित्र स्वर में डाक्टर को फटकारते हुए अपना हाथ खींच लिया और डाक्टर का भूत, भविष्य की बातें बताने लगा. महिला डाक्टर उस से काफी प्रभावित हुई और सारा काम छोड़ कर अपने पारिवारिक जीवन के रहस्यों पर उस से बातचीत करने लगी.

ठग ने महिला डाक्टर की कमजोरी भांपते हुए उसे पति को वश में करने का एक नुसखा बताया और कहा कि नुसखे में बताई गई चीजें मंगा कर उन्हें एक पोटली में बांध कर किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा भैरोंघाट भेज कर वापस मंगाए जो गायत्री मंत्र जानता हो. वापस आने पर वे उन चीजों को प्रसाद रूप में ग्रहण कर ले तो पति वश में हो जाएगा.

महिला डाक्टर ने उस से उक्त सामग्री लाने के लिए विनती की और कहा कि वह खुद ही भैरोंघाट तक चला जाए. ठग लगभग 60 रुपए ले कर यह कहते हुए रवाना हो गया कि 15 मिनट तक कुरसी से न हिलना. किंतु जब वह नहीं लौटा तो महिला डाक्टर को अपनी भूल का एहसास हुआ. **—आज, पटना (प्रेषक : मनोजकुमार निर्भीक)** **(सर्वोत्तम)** •
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ोबन उकसे देह से...

भौंरे गुनगुन गा रहे, तितली उड़े स्वच्छंद.
मौसम मतवाला हुआ, घुली हवा में गंध.

ारसों पीली क्या हुई, हुआ विमोहित खेत,
खदेख सकुचा रही, पगडंडी की रेत.

लयानल ऐसी चली, चंदन हो गया गांव,
ाबन उकसे देह से, डरे धूप से छांव.

ायल कुहुकी बाग में, बौराए हैं आम,
मर कली का साथसंग, हुआ आज बदनाम.

धनुष फागुन हुआ, मनुवा लाल गुलाल,
ा ने गौरी के रंगे, हृदय नेह से गाल.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध भूमि

बलराम बुधिया को हर कीमत पर अपनाना चाहता था पर वह उसे पा न सका. प्रेम में निराशा ने उसे इतना तोड़ डाला कि वह कहीं दूर भाग जाना चाहता था पर बुधिया की यादें युद्ध भूमि में भी उसे किस प्रकार कचोटती रहीं...

अंधकार, सब ओर गहरा अंधकार छाया है. एक वृक्ष, उस के तले करीब ढाई सौ मनुष्यों का समूह. कोई किसी से कुछ नहीं बोल रहा है. सारा काम अनुमान से हो रहा प्रतीत होता है, पर ऐसा नहीं है. रोजमर्रा का अभ्यास और आपसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सूझबूझ ही उन की प्रत्येक गतिविधि का आधार है. एक टोकरी पूरियों से भरी है. लोग उस में से अपनी आवश्यकतानुसार पूरियां और साथ रखे बड़े कनस्तर में से सब्जी ले कर एक ओर जा कर बेमन से भूख न होते हुए भी जल्दीजल्दी खा रहे हैं. मग में भरी गरमागरम चाय के घूंट गटागट गले से उतार रहे हैं...

तभी प्रत्येक व्यक्ति को एकएक छोटा पैकेट थमा दिया जाता है, जो कागज से बंधा है. इस में क्या है, यह कोई नहीं पूछता, क्योंकि सभी जानते हैं कि इस में क्या हो सकता है. सब पीठ पर बंधे थैले में वह पैकेट रख लेते हैं. तभी समीप ही कुछ और बांटा जाने लगा है. सब आकृतियां उस ओर लपकती हैं. विचित्र स्थिति है. मुंह में पूरी का ग्रास है, बाएं हाथ में मग में चाय भरी है और लोग बांटी जा रही वस्तु लपकने के फिराक में हैं.

छःसात आकृतियां एक ओर खड़ी हैं. प्रत्येक कार्य बड़ी तेजी से हो रहा है. वे सब अच्छी तरह स्थिति की गंभीरता को अनुभव कर रहे हैं.

"सुनो..." तभी एक आकृति अत्यंत धीमे, पर रोबीले स्वर में फुसफुसाई, "अभीअभी सूचना मिली है कि आज का दिन अत्यंत व्यस्तता का होगा. आप लोगों को दी गई थैली पूरे दिन का राशन है. जितनी गोलियां व हथगोले आप अपने पास रख सकते हैं, रख लें. याद रहे कि हमारे ही ऊपर देश की रक्षा का दायित्व है, अपने प्राणों की बाजी लगा कर भी हमें देश की रक्षा करनी है. जाइए और अपनाअपना मोर्चा संभाल लीजिए, जय हिंद."

"जय हिंद." वहां उपस्थित प्रत्येक आकृति ने मात्र फुसफुसा कर ही जयहिंद का जवाब दिया, पर ढाई सौ व्यक्तियों की वह मिलीजुली फुसफुसाहट भी खासी आवाज उत्पन्न कर गई, जिसे सवा सौ फुट की दूरी तक सुना जा सकता था.

आकृतियां तितरबितर हो गईं. सब बाएं कंधे पर बंदूक तथा दाएं हाथ में गोलाबारूद से भरा बक्सा लिए अपनेअपने गंतव्य को लपक पड़े.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस गहरे अंधकार में जहां हाथ हाथ न सूझ रहा था, सारा काम ब तत्परता व सही ढंग से हो रहा था, मानो का चप्पाचप्पा उन का चिरपरिचित हो

उन आकृतियों के पीछे, बहुत सैकड़ोंहजारों मील दूर कोई शक्ति अंध का अस्तित्व मिटाती जा रही थी. सं इसी लिए यह अंधकार उन्हें अंधकार प्रतीत हो रहा था.

सभी अपनेअपने मोर्चे पर जा कर वाले क्षणों की तैयारी में जुट गए थे. उन यह मोर्चा, जो एक छोटीमोटी खंदक ही लगभग डेढ़पौने दो मीटर गहरा आधापौना मीटर चौड़ा तथा सवाडेढ़ लंबा खड्ड था. उन की जीवन रक्षा का सहारा था, जिसे उन आकृतियों ने डेढ़ में खोद कर तैयार कर लिया था. धी अंधकार छंट रहा था...खंदकों में आकृतियां अब स्पष्ट होती जा रही थीं. भारतीय बहादुर जवानों का युद्ध भूमि अग्रिम मोर्चा था.

पौष माह. पौ फटने ही वाली थी की ओर से एकाएक दनदना गोलियां ब लगीं. किसी भी आक्रमण का पहला हर किसी के लिए भयानक होता है. कितना ही साहसी कोई कोयों न आक्रमण के प्रारंभिक क्षण, हृदय दहल वाले होते हैं. बाद में तो सब सामान्य लगता है. जीवन और मृत्यु में कोई भेद रहता...

युद्ध का 11वां दिन था. सुबह होते गोलियों का बरसना शुरू हो जाना सा सी बात हो गई थी, परंतु फिर भी अप्रत्याशित आक्रमण से जवान खंदकों में दुबक से गए. इस प्रकार आक्रमण प्रायः संध्या अथवा रात्रि में ही करते हैं, क्योंकि रात को ही सेना आगे हुआ करती है अथवा सैनिक गतिविधियां हुआ करती हैं, परंतु इस समय भार जवानों ने अपनी तैयारी पूरी कर ली थी वे आक्रमण रोकने की स्थिति में थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस क्षेत्र की चौ[illegible] में से एक खंदक के दो जवान , खंदक से आठ-नौ अंगुल ऊपर सावधानीपूर्वक सिर निकाल कर अपनी स्वचालित राइफलों से गोलियां बरसाने लगे. ढेरों गोलियां चला दीं, पर शत्रु पक्ष की गोलियां थमने का नाम ही नहीं ले रही थीं. खीज कर सिपाही बलराम ने अपने से कहा, ''शैतानों ने कहर ढा रखा है.''

राइफल से जुड़े पट्टे में गोलियां समाप्त हो चुकी थीं. अंतिम गोली के दगते ही बोल्ट चैंबर में जा लगा. नायक चरनजीत ने सिपाही बलराम की बात सुन ली थी. वह अभी भी निशाना ताकने वाली 'बैक साइट' की 'यू' से 'फोर साइट' की नोक द्वारा शत्रु के क्षेत्र को देख रहा था, ''क्यों, घबरा गया?''

''हैं,'' बलराम ने व्यंग्य से चरनजीत को देखते हुए कहा, ''भला मैं क्यों घबराने लगा?''

''तो फिर इस तरह की बात क्यों कर रहा है?''

''रुक इसलिए गया हूं कि गोलियों को व्यर्थ में क्यों नष्ट करूं?''

''तब तो तू युद्ध लड़ चुका.''

''भूल गया चरनजीत,'' बलराम ने गोलियों से भरा नया मैगजीन (पट्टा) राइफल में चढ़ाया और खंदक की दीवार से पीठ लगाते हुए उस के कुंदे को बूट के ठुड पर रख, संगीन को दोनों हथेलियों से थामते हुए कहा, ''प्रशिक्षण केंद्र में सशस्त्र प्रशिक्षण के दौरान सिखाया गया था कि हर गोली से एक शत्रु मरना चाहिए.''

चरनजीत ने एक कटु मुसकान के साथ उसे देखा, ''तब तो इस पृथ्वी पर एक भी मनुष्य जीवित नहीं रह गया होता.''

''तो फिर इस प्रकार पागलों की तरह गोली चलाए जाने में क्या तुक समझ में आती है?''

''हम यदि चुप हो गए तो शत्रु का मनोबल बढ़ेगा.''

''और तब शत्रु हम सब को मृत समझ कर अपने सुरक्षित मोर्चे से बाहर निकल आएगा?'' बलराम ने चरन की बात को बीच ही में काटते हुए कहा, ''जब वे हमारी राइफलों की मार में आ जाएंगे तो हम उन पर गोली बरसाना आरंभ कर देंगे,'' चरनजीत ने उस पर व्यंग्य कसा था, परंतु बलराम ने उस के व्यंग्य को अपनी तर्कसंगत बात से इस प्रकार पूरा किया कि उस का व्यंग्य व्यर्थ हो गया. चरनजीत उसे देखता रह गया.

कुछ क्षण मौन रह कर उस ने पुन: कहा, ''क्या हम ऐसा नहीं कर सकते?''

आकाश बादलों से घिरा हुआ था. कुछ ही समय बाद वर्षा होने लगेगी, ऐसा लग रहा था. बलराम ने दृष्टि ऊपर उठाई और एक राहतपूर्ण सांस छोड़ते हुए कहा, ''लगता है, बादल हमारा साथ देना चाह रहे हैं.''

चरनजीत मौन था, वह यों ही ऊपर देखने लगा. पता नहीं क्यों, उस का मन बादलों को देख कर उदास हो गया. वर्षा की संभावना को देखते हुए दोनों ने अपने पीछे लटके बड़े झोले में से बरसाती कोट निकाल कर पहन लिए. सिर का लौह टोप ठीक किया और राइफल को सामने की ओर ताने दोनों गतिहीन खड़े रहे.

एकाएक मूसलधार वर्षा होने लगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

धीरेधीरे नई खुदी खाइयों में पानी भरने लगा. Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri परंतु दोनों ओर से गोलीबारी यदाकदा अब भी होती रही.

खाई में काफी पानी घुस आया था. वर्षा की गति अभी भी पूर्ववत थी. बलराम ने एक बार पुनः चरनजीत को देखा. दोनों की दृष्टि आपस में टकराई और वह मुसकरा कर बोला, "चरनजीत, वर्षा में युद्ध का मजा ही कुछ और है."

"लगता है, तुझे जगदलपुर में तालाब में नहाने का अवसर कभी नहीं मिला?"

वह खिलखिला कर हंस दिया. साथी की बात पर वह अपनी हंसी रोक नहीं पाया था. वे दोनों ही इंद्रावती नदी में कितना तैरा करते थे. क्या चरनजीत यह बात भूल गया? इंद्रावती की बात से एकाएक ही उसे अपनी प्रिया बुधिया की याद आ गई. फौज में आने से पूर्व किशोर अवस्था की सब से मधुर व स्मरणीय घटना से उसे रोमांच हो आया.

उस की प्रिया इंद्रावती से दो किलोमीटर पर बसे आसना गांव में रहती थी. वह गांव की सब से आकर्षक साढ़े 15 वर्ष की श्यामसलोनी सुंदरी थी. वह भी उसी गांव का सब से चुस्त, हृष्टपुष्ट 17 वर्ष का आकर्षक पट्ठा था.

जब भी वह उस के घर के सामने से गुजरती, वह उस के साथ हो लेता. एक दिन एकांत मिलते ही उस ने उस से अपनी आदिवासी बोली में पूछ ही लिया, "क्यों री, कहां जा रही है, इस तरह बिजलियां गिराती हुई?"

"सलफी (वृक्ष से चुहाया गया एक नशीला रस) उतारने," उस ने सहज स्वर में उत्तर दिया.

"मुझे खुआअस (मुझे पिलाएगी)."

"तोके तो जरूर खुआऊएं मैं (तुझे तो अवश्य पिलाऊंगी मैं)," चंचल मुसकान के साथ उस ने उत्तर दिया था तथा और भी इठला कर चलने लगी थी वह. वह भी उस के साथसाथ चलता रहा था. बुधिया से उसे सच्चा प्यार था. हृदय की असीम गहराइयों से वह प्रेम उत्पन्न हुआ था. वह उस के हृदय में अपने प्रति भी इसी प्रकार का प्रेम पैदा करना चाह रहा था.

सलफी वह स्वयं उतार लाई थी. लौ के सूखे खोल के पात्र में सलफी भरी बुधिया ने सुकालू (बलराम का आदिवा नाम, वह शुक्रवार को जन्मा था, इसलि उस का यही नाम रखा गया था) को वह थमा दिया. कुछेक घूंट पी कर उस ने लौटा दिया. पात्र में शेष बची सारी सल वह एक ही सांस में पी गई थी.

कुछ समय पश्चात दोनों की आंखों हलका सा नशा छाने लगा. हलका सा अ गुलाबी नशा. बुधिया की आंखों में स उभर आया. मनमस्तिष्क में एक ही थी—अपने प्रियतम की बांहों में समा सलफी रस के साथ जीवन के प्रथम यौवन का रसपान करूं. उस के मनमस्तिष्क वासना का तूफान अपने चरम उफान पर वह इसी प्रतीक्षा में थी कि कब सुकालू अ पुष्ट बांहों में ले कर उसे सीने से लगाता

वह भी नशे की अवस्था में था. बुधिया का निर्वस्त्र, सुकोमल और गठ शरीर लुभाने लगा. नवयौवना के आक उभरते वक्ष को इतने समीप देख कर असंतुलित हो गया. दोनों की आंखें टक और भावनाओं के वेग में आ कर एकदूसरे की बांहों में खो गए.

पर नहीं, उस ने उसे तुरंत छोड़ दि यद्यपि उन के आदिवासी संस्कारों स्त्रीपुरुष के बीच कोई ऐसी दीवार न थी उन्हें ऐसा करने से रोकती हो. इस बा अपना निर्णय लेने के लिए वे स्वतंत्र थे, अपने जगदलपुर के पढ़ेलिखे आदिवासी का प्रभाव उस पर पड़ चुका था. उस निगाह में विवाह से पूर्व अभिसार उचित था. विवाह पूर्व का संबंध अनैतिक कृत्य

इस के विपरीत बुधिया जिस वाताव में पली थी, उस में जब कोई पुरुष स्त्री की का स्पर्श कर के उसे अछूता छोड़ देता है वह निश्चित रूप से उन की सीधीसीधी भा में कापुरुष अर्थात नपुंसक होता है.

बस यही था उस का दोष. बस्तर घोटुल वातावरण में रह कर भी वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षण 'घोटुल' सभ्यता की [illegible] लगी. वह निश्चय ही पाषाण है. बुधिया उसे फिर कभी नहीं दिखी. बाद में उसे पता चला कि वह एक अन्य लड़के के साथ रहने लगी थी. वह इसी आघात को सहन न कर सकने के कारण अपने मित्र चरनजीत के साथ रायपुर भाग गया था. नगर के एक चौराहे पर एक विशाल विज्ञापन पट्ट पर बड़ीबड़ी मूंछों और सैनिक वरदी में सज्जित जवान का चित्र देख कर वे भी भरती दफ्तर में चले गए थे. भरती अधिकारी ने उन दोनों के हृष्टपुष्ट शरीर व चेहरे देख कर उन्हें प्रसन्नतापूर्वक भरती कर महार रेजिमेंट के लिए सागर प्रशिक्षण केंद्र में भेज दिया था.

"बलराम..." चरनजीत ने पुकारा.

विचारों की शृंखला टूट गई. कटु स्मृति से वह उदास हो गया था. उस ने सचेत होते हुए चरनजीत को प्रश्नभरी दृष्टि से देखा.

"क्या सोच रहा था?"

"तू ने जगदलपुर की याद दिलाई और मैं क्षण भर में ही वहां पहुंच गया था." उस के स्वर में वेदना स्पष्ट परिलक्षित हो रही थी.

"ओह..." खाई में भरे पानी की ओर उस का ध्यान दिलाते हुए उस ने कहा, "कमर तक पानी भर आया है. अब तो पानी में सावधानीपूर्वक रहना होगा, जरा भी झुके तो पूरी तरह भीग जाएंगे."

कहने को वे बरसाती कोट पहने हुए थे, पर कमर तक पानी में डूबे होने के कारण काफी भीग चुके थे. सेना का बरसाती कोट मूसलधार वर्षा को रोक पाने में सर्वथा असमर्थ रहता है. केनवस के कपड़े से पानी भीतर रिस आता है.

सर्वत्र पानी ही पानी हो गया था. वर्षा की मोटीमोटी बूंदें अब भी गिर रही थीं विशाल समतल मैदान में कहींकहीं छोटीमोटी झाड़ियां थी, अन्यथा दूर तक सपाट मैदान के सिवा और कुछ नहीं दिखाई दे रहा था. बड़ी विचित्र स्थिति उत्पन्न हो गई थी. शत्रु की गोलीबारी तथा भारी वर्षा के कारण सीधे खड़े रहना जोखिमपूर्ण था. यदि खाई से निकलते हैं तो स्थिति और बदतर

होगी, क्योंकि न तो वे पीछे हट सकते थे और न ही मैदान में लेट सकते थे.

पौन घंटे की ताबड़तोड़ वर्षा के पश्चात अब सब सामान्य हो आया था, परंतु पौष माह की ठंडी हवा शरीर को काटे जा रही थी. आकाश में अब भी घने काले बादल छाए थे, जिस से काफी अंधेरा सा था.

"चल दोस्त," बलराम ने अपने पीछे लगे थैले को चरनजीत की ओर करते हुए कहा, "जरा संभाल कर खाने का डब्बा निकालना."

चरनजीत ने हैरान हो कर भी थैले से डब्बा निकाल कर उसे थमा दिया. बलराम ने डब्बे को सावधानीपूर्वक खोला, उस के भीतर का पैकेट बाएं हाथ में ले कर खाली डब्बा चरनजीत्त की ओर कर के उस ने अपनी योजना बताई, "देख मित्र, कुछ तो करना ही होगा. मूर्खों की तरह मुंह बाए खड़ा रहना मुझे पसंद नहीं. इस डब्बे से खड्ड का पानी बाहर उंडेलना होगा."

"क्या बात कर रहा है? इस पौने दो मीटर गहरी, एक मीटर से भी ज्यादा लंबी और पौना मीटर चौड़ी खाई का कितना पानी इस डब्बे से निकाल सकेगा?"

"यार, समझ में नहीं आता कि तुझे नायक किस ने बना दिया? सेना के शब्दकोश में कुछ भी असंभव नहीं है.

"आजकल चमचे लोग ही सेना में तरक्की पा रहे हैं. काम जानने अथवा करने वाले की परख करने की क्षमता भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

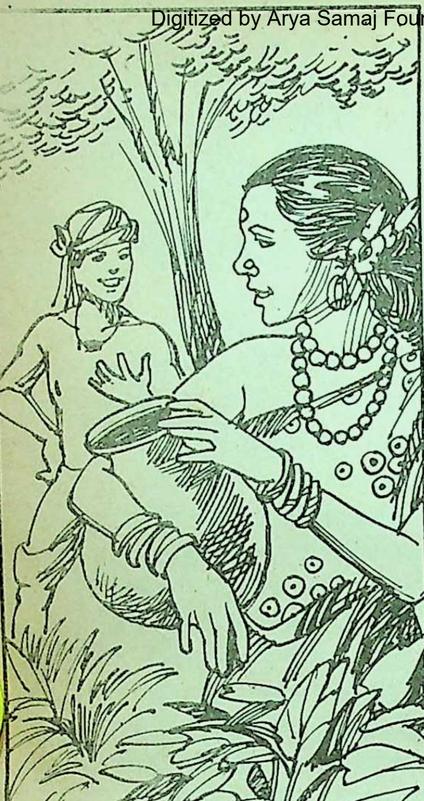

"क्यों री, कहां जा रही है?" बलराम ने बुधिया से पूछा.

अधिकारियों में अब नहीं रही है."

मित्र के कटाक्ष का उस ने बुरा नहीं माना. सही ही तो कहा था बलराम ने. पूरी रेजिमेंट में उस जैसा चुस्त, बिना थके मीलों तक दौड़ सकने वाला तथा निशानेबाजी में दक्ष और कोई नहीं था. कमी यही थी कि सातवीं तक ही पढ़ालिखा था, वरना उस में सूझबूझ की कोई कमी न थी. अफसरों की जीहुजूरी वह कभी नहीं करता था. एक वह है, जिस ने लेफ्टिनेंट कर्नल का अर्दली बन कर दो वर्ष में ही लांस नायक की पदोन्नति प्राप्त कर ली, फिर कंपनी कमांडर और उस के सहायक का जीहजूरिया बन गया. अब हाल ही में नायक का बिल्ला मिल गया था. उस कितनों ने इसी प्रकार पदोन्नति प्राप्त की पर बलराम इस रास्ते से बहुत दूर था. कारण वह सेना में आने के आठ वर्ष बाद कोई तरक्की नहीं कर सका है.

बलराम ने डब्बा भरभर कर पानी से बाहर फेंकना शुरू कर दिया. उसे देख नायक चरनजीत ने भी इसी तरह निकाल कर पानी निकालना शुरू कर दि आधे घंटे के अथक प्रयास के पश्चात दोनों खड्ड से पूरा पानी बाहर निकाल फें "देखा, अब कम से कम यहां ठीक से खड़ा रहा जा सकेगा."

खड्ड का पानी पूरी तरह निकाला चुका था, परंतु अब कीचड़ हो गया था. ऊ से नीचे तक उन के सारे कपड़े भीग चुके बादल अब धीरेधीरे उत्तर की ओर छंट थे. धूप अब बहुत प्यारी लग रही थी. दोनों अपना बरसाती कोट उतारा और करीने तह कर के बड़े थैले से बांध दिया. खड्ड था. बरसाती लपेटते समय उन के और क पर भी कीचड़ लग गया था. चमड़े के पानी में भीग जाने के कारण फूल कर भारी गए थे.

शत्रु की ओर से गोलीबारी में अब तेजी आ गई थी. दोनों ने अब पूरी तरह की ओर ध्यान दिया. करीब 650 मीटर दूरी पर एक मोर्चा स्पष्ट दिखाई देने लगा

"चरनजीत, वह सामने जो मोर्चा रहा है न, उस में तुझे कुछ दिख रहा है

"दोतीन झाड़ियां थोड़ीबहुत हिल हैं." शत्रु ने लोहे के टोपे पर झाड़ी की पत्ते छोटी टहनियां खोंस रखी थीं, जिस से लोहे टोप ढका रहे और दुश्मन के जवान समझने में भूल कर दें.

"तो फिर क्यों न हम भी कुछ इसी का काम करें."

"मैं तैयार हूं."

"तेरे पास मैगजीनें (गोली भरा वाला टिन का घुमावदार खोल) तो पूरी हैं"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां."

"तो चल, निशाना साध."

"दोनों ने अपनी राइफलों से निशाना साधा. निशाने के बारे में आश्वस्त हो जाने पर चरनजीत ने कहा, "चालू कर."

इस के साथ ही दोनों की स्वचालित राइफलों से निरंतर गोलियां दागी जाने लगीं. शत्रु पक्ष से भी जवाबी गोलाबारी हुई. चार मैगजीन गोलियां दागी जाने के पश्चात बलराम ने दायां हाथ बढ़ा कर चरनजीत के कंधे पर रखा.

"रुको, देखो."

चरनजीत को उस के इस विशेष अंदाज से बोले गए शब्दों पर एकाएक हंसी आ गई, वह हलके से मुसकरा कर बोला, "मित्र, तू है बड़ा जिंदादिल और सुखी इनसान."

"यह तो एक घिसापिटा संवाद हो गया." उस ने दृष्टि राइफल पर से हटा कर चरनजीत को देखा. "सुख से वही जी सकता है, जिस की तरक्की होती रहे. जिस का जीवन एक बिंदु पर आ कर ठहर जाए, वह तो निहायत दुखी कहलाता है."

दोनों मित्र इसी तरह फुसफुसाते रहे. जहां पर वे खड़े थे, वहां पर अब पहले से कहीं अधिक कीचड़ हो गया था. कीचड़ बढ़ाने में सब से ज्यादा सहायक वह पानी था, जो खंदक की दीवारों से रिस कर नीचे आ रहा था. उन के जूते कीचड़ से लथपथ हो चुके थे. चरनजीत ने कीचड़ में धंसे पांवों पर ध्यान दिया.

समय बीतता जा रहा था. गोलियां अब भी बरस रही थीं. इधर से भी जवाब में गोलियां बरसाई जा रही थीं. पर एक बात अवश्य थी, शत्रु जहां अंधाधुंध गोलियां दाग रहा था, वहीं इस ओर से कम से कम गोलियां चलाई जा रही थीं.

चरनजीत बंदूक सामने कर के 'फोर साइट की यू' पर निशाना साधे खड़ा था. उस का सीना गीली मिट्टी की दीवार से सटा था. वह वहां था, पर उस का मन कहीं और भटक रहा था. बलराम ने उसे इस तरह खोए देखा तो मित्र की इस अवस्था के प्रति उस के हृदय में करुणा उभर आई. उस ने सामने की ओर सतर्क निगाह से देखते हुए अपने मित्र को टहोका दिया. चरनजीत फिर भी अपने खयालों में खोया रहा. युद्धभूमि से हजारों मील दूर, सागर में, उस के मित्र, रामलखन सिंह के पिता पुलिस में दीवान (हैड कांस्टेबल) थे. उन्हीं के पड़ोस में एक नेपाली थे. वह भी पुलिस में दीवान थे. नाम था मोहन बहादुर थापा. बड़ा ही जबरदस्त पियक्कड़ और जुए का शौकीन था. 10 रुपए जीतना तो 50 हार आना. उस की पत्नी चारचार बच्चों की मां हो कर भी देखने में अब भी लड़की सी थी. गोरा रंग था, अपनी वास्तविक आयु से 14-15 वर्ष छोटी लगती थी. फैशन की इस कदर दीवानी और यारदोस्तों के साथ घूमनेफिरने की इस कदर शौकीन थी कि बच्चों की भी उसे कोई फिकर नहीं थी. वह तो स्वतंत्र तितली बन उड़ने में ही विश्वास करती थी.

दोनों कइयों से रुपए उधार ले चुके थे. फिर भी पैसे की तंगी बनी रहती थी. रुपए देने वाले भी बड़े धूर्त थे. वे उधार दे कर मांबेटी को एकसाथ हथियाने का उद्देश्य रखते थे. वह भी इस बात को खूब समझती थी. वह बहुत समझदार लड़की थी. पर उस के दोनों भाई भी मांबाप के पदचिह्नों पर गए थे. छोटी बहन भी आवारा हो चली थी. फिल्म दिखाने का प्रलोभन दे कर कोई भी उसे साइकिल पर बैठा कर अपने साथ ले जा सकता था. वह यह सब देखती थी, समझती थी, पर उस ने कभी भी अपने को रास्ते से डगमगाने नहीं दिया. यदि कोई रुपए की पूरी गड्डी भी पटक देता और यह कहता कि उसे दोनों मांबेटी को एकसाथ घुमाने की इच्छा है तो उस की मां तो तैयार हो जाती, वह नहीं.

उस लड़की की दृढ़ता को मानना होगा. इसी दृढ़ता के कारण वह मातापिता की दुर्बलता का शिकार होने से बची रही. हां, उस की दृष्टि उस सांवले, लजीले व सभ्य से दिखने वाले नवयुवक पर स्थिर थी. वह उस के सरल हृदय से प्रभावित थी. न कोई ऐब, न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवगुण और न ही इधरउधर का चसका. उस के पड़ोसी रामलखन सिंह के घर में आने वाला चरनजीत सिंह, हां, यही तो उस का नाम था, उसे बहुत भला लगता था. रंगरूप में वह कम था, पर इस से क्या अंतर पड़ता है.

बीरकुमार थापा, उसी की जाति का था. वह काफी खूबसूरत था, एकदम हीरो जैसा. वह भी उस के चक्कर में घर आता था. वह सोचता था जैसे उस के बारे में वह कुछ जानती ही नहीं. स्त्री का मन बड़ा कोमल होता है. वह कोई बात पेट में पचा नहीं सकती, चाहे वह बात खुद उस को लाखों में बदनाम क्यों न कर दे. उस की बचपन की सहेली अंजू पर डोरे डालने के लिए इसी बीरकुमार ने उस के घर के न जाने कितने चक्कर लगाए. किसी प्रकार उस का मन जीत कर उस ने अपनी शारीरिक भूख मिटा ली थी और आम का रस चूस कर फेंकी गई गुठली की तरह वह अंजू को छोड़ गया. इस आघात को आज तक नहीं भूल पाई है, बेचारी अंजू. ऐसा बीरकुमार उसे कब भा सकता है.

चाहे कुछ भी हो, वह चरनजीत से एक बार अपने मन की बात कहेगी. अधिक से अधिक उसे यही तो ग्लानि होगी कि उस ने नारी होते हुए भी पुरुष के समक्ष अपने हृदय की बात प्रकट कर दी, पर कोई ऐसा अवसर ही नहीं मिलता, जब वह रामलखन के घर अकेला आता हो.

यकायक पिता इस दुनिया से चल बसे. एक दिन नानू ने चरनजीत को एक बच्चे के हाथ अपने घर बुलवा ही लिया. घबराते, सकुचाते वह आया. द्वार के बाहर उस ने दस्तक दी. नानू द्वार के दूसरी ओर दीवार के सहारे हृदय थामे खड़ी थी, शरीर पसीनेपसीने हुआ जा रहा था. परपुरुष से इतना कुछ कह पाना, उस जैसी स्वाभिमानी लड़की के लिए सहज विषय न था. बुलाने गया बच्चा द्वार खुलते ही कमरे में चला आया.

चरनजीत अभी बाहर था और नानू घबराई सी खड़ी थी. कैसे उसे भीतर बुलाए. चरन ने प्रश्नसूचक दृष्टि से बच्चे को फिर देखा. बच्चे की स्थिति बड़ी दयनीय हो थी. नानू ने उस के द्वारा चरनजीत को बुलवा लिया था, पर अब उस के आने पर चुप खड़ी थी. चरन भी समझ गया कि दरवाजे के पीछे खड़ी है, पर कुछ भी कहने साहस वह भी नहीं बटोर पा रहा था.

नानू ने बच्चे को संकेत द्वारा चरन भीतर बुला कर कुरसी पर बैठाने को सात वर्षीय बालक समझ गया. उस ने संकेत से चरनजीत को भीतर बुलाया. चला आया. कमरे में प्रवेश करते ही नानू को सिकुड़ीसिमटी सी दीवार के साथ देखा. पहली बार दोनों ने एकदूसरे को समीप से देखा था. बच्चे के आग्रह पर कमरे में पड़ी एकमात्र पुरानी कुरसी पर गया. अब नानू ने साहस बटोरा. एक गि पानी ला कर उस के सामने खड़ी हो कांपते हाथ से चरन ने गिलास लिया, पिया और गिलास एक ओर रख दिया. व कर फिर दीवार के सहारे खड़ी हो गई. कहनेसुनने की बारी थी. कुछ क्षण के मौ बाद उस ने निर्भीक स्वर में कहा, "चर एक बात मैं आप से पूछना चाहती हूं आप अपने हृदय को साक्षी रख कर साफ बताने को तैयार हैं?"

रोमांचित

चरनजीत ने सहज की कोशिश करते कहा, "आप पूछिए, मैं सच कहता हूं कि जो पूछेंगी, मैं साफसाफ बताऊंगा.

उस ने स्वयं को तैयार किया सकुचाते हुए कहा, "चरनजी, मेरे घर स्थिति संभवतः आप से छिपी नहीं है. कारण है कि मुझे शराबी, जुआरी ऐय्याश पुरुषों से घृणा हो चली है. जहां मेरा अनुमान है, आप इन सब से बचे हैं. लिए मैं ने कुछ एकतरफा निर्णय लिया है आप से साफसाफ जानना चाहूंगी कि आप मुझे अपने जीवनसाथी के रूप स्वीकार कर सकेंगे?"

चरनजीत स्तब्ध रह गया. वह जा था कि नानू उसे किस लिए अपने यहां बु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही है. पर, फिर भी दृढ़ निश्चयी लड़की की यह आकस्मिक घोषणा और प्रश्न सुन कर वह क्षण भर के लिए स्तब्ध रह गया था. किसी तरह अपने को संभालते हुए उस ने पहली बार नानू का नाम ले कर कहा, ''नानूजी, मेरे मन में भी आप के प्रति यही भावना समाई हुई थी, पर आप नेपाली हैं और मैं आदिवासी, इसी संकोच से...''

''मेरी दृष्टि में जातपांत का कोई महत्त्व नहीं रह गया है, चरनजी.'' उस ने कुछ रुक कर फिर कहा, ''मैं साफसुथरी जिंदगी चाहती हूं, क्या आप मुझे वह दे सकेंगे? साफसुथरी जिंदगी से मेरा आशय मदिरा, जुए और व्यर्थ की मौजमस्ती से दूर, त्यागमय एकदूसरे को समर्पित आदर्श जीवन है.''

चरनजीत के मन में मानू को देख कर एक आदर्श पुरुष का प्रेम उस पर लुटाने की भावना तो कब से थी. इसी लिए तो वह प्रशिक्षण केंद्र से अवसर मिलते ही उसे देखने रामलखन के घर चला आया करता था. इसलिए उस ने तुरंत कहा, ''नानू, मैं तो स्वयं तुम से यह कहने वाला था कि मैं तुम्हें अपना जीवनसाथी बनाना चाहता हूं. तुम्हारे लिए मैं बड़े से बड़ा त्याग करने को तैयार हूं, पर...?''

''पर क्या?''

''पर जो रूप तुम्हारी मां का है, उसे तुम पर मैं नहीं देखना चाहता... मुझे एक ऐसी जीवनसंगिनी चाहिए जो सिर्फ मेरी हो, मेरे लिए जिए, मेरे लिए ही समर्पित हो. तुम ऐसा कर सको तो देखना, मैं तुम्हें कितना प्यार दूंगा...''

''आप निश्चिंत रहिए... यह मेरी प्रतिज्ञा रही.''

''मेरी भी यह प्रतिज्ञा है, नानू कि मेरा समूचा जीवन अब सिर्फ तुम्हारे लिए ही होगा.''

वह समीप आया... जी चाहा कि उसे अपने हृदय से लगा कर मन की सारी बात सुना दे, पर नहीं, सामने ही बच्चा खड़ा था.

संध्या समय नानू उस के साथ भाग गई. एक मंदिर में दोनों ने प्रतिज्ञा की और एक सूत्र

''क्या आप मुझे अपना जीवनसाथी स्वीकार कर सकेंगे.'' नानू ने चरनजीत से कहा.

में बंध गए.

बलराम ने आदरपूर्वक ''प्रणाम भाभीजी'' कहा. उस ने विनम्रतापूर्वक सरल आदिवासी हृदय से कहा, ''हम लोग आदिवासी हैं और आप नेपाली. हमारी संस्कृति को देख कर घबरा तो नहीं जाएंगी? क्योंकि आप अभी हमारी जीवनचर्या से परिचित नहीं हैं.''

''देवरजी, मैं जिस परिवेश में पली हूं और पढ़ीलिखी हूं, बंधन बड़ा ही दुखदायी था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्वपूर्ण होती है. लेखकों का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दे दिया गया है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इन में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 75 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए
द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए
तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.
इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे.

इस के लिए 50 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शराब व जुए के लि[illegible] आने वाले हर पुरुष को मातापिता की ओर से अनकही छूट थी."

चेहरे पर विषाद की गहरी रेखा लिए नानू फिर बोली, "पिताजी से थोड़ाबहुत प्यार अवश्य था, क्योंकि बचपन में उन्होंने मुझे चाहा था, उन्हें मुझ से प्यार था, पर मां तो अपने शौक पूरे करने के लिए मुझे किसी भी बलिवेदी पर चढ़ाने को तैयार थी. पिता मुझे मेरी इच्छा से रहने देने के पक्ष में थे. यह बात और है कि यह मेरे लिए बहुत कष्टदायी रहा. दोदो दिन भूखा रहना पड़ा, केवल काली चाय पी कर गुजारा करती रही, पर पिता के जीवित रहने तक उस घर में रही."

यह सब बताते हुए उस की आंखें छलक आईं और गला रुंध गया. बलराम तथा चरन की आंखों में भी नमी आ गई, दोनों को उस के प्रति विशेष सहानुभूति उत्पन्न हो आई.

नानू ने कहा, "मातापिता भले ही गिर रहे थे, पर मैं संभली रही. मुझे अपनी [illegible], मैं ने तुम्हारे भैया में वह गुण पाया. मैं दुखतकलीफ से नहीं डरती देवरजी, पर एक साफसुथरी जिंदगी जीना चाहती हूं."

"भाभीजी, भैया यदि अपने रास्ते से भटके तो मैं उन से निबट लूंगा." बलराम ने नानू भाभी की दृढ़ता तथा उस की करुण आपबीती सुन कर उसे आश्वासन दिया, "भाभीजी, मैं इस बात का वचन देता हूं कि भैया चरन, आप की भावनाओं का सदा आदर करेंगे और यदि वह अपनी राह से भटकने लगे तो मैं उन्हें सचेत कर दूंगा."

चरन और नानू दोनों ने एकदूसरे का हृदय से साथ दिया. दोनों, पतिपत्नी के मधुर संबंधों के बीच की कड़ी था—बलराम. दोनों के जीवन में स्थायित्व लाने में उस ने प्रेरक का काम किया.

यह सब कुछ उस ने एक सच्चे और अच्छे मित्र की तरह किया, कभी कोई प्रतिकार नहीं चाहा. — क्रमश:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

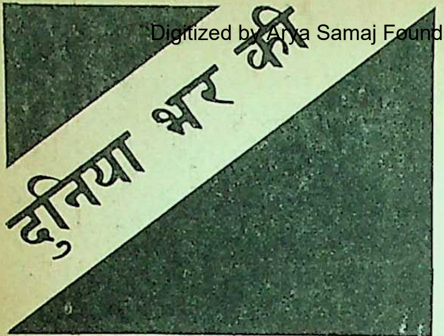

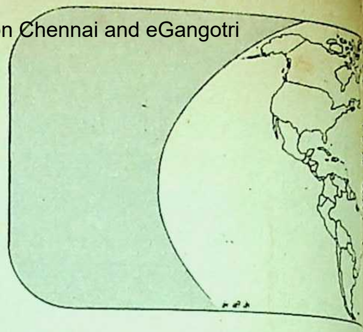

हिटलर घूम रहे हैं

नस्ल में सुधार लाने के प्रयास अब पेड़पौधों और पशुओं तक सीमित थे, किंतु अब ये प्रयोग मनुष्यों के भी किए जा रहे हैं. सन 1980 में अमरीका एक वैज्ञानिक राबर्ट ग्राहम ने शुक्राणु बैंक स्थापना की थी कुशाग्र बुद्धि के बच्चे पैदा करने के लिए विश्व के अनेक वैज्ञा के शुक्राणु इस बैंक की एक भूमि प्रयोगशाला में जमा किए गए. सुनने में भी आया है कि इस बैंक में अब तक करीब डाक्टर, वैज्ञानिक, फौजी जनरल, राज कवि और इंजीनियरों के शुक्राणु जमा हो हैं. लोग इन में से जिस का चाहे शुक्राणु ले बच्चे पैदा कर सकते हैं.

वैसे यह बात अपनेआप में क मजेदार है. इस बैंक से एक नई प्रतिभाश पीढ़ी जन्म लेगी और संसार में मंद बुद्धि थोड़ेबहुत लोग तो कम होंगे ही. इन दिनों बैंक के संचालक राबर्ट ग्राहम काफी परे हैं. कारण यह है कि प्रतिभाशाली पीढ़ी बच्चे पैदा करने के लिए जो लोग इस बैंक अपने शुक्राणु पैसे ले कर अथवा मुफ्त दे हैं, उन की छानबीन और चयन में क कठिनाई आ रही है. दूसरी कठिनाई यह है जो महिलाएं यहां से शुक्राणु ले कर गर्भधा करती हैं उन के पति उन्हें छोड़ रहे हैं. बै

हिटलर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

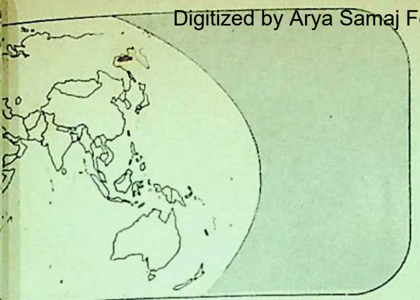

पतियों को उस समय जोर से गुस्सा आता है जब उन्हें पता लगता है कि उन की पत्नी बहुत ही प्रतिभाशाली बच्चे का गर्भ धारण करने जा रही है.

वर्षों पूर्व हिटलर के चिकित्सक डा. जोजेफ मेनजेले की भी यह योजना थी कि जरमनी का बच्चाबच्चा हिटलर जैसा बने. कहा जाता है कि मेनजेले ने हिटलर की सहायता से रेड इंडियन जाति की 94 औरतों को गर्भवती किया था. और उन से हिटलर की शक्ल के इतने ही बच्चे पैदा हुए थे.

सेक्स परिवर्तन

कोवेंटरी (लंदन) की दूरसंचार फैक्टरी के मालिक अपने एक कर्मचारी के शौक से इन दिनों बुरी तरह परेशान हैं. कुछ अरसे पूर्व रोन फावेल को औरत बनने का शौक पैदा हुआ और कृत्रिम आपरेशन करा कर वह औरत बन बैठा. औरतों के कपड़े पहन कर जब वह अपने दफ्तर पहुंचा तो उसे औरतों के वेष में देख कर फैक्टरी के मालिक और अफसर परेशान हो उठे. मालिकों को अपनी फैक्टरी में रोन फावेल से कारी लिंडा होलिंगवर्थ बने अपने कर्मचारी के कारण अन्य कर्मचारियों द्वारा हड़ताल करने और काम बंद करने की आशंका पैदा हो रही है.

फैक्टरी में हड़ताल की आशंका को ध्यान में रख कर मालिकों ने औरत बने रोन फावेल को नौकरी से बरखास्त कर दिया है. लेकिन मालिकों की दलील को श्रम ट्रिब्यूनल ने अस्वीकार कर दिया और उसे पुनः काम पर लेने का आदेश दिया है.

औरत बन कर सभी जगह मजे से जिंदगी गुजारने की योजना बनाने वाले रोन फावेल अब दफ्तर में भी दुखी रहने लगा है. उस के साथ के लोगों ने उसे अपने पेशाबघर में जाने से रोक दिया है और दूसरी तरफ फैक्टरी में काम करने वाली महिलाओं ने भी अपने पेशाबघर में उसे जाने से रोक दिया है. फैक्टरी के मालिक इस औरत बने अपने कर्मचारी के लिए अलग से पेशाबघर बनवा रहे हैं.

इधर रान फावेल के सेक्स परिवर्तन को धार्मिक और नैतिकता के आधार पर भी गलत काम कहा जा रहा है. कुमारी लिंडा होलिंग वर्थ सिर्फ इसलिए दुखी है कि न तो कोई उसे प्यार भरी निगाहों से देखता है और न ही कोई उस के मेकअप की तारीफ करता है. फैक्टरी की महिला कर्मचारी तो उसे नफरत भरी निगाहों से देखती हैं.

भारतीय कैदी

भारत से हर वर्ष कितने ही लोग रोजगार की तलाश में विदेश चले जाते हैं. प्रतिभा पलायन पर हमारे यहां ढेरों आंसू बहाए जाते हैं और देश में वापस लौट कर भूखों मरने का आग्रह किया जाता है. रोजगार की तलाश में विदेशों में जाना बुरा नहीं है लेकिन जब विदेशों में जा कर अनुचित काम किया जाता है तब उसे अवश्य बुरा कहा जाता है.

हाल ही में प्रकाशित सरकारी आंकड़ों के अनुसार यह बात सामने आई है कि शराबखोरी, बलात्कार, औरतों से छेड़छाड़, चोरी, जालसाजी, तस्करी, डाका और सड़क दुर्घटनाओं का उल्लंघन करने के विभिन्न आरोपों में करीब 300 भारतीय पश्चिम एशिया के विभिन्न मुसलिम देशों की जेलों में बंद पड़े हैं. ये देश हैं— ईरान, कातार, कुवैत, सऊदी अरब, इराक, ओमान और जोर्डन. एकदो देशों में तो सजायाफ्ता भारतीय कैदियों को मृत्युदंड भी दिया जा चुका है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

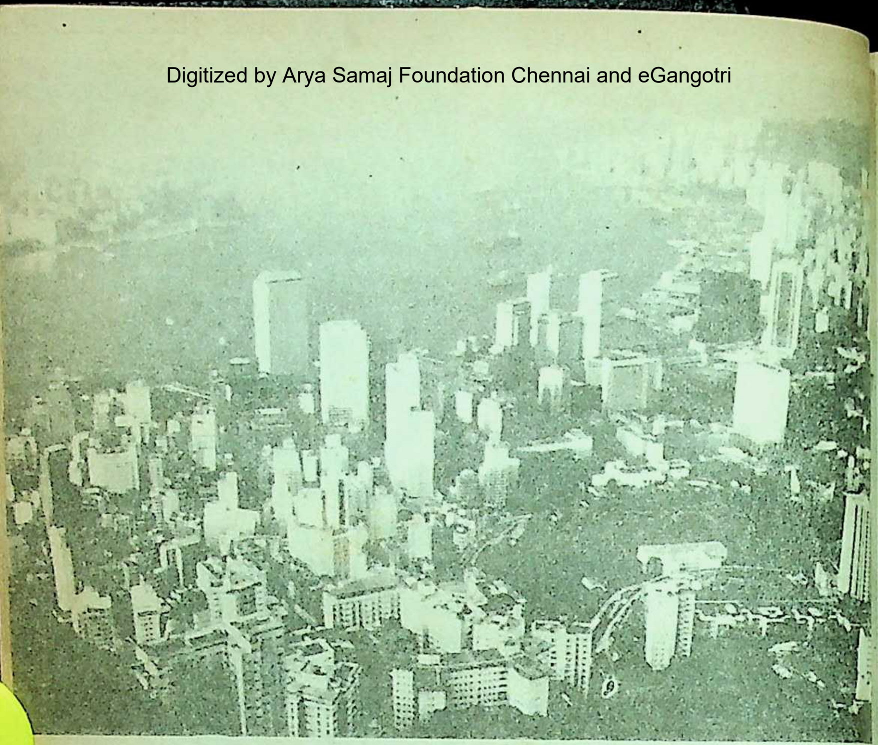

हांगकांग: अपनेअपने दावे.

लेबनान इजराइल युद्ध में ढेरों भारतीय फिलस्तीनियों की तरफ से लड़े और पकड़े गए.

मुसलिम देशों की जेलों में यूरोपीय देशों के लोग कम हैं. एक अनुमान के अनुसार उपर्युक्त देशों में 50 के करीब विदेशी यूरोपीय लोग जेलों में बंद हैं. अमरीका, ब्रिटेन, कनाडा, जापान का कोई भी व्यक्ति जेलों में नहीं है. यूरोपीय देश अपने देश के किसी भी व्यक्ति के पकड़े जाने पर तुरंत काररवाई कर मामले को जल्द से जल्द खत्म करवाने की कोशिश करते हैं.

सलीब पर हांगकांग

तिब्बत को हड़पने, ताईवान पर कभी भी कब्जा करने की धमकी देने, भारत की काफी बड़ी भूमि को हथियाने और अनेक देशों से अपने सीमा संबंधी विवादों को उछालने के बाद चीन के शासक हांगकांग की सोने की मुर्गी को जब्ह करने की ताक ल[गाए] बैठे हैं. चीन के प्रधानमंत्री जाओ जियां[ग] हांगकांग को विवादग्रस्त मुद्दा घोषित [कर] ब्रिटेन से इसे वापस देने की मांग की है.

ब्रिटेन की प्रधानमंत्री श्रीमती मा[र्ग्रेट] थैचर ने हाल में चीन की यात्रा की थी. यात्रा के दौरान चीन के शासकों ने अ[पना] इरादा जाहिर कर दिया. हांगकांग पर ब्रि[टेन] के कब्जे का पट्टा 30 जून, 1997 में सम[ाप्त] हो रहा है. चीन इस अवधि के बाद हांग[कांग] को वापस लेना चाहता है जब कि ब्रिटेन [इस] के लिए तैयार नहीं है.

शुरू में हांगकांग तथा इस[के] समीपवर्ती द्वीप सुनसान थे और यह अफीम तस्करों और चोरडाकुओं का आश्रयस[्थल] था. सन 1840 के बाद हांगकांग में अ[पराधी] गतिविधियां बढ़ गई और चीन के तत्का[लीन] सम्राट ने मजबूर हो कर इन्हें रोकने के [लिए] ब्रिटेन की मदद मांगी. इंगलैंड ने 1842 [में] हांगकांग द्वीप तथा 1860 में कोनून प्राय[द्वीप]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को चीन से ले कर अपने नियंत्रण में कर लिया. सन 1898 में चीन और इंगलैंड के बीच एक संधि हुई जिस में चीन सरकार ने कुछ अन्य द्वीप 99 वर्ष के पट्टे पर इंगलैंड को दे दिए.

60 लाख की जनसंख्या वाला यह प्रदेश एक तरफ मुक्त व्यापार क्षेत्र होने के कारण व्यापारियों का स्वर्ग कहलाता है तो दूसरी ओर सब से बड़ा पर्यटक स्थल बना हुआ है. यहां प्रति वर्ष करीब 25-26 लाख पर्यटक पहुंचते हैं. यहां की जनसंख्या में 98 प्रतिशत चीनी हैं. इंगलैंड और चीन को इस से करोड़ों डालर की विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है. अकेले चीन के यहां 13 बड़े बैंक हैं. हांगकांग की सड़कों पर करीब सवा दो लाख मोटर गाड़ियां चलती हैं. यहां स्टेनलेस स्टील के बने डब्बे वाली रेलगाडियां चलती हैं.

अनोखा राजा

दक्षिण अफ्रीका तथा मोजांबिक से घिरा दक्षिण अफ्रीका का एक छोटा सा देश स्वीजीलैंड पिछले दिनों काफी चर्चित रहा है. इस देश पर 61 वर्ष तक शासन करने वाले राजा सोभुजा द्वितीय की मृत्यु से सब से पुराने अफ्रीकी शासक का अंत हो गया.

सोभुजा द्वितीय अपने देश में बड़े लोकप्रिय थे. अफ्रीकी देशों में जहां नित सैनिक क्रांतियां होती रहती हैं और शासकों का तख्ता पलट जाता है, सोभुजा द्वितीय ने पूरे 61 वर्ष तक शासन कर अफ्रीका के सब से पुराने बादशाह का गौरव प्राप्त किया है. यह राजा जनता में इतना लोकप्रिय था कि कभीकभी अपनी राजसी पोशाक उतार कर कबीलों की वेशभूषा पहन कर उन से बातचीत कर उन के सुखदुख की बातें पूछता रहता था. सोभुजा दो तरह की वेशभूषा पहनता था. एक यूरोपीय राजाओं जैसी और दूसरी अफ्रीकी शासकों जैसी. दो दुनियाओं में जीने वाला यह अफ्रीकी शासक कम रंगीन नहीं था. इस के 100 बीवियां और 600 बच्चे और ढेरों रिश्तेदार थे.

वर्षों तक ब्रिटेन का उपनिवेश रहने वाला यह देश 6 सितंबर, 1968 को स्वतंत्र

स्वीजीलैंड पर 61 वर्ष तक शासन करने वाला राजा सोभुजा (द्वितीय) विभिन्न वेशभूषाओं में.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ. सन 1973 में राजा सोभूजा द्वितीय ने अपने देश में राजनीतिक दलों और मजदूर संगठनों पर रोक लगा कर संसद भंग कर दी. पिछले कुछ अरसे से अफ्रीका का यह पांच लाख की आबादी वाला देश राजकुमारों द्वारा अपनाए गए भ्रष्टाचार तथा युवा पीढ़ी में बढ़ रहे आक्रोश और आंदोलनों के कारण काफी चर्चित रहा है.

इन दिनों राजा के उत्तराधिकारी का चुनाव भी यहां चर्चा का विषय बना हुआ है. उत्तराधिकारी का चुनाव गुप्त रूप से कुंआरे लड़के या पोतों में से किया जाएगा.

सेक्सी पतंगे

कहा जाता है कि पतंग की खोज में चीन में ईसा पूर्व 206 में की गई थी. उस समय पतंग का प्रयोग युद्ध में संकेत देने के लिए होता था. अब पतंगबाजी धीरेधीरे दुनिया भर में फैलती जा रही है. चीन, कोरिया, रूस, कोरिया, रूस, अमरीका, न्यूजीलैंड, इंग... अब पतंगें खूब उड़ने लगी है.

पतंगबाजी एशिया के देशों में भी प्रतिदिन लोकप्रिय हो रही है. इन दिनों ... इंडोनेशिया, फिलीपीन, मलयेशि... थाइलैंड में खूब बनने और उड़ने लगी... थाइलैंड की पतंगों में सेक्सी लड़कियों के ... लगे रहते हैं. कभीकभी तो नग्न सुंदरी ... आकार वाली पतंग आकाश में उड़ती ... रास्ते चलते लोगों को दुर्घटना में फंसवा ... है. सरकार अब सेक्सी पतंगें न बनाने के ... लोगों से कहती है.

पतंगबाजी में जापान सब से ... निकल रहा है. 1980 में जापान में ... मीटर की एक पतंग बना कर ... किलोमीटर की ऊंचाई पर पूरे 12 मिनट ... उड़ाई गई.

इंडोनेशिया में इन दिनों बनने ... पतंगों पर तरहतरह के पशुपक्षी चित्रित ... हैं.

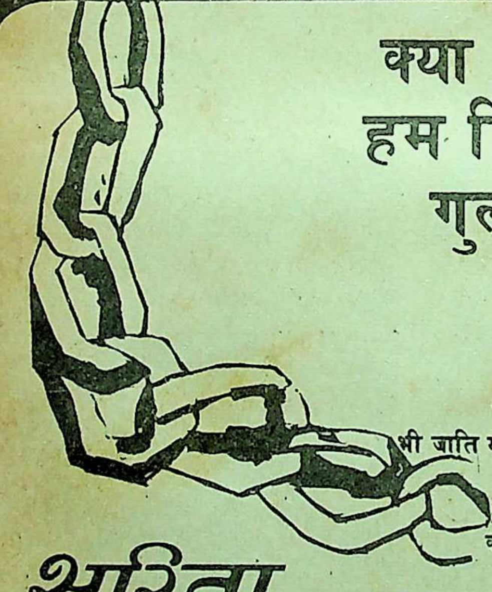

क्या आप ने सोचा
हम हिंदू 2000 वर्ष
गुलाम क्यों रहे?

क्यों गुंडे, गुलाम, डाकू लूटेरे और
यहां तक कि सौदागर भी हम प
2000 वर्ष तक राज कर के जु
ढाते रहे जब कि हम संसार में किस
भी जाति या समुदाय से किसी तरह कम न थे?

इसे सोचिए और उत्तर दीजिए
क्योंकि जिन कारणों से हम 2000 व
गुलाम रहे वे आज भी उतनी
ही तीव्रता से विद्यमान हैं

सरिता

भारत की सब से अधिक प्रिय
व साथ ही साथ सब से अधिक क्षुब्ध करने वाली पत्रिका.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास्ताने दफ्तर

हमारे प्रबंधक समय के काफी पाबंद हैं. रोज सुबह सात बजे दफ्तर खुलते ही वह समय पर दफ्तर पहुंच जाते हैं. इसी वजह से हमें भी हमेशा समय पर पहुंचना पड़ता है. सभी कर्मचारी प्रबंधक महोदय को दुआसलाम कर काम में लग जाते हैं.

एक दिन देर से सो कर उठने के कारण मैं दफ्तर 15 मिनट देर से पहुंचा. जैसे ही मैं प्रबंधक महोदय के पास नमस्कार करने गया, उन्होंने मुझे टोकते हुए कहा, ''आज कोई नमस्कार वगैरह नहीं चलेगा,'' और यह कहते हुए उन्होंने मुझे अपनी घड़ी दिखाई.

उस दिन के बाद मैं कभी दफ्तर देर से नहीं पहुंचा.

—भगवान गोहरानी

(सर्वोत्तम)

*

मैं विद्युत विभाग में क्लर्क हूं. बात उस समय की है जब मैं स्टेशनरी विभाग का कार्य देखा करता था. उन्हीं दिनों हमारे कार्यालय में एक नया चपरासी नियुक्त हुआ था. अभी उसे कार्य करते हुए दोतीन दिन ही हुए थे कि एक दिन हमारे लेखापाल (अकाउंटेंट) ने उस से एक फार्म मंगवाया. मेरे पूछने पर कि कौन सा फार्म चाहिए, वह कुछ हिचकिचाते हुए बोला, ''साहब, पेटीकोट का वाउचर मंगवा रहे हैं.''

यह सुनते ही हमारा हंसतेहंसते बुरा हाल हो गया, वास्तव में उस के कहने का मतलब 'पेटीकैश वाउचर' से था, जो लेखा विभाग के काम आता है.

—प्रभातकुमार नथावे •

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है. क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 और सर्वोत्तम पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए :
संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह लेख लिखने की योजना लेखक ने लगभग एकडेढ़ वर्ष पहले बनाई थी. सोचा था कि अन्य लेखों की भांति इस विषय पर भी दोचार दिनों में ही लेखन कार्य समाप्त हो जाएगा, लेकिन खोजबीन करने, आंकड़े और सामग्री जुटाने आदि में साल अधिक समय और सैकड़ों रुपए व्यय बाद ही इसे लिखा जा सका. लेखक नाम और रूप बदल कर दरजनों विशेषज्ञों' से संपर्क कायम किया.

ये तथाकथित यौन विशेषज्ञ

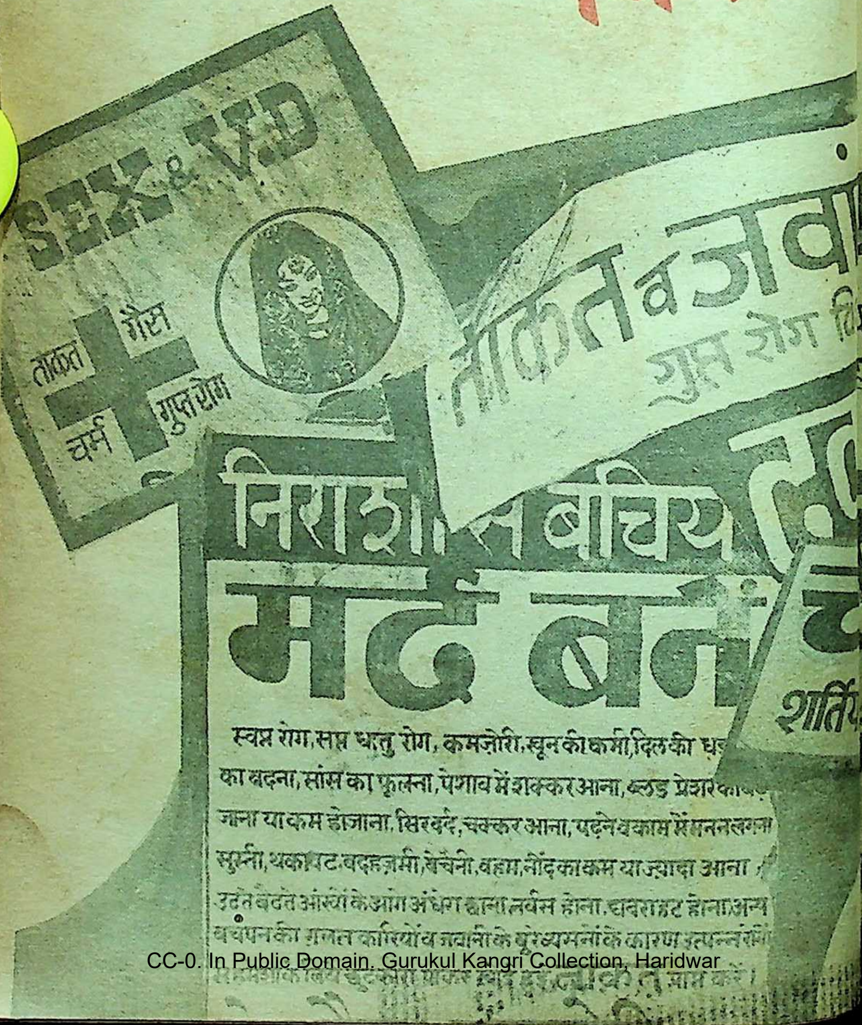

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मर्श प्राप्त करने के बहाने रोगी बन कर के दवाखानों, फार्मेसियों और क्लिनिकों चक्कर काटे, होटलों की खाक छानी, पत्र वहार द्वारा साहित्य एकत्र किया. इन के रा बेची जाने वाली ताकत की दवाइयों के र्स खरीद कर प्रयोगशाला में इन का क्षण कराया. बहुत सारे समाचार पत्रों एवं त्रकाओं की विज्ञापन दरों की जानकारी त की और भी न जाने क्याक्या पापड़ बेले र तब कहीं जा कर वह इस विषय पर लिख या.

देखनेसुनने में बात मामूली सी लगती लेकिन प्रायः हर नाम की आड़ में इतना ड़ा षडयंत्र रचाबसा है कि दिमाग चकरा जाता है. भ्रष्टाचार करने वाले लोगों को हम भ्रष्टाचारी कहते हैं. काला बाजार और तस्करी के धंधों से भी हम भलीभांति परिचित हैं. लेकिन यह बात समझ से बाहर है कि हम इन लोगों को क्या नाम दें– सभ्य डाकू, मुजरिम या कुछ और?

सेक्स एक ऐसा विषय है जिस का संबंध हर व्यक्ति के अपने मन, शरीर और व्यक्तिगत जीवन से है. सामाजिक या आर्थिक रूप से कोई भी व्यक्ति छोटा हो या बड़ा, गरीब हो या अमीर, अनपढ़ हो या पढ़ालिखा, वह कभी किसी दूसरे व्यक्ति को इस सिलसिले में अपना राजदार बनाना नहीं चाहता. संकोच, भय, मानमर्यादा आदि बातों

विज्ञापनों के सहारे अपनी दुकानें चलाने वाले ये तथाकथित यौन विशेषज्ञ किस प्रकार भोलेभाले लोगों में तरहतरह की झूठी बीमारियों का आतंक बैठा कर दोनों हाथों से लूट रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

का भी सेक्स के साथ कुछ वैसा ही निजी या गुप्त संबंध बना जा सकता है. इस सब के अतिरिक्त मानव जीवन में सेक्स का इतना अधिक महत्त्व है कि इस की साधारण सी समस्या भी व्यक्ति का सुखचैन छीन लेती है. समस्या सुलझ जाए तो व्यक्ति यों महसूस करता है जैसे उसे कोई अमूल्य चीज मिल गई हो.

हमारे समाज में सेक्स की समस्याओं का शिकार होने वाले व्यक्तियों की संख्या बहुत अधिक है. नादानी, नासमझी, अज्ञानता, भ्रांत धारणाओं का प्रचलन, रूढ़िवादी विचारधारा, सेक्स शिक्षा का अभाव आदि इस के अनेक कारण हैं. ऐसी किसी भी वजह से जब कोई व्यक्ति सेक्स की मानसिक या शारीरिक समस्या का शिकार होता है तो आम तौर से वह किसी योग्य मनोसेक्स चिकित्सक के पास जा कर अपने मन की बात कहने का साहस जुटा नहीं पाता. अधिकांश हालतों में तो उसे पता ही नहीं होता कि वह सही सलाह कहां से ले. अपनी जानपहचान के किसी चिकित्सक से बात करते हुए भी वह घबराता है कि कहीं उस के निजी जीवन का रहस्य न खुल जाए.

तब उस की निगाहें समाचारपत्रों, पत्रिकाओं व हर चौराहे पर लगे बड़ेबड़े साइनबोर्डों, लालपीले गहरे रंगों में दीवारों पर लिखे विज्ञापनों, रेलवे स्टेशन और बस स्टैंड के स्नान गृहों में चिपके पोस्टरों तथा सेक्स विशेषज्ञों द्वारा प्रकाशित, प्रचारित इसी तरह के दूसरे विज्ञापनों पर पड़ती है और यहीं से उस की दुर्दशा एवं इन तथाकथित सेक्स विशेषज्ञों की चांदी की कहानी आरंभ होती है.

वह इन लोगों के चंगुल में फंस जाता है. उस की किसी भी साधारण सी सेक्स समस्या को ये लोग भ्रामक एवं गलत बातों द्वारा एक भयानक रोग के रूप में पेश करते हैं और उसे विश्वास दिला देते हैं कि उस का सेक्स जीवन खतरे में पड़ गया है. इन लोगों की पैनी एवं शातिर निगाहें समस्याग्रस्त व्यक्ति की जेब में रखे नोटों तक को गिन लेती हैं और कुछ ही क्षणों में ये नोट उन की मिल्कियत बन जाते हैं.

यह सिलसिला जारी रहता है और समस्याग्रस्त व्यक्ति एक के बाद तथाकथित सेक्स विशेषज्ञों से लुटता है.

आइए इन इश्तहारी सेक्स वि[शेषज्ञों] और इन के ताकत के इलाज के बारे[में] का परिचय आप को दें.

भारत सरकार ने औषध तथा प्रसाधन कानून बना रखा है, जिसे ला[गू करने] का उत्तरदायित्व राज्य सरकारों का[है.] सभी राज्य सरकारें अपनेअपने प्रदेश[में] कानून को लागू भी कर चुकी हैं, [जिस के] अंतर्गत रोग, चिकित्सा और औषधि[यों के] आम तथा सरेबाजार प्रचार व विक्र[य] की मनाही है, लेकिन हम देखते हैं कि[ये लोग] कानून की धज्जियां उड़ा कर अपना[धंधा] बराबर जारी रखे हुए हैं. क्या इस[से यह] समझा जाए कि ये लोग कानून का[पालन] रखने का इलाज भी करते हैं?

इश्तहारी सेक्स विशेषज्ञ

आइए, पहले इन तथाकथित विशेषज्ञों की काबलीयत और पढ़ाई[-लिखाई] की बात करते हैं. खोजपूर्ण जानका[री के] अनुसार इस समय भारत में एक द[र्जन] लगभग प्रथम श्रेणी के इश्तहारी[सेक्स] विशेषज्ञ हैं. मध्यम श्रेणी में आने वा[ले] लोगों की संख्या डेढ़ सौ के करीब है[. स्थानीय] स्तर पर इश्तहारबाजी करने वाले [हजारों] लोग हैं. वे लोग इन के अतिरिक्त[हैं जो] स्थानीय रूप में अपना कारोबार चला[ते हैं.] उपर्युक्त तीनों श्रेणियों में आने वाले [लोगों] में से एक भी व्यक्ति आधुनिक चि[कित्सा] प्रणाली का बाकायदा पढ़ालिखा डाक्[टर नहीं] है. सिर्फ दो व्यक्ति आयुर्वेदिक चि[कित्सा] प्रणाली में शिक्षाप्राप्त वैद्य हैं जो[अपने] बापदादा के संरक्षण में यह काम कर[रहे हैं.] प्रायः सभी लोग विधिवत रूप से प[ढ़े-लिखे] डाक्टर, वैद्य या हकीम नहीं हैं, बल्कि[...] के आधार पर रजिस्टर्ड चिकित्सक[हैं.]

यहां यह भी बता देना जरूरी[है कि] अनुभव या तजरबों के आधार[...]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन कई वर्ष पहले अलगअलग राज्यों में वहां की सरकारों द्वारा गठित बोर्डों ने किया था और यह बात आम कहीसुनी जाती है कि इस काम में इतनी घपलेबाजी हुई थी कि नानफरोश, रंगसाज, नाई तथा इसी तरह के बहुत से दूसरे लोग रजिस्ट्रेशन की आड़ में रातोंरात डाक्टर बन गए थे. इन में ऐसे असंख्य लोग भी थे जिन्होंने चिकित्सा कार्य का एक दिन का भी अनुभव कभी प्राप्त नहीं किया था. कई इश्तहारी सेक्स विशेषज्ञ इसी तरह के रजिस्टर्ड चिकित्सक हैं.

एक साहब कुछ वर्ष पहले तक बस स्टैंड पर हाजमे का चूर्ण बेचा करते थे और दिन भर यात्रियों को चूर्ण के लाभगुण बता कर बड़ी कठिनाई से आठदस रुपए कमा पाते थे. लेकिन आज वही साहब एक प्रसिद्ध 'सेक्स विशेषज्ञ' हैं. तीन बड़े नगरों में उन की करीब 12-14 लाख की कीमत की दुकानें हैं– कोठी, कार और काले धन का मूल्य इस के अतिरिक्त है.

एक और साहब कभी एक गांव में पहले किराने की छोटी सी दुकान करते थे, जो चली नहीं. बाद में उन्होंने साइकिल पर कपड़ा बेचने का कारोबार किया जो कुछ ही दिनों में फेल हो गया. उन दिनों लेखक एक छोटे नगर के सरकारी चिकित्सालय में मेडिकल आफीसर था, जहां बाद में वह साहब सब्जी बेचते रहे. लेकिन आज वही महोदय संतानहीन दंपतियों का 'इलाज' करते हैं, सेक्स के रोगों के माहिर कहलाते हैं और एक राज्य की राजधानी में लगभग आठदस लाख रुपए की लागत से बनी आलीशान कोठी में रहते हैं.

वैसे तो ऐसे बहुत से लोगों की इसी तरह की कहानियां हैं, लेकिन यहां एक तीसरे 'सेक्स विशेषज्ञ' की चर्चा करना भी जरूरी है जो पहले ड्राईक्लीनिंग यानी कपड़ों की धुलाई का काम करते थे और अब भोलेभाले नौजवानों की सेहत और धन की धुनाई कर के अपने लाखों के बैंक खाते में प्रतिदिन वृद्धि कर रहे हैं. सब से अधिक मजे की बात यह है कि इन तीनों 'विशेषज्ञों' में से कोई भी आठवीं से अधिक नहीं पढ़ सका.

शब्द 'सेक्स विशेषज्ञ' भी इन्हीं लोगों

पूर्वी भारत के शीर्ष रक्तदाता

सुरेंद्रप्रसाद त्रिवेदी जमशेदपुर के टिस्को कारखाने में फोरमैन हैं. इन की गणना देश के तीन शीर्ष रक्तदाताओं में होती है. बंबई के वस्त्र व्यवसायी दिलीपकुमार उरेशी 74 बार रक्त दान कर देश के रक्तदानियों में अपना पहला स्थान रखते हैं. दूसरा स्थान जी.जी. हस्पताल, मद्रास की डा. कनक का है. सुरेंद्रप्रसाद त्रिवेदी का स्थान तीसरा है, किंतु इन की आयु अन्य दोनों शीर्ष रक्तदानियों से बहुत कम है. वे दोनों व्यक्ति रक्तदान की आयु सीमा (60वर्ष) पार कर चुके हैं, जबकि सुरेंद्रप्रसाद मात्र 39 वर्ष के हैं. अब तक उन्होंने 65 बार रक्तदान किया है और अपने प्रयास से अब तक हजारों व्यक्तियों को रक्तदान के लिए प्रेरित कर चुके हैं.

अभी हाल ही में सुरेंद्रप्रसाद त्रिवेदी को बिहार के राज्यपाल ने पूर्वी भारत के शीर्ष रक्तदानी के रूप में सम्मानित किया. सुरेंद्रप्रसाद त्रिवेदी का कहना है, "रक्तदान में न तो जोखिम है और न कष्ट. वैसे भी हर छठे सप्ताह पुराने रक्तकण नष्ट होते रहते हैं और नया रक्त बनता रहता है. जब रक्तकण को हर हालत में नष्ट होना ही है तो क्यों न हर तीसरे महीने रक्तदान कर रोगियों की प्राण रक्षा की जाए."

जो लोग रक्तदान के कारण स्वास्थ्य खराब होने का भय प्रकट करते हैं, उन्हें सुरेंद्रप्रसाद त्रिवेदी अपने उत्कृष्ट स्वास्थ्य को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

की खोज है. किसी भी चिकित्सा प्रणाली में इस विशेष विषय का न तो कोई अस्तित्व है और न ही चिकित्सा विज्ञान में इस नाम से कोई डिगरी, डिप्लोमा, सर्टिफिकेट या डाक्टरेट प्रदान की जाती है. यह शब्द एक धोखा है, जिस के जाल में लोगों को फंसाने का काम होता है.

मनगढ़ंत बातों का सहारा

वास्तव में सेक्स एक व्यापक वैज्ञानिक विषय है, जिस की क्रियाओं का संबंध शरीर से और प्रतिक्रियाओं का संबंध मन से होता है. ये तथाकथित सेक्स विशेषज्ञ इस विषय के वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं से कोरे ही होते हैं तथा अपनी चालाकी और अवैज्ञानिक ऊलजलूल बातों से ही आम लोगों को बेवकूफ बनाते हैं.

प्रचार माध्यम इन लोगों के कारोबार की रीढ़ की हड्डी कही जा सकती है. प्राप्त आंकड़ों के अनुसार प्रथम श्रेणी के ये इश्तहारी सेक्स विशेषज्ञ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में जो विज्ञापन देते हैं सिर्फ उन पर ही प्रति मास ये लोग 50 हजार से 80 हजार रुपए की भारी रकम खर्च करते हैं. क्लिनिक, फार्मेसी या दवाखाने के संचालन, स्टाफ के वेतन, भारी डाक खर्च, साहित्य के प्रकाशन, वितरण आदि का खर्च अलग से होता है, जो कई हजार रुपए मासिक हो सकता है.

इन में से कई विशेषज्ञ महीने में कुछ दिन दूसरे नगरों का भी दौरा करते हैं. और किसी आलीशान होटल में ठहरने, वहां जोरदार प्रचार करने, यात्रा आदि पर होने वाले भारी खर्च का अंदाजा हम सहज ही लगा सकते हैं.

दूसरी श्रेणी के इश्तहारी सेक्स विशेषज्ञ अपने कारोबार के प्रचारप्रसार पर 50 हजार रुपए प्रतिमास तक व्यय करते हैं और तीसरी श्रेणी के लोग अपनी हैसियत के मुताबिक 20-25 हजार रुपए.

मतलब यह कि ये तथाकथित सेक्स विशेषज्ञ प्रतिमास कईकई हजार रुपए व्यय करते हैं. लेकिन सवाल यह पैदा होता इतनी भारी रकम कहां से और किस के लिए खर्च होती है? सीधी सी बात है लोग सेक्स की अज्ञानता का शिका भोलेभाले लोगों की जेब पर डाका उन से लाखों रुपए बटोरते हैं और कुछ हजार रुपए और अधिक लो गुमराह कर के अपने चंगुल में फंसाने लगाए जाते हैं. यह सिलसिला वर्षों चल रहा है और दिन प्रतिदिन इन त इश्तहारी सेक्स विशेषज्ञों की फौज में वृद्धि हो रही है.

अखबारों, पत्रिकाओं में छपने वा ऐसे विज्ञापनों में अकसर यह भी प मिलता है कि डा. साहब, दुनिया के सेक्स स्पेशलिस्ट, फलांफलां देशों करने जा रहे हैं. अथवा फलांफलां दे कामयाब दौरा कर के भारत लौटे हैं. में जा कर ये लोग न सिर्फ वहां बसे भाइयों को बेवकूफ बना कर बहुत मो रकमें वसूलते हैं, बल्कि इन देशों की को भी धोखा देते हैं, वहां के कानून उल्लंघन करते हैं.

फैलता कारोबार

इन लोगों का कारोबार ब्रिटेन, स्वीडन, हालैंड आदि अनेक पश्चिमी तथा प्रायः सभी अरब देशों में खूब च है. मजे की बात तो यह है कि इन में भी देश का कानून चिकित्सा करने तरीके की अनुमति ही नहीं देता, बल्कि तो इलाज की ऐसी सरकारी व्यवस्था इस व्यवस्था से अलग हो कर बड़े उच्च शिक्षा प्राप्त डाक्टर भी अपनी नहीं चला सकता. कोई व्यक्ति बिना डाक्टर के नुसखे के किसी केमिस्ट की से कोई साधारण औषधि भी नहीं सकता, लेकिन हमारे ये 'दुनिया मशहूर सेक्स विशेषज्ञ' वहां की व्य कानून और नियमों को भी चकमा दे

आप जानना चाहेंगे कि विदेशों लोग भला कैसे अपना कारोबार चल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन लोगों ने इस के कई तरह के ढंग निकाल रखे हैं. विभिन्न देशों के विभिन्न नगरों में आपसी मेलजोल बनाए रखने के लिए कई तरह की सभा सोसाइटियां बनी हुई हैं. ये लोग वहां जा कर ऐसे किसी सज्जन के पास ठहरते हैं, जो इन के उद्देश्य एवं आगमन की सूचना इधरउधर फैला देता है. ये लोग वहां से छपने वाले हिंदी, उर्दू, पंजाबी आदि भाषाओं के छोटे अखबारों आदि की सहायता भी लेते हैं. कुछ लोगों ने पहले से ही वहां अपनी जानपहचान के एजेंट नियुक्त किए होते हैं जो इन लोगों के वहां पहुंचने पर इन के लिए काम करते हैं और इन लोगों की अनुपस्थिति में इन के 'ताकत की दवाइयों' के कोर्स बेचते हैं.

लंदन के मुख्य डाकघर में लेखक के ही नगर के रहने वाले एक परिचित सज्जन काम करते हैं. कुछ दिन पहले उन से मुलाकात हुई तो बातों ही बातों में उन्होंने बताया कि वह भारत के एक 'प्रसिद्ध सेक्स विशेषज्ञ' के लिए लंदन में काम करते हैं और इस काम के बदले उन्हें अच्छीखासी आमदनी हो जाती है. ब्रिटेन में रहने वाले एशियाइयों तथा कुछ अंगरेजों में सेक्स की ताकत बढ़ाने वाली देसी दवाइयों की बड़ी मांग है. सिर्फ जरा सी लच्छेदार बातचीत की जरूरत है. ये लोग एक बार ग्राहक बन गए तो फिर वे स्वयं चले आते हैं. उन के पास जाने की जरूरत नहीं रहती. उन्होंने यह भी बताया कि 'ताकत' की एक गोली का मूल्य वहां सातआठ पौंड (लगभग 112 रुपए से 130 रुपए) मिल जाता है.

अधिकांश अरब और पश्चिमी देशों में डाक पारसल द्वारा इस तरह की औषधियां भेजने पर पाबंदी है, लेकिन इस के बावजूद ये लोग वहां किसी न किसी तरह अपनी औषधियां पहुंचा देते हैं और इस प्रकार बेपनाह दौलत कमाते हैं.

प्रचार का तरीका

यहां इन इश्तहारी सेक्स विशेषज्ञों द्वारा प्रकाशित साहित्य का उल्लेख करना भी आवश्यक है, जिन्हें ये लोग अपने कारोबार के प्रचार के लिए आम लोगों में मुफ्त बांटते हैं. पहली व दूसरी श्रेणी के इन विशेषज्ञों ने विभिन्न भाषाओं में प्रायः 50-60 पृष्ठों की पुस्तिकाएं छाप रखी हैं, जिस में 'मार्ग दर्शन' के नाम पर पथ भ्रष्ट करने वाली बातों का उल्लेख होता है. उदाहरण के लिए ये लोग अपनेअपने ढंग से सेक्स समस्याओं से ग्रस्त युवकों को विश्वास दिला देते हैं कि वे या तो नपुंसक हो चुके हैं या दो चार दिनों में नपुंसक बनने वाले हैं. इन में उन सभी रोगों एवं समस्याओं का उल्लेख होता है, जिन का

आप मांग कर खाते हैं?
मांग कर कपड़े पहनते हैं?
मांग कर बस, ट्राम व रेल में सफर करते हैं?
मांग कर सिनेमा देखते हैं?
मांग कर रेस्त्रां में चायकाफी पीते हैं?
तब
मांग कर पत्रपत्रिकाएं व पुस्तकें क्यों पढ़ते हैं?
निजी पुस्तकालय आप की शोभा है, आप के परिवार की शान है, उन्नति का साधन है.
मांग कर नहीं, खरीद कर पढ़िए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

संबंध सेक्स के शारीरिक एवं मानसिक पक्ष के साथ हो सकता है (स्वप्नदोष, धातु रोग शीघ्रपतन, हस्तक्रिया आदि) तथा घुमाफिरा कर बात सेक्स की कमजोरी या नपुंसकता पर लाई जाती है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्नदोष होना एक बहुत ही स्वाभाविक एवं प्राकृतिक क्रिया है. धातु रोग नाम की वास्तव में कोई बीमारी नहीं है, बल्कि यह एक साधारण सी शिकायत है, जिस में पेट की खराबी आदि के कारण मूत्र के साथ फासफेट आने लगते हैं, लेकिन ये 'विशेषज्ञ' इसे मूत्र के साथ वीर्य आने की बात कह कर अनजान नौजवानों को भयभीत कर देते हैं. हस्तक्रिया को ये लोग यों पेश करते हैं मानो ऐसा कर के सचमुच ही नौजवानों में ताकत पूर्णतया समाप्त हो गई हो, हालांकि यह कोई गंभीर समस्या नहीं होती और न ही सेक्स की ताकत या नपुंसकता से इस का कोई संबंध होता है.

भ्रांतिपूर्ण प्रचार

इसी प्रकार शीघ्रपतन केवल सेक्स तकनीक की अज्ञानता के कारण पैदा होने वाली एक साधारण सी मानसिक समस्या है, यह कोई गंभीर बीमारी नहीं होती. कहने का मतलब यह है कि ये इश्तहारी सेक्स विशेषज्ञ अपने मुफ्त बांटे जाने वाले इस प्रकार के साहित्य द्वारा अवैज्ञानिक, अनापशनाप एवं भ्रांतिपूर्ण बातों से लोगों को गुमराह करते हैं और नौजवानों को मानसिक रूप से अस्वस्थ बना कर अपने जाल में फंसाने में सफल हो जाते हैं.

बहुत से तथाकथित सेक्स विशेषज्ञ संक्षिप्त साहित्य बांटते हैं. इस तरह के साहित्य में अश्लील भाषा होती है. ऐसे साहित्य में आम तौर से नपुंसकता निवारण के लिए तरहतरह की ताकत की औषधियों के सेवन की सलाह दी गई होती है.

इलाज की कीमत लगभग एकडेढ़ सौ रुपए से ले कर पांच हजार रुपए तक होती है. आम इलाज, जोरदार इलाज, रईसाना इलाज, अमरीकन इलाज, अफ्रीकन इलाज, नवाबी इलाज, नादिर शाही इलाज, और सारा स्पेशल इलाज आदि. इन अनेक नाम और भिन्नभिन्न कीमतें यों होती हैं मानो पशुओं की मंडी में अलग प्रकार की गाय, भैंसों, घोड़ों, गधों की दी जा रही हो. मान लें कि सचमुच व्यक्ति रोग ग्रस्त है और उन में अमीर है और कुछ गरीब, लेकिन गरीब या अमीर नहीं हो सकता. ये लो प्रकार की स्टंटबाजी से आम जनता को बना कर अपना उल्लू सीधा करते हैं.

नाटकीय तरीके

बहुत से ऐसे सेक्स विशेषज्ञ क्लिनिक या दवाखाने में आने वाले को प्रभावित करने के लिए बड़े अजी नाटकीय तरीके अपनाते हैं. ऐसे ही एक इश्तहारी विशेषज्ञ ने अपनी क्लिनिक बहुत सुंदर बोर्ड लगा रखा है जिस पर हरे, नीले, पीले रंग के बिजली के इं लगे हैं तथा परीक्षण करने वाली मेज के स्विचबोर्ड लगा है, जिस का संचालन होता है. जांच कराने के लिए रोगी जब पर लेटता है तो यह बोर्ड उस की आं सामने रहता है. 'सेक्स विशेषज्ञ' रो कमर के गिर्द एक छः इंच चौड़ी रेक्सी पेटी बांध देते हैं और बड़ी होशियारी से पांव की सहायता से बिना आवाज स्विच का संचालन करते हैं. रोगी अपनी आं देखता है कि कभी लाल बत्ती जल उठती कभी हरी, पीली या नीली.

किसी बत्ती के जलने के साथ प्रकार की धीमी ध्वनि भी सुनाई पड़ 'सेक्स विशेषज्ञ' इसे रोगी के पुंसत्व या की ताकत जांचने की बिजली की म कहते हैं. मशीन द्वारा इस जांच की उ फीस पांच सौ रुपए है. वास्तव में रंगबिरंगा स्टंट मात्र है, जो किसी प्रका शारीरिक जांच नहीं करता बल्कि 'विशे महोदय स्विच खोल या बंद कर के वि रोशनियों का प्रदर्शन कर रोगी को प्र करने का अभिनय करते हैं. कमर पर पे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस यों ही दिखावे के लिए बांध दी जाती है. इसी प्रकार के अभिनय कुछ दूसरे इश्तहारी सेक्स विशेषज्ञ भी करते हैं.

आइए, अब उन औषधियों के बारे में बात करें, जो ये लोग अपने रोगियों को देते हैं.

ये लोग अपने पास से प्रायः चार प्रकार की औषधियां देते हैं. एक तो है पुड़िया में पाउडर की शक्ल में, दूसरी केप्सूल के रूप में, तीसरी गोलियां और चौथी मालिश का तेल.

औषधियों के बहाने लूट

पुड़िया बांधने के लिए सफेद बटर पेपर या चांदी अथवा सोने के रंग का चमकदार कागज प्रयुक्त किया जाता है. साधारण मूल्य के 'ताकत के कोर्स' के लिए सफेद, बीच के मूल्यों के लिए चांदी के रंग का और अधिक कीमती कोर्स के लिए सोने के रंग का कागज इन पुड़ियों में औषधि बांधने के लिए प्रयुक्त किया जाता है. इन पुड़ियों में बंधी औषधियों के रंग भी अलगअलग होते हैं. जो कीमती औषधियां सोने के कुश्ते से युक्त बता कर बेची जाती हैं, उन में प्रायः सोना नहीं होता, बल्कि किसी भी हानिरहित साधारण सी औषधि के साथ सोने के रंग की एक आयुर्वेदिक औषधि मिला दी जाती है, जिस का नाम 'स्वर्ण बंग भस्म' है. यह औषधि भी साधारण कीमत की होती है. रंगबिरंगे खाली केप्सूल बाजार में मिल जाते हैं, जिन में कभी तो कोई साधारण औषधि और कभी स्टार्च पाउडर या मिल्क शुगर भर ली जाती है.

ये लोग काले या गहरे भूरे रंग की शिलाजीत युक्त देशी गोलियां बहुत बड़ी संख्या में बाजार से खरीद लेते हैं, जिन का भाव तीनचार रुपए प्रति सैकड़ा से अधिक नहीं होता. रुपहले एवं सुनहरे लेप वाले टानिक की गोलियां भी बहुत सी कंपनियां बनाती हैं, जो ये लोग थोक के भाव पर खरीद कर तथा इन का नाम बताए बिना दसबीस गुना कीमत पर अपने रोगियों को देते हैं.

गत वर्ष की एक घटना याद आ गई. अमृतसर में लेखक के एक मित्र की औषधियां बनाने की कंपनी है. अचानक लेखक का वहां जाना हुआ तो उस ने देखा कि फैक्टरी में 10-12 रुपए प्रति हजार मूल्य की विटामिन की गोलियां तीनचार विभिन्न रंगों में बनाई जा रही हैं. पूछने पर मित्र ने बताया कि दिल्ली के एक सेक्स एवं संतान विशेषज्ञ का पांच लाख गोलियों का आर्डर मिला है. समझा जा सकता है कि ये गोलियां स्वयं उन्होंने या उन के परिवार के सदस्यों ने तो भोजन की जगह इस्तेमाल नहीं की होंगी बल्कि इन के द्वारा उन्होंने लाखों रुपए के 'ताकत के कोर्स' ही बेचे होंगे.

दिलचस्प समानता

टोरंटो के एक न्यायाधीश ने एक मामले के तहत जारी अपनी व्यवस्था में कहा है कि अगर राजनीतिक नेता चुनाव प्रचार के दौरान सड़कों पर अपने समर्थन की मांग कर सकते हैं, तो वेश्याएं भी, भले ही कुछ दूसरे कारणों से ऐसा कर सकती हैं. न्यायाधीश टेड मेटलों ने एक युवती को, एक होटल के तहखाने में लोगों से संपर्क करने के पश्चात भटकते फिरने के लिए, अदालत द्वारा दी गई सजा को रद्द करते हुए कहा कि 'राजनीतिक नेताओं द्वारा सड़कों पर समर्थन मांगना और वेश्याओं द्वारा सड़कों पर ग्राहकों को आकर्षित करना—दोनों ही आचरण समान हैं.'

पैसे लूटने के तरीके

सोने एवं चांदी के वर्क चढ़ी, अफीम युक्त गोलियां भी ये लोग मनमाने मूल्य पर स्तंभन शक्ति बढ़ाने के लिए बेचते हैं, जो बाजार में प्रायः एक रुपए से चार रुपए प्रति गोली के हिसाब से उपलब्ध हैं, लेकिन ये लोग 20 से 50 रुपए प्रति गोली बेचते हैं.

इसी प्रकार सेक्स शक्ति बढ़ाने के लिए प्लास्टिक की शीशियों में बंद मालिश का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तेल भी, जिसे हकीम लोग तिला कहते हैं, ये लोग काफी ऊंचे [illegible] बेचते हैं और खूब धन कमाते हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औषधियों के इस विवरण से सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि ये तथाकथित इश्तहारी सेक्स विशेषज्ञ अपने रोगियों को कैसी औषधियां देते हैं और कितना धन कमाते हैं.

यहां थोड़ी सी जानकारी विभिन्न सेक्स रोगों पर औषधियों के प्रभाव के बारे में देना भी उचित होगा.

बारीक परीक्षण की जरूरत

एक मनोसेक्स चिकित्सक के नाते लेखक यह बात पूरे दावे के साथ और वैज्ञानिक आधार पर कह सकता है कि सेक्स से संबंध रखने वाले रोग तीन से पांच प्रतिशत ही होते हैं तथा इन के बारे में भी कोई अंतिम निर्णय लेने से पहले रोगी की हर प्रकार से जांच की आवश्यकता होती है. शेष लगभग 95 प्रतिशत केस सेक्स की मानसिक समस्याओं से संबंध रखते हैं तथा इन में प्राय: औषधि सेवन की आवश्यकता ही नहीं होती. ये समस्याएं सेक्स की जानकारी के अभाव, भ्रांत धारणाओं और आत्मविश्वास की कमी के कारण पैदा होती हैं.

साधारण सूझबूझ रखने वाला कोई भी व्यक्ति इस बात को बहुत आसानी से समझ सकता है कि कोई भी औषधि मनुष्य की मानसिकता को प्रभावित नहीं कर सकती और न ही इस में कोई परिवर्तन ला सकती है. इन समस्याओं का उपचार सिर्फ मनोचिकित्सा द्वारा ही संभव है. मनोचिकित्सा के अंतर्गत पहले समस्या की पृष्ठभूमि को, इसे पैदा करने वाले मानसिक कारणों को, व्यक्ति विशेष की प्रवृत्तियों तथा मानसिक परिस्थितियों को भलीभांति समझाजाना जाता है और इस के बाद ही विभिन्न मानसिक उपायों द्वारा इस का उपचार किया जाता है. सेक्स की प्राय: सभी मानसिक हालतों में औषधि सेवन की आवश्यकता नहीं होती.

ये तथाकथित इश्तहारी सेक्स विशेषज्ञ जानते ही नहीं कि मनोचिकित्सा किस बला का नाम है. सच तो यह है कि ये लोग विभिन्न सेक्स समस्याओं से ग्रस्त नवयुवकों को धन कमाने के लोभ में इतना गुमराह करते हैं कि वे बेचारे सचमुच ही अपनेआप को रोगी समझ बैठते हैं. इन में से अधिकांश 'रोगी' जब एक के बाद एक कई ऐसे सेक्स विशेषज्ञों से 'इलाज' करा कर थकहार जाते हैं और उन की समस्या सुलझती नहीं तो वे न सिर्फ निराश हो कर अपने जीवन का सुखचैन गंवा बैठते हैं, बल्कि उन पर बहुत गहरा मानसिक प्रभाव भी पड़ता है. यह स्थिति उन के आत्मबल को तोड़ देती है और समस्या इतनी गंभीर रूप धारण कर लेती है कि उन की मानसिक चिकित्सा में बहुत कठिनाई आती है. इस प्रकार ये इश्तहारी सेक्स विशेषज्ञ नौजवानों को 'ताकत' और 'स्वास्थ्य' प्रदान नहीं करते, बल्कि उन के शारीरिक स्वास्थ्य और वैवाहिक जीवन को नष्ट करने का कारण बनते हैं.

ये सेक्स विशेषज्ञ हमारे देश में प्लेग जैसी छूत की बीमारी की भांति फैलते जा रहे हैं, जिस का इलाज प्रशासन एवं समाज द्वारा ही संभव है. देश का कानून इतना कठोर होना चाहिए कि ये लोग इस का उल्लंघन करने का साहस न कर सकें. सामाजिक स्तर पर हमें ऐसे समाज विरोधी लोगों को प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए, बल्कि सेक्स की सही और वैज्ञानिक जानकारी प्रदान कर उन परिस्थितियों को पैदा होने से रोकना चाहिए जिन का लाभ ये लोग उठाते हैं.

सेक्स की अधिकांश समस्याएं और कठिनाइयां तभी पैदा होती हैं जब सेक्स शिक्षा के अभाव में हम सेक्स की गलतफहमियों का शिकार होते हैं. यदि कोई ऐसी समस्या या परिस्थिति पैदा हो ही जाए तो हमें चाहिए कि संकोच एवं लज्जा को त्याग कर किसी योग्य मनोसेक्स चिकित्सक की सलाह लें. वह आप को सही सलाह देगा और समस्या के समाधान में आप की उचित सहायता करेगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

कागज की गोलियां

मध्य प्रदेश के जिला रायसेन की तहसील गैरतगंज के एक समीपवर्ती गांव में एक भोलेभाले एवं अशिक्षित वृद्ध को तेज बुखार ने जकड़ लिया. ग्रामीणों ने उसे हस्पताल जाने की सलाह दी.

वह हस्पताल पहुंचा और उस ने वहां पर बैठे डाक्टर को अपना हाल बताया. डाक्टर ने एक परचा लिख कर उस के हाथ में थमाते हुए कहा कि इस की गोली दिन में चार बार लेना और कल फिर आना.

वह ग्रामीण डाक्टर की बात को भलीभांति नहीं समझ सका और घर जा कर उस ने उस कागज के चार भाग कर के और उस की गोलियां बना कर दिन में चार बार लीं.

दूसरे दिन हस्पताल पहुंचने पर डाक्टर ने उस से जब उस का हाल पूछा और पिछले दिन का परचा मांगा तो वह बोला, ''वह तो मैं ने आप के कहे अनुसार चार भाग कर के खा लिया है.'' डाक्टर के पूछने पर उस ने बताया कि उस परचे को खाते समय उसे पूर्ण विश्वास था कि यह हस्पताल की दवा है और इस के खाने से बुखार अवश्य ठीक हो जाएगा. उस के खाने के तुरंत बाद ही वह अपने स्वास्थ्य में सुधार भी अनुभव करने लगा था.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषिका : स्वर्णलता श्रीवास्तव)

*

लड़की बनाम लड़का

जोधपुर विश्वविद्यालय के अधिकारियों के लिए एक छात्रा को कालिज में प्रवेश देना समस्या हो गई. कमला नेहरू महिला महाविद्यालय में एक छात्रा ने क्लर्क को अपना दाखिले का प्रार्थनापत्र दिया. उस क्लर्क ने प्रार्थनापत्र पर लगे चित्र तथा लड़की के हुलिए को देखने के बाद प्रवेशपत्र लौटाते हुए कहा कि यहां केवल लड़कियों को ही प्रवेश दिया जाता है.

वह लड़की पहनावे व बालों की बनावट से बिलकुल लड़का नजर आती थी.

ज्यादा बहस होने पर क्लर्क ने उस का प्रार्थनापत्र महाविद्यालय की निर्देशिका के पास भेजा.

निर्देशिका ने भी प्रवेशपत्र पर लगे चित्र तथा लड़की के हुलिए को देखने के बाद संदेह व्यक्त कर अंतिम निर्णय के लिए वह प्रार्थनापत्र रजिस्ट्रार के पास भेज दिया. रजिस्ट्रार ने प्रवेशपत्र को कमला नेहरू महाविद्यालय को वापस लौटाते हुए लिखा कि इस प्रार्थी की मेडिकल जांच कराई जाए.

—जलते दीप, जोधपुर (प्रेषक : रमेश जैन 'फरिश्ता')

(सर्वोत्तम) •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई प्रतिभाएं

प्रदेश स्तर पर आयोजित 'क्लासिकल सोलो डांस कांपिटीशन, में इंदौर के शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय की बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा अनुराधा राठौर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया. इस कार्यक्रम का आयोजन महू में रोटेरी क्लब द्वारा किया गया था जिस में कुल 2.. प्रतियोगी छात्राओं ने भाग लिया था.

18 वर्षीया अनुराधा पिछले आठ वर्षों से श्रीमती रंजना ठाकुर से नृत्य की शिक्षा ले रही हैं. उस ने अब तक कई नृत्य प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीते हैं.

—दिनेश सोलंकी, वि.वि.प्र.

◀ अनुराधा राठौर

ग्वालियर में 18 वर्षीय चित्रकार कमल माखीजानी के चित्रों की प्रदर्शनी कला वीथिका में लगाई गई. जिस का उदघाटन प्रसिद्ध चित्रकार राजपूत ने किया.

कमल ने अपने चित्रों में कल्पना से निर्मित मार्डन आर्ट द्वारा सामाजिक राजनीतिक व रूढ़िवादी व्यवस्थाओं का चित्रण किया है. प्रदर्शनी में प्रदर्शित चित्रों में 'बलात्कारी आंखें,' 'भटकते कदम,' 'भविष्य का मानव,' 'मुसाफिर,' 'वारंट पीस,' 'मिलन,' 'दिल्ली मुखौटा' आदि शीर्षक की कलाकृतियां काफी सराही गईं. 'भटकते कदम' में दर्शाया गया है कि नई पीढ़ी इतना आगे बढ़ गई है कि चांदसितारे भी नीचे आ गए हैं. 'भविष्य का मानव' में विकृत बच्चों की पैदावार में वृद्धि से भविष्य के मानव की स्थिति प्रकट की गई है.

बी. ए. अंतिम वर्ष में अध्ययनरत कमल चित्रकला में डिप्लोमा भी कर रहा है. उस ने 13 वर्ष की उम्र से ही चित्रकला में रुचि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेना शुरू कर दिया था. वह नियमित रूप से तीनचार घंटे चित्रकला को देता है. उस की दिलचस्पी कार्टून बनाने में भी है. उसे राज्य सरकार द्वारा अनेक पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं. उस की कलाकृतियां को चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन, अभिनेता गिरीश कर्नाड व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने भी सराहा है.

—राजीवकुमार सक्सेना, वि. वि. प्र.

प्रतियोगिताएं

मध्य प्रदेश में राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताएं शिवपुरी में आयोजित की गईं. जिन में राज्य के लगभग 1,200 खिलाड़ियों ने भाग लिया. प्रदेश के 12 खेल क्षेत्रों से आ खोखो, बास्केटबाल, कबड्डी तथ जिमनास्टिक की टीमों में सर्वाधिक पुरस्का जबलपुर क्षेत्र ने प्राप्त किए और जनर चैंपियनशिप की शील्ड भी जीती. बालक व के खेलों में चैंपियनशिप की शील्ड उज्जै और जबलपुर क्षेत्र को संयुक्त रूप से प्राप्त हुई. बालिका वर्ग की चैंपियनशिप शील जबलपुर क्षेत्र को मिली.

अच्छे मार्चपास्ट के लिए सागर को औ अच्छे अनुशासन के लिए उज्जैन व इंदौर क्षे को पुरस्कार दिए गए. इस के अतिरिक जिमनास्टिक में दो व्यक्तिगत पुरस्का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए जबलपुर के लक्ष्म

कमल माखीजानी: चित्रकला के प्रति बचपन से ही रुझान.

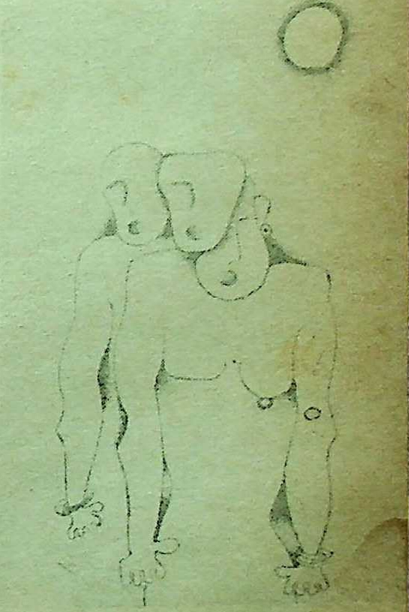

प्रदर्शनी में लगे कमल के दो चित्र. 'भटकते कदम' (ऊपर) व 'भविष्य का मानव' (दांए): नएपन की तलाश.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवपुरी में आयोजित राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में कबड्डी प्रतियोगिता का एक दृश्य.

ाक और कुमारी शीलू गुप्ता ने प्राप्त किए. भी खेल अमर शहीद तात्या टोपे शरीरिक शक्षण महाविद्यालय में खेले गए.

—अरुण अपेक्षित, वि.वि. प्र.

चर क्लबों का शिविर

'विश्व वन्य पशु निधि' ने पिछले दिनों ाष्ट्रीय रक्षा अकादमी खडगवासला' में एक कृतिक शिविर का आयोजन किया. पांच न तक चलने वाले इस शिविर 'रीजनल जीनियरिंग कालिज वारंगल', का तनिधित्व महाविद्यालय के 'व्लू. जे. नेचर लव'. के दो सदस्यों मैक्सी माइकेल, एवं गदीश ने किया. इस शिविर में भारत भर विभिन्न नेचर क्लबों के लगभग 60 दस्यों ने भाग लिया.

इस शिविर में पक्षियों, कीटपतंगों, ड़पौधों व चट्टानों आदि के प्राकृतिक संरक्षण अध्ययन किया गया.

—शशिप्रकाश गुप्त, वि. वि. प्र.

खड़गवासला में आयोजित प्राकृतिक शिविर में एक चट्टान का अवलोकन करते शिविरार्थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

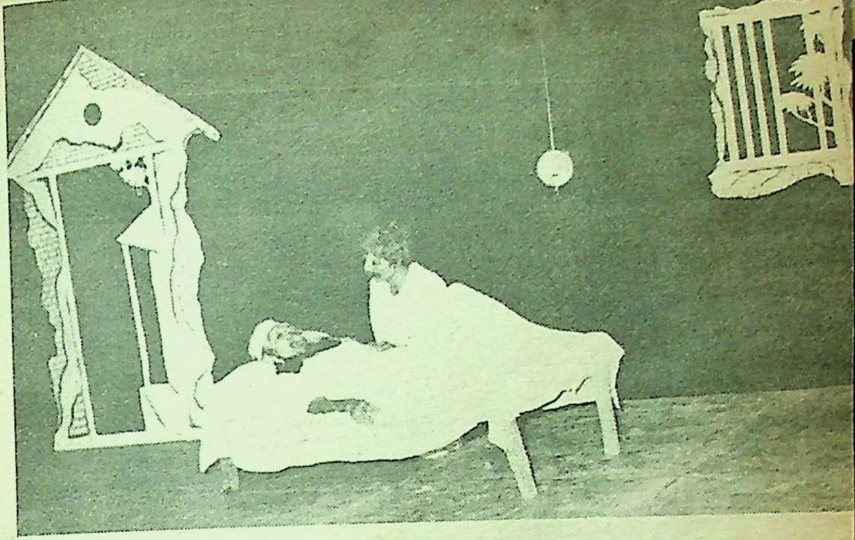

नाटक 'इक तारे की आंख' में कबीर के निधन का दृश्य. बूढ़ा कबीर (कुमार मंजिल) तथा रैदास (हरीश जौहरी).

धनबाद की नाट्य संस्था 'सूत्रधार' ने पिछले दिनों मणि मधुकर के नाटक 'इकतारे की आंख' का मंचन किया. 14 दृश्यों व 40 आवश्यक पात्रों के इस नाटक की सफलता का श्रेय नाटक के निर्देशक मुरलीधर अस्थाना को अधिक पहुंचता है, जिन्होंने केवल 16 कलाकारों की सहायता से इस नाटक को प्रदर्शित किया. इस में सज्जा रहित पूर्णतया काले मंच का प्रयोग किया गया तथा अच्छी प्रकाश व्यवस्था से दृश्यों को प्रभावित बनाया गया. **—अविनाश आरोही**

पटना की नाट्य संस्था 'कला त्रिवेणी' ने विभुकुमार के नाटक 'ताले में बंद प्रजातंत्र' का मंचन किया. लोकतांत्रिक मूल्यों पर हो रहे प्रहारों पर करारी चोट करने वाले इस नाटक में नाटक के निर्देशक व फिल्म अभिनेता हरिशरण तथा एक अन्य फिल्म कलाकार नीलम कश्यप का अभिनय सराहनीय रहा. —कुमार गिरि

नाटक 'ताले में बंद प्रजातंत्र' हरिशरण व नीलम कश्यप.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौटते कदम

कमरा खोल कर अंदर कदम रखते ही डाक से आए दो लिफाफों पर जर पड़ी. एक तो भैया का था, दूसरे पर खे पते की लिखावट तो परिचित सी लग ी थी, परंतु याद नहीं आ रहा था कि वह फाफा किस का है? उत्सुकतावश उसे ही ले खोला. पत्र मेरे पुराने सहपाठी रमेश था. संक्षिप्त ही था, परंतु मुझे विचलित ने को काफी था, लिखा था–

र सुरेश,

आशा है प्रसन्न होगे. लंबे राल के बाद पत्र पा कर आश्चर्यचकित हो ही गए होगे. पर क्या करूं, यार, एक तो जकल फुरसत नहीं मिलती, दूसरे, तुम्हारा भी मेरे पास नहीं था. इंदौर गया तो दत्त ने बताया कि तुम 'लघु प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र' की शोभा बढ़ा रहे हो, सो मुझे तुम्हारे द्वारा छात्रावास में एक शाम कहे गए शब्द याद आ गए. एक काम से आ रहा हूं. सोचता हूं तुम से मिल भी लूंगा, और कैसी सेवा कर रहे हो, यह भी अपनी आंखों से देख लूंगा. सात तारीख को पहुंच रहा हूं, साथ में वर्षा भी है, उम्मीद है हमारे लिए समय निकाल ही लोगे.

तुम्हारा– विमल.'

मात्र एक वर्ष ही तो गुजरा है, पढ़ाई समाप्त कर के हम लोगों को बिछुड़े हुए. परंतु मुझे लग रहा है मानो युग बीत गया है. कितनी उमंगें, कितना उल्लास था जब हम जीवन के द्वितीय चरण में प्रवेश कर रहे थे. अपने पैरों पर खड़े हो कर कुछ कर दिखाने की लालसा लिए मैं ने इंदौर छोड़ा था. कुछ

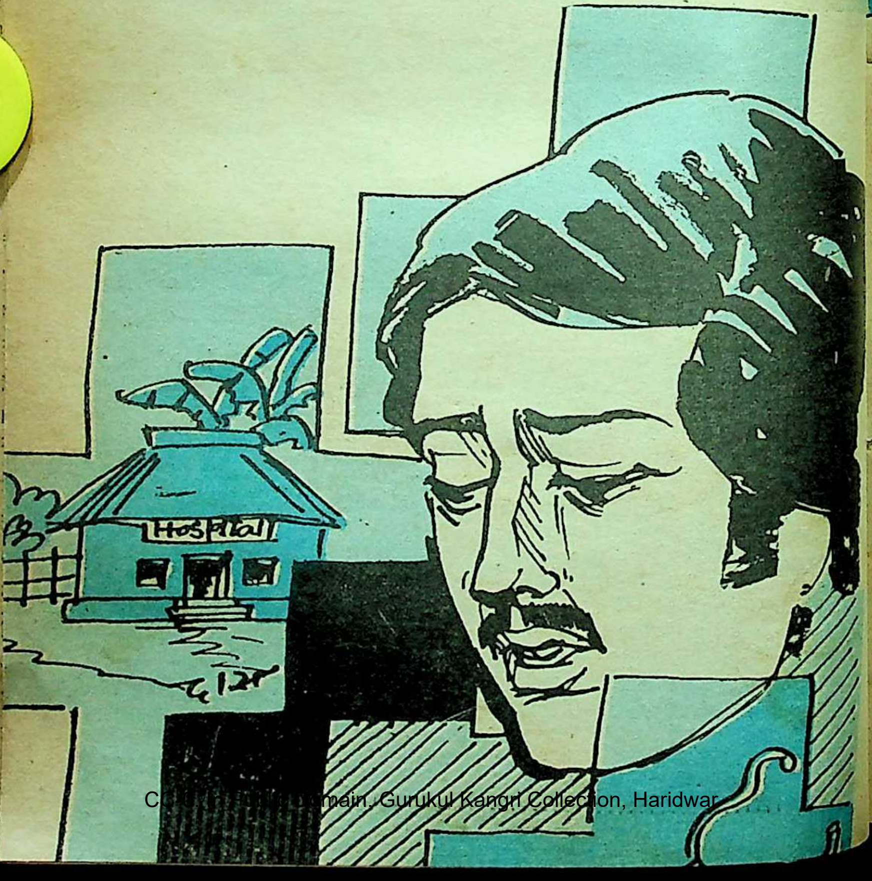

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनों तक तो दोस्तों से संपर्क बना रहा था फिर कौन कहां चला गया कुछ पता ही नहीं रहा. मेरी नियुक्ति इस आदिवासी अंचल में लघु प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में हो गई. शहर की चमकदमक, चहलपहल से दूर करीब दो हजार की जनसंख्या का यह छोटा सा गांव है. यहां की 90 प्रतिशत जनता खेतों पर मजदूरी कर के जीवनयापन करती है. पर दिन भर कड़ी मेहनत के बाद भी उन्हें शाम को भरपेट भोजन नसीब नहीं होता. गांव तक पक्की सड़क न होने से बरसात में यह गांव शहर से कट कर एक अलग द्वीप सा बन जाता है.

मैं यहां कुछ कर गुजरने की उमंगे लिए आया था. पर यहां भवन के नाम पर हस्पताल के लिए दो कच्चे कमरे थे तथा मेरे रहने के लिए एक कमरा किराए पर लिया गया था.

जो लोग अपना पेट ही नहीं भर पाते थे वे अपने स्वास्थ्य की ओर क्या ध्यान देते. बीमारी जब तक बहुत बढ़ नहीं जाती तब तक हस्पताल आने की कोई नहीं सोचता. फिर जब वे हस्पताल आते तब रोग इतना ब[illegible] चुका होता कि उपलब्ध दवाइयां उन के लि[illegible] प्रभावहीन रहतीं. मरीज मेरे सामने दम तो[illegible] देता और मैं असहाय सा खड़ाखड़ा सोचता कि मेरे यहां होने से क्या फायदा, जिस को मरन[illegible] है वह मर रहा है इलाज की सुविधाओं [illegible] अभाव में मेरे यहां रहने से कौन सी सेवा [illegible] रही है.

सुरेश ने जिस उत्साह के साथ गांव में बस कर चिकित्सा करने का निर्णय लिया था पर कुछ समय बाद ही उस का उत्साह ठंडा पड़ने लगा लेकिन वर्षा भाभी की बातें सुन कर उस के कदम वापस लौट आए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ओर तो गांव का यह असहाय वर्ग था, तो दूसरी ओर तथाकथित बड़े कहे जाने वाले लोग थे, जो अस्वस्थ होने पर हस्पताल में आना अपनी शान के खिलाफ समझ कर वक्तबेवक्त डाक्टर को अपने घर बुलाते और उसे घर आने की फीस देना तो दूर पानी को भी नहीं पूछते. घर आने से इनकार करने पर झूठीसच्ची शिकायतों द्वारा या मकान खाली कराने की धमकियों द्वारा मानसिक यंत्रणा देते. मंत्री से ले कर जिले के सभी अधिकारियों के दौरे उन की बैठकों तक आ कर ही समाप्त हो जाते. पीने और खाने के बाद वहीं से वे लोग वापस हो जाते.

पिछले एक वर्ष से यही कुछ देखते, सहते मैं अंदर ही अंदर टूट चुका हूं, अब सोच रहा हूं जैसे भी हो यहां से निकल कर कहीं भी चला जाऊं, जहां कुछ कर सकने की संभावना हो, सुविधा हो, मेरे ज्ञान का, मेरे अनुभव का कुछ उपयोग हो. आज रमेश के पत्र ने मुझे झकझोर दिया. उस के पत्र में दिया गया संकेत मुझे एक वर्ष पीछे ले गया.

शाम का ही समय था. छात्रावास के एक कमरे में हम चारपांच मित्र बैठे बातें कर रहे थे. विषय था– आगे क्या करना है?

ललित का विचार एम.बी.बी.एस. की डिगरी मिलते ही किसी 'पब्लिक सेक्टर फैक्टरी' या 'सेंट्रल गवर्नमेंट हेल्थ सर्विसेज' में जाने का था. उस का कहना था, "वेतन तो अच्छा रहेगा ही साथ में नियुक्ति भी बड़े शहरों में ही होगी. अपने प्रदेश की सेवा में जाएंगे तो न जाने किस गांव में फेंक दिए जाएं, जहां न रहने की जगह होगी और न इलाज के लिए दवाइयां?

रमेश भी उस की बात से सहमत था, परंतु मुझे उस के विचार बिलकुल पसंद नहीं आए थे.

"ललित अगर तुम को शहरों में रहने का इतना ही शौक है तो डाक्टर क्यों बने और किसी क्षेत्र में चले जाते. हमारे देश की 80 प्रतिशत जनता गांवों में रहती है और 80 प्रतिशत डाक्टर शहरों में....."

"अरे यार, बातें करना बहुत आसान है," रमेश ने मुझे टोकते हुए कहा था, "जब काम करोगे तो सब समझ में आ जाएगा. अगर तुम गांव में चले भी गए तो वहां क्या करोगे, तुम तो सिर्फ रोग की पहचान करोगे, निदान तो दवाइयों व अन्य उपकरणों से होगा. फिर वहां तुम्हें न रहने को मकान मिलेगा न पीने का स्वच्छ पानी..."

"देखो यार, ज्यादा ऊंची बात तो मैं नहीं करता. पर इतना जरूर कहूंगा कि मैं सेवा का व्रत ले कर इस क्षेत्र में आया हूं. मुझे तो रहने को एक कमरा व हस्पताल के लिए कुछ दवाइयां मिल जाएं तो मैं फिर कहीं भी जा कर कार्य करने को तैयार हूं."

"तुम को भी देख लेंगे, एक ही साल की तो बात है, तुम्हारे ये शब्द मैं आज अपनी डायरी में लिख लेता हूं." रमेश ने आगे बोलते हुए कहा था, "चलो, हम यह मान लेते हैं कि तुम गांव में चले भी गए पर तुम्हें परिवार के प्रति अपने कर्तव्य को भी तो ध्यान में रखना होगा. कितने सपनों को लिए कोई लड़की तुम से ब्याह करेगी. क्या वह गांव के माहौल में रह सकेगी? तुम्हारे बच्चों की पढ़ाई का क्या होगा? गांव के स्कूलों और उन की पढ़ाई के स्तर को कौन नहीं जानता..."

"अरे यार, तू तो बहुत दूर की बात ले बैठा. अपन तो अकेले हैं और अभी अकेले ही रहेंगे. अगर हमारे जीवन में कोई लड़की आ भी गई तो देखेंगे," मैं ने बात को समाप्त करते हुए कहा था.

परंतु आज क्या मैं वही बात उसी जोश में कह सकता हूं? कितना कुछ सोच कर आया था. और क्या हो रहा है? मेरे सारे सपने, सारे इरादे यथार्थ के कठोर धरातल से टकरा कर चूरचूर हो गए. क्या मिला मुझे यहां आ कर. न खुद को चैन मिला न घर वालों की इच्छा पूरी हुई. बाबूजी ने सोचा होगा कि मैं पढ़ाई पूरी कर के उन के बोझ को कम करूंगा, परंतु मैं सब को छोड़ कर यहां आ गया हूं, उन्हें यहां लाता भी कैसे. न जाने उन्हें कब किस इलाज की जरूरत पड़ जाए और यहां तो... फिर बरसात के दिनों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो यहां के सारे रास्ते बंद हो जाते हैं. एक दिन वो थे कि जब तक अखबार नहीं पढ़ लेता था, तब तक लगता ही नहीं था कि सुबह हो गई है और अब तो कईकई दिन तक अखबार के दर्शन भी नहीं होते हैं.

इसी उधेड़बुन से गुजरते हुए दूसरा पत्र खोला. भैया ने लिखा था :

'बाबूजी का स्वास्थ्य दिनोंदिन गिरता जा रहा है. इस समय उन्हें किसी सहारे की आवश्यकता है. मैं यहां इतनी दूर हूं. बारबार आजा नहीं सकता. सोचा था तुम ही कुछ करोगे. परंतु... तुम स्वयं समझदार हो जो निर्णय लिया है उस पर फिर सोचो. इतनी दूर जा कर छः सौ रुपए की नौकरी से बेहतर है, घर पर ही क्लीनिक खोल लेना. इस से ज्यादा कमा लोगे तथा घर का ध्यान भी रख सकोगे.'

भैया का यही पत्र अगर एक वर्ष पहले मिला होता तो मैं इसे फाड़ कर फेंक देता, परंतु आज सोचता हूं कि मैं यहां क्या कर रहा हूं. खुद भी तकलीफ में हूं. घर पर भी सब परेशान हैं. किसी को कुछ भी फायदा नहीं हो रहा है.

रमेश को आने दो, उस से ही बात करूंगा. वह खूब अच्छी तरह स्थापित हो गया है, उसी के साथ काम शुरू कर दूंगा. शहर भी अच्छा है, सभी सुविधाएं हैं वहां.

अरे... आज ही तो सात तारीख है. कमरा कैसा अस्तव्यस्त है. वर्षा भाभी क्या सोचेंगी?

''डाक्टर साहब, डाक्टर साहब,'' तभी आवाज आई. बाहर आ कर देखा तो रमेश वर्षा भाभी के साथ खड़ा है. बोला, ''आप के लिए मेहमान लाया हूं.'' ''अच्छाअच्छा, नमस्ते भाभीजी.''

''नमस्ते.''

मैं आगे बढ़ कर रमेश से गले लगते हुए बोला, ''अरे. यार, तू तो बिलकुल नहीं बदला. उसी तरह से अभी तक चुस्त है...''

''पर तू तो बहुत बदल गया है. लगता है बहुत दिनों से बीमार है.''

''मैं हार गया हूं, मेरे सब सपने टूट गए हैं. जितनी जल्दी होगा मैं यहां से चला जाऊंगा'' सुरेश रमेश और वर्षा से बोला.

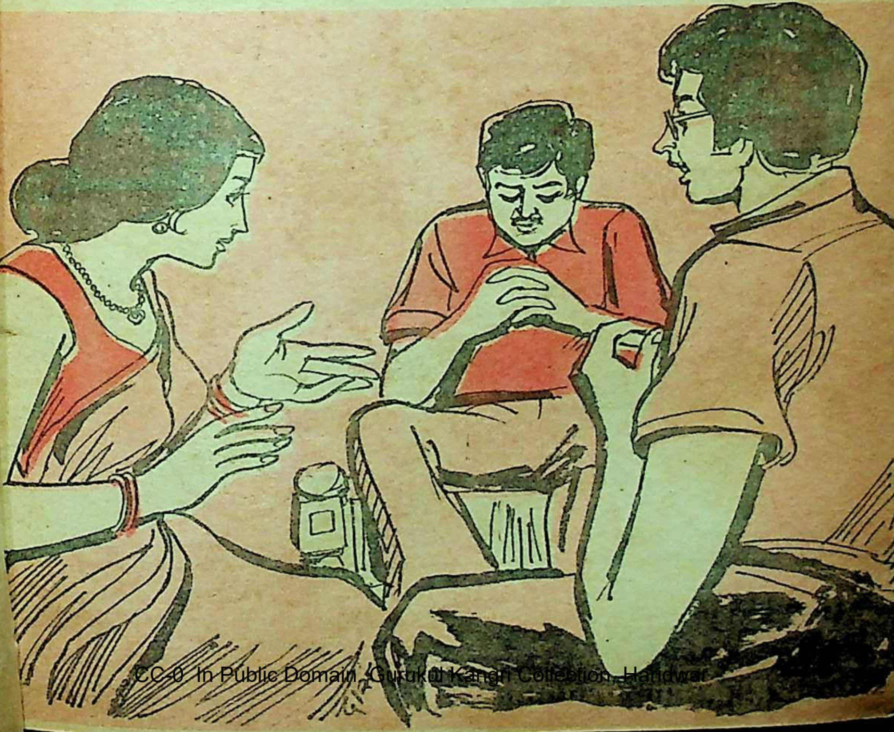

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

''अरे, मुझे कुछ नहीं हुआ है तेरी नजरें ही धोखा खा रही हैं,'' मैं ने बात बदलते हुए कहा, ''खैर, तुम लोग अंदर तो आओ.''

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''सुरेशजी, आप के बारे में इन से बहुत सुना था, देखने की बड़ी इच्छा हो रही थी कि आखिर वह कौन व्यक्ति है जो गांव में...''

''हां, यार, सही में वर्षा की ही जिद थी. वह ही तुझ को देखना चाहती थी.''

''तुम्हें फुरसत ही कहां है हम जैसों के लिए. तुम शहरों के डाक्टर और हम गांव के... चलो, तुम लोग हाथमुंह धो लो जब तक मैं भोजन का इंतजाम करता हूं.''

''और तेरे क्या हाल है? सुना है डाक्टरी शानदार चल रही है. एक्स रे मशीन लगवाने वाला है,'' खाना खाने के बाद मैं ने रमेश को टटोलने के लिए बात शुरू की.

''हां, ठीक है, आजकल शहर के लोगों ने एक फैशन बना लिया है कि महीने दो महीने में डाक्टर से सौ रुपए की दवाइयां लिखवा लीं और मिठाई समझ कर खाते रहे. सच यार, कई बार तो अपनेआप पर बड़ा गुस्सा आता है. जमीर गवाही नहीं देता है कि जिन्हें एक गोली की भी आवश्यकता नहीं है उन्हें लंबा सा नुस्खा लिख कर दें. इच्छा होती है सब कुछ छोड़ कर कहीं दूर गांव में चला जाऊं, जहां मैं अपनी इच्छा से अपने ज्ञान का उपयोग कर सकूं. खैर, यह तो बता तेरा कैसा चल रहा है? जिन उद्देश्यों को ले कर तू गांव आया था वे पूरे हो रहे हैं? वैसे एक बात है यार... तेरे प्रति जो श्रद्धा, जो प्रेम मैं ने इन गांव वालों में देखा, उस से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं.''

''तू ने अभी तसवीर का एक ही रुख देखा है, दूसरा देखेगा तो शायद कुछ और ही सोचेगा.'' यह कहने के बाद मैं ने उसे अपनी पूरी आपबीती सुनाई. पिछले एक वर्ष में जो कुछ गुजरा, जो परेशानियां मुझे हुईं, उसे कह सुनाई. फिर अचानक मैं भरे गले से कह उठा, ''मैं हार गया हूं, मेरे सब सपने टूट गए हैं, मैं तो जितनी जल्दी भी होगा यहां से निकल कर कहीं भी चला जाऊंगा, क्यों न मैं भी उज्जै... में ही डाक्टरी शुरू कर दूं, कैसा रहेगा वहां...''

''जो तू ने बताया यदि वह सब सच है तो मैं भी तुझे यही सलाह दूंगा कि तू आज ही मेरे साथ चल.''

''भाई साहब, किसी निर्णय पर पहुंचने के पहले मेरी भी कुछ बातें सुन लीजिए,'' काफी देर तक मूक श्रोता बनी रहने के बाद वर्षा भाभी अचानक बीच में बोली, ''यह सही है कि आप यहां रह कर अपने मातापिता के प्रति अपना दायित्व नहीं निभा पा रहे हैं और यह भी सच है कि आप के मार्ग में जो कठिनाइयां आ रही हैं, वह इसी गांव के निवासियों द्वारा उत्पन्न की जा रही हैं?

''मेरा बचपन भी गांव में ही बीता है. मैं ने अपने एक मात्र भाई को इलाज के अभाव में दम तोड़ते देखा है. उस समय 50 मील दूर तक भी कोई योग्य चिकित्सक उपलब्ध नहीं था. मैं, बाबूजी, अम्मा सब असहाय से खड़े अपनी आंखों से तड़पतड़प कर उसे मरते देखते रहे. कुछ भी न कर सके. जब से इन्होंने मुझे आप के बारे में बताया, तभी से मेरी इच्छा थी कि एक बार आप से मिलूं. आप के कार्य को देखूं. आप का हौसला बढ़ाऊं.

''आप एक बार फिर सोचें. शहर में डाक्टरों का समुद्र है वहां पर एक डाक्टर और बढ़ जाएगा तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा परंतु रेगिस्तान से गई पानी की बूंद अनेक प्राणियों की मौत का कारण हो सकती है. आप युवा हैं, साहसी हैं अभी इन छोटीछोटी तकलीफों से हताश मत होइए. परिवार व समाज के प्रति अपना दायित्व निभाने से पूर्व राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह कीजिए. मैं तो इन से भी कहती रही हूं कि जब तक सहने की शक्ति है, तकलीफों की ओर चलिए. जिस दिन सीमा के बाहर की बात हो जाएगी. उस दिन अपने कदम वापस लौटा लेंगे.''

भाभी के इन शब्दों ने मेरे सोए विवेक को फिर जगा दिया. जिन कठिनाइयों से डर कर मैं भाग रहा था, वे मुझे बौनी सी प्रतीत होने लगीं और मैं ने एक बार फिर से इस मैदान में उतरने का निश्चय कर लिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्यात संवर्धन परिषद की पत्रिका 'जेम एंड जुएलरी' के अनुसार भारत में अनघड़ रत्नों (इस में हीरे भी शामिल हैं) का उत्पादन नहीं बढ़ा है. इसी लिए भारत अनघड़ रत्नों का आयात करता है. अप्रैल, 1981 से मार्च, 1982 तक भारत ने 57,239.22 लाख रुपए मूल्य के 263.55 लाख कैरेट अनघड़ हीरों का आयात किया. इसी अवधि में उस ने 72775.72 लाख रुपए मूल्य के 40.60 लाख कैरेट तराशे हुए हीरों का निर्यात किया.

भारत जितने कीमती रत्न निर्यात करता है उन में 92.4 प्रतिशत हीरे ही होते हैं. मूल्य की दृष्टि से हीरों के निर्यात में भारत का तीसरा स्थान है. प्रथम स्थान इजराइल तथा दूसरा बेल्जियम का है.

भारत अमरीका, हांगकांग, जापान, स्विटजरलैंड, इंगलैंड, फ्रांस तथा पश्चिमी जरमनी को हीरों का निर्यात करता है. भारत से हीरों का सब से अधिक आयात अमरीका करता है.

भारत में कम वजन के, अधिकतर एक कैरेट से कम वजन के, हीरों की अधिक मांग है. लेकिन लोग अंगूठियों तथा कान में पहने जाने वाले टाप्स आदि के लिए एक कैरेट या उस से अधिक भार के हीरे खरीदना पसंद करते हैं.

कुछ जौहरियों का मत है कि हीरों की खुदरा बिक्री के मूल्यों में भी गिरावट आई है, लेकिन हीरों की खुदरा बिक्री करने वाले जौहरियों का कहना है कि बिना तराशे हुए हीरों में आई मंदी से जेवरात के व्यापार पर असर नहीं पड़ा है. किशोरभाई का कहना है, "भारत में लोग पहले की तरह ही जेवर खरीदते हैं. हमारे यहां मूल्यों में कमी नहीं हुई है और न कमी होने की आशा ही है."

अमरीका की एक पाक्षिक पत्रिका 'फारचून' के अनुसार, "बिना तराशे हुए हीरों की बिक्री में आई मंदी के बावजूद गत वर्ष हीरों के जेवरात की इतनी बिक्री हुई, जितनी पहले कभी नहीं हुई थी." अमरीका में, जो विश्व में हीरों का सब से बड़ा बाजार है, गत वर्ष 5.5 अरब डालर (करीब 55

किस्मकिस्म के हीरे

अरब रुपए) के हीरों के जेवरात की बिक्री हुई.

हीरों के जेवरों की सब से अधिक खरीद शादीशुदा महिलाएं करती हैं या फिर वे लड़कियां करती हैं जिन की शादी होने वाली होती है.

डी बीयर्स ने बड़े आकार के हीरों की बिक्री बढ़ाने के लिए हीरों के विज्ञापन का अभियान चला रखा है. इस अभियान पर उन के करीब 10 लाख डालर खर्च करने की योजना है. इस फर्म का एक विज्ञापन है—'एक कैरेट या उस से अधिक का हीरा 10 लाख में एक होता है.'

हीरों के एक खुदरा व्यापारी के अनुसार, भारत में जेवरात संबंधी जो विज्ञापन होते हैं, वे उतने आकर्षक नहीं होते जितने विदेशी विज्ञापन होते हैं. भारत में लोगों को हीरा खरीदने के लिए आकर्षित करने की कोई आवश्यकता ही नहीं है. हमारे यहां परंपरानुसार लोग शादी या कुछ अन्य अवसरों पर जेवरात खरीदते ही हैं. हमारी बिक्री की संभावनाएं पहले से ही हैं, इसलिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हम क्यों लच्छेदार विज्ञापनों पर पैसे खर्च करें?

हीरों में पूंजी लगाने की दृष्टि से लोगों को आकर्षित करना आसान नहीं है, क्योंकि यदि ग्राहक इसे फिर से बेचना चाहे तो उस के लिए बहुत मुशकिल होती है. इस का एक कारण यह होता है कि हर जौहरी किसी ग्राहक से हीरा वापस खरीदते समय उस का मूल्य वास्तविक मूल्य से बहुत कम लगाता है. इस के अतिरिक्त हीरों की बिक्री इतनी आसानी से भी नहीं होती. हीरों की खुदरा खरीद के बाद यदि कोई व्यक्ति अपना हीरा पुन: बेचना चाहे तो उसे वह दिए गए मूल्य से 10 प्रतिशत कम मूल्य पर बेचना पड़ेगा.

कुछ जौहरी बिके हुए हीरों को पुन: खरीदने से इनकार भी कर देते हैं. कोईकोई जौहरी हीरे को वापस खरीदते समय उस का मूल्य वास्तविक मूल्य के आधे से कम आंकते हैं, जिस से बेचने वाला व्यक्ति या तो उसी दाम पर हीरा बेच जाता है या फिर बिना बेचे ही लौट जाता है.

गत वर्ष बैंक ब्याज की दर भी बहुत बढ़ गई. इस कीमती पत्थर की मांग में आई कमी के कारण भी लोग इस में पूंजी लगाने में अधिक रुचि नहीं दिखा रहे हैं. लेकिन भारतीय जौहरियों का खयाल है कि हीरों में पूंजी लगाना कोई घाटे का सौदा नहीं है.

हीरा: काला धन छिपाने का माध्यम

एक जौहरी ने, जो अपना नाम नहीं देना चाहता, इस संबंध में बताया, "काला धन छिपाने का हीरा सब से कारगर माध्यम है, क्योंकि हीरा खरीदना और रखना आसान है. इसे छोटीछोटी थैलियों में आसानी से रखा जा सकता है व एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से ले जाया भी जा सकता है. यही क्यों, इसे देश से बाहर भी ले जाया जा सकता है, यदि किसी को इस की खरीद में थोड़ा घाटा होता है तो भी यह उस के लिए लाभदायक है."

अन्य जौहरियों की दृष्टि में यदि विश्व में हीरों की खुदरा बिक्री के मूल्य में और कमी आती है तो भी भारत में इस का प्रभाव न पड़ेगा. एक जौहरी ने बताया, "भारत में विदेश व्यापार व आयात पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध हैं, इसी लिए विश्व में हीरों के घटते मूल्यों से हमारा बस नाममात्र का संबंध है."

भारतीय खरीदार के लिए हीरे की खरीद में सब से अधिक परेशानी की बात अच्छे हीरे की पहचान है.

बद्री मेहरा ने इस संबंध में बताया, "तराशने में सफाई, रंग, वजन व निर्मलता को देख कर ही हीरे का मूल्य आंका जाता है."

हीरेजवाहरात के निर्यात में वृद्धि के लिए गठित परिषद के एक विशेषज्ञ का कहना है, "हीरे जितने निर्मल होंगे, उन का मूल्य उतना ही अधिक होगा. हीरे में कई प्रकार के दोष हो सकते हैं. हीरों में जो आम दोष पाए जाते हैं, वे हीरों के अंदर होने वाले काले धब्बे हैं. कुछ हीरों में दरार भी हो सकती हैं. ये हीरों के निर्माण की प्रक्रिया के दौरान हो जाते हैं.

"इस तरह के दोष हीरों पर पालिश करने के समय भी पैदा हो सकते हैं. इस तरह के दोष बहुत सूक्ष्म होते हैं. अकसर हीरों में रंगहीन बिंदु होते हैं. जिन्हें 'पिन पाइंट' कहते हैं. हीरों में लाल रंग का होना भारत में अशुभ माना जाता है. इस के अतिरिक्त हीरे की बाहरी सतह पर खरोंच हो सकती है. पालिश के समय उस पर रेखाएं पड़ सकती हैं, वे कटे हो सकते हैं, उन में छेद हो सकते हैं, निशान आदि भी हो सकते हैं या उन के फलक पीले हो सकते हैं. इस से हीरे का बाहरी आकार गेहुएं रंग या भूरे या बादल के रंग जैसा हो जाता है."

रंग की दृष्टि से हीरों को दो वर्गों में बांटा जा सकता है—आकर्षक और अनाकर्षक. लेकिन जिस हीरे में कोई रंग न हो, वह सर्वश्रेष्ठ किस्म का हीरा माना जाता है. अनाकर्षक रंगों में लाल, बैंगनी, गहरा हरा, गुलाबी तथा सुंदर नीले रंग के हीरे बहुत कीमती होते हैं.

एक हीरा विशेषज्ञ के अनुसार यदि हीरे में चमक हो और सफेद रोशनी पड़ने पर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व प्रसिद्ध हीरे

भारत का विश्वप्रसिद्ध 'हीरा कोहनूर' है. इस का वजन 108 कैरेट है तथा इस समय यह ब्रिटेन के शाही ताज में लगा हुआ है.

दूसरा विश्व प्रसिद्ध हीरा 'आरलोव' भारतीय शैली में तराशा गया है. 300 कैरेट का यह हीरा दोबारा नहीं काटा गया है. रूस के राजकुमार आरलोव के नाम पर इस का यह नाम पड़ा था. इस से पहले इस का नाम 'ग्रेट मुगल' था. आरलोव ने इसे रूस की महारानी को भेंट किया था.

ब्राजिल के हीरे भी विश्व में प्रसिद्ध हैं. ये आकार में छोटे होते हैं. ब्राजिल में पाए गए छः बड़े आकार के हीरों में सब से बड़ा हीरा 262 कैरेट का है.

दक्षिण अफ्रीका की खानों में इतने बड़े आकार के हीरे पाए गए हैं कि सहसा विश्वास नहीं होता. वहां पाया गया सब से बड़ा हीरा 'कुलिनन' है. सर टामस कुलिनन के नाम पर इस का यह नाम पड़ा है. अपने मूल रूप में इस का वजन 3,000 कैरेट से भी अधिक था.

इंगलैंड के राजा एडवर्ड सप्तम ने तराशने के लिए इसे एमस्टर्डम की एक कंपनी को भेजा, जहां इसे दो टुकड़ों में काट दिया गया. बड़ा टुकड़ा 'स्टार आफ अफ्रीका' 530 कैरेट का है तथा इस में 74 फलक हैं. छोटा टुकड़ा 'ब्रिलिएंट' 317 कैरेट का है. ये दोनों ब्रिटिश सिंहासन व शाही ताज में लगे हैं.

अभी भी 100 या उस से ज्यादा कैरेट के हीरे गिनेचुने ही हैं.

में से रंगीन चमक निकले तथा उस में से प्रकाश का परावर्तन हो तो समझना चाहिए कि हीरा बहुत अच्छे ढंग से तराशा गया है.

हीरे को तराशने की दो मुख्य शैलियां हैं. एक ब्रिलिएंट कट है, जिस में हीरे में 58 फलक आ जाते हैं. दूसरी 'स्टेप कट' होती है, जिस में छोटेछोटे आयताकार फलक बन जाते हैं. 'ब्रिलिएंट कट' के हीरे अकसर गोल, अंडाकार, नाशपाती व हृदय के आकार के होते हैं.

90 प्रतिशत ब्रिलिएंट कट हीरे अंडाकार होते हैं, क्योंकि इस तरह से हीरों में बहुत अधिक चमक आ जाती है. 'स्टेप कटिंग' की शैली पन्ने की तरह कटे हुए हीरों के लिए इस्तेमाल की जाती है. छोटे हीरों के लिए सिंगल कट शैली अपनाई जाती है. इस से हीरे में 18 फलक आ जाते हैं.

भारत में 10 सेंट भार (एक चौथाई कैरेट) के हीरों की बहुत अधिक मांग है. आधे कैरेट के हीरों को भी काफी लोग खरीदते हैं. जवेरी शोरूम में एक कैरेट के निर्दोष सफेद हीरों का मूल्य 25,000 रुपए प्रति कैरेट है.

यह पूछने पर कि एक सामान्य आदमी, जिसे हीरों के विषय में कोई जानकारी नहीं है, अच्छे हीरे का चुनाव कैसे करे. किशोरभाई ने बताया, "हम लोगों का यह व्यापार विश्वास का व्यापार है. ग्राहक को आभूषण विक्रेता में पूरा विश्वास रखना चाहिए. आभूषण विक्रेता को भी ग्राहक को इस बारे में आश्वस्त करना चाहिए कि वह जब जी चाहे खरीदा गया आभूषण उसे वापस बेच सकता है. हम लोग हीरे के मूल्य में 10 प्रतिशत काट कर हीरे पुनः वापस ले लेते हैं."

हीरा अभी भी सब से लोकप्रिय रत्न है. हीरे से जो आभूषण बनते हैं. उन में 30 प्रतिशत अंगूठियां ही होती हैं. इस के बाद कान के टाप्स तथा नग वाले आभूषण बनवाए जाते हैं. नववधुएं हीरे के मंगलसूत्र को बहुत पसंद करती हैं

हालांकि पूंजी लगाने की दृष्टि से हीरे का महत्त्व कम हो गया है, लेकिन इन की खुदरा बिक्री अभी भी से जारी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

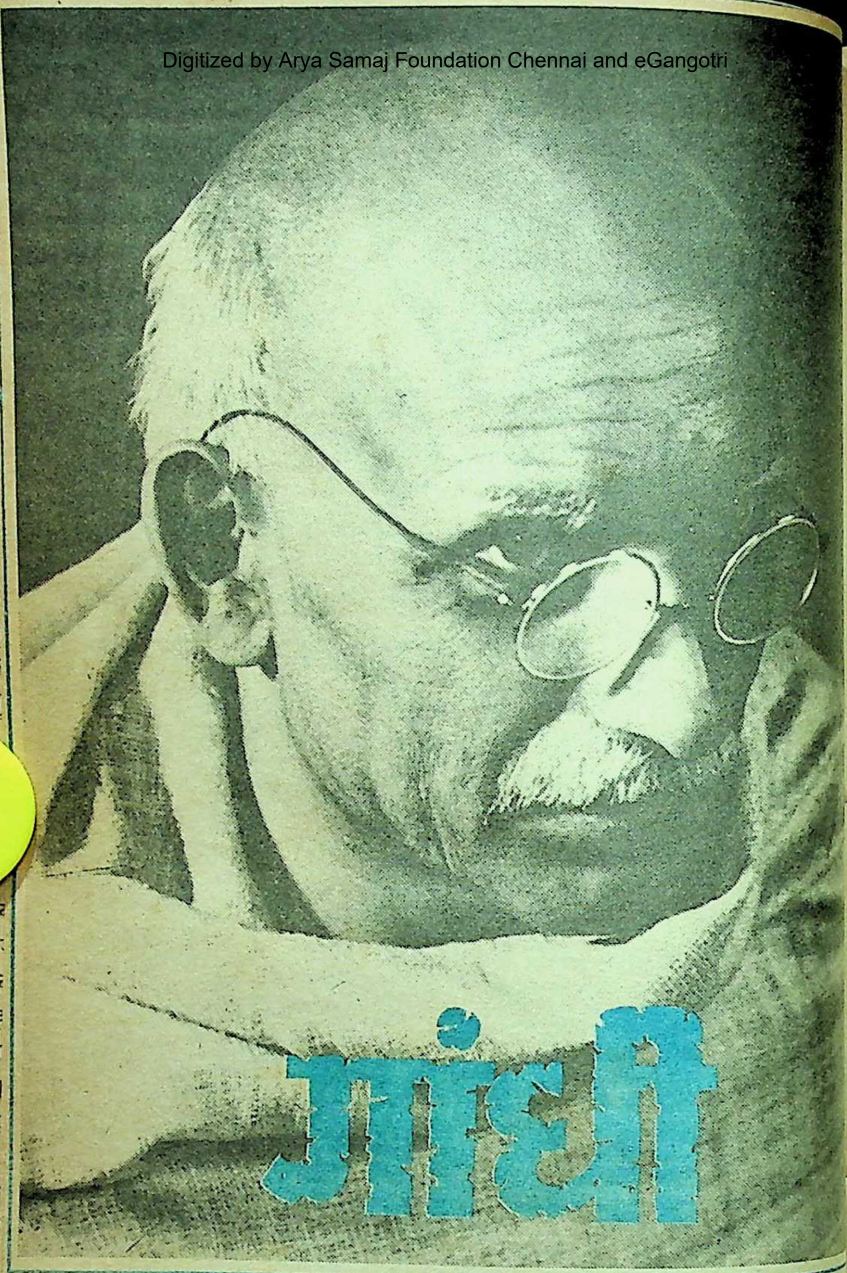

—फिल्म प्रतिनिधि द्वारा—

लगभग 20 करोड़ रुपए की लागत से बनी फिल्म 'गांधी' प्रदर्शन के लिए तैयार हो चुकी है. फिल्म अंगरेजी में बनाई गई है और हिंदी में डब की गई है. इस के अतिरिक्त यह फ्रांसीसी, इतावली आदि भाषाओं के उप शीर्षक साथ भी दिखाई जाएगी.

फिल्म की लंबाई लगभग 5,700 मी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

है और तीन घंटे 10 मिनट में समाप्त होती है. फिल्म में गांधीजी [illegible] जद्दोजहद की अपेक्षा उन के जीवन के सामाजिक पहलुओं एवं हिंदूमुसलिम एकता के लिए किए गए प्रयत्नों पर ही अधिक ध्यान दिया गया है. यही कारण है कि उस काल के अन्य प्रसिद्ध नेताओं की भूमिकाएं महत्त्वहीन हो गई हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म गांधीजी की हत्या के साथ प्रारंभ होती है और गांधीजी की अर्थी का जलूस विजय चौक में से निकलता है. इस के बाद फिल्म एकदम फ्लैशबैक में चली जाती है और फिल्म की कहानी दक्षिण अफ्रीका से शुरू होती है. फिल्म में पहली घटना यह दिखाई गई है कि गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में [illegible] में यात्रा रहे हैं और गोरे यात्री इस पर आपत्ति करते हैं और गांधीजी व उन के सामान को स्टेशन के प्लेटफार्म पर पटक देते हैं.

इस घटना को विद्रोह के एक बीज के रूप में दिखाया गया है. आगे चल कर यही बीज गांधीजी में एक विशाल वृक्ष के रूप में प्रकट होता है, जो पूरे भारत को अपनी छाया में समेट लेता है. फिल्म इस घटना से प्रारंभ हो कर उत्तरोत्तर विकसित होती चली जाती है और गांधीजी का चरित्र दर्शक के हृदय पर अंकित होता चला जाता है.

फिल्म में दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी के

20 करोड़ की लागत से बनी यह फिल्म गांधीजी के आदर्शों व सिद्धांतों को लोगों तक पहुंचाने में कहां तक सफल रही है...

निर्मातानिर्देशक सर रिचर्ड एटेनबरो, गांधीजी (बेन किंग्सले) से फिल्म के एक दृश्य के बारे में चर्चा करते हुए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंदोलन का काफी लंबा चित्रण है, जिस में दिखाया गया है कि गांधीजी किस प्रकार अहिंसा और असहयोग के अचूक अस्त्रों का अडिग रह कर प्रयोग करते हैं. वहीं पर सभी धर्मों में एकता की बात भी उन के मन में उठने लगती है. गोरे लोग भी उन के आंदोलन से प्रभावित होते हैं. यहां तक कि प्रसिद्ध विदेशी पत्रपत्रिकाओं में भी गांधीजी के नए प्रयोग की चर्चा होने लगती है.

इस के बाद गांधीजी भारत लौट आते हैं जहां गोखले जैसे महान नेता उन्हें कांग्रेस की बागडोर संभालने को कहते हैं. गांधीजी जनआंदोलन की बागडोर संभालने से पहले देश और देश की जनता को समझना जरूरी समझते हैं. वह पूरे भारत की विस्तृत यात्राएं करते हैं और देश की गरीबी को बहुत नजदीक से देखते हैं. उन की धारणा बन जाती है कि लोगों का विश्वास प्राप्त करने के लिए लोगों जैसा ही बनना और दिखना जरूरी है. वह कपड़े त्याग कर लंगोटी पहन लेते हैं.

इसी दौरान निर्देशक रिचर्ड ऐटनबरो ने एक बड़ा ही मार्मिक प्रसंग फिल्माया है. गांधीजी नदी के किनारे हाथमुंह धो रहे हैं.

पात्र परिचय

निर्माता निर्देशक : सर रिचर्ड एटेनबरो
लेखक : जान ब्रिले
फोटोग्राफी : विली विलियम्स, रोनी टेल
संगीत : रविशंकर
मुख्य पात्र : बेन किंग्सले, कैंडिस ब, एडवर्ड फाक्स, जान गिलगुड, रो हटंगड़ी, सईद जाफरी, अमरीश पुरी, रो सेठ, ओमपुरी, वीरेंद्र राजदान, अला पदमसी.

उन की दृष्टि सामने पानी में नहा रही जीर्णशीर्ण वस्त्र पहने महिलाओं पर पड़ती उन की गरीबी देख कर गांधीजी का पिघल जाता है. वह पानी में अपनी चादर देते हैं जो बहती हुई एक गरीब महिला पास पहुंच जाती है. तब गांधीजी के चेहरे एक विशेष प्रकार का संतोष का भाव दिख

वायसराय (जान मिल्स) अपने सैनिक सलाहकारों के साथ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने आश्रम में चरखा कातते हुए गांधीजी (बेन किंग्सले) और कस्तूरबा (रोहिनी).

देता है.

इस के बाद गांधीजी के राजनीतिक जीवन का चित्रण है. जलियांवाला बाग के सामूहिक हत्याकांड का बड़ा करुण चित्रण देखने को मिलता है कि किस प्रकार निहत्थे व निरीह लोगों को जनरल ओ' डायर के सैनिक गोलियों से भून डालते हैं.

गांधीजी के असहयोग आंदोलन की अपार असफलता और उस में हिंसा आ जाने से नेहरू आदि से विरोध के बावजूद आंदोलन वापस ले लेने जैसे कदमों से दिखाया गया है कि गांधीजी में कितनी दृढ़ता थी. महात्मा गांधी की ऐतिहासिक डांडी यात्रा का भी अच्छा चित्रण किया गया है कि किस प्रकार नमक जैसी मामूली चीज को ले कर गांधीजी ब्रिटिश साम्राज्य को हिला कर रख देते हैं. आगाखां महल में गांधीजी की नजरबंदी और वहीं उन की पत्नी कस्तूरबा की मृत्यु का बड़ा मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है.

फिल्म के एक दृश्य में प्रसिद्ध डांडी यात्रा का नेतृत्व करते गांधीजी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

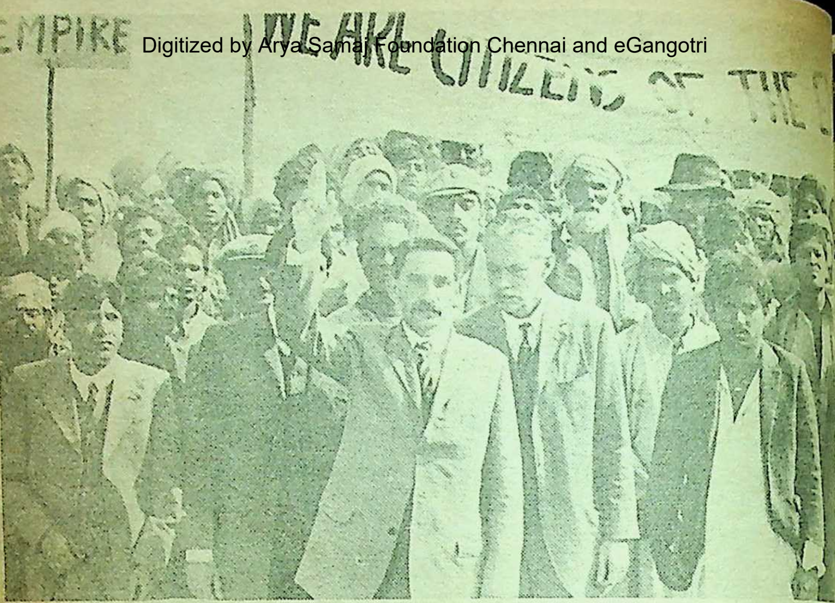

दक्षिण अफ्रीका में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध एक आंदोलन का नेतृत्व करते गांधीजी के रूप में बेन किंग्सले.

सर रिचर्ड एटेनबरो

सन 1923 में जन्मे सर रिचर्ड एटेनबरो पिछले 40 वर्षों से फिल्म जगत से जुड़े हुए हैं. नाटकों के क्षेत्र में भी आप का महत्त्वपूर्ण योगदान है और रंगमंच से ही आप ने अपना जीवन आरंभ किया. 'माउस ट्रैप' (1952-54) आप का अत्यंत लोकप्रिय नाटक है जो विश्व रंगमंच के तमाम कीर्तिमान तोड़ कर आज भी लंदन में खेला जा रहा है.

1968 में सर रिचर्ड विश्व के सफलतम निर्देशकों में गिने जाने लगे. इन की फिल्में 'ओह, व्हाट ए लवली वार' और 'यंग विंस्टन' अत्यंत सफल रहीं. आप ब्रिटिश फिल्म इंस्टीट्यूट के अध्यक्ष हैं और दरजनों अन्य कला संस्थाओं से संबद्ध हैं. 1976 में इन्हें नाइटहुड मिली और 'सर' की उपाधि प्रदान की गई.

अंत में मुहम्मद अली जिन्ना की हठ के कारण गांधीजी को भारत का विभाजन स्वीकार करना पड़ता है और हिंदू मुस्लिम दंगे उन्हें नोआखली व कलकत्ता जाने को मजबूर करते हैं. वहां वह मरणव्रत रखते और हिंदू मुसलिम नेताओं द्वारा विश्वास दिलाए जाने पर व्रत तोड़ते हैं.

गांधीजी के आश्रम का भी जीवन दिखाया गया है. यहां निर्देशक ने एक बड़ा अनोखा दृश्य दिखाया है. देश के बड़ेबड़े नेता गांधीजी के चारों ओर जमा हैं और देश की समस्याओं पर गंभीर विचारविनिमय हो रहा है. तभी पास से एक नन्ही सी बच्ची बकरी का बच्चा लिए गुजरती है और गांधीजी से बकरी के बारे में दूर से ही बात करने लगती है. गांधीजी बिना बाधा महसूस किए उसे उत्तर देते हैं और फिर बातचीत में मशगूल हो जाते हैं. यहां दिखाया गया है कि गांधीजी के लिए छोटीबड़ी सभी बातें किस प्रकार समान महत्त्व रखती थीं. गांधीजी की हत्या के साथ फिल्म समाप्त होती है.

फिल्म का आरंभ असहयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

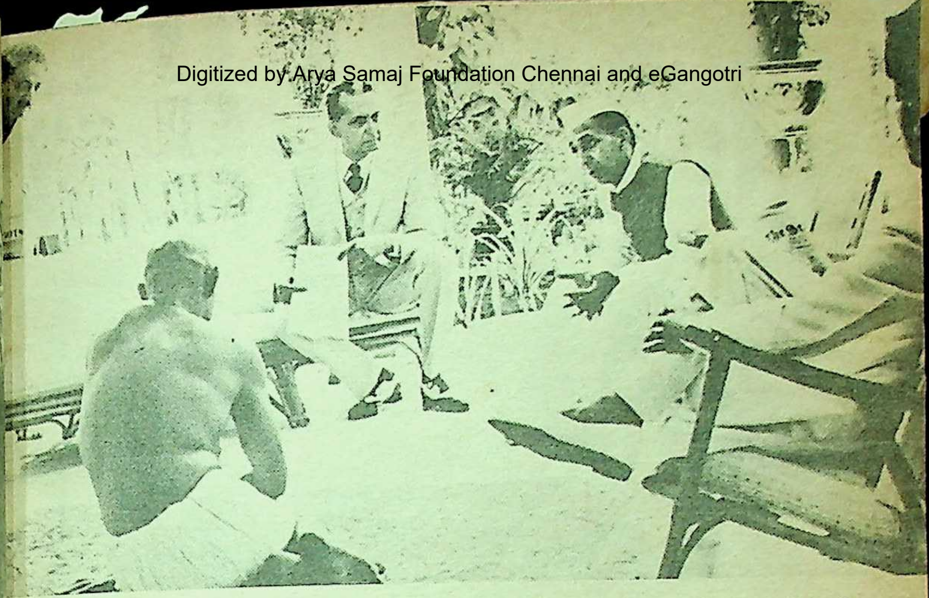

गांधीजी (बेन किंग्सले) अन्य वरिष्ठ नेताओं सरदार पटेल (सईद जाफरी), जिन्ना (अलाइक पदमसी) नेहरू (रोशन सेठ) व अबुल कलाम आजाद (वीरेंद्र राजदान) से विचारविमर्श करते हुए.

अहिंसा के आंदोलन से होता है. बाद की पूरी फिल्म इन्हीं दो स्तंभों पर खड़ी होती चली गई है. गांधीजी के लिए सब से बड़ी विडंबना यह रही कि जहां अफ्रीका में उन्हें केवल गोरे और काले के भेदभाव के खिलाफ लड़ना पड़ा, वहां भारत में आ कर वह लड़ाई तो ज्यों की त्यों रही, उस में भारत में व्याप्त छुआछूत के विरुद्ध एक अन्य लड़ाई भी उन्हें शुरू करनी पड़ी.

फिल्म मुख्यत: गांधीजी के जीवन पर बनाई गई है और निर्देशक रिचर्ड ऐटनबरो ने उन की भूमिका पर विशेष परिश्रम किया है. यही कारण है कि बेन किंग्सले गांधी की भूमिका में सजीव हो उठा है. फिल्म देखते हुए ऐसा ही लगता है कि हम लगभग गांधीजी को ही देख रहे हैं. गांधीजी के हावभावों व शैली की नकल करने में बेन किंग्सले बहुत कुछ सफल रहे हैं. गांधीजी की गंभीरता व सरलता के दृश्य जगहजगह बिखरे पड़े हैं और बेन किंग्सले ने उन में गांधी की आत्मा फूंक दी है.

निर्देशक का उद्देश्य केवल गांधीजी के चरित्र को उजागर करना था और इसलिए अन्य नेताओं को फिल्म में अधिक महत्त्व नहीं दिया गया है. इसी लिए अन्य कलाकार अपनी भूमिकाओं में कम से कम प्राण नहीं फूंक सके, केवल जगह भर कर रह गए हैं. जवाहरलाल नेहरू की भूमिका में रोशन सेठ, सरदार पटेल के रूप में सईद जाफरी, मौलाना अबुल कलाम आजाद के रूप में वीरेंद्र राजदान प्रभावहीन हैं. अलाइक पदमसी ने मुहम्मद अली जिन्ना की भूमिका बेजान कर दी है. कस्तूरबा गांधी की भूमिका में रोहिनी उपयुक्त नहीं रही, पर उस की भूमिका व अभिनय मन पर छाप छोड़ जाता है.

फिल्म में रविशंकर ने संगीत दिया है, इसलिए सितार का स्वर अन्य वाद्यों की अपेक्षा ऊंचा रहा है. फिल्म के अंत में दी गई नामावली उकताहट की हद तक लंबी कर दी गई है. यहां तक कि एक क्षण के लिए परदे पर आने वाले कलाकार का नाम भी दे दिया गया है. फिल्म की फोटोग्राफी विशेष रूप से उल्लेखनीय है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रावली

महंगा प्रयोग : पिछले साल दिसंबर में ब्रिटेन के पेनली नामक स्थान पर एक जीवन रक्षक नौका ही डूब गई और उस पर सवार कप्तान सहित सभी नौ व्यक्ति डूब गए. अब वहां इस नई जीवन रक्षक नौका 'मेबल ऐलिस' को जिस का मूल्य लगभग साढ़े तीन लाख पौंड है, पानी में उलटा कर के परीक्षण किया जा रहा है जिस से भविष्य में ऐसी दुखद घटना न घटे. इस परीक्षण का सारा खर्च क्रैंब्रिज के एक करोड़पति डेविड राबिनसन द्वारा उठाया गया.

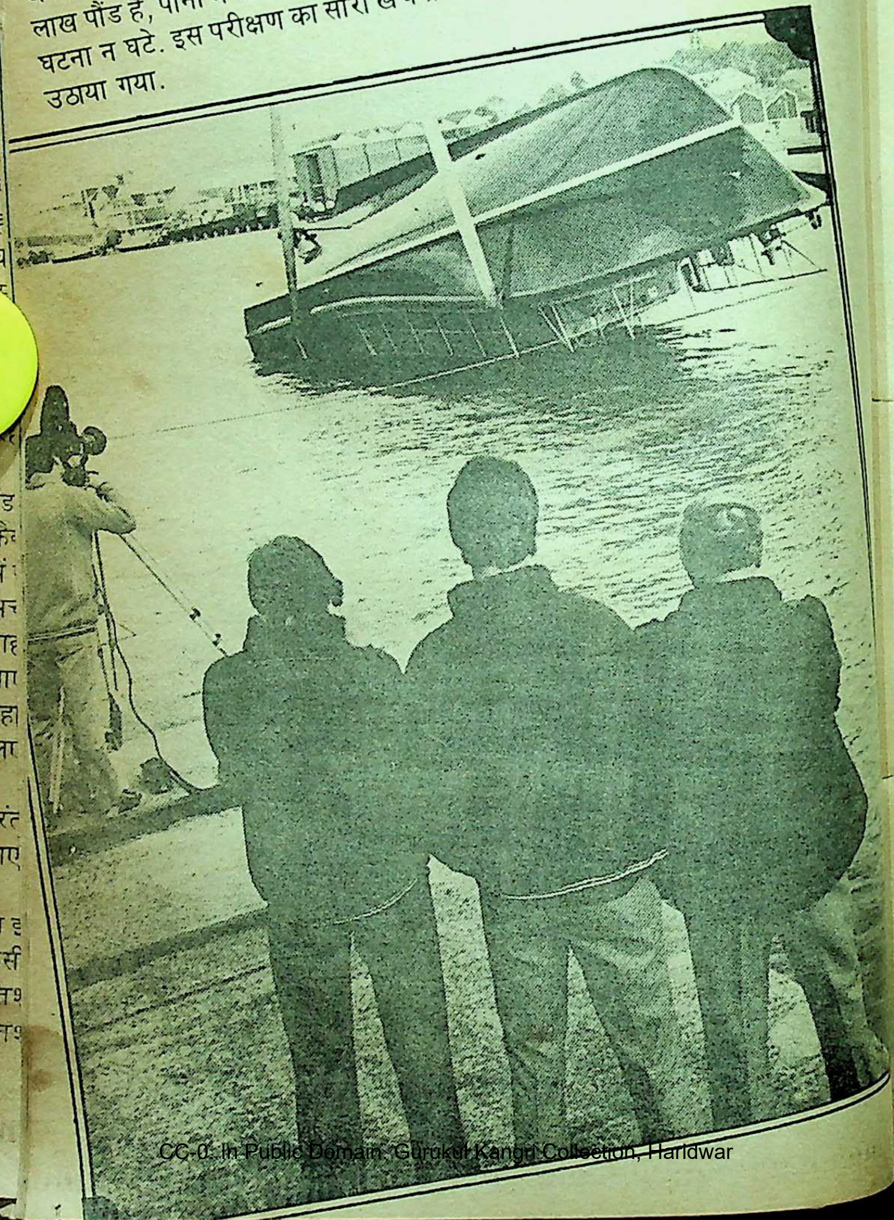

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिनय में परिवर्तन : ब्रिटेन के सिनेमा दर्शकों के जानेमाने स्टंटबाज लेडस कालिस ने अब अपने अभिनय में एक बड़ा भारी परिवर्तन करने का निर्णय किया है. अब वह प्लिमथ स्थित पैलेस थिएटर में 'सिडरैला' नाटक में राजकुमार चार्मिंग की भूमिका करेंगे. उल्लेखनीय है कि यह भूमिका अभी तक महिलाओं द्वारा की जाती रही. इस बारे में लेडस का कहना है कि उन्हें लोगों को आश्चर्यचकित करने में मजा आता है.

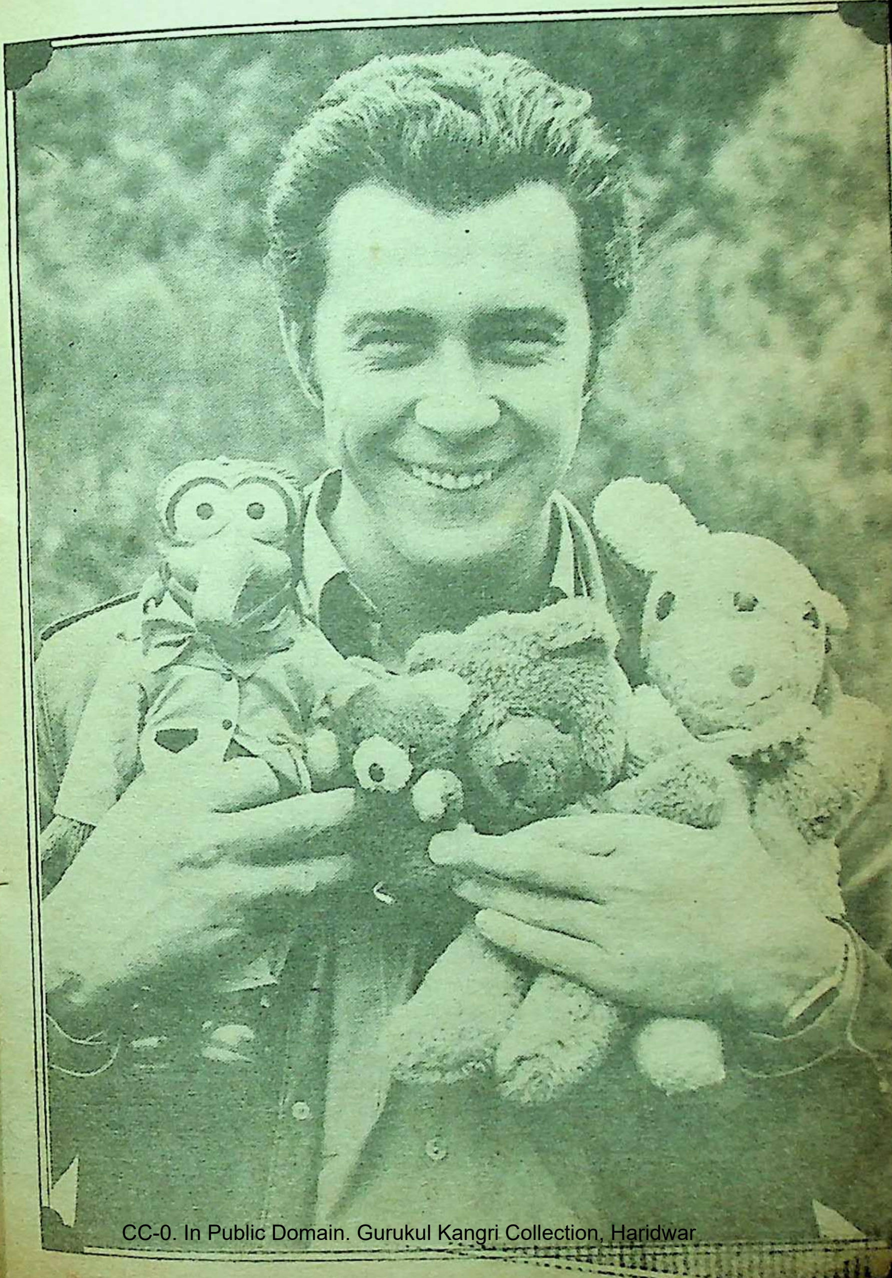

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

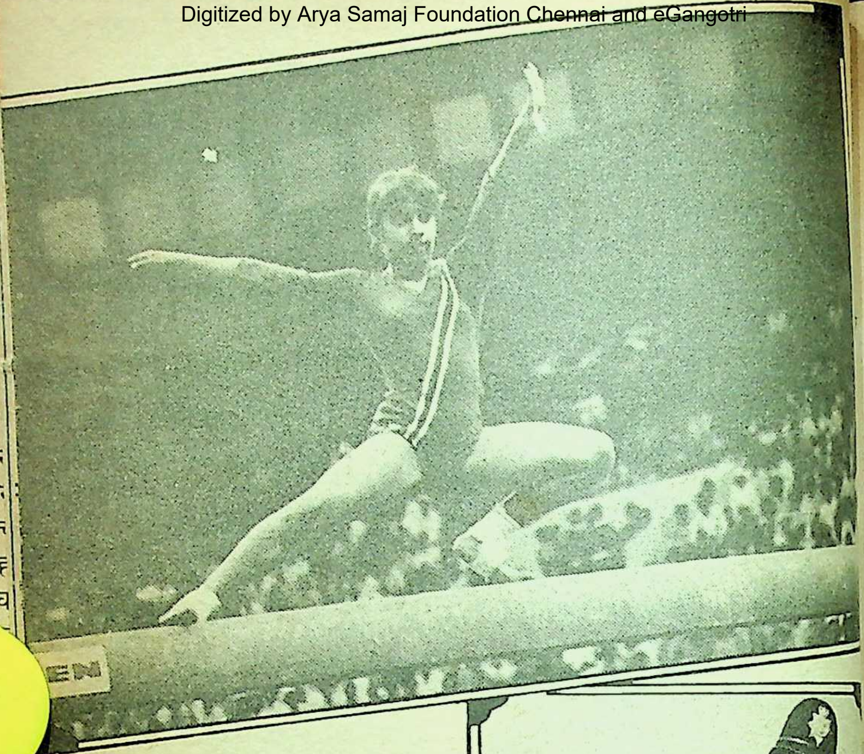

जिम्नास्टिक की स्वर्ण पदक विजेता महिला : महाराष्ट्र की संजीवनी करंदीकर को 21 अक्तूबर, 1982 को दिल्ली के इंद्रप्रस्थ स्टेडियम में आयोजित राष्ट्रीय महिला खेल महोत्सव में कसरती खेलों (जिम्नास्टिक) में स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ. इन्होंने व्यक्तिगत चैंपियनशिप जीत कर राष्ट्रीय जिमनास्टिक चैंपियन का खिताब भी प्राप्त किया.

लंबाई के कारण चर्चित : ब्रिटेन के 22 वर्षीय जान ब्लाट कुछ समय पहले ही पुलिस की नौकरी में आए हैं. नौकरी में वह भले ही नए हों, पर अपनी छः फुट सात इंच की लंबाई के कारण वह बहुत चर्चित हो गए हैं.

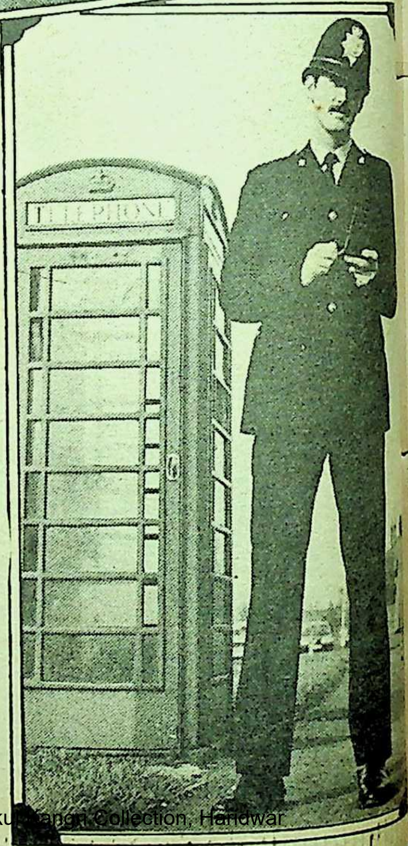

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरसिल्क

सरसिल्क कपड़े जो आपके
दिल की बात कहतें हैं

सरसिल्क – यह हैं खुशी
के रंग, आपकी जिन्दगी
की गति के संग । कोमल
और शीतल यह है
सरसिल्क के कपड़े ।
सरसिल्क १००%
पोलीयस्टर "टेक्सपो"

सरसिल्क
सूटिंग्स, शर्टिंग्स और
ड्रेस मटीरियल्स

बिक्री एजेंट

• **मैसर्स बॉम्बे ट्रेडिंग कं. प्रा. लि.**, कटरा अशरफ़ी, चांदनी चौक, दिल्ली • **मैसर्स तुलसीदास कनोरिया एण्ड कं.**, २-४ जाम्बुलवाड़ी (पूर्व), पहली मंजिल, कालबादेवी रोड, बम्बई-४०० ००२ • **मैसर्स डागा ब्रदर्स**, ४३ सी, मित्तल टावर, २१०, नरीमन पॉइंट, बम्बई • **मैसर्स ओमेगा इंडस्ट्रियल कारपोरेशन**, दूसरी मंजिल, २८, धरमसिंह मार्केट, अमृतसर-१४३ ००१ • **मैसर्स अश्विनी कुमार एण्ड कं.**, ४८६, पन्नालाल बेनर्जी लेन (फ़ैन्सी लेन), छठी मंजिल, कलकत्ता-७०० ००१ • **मैसर्स हरीश एण्ड कं.**, महता मार्केट, जोधपुर-३४२ ००१ • **मैसर्स ओरियन्टल एन्टरप्राइज़िज़ एण्ड एजेंसीज़**, इण्डिया मशीनरी बिल्डिंग, दूसरी मंजिल, एग्जीबिशन रोड, पटना-८००००१ • **मैसर्स एस. नहाटा ब्रदर्स**, बाबू बाजार, दूसरी मंजिल, गौहाटी (असम) • **मैसर्स रथी ऐण्ड कं.**, मित्रा कुंज, पहली मंजिल, ८१-ए, सैंट्रल एविन्यू रोड, गांधी बाग, नागपुर-२ • **मैसर्स केजरीवाल ट्रेडिंग कारपोरेशन**, विश्वभर हाउस, तीसरी मंजिल, २५/३२ ए., कराची खाना, कानपुर-१.

ASP/SS/822/HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रजि. नं. 6502/60 डी (सी)-104

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

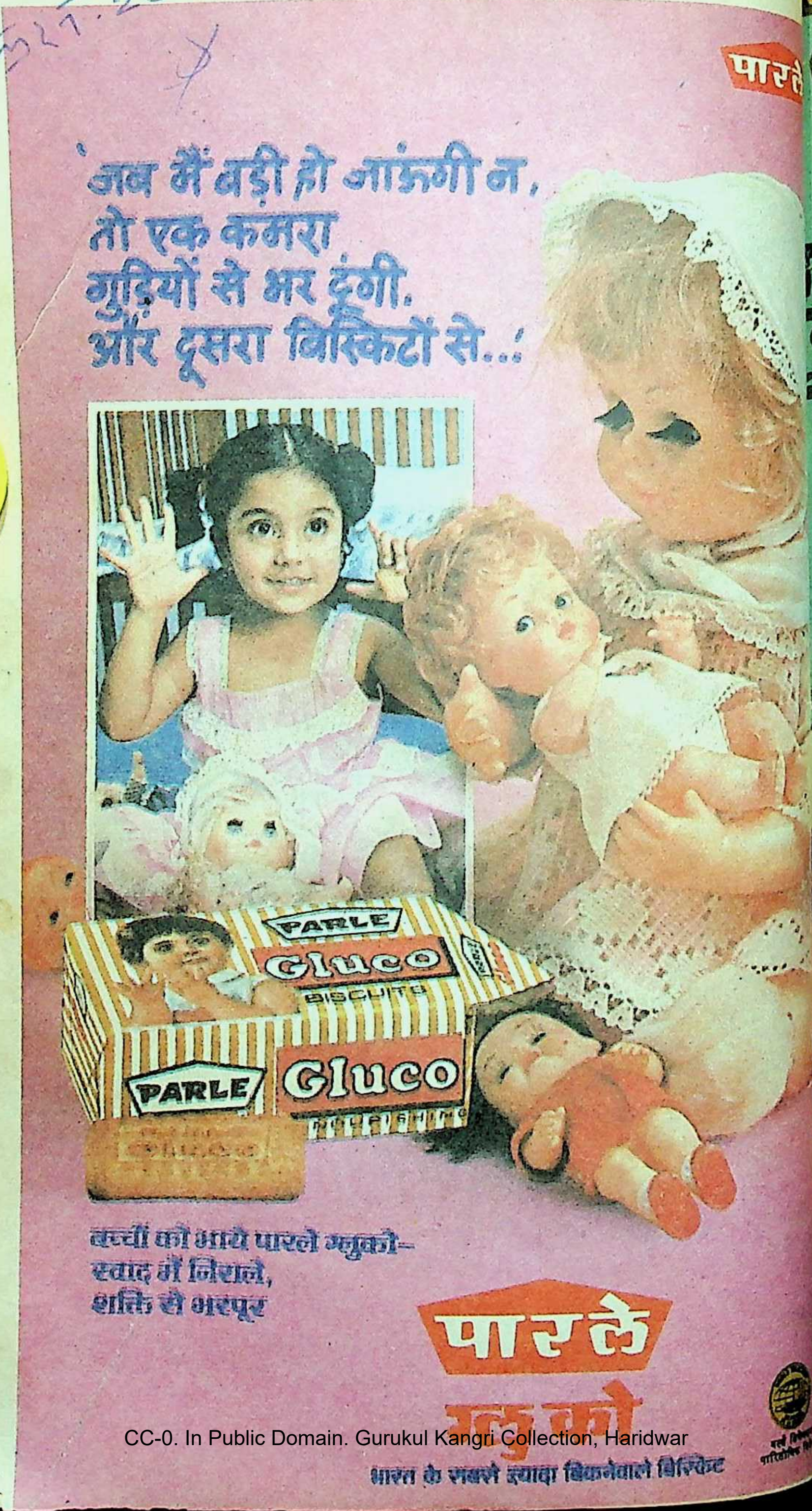

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

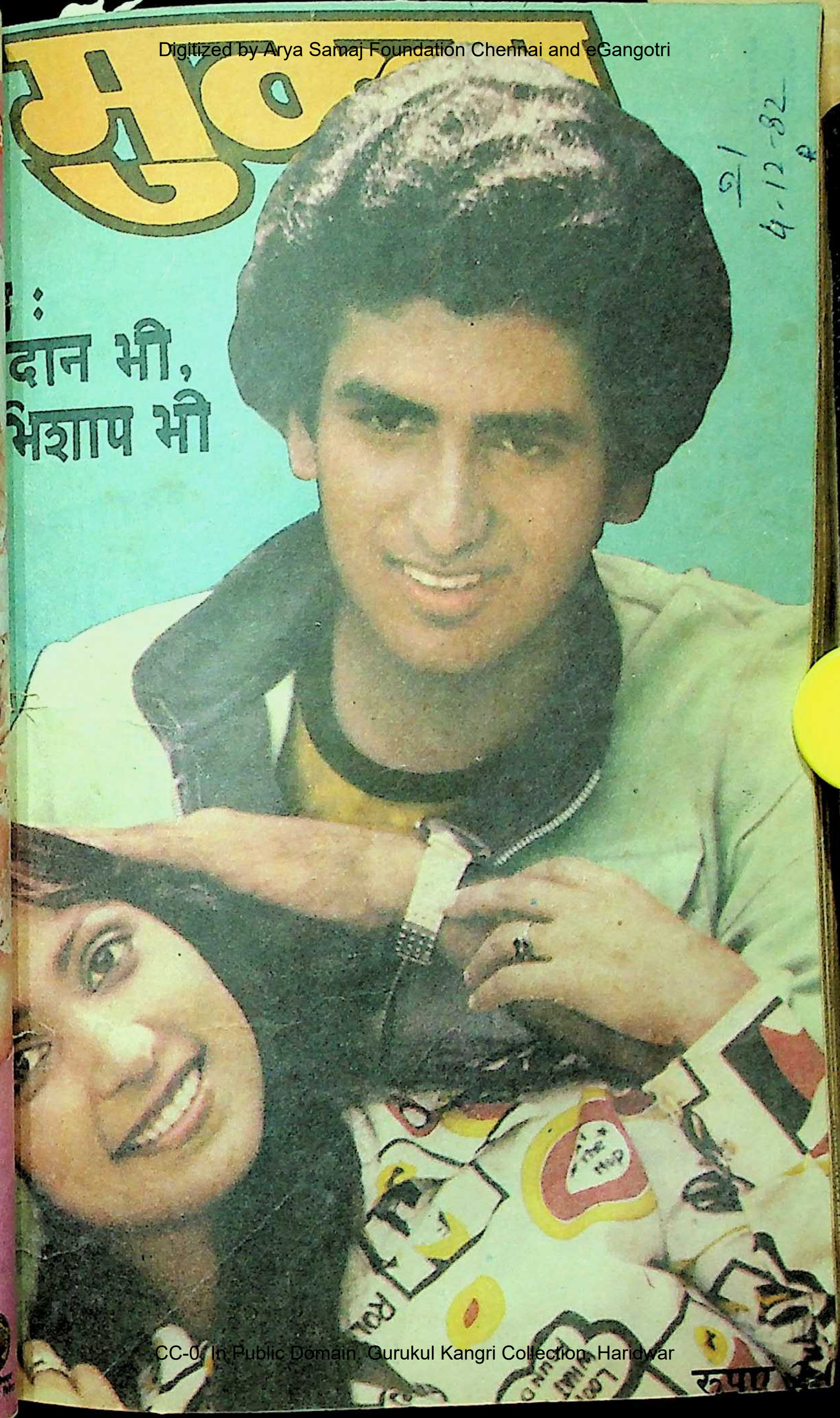

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Sonotone

where musical fantasy becomes music fantastic

on pre-recorded STEREO CASSETTE TAPES

फिल्मी गीत और धुनें

हवाईयन गिटार और शहनाई पर हिन्दी, सिंधी और अंग्रेजी डिस्को, पंजाबी गीत, शास्त्रीय, मजाकिया, बंगाली, राजस्थानी, हरयाणवी और भोजपुरी गीत

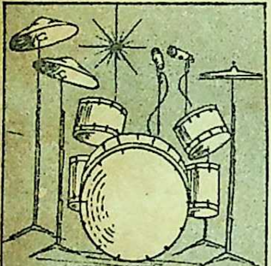

गजलें कव्वालियां

कव्वालियां:
जानी बाबू और प्रभा भारती

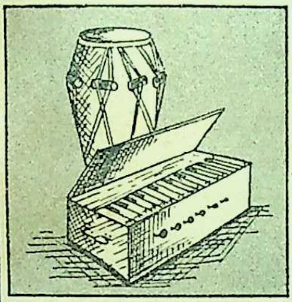

गजलें:
जसपिन्दर नरूला, सलाउद्दीन अहमद, गुलाम अब्बास और शब्बीर हुसैन (पाकिस्तान)

नर्सरी राईम्स चुनमुन कविता

सभी मुख्य म्यूजिक स्टोरों पर उपलब्ध

भजन, शब्द गुरबाणी

खुदरा मूल्य 25 रुपये कर अतिरिक्त

नक्कालों से सावधान खरीदते समय सोनोटोन का ट्रेड मार्क देखें।

उत्पादक:
सरस्वती इलेक्ट्रोनिक्स, नयी दिल्ली

व्यापारिक पूछताछ:
अल्फा रेडियो एण्ड टेलीविजन कंपनी
116, लाजपत राय मार्किट, दिल्ली - 110006

वितरक:
दिल्ली: इलेक्ट्रोनिक्स कोर्नर, 154 पालिका बाजार,
पंजाब: अल्फा इलेक्ट्रोनिक्स, बाजार माई सेवान, अमृतसर।
मध्य प्रदेश: सेल मोर, 9 ... मार्किट, इन्दौर संगम रेडियो ... शारदा चौक, रायपुर

इसके अलावा लिस्ट अपने नजदीकी म्यूजिकल स्टोर से लें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कर्कश और दानेदार मंजन
आपके मसूढ़ों और दांतों को
नुकसान पहुंचा सकते हैं..."

कोलगेट टूथ पाउडर से अपने दांतों और मसूढ़ों की सुरक्षा कीजिये – और सांस की दुर्गन्ध भी रोकिए!

कोलगेट टूथ पाउडर अति सूक्ष्म और सफ़ेद है। यह कोमलता के साथ आपके मसूढ़ों की मालिश करता है, जब कि इसका पालिश करनेवाला तत्व आपके दांतों पर से मैल की परत हटाता है, इन्हें ज्यादा साफ़ और ज्यादा सफ़ेद बनाता है। कोलगेट भरपूर झागदार होने के कारण आपके दांतों के बीच की जगहों में घुसकर दुर्गंध और दंत क्षय पैदा करनेवाले कीटाणुओं को नष्ट कर देता है और सांस की दुर्गंध खत्म हो जाती है।

कोलगेट टूथ पाउडर से अपने परिवार को आधुनिक दंत संरक्षण दीजिये। उन्हें इसका पेपरमिंट का ठंडा स्वाद बेहद पसंद आयेगा।

TP.G.31HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

दिसंबर (प्रथम) 1982
अंक : 392

कला · क्रांति · कर्मठता

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

लेख

प्रेम वरदान भी...	18	संतोषकुमार
पुष्कर मेला	38	ज्योतिर्मय
पुष्कर मेले में...	52	प्रतिनिधि
सिसिली	60	अजय सिन्हा
साधना खोटे	96	स. खान
रद्दी अखबार	99	प्रतिनिधि
अमरीकी राजदूत	109	मृदुला हालन
नाट्य समारोह	118	कृष्णकुमार
लुई ब्रेली स्कूल	142	शिवराम शुक्ल

कथा साहित्य

डायन	24	चंद्रशेखर दुबे
पूजा का दीपक	69	राधा अग्रवाल
पराजित आस्था	102	पुष्पा सक्सेना
टेलीफोन का ताला	128	सिंधु गोयल
सपने अपनेअपने	134	चंद्रा र. देवत

कविताएं

याद के बादल	35	इसाक 'अश्क'
फिर ऐसे इक बार	50	इब्राहीम 'अश्क'
झील सा यौवन	83	माया शबनम

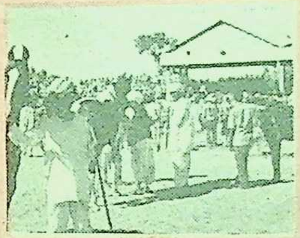

स्तंभ

संपादक के नाम	6	85	ये लड़केलड़कियां
मुक्त विचार	14	88	दास्ताने दफ्तर
ये शिक्षक	51	90	परदे के आगे
सावधान	59	98	शाबाश
धूपछांव	66	115	पिछले छः महीने
दुनिया भर की	76	124	युवा गतिविधियां
मैं क्या करूं	80	132	खेल समीक्षा

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55. दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस म.प.प्रा.लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मुक्ता नाम रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है. मुक्ता में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. द्वारा सुरक्षित हैं. © **दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. 1982**

मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपए, एक वर्ष : 72.00 रुपए, विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 अमरीका में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 400.00 रुपए. यूरोप में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 325.00 रुपए. **मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान** : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. **व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग** : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001. **बंबई कार्यालय** : 79ए, मित्तल चैंबर्स, नारीमन पाइंट, बंबई-400021. **मद्रास कार्यालय** : अपार्टमेंट नंबर 342, छठी मंजिल, 31/2 ए पैंथल रोड, खलील शिराजी एस्टेट, मद्रास-600008.

मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम

रेलों के संबंध में आप के विचार (मुक्त विचार/नवंबर/प्रथम) सोलह आने सही हैं. देश और जनता के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाना पुलिस का परम कर्तव्य है. अभी हाल ही में, दुर्गापूजा के कुछ दिन पहले, मैं तिनसुकिया मेल से जा रहा था. यह रेल गाड़ी जमालपुर से किऊल के बीच कहीं नहीं रुकती है, लेकिन धरहरा के पास दो लड़के डव्वे का ढेर सारा तार काट कर जंजीर खींच कर भाग गए. रेल रुक गई.

उसी डव्वे में एक सिपाही भी था. आरक्षित डव्वे के रेल सहायक ने उस सिपाही से उन लड़कों को पकड़ने को कहा. लेकिन वह गाड़ी से उतरा ही नहीं. तार निकाल लिए जाने के कारण डव्वे के यात्रियों को मुगल सराय के बाद ही बिजली प्राप्त हुई. सिपाही ने अपना कर्तव्य नहीं निभाया. आखिर डव्वे में उसे साथ भेजने का और औचित्य क्या है?

—प्रकाशनारायण भट्टाचार्य

*

रेलों के संबंध में आप की टिप्पणी पढ़ी. एक बार मैं फुलेरा स्टेशन पर गाड़ी के दरवाजे के पास खड़ा हुआ बाहर देख रहा था कि इतने में एक जेबकतरे ने उतरने वाले यात्री की ऊपर की जेब से कुछ रुपए निकाल लिए. मुझ पर नजर पड़ते ही उस ने मुझे घूर कर देखा और पास ही खड़े पुलिस कर्मचारी से बातें करने लगा. मैं कुछ करने की सोच ही रहा था कि तभी गाड़ी चल पड़ी. उधर वह पुलिस कर्मचारी भी उसी डव्वे में चढ़ कर सामने बैठ गया और मुझे घूरने लगा. म कह रहा हो अगर ज्यादा चूंचपड़ की अपनी मंजिल के बजाए थाने पहुंच जाओ

—विक्रमसिंह सिसो

*

रेल व रेल प्रशासन के संबंध मे कहना बिलकुल सही है कि पुलिस अपराधी दोनों मिल कर यात्रियों को लूट जब इस तरह की कोई घटना घटती है सरकार यह कहती है कि जल्द कोई उठाया जाएगा. परंतु वास्तविकता कुछ ही होती है.

पुलिस का काम शांति और व्य कायम करना है परंतु वर्तमान स्थि देखते हुए तो यही लगता है कि सिर्फ अ को बढ़ावा देना पुलिस का काम रह ग रेलगाड़ियों में पुलिस की तैनाती कर करना एक ही बात है. पुलिस यात्रि सुरक्षा प्रदान करने के बजाए अपराधि अधिक सहायक रहती है.

यात्रा के दौरान अगर कोई लुटेर के यात्रियों को लूट रहा है तो आसपा अन्य यात्री अपराधी के प्रति रवैया सख्त अपनाते. डव्वे में मौजूद पुलिस वाले

'संपादक के नाम' के लि मुक्ता की रचनाओं पर आप विचार आमंत्रित हैं. साथ ही देश के राजनीतिक, सामाजि आर्थिक आदि विषयों पर भी अ विचार इस स्तंभ के माध्यम से सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक पूरा नाम व पता होना चाहिए, वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग,
मुक्ता,
ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वक्त में मूक दर्शक बने रहते हैं. अगर कोई पुलिस से अपराधी को पकड़ने के लिए कहे तो वे जवाब देते हैं, ये हमारे क्षेत्र में नहीं आता. निश्चय ही अगर यही हाल रहा तो स्थिति बहुत ज्यादा बिगड़ जाएगी?

—गुरबीरसिंह चावला

*

रेलों पर आप के विचार सामयिक रहे. आजकल यात्रा करने में भारी कठिनाइयों का सामना करना पडा रहा है. गाड़ी के भीतर भी सुरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है. पुलिस अपना कर्तव्य नहीं निभाती. अपराध व अपराधी की जानकारी होने के पश्चात भी पुलिस वाले चुप्पी साधे रहते हैं.

भारत के अधिकतर छोटे रेलवे स्टेशन निर्जन स्थानों पर स्थित हैं, जहां से आबादी काफी दूरी पर है. वहां संचार तथा बिजली की व्यवस्था नहीं होने से लूटमार करने वालों को और ज्यादा मौका मिलता है.

—गुरविंदरसिंह

*

'कम्यूनिस्ट तानाशाही चालू है' (मुक्ता विचार/नवंबर/प्रथम) पढ़ कर लगा कि कम्यूनिस्ट शासन व्यवस्था पूर्णतः बेकार है. मैं राजनीतिशास्त्र का विद्यार्थी हूं. जब कभी भी मैं ने कम्यूनिस्ट शासन पद्धति के सिद्धांत का अध्ययन किया है, तब यही लगा कि इस शासन पद्धति से अच्छी और कोई पद्धति नहीं होगी. लेकिन विश्व में इस शासन प्रणाली के देशों की स्थिति देख कर तो जाहिर है कि शायद इस से बदतर कोई शासन प्रणाली नहीं है.

पोलैंड में जो कुछ हुआ, वह आश्चर्यजनक नहीं है. कम्यूनिस्ट प्रारंभ से कर अब तक सिवा दमन और तानाशाही के कुछ भी नहीं दे सके. 'मजदूरो एक हो' का नारा लगा कर मजदूरों को गुलाम बनायाँ जाता है.

काफी अरसे से भारत में भी समाजवादी विचारों का व्यापक प्रचार किया जा रहा है. पिछले कुछ वर्षों में तो इस में काफी तेजी आई है. इस का एक कारण निःशुल्क या कम मूल्य पर प्राप्त सोवियत पुस्तकों का जबरदस्त प्रभाव है. हमें इन पुस्तकों को कम मूल्य में प्राप्त करने का मोह त्यागना चाहिए.

—अशोक

*

'कशमीरी सिरदर्द बरकरार' (मुक्ता विचार/अक्तूबर/द्वितीय) के संदर्भ में कहना अनुचित न होगा कि जहां (अगर अब्दुल्ला भारत के लिए सिरदर्द थे, तो वह नजरबंद क्यों रहते) वहां उन

मुक्ता

स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता में प्रकाशित होने वालें विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने रोचक अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजने के लिए अलगअलग लिफाफा प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है. एक ही लिफाफे में एक से अधिक स्तंभों में प्रकाशन योग्य सामग्री भेजी जा सकती है.

सामग्री भेजते समय स्पष्ट अथवा सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. साथ ही यह भी लिख कर भेजें कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है. भेजी हुई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में और रोचकतापूर्ण होनी चाहिए.

सभी स्तंभों के लिए सामग्री एक ही लिफाफे में रख कर इस पते पर भेजें: संपादन विभाग, मुक्ता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

डाक्ट... हैं. यदि... विधेय... सकते... राजनी... में अ...

(नवंब... काफी... विका... जो म... कामो... चाहि... देशों... पड़ेग... देशों... कर... वाली... दे.

प्रथम... जैसे... एवं... लेख... हर... नेपाल... कहा... और... जाए... भार... लिए...

भारत... प्रभुस... कि ज... नेपाल... अन्य... उठत... मुक्त...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर फारूक अब्दुल्ला भी उन से कम नहीं हैं. यदि फारूक अब्दुल्ला चाहते तो 'पुनर्वास विधेयक' को समाप्त कर तारीफ के पात्र बन सकते थे. परंतु कुरसी की चाह व क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थों के कारण वह ऐसा करने में असमर्थ रहे.

—आशुतोष पाराशर

*

मशीनी मानव से संबंधित लेख (नवंबर/प्रथम) अच्छा लगा. आज विज्ञान काफी तरक्की पर है. किंतु मशीनी मानव का विकास ऐसे कार्यों के लिए ही करना चाहिए जो मानव के लिए बहुत मुशकिल हों. ऐसे कामों के लिए मशीनों का उपयोग नहीं करना चाहिए, जिस से बेरोजगारी बढ़े. विकसित देशों में तो इस का कोई ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ेगा, परंतु विकासशील व विकासोन्मुख देशों के लिए ऐसा विज्ञान जन विरोधी बन कर रह जाएगा. हमें देखना होगा कि आने वाली पीढ़ी विज्ञान को अभिशाप की संज्ञा न दे.

—कृष्ण लाल

*

लेख 'भारत और भूटान' (नवंबर/प्रथम) पढ़ कर मुझे आश्चर्य हुआ कि भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में भी उपनिवेशवादी एवं साम्राज्यवादी विचार रखने वाले लोग हैं. लेख में सब से हास्यास्पद बात तो यह है कि हर जगह भूटान के साथ उदाहरण के रूप में नेपाल का भी जिक्र किया गया है. एक जगह कहा गया है कि भूटान को पूर्ण रूप से नेपाल और बंगला देश की तरह मुक्त कर दिया जाए अथवा सिक्किम के समान भूटान को भी भारत के संघीय राज्य में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया जाए.

शायद लेखक को यह मालूम नहीं है कि भारत की तरह ही नेपाल भी एक स्वतंत्र और प्रभुसत्ता संपन्न राष्ट्र है (असलियत तो यह है कि जब भारत अंगरेजों का गुलाम था, तब भी नेपाल स्वतंत्र था) इसी लिए उस के किसी अन्य देश से मुक्ति पाने का सवाल ही नहीं उठता. लेखक को यह भी जानकारी होनी चाहिए कि नेपाल एक गटनिरपेक्ष राष्ट्र है और उस के लिए सभी पड़ोसी देश एक समान हैं. चाहे वह भारत हो या चीन, बंगला देश हो या पाकिस्तान. भारत को यह नहीं सोचना चाहिए कि सभी छोटे पड़ोसी देश उस के गुलाम हैं और उस की हर बात चुपचाप मानेंगे.

—प्रभाकर खड़का

*

'छूपछांव' स्तंभ (नवंबर/प्रथम) 'छात्र का करिश्मा' को सर्वोत्तम कतरन ठहराना बिलकुल ही गलत एवं बेबुनियाद है. हकीकत यह है कि पिछले दो वर्षों में मेरठ विश्वविद्यालय में जितनी शांति, अनुशासन व ईमानदारी से परीक्षाएं आयोजित की जा रही हैं, उतनी शायद देश के किसी भी अन्य विश्वविद्यालय में आयोजित नहीं हो रहीं. आज स्थिति यह है कि नकल कर के उत्तीर्ण होने वाले छात्रों ने मेरठ विश्वविद्यालय से परीक्षा देना ही छोड़ दिया है.

—सुभाषचंद अग्रवाल

*

वन्य जीवों से संबंधित लेख (अक्तूबर/द्वितीय) अच्छा लगा. जब उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री विश्वनाथ प्रतापसिंह थे, तब डाकुओं ने शिकार खेलने गए उन के बड़े भाई की, जो इलाहाबाद उच्च न्यायालय में न्यायाधीश थे, जंगल में हत्या कर दी थी. हत्या क्यों हुई, यह अलग बात है, पर वह शिकार खेलने गए थे यह तो निश्चित है. क्या इन उच्च पदस्थ लोगों को वन्य पशुपक्षियों का शिकार करने की छूट है? पर जब इन्हीं के समक्ष कोई ऐसा अभियुक्त पेश किया जाएगा, जिस पर अवैध रूप से शिकार करने का आरोप लगा होगा तो ये उन्हें जरूर दंडित करेंगे. क्या यही वन्य प्राणियों की रक्षा है?

—धर्मेश यशलहा 'प्रिय'

*

लेख 'बाल मजदूर कितने मजबूर' (अक्तूबर/द्वितीय) में बाल श्रमिकों की समस्या का सटीक चित्रण किया गया है.

समयसमय पर इस संबंध में कई कानून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र की सुखसमृद्धि के लिए तालाबंदियां

निस्संदेह, हर कर्मचारी का यह मूलभूत अधिकार है कि यदि वह कहीं काम करना पसंद नहीं करता तो न करे. इसी प्रकार किसी भी कारखाने के मालिक का यह अधिकार है कि वह अपना कारखाना चालू रखना नहीं चाहता तो न रखे, किंतु आधुनिक समाज का मिश्रित और जटिल ढांचा इस प्रकार के मनमाने व्यवहार की अनुमति नहीं देता.

अतीत काल में किसी एक कारखाने में मुट्ठी भर लोग काम किया करते थे. तब उस कारखाने के चालू रहने अथवा बंद हो जाने से उस कारखाने के कर्मचारियों अथवा मालिक के अतिरिक्त अन्य किसी पर प्रभाव नहीं पड़ता था. आज उत्पादन का हर भाग एक व्यापक जालसूत्र में एकदूसरे से इतना अधिक संबद्ध है कि चाहे किसी कारखाने में कुछ सौ कर्मचारी ही काम करते हों, किंतु यदि वह कारखाना बंद हो जाता है तो उस से बहुत से अन्य प्रतिष्ठान और व्यापारगृह भी बंद हो जाते हैं. इस प्रकार न केवल हजारों कर्मचारी बेकार हो जाते हैं, अपितु बहुत से लोगों को उपभोग्य वस्तुओं से भी वंचित होना पड़ता है.

उदाहरण के लिए, यदि कोई कपड़ा मिल बंद हो जाए तो कपास ओटने और धुनने वाले कारखानों, मिल तक माल लाने ले जाने वाले लोगों, रंग आदि कच्चे माल की आपूर्ति करने वालों, छपाई और पैकिंग का काम करने वालों एवं बिजली तथा पानी के सप्लायरों के पास काम नहीं रहेगा. इस का बैंकों, डाकघरों तथा देश भर में कपड़ों के वितरकों तथा दुकानदारों पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा. कपड़े की कमी से बाजार में इस के मूल्य बढ़ जाएंगे और उस का सब से बुरा असर पड़ेगा खरीदार पर.

यही नहीं, सरकार को भी उत्पादन शुल्क, बिक्री कर और आय कर में हानि होगी. और यह कोई छोटीमोटी राशि नहीं होगी, बल्कि कुल लाभ के लगभग 80 से 90 प्रतिशत के बराबर होगी. सरकार इस हानि को या तो और अधिक टैक्स लगा कर पूरा कर सकती है अथवा किन्हीं सेवाओं में कमी कर के. श्रमिकों के वेतन में जो हानि होगी, उस से माल की मांग अथवा बिक्री में कमी हो जाएगी. कारखाने के मालिक को होने वाली क्षति से उद्योग को धन मिलने में रुकावट पड़ेगी.

रेलों, बंदरगाहों, जहाजों, डाकघरों, विद्युत तथा जल प्रदाय संस्थानों, हवाई कंपनियों, बस सेवाओं और तेलशोधक कारखानों आदि किसी भी सार्वजनिक उपयोग के क्षेत्र में हड़ताल होने से और भी अधिक हानि होती है, इस से राष्ट्र के जीवन में गतिरोध आ जाता है. श्रमिकों, श्रमदाताओं, उपभोक्ताओं, प्रशासन और किसकिस को नुकसान नहीं उठाना पड़ता?

भारत में आज श्रमिकों और श्रमदाताओं के आपसी झगड़ों को न्यायालय द्वारा निपटाने की एक सुगठित और निष्पक्ष व्यवस्था मौजूद है. फिर व्यर्थ में हड़तालों और तालाबंदियों की क्या आवश्यकता?

आखिर, श्रमिकों के झगड़े किस लिए होते हैं? अधिक लाभ तथा सुविधाएं प्राप्त करने के लिए ही तो. उचित (अन्य लोगों को मिलने वाले वेतनों की दृष्टि से) वेतनों और स्वास्थ्य बीमा, भविष्य निधि तथा सेवा पुरस्कार आदि आधारभूत सुरक्षाओं समेत आवश्यक सुविधा की फैक्टरी कानूनों में पहले से ही व्यवस्था है. लड़ाई तो और अधिक लाभ, और अधिक सुविधाएं, और वास्तव में और अधिक पैसा हासिल करने के लिए है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और हड़तालों पर रोक लगाओ

अधिकतर हड़तालें मजदूर नेताओं के आपसी विरोध के कारण होती हैं. ये प्रायः बाहर के राजनीतिक व्यक्ति होते हैं और यह सिद्ध करने के प्रयत्न में रहते हैं कि किस का अधिक बड़ा साम्राज्य, अधिक बड़े समूह पर नियंत्रण है और कौन उन्हें अपने इशारे पर नचा सकता है. अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे श्रमिकों एवं समाज को होने वाले भारी नुकसानों तथा कष्टों की भी परवा नहीं करते.

किसी भी आधुनिक समाज में आर्थिक विवादों को हल करने के लिए बलप्रयोग, हिंसा अथवा जोरजबरदस्ती का सहारा नहीं लिया जा सकता. न्याय पाने के लिए कानूनी व्यवस्था का ही सहारा लिया जाना चाहिए. इसी प्रकार श्रमिकों और श्रमदाताओं के आपसी झगड़ों को हड़तालों, मोर्चों, धरनों, घेरावों, प्रबंधकों पर हमलों अथवा जवाबी कार्यवाही के रूप में तालाबंदियों के जरिए नहीं, बल्कि अदालती अथवा पंच फैसले द्वारा ही निपटाया जाना चाहिए.

निस्संदेह, श्रमिकों को अपना श्रम न बेचने का मूलभूत अधिकार है, किंतु क्या इस अधिकार से उसे कारखाने के मालिक को केवल श्रमिकों द्वारा निश्चित की गई शर्तों पर ही अपना कारखाना चलाने के लिए बाध्य करने का अधिकार भी प्राप्त हो जाता है?

यह सही है कि पश्चिम के किसी भी लोकतंत्री देश में अभी तक इस विषय में न्यायालय अथवा पंच द्वारा फैसला कराने की व्यवस्था को लाजिमी नहीं ठहराया गया और न समाजवादी देशों की तरह हड़तालों और तालाबंदियों पर रोक लगाई गई है, किंतु स्थिति तेजी से बदल रही है. औपनिवेशिक साम्राज्यों में आवश्यकताओं से अधिक उत्पादन होने और सस्ता तेल मिलने की वजह से ही वहां हड़तालों और तालाबंदियों की छूट दी जाती है मानो ये बातें कारखानों में रोजरोज की ऊबाऊ मेहनतमजदूरी और काम से हट कर मनबहलाव का कोई स्वस्थ साधन हों.

किंतु आज आसमान को छूने वाली कीमतों पर निरंतर बढ़ती हुई बेरोजगारी ने पश्चिमी देशों को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सामूहिक सौदेबाजी, हड़तालों और तालाबंदियों की भूमिका और औचित्य पर फिर से विचार करने के लिए बाध्य कर दिया है. वह दिन दूर नहीं जब उन्हें उत्पादन और रहनसहन के स्तर को बनाए रखने के लिए हड़तालों और तालाबंदियों का खात्मा करना होगा.

न्यायालय का कार्य साधारणतः मंद गति से चलता है, किंतु जल्दी ही फैसले करवाने के लिए काफी संख्या में नई अदालतें और नए जज भी तो नियुक्त किए जा सकते हैं. इस देश में कानूनी प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है. हड़तालों और तालाबंदियों से होने वाली हानियों के मुकाबले इन नई अदालतों पर बैठने वाला खर्च बहुत कम होगा.

किसी भी कारखाना मालिक को तालाबंदी कर के अपने माल का उत्पादन और सेवाएं रोकने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए.

किसी भी श्रमिक को अपने श्रम से इनकार कर के उत्पादन को भंग करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए.

● न हड़तालें, न तालाबंदी ● अदालती फैसला लाजिमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बने, लेकिन अभी तक बाल मजदूरों की प्रथा कायम है. इसी से स्पष्ट है कि कानून कितना पंगु है.

राजनीतिबाज व अन्य समाज सुधारक आज भाषण तो लंबलंबे देते हैं, लेकिन इस समस्या को दूर करने के समय पीछे हट जाते हैं.

बच्चों से कार्य करवाना गलत नहीं है. लेकिन उन से जबरदस्ती उन की क्षमता से अधिक कार्य लेना अनुचित है जिस तरीके से इन बच्चों का शोषण किया जाता है, इन पर अत्याचार किया जाता है, यह भी सरकार व कानून पर करारा तमाचा है.

अतः सरकार को चाहिए कि वह बाल श्रमिकों के विकास के लिए लफ्फाजी नहीं, सचमुच कार्य करे. इन के कार्य करने का निश्चित समय, वेतन, मजदूरी व अन्य सुविधाएं निश्चित करे. इन बातों का उल्लंघन करने वालों को कड़ी से कड़ी सजा देने में हिचकिचाए नहीं. तभी इन की समस्याओं का समाधान होगा.

—ललित गर्ग

*

'जिया का कसता शिकंजा' लेख (अक्तूबर/प्रथम) में पाकिस्तान का जो चित्र उभरा है क्या वैसा ही चित्र भारत के भविष्य का नहीं बन रहा है? किस तरह यहां लोकतंत्र की आड़ में एकतंत्र अपनी जड़ें जमा रहा है, यह सर्वविदित है. यदि ऐसा हुआ तो यह भारत के लिए अंगरेजों की गुलामी से भी ज्यादा शर्मनाक होगा. **—हंसमुख दवे**

लेख 'भारतीय हाकी की मौत' (अक्तूबर/प्रथम) बड़ा ही सामयिक रहा. भारत जैसा देश भी, जिस का राष्ट्रीय खेल हाकी माना जाता है, आज दिग्भ्रमित है. सरकार को चाहिए कि वह भारतीय हाकी की स्थिति में सुधार लाए. ऐसा नहीं होता तो हाकी की जगह क्रिकेट को राष्ट्रीय खेल घोषित कर दिया जाए, क्योंकि आजकल उसी का बोलबाला है.

—ललितकुमार पटेल

लड़कियों से छेड़खानी से संबंधित (सितंबर/द्वितीय) और उस पर पाठकों प्रतिक्रियाएं पढ़ीं. इस के लिए मुख्यतः वि संस्कृति को ही दोषी ठहराया गया है. अ हर बुरी चीज के लिए विदेशी संस्कृति दोषारोपण करने की हम भारतीयों की है. हालांकि हम स्वयं ही इस का अंधानु करते हैं. हमें याद रखना चाहिए कि गां भी, जहां विदेशी सभ्यता का प्रभाव नगण्य ऐसी छेड़खानी होती है. बस तरीके भि कभीकभी तो इसी बात को ले कर गां सिरफुटव्वाल की नौबत आ जाती है. यह है कि जब तक सामाजिक मान्यता वजह से स्त्रीपुरुष के बीच की दूरी कम होगी, स्त्री पुरुष के लिए अजूबा बनी और तब तक यह समस्या खत्म हो ही सकती.

अकेली लड़की के प्रतिकार क कुछ नहीं हो सकता. इस में उस की होने की आशंका ज्यादा रहती है. साम स्तर पर इस का विरोध होना चा सार्वजनिक स्थल पर छेड़छाड़ होते वक्त रह कर अनदेखा करने या मजा लेने के लोगों को एक हो कर बदमाशी का वि करना व अपराधी को तत्काल दंड चाहिए, ताकि भविष्य में उसे छेड़छाड़ का साहस ही न हो.

पर शर्म की बात है कि गलत बातों विरोध करने का साहस हम में है ही अपराध होते देख कर भी चुप, निष्क्रिय भी तो कम अपराध नहीं.

—ह

*

कहानी 'देर आयद दुरुस्त आ (अगस्त/द्वितीय) पर एक पाठक आलोचना पढ़ी. पाठक का मैं बहुत आभा कि उन्होंने मेरी कहानी को पढ़ने में दिखाई और मेरी कुछ कमियों की प्रकाश डाला. पाठक की कुछ बातें तो सही लेकिन सब नहीं.

पाठक का यह कहना कि कहानी फ्लैश बैक में घटनाओं की भरमार कर कहानी बोझिल हो गई, बहुत हद तक सही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी भेजते समय ही इस का आभास मुझे हो गया था, लेकिन कहानी के नायक की गतिविधियां इतनी रोचक थीं कि मैं तय नहीं कर पा रहा था कि किस घटना को शामिल करूं और किसे छोड़ूं? **—रवींद्रकुमार वर्मा**

*

सरकार ने हर चीज का सरकारीकरण कर के अपने पैर इतने फैला लिए हैं कि अब उस से स्थिति संभल नहीं पा रही है. सरकारी कर्मचारी इतने बेईमान हो गए हैं कि बिना गलत काम किए उन का काम ही नहीं चलता. ऐसे में किसी भी जगह ईमानदार व्यक्ति टिक ही नहीं पाते.

चीनी को ही लिया जाए. उचित दर की चीनी देहात में कभी मिलती है तो कभी नहीं. जो मिलती है, उस में चीनी को पानी से भिगो कर बांटा जाता है. यदि किसी से कहा जाए तो कोई सुनवाई नहीं. चीनी ही क्यों, सिंचाई के पानी का मामला ले लें. नहर में एक बार भी पानी नहीं आया. पर सरकारी कर्मचारी की बेईमानी देखिए कि हर किसान को पानी दिया गया लिख कर पैसा दर्ज कर दिया गया.

इस के अलावा न जाने कितनी दिक्कतें प्रशासन के बेईमान कर्मचारियों के कारण जनसाधारण को भुगतनी पड़ती हैं.

—रामफेरसिंह 'दीप' •

मुक्ता के लेखक

पुष्पा सक्सेना

इस अंक में प्रकाशित कहानी 'पराजित आस्था' की लेखिका पुष्पा सक्सेना ने भूगोल में स्नातकोत्तर की उपाधि ली है. वर्तमान में आप शोध कार्य में संलग्न हैं. कहानियों के अतिरिक्त आप सामयिक विषयों पर भी लिखती हैं.

शिवराम शुक्ल

इस अंक में प्रकाशित लेख 'लुई ब्रेली मेमोरियल स्कूल' के लेखक शिवराम शुक्ल मूलतः राजनीतिक और आर्थिक विषयों को अपने लेखन का आधार बनाते हैं. लेखन के अतिरिक्त फोटोग्राफी में भी आप की रुचि है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्त विचार

एशियाई खेलों में अकाली विघ्न

दिल्ली में हो रहे एशियाई खेलों के दौरान शांति भंग करने की अकाली दल की धमकी ने अकाली दल को जो नुकसान पहुंचाया है, वह खालिस्तान की मांग से भी न हुआ होगा. धार्मिक व राजनीतिक मांगों के नाम पर अकाली जिस तरह की मनमानी कर रहे हैं, उस से पहले ही अन्य देशवासी उन से काफी नाराज थे.

फिर भी उम्मीद थी कि अकाली दल यह स्टंट सिर्फ सत्ता में आने के लिए कर रहा है और अकाली सिख वास्तव में वैसे ही देशभक्त हैं जैसे पहले थे. खालिस्तान की मांग भी मजाक में ली जाती थी और यह सोच कर संतोष कर लिया जाता था कि वास्तव में सिख कभी भी इस पर जोर न देंगे.

एशियाई खेलों के समय एकत्र भीड़ को आतंकित करने की घोषणा की इतनी आसानी से अवहेलना नहीं की जा सकती. जरनैलसिंह भिंडरांवाले जैसे आतंकवादियों के होते उपद्रव कराने व बम फेंकने की घटनाओं का हो जाना कोई बड़ी बात नहीं. पंजाब में तो आए दिन सिख आतंकवादी इस प्रकार के हथकंडे अपना ही रहे हैं.

अकालियों की इस धमकी का असर यह हुआ कि हर केशधारी आम जनता की नजर में संदेहास्पद हो गया. दिल्ली के चारों ओर पुलिस ने एक प्रकार से घेरा डाल दिया और अकालियों को दिल्ली न पहुंचने देने के प्रयास में लगभग हर आने वाले सिख की बारीकी जांच की. आम जनता बजाए इस कदम नाराज होने के संतुष्ट ही हुई.

पंजाब से चलने वाली विशेष रेलें र कर दी गईं. दिल्ली आने वाली बसों की सं भी कम करा दी गई ताकि सिख कम से क संख्या में दिल्ली पहुंच पाएं.

एशियाई खेलों का कोई औचित्य हो न हो, लेकिन कोई भी देशवासी यह न चाहेगा कि जब पूरे एशिया के खिलाड़ी व प्रतिनिधि हमारे देश में आए हुए हों, तब क ऐसा काम हो जिस से भारत की दूसरे देशों व्यर्थ में बदनामी हो. इसी लिए केवल अका सिख ही नहीं, गैर अकाली सिख भी अब अ जनता से वह आदर व सम्मान नहीं पा रह जो पहले पाता रहा है.

अफसोस यही है कि धर्मांध नेता अ समर्थकों की इस तरह की कठिनाइयों परवाह नहीं करते. वे तो ईश्वर, खुदा, या वाह गुरूजी के नाम पर देश को ही न सारी जनता को भी समाप्त कर देने उतारू हो जाते हैं. यही ईरान में आयतुल्ल कर रहे हैं और यही पंजाब में अकाली ने करा रहे हैं.

नागालैंड में भी छल की सरका

नागालैंड के नए चुनावों में इंदि कांग्रेस यद्यपि स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं क सकी. फिर भी हरियाणा और हिमाचल प्रदे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तरह वह वहां भी निर्दली सदस्यों की सहायता से एक बार फिर सत्तारूढ़ हो गई है. 60 सदस्यों वाली विधान सभा में इंदिरा कांग्रेस और नागालैंड नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी को 24-24 स्थान मिले और बाकी निर्दली सदस्यों को.

इंदिरा कांग्रेस ने सत्ता में आने के लिए निर्दलियों को कैसे फंसाया होगा, यह इसी बात से जाहिर है कि चुनाव परिणामों की घोषणा के तुरंत बाद इंदिराजी के दो वरिष्ठ व विश्वसनीय मंत्री– प्रणव मुखर्जी व अंतप्रसाद शर्मा तुरंत नागालैंड पहुंचे. पद, पैसे व सुविधा के लालच से जो निर्दली इंदिरा कांग्रेस के पक्ष में आए हैं, उन से इस सीमावर्ती व समस्याग्रस्त राज्य को क्या मिल सकेगा, इस का अंदाजा लगाना मुशकिल नहीं है.

नागालैंड के निवासी अभी तक अपने आप को भारत का अभिन्न अंग मानने को पूरी तरह तैयार नहीं हैं. फिजो के समर्थक कभी भी हथियार उठा कर राज्य की शांति के लिए खतरा पैदा कर सकते हैं.

जब वहां के मतदाताओं को यह बताया जाएगा कि जिस दल को वे बहुमत से ठुकरा चुके थे, वह पैसे और छलकपट के बल पर फिर सत्ता में आ गया है तो जनता में जो थोड़ावहुत विश्वास पैदा हुआ था, वह भी समाप्त हो जाएगा.

बाकी देश की जनता तो अल्पमत पाने वाली सरकारों को धैर्य से स्वीकार कर लेती है, क्योंकि कुछ तो वह शांतिप्रिय है और कुछ दब्बू व कायर, लेकिन नागालैंड की जनता में न धैर्य है और न ही वह कायर और दब्बू है. यदि वहां के लोगों को किसी ने विश्वास दिला दिया कि उन के साथ धोखा हुआ है तो यह राज्य फिर देश के लिए सिरदर्द बन जाएगा.

अच्छा यही रहता कि इंदिरा कांग्रेस सब्र से काम लेती और नागालैंड नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी को ही सरकार बनाने देती. चुनावों के वादे जब पूरे न होते (जो कोई भी दल नहीं कर सकता) तो नागालैंड की जनता अपने आप ही उस का सफाया करने के लिए पूरी तरह इंदिरा कांग्रेस की शरण में आ जाती. लगता है इंदिरा कांग्रेस के नेता अब पूरी तरह सत्ता के नशे में चूर हैं और वे कहीं भी कैसा भी विरोध नहीं देखना चाहते.

सरकारी उद्योगों को फटकार

केंद्रीय उद्योग मंत्री नारायणदत्त तिवारी ने सरकारी औद्योगिक संस्थानों को बुरी तरह फटकारा है कि वे तुरंत प्रबंध की समस्याएं दूर करें व आर्थिक अनुशासन लागू करें. उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि सरकारी संस्थान बिक्री की ओर तो ध्यान देते ही नहीं हैं और उन का रुख यही रहता है कि जिसे गर्ज हो वह खरीदने आए. इस तरह सरकारी संस्थान अपना उत्तरदायित्व कभी पूरा नहीं कर पाएंगे और वह (यानी मंत्रीजी) और सरकार इसे सहन नहीं करेगी.

यह सचमुच संतोष की बात है कि मंत्रीजी ने सरकारी संस्थानों की प्रशंसा के पुल नहीं बांधे वरना अब तक तो मंत्री और राजनीतिबाज करोड़ों रुपयों का नुकसान देने वाले और बेहद घटिया माल बनाने वाले सरकारी उद्योगों की जयजयकार ही करते रहते थे. इन उद्योगों में जनता से वसूले गए जबरन कर का 15,000 करोड़ रुपया लगा हुआ है और सब मिला कर ये मात्र डेढ़दो सौ करोड़ रुपए का मुनाफा कमाते हैं. फिर भी सरकार इन्हें हर तरह का संरक्षण देती है.

यदि इतनी पूंजी नागरिक उद्योगों में लगी होती तो कम से कम 4,000 करोड़ रुपए सालाना का लाभ होता और अकेले सरकार को दोढाई हजार करोड़ रुपए कर के रूप में ही हर साल मिलते.

अब तो यह भी नहीं कहा जा सकता कि ये संस्थान सस्ते मूल्य पर सामान बेच रहे हैं. दिल्ली परिवहन हो या दूध सेवा, अब सब सरकारी कंपनियां नागरिक क्षेत्र की कंपनियों से ज्यादा ही पैसा लेती हैं. जिन कुछेक क्षेत्रों में सरकारी व नागरिक कंपनियां दोनों हैं, वहां तो सरकारी कंपनियों के कारण नियंत्रित मूल्य भी बढ़ाने पड़े हैं जिस से नागरिक कंपनियों को बैठेबिठाए भारी लाभ हो गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिवारीजी की डांट मात्र से अगर सरकारी संस्थान सुधर जाते तब तो यह कुछ लाभदायक होती पर सत्य तो यह है कि न तो मंत्रीजी को और न ही सरकारी संस्थानों के प्रबंधकों को इस बात की परवाह है कि ये उद्योग सही ढंग से चलें.

उद्योगों में लाभ हो या हानि, उत्पादन हो या नहीं, ऊपर से नीचे तक के हर कर्मचारी का वेतन व सुविधाएं ही नहीं, पदोन्नति तक सुरक्षित है. अनुशासनहीनता या अकुशलता के लिए सरकारी संस्थानों में दंड का कोई विधान ही नहीं है. अतः कोई इस बात की चिंता नहीं करता कि काम हो रहा है या नहीं.

मंत्रीजी अगर अपनी डांट के साथ कोई अल्टीमेटम भी देते कि फलांफलां तारीख तक सब काम ठीक कर लो तो कुछ बात भी होती. अगर वह प्रबंधकों को अच्छे काम के लिए इनाम व खराब काम के लिए नौकरी से निकाल देने की बात कहते तो उन के कथन का कुछ असर भी होता. अब तो यह भाषण एक दिन का शगूफा बन कर रह जाएगा.

दिल्ली में एक और मंजिल

दिल्ली में कुछ समय से 18-20-25 मंजिले मकान बनने लगे हैं. लेकिन यह सुविधा नगर निगम, विकास प्राधिकरण या केंद्रीय सरकार की मर्जी से ही मिल पाती थी. जिस जगह पर इन विभागों की मर्जी होती, वहां वे ऊंचे भवन बनाने की इजाजत दे देते और जहां न,होती, नहीं देते थे.

इस से दिल्ली में बड़ी अजीब स्थिति पैदा हो गई. एक भूखंड की कीमत तो करोड़ों में पहुंच गई, क्योंकि वहां गगनचुंबी इमारत बन सकती है, पर पास के ही भूखंड की कीमत केवल लाखों में रह गई, क्योंकि वहां पर गगनचुंबी भवन तो क्या, तीन मंजिला मकान भी नहीं बनाया जा सकता.

इस से सरकार के इन विभागों में खूब धांधली होने लगी. गगनचुंबी भवन बनाने की इजाजत लेने के लिए लोग लाखों रुपए रिश्वत आदि में खर्च करने लगे, क्योंकि इस से करोड़ों का लाभ संभव था.

अब सरकार ने सारे शहर में दो स्थान पर तीसरी व तीन के स्थान पर चौ मंजिल बनाने देने की नीति को मंजूरी दे दी यद्यपि वास्तविक मंजूरी देने और मकानों बन जाने में अभी कई साल लगेंगे. पर आ है कि इस से लगभग ढाईतीन लाख रिहाय घर अतिरिक्त बन जाएंगे.

यह निर्णय असल में बहुत पहले ही लिया जाना चाहिए था. दिल्ली को, जिस चारों ओर फैलने की गुंजाइश है, वास्तव गगनचुंबी इमारतों की जरूरत ही नहीं इन इमारतों के कारण ही मकानों, जायदाद दाम बेतहाशा बढ़े, क्योंकि शहर बीचोबीच इन्हीं में दफ्तरी या रिहाय स्थान उपलब्ध थे. यदि उसी समय अतिरि मंजिलें बनाने की अनुमति दे दी जाती तो मकानदार अपनी सीमित बचत से भी बना सकते थे.

आशा की जानी चाहिए कि इस नीति से ऊंचेऊंचे मकान बनाने की प्रवृ कुछ कम होगी, क्योंकि तीसरी मंजिल लागत तेहरवीं मंजिल से कहीं कम हो ऊंचे मकान बनाने से न केवल शहर घुटा सा हो जाता, उन के आसपास यातायात समस्याएं भी बढ़ जाती हैं. आग लगने पर में खतरा भी बहुत होता है.

श्रीलंका में लोकतंत्र

श्रीलंका के राष्ट्रपति जयव राष्ट्रपति पद के चुनाव में अपनी विजय अब दुरुपयोग करने पर उतारु हो गए अब वह 1977 में चुनी गई संसद कार्यकाल छः साल के लिए और बढ़ाने लिए जनमत संग्रह करा रहे हैं ताकि उन दल यूनाइटेड नेशनल पार्टी को एक बार मतदाताओं के सामने न जाना पड़े.

भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्रीम भंडारनायके ने समाजवाद के नाम श्रीलंका के उद्योग व्यापार को नष्टप्राय दिया था. वह और उन की सरकार अ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत शक्ति और संपत्ति के लिए ही नियमकानून बनाते थे. समाचारपत्रों से ले कर चाय बागान तक का सरकारीकरण कर के उन्होंने देश को मुसीबत में डाल दिया था.

श्री जयवर्धने की व्यावहारिक नीतियों से श्रीलंका की स्थिति बहुत सुधर गई है और इसी लिए उन्हें राष्ट्रपति पद के चुनाव में विजय मिली. लेकिन संसद के सदस्यों का एक अलग महत्त्व होता है. राष्ट्रपति को चुनते समय मतदाता और उम्मीदवार बहुत दूरदूर होते हैं. इस चुनाव में केवल राष्ट्रीय मुद्दों की ही चर्चा होती है.

संसद के चुनावों का सब से बड़ा लाभ यह होता है कि बूढ़े हो रहे निष्क्रिय, अकुशल या बेईमान सदस्यों की छंटाई हो जाती है तथा नए लोगों को नेतृत्व करने का अवसर मिलता है. यदि वर्तमान संसद अपना कार्यकाल छः साल के लिए बढ़ा लेगी तो उस के सदस्य अब जनता के प्रति जिम्मेदारी से बेखबर हो जाएंगे. श्री जयवर्धने अब संसद का कार्यकाल इस लिए बढ़ाना चाहते हैं क्योंकि उन के दल को 168 स्थानों में से 143 स्थान प्राप्त हैं और वह यह सोच कर जोखिम नहीं लेना चाहते कि कहीं उन के दल का बहुमत कम न हो जाए या वह अल्पमत में न आ जाए. इसी कारण संसद का कार्यकाल बढ़ाना न केवल गलत है बल्कि सरासर बेईमानी भी है.

रूस में नया नेतृत्व

रूस के राष्ट्रपति श्री लियोनिद ब्रेजनेव की मृत्यु से रूस को जहां एक अनुभवी नेता खोना पड़ा है वहीं एक नए तरह की नेतृत्व की आशा भी है. श्री ब्रेजनेव 18 वर्षों तक संसार की दूसरी सब से बड़ी शक्ति के सर्वेसर्वा के रूप में रहे और उन्होंने देश को अपने खास व्यक्तियों की सहायता से एक विशेष ढंग से चलाया. अब राष्ट्रपति को नया शक्ति संतुलन कायम करना होगा. जब तक ऐसा नहीं होगा, रूस की आंतरिक व विदेश नीति दोनों पूरी तरह तय नहीं हो पाएंगी.

यह अफसोस की बात है कि क्रांति के 65 वर्ष बाद और काफी उन्नति कर लेने के बावजूद आज रूस में हर नए शासक के चुने जाने के समय अनिश्चय का सा वातावरण पैदा हो जाता है और नए नेतृत्व के बारे में बेकार की अटकलें लगानी पड़ती हैं.

इस का कारण स्पष्ट है. रूस में हर आम व्यक्ति की तरह शासक भी हर समय आतंक के वातावरण में रहते हैं और उन्हें डर रहता है कि न जाने कब क्या हो जाए. वहां विचारों का हल अपने विचारों को स्पष्ट रूप से रख कर उन में समन्वय स्थापित कर के नहीं किया जाता. वहां छोटे से छोटे व्यक्ति से ले कर राष्ट्रपति तक अपनी बात कहने से घबराता है. इसी लिए वहां गुटबाजी शुरू हो जाती है. हर गुट दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करता है और फिर आपसी खींचतान चलने लगती है.

यही खींचतान तनाव का वातावरण पैदा करती है जिस से आतंक का जन्म होता है. जिस के हाथ में सत्ता व शक्ति होती है, वह अपने आलोचक को दबा देता है, चाहे आलोचना सही हो या गलत.

श्री ब्रेजनेव के गुट ने भी अपने शासनकाल में यही किया और कितने ही वरिष्ठ अधिकारियों को बिना स्पष्ट कारण के ऐसे हटा दिया कि उन का पता नहीं चला. अब रूस की कम्यूनिस्ट पार्टी के नए महासचिव श्री यूरी आंद्रोपोव भी कुछ ऐसा ही करेंगे.

फिर भी आशा की जानी चाहिए कि नया नेतृत्व इस आतंक की स्थिति से देश को निकालने की कोशिश करेगा. रूस अब सैनिक तौर पर अमरीका से भी ज्यादा शक्तिशाली है. पोलैंड और अफगानिस्तान के मामले में संसार को उस की जिद माननी ही पड़ी. पश्चिमी यूरोप उस से कई तरह के आर्थिक समझौते करने को लालायित है.

ऐसी स्थिति में देश को एक खुली जेल बना कर रखने से कोई लाभ नहीं है. नए नेतृत्व को चाहिए कि वह देशवासियों को उन्मुक्त जीवन जीने का अवसर दे, उन पर विश्वास व्यक्त करे और आधी सदी से चले आ रहे आतंक को समाप्त कर दे. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम : वरदान भी अभिशाप

"प्यार किया नहीं जाता, हो ज
है" – ठीक से नहीं कहा
सकता कि यह कथन किस का है, लेकिन

ले

संतोषकुमार 'निर्म

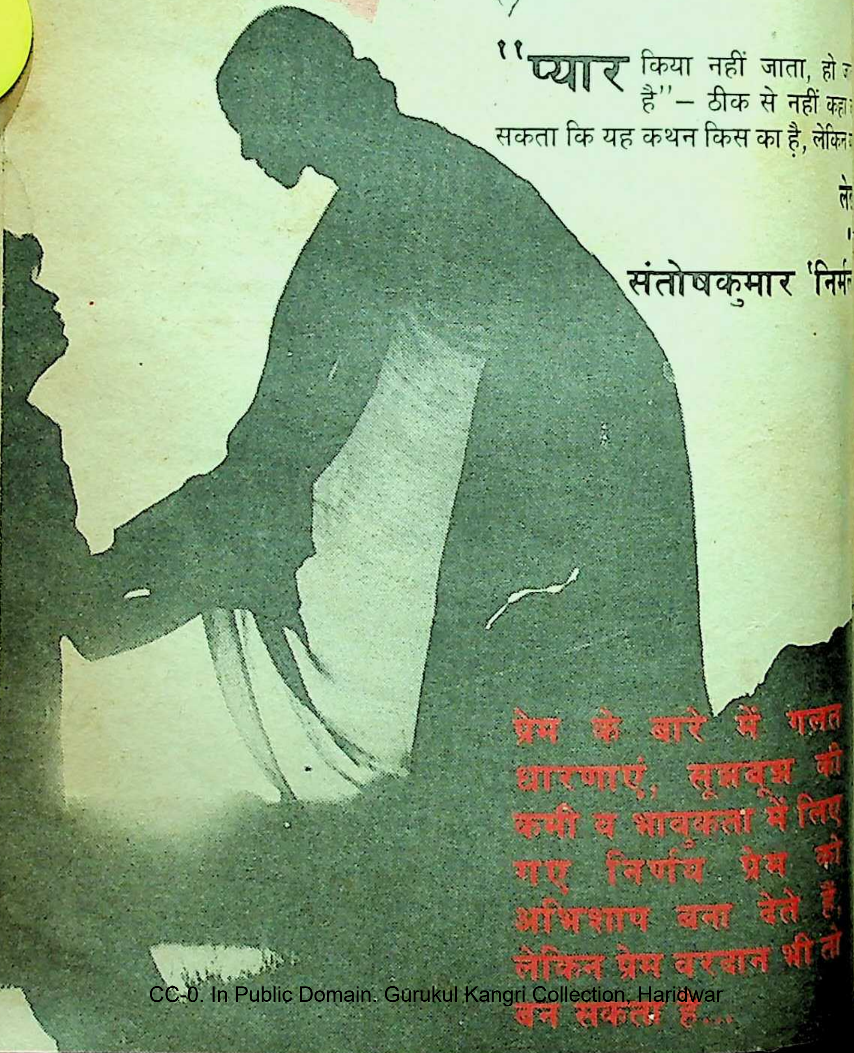

प्रेम के बारे में गलत धारणाएं, सूझबूझ की कमी व भावुकता में लिए गए निर्णय प्रेम को अभिशाप बना देते हैं, लेकिन प्रेम वरदान भी तो बन सकता है...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाक्य पता नहीं कितने युवकयुवतियों की सोचनेसमझने की शक्ति हर लेता है और वे केवल शारीरिक आकर्षण से प्रभावित हो कर प्यार (?) के बंधन में बंध जाते हैं.

हिंदी में बनने वाली अधिकांश फिल्मों का विषय 'प्रेम' ही होता है. कुछ निर्माताओं ने किशोर वय के प्रेम को आधार बना कर फिल्में बनाईं और बेशुमार दौलत कमाई. 'जूली,' 'बाबी,' 'लव स्टोरी,' 'एक दूजे के लिए' व 'प्रेम रोग' जैसी फिल्मों से कच्ची उम्र के लड़केलड़कियां बुरी तरह प्रभावित हो गए. अपना भलाबुरा सोचे बिना वे उन्मुक्त प्रेम की राह पर चल पड़े. 'एक दूजे के लिए' के प्रदर्शन के कुछ ही दिनों बाद अखबारों में खबर आई थी कि कई प्रेमी युगलों ने इस फिल्म में दिखाए गए दुखांत दृश्य के अनुसार आत्महत्या कर ली थी. इस के बाद ही इस फिल्म का अंत बदल कर उसे सुखांत बनाया गया.

सहशिक्षा वाले कालिजों में यह समस्या और भी उभर कर सामने आई. इस का कारण यह था कि इस आयु में लड़केलड़कियों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती कि वे प्रेम के

कैशोर्य प्रेम पर बनी फिल्में– 'बाबी' (ऊपर) व 'लव स्टोरी' (नीचे) युवा वर्ग को क्या दे सकीं.

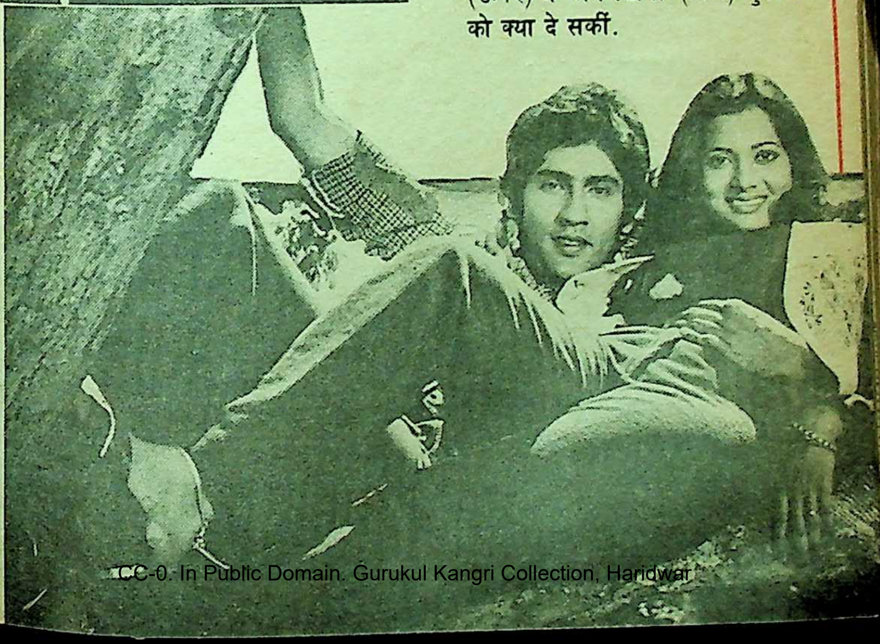

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थ को समझ सकें. बाह्य आकर्षण, चकाचौंध व फैशन की दौड़ में शामिल होने के नाम पर किए गए प्रेम को वे प्रेम समझ बैठे. यही कारण है कि इस कथित प्रेम में असफल होने के बाद लोग आत्महत्या तक कर लेते हैं.

लेकिन गौर से देखा जाए तो अपनी इस स्थिति के लिए वे खुद ही जिम्मेदार होते हैं. देखा गया है कि प्रेम करते समय दोनों में से कोई भी एकदूसरे की पृष्ठभूमि व उम्र के बारे में नहीं सोचता. उन की आंखें तब खुलती हैं, जब समाज व परिवार वालों द्वारा उन्हें चेतावनी दी जाती है, क्योंकि लाख कोशिश करने पर भी प्रेम छिपता नहीं है.

शेक्सपियर ने प्रेम के संबंध में बड़ी ही रोचक बात कही है– दोपहर में हुई हत्या का समाचार भी इतनी तेजी से नहीं फैलता, जितनी जल्दी दो प्रेमियों के प्यार का समाचार. चेतावनी सुन कर दोनों की आंखें खुलती हैं, दोनों एकदूसरे के बारे में सोचने लगते हैं. साथसाथ जीनेमरने के वादे भुला दिए जाते हैं. अपने को अत्याधुनिक समझने वाली लड़कियां भी घर वालों की इच्छा के आगे नहीं बोल पातीं, लेकिन अपने प्रेमी की नजरों में वे स्वयं को कमजोर व बेवफा साबित नहीं करना चाहतीं, इसलिए सारा दोष मांबाप पर डाल कर अपने को साफ बचा ले जाती हैं. लड़के भी ऐसे समय अपने को श्रवणकुमार साबित करने में पीछे नहीं रहते. फिल्मों व सस्ते उपन्यासों को पढ़ कर उत्पन्न हुआ प्रेम सफल होने से पहले ही टूट जाता है.

क्यों टूटता है यह प्रेम संबंध? इस का उत्तर यह है कि हम में इतना साहस नहीं होता कि हम अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के लिए संघर्ष कर सकें. जरा सा विरोध होने पर ही हम साहस खो देते हैं. सामाजिक संस्कारों में पली लड़की समाज की उपेक्षा सहने का साहस नहीं जुटा पाती. हाथों में हाथ डाल कर घूमना और बात है, लेकिन जीवन भर के लिए वही हाथ थामने के लिए जिस साहस की जरूरत होती है, उस की उन के पास कमी होती है. लड़कों में भी ऐसे साहस का अभाव देखा गया है.

बहुत कम मातापिता ऐसे होते हैं इन प्रेम संबंधों को सहजता से स्वीकार पाते हैं. लेकिन इस में उन का कोई दोष है, क्योंकि यह प्रेम संबंध इतना लचर, इ अविवेकपूर्ण होता है कि उसे कोई भी मा नहीं दे सकता.

प्रेमी युगल का विवाह होना ही संबंध की सफलता है. विवाहित जीवन सफलता पतिपत्नी के आपसी व्यवहार निर्भर करती है. लेकिन असफल प्रेम दो जीवन में जहर घोल देता है. विवाह पू प्रेम संबंध दोनों के जीवन में कटुता को बढ़ावा देता है. पत्नी अपने इस कार्य को समझती है और जीवन भर अपराध भाव ग्रस्त रहती है. पारिवारिक कलह का कारण यही है. इस एक छोटी सी भू कारण अनेक परिवार टूट जाते हैं.

समस्या तब और गंभीर हो जाती जब कोई पत्नी पति से अपने विवाह पू की चर्चा कर देती है. मगर यह स्थिति इ विषम होती है कि उसे जीवन भर इ दुष्परिणाम भुगतना पड़ता है. उस के प अहं यहां आड़े आ जाता है. वह उस की न में गिर जाती है. पति कभी यह सहन नहीं सकता कि उस की पत्नी ने विवाह पूर्व कि से प्रेम किया हो. उसे पता न लगे, यह द बात है, लेकिन वह जानबूझ कर मक्खी निगल पाता. कुछ ही लोग ऐसे होते हैं पत्नी की इस स्थिति को स्वीकार कर प पति से अपने पूर्व प्रेम संबंध की चर्चा पत्नी के लिए अभिषाप बन जाता है.

इसलिए भूल कर भी पत्नी को पूर्व प्रेम संबंधों के विषय में अपने पति से नहीं कहना चाहिए. आखिर इस आवश्यकता भी क्या है, हालांकि कुछ अपनी पत्नियों से ये बातें कुरेदकुरेद पूछने की कोशिश करते हैं.

असफल प्रेम की परिणति

यह एक कटु सत्य है कि प्रेम में अस होने के बाद किसीकिसी में प्रतिशोध भावना जन्म ले लेती है. वह बदला ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

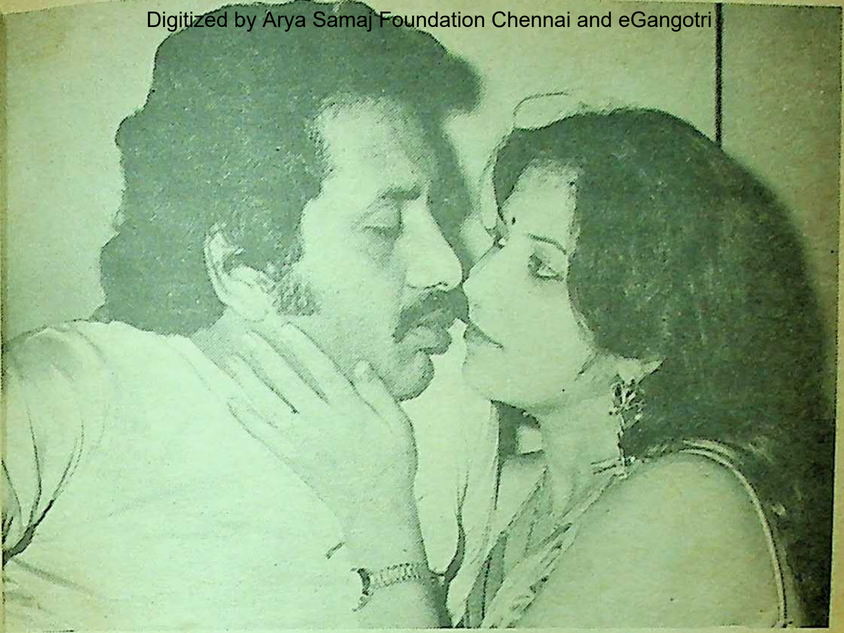

प्रेम करते समय दोनों में से कोई भी एक दूसरे की पृष्ठभूमि व उम्र के बारे में नहीं सोचता, जब कि पहले इसी बारे में सोचना चाहिए.

लिए अवसर की तलाश में रहता है. प्रेमिका द्वारा लिखे गए पत्रों व प्रेम संबंधों के दौरान लिए गए चित्रों को उस के पति को दिखा देने की धमकी दे कर वह उसे ब्लैकमेल करने की कोशिश करता है. इस तरह एक हरीभरी जिंदगी पर प्रतिशोध की बिजली गिरती है और उसे जला कर राख कर देती है. प्यार का कुपरिणाम यह होगा, ऐसा लड़कियां प्रायः नहीं सोचतीं. कोईकोई तो इस से घबरा कर आत्महत्या तक कर लेती हैं.

वास्तव में यह स्थिति दुखदायी है, लेकिन इस के लिए दोनों ही समान रूप से दोषी होते हैं. विवाह पूर्व का उन्मुक्त प्रेम, साथसाथ जीनेमरने के किए गए वादे उन्हें सपनों की दुनिया में पहुंचा देते हैं. स्थिति तो तब दयनीय हो जाती है, जब दोनों में से कोई एक यह कहता है, ''मुझे तुम से प्यार तो है, लेकिन मैं तुम से शादी करने में असमर्थ हूं.'' अब आप ही सोचिए, वह ऐसे प्यार का क्या करें?

अधिकतर प्रेमिकाएं अपने प्रेमियों को इसी मीठे बहाने से बहलाती रहती हैं व दूसरी जगह शादी कर लेती हैं. बेचारा प्रेमी प्रेमिका के इस वादे पर विश्वास कर के जिंदगी भर कुंआरा बैठा रहता है, जब कि प्रेमिका अपने वैवाहिक जीवन में व्यस्त हो जाती है. लेकिन सभी ऐसे नहीं होते. कुछ प्रेमी थोड़े समय बाद प्रेमिका के इस मीठे धोखे को पहचान जाते हैं व उसे भुला कर शादी कर के अपना वैवाहिक जीवन प्रारंभ कर लेते हैं. इस तरह के सैकड़ों उदाहरण समाज में भरे पड़े हैं.

एक बार एक व्यक्ति को उस की प्रेमिका द्वारा लिखा प्रेम पत्र देखने में आया. पत्र में लिखा था. ''अगले सप्ताह मेरी शादी होने वाली है, लेकिन तुम मुझे भुलाना नहीं. तुम शादी मत करना, क्योंकि जो स्थान कभी मेरा रहा, वहां पर मैं किसी और को नहीं देख सकती. हमारा तुम्हारा प्यार अमर है और अमर रहेगा. अगले जन्म में हम जरूर मिलेंगे.'' उस व्यक्ति पर इस पत्र का गहरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असर हुआ था और उस ने अपने प्रेम को अमर करने के लिए शादी न करने का फैसला कर लेया था.

बहुत समझानेबुझाने के बाद ही वह अपने इस निर्णय को बदलने को तैयार हुआ.

प्रेम संबंधों में दरार

प्रेम संबंध टूटने का एक अन्य कारण यह भी है कि लड़का आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़े हुए बिना ही किसी की तरफ आकर्षित हो जाता है, लेकिन वह उस से विवाह करने का साहस इसलिए नहीं कर पाता, क्योंकि वह आर्थिक रूप से अपने मांबाप पर निर्भर होता है. अगर मांबाप ने विवाह की स्वीकृति दे दी, तब तो ठीक, नहीं तो बेचारा प्रेमी अपनी प्रेमिका को यही समझाता है कि उसे प्यार तो उसी से है, लेकिन वह घर वालों की इच्छा को भी ठुकरा नहीं सकता. इसलिए वह उसे भूल ही जाए तो अच्छा है.

इस तरह उस का प्यार एक सौदे में बदल जाता है. वह जानता है कि मांबाप की इच्छा के बिना शादी करने पर वह न घर का रहेगा, न घाट का. केवल दरदर की खाता फिरेगा, जब कि उन की इच्छा से करने पर दहेज की एक मोटी रकम मिलने की संभावना होती है. काश, वह प्यार के समय भी अपने मांबाप की इच्छा का ख्याल रखता तो यह स्थिति न आती.

किसी से प्रेम होने का ढंग भी आजकल निराला है. आश्चर्य होता है कि इतनी जल्दी प्रेम होना संभव है. केवल किसी को एक नजर देख कर बिना बात किए ही प्रेम हो जाने का लोग दावा करते हैं. एकतरफा प्रेम करना तो बहुत बुरी स्थिति है. इस का परिणाम क्षोभ, अपमान व पछतावे के सिवा कुछ नहीं है.

एक साहब रोज बस से दफ्तर जाते थे. एक दिन अधिक भीड़ होने की वजह से एक लड़की ने उन्हें पैसे देते हुए टिकट लेने को कहा. बस, इतने में ही उन महाशय को भ्रम हो गया कि लड़की उन की तरफ आकर्षित है. संयोग से लड़की रोज ही उन्हें उसी बस में मिलने लगी. उन महाशय ने इसे सुनहरा मौका समझा. धीरेधीरे उन्होंने लड़की का नामपता जानने की कोशिश की, लेकिन इस के बदले में उन्हें अपमानित होना पड़ा.

पत्नी को भूल कर भी अपने पूर्व प्रेम संबंधों के विषय में पति को नहीं बताना चाहिए हालांकि कुछ पति पत्नी से कुरेदकुरेद कर यह पूछते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़की ने उन्हें 'जोकर' की उपाधि दे दी, जिस से वह खिसिया कर रह गए. बड़ी मायूसी से जब उन्होंने इस बात का जिक्र अपने मित्रों से किया तो उन्होंने समझाया कि गलती उन की ही थी. इस तरह का प्रेम केवल फिल्मों में ही होता है, वास्तविक जीवन से इस का कोई संबंध नहीं.

फिल्मों का दुष्प्रभाव

फिल्मों के प्रभाव से ही उत्पन्न एक और दुष्परिणाम तब सामने आता है, जब प्रेमीप्रेमिका घर से भाग जाते हैं. काफी भटकने के बाद उन्हें वास्तविक जीवन की कटुता समझ में आती है, लेकिन जब तक बहुत देर हो चुकी होती है. प्रेमी तो साथ छोड़ ही चुका होता है. समाज में बदनामी का भय लड़की को वापस नहीं आने देता. वह घबरा कर या तो आत्महत्या कर लेती है या जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूरन शरीर का सौदा करने लगती है.

अधिकांश लड़कियां इस में विश्वास रखती हैं कि विवाह पूर्व वे जो चाहें कर सकती हैं. बाद में तो किसी एक की होना ही है. छात्रावास में रहने वाली लड़कियों के सोचने का दृष्टिकोण प्रायः यही होता है. लड़कों से रोमांस व मिलनाजुलना उन की दिनचर्या में शामिल हो जाता है. घर से पढ़ाई का उद्देश्य ले कर चलने वाली लड़कियां रास्ते में ही भटक जाती हैं. विवाह होने के बाद अपना पतित अतीत उन्हें कचोटता रहता है.

प्रेम की समस्या केवल कुंआरे लोगों की ही नहीं है, विवाहित भी इस से पीड़ित रहते हैं. पत्नी का परपुरुष से प्रेम करना पति के लिए डूब मरने वाली बात हो जाती है. खुद चाहे वह कितनी ही स्त्रियों से संबंध रखे, लेकिन पत्नी का यह कदम वह सहन नहीं कर पाता. ऐसी स्थिति में मनमुटाव या संबंध विच्छेद तो होता ही है, कभीकभी आवेश में आ कर वह हत्या जैसा जघन्य अपराध भी कर डालता है और जीवन भर इस का कुपरिणाम भुगतता है. अगर पति को दूसरी स्त्री से प्रेम हो और उस की उस से विवाह

असफल प्रेम दोनों के जीवन में जहर घोल देता है.

करने की इच्छा हो तो वह अपनी पत्नी की हत्या भी कर डालता है.

तीन साल पहले की बात है. पाठकों ने शायद समाचारपत्रों में पढ़ा होगा कि हरदोई के सरकारी हस्पताल के डाक्टर विनयकुमार ने एक नर्स भगवती सिंह से विवाह करने के लिए अपनी सुंदर व सुशील पत्नी सुधा की हत्या कर दी थी, जिस पर अदालत ने अभियुक्त को मृत्यु दंड की सजा दी. इस तरह एक डाक्टर ने अपने सुनहरे भविष्य को स्वयं ही घोर अंधेरे में बदल दिया.

कभी स्थिति इस के विपरीत होती है. अपने प्रेमी से मिल कर अपने पति की हत्या करने वाली पत्नियों के उदाहरणों की भी कमी नहीं है. कैसी विडंबना है कि यह जघन्य अपराध प्रेम की आड़ में किए जाते हैं. प्रेम, जो वरदान बन सकता था, अभिशाप बन कर रह जाता है.

प्रश्न यह है कि हत्या कर के हम अपने पैरों पर क्यों कुल्हाड़ी मारते हैं? अगर कोई हमें धोखा देता है तो हमें उस से संबंध विच्छेद कर लेना चाहिए, न कि उस की हत्या कर

(शेष पृष्ठ 146 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी • चंद्रशेखर दुबे

डायन

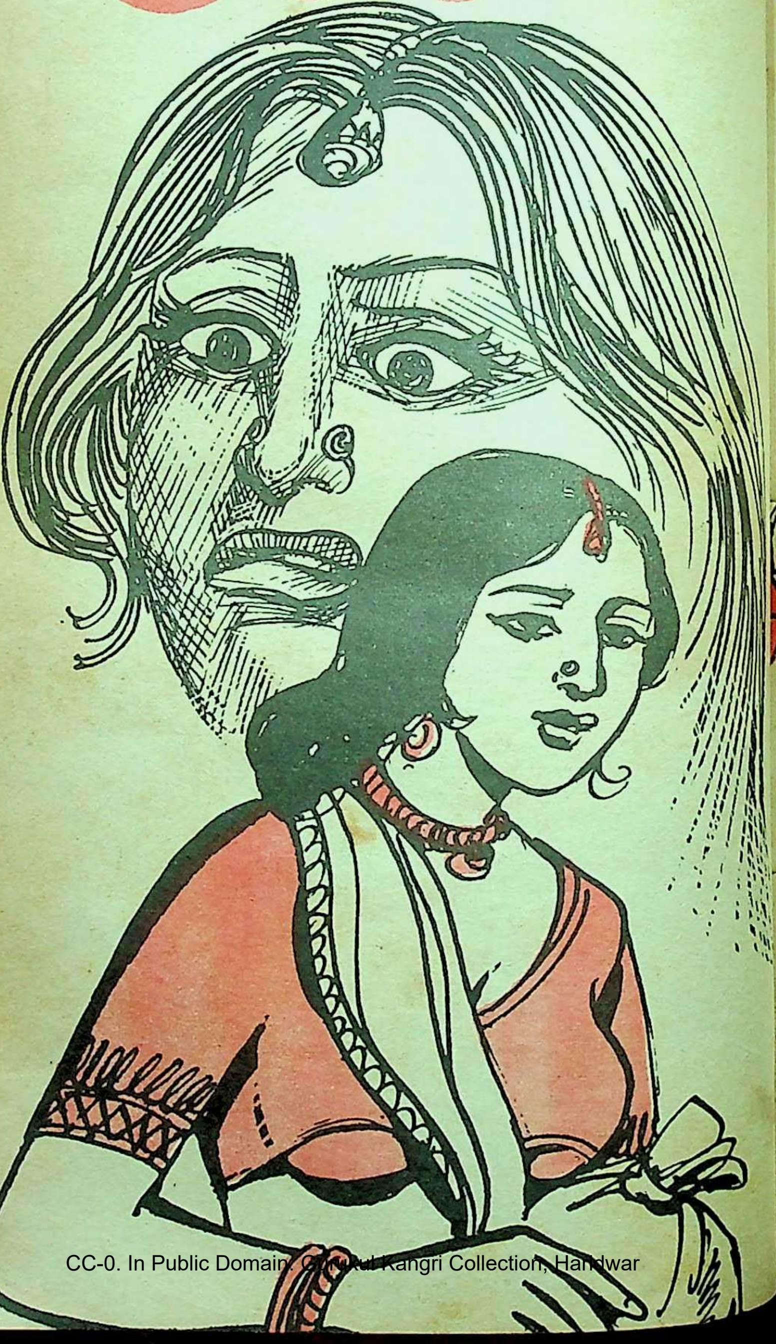

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोले आदिवासियों में अंधविश्वास भरने वाले तांत्रिक ने मंगली को गांव भर में बदनाम कर डाला पर इस का बदला मंगली ने कैसे लिया?

पेमा की बहू की लाश के आते ही भील आदिवासियों के झोंपड़ों में खलबली मच गई. घरघर चर्चा चल पड़ी कि जरूर कुछ न कुछ गड़बड़ है. पिछले छः महीनों में इस तरह चार अकाल मौतें हो चुकी हैं. पहले भी तो इन झोंपड़ों में बालबच्चे होते रहे हैं, पर उन में से तो कोई नहीं मरा. जच्चाबच्चा सब सकुशल रहे. कभीकभार कोई इक्कीदुक्की अनहोनी भले ही हो गई हो, लेकिन इन पिछले छः महीनों में ही ऐसा क्या हो गया कि एक के बाद एक, चार जवान मौतें हो गईं. बच्चे भी गए और जच्चाएं भी. जरूर कुछ न कुछ गड़बड़ है.

सेमल्या की घरवाली मंगली तो इस अनहोनी से आश्चर्यचकित ही रह गई. इस मौत से उसे विशेष आघात लगा, क्योंकि पेमा की बहू उस के ही पीहर की थी; इसी लिए दोनों में खूब पटती थी. सगी बहनों से भी अधिक स्नेह था दोनों में. जापे से पहले ही उस ने अपनी इस सहेली को सलाह दी थी कि वह अपना जापा किसी हस्पताल में करवाए, क्योंकि यहां पहाड़ों पर बने इन झोंपड़ों में आड़े वक्त कोई मदद नहीं मिल सकती. यहां तो बड़ीबूढ़ियों से ही पाला पड़ता है. वे अपने परंपरागत ढंग से जापा करती हैं. अपने आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी की नहीं चलने देतीं. जहां जरा मुंह खोलो तो वे झिड़क देती हैं. वे डींगे मारने लगती हैं कि उन्होंने ऐसे पचासों जापे कर डाले हैं.

किंतु बिगड़े हुए जापों की उन्हें कभी याद नहीं रहती. उन्हें वे भगवान की लीला ठहरा देती हैं. पिछली बार डूंगर दादा की बहू कैसे तड़पतड़प कर मरी थी. वक्त पर अगर वह हस्पताल पहुंच जाती तो उस का बच्चा पेट में न मरता और न उसे जहर चढ़ता. पर ये लोग किसी की सुनें तब न? वैसे भी छोटे मुंह बड़ी बात. कोई कहे तो कैसे कहे? उस का कहना तो यों भी इन बड़ीबूढ़ियों को बुरा लगता है. चार अक्षर पढ़ी होना जैसे गुनाह हो गया.

पेमा की बहू को अपनी सहेली मंगली की ये बातें जची थीं. इसी लिए उस ने हस्पताल में नाम लिखाने का आग्रह भी किया था. अपने पति के साथ एक बार कसबे के हस्पताल में जा कर वह डाक्टरनी को दिखा भी आई थी. डाक्टरनी ने भी जैसे मंगली की ही बातें दोहराई थीं. उस ने वहां हस्पताल में ही जापा कराने की सलाह दी थी, किंतु उस की बूढ़ी सास ने किसी की नहीं चलने दी थी.

उस ने अपने बेटे पेमा को डरा दिया था. उस के कान में फुसफुसा दिया था, "तू ने यह भी नहीं सोचा कि वहां हस्पताल में जापा करवाने से नसबंदी हो जाती है? वे लोग गुपचुप ही कर देते हैं. अभी तेरे यहां यह पहली संतान होने वाली है और अगर अभी से नसबंदी हो गई तो औलाद के लिए रोएगा, इसलिए हस्पताल का नाम मत ले."

पेमा ने उस दिन से अपनी घरवाली की एक नहीं सुनी. उस ने तो बस अपनी मां की बात ही गांठ बांध ली. मंगली की बात भी उस ने नहीं सुनी. बराबर बहानेबाजी करता रहा.

फिर जिस बात की आशंका थी, वही हुई. पेमा की बहू का जापा तो अच्छा भला हो गया, किंतु हंसिए से नाल काटने के कारण वह टेटेनस (मांसपेशियों की कष्टप्रद सिकुड़न) की शिकार हो गई. अब उस के घर के लोग बिना कहे ही बीमार को हस्पताल ले गए. खटिया सहित बीमार को सड़क तक ... वहां से मोटर में ले गए. किंतु हस्पताल ... दाखिल होने से पहले ही जच्चाबच्चा दो... दम तोड़ दिया. दोनों की लाशें ही वापस आ...

इन लाशों के आते ही मंगली ... हस्पताल की परची देखी. हायर सेकंडरी ... पढ़ी होने और प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा ... साधारण ज्ञान होने के कारण वह इस प... को पढ़ कर जान गई कि मृत्यु टेटेनस से हु... है. उस की आशंका सही निकली.

किंतु इस समय मंगली की बात ... को कोई तैयार नहीं था. सब के मन में ... दहशत सी बैठ गई थी. शंकाओं का जाल ... बुन कर वे सब उसी में उलझे हुए थे. सब ... मन में बस एक ही बात घर कर गई थी कि ... अनहोनियों के पीछे कोई खास कारण है, ... गड़बड़ है.

इसी लिए पेमा की बहू और बच्चे ... लाश को ठिकाने लगाते ही महल्ले के ... लोग इस गड़बड़ी की जांच कराने को त... हो उठे. बिना कहे ही सभी 21 झोंपड़ों में ... लोग आ गए. अगर कोई बड़ा पुरुष कि... कारण से नहीं आ पाया तो उस घर से ... किशोर आ गया. बीमार व्यक्तियों ने अ... प्रतिनिधि के रूप में अपने किसी रिश्तेदार ... भेज दिया. मंगली का घरवाला सेमल्या ... उन में शामिल था.

उन लोगों ने ग्राम पंचायत के कार्या... में जा कर प्रमाणपत्र लिया. सभी के नाम, ... आदि इस प्रमाणपत्र में लिखवाए. कहां जा ... हैं, क्यों जा रहे हैं, यह सब कुछ भी इस में ... करवाया.

ग्राम पंचायत का प्रमाणपत्र ले क... लोग संबंधित थाने में पहुंचे. वहां भी ... लोगों ने सारी बात का इंदराज करवाया. ... की अनुपस्थिति में कोई वारदात हो जाने ... वे लोग व्यर्थ में फंस जाएं, इसी लिए ... लोगों ने यह सतर्कता बरती थी.

सारी बातों से निश्चित हो जाने प... लोग 100 मील दूर के मश... बड़वा यानी तांत्रिक से गड़बड़ की ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़वा के गले की कंठी को बल देते हुए मंगली बोली, "नहीं, मैं तो इस का यह खोटा धंधा ही चौपट करूंगी ताकि यह भविष्य में मेरी तरह किसी और को न सताए."

कराने चल पड़े. सब ने अपनाअपना यात्रा टिकट खरीदा. पेमा पर किसी ने बोझ नहीं डाला.

तांत्रिक के यहां पहुंच कर उन लोगों ने सारा माजरा कह सुनाया. उस से गड़बड़ की बारीकी से जांच करने का निवेदन भी किया.

यह बड़वा उन लोगों की तरह एक आदिवासी ही था. किंतु अपनी इस 'विद्या' के कारण उस की माली हालत आम आदिवासियों जैसी नहीं रही थी. उस के पास संपन्न लोगों जैसी सब सुखसुविधाएं हो गई थीं. उस का अच्छा लंबाचौड़ा पक्का मकान था. मकान में बिजली, पंखे, पलंग, रेडियो सेट, लोहे की बड़ीबड़ी अलमारियां आदि सभी वस्तुएं थीं. बाहर आनेजाने के लिए उस के पास मोटर साइकिल भी थी. वह वेशभूषा, बोलचाल किसी भी दृष्टि से आदिवासी प्रतीत नहीं होता था. अनजान आदमी तो उसे आदिवासी मान ही नहीं सकता था.

इस सौ दो सौ मील के अंचल में इस बड़वा का बड़ा मान था. इस की विद्या में आदिवासियों को बड़ी श्रद्धा थी. इस के निर्णय पर वे शंका नहीं करते थे. आंख मींच कर इस की बात को मान लेते थे. इस को भेंट आदि भी वे लोग मुंह मांगी देते थे. उन का ऐसा विश्वास था कि इस के पास कोई ऐसी सिद्धि है, जिस के बल पर यह हर बात की तह में पहुंच जाता है.

वे लंगोटधारी भील आदिवासी भी इसी थोथे विश्वास के कारण खिंचे से यहां आ गए थे. इस बड़वा को मुंहमांगी भेंट दे कर वे गड़बड़ की जांच का आग्रह कर रहे थे.

भोले आदिवासियों की अंधश्रद्धा का यह बड़वा भरपूर लाभ उठाता था. अपनी लंबीचौड़ी तांत्रिक क्रियाओं द्वारा वह उन लोगों को सम्मोहित सा कर देता था. इस की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रियाएं देख कर उन की आंखें आश्चर्य से जैसे फटी की फटी रह जाती थीं. इस लिए वे इस के निर्णयों पर कोई शंका नहीं कर पाते थे. इस के इलाज से उन्हें अगर लाभ हो जाता था तो वे इसे इस की सिद्धि का प्रताप सहज ही मान लेते थे. और यदि वांछित परिणाम नहीं निकलता था तो वे बारबार इस की शरण में आते थे. यह किसी खयाली भूत, चुड़ैल, डायन आदि का हौवा खड़ा कर के उन्हें आतंकित करता रहता था.

इस आतंक को उन के संस्कार सहज ही स्वीकार कर लेते थे, क्योंकि पीढ़ी दर पीढ़ी वे इसी अंधविश्वास में जी रहे थे. यह अंधविश्वास, यह अज्ञान, यह आतंक जैसे उन के खून में समाविष्ट हो गया था. ये खयाली भूत, चुड़ैल, डायन आदि इसी कारण उन्हें साक्षात से लगते रहे थे. इन से बचने के लिए वे बड़वा की ही शरण लेते रहे थे. यह बड़वा उन्हें कवच देता कवच के वावजूद यदि कोई विपत्ति उन्हें दबोच लेती थी तो वे इसे अपना दुर्भाग्य मानते थे, बड़वा की अक्षमता नहीं. बड़वा तो उन की निगाहों में हमेशा सक्षम ही रहता था.

उन की निगाहों में अंधविश्वास को कायम रखने के लिए बड़वा बड़ी चतुराई से काम लेता था. वह जब तब कुछ चमत्कार भी दिखाता रहता था. अपनी इस सम्मोहन क्रिया में उड़द के दानों को पानी में तैराने वाला चमत्कार वह प्रायः किया करता था. इस के लिए वह बड़े कौशल से कुछ दानों को भीतर से खाली कर देता था. इन खाली किए दानों पर वह पहचान के लिए चिह्न बना देता था. दूसरे दाने तो भारी होने से पानी में डूब जाते थे, किंतु ये चिह्नित दाने पोले होने के कारण डूब नहीं पाते थे. इन्हीं के सहारे वह चमत्कार दिखा कर अंधेरे में लाठी घुमा देता था. जिस पर भी वह लाठी पड़ जाती थी, उसे व्यर्थ ही लांछन भोगना पड़ता था. वह दौड़ादौड़ा बड़वा की ही शरण में आता था. बड़वा उस लांछन को धो देता था. उस का यह चमत्कार ऐसे ही छलप्रपंचों के आधार पर चल रहा था.

इस बार भी बड़वा ने इसी प्रपंच का समारम्भ किया था. 21 आदिवासियों को सम्मोहित करने के लिए उस ने अपनी विशिष्ट क्रिया प्रारंभ की. सारंगी बजाते हुए वह मंत्रनुमा अपने विशिष्ट गीत गाने लगा. गीत गातेगाते वह किसी अदृश्य शक्ति का आह्वान सा करने लगा. फिर वह एक बड़े के कटोरे में 'अभिमंत्रित' उड़द के दाने छोड़ने लगा. सभी आदिवासी मंत्रमुग्ध हो उस की क्रिया देखने लगे.

उन लोगों में से एकएक को वह बारीबारी से बुलाता जा रहा रहा था. बुलाए गए व्यक्ति से वह उस के परिवार के बालिग तथा विवाहित व्यक्तियों के नाम पूछते हुए 'अभिमंत्रित' उड़द के दाने पानी से भरे के उस बड़े से कटोरे में छोड़े जा रहा था.

अभी तक सभी के दाने खटाखट कटोरे में बैठते गए थे. सतरह व्यक्ति इस तरह निबट कर चैन की सांस ले रहे थे. बाकी चारों व्यक्ति मन ही मन मना रहे थे कि वे भी इसी तरह निर्दोष सिद्ध हो जाएं. किंतु जब तक उन के परिवार के लोगों के नाम से छोड़े गए दाने कटोरे में बैठे नहीं थे, तब तक उन के मन में धुकधुकी सी लगी हुई थी, क्योंकि गड़बड़ करने वाला चोर अभी पकड़ में नहीं आया था.

अठारहवां नंबर सेमल्या का आया. उस ने मां, बाप, बूआ और खुद का नाम पहले बताया. इन चारों के नाम के दाने खटाखट कटोरे में डूब गए. वे निर्दोष सिद्ध हो गए. किंतु जैसे ही उस ने अपनी घरवाली मंगली का नाम लिया और बड़वा ने कटोरे में उस के नाम का उड़द का दाना छोड़ा कि वह दाना बजाय डूबने के पानी पर तैरने लगा. सेमल्या का चेहरा बुझे लैंप की तरह फक्क सा हो गया. बड़वा ने मंगली का नाम ले कर दूसरा दाना छोड़ा, तीसरा छोड़ा, किंतु ये सभी दाने पानी की सतह पर तैरते ही रहे, डूबे नहीं. सेमल्या ने अपना सिर पीट लिया. उधर बड़वा अपने विशिष्ट अंदाज में झूमते हुए बोला, ''चोर पकड़ में आ गया. आ गया चोर पकड़ में.''

एकाएक सन्नाटा सा छा गया. चोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल

दिल को क्याक्या
सकून होता है,
जब कोई आसरा
नहीं होता.

—जिगर

नाम सुन कर सभी आश्चर्यचकित रह गए, क्योंकि अपनी बस्ती में सेमल्या की घरवाली मंगली को सभी लोग पढ़ीलिखी होने के कारण बहुत मानते थे. रूपरंग, चालढाल, बातचीत सभी बातों में वह उन के लिए आदर्श सी थी. इसी लिए कोई कल्पना ही नहीं कर सकता था कि मंगली में ऐसा खोट हो सकता है.

उधर बड़वा उड़द के दानों को हाथ में थामे हुए कहे जा रहा था, "यही है चोर. इसी ने जच्चा और बच्चे को खाया है. पहले की भी मौतें इसी की करतूत हैं. यह पूरी डायन है."

बड़वा के ये शब्द पिघले सीसे की तरह सेमल्या के कानों में पड़ रहे थे. उस के पैरों के नीचे की धरती ही जैसे खिसक गई थी. वह किसी से भी आंखें नहीं मिला पा रहा था. खासकर पेमा की ओर देखने का तो उस में जैसे साहस ही नहीं रहा था. सब से नजरें चुराता हुआ वह मन ही मन कामना कर रहा था कि कितना अच्छा हो यदि यह धरती फट जाए और वह उस में समा जाए. वह जानता था कि 'डायन' के इस कलंक को धोना सहज नहीं है. आदिवासी समाज में ऐसी बुराई वाली स्त्री के साथ जीवन बिताना संभव नहीं है. वह भले ही ऐसी कलंकित स्त्री को बरदाश्त कर ले, किंतु दूसरे लोग उसे बरदाश्त नहीं करेंगे. वे तो उस की छाया से भी दूर भागेंगे. आंख की किरकिरी की तरह वह उन्हें चुभती रहेगी.

सेमल्या से आंखें मिलते ही बड़वा हाथ ऊंचा कर बोला, "जिस किसी की भी इच्छा हो वह इन दानों को आ कर देख ले."

मगर न तो सेमल्या, न कोई और ही उन दानों को देखने आगे आया. सेमल्या के साथ वाले तो उठ कर कमरे से बाहर चल दिए. सब से आखिर में सेमल्या भी उठ खड़ा हुआ.

बड़वा ने सेमल्या को संकेत से पास बुला कर कहा, "घबरा मत, तेरी घरवाली का भी इलाज हमारे पास है. हम यह दोष दूर कर देंगे."

मगर सेमल्या कुछ बोल नहीं पाया. उस का कंठ जैसे रुंध गया था. अपनी हरीभरी गृहस्थी पर गिरी इस गाज ने उसे संज्ञाशून्य सा कर दिया था. गुनाह के बोझ से जैसे वह दबा जा रहा था.

अपराधी की तरह सेमल्या अपने गांव वालों के पीछेपीछे चलता रहा. राह में किसी से भी वह एक शब्द भी नहीं बोला. बस एक ही प्रश्न उस के मस्तिष्क को इस समय मथ रहा था, 'अब क्या होगा? मेरी घरवाली तो अब मेरे घर में रह नहीं सकती. उसे पासपड़ोस वाले ही मार डालेंगे. खासकर पेमा तो उसे किसी हालत में जीवित नहीं छोड़ेगा. उस का जख्म अभी बिलकुल हरा है. वैसे भी इतने बड़े लांछन के बाद कोई कैसे सहन कर सकता है? डायन को कौन अपने आसपास रहने देगा? डायन को तो लोग कड़कती बिजली, मौत जैसा मानते हैं. मौत को भला कौन न्योता देगा? मंगली के पीहर वाले भी अब उस से नजरें चुराएंगे.'

तो फिर अब क्या किया जाए? यह प्रश्न सेमल्या अपनेआप से बारबार पूछने लगा. किंतु इस प्रश्न का कोई संतोषजनक उत्तर उसे नहीं मिल पा रहा था. लेदे कर बस एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही राह उसे नजर आ रही थी. वह राह थी–इसी बड़वा की शरण. यह बड़वा ही इस लांछन को धो कर उसे फिर से समाज में मुंह दिखाने लायक बना सकता था, उस की हरीभरी जिंदगी को बरबाद होने से वही बचा सकता था.

किंतु सेमल्या जानता था कि इस लांछन को धोने के लिए बड़वा खासी बड़ी रकम मांगेगा. मामूली रकम में वह डायन निकालने को राजी नहीं होगा. इतनी बड़ी रकम वह कहां से लाएगा?

सब से बड़ी बात तो यह है कि बड़वा की रकम का इंतजाम यदि उस ने किसी तरह कर लिया तो भी कठिनाई दूर नहीं होगी, क्योंकि मंगली इस बड़वा के यहां चलने को राजी नहीं होगी. उसे ऐसी बातों पर विश्वास ही नहीं है. वह जब देखो तब इन बातों की खिल्ली उड़ाया करती है.

पिछली बार ढोरों में गलाघोटू बीमारी फैलने पर जब गांव के लोग इस बड़वा को बुलाने गए थे तो मंगली ने इस का तीव्र विरोध किया था. वह पास के कसबे से जानवरों के डाक्टर को बुला लाई थी. बड़वा से इसी कारण मंगली की मामूली सी ठन भी गई थी. यह बड़वा उस दिन जातेजाते कह गया था, ''मास्टरनी बाई, अपनी पढ़ाईलिखाई का ज्यादा घमंड मत करो. किसी दिन बीतेगी तो हमारे ही पास आना पड़ेगा. ये डाक्टर उस समय कुछ नहीं कर पाएंगे.''

बड़वा के उस दिन के ये शब्द सेमल्या के कानों में गूंज रहे थे. वह मन ही मन डरता रहा था कि बड़वा कहीं कुछ अनिष्ट न कर दे. नाराज हो जाने पर ये लोग कुछ भी करने से नहीं चूकते. इसी लिए उस दिन बड़वा के सामने सेमल्या ने मंगली को खूब झिड़का था. अपनी घरवाली की ओर से उस ने बड़वा से माफी भी मांगी थी. वह उस दिन बड़वा को बस में बैठाने के लिए भी सड़क तक गया था. फिर भी वह उस की ओर से पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हो पाया था.

अब जब बड़वा ने उस की घरवाली को सब के सामने चोर घोषित किया तो सेमल्या का माथा ठनका. उसे लगा कि बड़वा शायद पशुओं के रोग के वक्त का ... लिया है. किंतु मन की इस बात को वह ... तक नहीं ला पाया. वह बड़वा से ... बिगाड़ना नहीं चाहता था. आदिवासी म... उस की शक्ति के सामने अपनेआप को न... सा पा रहा था. इसी लिए वह मन मसोस... रह गया.

ऐसी स्थिति में घरवाली को बड़वा ... शरण में जाने के लिए राजी करना सेम... को टेढ़ी खीर नजर आ रहा था. वह जानत... कि मंगली इस प्रस्ताव पर आगबबूला ... जाएगी और छूटते ही दो टूक प्रश्न करे... ''इसी बूते पर तुम ग्रामसेवक का ... करोगे? तुम भी अगर इन की रौ में वह ... चलोगे तो फिर तुम्हारी पढ़ाईलिखाई बे... है. छोड़ दो ग्रामसेवक का काम और बांध... तुम भी इन की तरह लंगोटी. और ना... बड़वा की डुगडुगी पर.''

सेमल्या को लग रहा था कि गांव ... पहुंचते ही वहां खासा ... होगा. डायन का नाम सुनते ही मंगली बि... सांड की तरह भड़क उठेगी. वह इस लांछ... को स्वीकार ही नहीं करेगी. बड़वा की ... पुश्तों को कोसती हुई वह खम ठोक कर मैदा... में आ जाएगी और बड़वा को चुनौती दे... गांव के लोगों को बुराभला कहेगी.

शंकित मन से सेमल्या जब अप... झोंपड़ी के करीब आया तो उस ने देखा कि मंगली एक गठरी लिए द्वार के पास बैठी है. सेमल्या का माथा ठनका. वह ठिठक गया. गठरी उठा कर मंगली उस के पास आते हु... बड़े शांत स्वर में बोली, ''वापस चलो. मु... छोड़ आओ?''

सेमल्या समझ गया कि जंगल की आ... की तरह बात फैल गई है. अतएव उस ने बड़... संजीदगी से पूछा, ''कहां छोड़ आऊं?''

''मेरे पीहर.''

''पीहर?''

''हां.''

''कल चलेंगे.''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, अभी चलो. मैं अब यहां नहीं रहूंगी."

"तुम्हारी नौकरी का क्या होगा?"

"जो होगा, देखा जाएगा."

"नौकरी छोड़ दोगी?"

"हां, तुम चलो मेरे साथ. दिन डूबने वाला है, इसलिए तुम्हें साथ ले रही हूं. नहीं तो मैं अकेली ही चली जाती."

"इसी लिए तो कह रहा हूं कि सुबह चलेंगे."

"नहीं, अभी चलो. यहां मेरा दम घुट रहा है."

"देखो, फजूल की जिद मत करो. पीहर जाने में कोई सार नहीं है."

"तो फिर क्या यहां घुटघुट कर मरने में सार है?"

"वहां भी घुटघुट कर ही मरना पड़ेगा. वे लोग भी इसी दुनिया के हैं."

"यहां से तो अच्छी ही रहूंगी."

"वे लोग तुम्हें आने देंगे?"

"नहीं आने देंगे तो पास ही नदी है, वहां डूब मरूंगी. तुम्हें सताने नहीं आऊंगी."

"देखो, मेरी बात को ठंडे दिल से सोचो, गुस्सा मत करो."

"गुस्सा मैं किस पर करूं? तुम मेरे साथ चलो. जिस मां ने मुझे पेट में नौ माह रखा है, वह अभी जीवित है. वह मेरे लिए द्वार बंद नहीं करेगी."

"मेरी सुनो तो..."

"मैं कुछ नहीं सुनूंगी, तुम्हें साथ नहीं चलना हो तो साफसाफ कह दो, मैं अकेली ही चली जाऊंगी."

गठरी ले कर मंगली चल दी. सेमल्या असमंजस की मुद्रा में कुछ देर खड़ा रहा. फिर वह तेज गति से कदम बढ़ाता हुआ मंगली की ओर चल पड़ा. मंगली के पीछेपीछे चलते हुए उस ने उस से पूछा, "बच्चों को किस के भरोसे छोड़ा है?"

उन की फिक्र मत करो, मौसी की बेटी को सौंप आई हूं."

सेमल्या घरवाली के पीछेपीछे चलता रहा.

सामने वाली पहाड़ी की ओट में सूरज का लाल गोला छिप गया था. क्षितिज पर लाली ही लाली फैल गई थी. चहचहाते पक्षी बड़ेबड़े वृक्षों पर आ बैठे थे. तालाब के फूल संध्या की लाली से जैसे प्रतिस्पर्धा सी कर रहे थे. सागौन की पत्रविहीन नंगी डालियां इस अंचल के निवासियों की तरह निरीह सी लग रही थीं.

पहाड़ी नाले में पानी पी कर जब दोनों आगे बढ़े तो सेमल्या ने अपने मन में घुमड़ती बात पूछने को भूमिका बांधी, "एक बात पूछूं."

"पूछो."

"बुरा तो नहीं मानेगी?"

"नहीं."

सेमल्या का मुंह फिर भी नहीं खुला. मंगली ने इसी लिए जैसे उसे याद दिलाया, "पूछो न, क्या पूछ रहे थे?"

सेमल्या ने मंगली के दोनों कंधों पर हाथ रख कर नजरें मिलाते हुए पूछा, "तू सच में डायन है क्या?"

खिलखिला कर हंसती हुई मंगली

याद

आप की याद अब
आए भी तो महसूस न हो,
दिल है देहात की
सोई हुई राहों की तरह.

—नाजिश प्रतापगढ़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोली, ''हां.''

''देख, हंसी मत कर, सच बता.''

''सच ही कह रही हूं, तुम्हें भी खा जाऊंगी.''

''मुझे अभी तक क्यों नहीं खाया?''

''दूसरी खुराक जो मिलती रही थी.''

''क्या कह रही है?''

''सच कह रही हूं.''

''मुझे तो विश्वास नहीं हो रहा है.''

''क्यों नहीं हो रहा है?''

''मुझे तो यह सब बड़वे की लीला लग रही है.''

मंगली की आंखों में चिनगारी सी भड़क उठी. वह गरजी, ''तो फिर वहां उस बड़वे के सामने क्यों नहीं बोले?''

''बोलने से कोई फायदा नहीं था. नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता?''

''तो फिर क्या उस बड़वे से हार मान लोगे?''

''हार तो हो ही गई. उस ने कलंक जो लगा दिया है. मेरी बात मान ले, मंगली, पीहर का रास्ता छोड़ कर उसी बड़वे की शरण में चल. अभी आखिरी गाड़ी मिल जाएगी.''

मंगली ने कोई जवाब नहीं दिया. गहराते अंधेरे में वह पहाड़ पर चढ़ती रही. पीछेपीछे चलता हुआ सेमल्या बारबार कहता रहा, ''पीहर में यह कलंक नहीं धुलेगा, मंगली. बड़वे के पास ही चली चल. उस से टकराने में हम लहूलुहान हो जाएंगे. अभी हमारा समाज पिछड़ा हुआ है. हमारी कोई नहीं सुनेगा. सब उसी की सुनेंगे.''

मंगली के भीतर द्वंद्व सा छिड़ा हुआ था. पति की बातों में उसे सार नजर आ रहा था, किंतु बड़वा की शरण में जाना उसे अपने स्वाभिमान के विरुद्ध लग रहा था. इस कड़वी गोली को निगलने में वह अपनेआप को असमर्थ पा रही थी. लेकिन वह यह भी जानती थी कि बड़वा से टकराना सरल नहीं है. आदिवासी समाज में उस का बड़ा मान है. वह बहुत शक्तिशाली है और लोगों के मन में अंधविश्वास की जड़ें इतनी गहरी हैं कि उन्हें उखाड़ना आसान नहीं है.

डायन को ले कर ये लोग अनेक अंधविश्वासों से ग्रसित हैं जैसे—डायन की दृष्टि से पत्थर भी फट जाता है. लोगों की मान्यता ऐसी है कि दृष्टि में वह डायनपने का दोष अतृप्त लालसा से आ जाता है और यह दोष बड़वा के सिवा किसी के द्वारा दूर हो ही नहीं सकता. अदृश्य शक्तियों के बल पर बड़वा यह दोष दूर कर देता है, ऐसा उन लोगों का विश्वास है.

मंगली को कुछ सूझ नहीं रहा था कि ऐसे में वह क्या करे. बड़वा ने घर बैठेबैठे उस पर डायन का कलंक लगा कर ऐसा वार किया था कि वह बिलकुल असहाय हो गई थी. उस समाज में उस के लिए अब जैसे स्थान ही नहीं रहा था. बड़वे की शरण में जाने के अलावा जैसे सारे रास्ते ही बंद हो गए थे.

तभी मन ही मन कोई निश्चय सा कर के मंगली पलटती हुई बोली, ''चलो.''

सेमल्या ने चौंकते हुए पूछा, ''कहां?''

''बड़वा के पास,'' मंगली ने नजरें झुकाते हुए कहा.

सेमल्या को जैसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ. उस ने इसी लिए फिर पूछा, ''सच?''

''हां, जब और कोई रास्ता ही नहीं बचा है तो क्या करें?''

बच्चों की तरह पुलकित हो कर सेमल्या बोला, ''चलो.''

किंतु दोचार कदम जा कर ही सेमल्या ठिठक गया और कनखियों से मंगली को घूरते हुए बोला, ''तू वहां पर कोई खुराफात तो नहीं करेगी न?''

मंगली ने आंखें चुराते हुए कहा, ''कुछ भी करूं, तुम अभी से फिक्र क्यों कर रहे हो?''

''तो फिर मैं तेरे साथ नहीं चलूंगा.''

मंगली कोई उत्तर दे, इस से पहले ही उन की नजर चढ़ाई पर आती सवारी गाड़ी पर पड़ गई. मंगली ने दौड़ते हुए कहा, ''चलो जल्दी. मोटर आ रही है.''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों दौड़ते हुए सड़क तक पहुंचे. तब तक मोटर भी आ गई. उन्होंने रुकने का संकेत किया, गाड़ी रुक गई और वे दोनों उस में सवार हो गए.

मोटर की घरघराहट के बीच सेमल्या ने मंगली से पूछा, "बड़वा को देंगे क्या?"

अपने हाथ की अंगूठी की ओर इशारा करती हुई मंगली बोली, "तुम किसी बात की फिक्र मत करो. तुम तो बस चुपचाप बैठे रहना."

सारंगी पर विशिष्ट गीत गागा कर बड़वा डायन उतारने के लिए, किसी अदृश्य शक्ति का आह्वान सा करने लगा. बीचबीच में वह मंगली पर झाड़नी के लिए मोर के पंखों की झाड़ू हिलाता जा रहा था. कोई मंत्र सा बुदबुदाते हुए वह फूंक मारमार एक रंगीन नाड़े में गांठ भी देता जा रहा था. मंगली बिना घूंघट किए बड़वा के सामने बेझिझक बैठी हुई थी. वह एकटक बड़वा की लीला देख रही थी. उस की आंखों में क्षोभ, रोष असमंजस आदि का मिलाजुला सा भाव था. इसलिए बड़वा चौंकचौंक कर बारबार उस की ओर देख रहा था.

तभी मंगली की आंखों से एकाएक जैसे चिनगारियां सी झड़ने लगीं. उस ने अपने होंठ काटते हुए अचकचा कर झाड़नी के लिए हिलाए जा रहे मोर पंखों को पकड़ लिया.

बड़वा ने चौंक कर पूछा, "यह क्या कर रही है, मास्टरनी बाई?"

मंगली ने दांत पीसते हुए कहा, "मैं अब तुझे खाऊंगी. कच्चा चबाऊंगी. मुझ पर डायन सवार हो गई है."

बड़वा ने घबराए से स्वर में कहा, "छोड़ मुझे."

मंगली ने पूरी ताकत से मोर पंखों की उस झाड़ू को तोड़ कर बिखराते हुए कहा, "होशियार हो जा. मैं अब तुझे जीवित नहीं छोड़ूंगी."

पीछे हटते हुए बड़वा अपनी सारंगी उठाने लगा. मंगली ने मुक्कों से तड़ातड़ सारंगी तोड़ दी.

द्वार के पास बैठा सेमल्या आश्चर्य से यह सब देख रहा था.

मंगली ने सारंगी तोड़फोड़ कर बड़वा के गले में झूलती सोने की कंठी मजबूती से पकड़ ली. बड़वा घबरा कर अपनी कंठी छुड़ाने की चेष्टा करने लगा. उस ने मंगली को पीछे धकेला भी, किंतु मंगली ने फिर भी कंठी नहीं छोड़ी. अपनी पूरी ताकत से वह कंठी खींचती ही रही. यों खींचे जाने से बड़वा के गले में दर्द होने लगा. वह चीखा, "छोड़, रांड."

किंतु मंगली पर जैसे जुनून सवार हो गया था. वह बड़वा को धकेल कर उस की छाती पर चढ़ बैठी और कंठी को थामे हुए बोली, "अब मैं तेरा खून पिऊंगी."

बड़वा ने घबरा कर सेमल्या को पुकारा, "सेमलसिंह, संभाल अपनी रांड को, यह मेरे वश की नहीं है."

सेमल्या अपनी जगह से उठा, किंतु मंगली ने हाथ के संकेत से उसे वापस बैठा दिया. बड़वा के गले की कंठी को बल देती हुई वह बोली, "निकाल न मेरी डायन? तू तो

खामोशी

शौक से आप
चुप रहें लेकिन,
खामोशी में भी तो
बात होती है.

—नूर हैदराबादी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बड़ा जानकार है न?"

बड़वा [illegible] था. इस लिए उस ने घिघियाते हुए कहा, "तेरे हाथ जोड़े. तू कंठी छोड़ मेरा दम घुट जाएगा."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़वा ने अपनी सारी उंगलियां मुंह में दे कर दया की भीख मांगते हुए कहा, "मैं तेरे से हारा, मास्टरनी बाई. तू मुझे छोड़ दे."

पर मंगली ने बड़वा के बड़ेबड़े बाल पकड़ कर उस का सिर धरती पर मारते हुए पूछा, "तूने मुझे डायन क्यों बनाया?"

द्रवित स्वर में बड़वा बोला, "इस पापी पेट के लिए सब करना पड़ता है. तू मेरे रास्ते में रुकावट जो बन रही थी."

"अपने पेट के लिए तूने मेरी हरीभरी गृहस्थी में आग लगा दी. मुझ पर झूठा लांछन लगाते हुए तुझे जरा भी लाज नहीं आई."

"गलती हो गई, बाई. माफ कर दे. अपनी अंगूठी वापस ले ले और भी जो जुरमाना करना हो, कर ले. बस मुझे छोड़ दे.

"सब के सामने कबूल कर कि मैं डायन नहीं हूं. तभी मैं छोड़ूंगी. बोल, क्या कहता है?"

"मैं अपने सील सिक्के से प्रमाणपत्र दे दूंगा."

"सब बात कबूल करेगा उस में?"

"यह लिख दूंगा कि मैं ने डायन निकाल दी."

"नहीं, डायन थी ही नहीं, यह लि[illegible]

"मेरा [illegible] चौपाट मत कर, [illegible] अपना लांछन दूर करा ले. भैया सेमल[illegible] समझा इस को?"

सेमल्या अभी तक असमंजस की मु[illegible] बैठा हुआ था. बड़वा की इस याचना प[illegible] उठ खड़ा हुआ और अपनी घरवाली का [illegible] थामते हुए बोला, "उठ, इतना ही बहुत [illegible]

किंतु सेमल्या की घरवाली ने जिद [illegible] ली. बड़वा के गले की कंठी को बल दे[illegible] वह बोली, "नहीं, मैं तो इस का यह [illegible] धंधा ही चौपट करूंगी ताकि यह भविष्य [illegible] मेरी तरह किसी और को न सताए."

सेमल्या और बड़वा दोनों ने मंगली [illegible] खूब समझाया. मगर वह टस से मस नहीं [illegible] बड़वा ने इच्छित प्रमाणपत्र लिख कर दि[illegible] तभी उस ने कंठी छोड़ी.

बड़वा द्वारा दिए गए इस प्रमाणपत्र [illegible] सेमल्या और मंगली आदिवासी अंचल [illegible] लगने वाले हर हाट (साप्ताहिक बाजार) [illegible] सब को दिखाते फिरे. डोंडी पिटवा कर वे [illegible] हाट में कंठी वाले बड़वा का भंडाफोड़ क[illegible] थे.

लेकिन इस आदिवासी अंचल में [illegible] अनोखी डायन की चर्चा हैरत से होने ल[illegible] मंगली की बात को लोग अब बड़ी उत्सुक[illegible] से सुनने लगे.

एक तलाक ऐसा भी

पूर्वी जरमनी में बर्लिन की एक महिला ने अपने पति को इस लिए तलाक दे दिया कि उस का पति घरेलू कामकाज इतना अधिक करता था कि उस के पास अपनी पत्नी के लिए कुछ करने के लिए समय ही नहीं बचता था.

काटबस के निकट लुइबेन कसबे की रहने वाली उक्त महिला ने अदालत में कहा कि पहले तो मैं ने उसे अपना आदर्श पति समझा था क्योंकि वह खाना पकाने, घर की सफाई, कपड़ों की धुलाई, बाजार से खरीदारी, बच्चों की देखभाल और यहां तक कि खिड़कियों की सफाई आदि के सभी कार्य को अच्छी तरह से कर लेता था, किंतु इन सब के बावजूद मैं पागल हो गई क्योंकि मेरे करने के लिए वह कोई काम छोड़ता ही नहीं था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याद के बादल

बड़ा उत्पात करते हैं
तुम्हारी याद के
बादल.
कभी खिड़की
खुले, सूने झरोखे से
झमाझम
आ बरसते पास धोखे से
विकल दिनरात करते हैं
तुम्हारी याद के
बादल.
कभी छत
धूल, आपूरित मुंडेरों पर
महज
हस्ताक्षर करते कनेरों पर
प्रबल आघात करते हैं
तुम्हारी याद के
बादल.

—इसाक 'अश्क'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता मुक्ता विस्तार योजना में भाग लीजिए

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं कि... फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी... भी हजारों वर्ग मील भारतीय... विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की ... लिए बहुत बड़े पैमाने पर सा... सहयोग और सद्भाव की आवश... होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्था... पूंजीपति या राजनीतिक दल से स... नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रक... सहायता स्वीकार करती है. यह ... एक ही वर्ग की सहायता और बल... निर्भर है. और वह हैं सरिता के ... इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्सा... सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ ...

हिंदू समाज के नवनिर्मा... में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी ... सरकार का और देशी व ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक ''दिल्ली प्रेस'' के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नईदिल्ली-110055.

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्कर मेल

लेख • ज्योतिर्मय

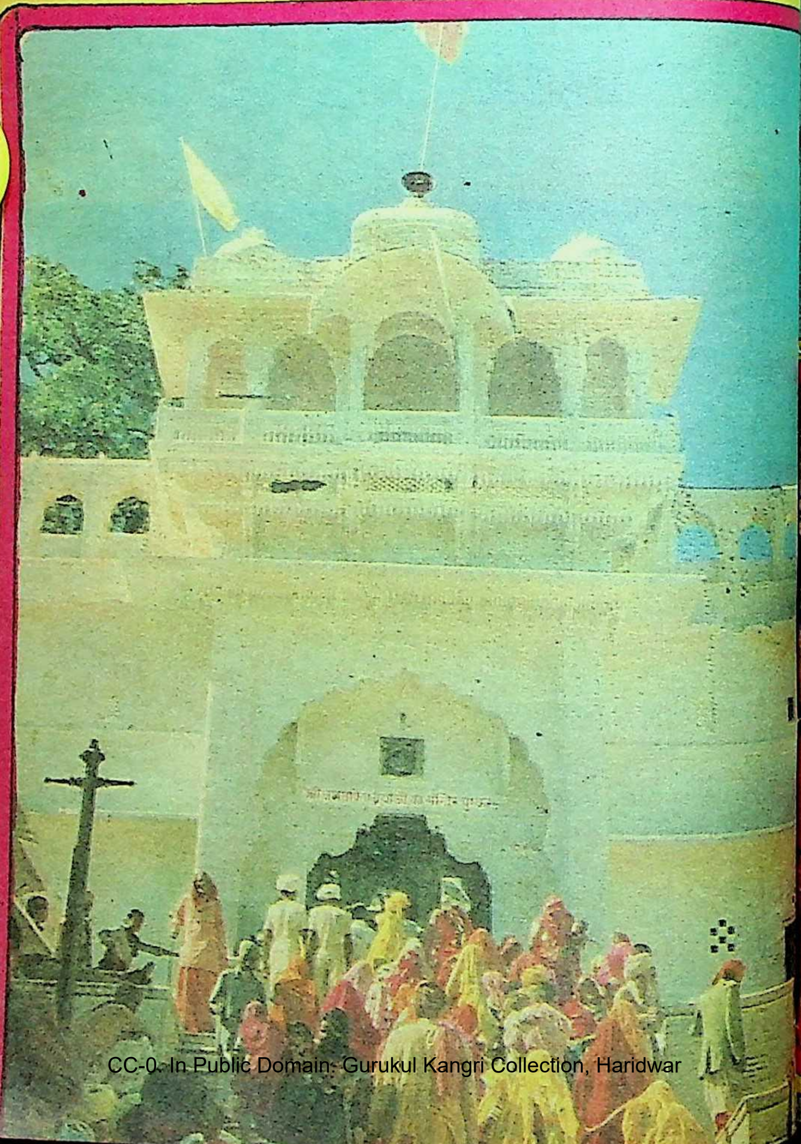

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म के नाम पर लूट

थोथी मान्यताओं और झूठे प्रचार का सहारा ले कर धर्म के धंधेबाज पुष्कर मेले के नाम पर भोली जनता को किस प्रकार लूटते हैं?

राजस्थान के पूर्वी अंचल में अरावली पर्वतश्रेणियों से घिरा एक शांत शहर है— अजमेर. यहां से लगभग 11 किलोमीटर दूर एक कसबा है— पुष्कर, जिसे तीर्थराज पुष्कर कहते हैं. ऐसी मान्यता है कि सभी तीर्थों की यात्रा कर ली जाए और पुष्कर की यात्रा न की जाए तो तीर्थयात्रा का पुण्य नहीं मिलता.

पुष्कर को अन्य तीर्थ स्थानों से अधिक या विशेष महत्त्व देने का कारण है यहां का ब्रह्मा का मंदिर. ब्रह्मा का मंदिर और कहीं नहीं है, इसलिए बारहों महीने यहां तीर्थ यात्रियों का आनाजाना बना रहता है. कार्तिक में तो यात्रियों की संख्या बहुत बढ़ जाती है. एकादशी से पूर्णिमा तक भरने वाले मेले में तो

पुष्कर मेले के दो दृश्य (बाएं) पत्थर पर टिकी श्रद्धा व (नीचे) खिलौनों के सहारे पलती जिंदगी.

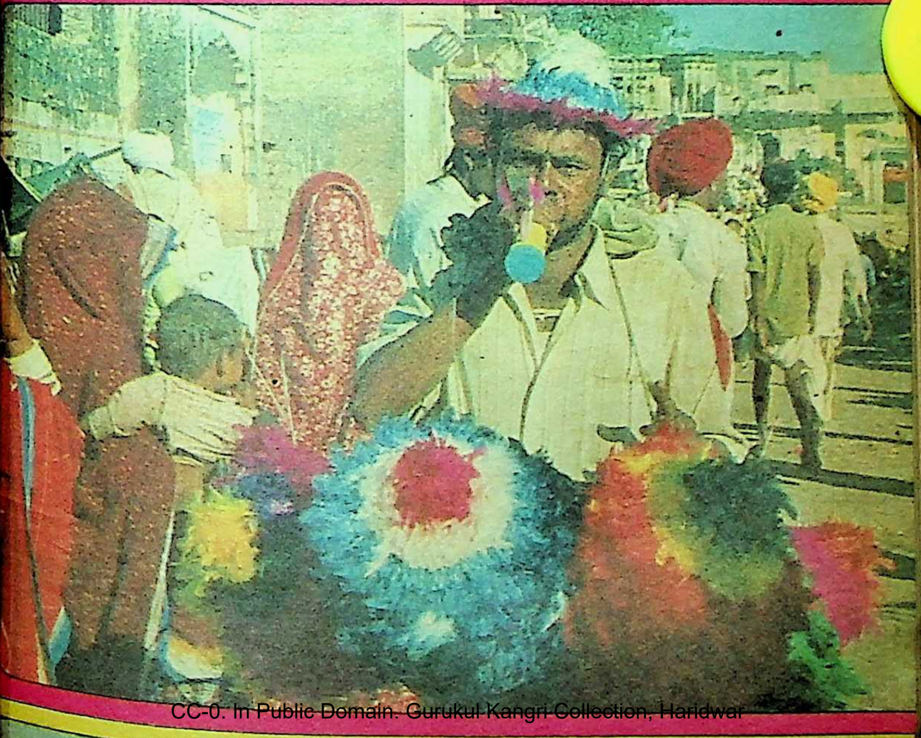

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

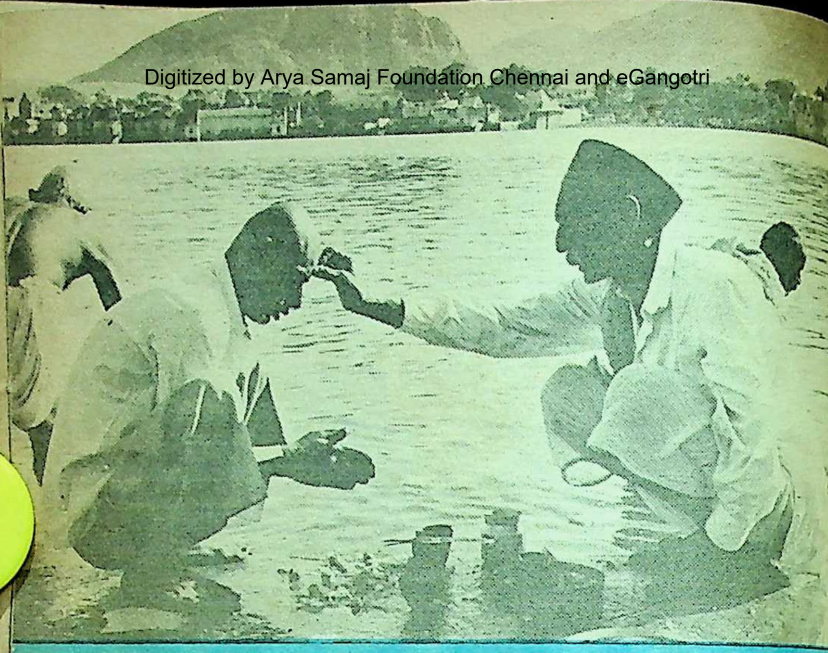

पिंडदान द्वारा जनता को धर्मभीरु बनाने का नाटक.

आखिरी दिन यात्रियों की संख्या दोढाई लाख तक पहुंच जाती है.

ब्रह्मा से संबंधित एकमात्र तीर्थ स्थान पुष्कर में यात्रियों के लिए सब से बड़ा आकर्षण का केंद्र है– पुष्कर ताल और ब्रह्मा मंदिर. दोनों का एकदूसरे से अनन्य संबंध है. पुष्कर ताल में नहा कर ब्रह्मा मंदिर में दर्शन करने से ही तीर्थ यात्रा का फल मिलता है. यह आम धारणा है. इन्हें कब बनाया गया और किस ने बनाया, इस संबंध में कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती.

ब्रह्मा मंदिर के महंत लहरपुरी से पूछने पर उन्होंने इसे ढाई हजार वर्ष पुराना बताया. आरंभ से ही वर्तमान महंत के पूर्वज इस मंदिर की पूजा व्यवस्था देखते आए हैं. कहते हैं कि यहां ब्रह्मा मंदिर का निर्माण सर्वप्रथम आदि शंकराचार्य ने करवाया था, जो लगभग 1,200 वर्ष पहले हुए हैं. उन्हीं के द्वारा प्रवर्तित दशनाम संन्यासी संप्रदाय के पुरी महंत मंदिर की देखभाल करते हैं. मंदिर के वर्तमान महंत लहरपुरी ने बताया कि कभी हमारे पास सैकड़ों बीघा जमीन हुआ करती थी. कई गांवों की जागीर थी. अब तो केवल मंदिर की आमदनी से ही मंदिर के रखरखाव और उन के परिवार तथा कर्मचारियों के खर्च की व्यवस्था करनी पड़ती है.

मंदिर के नाम अभी भी लगभग 200 बीघा जमीन है, कुछ दुकानें हैं, मकान भी हैं. इन से होने वाली आमदनी के अलावा आय का सब से बड़ा स्रोत है– दान और चढ़ावा. मंदिर की सीढ़ियां शुरू होने से मूर्ति के सामने पहुंचने तक कोई दस जगह दानपेटियां रखी हुई हैं. किसी दानपेटी पर लिखा था– पुष्कर राज में अन्नकूट के लिए दान दीजिए, तो किसी पेटी पर लिखा था–गो सेवा के लिए दान दे कर पुण्य के भागी बनिए.

मेले के समय यात्रियों की संख्या सामान्य दिनों की अपेक्षा सौ गुना बढ़ जाती है. महंतजी के अनुसार ही सामान्य दिनों में डेढ़दो हजार यात्री आते हैं. मेले के दिनों में, जो कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक होता है, यात्रियों की संख्या दो लाख तक पहुंच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है. विभिन्न स्थानों पर रखी दानपेटियों तथा इंद्र, पातालेश्वर, महादेव, कुबेर, नारद, पंचमुखी हनुमान, सूर्य और गणेश आदि देवताओं की प्रतिमा के सामने दर्शनार्थी कम से कम पांच रुपए तो चढ़ाता ही है. इस तरह केवल दान से ही इन पांच दिनों में 10 लाख रुपए की आय हो जाती है.

मुख्य मंदिर में ब्रह्मा की मूर्ति के सामने एक बड़ा सा थाल रखा हुआ है. उसे चारों ओर से घेर कर बैठे मंदिर के कर्मचारी बराबर निगाह रखते हैं कि किस व्यक्ति ने क्या चढ़ाया है. लेखक कुछ समय तक वहां खड़े रह कर देखता रहा और दर्शनार्थी द्वारा चढ़ाई गई रकम तथा उसे प्राप्त होने वाले प्रसाद या चरणामृत में एक अजीब सामंजस्य पाया. एक व्यक्ति ने दो का नोट चढ़ाया. उसे चरणामृत मिल गया. दस का सिक्का डालने वाले एक ग्रामीण को ब्रह्मा की मूर्ति के आगे से हांक सा दिया गया. यह चतुर्दशी की घटना है.

महंत लहरपुरी दशनामी संप्रदाय के प्रतिष्ठित पीठाधीश हैं. गिनेचुने लोग ही उन से मिल पाते हैं. मुक्ता के छायाकार ने जब उन का फोटो लेना चाहा तो वह बड़ी आसानी से तैयार हो गए और उठ कर बरामदे में आ गए. अंदर कमरे में उन के कई चित्र प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी, भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी, कई केंद्रीय मंत्रियों, राजस्थान के मंत्रियों तथा विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं के साथ लगे हुए थे. अर्थात लगभग सभी प्रतिष्ठित नेता यहां आ चुके हैं.

खैर, महंत लहरपुरी जब बाहर आए तो एक व्यक्ति दौड़ कर उन के पास आया और उन के पैरों में दसदस के दो नोट व एक रुपए का सिक्का रख कर एक तरफ खड़ा हो गया. लेखक ने उस से कहा कि वह एक तरफ हो जाए तो वह आग्रह करने लगा कि महाराज के साथ एक फोटो उस का भी खींच दिया जाए. बड़ी मुशकिल से उसे समझा सके कि हम अखबार वाले हैं और हमें केवल उन की ही फोटो चाहिए.

पुष्कर मेले में विदेशी पर्यटक–सिर्फ तमाशा देखने के लिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार, बुंदे, चूड़ियां— महिलाओं का खास आकर्षण यानी किसी भी बहाने खरीदारी.

फोटो लेने में तो कुछ ही क्षण लगे, किंतु महंतजी करीब पांचसात मिनट तक बरामदे में ही टहलते रहे. इतनी देर में 12 व्यक्तियों ने उन के चरण छुए और किसी ने दस तो किसी ने पांच रुपए उन के चरणों में रखे. अंदर जाने के बाद भी लोग उन्हें प्रणाम करने आते रहे. जितने भी लोग हमारे देखतेदेखते प्रणाम करने आए, उन में से एक भी खाली हाथ नहीं था और न ही किसी ने पांच रुपए से छोटा नोट उन के पैरों पर रखा. इसी से अंदाज लगाया जा सकता है कि चढ़ावे, मकान और दुकानों के किराए तथा जमीन से होने वाली आमदनी के अलावा महंतजी की मुलाकातें भी खासी कमाऊ होती हैं. एक मोटा सा अंदाज है कि मंदिर की आमदनी कम से कम 20 लाख रुपए सालाना है.

ब्रह्मा का वर्तमान मंदिर लगभग 175 साल पहले बनाया गया था. यों यहां ब्रह्मा की प्रतिष्ठा 1,200 साल पहले हुई बताई जाती है, परंतु मध्य युग में इस मंदिर को मुसलमान शासकों ने गिरा दिया और ब्रह्मा की मूर्ति भी तोड़ डाली. सन 1719 में पहली बार नए सिरे से जयपुर की एक ब्राह्मण स्त्री ने यहां ब्रह्मा की मूर्ति प्रतिष्ठापित की और उस के 99 वर्ष बाद दौरतराम सिंधिया के एक मंत्री ने मंदिर बनवाया.

विवादों से घिरा गायत्री मंदिर

इसी मंदिर में ब्रह्मा की मूर्ति के पास ही गायत्री की प्रतिमा है. ब्राह्मण संध्यावंदन के समय इसी गायत्री की उपासना करते हैं. प्रसिद्ध वेदमंत्र गायत्री इसी देवी की प्रार्थना में रचा गया माना जाता है. उसी गायत्री का जन्मस्थान होने के कारण भी यह स्थान सभी तीर्थों में विशिष्ट माना जाता है. ब्रह्मा की तरह गायत्री का भी मंदिर केवल यहीं है लेकिन अब सैकड़ों जगह गायत्री के मंदिर बन गए हैं. मथुरा की एक संस्था गत 40 वर्षों से गायत्री का प्रचार कर रही है और उस संस्था या संप्रदाय के अनुयायियों ने जगहजगह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गायत्री मंदिर बनवाए हैं.

इस संस्था का एक मंदिर 'गायत्री शक्तिपीठ' के नाम से अजमेर में भी है. एक और गायत्री मंदिर है; जो उसी जगह से कुछ दूर हट कर बना है. पहले जहां पुष्कर में गायत्री पर ब्रह्मा मंदिर के महंत का ही एकाधिकार था, वहां अब तीनतीन महंत तैयार हो गए हैं, और गायत्री का जन्मस्थान समझे जाने के कारण तीर्थ यात्रियों की जेबें हलकी करवाते हैं. मेले के समय नए बने गायत्री मंदिर में एक हवन चल रहा था. बड़ी संख्या में यात्री वहां भी जा रहे थे और शक्तिभक्ति के अनुसार दान चढ़ा रहे थे.

नए बने मंदिर का एक कार्यकर्ता हमें अजमेर बस स्टेंड पर ही मिल गया. बिना किसी परिचय के उस ने हम से बातचीत शुरू कर दी और इस बात के लिए प्रेरित करने लगा कि पुष्कर बस स्टेंड के पीछे ही गायत्री मंदिर है. सब से पहले हम वहीं जाएं. हमें मालूम था कि पुष्कर में गायत्री की प्रतिमा केवल ब्रह्मा मंदिर में ब्रह्मा की मूर्ति के ही पास है और ब्रह्मा का मंदिर बस स्टेंड से दूर है. कुछ देर बाद वही व्यक्ति अन्य लोगों को भी इस तरह की सूचना देने लगा. इतना ही नहीं जब बस चल पड़ी तो वह आदमी भी बस में चढ़ गया और लोगों को नए गायत्री मंदिर के बारे में बताने लगा.

पुष्कर के बस स्टेंड पर वह व्यक्ति अपने साथ 10-12 लोगों को मंदिर की ओर लिए जा रहा था. इस मंदिर के बारे में हम ने ब्रह्मा मंदिर के एक पुजारी से पूछा तो उस ने बताया कि गायत्री का असली मंदिर तो यही है. लक्ष्मी के मंदिर विष्णु के साथ होते हैं. सीता के राम के साथ, पार्वती के शंकरजी के साथ तो गायत्री का मंदिर बिना पति के अलग से कैसे हो सकता है.

लौटते समय हम लोग नए गायत्री मंदिर में गए. वहां भी एक पुजारी से, जिस ने अपने कुरते पर एक मशाल का बिल्ला लगा रखा था, लेकिन मैं ने यही सवाल किया तो वह शास्त्रीय व्याख्याएं करने लगा. उन व्याख्याओं को यहां देना अनावश्यक है. अलबत्ता दर्शनार्थी वहां भी काफी संख्या में आजा रहे थे. कहने की आवश्यकता नहीं कि मंदिर की जरूरतें और दानपुण्य का महत्त्व बता कर यहां भी लोगों को चढ़ावा चढ़ाने के लिए प्रेरित किया जा रहा था.

पुष्कर ताल

ब्रह्मा मंदिर के सामने ही स्थित है—पुष्कर ताल. उस के चारों ओर पहाड़ियों से झरझर कर पानी उस में आता रहता है. लगभग 10 मीटर गहरे इस ताल के चारों ओर 52 घाट हैं, किंतु वाराह घाट, गऊ घाट और ब्रह्म घाट अन्य घाटों की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण माने गए हैं. मुगल सम्राट जहांगीर ने भी यहां की यात्रा की थी और वह इस ताल की सुंदरता से प्रभावित हुआ था. उस ने

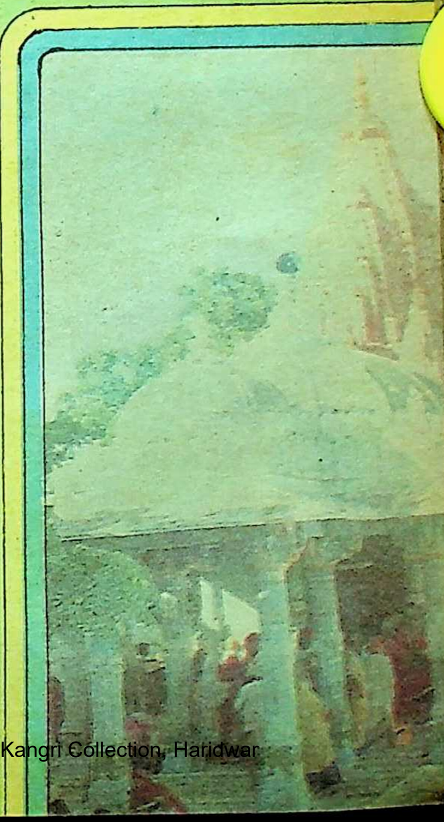

ब्रह्मा मंदिर : धार्मिक आस्थाओं से जकड़े लोगों का केंद्र?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

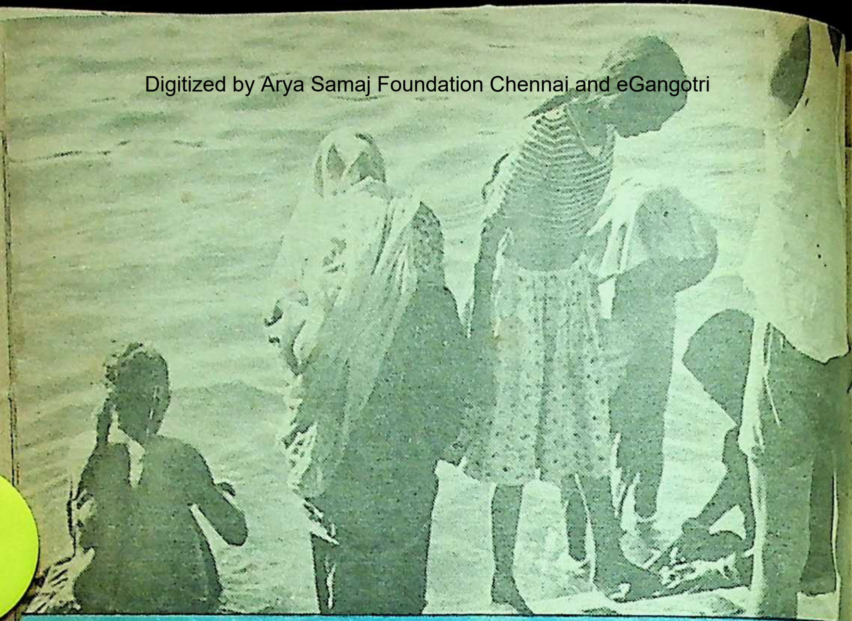

घाट पर स्नान करती औरतें.

पुष्कर ताल के निकास मार्ग पर लाल पत्थरों के दो सुंदर मंडप बनवा दिए थे.

सन 1809 में मराठा सरदारों ने ताल का पुनर्निर्माण कराया. इस ताल में प्रतिवर्ष लाखों लोग आते और स्नान करते हैं, परंतु किसी भी घाट पर स्त्रियों के लिए नहाने की अलग से कोई व्यवस्था नहीं है. देहातों से आने वाली सरल स्वभाव की स्त्रियां और पुरुष एकदूसरे से आंख का परदा रखते हुए स्नान करते हैं. किंतु विदेशी पर्यटकों और शहरी सैलानियों के लिए ये दृश्य मनोरंजन का साधन बन गए हैं. जहांतहां उन्हें कैमरा लटकाए घूमते देखा जा सकता है.

फोटो लेने पर प्रतिबंध

कुछ समय पहले स्थानीय नागरिकों ने घाट पर नहाती हुई स्त्रियों के फोटो खींचने पर रोक लगाने की मांग की थी. घाट पर स्नान दृश्य के फोटो लेने पर प्रतिबंध लगाया तो गया किंतु हम ने केवल पूर्णिमा के दिन ही गऊ घाट, ब्रह्म घाट, वाराह घाट, नृसिंह घाट पर पुलिस वालों को फोटो खींचने से रोकते हुए देखा.

एक जगह कोई सज्जन फोटो लेने आमादा से थे. किसी भी कीमत पर वह फो लेना चाहते थे. पुलिस वाले को उन्होंने पट और एक स्थानीय समाचारपत्र की प्रति दि कर कहा कि अगर फोटो लेने की मनाही है इस अखबार में यह फोटो कैसे छपा.

इस के अलावा भी उस व्यक्ति ने कई तरह की बातें बना कर शायद फोटो के लिए पुलिस वाले को मना लिया, क्यों हम जब थोड़ी दूर जा कर वापस आ रहे थे वही व्यक्ति घाट की ओर से कैमरा लिए रहा था, जब कि पुलिस वाले जहां बैठे थे चारपांच कैमरे रखे थे. स्पष्ट था कि उ कैमरों के मालिक घाट पर गए हुए थे.

घाटों पर स्नान करने और कपड़े पह के बाद यात्री जैसे ही जाने के लिए तैयार हो हाथ में एक छोटी-सी कटोरी लिए जिस रोली घुली हुई रहती, पंडे आगे आ ज यात्री जब तक कुछ समझें, तब तक वे उस माथे पर टीका लगा चुका होता और प रुपए सवा रुपए का लेनदार हो जाता. हम कई घाटों का जायजा लिया. कहीं भी यात्रि को टीका लगवाने से एतराज करते नहीं दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर यह आपाधापी क्यों? एक पंडे से पूछा तो उस ने कहा, "हमेशा से हम ही इस घाट पर जजमानों की सेवा करते रहे हैं. अब दूसरे लोग घुसने लगे, इसलिए थोड़ा सावधान रहना पड़ता है."

दूसरे से पूछा तो उस ने भी घुमाफिरा कर यही उत्तर दिया. अगर संबंधित घाट पर जजमानी करना किसी का पैतृक अधिकार है तो वह उस का विरोध क्यों नहीं करता?

इस सवाल का जवाब था कि झगड़ा करेंगे तो हम दोनों झगड़े में उलझे रहेंगे और दूसरे लोग जजमान के माथे पर रोली पोत जाएंगे.

पिंडदान के बहाने

गया की तरह पुष्कर में भी पितरों के श्राद्ध तर्पण का विशेष महत्त्व है. राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र के लोग तथा गया की अपेक्षा पुष्कर को सस्ता समझने वाले व्यक्ति अपने पूर्वजों का पिंडदान करने यहीं आते हैं. कार्तिक पूर्णिमा को तो इन तीर्थ पुरोहितों को फुरसत ही नहीं होती. आम दिनों में ये लोग पुष्कर के अन्य दर्शनीय मंदिरों की यात्रा करा देते हैं, किंतु कार्तिक पूर्णिमा को इस काम के लिए तैयार होने वाले शायद ही मिलेंगे, क्योंकि इस दिन तर्पण कराने वालों की संख्या काफी बढ़ जाती है.

एक घाट पर देखा कि पंडा तर्पण के लिए आए व्यक्ति से पहले ही दक्षिणा तय कर रहा था. अकसर यह होता है कि पंडे अपने जजमान से तर्पण और पिंडदान की विभिन्न क्रियाओं के बीच में ही सवा रुपए, पांच रुपए, 11 रुपए चढ़ाने के लिए कहते हैं. यहां भी ऐसा ही होता है किंतु जजमान अधिक और पंडे कम हो जाने के कारण पहले से यह तर्पण की फीस तय हो जाती है. एक व्यक्ति को जो अपने पिता का पिंडदान करने आया था, हमारे सामने एक पंडे ने इसलिए झिड़क कर अलग कर दिया कि वह अपने पास पैसे कम होने की बात कह रहा था और फीस में कुछ कमी चाहता था.

ब्रह्मा मंदिर के अलावा पुष्कर में वाराह मंदिर, अटमटेश्वर महादेव, रमा वैकुंठ और रंगनाथजी के पुराने मंदिर हैं. रमा बैकुंठ मंदिर के बाहर बोर्ड लगा हुआ है कि यह प्राइवेट मंदिर है और इसे मारवाड़ी सेठ बांगड़ ने अपने परिवार वालों के लिए पूजा करने के उद्देश्य से बनवाया था. लगभग 50 लाख की लागत से बने इस मंदिर में भगवान के सोनेजागने और लोगों को दर्शन देने का समय नियत है. फिर भी पुजारी जब चाहे मंदिर बंद कर देते हैं. इस से दर्शकों की भीड़ बढ़ जाती है. मेले के दिनों में तो इसी कारण यहां इतनी भीड़ हो जाती है कि मंदिर के सामने से निकलने में एक घंटा लग जाता है.

कार्तिक पूर्णिमा पर स्नान का विशेष महत्त्व होने के कारण ही यहां एकादशी से पूर्णिमा तक मेला लगता है. कहा जाता है कि

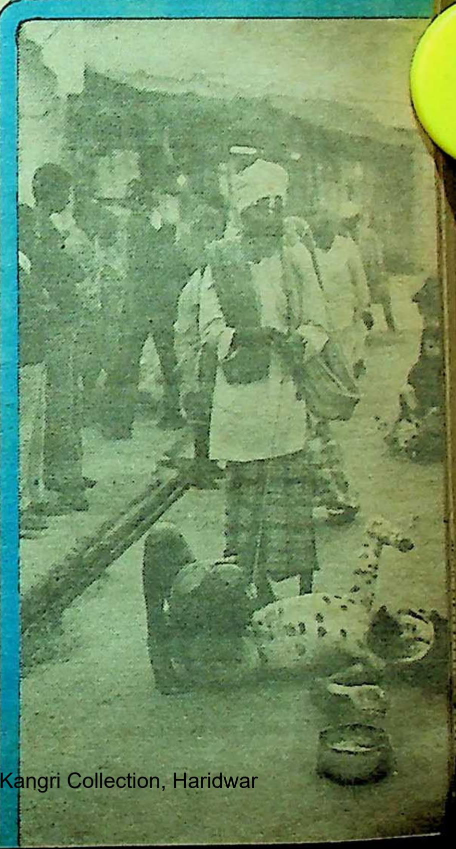

धर्म के नाम पर रोटी का बंदोबस्त.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

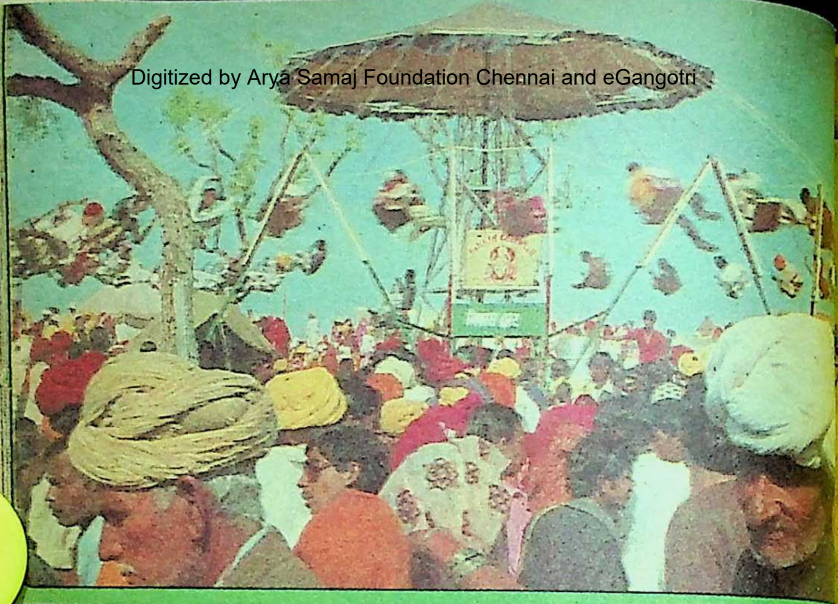

पुष्कर मेले में मनोरंजन के भी भरपूर साधन होते हैं.

इन्हीं दिनों ब्रह्मा ने यहां यज्ञ किया था. अस्तु, इन दिनों यहां आने, पुष्कर ताल में स्नान करने और ब्रह्मा मंदिर में दर्शन करने के लिए दूरदराज से लोग काफी समय पहले से योजना बनाने लगते हैं. लेकिन उन्हें यहां क्या मिलता है, इस का उत्तर शायद वे भी नहीं जानते. कई लोगों से इस बारे में पूछा तो पशुमेले में जानवर बेचने या खरीदने के लिए आने वालों के अलावा अन्य लोगों ने घुमाफिरा कर यहां आने का उद्देश्य पुष्कर में स्नान करना ही बताया.

इस से क्या होगा? इस प्रश्न के उत्तर में लोग कहते, "हमें यह तो नहीं मालूम, पर हम लोग हर साल यहां आने की कोशिश करते हैं. जब आ जाते हैं तो अपना भाग्य सराहते हैं. नहीं आ पाते हैं तो जी में थोड़ा दुख होता है."

पुष्कर ही क्यों किसी भी तीर्थ की यात्रा का उद्देश्य परंपरा के प्रति अंधभक्ति ही हो सकता है. उसी के कारण लोग सैकड़ों रुपए खर्च कर यहां जाते हैं. जब कि उसी पैसे का उपयोग अपनी नितांत जरूरी आवश्यकताओं को पूरा करने या घर उपयोगी साधन लाने के लिए किया जा सकता है.

पुष्कर तीर्थ में एक खास बात देखने में आई कि यहां विदेशी लोग संख्या में आते हैं. पर्यटन विभाग ने उन लिए अलग से पर्यटक गांव बना रखा कहने को तो इस गांव में कोई भी ठहर सकता था, किंतु यहां ठहरना इतना महंगा है कि केवल तीर्थ यात्रा के उद्देश्य से आने वा लोगों के बस का नहीं हो सकता. खैर, यह खर्च की बात हुई. पर्यटक गांव में कि सामान्य भारतीय के लिए घुसना भी वर्जित था. इस का कारण समझ में नहीं आया.

हम लोग जब पर्यटक गांव में जाने तो प्रवेशद्वार पर ही हमें रोक लिया गया. गया कि किस की अनुमति है. अपना परि देने के बाद द्वारपाल की तरह खड़े एक पु वाले ने प्रवेशद्वार के पास ही बने एक तंबू ओर इशारा किया और कहा कि वहां अनुमति ले लें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहीं एक अधिकारी से पर्यटक गांव में भारतीयों को न घुसने देने का कारण पूछा गया तो वह बोला, ''इस की कोई खास वजह नहीं है. अंदर ज्यादातर लोग विदेशी या महत्त्वपूर्ण व्यक्ति (विदेशी दूतावासों के लोग) हैं. भारतीयों की आदत है कि वे विदेशियों को घूरघूर कर देखते हैं, इसलिए हर किसी को अंदर नहीं जाने दिया जाता, क्योंकि इस प्रकार विदेशियों पर हमारी सभ्यता का गलत असर पड़ता है.

उन अधिकारी के अनुसार भारतीय तो केवल घूरघूर कर ही देखते हैं, किंतु विदेशी पुष्कर ताल के आसपास किसी तरह नहाती हुई जवान राजस्थानी औरत का फोटो खींचने के लिए मंडराते रहते हैं. सो क्या विदेशियों को इस तरह के फोटो खींचने देना उचित है?

धर्म के नाम पर भीख

पुष्कर बस अड्डे से मंदिर और मेले तक पहुंचने के लिए पाच और कहींकहीं सात फीट चौड़ी सड़क से जाना पड़ता है, वापसी के लिए भी वही रास्ता है. कहींकहीं गलियां फूटती हैं. ऐसे चौराहों पर विकलांग भिखारी, कोढ़ी, साधु तो कतार सी बांधे पड़े ही हुए थे, पेशेवर भिखारी भी देवीदेवताओं का रूप बनाए लाइन लगा कर खड़े थे. इतना ही नहीं सात फीट चौड़ी सड़क के बीच में भी कोढ़ी, लूलेलंगड़े भिखारी रास्ता रोके पड़े थे. पर्यटन विभाग की दृष्टि में आम भारतीय को पर्यटक गांव में जाने देने से तो विदेशियों पर गलत असर पड़ सकता है, पर वहां की सड़कों पर भिखारियों के ये दृश्य क्या अच्छा असर डालते होंगे?

राजस्थान में पिछले साल सूखा पड़ा था. मेले में आने वाले दुकानदार, मंदिरों के पुजारी, अधिकारी और रिकशे, तांगे वाले तक चौदस के दिन तक यह कह रहे थे कि इस बार लोग रुपए में चार आने बराबर भी नहीं आए. अर्थात उस समय तक यात्रियों की संख्या पिछले वर्षों की तुलना में 25 प्रतिशत भी नहीं थी. लेकिन पूर्णिमा के दिन यात्रियों की संख्या बेहद बढ़ गई. उस शाम को जब रिकशे, तांगे वालों और दुकानदारों तथा स्थानीय नागरिकों से पूछा गया कि मेला कैसा रहा अर्थात यात्री कम आए हैं या पिछले सालों की तरह तो उत्तर मिला कि शुरू के चार दिनों

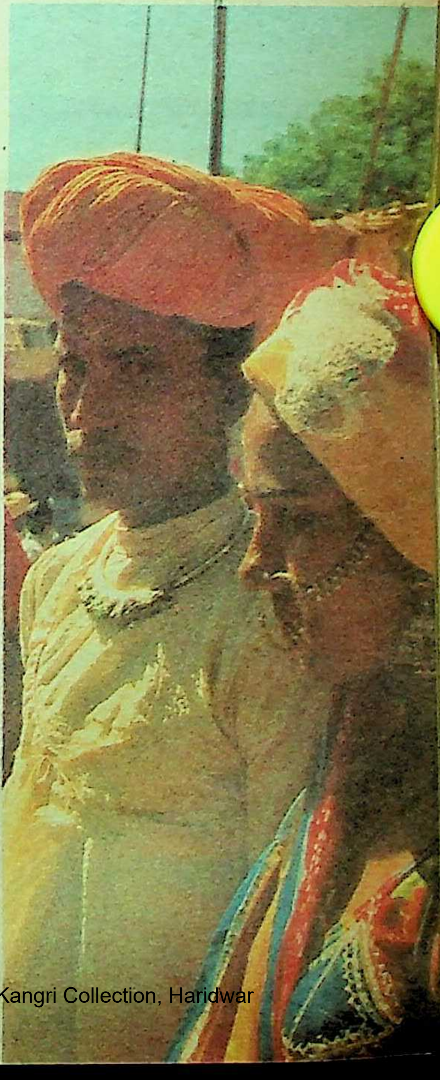

मेले में आए लोग जिन्हें पुष्कर आने का उद्देश्य भी नहीं मालूम.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलात्कार, हत्या, डकैती, तस्करी, जालसाजी, वेश्यावृत्ति, की कहानियां —

क्या आप का सही मानसिक विकास करती हैं?
क्या आप का सही मनोरंजन करती हैं?
क्या आप को सही राह दिखाती हैं?

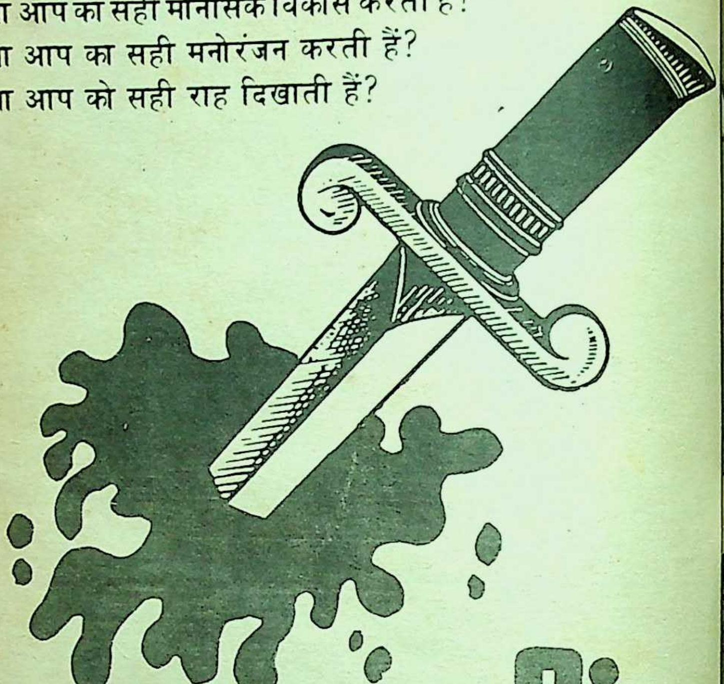

नहीं...

वे सिर्फ क्षणिक रोमांच देती हैं...
गलत दुनिया में भटकाती हैं...
चरित्रहीनता की ओर ले जाती हैं...

सुरुचिपूर्ण, स्वस्थ मनोरंजन के लिए प्रेरक और उद्देश्यपूर्ण साहित्य पढ़ें.

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं
ज्योति नए युग की घरघर जगाएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमत्कार या जनता को भयभीत कर पैसे ऐंठने का नाटक.

घाट के किनारे खड़ी जनता

तक तो लोग कम रहे, पर अब कसर पूरी हो गई है.

हो सकता है अन्य सालों में यात्री पांचों दिन ठहरते हों. पर पिछले साल सूखे के कारण केवल एक दिन के लिए ही आए, लेकिन आए तो सही. आने वालों की संख्या लगभग दो लाख बताई जाती थी. एक व्यक्ति के आनेजाने का औसत खर्च 50 रुपए भी मानें तो इस का मतलब यह है कि दो लाख व्यक्तियों ने मेला देखने पर एक करोड़ रुपए फूंक दिए. यह रुपया बस भाड़े के रूप में या तो सरकारी जेब में गया अथवा चढ़ावे और दान के रूप में मंदिरों या धर्म के धंधेबाजों की जेब में.

निरंतर प्रचार द्वारा धर्म, पुण्य और तीर्थ स्नान के संबंध में फैलाए गए जहर का ही परिणाम है कि बिना सूचना, पूर्व घोषणा के लोग जरूरी काम छोड़ कर भी पुष्कर जैसी जगहों पर पहुंच जाते हैं, जहां जाने का उद्देश्य भी उन्हें नहीं मालूम. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर ऐसे इक बार मिलो

पहली बार मिले थे जैसे फिर ऐसे इक बार मिलो
मैं दीवाना बन कर देखूं तुम दीवानावार मिलो.
सुर्ख दुपट्टा तन से सरके अंग सलोना बिखरा जाए
मन में चमके प्यार का सूरज चेहरा जैसे निखरा जाए,
होंठों पर हों फूल खुशी के बन के मस्त बहार मिलो
मैं दीवाना बन कर देखूं तुम दीवानावार मिलो.
बहकेबहके पांव पड़ें और सांस भी जैसे रुकरुक जाए
बोझ बढ़े जब शर्मोहया का पतली कमर भी झुकझुक जाए,
कुछ तो बोलो, बांहें खोलो, बन के गले का हार मिलो,
पहली बार मिले थे जैसे फिर ऐसे इक बार मिलो

—इब्राहीम 'अश्क'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये शिक्षक

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए एवं सर्वोत्तम पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

हमारे विद्यालय में एक शिक्षक थे. हम सभी उन की कंजसी तथा एकांतप्रियता का हमेशा मजाक उड़ाते थे. एक बार एक छात्र के पिता का देहांत हो गया. उस की मां पहले ही चल बसी थीं. हम ने आपस में चंदा एकत्र कर के उस की मदद करने की सोची, पर शिक्षक महोदय ने एक रुपया भी देने से इनकार कर दिया. इस पर सभी ने उन्हें काफी भलाबुरा कहा पर वे चुपचाप सुनते रहे.

दूसरे दिन हम ने देखा कि उस छात्र को उस के सामान एवं छोटी बहन के साथ वही शिक्षक महोदय अपने घर ले आए. आज भी वे दोनों भाईबहन उन्हीं के साथ रहते हुए पढ़ रहे हैं. उन का कहना था—सौ डेढ़सौ चंदा कर के दे देने से उन का जीवन नहीं बन जाता, वरन पढ़ाई छोड़ कर बच्चे पता नहीं कहांकहां भटकते. उन के विचार सुन कर बाद में हम सब को बड़ी आत्मग्लानि हुई.

—सतीशकुमार वर्मा (सर्वोत्तम)

*

हमारे वनस्पति शास्त्र के प्राध्यापक बहुत ही सिद्धांतवादी एवं समय के पाबंद हैं. एक दिन जब वह हमारी कक्षा लेने आए तो उन्होंने देखा कि कक्षा की खिड़की का शीशा किसी शरारती लड़के ने तोड़ दिया था, तथा कांच के टुकड़े कक्षा में बिखरे पड़े थे.

यह देख कर उन्होंने छात्रों से कांच के टुकड़े हटाने को कहा, परंतु सभी ने उसे अनसुना कर दिया. कक्षा समाप्त होने पर वे स्वयं कांच के टुकड़े बीनने लगे. यह देख कर सभी छात्रों के सिर शर्म से झुक गए और सभी कांच के टुकड़े इकट्ठे करने में जुट गए. **—निलेश पारिख**

*

हमारे हिंदी के अध्यापक को पान एवं तंबाकू खाने की काफी आदत थी. जब भी पढ़ाने आते, पान एवं तंबाकू खा कर ही आते थे. एक दिन उन्होंने मेरी हिंदी की पुस्तक ली और सूरदास की कविता पढ़ाने लगे. कक्षा समाप्त होने पर उन्होंने मेरी पुस्तक वापस की और कहने लगे, "माफ करना, कल मैं तुम्हारे लिए दूसरी पुस्तक ला दूंगा." मैं ने पुस्तक खोल कर देखी तो बीच के पृष्ठ पान से लाल हो गए थे. उस दिन के पश्चात फिर कभी भी अध्यापक महोदय पान खा कर पढ़ाने नहीं आए.

—विजय श्रीवास्तव

*

जब मैं कालिज का छात्र था. उस समय हमारा एक सहपाठी प्राध्यापक को तंग करने के लिए पीछे बैठ कर तरहतरह के जानवरों की आवाज निकालनी शुरू कर देता था.

एक दिन जब वह कुत्ते की आवाज निकाल रहा था तो कक्षा में उपस्थित हिंदी के प्राध्यापक हंसने लगे, "देखो, कुत्ता कितनी प्यारी आवाज निकाल रहा है." इस पर हम सभी हंस पड़े परंतु उस लड़के का मुंह देखने लायक था.

—अर्जुनदेव वर्मा ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्कर मेले में तुबहशा

लेख • प्रतिनिधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनिक जीवन में काम आने वाली सभी चीजें गांव वालों को अपने ही गांव में हमेशा सुलभ नहीं होतीं, जबकि मेलों में घोड़े, बैल, गाय, बकरी जैसे जानवरों और लाठी से कंघी तक निजी उपयोग में आने वाली चीजों की खरीदारी आसानी से की जा सकती है. इन चीजों के अलावा मेलों में

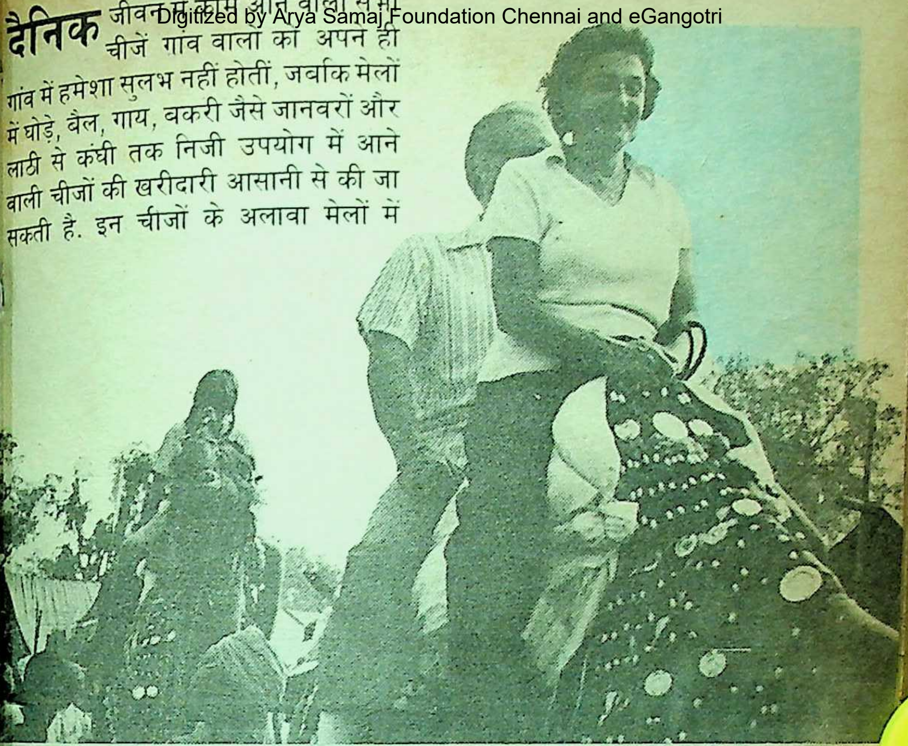

मेले में आए सैलानियों के लिए ऊंट की सवारी एक नया अनुभव होती है.

सरकस, चलतेफिरते चिड़ियाघर, कठपुतलियों के खेल, नाटक, नौटंकी, टूरिंग टाकीज और झूले जैसे मनोरंजन के ढेरों साधन उपलब्ध रहते हैं. इस तरह खरीदारी और आमोदप्रमोद की सुविधा प्रदान करने वाले मेले गांव वालों के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं– रोजमर्रा के काम आने वाली चीजें खरीदने की दृष्टि से भी और साल भर में एकाध बार मिलने वाले मनोरंजन के मौके की दृष्टि से भी.

अलगअलग जगहों पर होने वाले मेले स्थान, विशेषता और आकर्षण की दृष्टि से भले ही भिन्न हों, परंतु एक अर्थ में वे सभी समान हैं कि उन में ग्रामीण जिंदगी पूरे हर्ष और उल्लास के साथ व्यस्त नजर आती है. यह व्यस्तता किसी तरह का तनाव पैदा नहीं करती बल्कि हर्ष से भर उठती है. यह बात मेले में आए लोगों की दिनचर्या देख कर अच्छी तरह अनुभव की जा सकती है.

पुष्कर मेले का धार्मिक दृष्टि से बड़ा महत्त्व है. इस महत्त्व के कारण हजारों लोग कार्तिक में यहां आते हैं. धार्मिक महत्त्व के कारण यात्रा करने वाले लोग तो दोचार घंटे या ज्यादा से ज्यादा एक दिन सुबह से शाम तक रुक कर चले जाते हैं, लेकिन मेले का आनंद लूटने के लिए आए लोग तीनचार दिन तक ठहरते हैं. आइए, देखें उन की दिनचर्या क्या होती है.

आसपास के गांव से आने वाले लोग मेले में पहुंचने के लिए प्रायः बैलगाड़ी या ऊंटगाड़ी का उपयोग करते हैं. अव्वल तो उन के गांव तक बसें चलती ही नहीं और चलने लगें तो, ''क्या वे बस से आएंगे,'' यह पूछने पर एक ग्रामीण ने बताया, ''बस में बैठ कर तफरीह कहां होती है? कहीं जल्दी हो तो बस से जाएं भी. मेले में तो आते ही इसलिए हैं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उसे आराम से देख सकें."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैलगाड़ी या ऊंटगाड़ी में जितने दिन मेले में रुकना हो, उतने दिन तक चलने लायक खानेपीने का सामान, कपड़ेलत्ते और बिस्तर वगैरह होते हैं. कोई सुविधाजनक स्थान देख कर लोग अपना डेरा डाल देते हैं. पांचसात दिन के लिए वही स्थान उन लोगों का निवास स्थान बन जाता है. गांव में वे घर सूना छोड़ कर नहीं आते. दोतीन प्रौढ़ व्यक्ति घर पर ही रहते हैं. बाद में मेले से दोतीन लोग मेला देख कर वापस चले जाते हैं, वे घर पर रह जाते हैं और पहले घर की रखवाली के लिए गांव में रुके व्यक्ति मेले में आ जाते हैं.

मेले में जाते समय ही कहां कि[illegible] रहनी है, कितनी रकम खर्च करनी है [illegible] बातें तय कर ली जाती हैं. जिस दिन [illegible] में पहुंचते हैं और अपनी गाड़ी छोड़ [illegible] तानते हैं, उसी दिन से शुरू होती है [illegible] मौज.

घर से साथ लाया हुआ साम[illegible] समय खानेपीने के काम आता है. गांव [illegible] मिठाई, नमकीन और गोलगप्पे जैसी [illegible] भले ही मेले के बाजार में खाते हों, परन्तु [illegible] तो गाड़ी के नीचे इधरउधर से बीन कर [illegible] गए ईंटपत्थर से बनाए चूल्हे पर ही पका [illegible] खाते हैं. खाना पकाने और खाने के [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग प्रायः सुबह ही निबट लेते हैं, ताकि दिन भर निश्चित हो कर घूमा जा सके.

ऐसे अवसरों पर स्थानीय प्रशासन मेले का इंतजाम करने में लगभग असफल ही रहते हैं. नहानेधोने के लिए ही नहीं, पीने के लिए भी पर्याप्त पानी का बंदोबस्त नहीं होता. इसलिए मेले में आए लोग नहानेधोने की कोई जरूरत नहीं समझते. त्योहार के दिन, जब मेला स्थल के ही किसी तालाब, घाट पर नहाने की परंपरा हो तो वहां कई लोगों के नहाने से गंदलाए पानी में भी लोग डुबकियां लगा लेते हैं. इस तरह डुबकी लगाने को छोड़ कर शायद ही कोई मेले के दिनों में मेला स्थल पर नहाता हो.

सुबह खाना खा कर लोग मेला देखने चले जाते हैं. कोई जरूरी नहीं है कि सभी लोग एक साथ ही मेला देखने जाएं. सुविधा देख कर स्त्रियां स्त्रियों के साथ, बड़े, बच्चे अपना झुंड बना कर अलग झुंड में और पुरुष अलग घूमनेफिरने निकल जाते हैं. कहीं कोई तमाशा, सरकस, नाटक, नौटंकी देखने जाना हो तो भले ही सब लोग साथ हो लें अन्यथा अपनेअपने हिस्से का जेब खर्च ले कर सभी अलगअलग घूमने निकल जाते हैं.

ऐसे समय गाड़ी के पास उसी परिवार या गाड़ी में आए लोगों में से दो एक व्यक्ति

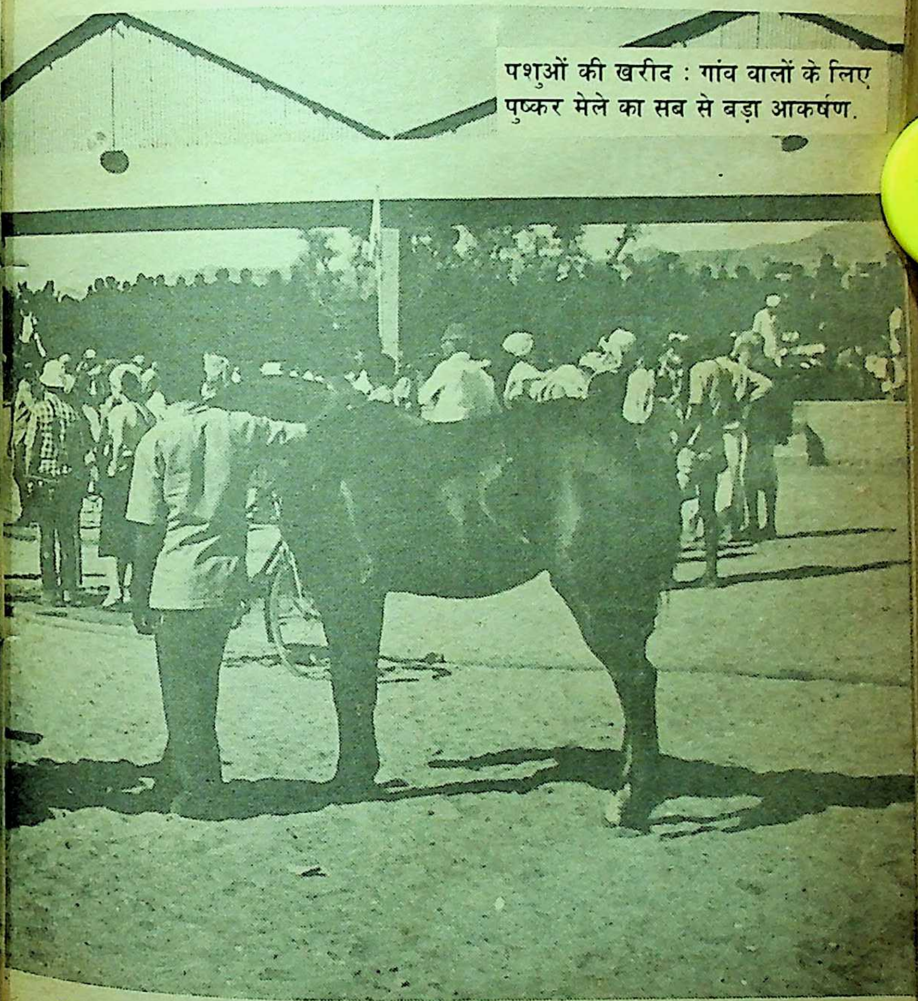

पशुओं की खरीद : गांव वालों के लिए पुष्कर मेले का सब से बड़ा आकर्षण.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरूर बैठे रहते हैं. उद्देश्य इतना ही होता है कि साथ लाए गए सामान को चोर, उठाईगीरों से बचाया जा सके. शाम तक मेले में सभी लोग इसी तरह घूमतेघामते और देखी गई चीजों के बारे में बातें करते रहते हैं.

शाम को स्त्रियां कुछ जल्दी लौट आती हैं. उन्हें साथ आए सभी लोगों का खाना बनाना होता है. पुरुषों को अगर किसी नाटकतमाशे में नहीं जाना हो तो वे भी 10-11 बजे तक वापस आ जाते हैं. तमाशा या सिनेमा देखने के लिए जाना हो तो समय से पहले भी लोग अपने डेरे पर आ जाते हैं और खापी कर वापस चले जाते हैं.

मेले की भीड़भाड़, शोरगुल रात के समय तो और परवान चढ़ती है. शायद ही कोई ऐसा क्षण हो, जिस में नीरवता रहती हो. ऐसे में किसे नींद आ सकती है. घर से लाए बिछावन बिछा कर लोग किस्सेकहानियां कहते रहते हैं. कहींकहीं गानाबजाना भी चलता है. इस तरह गपशप करते हुए लोग दिनभर की थकान मिटा लेते हैं.

मेले की दिनचर्या न जाने क्या ... खासियत लिए हुए रहती है कि लोग इन ... अपनी घरेलू समस्याओं, एकदूसरे ... निंदाभर्त्सनाओं और नातेरिश्तेदारों के संबं... भुला कर केवल मेले के संबंध में ही ... करते हैं. फिर वह बात मेले में देखे गए कि... विचित्र जानवर, बौने व्यक्ति, चारों ओ... आग जला कर जमीन में सिर गाड़े हुए सा... के बारे में ही क्यों न हो.

व्यापारियों और दुकानदारों की दिनचर्या भी लगभग इसी तरह की होती है. फर्क इतना होता है कि दूसरे लोग जहां गाड़ियों के नीचे या आसपास अपना डेरा डाले रहते हैं, वहां व्यापारी या दुकानदार का परिवार दुकान के इर्दगिर्द ही अपना समय बिता लेता है. दोचार लोग दुकान संभालते हैं, बाकी मेला घूमने निकल जाते हैं.

पुष्कर मेले में अधिकांश दुकानें उन्हीं चीजों की लगती हैं जो गांवों में आसानी से

मेले में ही डेरा. मेले की चमकदमक से दूर कुछ परिवार मेले की शुरुआत से ही वहां आ बसते हैं.

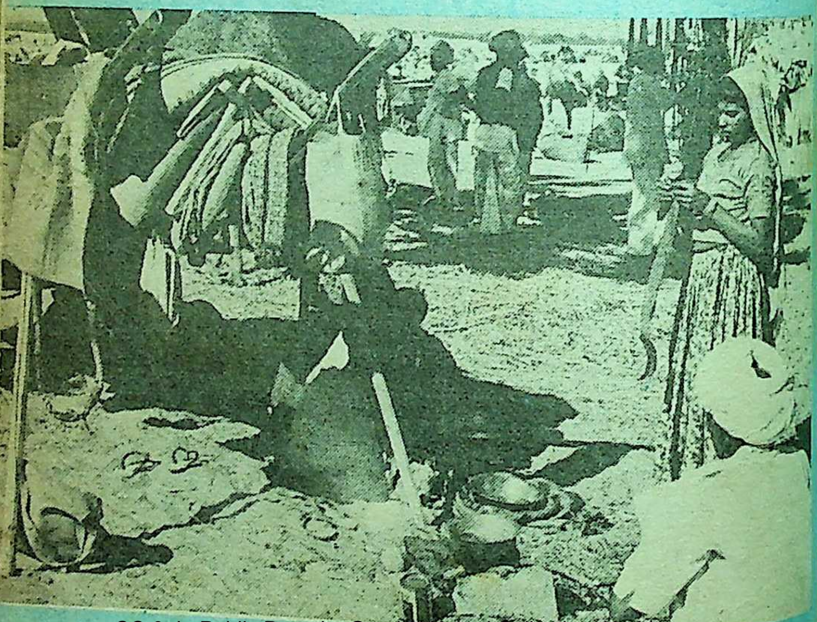

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घरपरिवार की बातें (ऊपर) **व मेले में मनोरंजन करती महिलाएं** (नीचे)

सुलभ नहीं होतीं या जिन्हें खरीदने के लिए बाहर जाना पड़ता है. पुष्कर ताल और ब्रह्मा मंदिर के दाईं ओर की सड़क से ही मेले की दुकानें शुरू हो जाती हैं. तरहतरह की लाठियां, जिन पर लोहे के तार कस कर मनोरम डिजाइन निकाले जाते हैं. जानवरों से रक्षा के लिए छोटेमोटे हथियारों की दुकानें प्रायः मंदिर के आसपास ही होती हैं.

इन दुकानों के बाद सरकस, नौटंकी, टूरिंग टाकीज, झूले, अजायबघर आदि मनोरंजन की सुविधाओं का स्थान आता है. गांव के मर्द तो कभीकभार शहरों में जा कर भी सिनेमा आदि देख आते हैं, पर स्त्रियों को मेलों में ही वैसी सुविधा मिल पाती है. इन स्थानों पर स्त्रियों के बैठने की अलग व्यवस्था रहती है.

सिनेमा, सरकस, नाटक, नौटंकी वाले स्थान से आगे बाईं ओर खानेपीने की दुकानें आती हैं. इन दुकानों पर जलेबी, सेव, कचौरी, बर्फी, बूंदी के लड्डू, बूंदी, खोए की मिठाइयां आदि वस्तुएं बनती और बिकती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहती हैं. खुली थालियों में रखी हुई इन खाद्य सामग्रियों पर मक्खियां तो भिनभिनाती ही रहती हैं. सड़क पर उड़ने वाली धूल भी हवा के झोंकों में, गुबार के साथ आ कर जमती रहती है. गांव वाले यह सब देखनेसमझने की जरूरत नहीं समझते. वे तो आते हैं, पाव आधापाव मिठाई या नमकीन तुलवाते हैं और मुंह में रखते हुए चलते बनते हैं.

गांव वालों के लिए मनोरंजन और घूमने के अलावा पुष्कर मेले की सब से बड़ी विशेषता है वहां पशुओं का खरीद व्यापार. और सब बातें तो सामान्य हैं. किसी नई चीज की दुकान यहां नहीं खुलती है. हफ्ते भर के लिए शहर में ही उपलब्ध हो सकने वाली सारी चीजों की दुकानें यहां लग जाती हैं. विशेषता की दृष्टि से यहां ऊंट, गाय, बैल, घोड़े, भैंसें आदि पालतू जानवरों का व्यापार मुख्य कहा जा सकता है.

बाजार से हट कर पीछे वाले मैदान में दूरदूर तक ये जानवर बंधे देखे जा सकते हैं. जिन्हें पालतू जानवर बेचने होते हैं वे ग्रामीण इसी मैदान में आ कर अपना डेरा डालते हैं. व्यापारी लोग वहीं इन से संपर्क साधते हैं और खरीदफरोख्त करते हैं.

सैलानियों के लिए ऊंट की सवारी करना और पशु मेले में घूमना एक नया अनुभव होता है. गांव वाले तो हमेशा इन सवारियों का उपयोग करते रहते हैं. शहरी लोगों या विदेशी पर्यटकों के लिए ऊंट के ऊपर बैठ कर हिचकौले खाते हुए मेले में घूमना भी एक मनोरंजन होता है. रेगिस्तान के जहाज पर बिठा कर मेलां घुमाने के लिए कई ऊंट वाले अपना ऊंट कुछ देर के लिए किराए पर दे देते हैं. 15 से 25 रुपए तक किराया ले कर ऊंट मालिक खुद ही ऊंट की नकेल थाम कर मेला घुमा लाते हैं

तमाशा दिखाने वाली मंडलियों के अलावा प्रशासन की ओर से भी घुड़दौड़, ऊंटों की दौड़, गायत्री प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं. प्रतिदिन होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों को देखते, मेला घूमते हुए कब समय बीत जाता है, कुछ पता ही नहीं चलता.

सुबह से शाम तक ही मेला देखने के लिए आए लोगों को मेले का वह आनंद नहीं मिल पाता जो वहीं रह कर मेला देखने वाले लोग पाते हैं. इन के लिए तो ये दिन किसी उत्सव के दिन से कम नहीं होते और वे उठनेबैठने, घूमनेफिरने, खानेपीने यानी पूरी दिनचर्या में मेले का आनंद उठाते हैं. •

जन्मोत्सव, विवाह
व अन्य
शुभ अवसरों पर

पुस्तकें भेंट में दीजिए

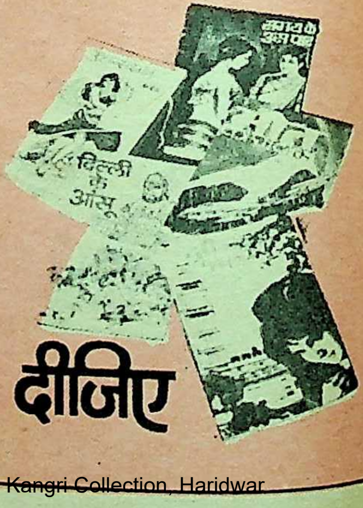

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावधान

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

अंबे मां के प्रकट होने का रहस्य

लोगों की धार्मिक भावना से लोग किस प्रकार खेलते हैं, इस का उदाहरण पिछले दिनों इंदौर में देखने को मिला.

एक व्यक्ति के यहां चबूतरे में से अंबे मैया की प्रतिमा प्रकट होने का समाचार सुन कर वहां भीड़ लग गई. भीड़ पर काबू पाने के लिए पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ा. मूर्ति आधी ही निकली थी.

कुछ लोगों की शंका पर, मूर्ति के आसपास खुदाई की गई. खुदाई करने पर नीचे 'प्लास्टर आफ पेरिस' की स्लेटी रंग की प्रतिमा निकली. यह प्रतिमा चनों पर रखी थी. जब चने फूले तो प्रतिमा ऊपर आ गई. खुदाई का माहौल देखते ही वह व्यक्ति फरार हो गया, जिस ने यह प्रचार किया था कि उसे अंबे मां ने सपने में कहा है कि वह उस के आंगन में प्रकट होगी. वह नवरात्रि से पूजा अर्चना कर लोगों को बेवकूफ बना रहा था.

—दैनिक लोकपथ, ग्वालियर (प्रेषक: कृपाशंकर शर्मा 'चंद्र')

(सर्वोत्तम)

*

धोखा दे कर आई.ए.एस. बने थे

भारतीय प्रशासनिक सेवा के एक अधिकारी को नकली दस्तावेजों का प्रयोग करने के अपराध में कलकत्ता के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश द्वारा दो साल की सख्त कैद की सजा दी गई है. इस के एक सह अभियुक्त को भी एक वर्ष की कैद व 1,000 रुपए जुरमाने की सजा दी गई है.

उल्लेखनीय है कि इस अधिकारी ने फर्जी तौर पर स्वयं को अनुसूचित जाति का सदस्य घोषित करते हुए, पहले केंद्रीय असैनिक सेवा में 1968 में नियुक्ति प्राप्त की थी. फिर उस के दो वर्ष बाद आई.ए.एस. केडर में उसी फर्जी दावे के आधार पर नियुक्ति पा ली थी.

—दैनिक भास्कर, ग्वालियर (प्रेषक: अरविंदकुमार चतुर्वेदी)

*

आकाशवाणी करने वाला नकली पुजारी

बिहार पुलिस ने सिकंदरा के एक काली मंदिर से आकाशवाणी करने वाली नकली देवी सहित उस के पुजारी को गिरफ्तार कर उस के पास से कई नग्न चित्र भी बरामद किए हैं.

बताया जाता है कि यह पुजारी मंदिर में आए लोगों को झांसा देता था कि उन की मनोकामना के संबंध में देवी उत्तर देती है, जब कि मंदिर के तहखाने में छिपी युवती देवी की आवाज बना कर भविष्य वाणियां करती थी.

सिकदरा पुलिस ने मंदिर में छापा मारा और मूर्ति के नीचे के तहखाने में से युवती और मंदिर के पुजारी को हिरासत में ले लिया. **—दैनिक तरुण, जोधपुर (प्रेषक : महेश)** •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यूनानी गणितज्ञ और आविष्कारक आर्कमीडीज ने अपने ऐति-हासिक सिद्धांत की खोज उस समय की थी, जब वह हौज में नहा रहे थे. ज्यों ही उन के मस्तिष्क में एक प्रश्न का हल सूझा, वह 'पा गया... पा गया.' चिल्लाते हुए नंगे ही भागे. यह घटना उन सभी लोगों को मालूम है, जिन्होंने आर्कमीडीज का सिद्धांत पढ़ा है. किंतु यह बात शायद बहुत कम लोग जानते हैं कि आर्कमीडीज का अंत बड़ा दुखद रहा और एक प्रकार से उन के देश, सिसिली द्वीप के कारण हुआ.

सिसिली भूमध्य सागर में इटली के ... है. इस द्वीप को ईसापूर्व तीसरी सदी के ... रोमन साम्राज्य की सेना ने जीत कर ... प्रांत और अनाज का भंडार बना लिया ...

प्राकृतिक सौंदर्य से भरा माफिया का केंद्र स्थल : ...

लेख • अजयकुमार सिन्हा

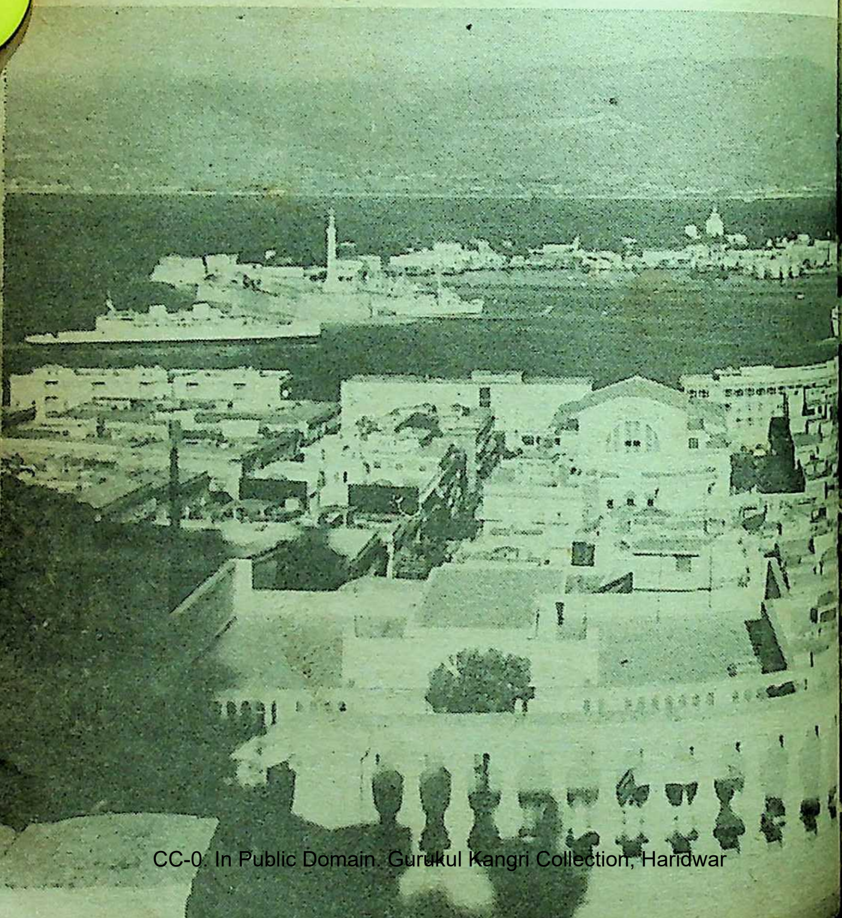

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रोमन सेना सिराक्यूसी नामक स्थान को लूट रही थी. गणितज्ञ आर्क[illegible] गणित के कार्य में इतने डूबे हुए थे कि उन को किसी भी चीज का होश नहीं था. लूटपाट कर रही रोमन सेना का एक सैनिक उन के घर में घुसा. उस ने व्यस्त गणितज्ञ को निर्दयता से मार डाला.

उसी नगर में रोमन शासन ने बाद में, तलवारबाजी की प्रतियोगिता के लिए एक अखाड़ा बनवाया, जो आज भी वहां विद्यमान है और [illegible] के सब से बड़े रोमन अखाड़ों में चौथे स्थान पर की जाती है.

लोग सिसिली का संबंध माफिया नामक कुख्यात विश्वव्यापी अपराधी गिरोह से जोड़ते हैं, क्योंकि इस गिरोह में अधिकांश

सिसिली

सिसिली का इतिहास प्राकृतिक आपदाओं और शासकों की क्रूरता व लूटपाट से भरा है. इतिहास की हर करवट सिसिली के साथ एक नया प्रसंग जोड़ती चली गई है....

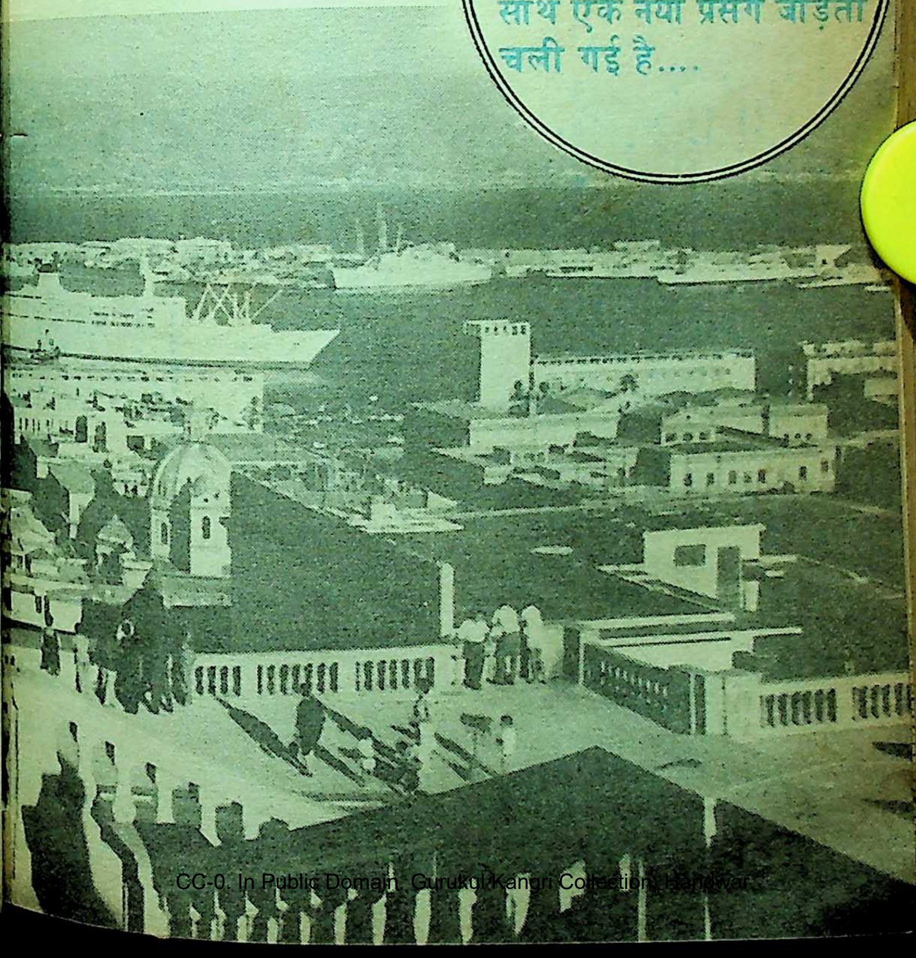

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाही शानशौकत की घोड़ागाड़ी : गरीब प्रांत सिसिली में गरीबी और अमीरी के विरोधाभासों का प्रमाण.

लोग सिसिली के बताए जाते हैं. प्रसिद्ध अमरीकी उपन्यास 'गाडफादर' और इसी नाम से बनी फिल्म इसी गिरोह के क्रियाकलाप से संबंधित है, किंतु माफिया के क्रियाकलाप से सिसिली का सही परिचय नहीं मिलता. इस के ठीक विपरीत सिसिली अनेक आकर्षणों का द्वीप है.

भूमध्य सागर के इस सब से बड़े द्वीप का क्षेत्रफल 26,000 वर्ग किलोमीटर है. द्वीप का सौंदर्य विविधता से भरा है. यह अशिक्षित व गरीब लोगों का द्वीप जरूर रहा है और आज भी यहां कहींकहीं बहुत गरीबी है, किंतु अपने इतिहास व सांस्कृतिक विरासत को देखते हुए यह अत्यधिक धनी है और आज यह उसी की कमाई खा रहा है यानी इस द्वीप के सौंदर्य को देखने के लिए लोग दूरदूर से आते हैं.

सिसिली पर पिछले तीन हजार वर्षों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिन्नभिन्न देशों के हमले हुए तथा बाहर से बहुत से लोग यहां आ कर बस गए. उन सब की छाप व चिह्न यहां मिलते हैं, जिन का आज बहुत बड़ा महत्त्व है. सब से पहले ईसापूर्व आठवीं सदी में यूनानियों ने यहां आ कर उपनिवेश बनाने शुरू किए.

उन्होंने यहां खूब उन्नति की. इस के अलावा यहां कई अत्याचारी यूनानी शासक भी हुए, जिन में से एक तो इतना निर्दयी था कि अपने शत्रुओं को कांसे के मदिरापात्र में डलवा कर भुनवाता था. इस में उसे मजा आता था, किंतु इन अत्याचारी शासकों ने कई शानदार नगर भी बनवाए. सिराक्यूसी उस समय यूरोप का प्रमुख और शक्तिशाली महानगर था. इस के तीन लाख निवासियों की

सिसिली के ऐतिहासिक आकर्षणों में यहां की पुरानी शैली की इमारतें अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं. (दाएं व नीचे)

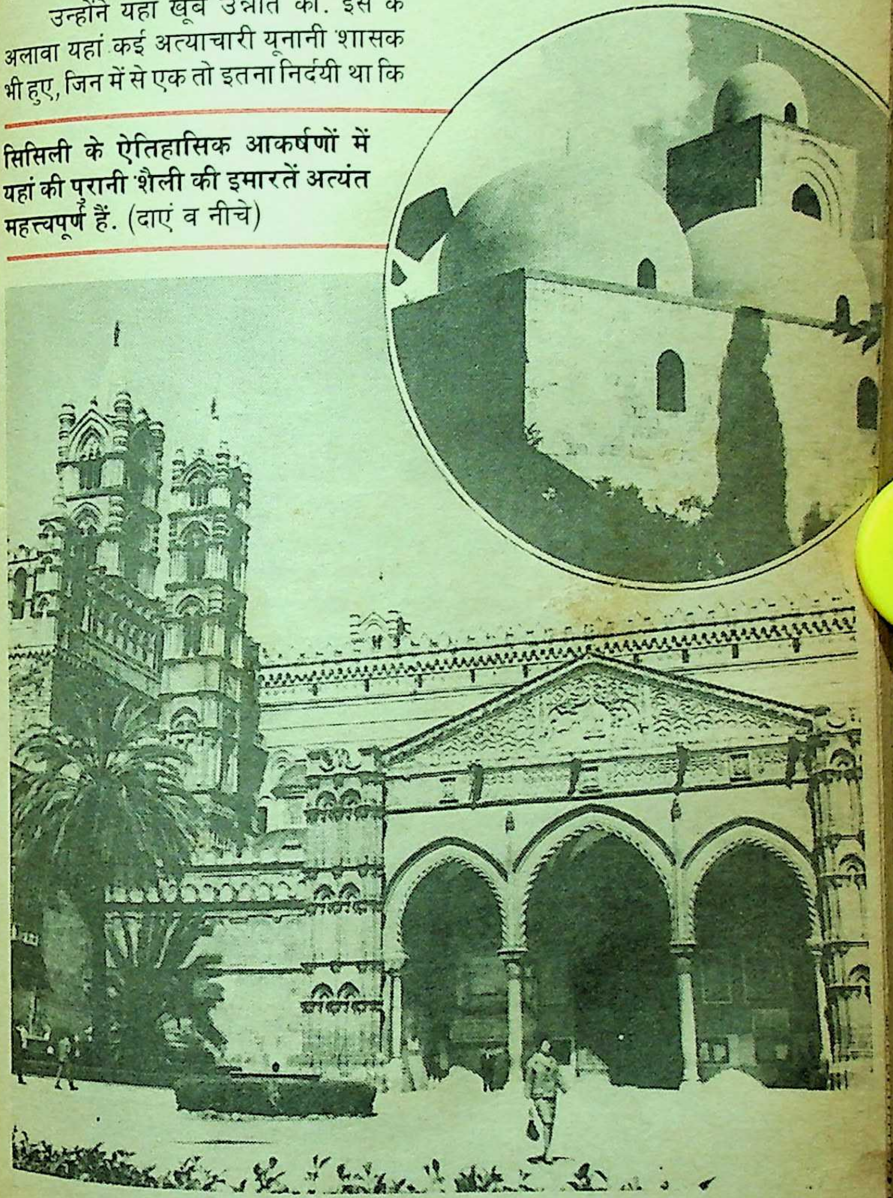

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिसिली निवासी संत दिवस पर रंगबिरंगी पोशाकें पहन कर विशेष प्रकार का नृत्य भी करते हैं.

सुरक्षा के लिए 27 किलोमीटर लंबी दीवार बनाई गई थी. इस किलेबंदी के बीच में यूरीयालस किला बनाया गया था.

सिसिली में पुरानी यूनानी शैली के अनेक दर्शनीय मंदिर हैं. जैसे सेजेस्टा का डोरिक मंदिर, हेरा, कानकोर्ड और हरकुलिस के मंदिर.

रोमन साम्राज्य के विघटन के बाद सिसिली पर बैजंतिया का, फिर ट्यूनिसिया के अरबों का शासन रहा. यूरोप के नारमन सामंतों ने इस द्वीप को एक व्यापारिक केंद्र बना दिया. उस के बाद जरमन सामंतों एवं जागीरदारों, फ्रांसीसी लुटेरों और स्पेन के राजाओं ने इस द्वीप को लूटा. स्पेन के राजाओं के कुशासन के दौरान अनेक विद्रोह हुए और बड़ी संख्या में सिसिलीवासी पहाड़ों में छिप कर लुटेरे और डाकू बन गए. एक लेखक के अनुसार आज के माफिया अपराधी गिरोह के अनेक लोग उन्हीं की संतान हैं.

सिसिली में प्राकृतिक विपत्तियां बहुत आई हैं. यहां पर बहुत भयानक व विनाशकारी भूकंप आए हैं, क्योंकि यूरोप का सब से बड़ा ज्वालामुखी पर्वत माउंट ऐटना इसी द्वीप पर है. इस के प्रमुख और सब से बड़े नगर पालरमो का ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा महत्त्व है. यहां का सब से प्रमुख ऐतिहासिक आकर्षण है– यहां का गिरजाघर. सिसिली का एक अन्य सुंदर नगर है– ऐरिस, जो जीर्ण दीवारों से घिरा है. यहां सौंदर्य व प्रेम की यूनानी देवी ऐफ्रोडाइट का यूनानी व रोमन मंदिर है. मंदिर के पड़ोस में 13वीं सदी में बना नारमन दुर्ग है. आगे टावर है और उस के आगे मध्ययुगीन नगर है. उस के नीचे फोनेशियन दीवारें और स्पेनी किला है अर्थात थोड़ी ही दूरी में सभी संस्कृतियों के स्मारक व भग्नावशेष कंधे से कंधा मिलाए खड़े हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिराक्यूसी नगर में सम्राट मेक्सीमिलियन का आवास है. इस में रोमन मोजाइक की चित्रकारी की उत्कृष्ट और दुर्लभ कृतियां देखने में आती हैं. सिसिली का समुद्रतट बड़ा चित्ताकर्षक है. खास तौर पर जेला और आगस्टा का समुद्र तट. मछली पकड़ना यहां का मुख्य धंधा है. औद्योगिक रूप से यह द्वीप अभी ज्यादा विकसित नहीं है और आय के लिए पर्यटन पर ज्यादा निर्भर है.

सिसिलीवासी सरल स्वभाव के, परिश्रमी, स्वाभिमानी और हृष्टपुष्ट हैं. अनेक थपेड़ों को सह कर ये लोग काफी सहनशील हो गए हैं. सिसिली के अनेक क्षेत्रों में बहुत गरीबी है. यहां के पारंपरिक उद्योग समय के साथसाथ नहीं बढ़ सके. बड़ी संख्या में नवयुवक यहां से उत्तरी इटली के कारखानों में रोजगार के लिए चले गए. आर्थिक और औद्योगिक विकास नहीं के बराबर है. किंतु यहां पर्यटक बड़ी संख्या में आते हैं, जिस से यहां का काम चल रहा है.

'सेंट्स डे' (संत दिवस) पर यहां के लोग रंगीन वेशभूषा में धार्मिक जुलूस निकालते हैं और अग्नि के चारों ओर नाचते हैं. इस अवसर पर आतिशबाजी का भी प्रदर्शन होता है. क्रिसमस पर बैगपाइप बजाते हुए वादक लोगों के घरों पर जा कर संगीत सुनाते हैं.

ऐतिहासिक घटनाओं से भरा किंतु आर्थिक विकास में पिछड़ा यह द्वीप एक दयनीय चित्र प्रस्तुत करता है. उत्पादन के प्राकृतिक साधन नगण्य हैं, शायद इसी लिए यहां के लोग अंतरराष्ट्रीय अपराधी बन गए हैं. पर्यटन उद्योग इस प्रदेश को डूबने से उबार रहा है. इटली के मछली उत्पादन का एक चौथाई भाग इस द्वीप से प्राप्त होता है. इस प्रकार यह द्वीप विरोधाभास लिए हुए है. एक ओर बहुमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है, तो दूसरी ओर आर्थिक पिछड़ापन. इटली जैसे पिछड़े देश का प्रांत होना भी उस के पिछड़ेपन का एक कारण हो सकता है. इस के पर्यटन संबंधी आकर्षण ही इस का एकमात्र सहारा हैं और इस के सौंदर्य की गाथा को कहते हैं. ●

लेखकों के लिए सूचना

- सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.
- प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.
- प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.
- प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.
- स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.
- मुक्ता और सरिता में पूर्णविराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें :
संपादकीय विभाग
मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पताः संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

मुर्गे के लिए दो घंटे ट्रेन रुकी

विश्रामपुर कटनी पैसेंजर ट्रेन में यात्रा करने वाले यात्री उस समय आश्चर्य में पड़ गए जब विश्रामपुर से चल कर करंजी एवं सूरजपुर रोड के बीच में दो घंटे ट्रेन को सिर्फ इसलिए रोक दिया गया कि गार्ड महोदय जो मुर्गा खरीद कर ले जा रहे थे, वह छूट कर जंगल में चला गया था और जब किसी तरह वह मुर्गा ढूंढ लिया गया तब कहीं ट्रेन आगे बढ़ी.

—देशबंधु, रायपुर (प्रेषकः मीरा जैन)

*

दरोगा ने दरोगा की जेब काटी

गाजियाबाद में एक दरोगा ने अपने ही एक दरोगा साथी की जेब साफ कर दी.

एक वरिष्ठ दरोगा ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई है कि उन्होंने अपने वेतन के ग्यारह सौ रुपए कुरते की जेब में रख कर उसे चारपाई पर रख दिया था कि दूसरे दरोगा ने वे रुपए गायब कर दिए.

—दैनिक प्रदीप, पटना (प्रेषकः चीमनलाल जुनेजा)

*

खून का रिश्ता

धर्म की दीवारें तोड़ कर एक मुसलिम युवक ने जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहे एक हिंदू रोगी को अपना रक्त दे कर उस के प्राण बचा लिए. मुसलिम वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष के अनुसार सोसायटी के करीब एक दर्जन कार्यकर्ता बांगुड हस्पताल में रक्तदान हेतु पंजीकरण करवाने आए थे. आपरेशन थिएटर से एक रोगी के लिए खून देने की मांग की गई. युवक ने तत्काल अपना रक्त दे कर रोगी का जीवन बचा लिया.

—उदयपुर एक्सप्रेस, उदयपुर (प्रेषकः ललितकुमार शर्मा)

*

मिलावट का करिश्मा

जीवन से तंग आ कर तंजौर के एक आदमी ने जहर खा कर आत्महत्या करने की कोशिश की, लेकिन उसे कुछ नहीं हुआ. क्योंकि जहर में मिलावट थी. परंतु जब उस के बच जाने की खुशी में उस के चार दोस्तों ने मिठाई खाई तो सभी मर गए.

हुआ यों कि जीवन से तंग आ कर आत्महत्या की कोशिश करने वाले ने जहर खाने से पूर्व अपने मित्रों को पत्र लिखा कि सुबह मेरी अंत्येष्टि के लिए घर आओ, मैं आत्महत्या कर रहा हूं. जब उस के दोस्त सुबह घर पहुंचे तो पाया कि वह जिंदा है. दोस्त इसी खुशी में झटपट एक दुकान से मिठाई खरीद कर खाने बैठे. मिठाई खाने के थोड़ी देर बाद उन की हालत खराब होने लगी और हस्पताल जातेजाते सब की मौत हो गई.

—अमृत प्रभात, लखनऊ (प्रेषकः देशराजसिंह यादव) (सर्वोत्तम)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मांग ऐसी भी

भ्रष्ट अधिकारियों को हटाने की मांग तो सभी करते हैं, किंतु कुछ ऐसे भी लोग हैं जो भ्रष्ट अधिकारियों को ईमानदार घोषित करने की मांग करते हैं. ऐसी ही अनोखी मांग राजस्थान आयुर्वेद नर्सेज एसोसिएशन ने मुख्य मंत्री को एक ज्ञापन दे कर की है.

ज्ञापन में मांग की गई है कि आयुर्वेद विभाग के तथाकथित भ्रष्ट अधिकारी निदेशक को सार्वजनिक रूप से ईमानदार घोषित कर के उन्हें स्थायी रूप से निदेशक बनाया जाए.

ज्ञापन के अनुसार उक्त अधिकारी के खिलाफ लगातार दो वर्षों से भ्रष्टाचार की तथ्यात्मक शिकायतों के बावजूद विधान सभा से ले कर प्रदेश के गली कूचों तक उन्हें सरकारी आश्रय मिलता रहा है. **—दैनिक न्याय, अजमेर (प्रेषक: लालचंद खत्री)**

*

एक हजार वर्ष बाद का टिकट

यह एक कटु सत्य है कि मुक्तसर रेलवे स्टेशन से फाजिल्का तक के रेल सफर का एक हजार वर्ष आगे का मान्यता प्राप्त टिकट बड़ी आसानी से प्राप्त होता है.

बताया जाता है कि मुक्तसर रेलवे स्टेशन से जो टिकटें काटी जा रही हैं, उन में सन 1982 की जगह सन 2982 अंकित है. पता चला है कि यह क्रम पिछले 9 मास से चल रहा है, क्योंकि टिकटों पर तिथि प्रतिदिन बदल जाती है, जब कि वर्ष साल में एक बार ही बदला जाता है.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक: विजय भटनागर)

*

अनोखा बलात्कार

अमृतसर में एक घोड़े द्वारा एक घोड़ी की इज्जत लूटने तथा इस से गर्भवती घोड़ी का गर्भ गिर जाने की एक घटना की सूचना थाना रामबाग तक जा पहुंची. फिर वहां घोड़ी तथा घोड़े दोनों को पेश किया गया. रिपोर्ट घोड़ी के मालिकों ने दर्ज कराई थी.

बताया जाता है कि उक्त घोड़ी गर्भवती थी. एक कुम्हार के घोड़े ने उस से बलात्कार किया, जिस से उस का गर्भ गिर गया. इस पर घोड़ी तथा घोड़े के मालिकों में झगड़ा हो गया. यह झगड़ा पुलिस तक पहुंच गया. पुलिस ने हस्तक्षेप कर के यह मामला समाप्त कराया. दोनों पक्षों के साथ अनेक लोग थाने पहुंचे जिन में कुछ छोटेमोट राजनीतिबाज भी थे.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : 'पाल' अमृतसरी)●

आप मांग कर खाते हैं?
मांग कर कपड़े पहनते हैं?
मांग कर बस, ट्राम व रेल में सफर करते हैं?
मांग कर सिनेमा देखते हैं?
मांग कर रेस्त्रां में चायकाफी पीते हैं?
तब
मांग कर पत्रपत्रिकाएं व पुस्तकें क्यों पढ़ते हैं?
निजी पुस्तकालय आप की शोभा है, आप के परिवार की शान है, उन्नति का साधन है.
मांग कर नहीं, खरीद कर पढ़िए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान बनाने वालों की पहली पसंद

चारमीनार छत की चादर

○ टिकाऊ
○ मौसम का असर नहीं
○ आग का असर नहीं
○ सस्ती

HYDERABAD ASBESTOS

इमारती सामान में आप को व्यावहारिक, सुंदर बहुउपयोगी और अग्नि प्रतिरोधक सामग्री चाहिए तो...

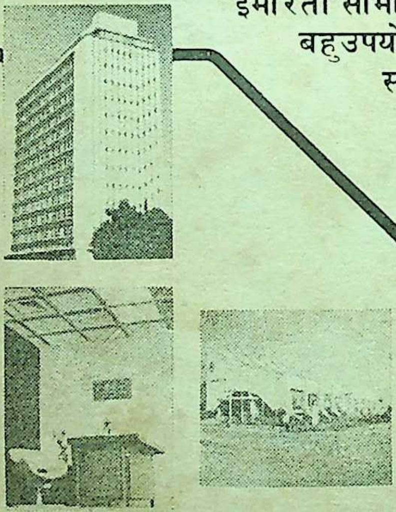

मांगिए

flex-o-board

फ्लैक्स-ओ-बोर्ड उच्च दबाव वाली स्टीम से उपचारित इस देश का बना एक मात्र ए.सी. बोर्ड है. इस इमारती बोर्ड का इस्तेमाल विविध कार्यों में किया जाता है और यह सर्वगुणी में बेजोड़ है. इसे चाहे अन्दरूनी (फाल्स सीलिंग) बनाने के काम में लाइए, चाहे पार्टीशन पैनल, लोसे या साइनबोर्ड बनाने के. इस पर आग का असर नहीं होता. ऊंची इमारतों में उपयोग के लिए बेहतरीन है.

इसे काटने, इस में छेद करने, कील गाड़ने या पेंच कसने के लिए साधारण औजारों से ही काम चल जाता है.

इसे काटने, इस में छेद करने, कील गाड़ने या पेंच कसने के लिए साधारण औजारों से ही काम चल जाता है.

इस पर जैसा चाहें रोगन कीजिए या सजावटी लैमिनेटेड पेपर लगाइए.

इसे कीड़ेमकोड़े नुकसान नहीं पहुंचाते

HYDERABAD ASBESTOS
CEMENT PRODUCTS LIMITED
Hyderabad 500 018

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी • [illegible] अग्रवाल

पूजा का दीपक

पूजा की मौत से उस के प्रेमी दीपू और उस की सहेली सुचि को बराबर का आघात पहुंचा था पर उन्होंने अपनी इस पीड़ा से छुटकारा पाने के लिए क्या किया?

उस दिन सुबह मैं घर का काम निबटा कर कुछ देर सुस्ताने के लिए पलंग पर टी थी. लेटेलेटे सोच रही थी कि आज पहले पू से और फिर पूजा से जरूर मिलूंगी. इतने किसी ने दरवाजा खटखटाया. मैं ने कुढ़ते ए उठ कर दरवाजा खोला, पड़ोस की ाचीजी सामने खड़ी थीं.

"अरे चाचीजी, आप, आइए न, ऐसे यों खड़ी हैं?"

"कुछ नहीं बेटी," कह कर उन्होंने ोझिल पांव अंदर रखे थे.

"चाचीजी बतलाइए न, क्या बात है," ं ने घबराते हुए पूछा था.

"बेटी, क्या बताऊं, पूजा अब..." वाक्य अधूरा छोड़ कर वह फफकफफक कर रो पड़ी थीं.

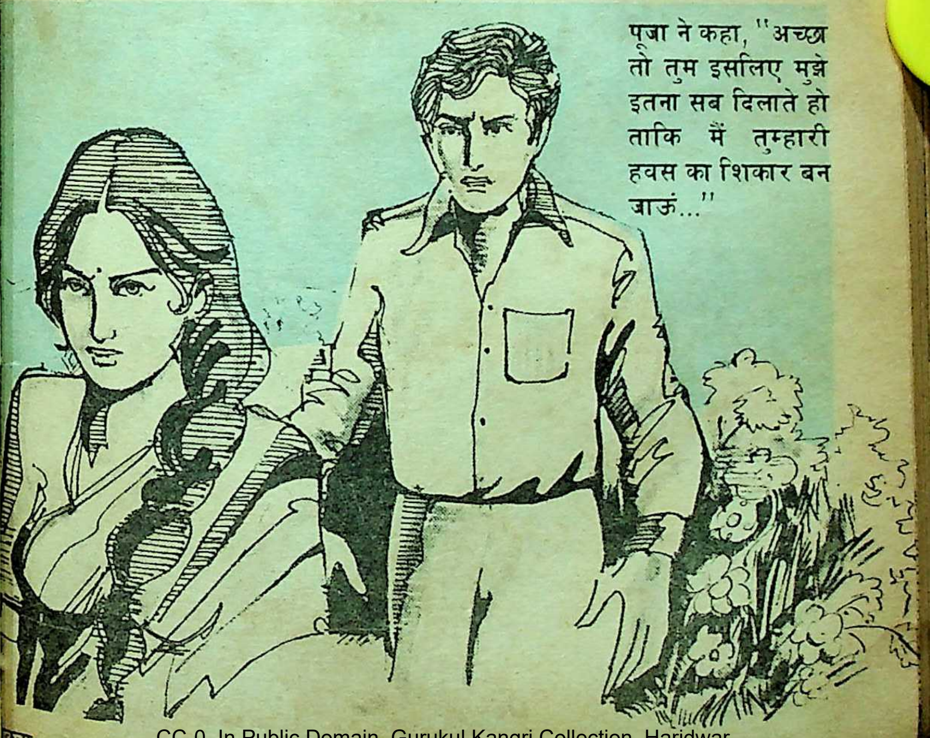

पूजा ने कहा, "अच्छा तो तुम इसलिए मुझे इतना सब दिलाते हो ताकि मैं तुम्हारी हवस का शिकार बन जाऊं..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं अवाक सी उन का मुख देखती रह गई थी. [illegible] पूछा था, ''क्या कह रही हैं आप, पूजा को क्या हुआ. परसों तो मैं उस से मिली थी, तब तो वह अच्छीभली थी.''

लेकिन मेरी बात का उत्तर न दे कर चाचीजी तो पूर्ववत रोती ही रही थीं.

अब मेरा भी धैर्य जवाब देने लगा था. मैं ने चाचीजी को झंझोड़ कर पूछा था, ''बतलाइए, क्या हुआ पूजा को. आप बोलती क्यों नहीं. बोलिए न, चाचीजी.''

''सुचि बेटी,'' बस इतना कह कर वह मुझे अपने सीने से लगा कर फूटफूट कर रोने लगी थीं. रोतेरोते ही वह कहने लगी थीं, ''सुचि, तेरी सहेली ने नींद की गोलियां खा कर आत्महत्या कर ली.''

''नहीं, नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता. पूजा ऐसा नहीं कर सकती. चाचीजी आप झूठ बोल रही हैं. कह दो चाचीजी, यह सब झूठ है.''

''कैसे कह दूं सुचि, क्या मैं अपनी बहन की लड़की के लिए यह सब झूठ कह सकती हूं. यह सच है, सुचि.'' चाचीजी ने कहा.

बस, इस के आगे मैं कुछ नहीं सुन सकी थी. चकरा कर धड़ाम से फर्श पर गिर पड़ी थी. और जब मेरी आंख खुली तो मैं ने मांजी को अपने पास पाया था. वह धीरेधीरे मेरे पांव सहला रही थीं.

पूजा की मौत का सदमा मेरे लिए जानलेवा था. उन दिनों मैं बहुत असामान्य सी हो गई थी. आखिर किसी से जुदा होना या उस को भुलाना इतना आसान नहीं होता, जितना समझा जाता है. फिर अपने प्रिय को भुलाना तो और भी कठिन होता है, उस का हर घड़ी दिल में बसेरा जो रहता है.

पूजा के साथ बीते हुए लम्हे मेरे दिमाग में चित्रपट की रीलों की तरह घूमते थे. मैं ने तो कभी सोचा भी नहीं था कि बात इतने गंभीर मोड़ पर पहुंच जाएगी. यों तो पूजा ने मुझ से भी अपनी खुदकुशी करने की बात कही थी, लेकिन मैं ने इसे उस का सिर्फ क्षणिक आवेश ही समझा था.

पूजा से मेरी दोस्ती कालिज ... थी. वह बड़ी भावुक, शां... संवेदनशील प्रवृत्ति की लड़की थी ... में बहुत तेज थी. हम दोनों के दरम्या... अपनेपन के स्रोत बहते थे. हम में ... कोई दुराव व छिपाव नहीं था.

पूजा की विद्वत्ता के कारण ... पढ़ता एक लड़का दीपू उस की ओर ... हुआ था और शीघ्र ही साधारण ... वाली पूजा उसे विश्व की सब से ... गुणवान लड़की नजर आने लगी थी ... भी उस को अपना सब कुछ मानने ...

यह सोच कर दिल में एक ... उभर आई थी कि ऐसा क्या हो गया ... खुदकुशी करने पर विवश हो गई.

चूंकि मैं और पूजा हरदम साथ ... इसलिए दीपू से मेरी भी जानपहचान ... थी. अकसर हम तीनों इकट्ठे ही घूम... आयाजाया करते थे.

दो दिन पूर्व की घटना मेरी ... आगे घूम गई.

उस दिन पूजा मेरे घर आई थी ... बड़ा उदास और खोयाखोया सा देख ... पूछा था, ''पूजा, क्या बात है, सब ... तो है ना. यह चेहरे पर बारह क्यों बज... कहीं दीपू से झगड़ा तो नहीं हो गया ...''

उत्तर में पूजा की आंखें भीग ... सुबकते हुए कहने लगी थी, ''सुचि, ... मुझे क्या हो गया था. मैं ने दीपू से ... घटिया बात कैसे कह दी, मेरा तो दम ... जा रहा है. सुचि, अब वह मुझ से ना... गया है.''

''बात क्या हुई, बता तो,'' मैं ने ... पूछा था.

''तू तो जानती है सुचि, दीपू ... कितना खर्च करता है. मैं उस से कई ... भी कर चुकी हूं, फिर भी वह नहीं मा... कहने लगता है, 'पूजा, तुम मेरी ज़िंद... गई हो. तुम्हारे आगे मुझे कुछ नहीं ... बस, तुम ही तुम दिखाई देती हो.' ... बार ऐसा कहता है. तो मैं समझ ही न...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि इतना सुंदर व इतने धनी परिवार का लड़का मुझ जैसी साधारण लड़की को इतना क्यों चाहता है.

''सुचि, 'कल हम ढेर सारी खरीदारी कर के लौट रहे थे तो दीपू बोला, 'कुछ समय के लिए जुहू चलें.' हम लोग जुहू आ गए थे. मदहोश करने वाली हवा चल रही थी. यों

''जब कि पूजा का किस्सा खत्म हो चुका है, तुम मुझ से शादी करोगी...'' दीपू ने सुचि से कहा.

लग रहा था जैसे आसमान पर मेरे अरमानों की सतरंगी चुनरी फैली हुई है. दिल को लुभाने वाला समां था.

''सुचि, जब उस ने मेरे लिए गजरा खरीदा तो मैं हंसे बिना न रह सकी थी. वह खीज कर बोला था, 'तुम्हारा खयाल कर के यह गजरा खरीद रहा हूं, और तुम अपनी बत्तीसी चमका रही हो, मुझे तो गजरावजरा जरा भी पसंद नहीं.' तो मैं ने कहा, 'जब तुम्हें पसंद ही नहीं तो किस खुशी में खरीद रहे हो. तुम क्या सोचते हो कि यह मुझे बड़ा पसंद है?' तो वह आश्चर्य से कहने लगा था, 'सच पूजा, तुम्हें आम लड़कियों की तरह गजरावेणी से कोई लगाव नहीं?' 'जी नहीं,' मैं ने कहा था, 'हां फूल बहुत पसंद हैं मगर बालों में लगाने के लिए नहीं,' इस पर वह चहक उठा था, 'ओह पूजा, तब तो बहुत अच्छा है, मुझे भी ये सब चीजें पसंद नहीं हैं. हम दोनों की पसंद कितनी मिलती है,' और सुचि हमारी यह मुलाकात शायद आखिरी मुलाकात ही होगी.''

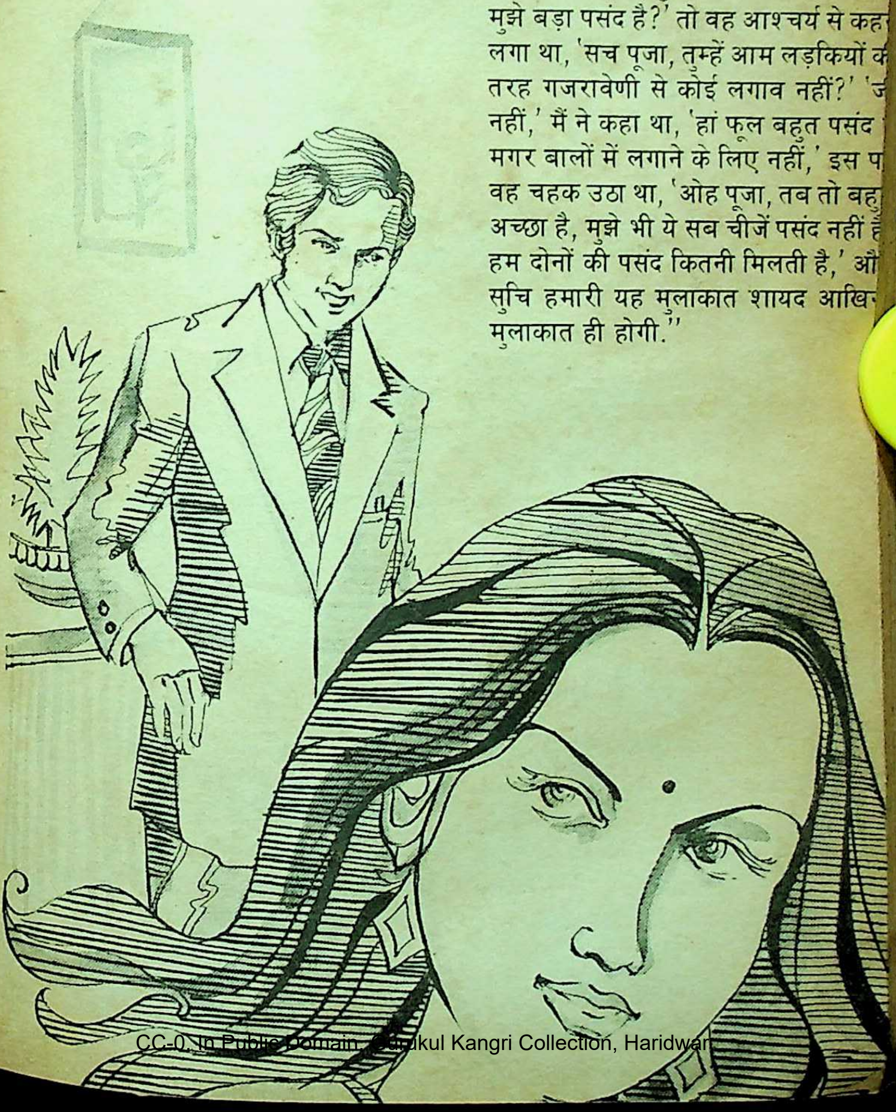

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''चल पगली, जब कि तुम दोनों ...दूसरे को इतना चाहते हो, ऐसा कैसे हो ...कता है. अच्छा, आगे बता फिर क्या हुआ.''

''आगे क्या बताऊं, सुचि, दीपू अब ...झ से बेहद नाराज हो गया है. अब वह ...ायद मुझ से कभी भी बात नहीं करेगा.''

''लेकिन हुआ क्या,'' मैं ने उसे झंझोड़ते ...ए पूछा था.

''सुचि, दीपू भावावेश में आ कर कहने ...गा, 'पूजा, क्या करूं, तुम्हारे बिना अब मन ...हीं लगता, इसलिए तुम अब जल्द से मेरी ...दगी में शरीक हो जाओ.' इस पर मैं ने ...हा, 'तो क्या अब तुम्हारी जिंदगी से अलग ...' 'नहीं पूजा, तुम मेरी जिंदगी में होते हुए ...ी मेरी जिंदगी से अलग हो, मैं तनहाई में ...म्हारे लिए तड़तड़प जाता हूं.' यह कह कर ...स ने अपने होंठ मेरे होंठों की ओर बढ़ाए थे, ...र मैं ने उसे अलग हटाते हुए कहा था, 'अभी ...हीं, अभी कुछ दिन और इंतजार करो.'

...मगर सुचि, वह नहीं माना था. मैं ने बहुत मना किया मगर वह भी ...दें पर अड़ गया. बस, मुझे गुस्सा आ गया. ...ता नहीं उस के लिए इतने गिरे हुए शब्दों का ...योग मैं कैसे कर बैठी.

''मैं ने गुस्से में भर कर कहा, 'अच्छा तो ...म इसलिए मुझे इतना सब दिलाते हो ताकि ...तुम्हारी हवस का शिकार बन जाऊं. तुम ...पने पैसों से मेरा मुंह बंद कर के मुझे ...रीदना चाहते हो, मुझ को अपनी वासना का ...िकार बनाना चाहते हो.' यह सब सुन कर ...पू में दोतीन मिनट तक हरकत ही नहीं हुई. ...दुखी व चकित सी उसे हिलाने लगी, तो ...ा उस के गालों पर दो आंसू ढुलक आए थे ...र उस का चेहरा पीला पड़ गया था.

''फिर बड़े ही सर्द व गमगीन लहजे में ...स ने कहा, 'पूजा, तुम्हारे दिमाग में मेरी ...वि बहुत सुंदर है, तुम ने मेरे लिए बहुत ...दर सोचा है. अगर मुझे अपनी हवस ही ...टानी होती तो जितने पैसे मैं अब तक तुम ...र खर्च कर चुका हूं, उतने पैसों में तो मैं एक ...एक सुंदर लड़की को अपने बिस्तर पर ला सकता था, फिर तुम तो इतनी सुंदर भी नहीं.'

''सुचि, इतना कह कर वह तेज कदमों से चल कर अपनी कार में बैठ कर फुर्र हो गया था. मैं ने उसे पुकारा, मगर उस ने नहीं सुना. अब क्या होगा सुचि. वह मुझ से कल से मिला भी नहीं. मैं ने उसे कई बार फोन किया, मगर उस ने मुझ से बात नहीं की. सुचि, मैं ने अपने पांवों पर खुद ही कुल्हाड़ी मार ली. अब मैं क्या करूं. मेरा दिल डूब रहा है सुचि, मैं अब जिंदा नहीं रह पाऊंगी अब... अब मैं खुदकुशी कर लूंगी.''

मैं ने उस से कहा था, ''हट पगली, ऐसा नहीं कहते, मैं तो अभी हूं ना, मेरे होते हुए तू क्यों घबराती है. मैं दीपू से बात करूंगी.''

''नहीं, सुचि, अब कुछ नहीं होगा, खेल खतम हो गया है.''

मैं ने उसे समझा कर घर भेजा था. ''पूजा तू कुछ नहीं करेगी. मैं दीपू से दोतीन दिन में मिलूंगी, इतने दिन में उस का गुस्सा भी जरा कम हो जाएगा. तू अब जा कर आराम कर.''

मैं दीपू से मिलने की बात सोच ही रही थी कि चाचीजी ने यह दुखद समाचार सुना दिया.

मैं नहीं जानती थी कि पूजा इस कदर भावुक हो जाएगी और आत्मग्लानि में आत्महत्या करने पर आमादा हो जाएगी.

दीपू की हालत भी बड़ी बदतर हो गई थी. जब उसे पूजा की खुदकुशी का पता चला तो वह मेरे पास आया था, बिलकुल पागलों की तरह बोलता था, ''मैं ने पूजा को मौत की आगोश में धकेल दिया,'' कभी वह रोने लगता, कभी गंभीर हो जाता.

पूजा तो शून्य में विलीन हो गई. मगर उस की यादें मेरे दिल के जख्म को भरने नहीं देती थीं तथा दीपू की अर्धविक्षिप्त अवस्था जख्म को और टीस जाती थी. आंखों से खारा पानी बहता था. कुछ भी समझ में नहीं आता था कि क्या होगा.

काल का पहिया अपनी गति से घूमता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

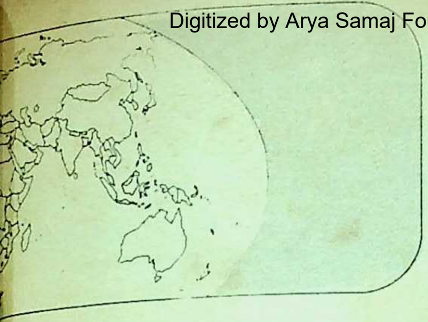

फैलते इस धंधे से सरकार चिंतित हो उठी है.

रूस में पुरानी मोटरगाड़ियों के खरीदनेबेचने का धंधा मुख्यत: एशियाई और जार्जियन भाग के लोग करते हैं. इन का धंधा देशव्यापी फैला हुआ है. इन लोगों के धंधे में काला बाजारी बड़ी आसानी से अपनी पूंजी लगाते थे.

रूस में नई मोटरगाड़ियों का उत्पादन काफी कम है. छोटे परिवार लायक 'झगिली' नामक सैलून कार प्राप्त करने के लिए यहां चार साल इंतजार करना पड़ता है, जब कि पुरानी अच्छी मोटरगाड़ियां आसानी से मिल जाती हैं. बस पुरानी मोटरगाड़ियों के लिए थोड़ा अधिक पैसा देना पड़ता है. पैसा दो और झटपट अच्छी दशा वाली पुरानी मोटरगाड़ी देश में कहीं भी प्राप्त कर लो.

अपने जा रहे हैं

ब्रिटिश द्वीप समूह का आयरलैंड द्वीप काफी समय तक ब्रिटेन के अधीन रह कर अब दो टुकड़ों में बंट चुका है. उत्तरी आयरलैंड ब्रिटेन के अंतर्गत एक स्वशासी राज्य है, जब कि दक्षिण आयरलैंड एक स्वतंत्र गणराज्य है. आयरलैंड में प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक संप्रदायों के बीच संघर्ष की स्थिति बने रहने के कारण ही इस का दो टुकड़ों में विभाजन हुआ. उत्तरी आयरलैंड में प्रोटेस्टेंट और दक्षिण आयरलैंड में कैथोलिकों की अधिकता है.

उत्तरी आयरलैंड की गत वर्ष की गई जनगणना से सरकारी अधिकारी परेशान हैं. उत्तरी आयरलैंड से अनगिनत लोग तेजी से दक्षिण आयरलैंड में बसने जा रहे हैं. सन 1972 से ले कर अब तक उत्तरी 1,33,727 लोग अपनी जगह छोड़ कर दक्षिण आयरलैंड जा चुके हैं. इतनी अधिक संख्या में लोगों के जाने के अनेक कारण हैं : उत्तरी आयरलैंड में हत्या, बम विस्फोट, अपहरण और आयरिश रिपब्लिकन आर्मी के आतंकवादी कार्यों से लोग परेशान हो कर शांति और स्वतंत्रता का जीवन बिताने दक्षिण आयरलैंड पहुंच रहे हैं. उत्तरी आयरलैंड में हर साल बम विस्फोटों से हजारों लोग मर जाते हैं.

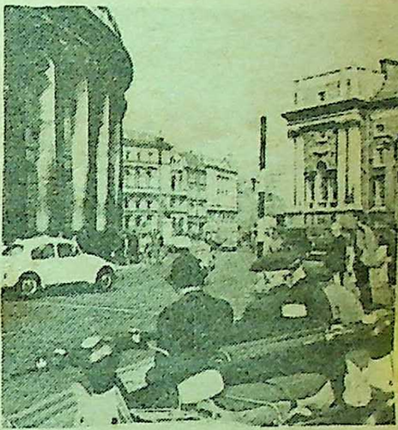

उत्तरी आयरलैंड : सूनी सपाट सड़कें.

इधर उत्तरी आयरलैंड से लोग भाग रहे हैं, उधर दूसरे देशों से लोग उत्तरी आयरलैंड में आ रहे हैं. करीब 30 प्रतिशत प्रवासी बाहर के देशों के हैं. इस देश में भी मुद्रा सफीति और बेरोजगारी बढ़ रही है. इस के बावजूद लोगों के आनेजाने से सरकारी अधिकारी परेशान जरूर हैं.

बंधुआ मजदूर देश

विदेशी कर्ज के कितने बड़े दुष्परिणाम होते हैं, इस का अंदाजा अमरीका के दक्षिण में बसे मैक्सिको की आर्थिक हालत को देख कर किया जा सकता है. कल का तेल के विशाल भंडार वाला यह देश आज 81 अरब डालर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का कर्जदार बन गया है. इस समय इस देश की कुल आय का 60 प्रतिशत लिए हुए कर्ज का ब्याज चुकाने में ही चला जाता है. विदेशी कर्जों से इस देश की हालत इतनी पतली हो गई है कि अपनी अर्थव्यवस्था को बनाए रखने में यह असमर्थ हो गया है. यहां मुद्रा स्फीति की दर 100 प्रतिशत से भी अधिक है जिस के परिणामस्वरूप इस की निर्यात से होने वाली आय बुरी तरह गिर गई है. आर्थिक हालात का अंदाजा इस बात से ही लगाया जा सकता है कि इसे विदेशी बैंकों ने ऋण देना बंद कर दिया है, जिस के परिणामस्वरूप आवश्यक वस्तुओं के आयात में कमी हो गई है. जीवनयापन की चीजों का इस देश में इतना अकाल पड़ रहा है कि देश के विभिन्न हिस्सों में दुकानों के आगे खरीदारों की लंबीलंबी लाइनें दिखाई देती हैं.

कर्ज ले कर ऐशोआराम की जिंदगी जीना कोई अच्छी बात नहीं है. मैक्सिको की

लेबनान की नकली मुहर लगे वस्त्र जो सरेआम बाजारों में बिक रहे हैं.

तरह ही अनेक विकासशील देश, जि... भारत भी है, विदेशी कर्ज से लदा हु... विदेशी कर्ज जहां देश की आर्थिक... राजनीतिक स्थिति को प्रभावित कर... वहां अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में नए बंधुआ... देश का लेबल भी लगाता है. दूसरों से... कर अपनी अर्थव्यवस्था को गतिशील... कभीकभी खतरनाक भी हो जाता है.

करीब 70 करोड़ की आबादी... भारत देश पर एक खरब 78 अरब रुपए... असह्य कर्ज भार इस शताब्दी के अंत... होने के लक्षण अभी से नजर आने लगे हैं... भारत भी दूसरा मैक्सिको बन जाएगा?

लेबनान के नाम पर

युद्धग्रस्त लेबनान की सरकार... लेबनान का वाणिज्य मंडल देश में नक... वस्त्रों के तेजी से आयात होने से दुखी... लेबनान के सिलेसिलाए कपड़ों, विशेष... महिलाओं के कपड़ों की पश्चिम एशिया... देशों में काफी मांग है. अब लेबनान... तस्करी की बदौलत सुदूर पूर्व के देशों... हांगकांग, ताइवान और सिंगापुर का म... बड़ी आसानी से उत्तरी बेरूत में उतर जाता... और यही माल 'मेड इन लेबनान' या... 'लेबनान में बना' की मुहर लग कर अ... पैसों पर दूसरे मुसलिम देशों में बिकने च... जाता है.

लेबनान का वाणिज्य मंडल लेबना... के वस्त्र उद्योग की गिरती साख से परेशान है... आए दिन घटिया माल मिलने की शिकाय... की जाती हैं.

दूसरे देशों में बने इस माल को अ... दामों पर बेचने के लिए दुकानदारों को ... काम करने पड़ते हैं— दूसरे देशों के नाम ... लेबल उखाड़ना और अपने देश के लेब... लगाना. दुकानदारों को इस कार्य के लिए सि... लेबल, कैंची, सूई और धागा रखना पड़ता है... बस, लंबेचौड़े खर्चे से इन्हें मुक्ति मिल जा... है. मजदूर, मशीन, सिलाईकटाई, पैकिंग ... सब खर्च बच जाते हैं. इस आसान तरीके ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्लाहताला में विश्वास करने वाले दूसरे लोगों को व्यापार में ठगने में कोई गुनाह नहीं मानते. यह दूसरी बात है कि जो लोग इस तरह का नकली लेबल लगा कपड़ा पहनते हैं और घटिया माल पाते है, वे बदले में अल्लाहताला से ऐसे लोगों के लिए क्या दुआ मांगते हैं.

फलताफूलता धंधा

अमरीका और ब्रिटेन में पिछले कुछ अरसे से मादक द्रव्यों का तेजी से आयात हो रहा है. इन दोनों देशों में 90 प्रतिशत हेरोइन का आयात अफगानिस्तान के सीमावर्ती पहाड़ी कबीलों के जरिए किया जा रहा है. खैबर दर्रे के पहाड़ी इलाकों में हेरोइन तैयार करने की फैक्टरियां बनी हुई हैं, जहां से चोरीछिपे माल पहले सीधे ब्रिटेन पहुंचाया जाता है और फिर यूरोप के देशों में.

अफगानिस्तान में रूसी हस्तक्षेप और ईरान इराक में युद्ध से पाकिस्तान के व्यापारियों को सब से अधिक नुकसान हुआ है. पाकिस्तान की विषम आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में जी कर यहां व्यापारियों में अब एक ऐसा समूह पैदा हो गया है जो अफगानिस्तान की आड़ में मादक द्रव्यों के धंधे को तेजी से चमकाने लगा है. मादक द्रव्यों का धंधा अवैध होता है और इस का ज्यादातर सामान चोरीछिपे लाया ले जाया जाता है. पिछले 15 महीनों में पाकिस्तान के मादक द्रव्यों का धंधा करने वाले लोगों ने अफगानों का सहारा ले कर हेरोइन का बड़े पैमाने पर यूरोप के देशों में निर्यात शुरू कर दिया है.

एक अनुमान के अनुसार मादक द्रव्यों के व्यापार में, विशेष कर अफीम के उत्पादन में पाकिस्तान ने काफी उन्नति की है. पाकिस्तान में सन 1979 में जहां 800 टन अफीम का उत्पादन हुआ था, वहां सन 1980-81 में 970 टन अफीम तैयार हुई. अफीम का अधिकांश भाग अफगानिस्तान के रास्ते ब्रिटेन व अमरीका पहुंच जाता है.

बाल संवारें
रूप निखारें
सिमको
परमानेन्ट
हेयर डाई
सिमको कुदरती काले या ब्राउन रंग में सफैद बालों को रंगने का विश्वसनीय व आसान उपाय है।
शिकाकाई
केश तेल
मधुर सुगन्धित
लम्बे, चमकीले, और काले बालों के लिये
सिमको हेयर फिक्सर
के निर्माताओं की भेंट

AD-N-AU

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं क्या करूं?

अपनी समस्याएं भेजिए. इस स्तंभ के अंतर्गत नीरजा द्वारा आप की समस्याओं का समाधान किया जाता है.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग
ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली -110055.

कुछ समय पहले जब मैं बेरोजगार था ।ा मेरे एक रिश्तेदार ने अपनी अशिक्षित ड़की से मेरे साथ शादी करने का प्रस्ताव कया. इसे मैं ने व मेरे पिताजी ने स्वीकार कर लया. इस के बाद मेरी सरकारी नौकरी लग ाई. अब न तो मैं उस लड़की से विवाह करना ाहता हूं और न मेरे घर वाले ही ऐसा चाहते . वह लड़की अपनी तरफ से मुझ से काफी ड़ चुकी है और इस बात को भी सब जानते . उस के घर वाले उस से शादी करने के लए हम पर दबाव डाल रहे हैं. मुझे क्या रना चाहिए?

ऐसा लगता है कि आप व आप के घर ाले काफी स्वार्थी व्यक्ति हैं, तभी आप ने स सभय तो उस अनपढ़ लड़की से शादी रना स्वीकार कर लिया, जब आप खुद छ न थे और अब नौकरी लग जाने पर ादी करने से कतरा रहे हैं. अपने स्वार्थ के लए इस तरह से रिश्ते को तोड़ना व उस ड़की व उस के घर वालों की भावनाओं को स पहुंचाना ठीक नहीं है. अगर आप के दिल उस लड़की के प्रति जरा भी लगाव है तो ाप अपने मातापिता के विरोध के बावजूद स से शादी कर लें. जहां तक उस की शक्षा का संबंध है, आप उसे घर पर खुद ढ़नालिखना सिखा सकते हैं.

*

मैं 28 वर्षीय 10वीं पास युवक हूं. चार ल पहले मैं ने अपने एक रिश्तेदार के यहां करी करनी शुरू की थी. जब मैं उन के मने किसी से कोई बात करता तो वह यह ह कर मुझे चुप करा देते कि "तुम में जरा अक्ल नहीं है इसलिए अपनी अक्ल से हीं, हमारी अक्ल से काम किया करो." जब उन से पूछ कर कोई काम न करता तो वह कहने लगे कि "इतने बड़े हो गए हो, कभी तो अक्ल से काम लिया करो, कभी तो अपनी अक्ल लगाया करो." उन के इन तानों को सुन कर मैं अपना आत्मविश्वास खो बैठा हूं. मैं ने उन के यहां नौकरी भी छोड़ दी है. बताइए मैं क्या करूं?

ऐसा लगता है कि आप व्यावहारिक व्यक्ति नहीं हैं. जब कोई किसी के आश्रय में रहता है या उस के अधीन काम करता है तो उस का स्वभाव व पसंदनापसंद पहचानना आना चाहिए. इस के अभाव में शांतिपूर्ण ढंग से काम नहीं चल सकता है. हो सकता है कि आप के रिश्तेदार आप के कामों में जरूरत से ज्यादा हस्तक्षेप करते हों, पर उन के व्यवहार को देखते हुए भी आप को व्यावहारिकता से काम लेना चाहिए था. आप अपना आत्मविश्वास न खोएं व हिम्मत जुटा कर काम करें. अपनी राय किसी भी व्यक्ति को तब तक न दें जब तक कि वहां राय देने के लिए आप से वरिष्ठ व्यक्ति मौजूद हो. वैसे इस में दो राय नहीं कि रिश्तेदार नौकर की कोई भी मालिक कदर नहीं करता, क्योंकि वास्तव में वह उसे बोझ समझता है. यदि आप सोचते हैं कि आप योग्य हैं, तो कहीं और नौकरी ढूंढ़िए.

*

मैं 22 वर्षीय मुसलिम युवक हूं. मेरी शादी हुए डेढ़ साल हो गया है, पर अभी तक मैं अपनी पत्नी के साथ शारीरिक संबंध स्थापित नहीं कर पाया हूं, क्योंकि वह इसे गलत समझती है. वह हर तरह से सामान्य है. हमारे घर वाले इस बात से परिचित नहीं हैं. क्या मैं अपनी पत्नी को छोड़ कर दूसरी शादी कर सकता हूं.?

ऐसा लगता है कि आप की पत्नी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेक्स के बारे में [illegible] नहीं है तो बेहतर यही होगा कि आप अपनी मां, भाभी या घर की किसी अन्य प्रौढ़ महिला, जिस पर आप का विश्वास हो, यह सारी बात बता दें. वह आप की पत्नी के मन में बसे इस भ्रम को दूर कर देंगी. यदि इस के बाद भी आप की पत्नी तैयार नहीं होती है तो आप कानूनन अपनी पत्नी से आसानी से तलाक ले सकते हैं.

*

मैं 20 वर्षीय इंजीनियरिंग का छात्र हूं. कुछ समय से अपने दूर के रिश्ते की एक 17 वर्षीया भतीजी को अपनी छोटी बहन की तरह बेहद प्यार करने लगा हूं. वह भी मुझे पूरा सम्मान देती है. मैं उसे अपने दिल की हालत कैसे बताऊं, जिस से हमारे संबंध अति मधुर हो जाएं.

स्नेह संबंधों की भी एक सीमा होती है और इस सीमा के अंदर रहने पर ही संबंधों की मधुरता को बनाए रखा जा सकता है. वह आप का आदर करती है, इस का स्पष्ट मतलब है कि वह आप की भावनाओं से परिचित है. इस संबंध में आप को उस से कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है. बहुत अधिक भावुकता में न बहें. संबंधों में मधुरता एक दूरी रखते हुए ही स्थायी रूप से कायम रखी जा सकती है.

*

मैं 24 वर्षीय युवक हूं. मेरी एक छोटी बहन है जिस का अब विवाह हो गया है. आज से 10 साल पहले मैं ने अनजाने में अपनी बहन के साथ सोते समय बुरा काम करने की कोशिश की, पर सफल नहीं हो सका. मुझे [illegible] मेरी उस कोशिश का आभास हो गया या नहीं. वह हर साल मुझे अपने हाथ से राखी बांधती रही. शादी के बाद उस ने अपनी ससुराल से मुझे राखी भेज दी, खुद बांधने नहीं आई. पता नहीं, मुझे क्यों लग रहा है कि वह उस पुरानी घटना के कारण नहीं आई. मैं बहुत अधिक हीन भावना से ग्रस्त हो गया हूं. मैं क्या करूं?

आप अपराधबोध से पीड़ित हैं. बचपन में जो कुछ भी हुआ, उसे भूल जाना ही बेहतर है. आप को उस घटना पर पश्चात्ताप है, यह काफी है. अब आप उस बारे में बिलकुल भी न सोचें. अगर आप की बहन को इस बारे में कुछ आभास होता या वह आप से नाराज होती तो इस घटना के बाद ही वह आप के प्रति अपनी विचारधारा बदल सकती थी. उस के ससुराल से न आ पाने के पीछे बहुत सारे कारण हो सकते हैं. अब आप एक सच्चे भाई की तरह उसे प्यार करते रहें. कभी भी उस से या किसी दूसरे व्यक्ति से उस घटना के बारे में कोई चर्चा न करें.

*

मैं 23 वर्षीय सरकारी कर्मचारी हूं. मैं जिस शहर में नौकरी कर रहा हूं, वहां मकान की बहुत समस्या है व एक कमरे में दोदो लोग साथ रहते हैं. मेरे घर वाले मेरी शादी करने के लिए दबाव डाल रहे हैं. पर मैं बिना अच्छी तरह से स्थापित हुए व अलग मकान ले सकने की स्थिति में आए बिना विवाह नहीं करना चाहता हूं. घर वाले वैसे तो मेरी हर बात मानते हैं, पर इस बारे में अड़े हुए हैं. मैं क्या करूं?

आप के इस समस्या के बारे में जो भी विचार हैं, वह एकदम उचित हैं. शादी के बाद सारी समस्याओं का सामना आप को ही करना पड़ेगा, आप के घर वालों को नहीं. शादी के बाद खर्च बढ़ेंगे, घटेंगे नहीं. ऐसी हालत में जब तक आप पूरी तरह से स्थापित न हो जाएं, शादी के चक्कर में न पड़ें. वैसे भी युवकों को 25-26 साल से पहले शादी नहीं करनी चाहिए. —नीरजा

आप के बच्चों
के लिए
अनुपम उपहार
चंपक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीमतें कम करने के लिए :
• सरकारी खर्च कम हो
• करों में कमी हो

बढ़ती हुई कीमतों की मूल वजह (और प्रायः एकमात्र) सरकार द्वारा आवश्यकता से ज्यादा खर्च किया जाना (करों व ऋणों से प्राप्त आय की तुलना में ज्यादा व्यय) और उस घाटे को पूरा करने के लिए नए करेंसी नोट छापना तथा माल व सेवाओं पर नएनए कर थोपना है.

हर नया नोट, हर नया कर माल व सेवाओं की कीमत में तुरंत वृद्धि कर देता है, जिस की वजह से सरकारी खर्च में और अधिक वृद्धि आवश्यक हो जाती है. इस वृद्धि की भरपाई के लिए फिर नए नोट छपते हैं, फिर नए कर लगते हैं और इस से कीमतें लगातार बढ़ती जाती हैं.

राजनीतिबाज बढ़ती हुई कीमतों का सारा दोष उत्पादकों व व्यापारियों के जिम्मे मढ़ कर आम लोगों को धोखा देने की कोशिश करता है, यह अच्छी तरह से जानते हुए भी कि करों द्वारा बढ़ी लागत उत्पादक और व्यापारी अपनी जेब से पूरी नहीं कर सकते. उन्हें चीजों के दाम बढ़ाने ही पड़ते हैं. आम लोगों के हाथ में अतिरिक्त धन आने से भी वस्तुओं की मांग ज्यादा बढ़ जाती है जिस से कीमतें भी और बढ़ जाती हैं.

इस के साथ ही राजनीतिबाजों की अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए, अपनी पार्टियों को चलाने के लिए और चुनाव लड़ने के लिए काले धन की मांग भी जुड़ जाती है. यह रकम सिर्फ माल व सेवाओं की कीमत से ही प्राप्त हो सकती है. इस प्रकार कीमतें और ज्यादा से ज्यादा बढ़ती जाती हैं.

कभीकभी यह कहा जाता है कि ज्यादा उत्पादन से कीमतें बढ़ना रोका जा सकता है. लेकिन अगर कहीं कोई ज्यादा उत्पादन होगा तो वह कच्चे माल और सेवाओं पर बढ़े हुए करों की वजह से ज्यादा कीमत पर ही होगा. इसलिए बढ़े हुए उत्पादन से भी कीमतें कम नहीं होंगी.

कीमतें कम करने के लिए:
• करों में कमी कीजिए
• सरकारी खर्च कम कीजिए

इस के अलावा और कोई रास्ता नहीं है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झील सा यौवन

झील सा यौवन तुम्हारा,
कमल सी मुसकान.
कोपलों सा रेशमी तन,
छंद सा अह्वान.

बिछ गई हो फूल की
घाटी में जैसे धूप,
संगमरमर में तराशा
इंद्रधनुषी रूप.

जलतरंगी गुनगुनाहट,
पी कहां, सा गान.
निर्झरी सी खिलखिलाहट,
मधुकरी सी तान.

आइना बन आ गया हूं,
इसलिए प्रिय पास.
रूप मुझ में बस गया हैं,
हो सके एहसास.

—माया शबनम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

50 लाख बच्चों की प्यारी रंगीन पत्रिका

चंपक

9 भाषाओं में

हर पक्ष चंपक में प्रकाशित मनोरंजन व शिक्षाप्रद कहानियां, कविताएं, पहेलियां, चुटकले और लेख बच्चों को नई जानकारी देते हैं, उन का चरित्र संवारते हैं और नए स्वरूप में ढालते हैं.

चंपक, पंजाबी और बंगाली भाषा के अलावा अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगु और मलयालम भाषाओं में भी प्रकाशित होता है.

अपने बच्चों को चंपक लेकर दें – उन का मनोरंजन भी करें और भविष्य भी संवारें.

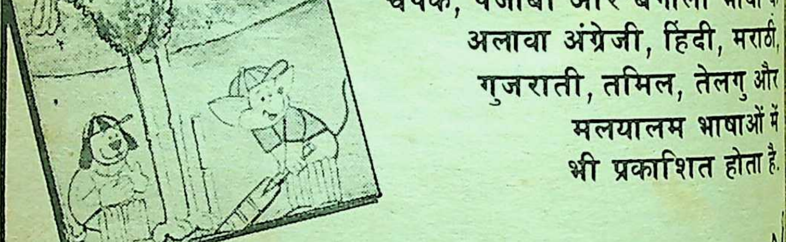

दिल्ली प्रेस प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये लड़के ये लड़कियां

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी, पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता:
संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

तब मैं 11वीं कक्षा का छात्र था. हमारी परीक्षा चल रही थी. जब परीक्षा समाप्त हुई, तब एक शिक्षक ने हमारी कक्षा के सब से कमजोर छात्र से पूछा, "आज तुम्हारा यह विषय कैसा रहा?" छात्र बोला, "आधाआधा." शिक्षक ने पूछा, "क्या मतलब."

"जो कुछ परीक्षक ने पूछा, वह मेरी समझ में नहीं आया और जो मैं ने लिखा है वह परीक्षक की समझ में नहीं आएगा," छात्र बोला. **—संजयकुमार**

*

बात उस समय की है. जब मैं 11वीं कक्षा में पढ़ती थी. एक दिन हमारे भौतिक विज्ञान के अध्यापक ने घर से प्रश्न लिख कर लाने को कहा, अगले दिन उन्होंने प्रश्न न लिख कर लाने वाले छात्रों को खड़ा होने के लिए कहा. साथ ही जो उत्तर पुस्तिका घर पर भूल आए थे, उन्हें भी खड़े होने का आदेश दिया. उस दिन मैं भी अपनी उत्तर पुस्तिका घर पर ही भूल गई थी. लेकिन मैं अपनी सीट पर बैठी हुई थी. एक लड़का जो काफी वाकपटु था, अपनी सीट से खड़ा होता हुआ बोला, "गुरुजी, एक सवारी बिना टिकट ही बैठी है." **—राजबाला आर्या**

*

मैं एक स्कूल में अध्यापिका हूं. गणित की कक्षा में जब सभी छात्राएं प्रश्न हल कर रही थीं तो उस समय मैं निरीक्षण कर रही थी. तभी मैं ने एक छात्रा को चुपचाप बैठे देखा.

मैं ने उस से पूछा, "सवाल क्यों नहीं कर रही हो?"

वह चुप रही. मैं ने उस से फिर पूछा, "क्या कापी नहीं लाई हो?"

"लाई हूं."

"तो क्या किताब नहीं लाई हो?"

"लाई हूं."

"पेन नहीं है क्या?"

"पेन भी है."

"तो फिर सवाल क्यों नहीं कर रही हो?"

"पेन में स्याही नहीं है." उस का उत्तर था. **— ईशू**

*

बात उस समय की है जब हम लोग दिल्ली से आगरा घूमने गए थे. हमें उसी शाम को लौटना था. ताजमहल देखतेदेखते हमें काफी देर हो चुकी थी.

उसी समय एक लड़की गुस्से में बोली, "अरे, भाई, जल्दी करो."

हम लोगों ने उस से कहा कि शाहजहां और मुमताज महल की कब्र देख कर चलते हैं.

"अरे, कब्र मेरे घर पर चल कर देख लेना क्योंकि अब इतनी देर हो चुकी है कि मेरे घर वालों ने मेरी कब्र बनाने की तैयारी शुरू कर दी होगी," उस ने कहा. **— मधु मेहता** •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिसबर, 1982

नए नमूनों व रंगीन चित्रों से सजासंवरा

गृहशोभा

बुनाई विशेषांक

परिवार के सभी सदस्यों को ध्यान में रख कर हमारे बुनाई विशेषज्ञों द्वारा विशेष रूप से तैयार किए गए 16 से अधिक मनमोहक डिजाइन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- हलके नीले रंग में गहरे नीले व सफेद तिकोनों वाला कार्डीगन
- गुलाब के फूलों से सजा शाल
- बच्चे का कंबल
- गाजरी रंग का सामने से खुला कार्डीगन
- तिरंगा व गोल गले का ब्लाउज
- आकर्षक शीशा से सजा स्वेटर
- बिल्ली के मोटिफ वाला स्वेटर
- मोटिफ जोड़ कर बनाई गई वाल हैंगिंग
- जबजब ऊन बचे बिटिया रानी सजे
- ऊन का बुना हुआ कुत्ता

इन के अतिरिक्त अन्य कई आकर्षक नमूने, नए डिजाइन, सरल विधियों, बहुरंगे चित्रों व ग्राफों सहित इस ढंग से प्रस्तुत किए जा रहे हैं कि पत्रिका में उन्हें देखते ही आप बनाना शुरू कर देंगी.

साथ ही साजसज्जा, बागबानी, स्वास्थ्य व सौंदर्य, पकवान, दांपत्य व फिल्मों पर सचित्र सामग्री, घरगृहस्थी की समस्याएं सुलझाने वाली कहानियां व व्यंग्य

विश्वविजय/गृ.शो. 110

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराएं

मनोरंजन से भरपूर

दिल्ली प्रेस प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास्ताने दफ्तर

हमारे कार्यालय के एक अधिकारी अपने कार्य के प्रति काफी समर्पित और उत्सा... व्यक्ति हैं. दफ्तर का कोई भी बाबू जब उन के सामने फाइल रखता तो वह अकसर लिख दि... करते थे, 'यह आवश्यक है कृपया शीघ्र निबटाएं.' क्योंकि उन की दृष्टि में प्रत्येक कार्य ... महत्त्वपूर्ण कार्य था.

एक बार एक फाइल पर उन्होंने लिखा, 'कसम से, यह वाकई अति आवश्यक है, ... बहुत शीघ्र निबटाएं', इस को पढ़ कर हम लोगों को हंसी तो आई, परंतु इस में अधिकारी ... जल्द से जल्द काम निबटाने की झलक भी दिखाई दी.

—शिवप्रकाश गु...

(सर्वोत्तम...)

*

हमारे कार्यालय में एक लिपिक भ्रष्टाचार के खिलाफ हमेशा कुछ न कुछ बोलता र... है. उस की इस आदत से सभी परिचित थे. एक दिन वह कुछ देर से आया.

अपनी मेज पर बैठते ही उस ने देखा कि सभी मेजों पर प्लास्टिक के गुलदस्ते रखे थे. उ... ने एक सहयोगी से पूछा कि "क्या बात है?"

सहयोगी कुछ विनोदी स्वभाव का था, झट से बोला कि "एक ठेकेदार आया था, वही स... को बांट गया है. तुम्हारा गुलदस्ता तुम्हारी मेज की दराज में रखा है, निकाल लो."

इतना सुनना था कि उस ने तीनों दराजें खोल कर देखीं, गुलदस्ता नहीं मिला तो तीन... दराजों को निकाल कर मेज के भीतर देखने लगा कि गुलदस्ते कहीं अटके न पड़े हों.

उस की यह दशा देख कर सभी लोग हंसने लगे. एक ने कहा, "अरे भाई, ये किसी की भें... नहीं हैं, बल्कि सभी ने फेरी वाले से खरीदे हैं. अपनी मेहनत की कमाई के हैं." यह सुन कर व... अपनी झेंप मिटाने के लिए दूसरों की हंसी में शामिल हो गया.

—रीत...

*

हमारे दफ्तर में छःसात लड़कियां भी काम करती हैं. उन के बैठने का स्थान मेरे केबिन के पास ही है. एक दिन वे सब बड़ी तेज आवाज में बातचीत कर रही थीं. उन की किसी घनिष्ठ सहेली के लड़की हुई थी और पंडित ने उस का नाम रखने के लिए 'अ' अक्षर सुझाया था. सभी लड़कियां नाम सुझा रही थीं, जैसे— अनुराधा, अंबिका, अपर्णा, अंजली. इत्यादि. जिसे जब भी कोई नया नाम सूझता, वह जोर से चिल्ला पड़तीं. एकाएक 'अनामिका' के नाम का प्रस्ताव सुनते ही एक बार फिर जोर से शोर हुआ.

इस पर मेरे बगल में ही बने केबिन में बैठे मेरे एक सहयोगी बाहर निकले और लड़कियों से बोले, "जिस की वजह से दफ्तर में इतना शोर हो रहा है, उस का नाम 'अशांति' होना चाहिए.

—रमेशकुमार आहूजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बार बकरीद की छुट्टी में परिवर्तन हो जाने के कारण हमारे कार्यालय के सूचना पट्ट पर एक सूचना लगाई गई कि बकरीद अब 28.9.82 के बजाय 29.9.82 को होगी.

इस सूचना के नीचे किसी सज्जन ने लिख दिया, 'आखिर बकरे की मां कब तक खैर मनाएगी.'

—रामप्रकाश

*

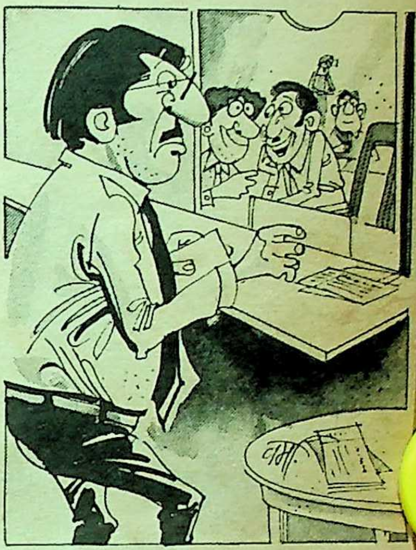

एक बार ड्राफ्ट बनवाने के लिए मैं बैंक में करीब एक बजे पहुंचा. रुपया आदि जमा करने के पश्चात जब मैं ड्राफ्ट लेने क्लर्क के पास पहुंचा तो उस समय भोजनावकाश में (2 बजने में)10 मिनट का समय शेष था कि संबंधित क्लर्क यह कह कर उठ गया कि 'लंच के बाद आना' और वह पास ही बैठे अपने बैंक सहयोगियों से गप्पें मारने लग गया.

मुझे जरूरी काम से बाहर जाना था. अपनी मजबूरी सुनाने पर भी उस पर कोई असर न पड़ा. हार कर मैं शाखा प्रबंधक के पास गया. मेरी मजबूरी सुन कर वह खुद उठ कर आए और उन्होंने ड्राफ्ट बना कर मुझे दिया. यह देख कर अपने साथियों के साथ गप मारने वाले उस क्लर्क का सिर शर्म से झुक गया.

—मुरलीधर टिलवाणी

*

मेरे एक सहकर्मी मित्र मुबारकबाद देने के लिए मशहूर हैं. किसी भी धर्मावलंबी का कोई भी त्योहार हो, सब से पहले वह ही मुबारकबाद पेश करते हैं.

बात मुहर्रम के दूसरे दिन की है. जब हमारे कार्यालय का मुसलमान कर्मचारी आया तो वे तुरंत उस के निकट पहुंचे और हाथ मिलाते हुए बोले, "भाई जान, मुहर्रम की मुबारकबाद कुबूल करें."

इतना सुनते ही हमारा मुसलमान कर्मचारी असमंजस में पड़ गया कि क्या जवाब दे. हम सब भी अपनी हंसी नहीं रोक पाए, क्योंकि मुहर्रम में खुशी नहीं गम मनाया जाता है.

—कामेशकुमार राजपूत

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है. क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 और सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए :
संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह और विवाद

संजय दत्त और रेखा की शादी की खबर उड़ते ही फिल्म जगत में तहलका मच गया था. यह भी खबर गरम हुई थी कि जब संजय दत्त और रेखा सुनील दत्त से आशीर्वाद लेने पहुंचे तो सुनील दत्त ने रेखा को झापड़ रसीद कर दिया और इस पर संजय दत्त ने सुनील दत्त को पीट डाला. लेकिन अब जब कि इस शादी का संजय दत्त और सुनील दत्त खंडन कर चुके हैं, रेखा पूरी तरह खामोश है.

फिल्म जगत में यह चर्चा जोरों पर है कि इस पूरे तमाशे के पीछे जया भादुड़ी और सुनील दत्त का हाथ रहा है. जया ने इसलिये इस शादी की अफवाह को आम कराया कि अमिताभ पर ऐसा असर पड़े कि रेखा ने अमित की दुर्घटना का कोई खयाल नहीं और उस की अनुपस्थिति में अपनी हवस को शा करने के लिए उस ने संजय दत्त को फ लिया.

सुनील दत्त ने इसलिये इस खबर को आम कराया कि संजय दत्त को कुछ प्रचा मिले और उस की नई फिल्म 'जानी आइ ल यू' सफल हो जाए. रेखा और सुनील दत्त के कुछ करीबी लोगों का कहना तो यह भी है कि यह किस्सा सांप छछूंदर का है न उगलते बने न निगलते.

फिल्म जगत में जान आई

इस साल की शुरुआत से ही बड़ी बड़ी फिल्मों की असफलता से फिल्म उद्योग चरमरा कर रह गया था. 'देशप्रेमी' 'राजपूत,' 'धर्मकांटा,' 'बदले की आग' 'तीसरी आंख,' 'जमाने को दिखाना है' आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्में ऐसे निर्माता निर्देशकों की भी जिन की फिल्में रजत जयंती मनाती हैं. इन फिल्मों की असफलता के बाद फिल्म वाले काफी घबरा गए थे और दुआएं मांग रहे थे कि कोई तो फिल्म सफल हो जाए ताकि फिल्म जगत में धन आए और सब की रोजीरोटी चलती रहे.

सफलता की राह में सब से पहली फिल्म 'खुद्दार' जब सफल हुई तो लोगों के

संजय दत्त और रेखा के विवाह की खबर ने कई अफवाहों को जन्म दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मसूड़ों को मज़बूत बनाइये दाँतों की ज़िन्दगी बढ़ाइये

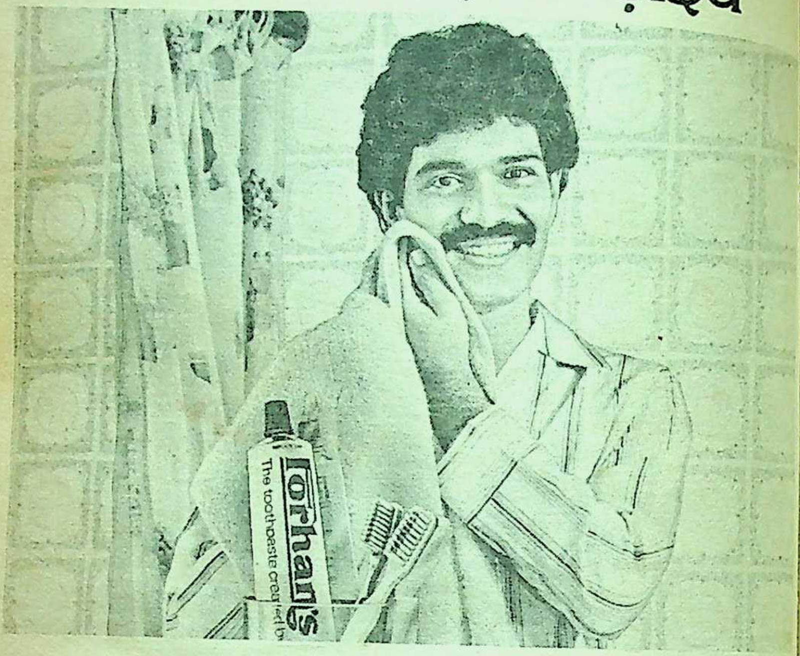

सिर्फ़ फोरहँन्स में ही मसूड़ों को मज़बूत बनाने वाला विशेष ऐस्ट्रिंजेंट है

इसका अनोखा स्वाद ही इसके असर का सबूत है!

फोरहॅन्स का ऐस्ट्रिंजेंट मसूड़ों की विशेष तौर से देखभाल करता है. सूजन रोक कर ऐस्ट्रिंजेंट कमजोर और मुलायम मसूड़ों को संकुचित करके उन्हें स्वस्थ बनाता है. आपके दाँतों को लम्बी जिन्दगी और मजबूत आधार स्वस्थ मसूड़े ही दे सकते हैं. यहाँ तक कि मजबूत दाँतों को भी स्वस्थ मसूड़ों की जरूरत होती है. इसीलिये आपको चाहिये फोरहॅन्स-ऐस्ट्रिंजेंट वाला अनोखा टूथपेस्ट.

फोरहॅन्स खरीदिये दंत-सुरक्षा घर ले आइये

फोरहॅन्स पर भरोसा रखिये

ये दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट है

288 F 172 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेहरों पर कुछ चमक देखने को मिली. 'खुद्दार' के बाद 'प्रेमरोग' भी जबरदस्त सफल हुई और 'निकाह' और 'शक्ति' ने तो फिल्म उद्योग वालों को खुशियां मनाने के लिए मजबूर कर दिया है. ऐसा लगता है कि एक लंबे समय से बेजान हो गए फिल्म उद्योग वालों में नई जान आ गई है.

पुरस्कार के लिए

पिछले दिनों 'बंबई फिल्म एवार्ड' की तरफ से एक बड़ा आयोजन कर के फिल्म 'धर्मकांटा' के लिए राजकुमार को बेहतरीन अदाकारी का पुरस्कार दिया गया. हालांकि यह फिल्म बुरी तरह नाकाम रही है और इस फिल्म में राजकुमार ने एक भी संवाद अच्छी तरह नहीं बोला है.

इसी तरह का एक पुरस्कार फिल्म 'गजब' के निर्देशक दीक्षित को भी सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के लिए दिया गया. जानकारी प्राप्त करने पर पता चला कि यह एक नाममात्र की संस्था है जिस का कोई उसूल नहीं है. जो लोग

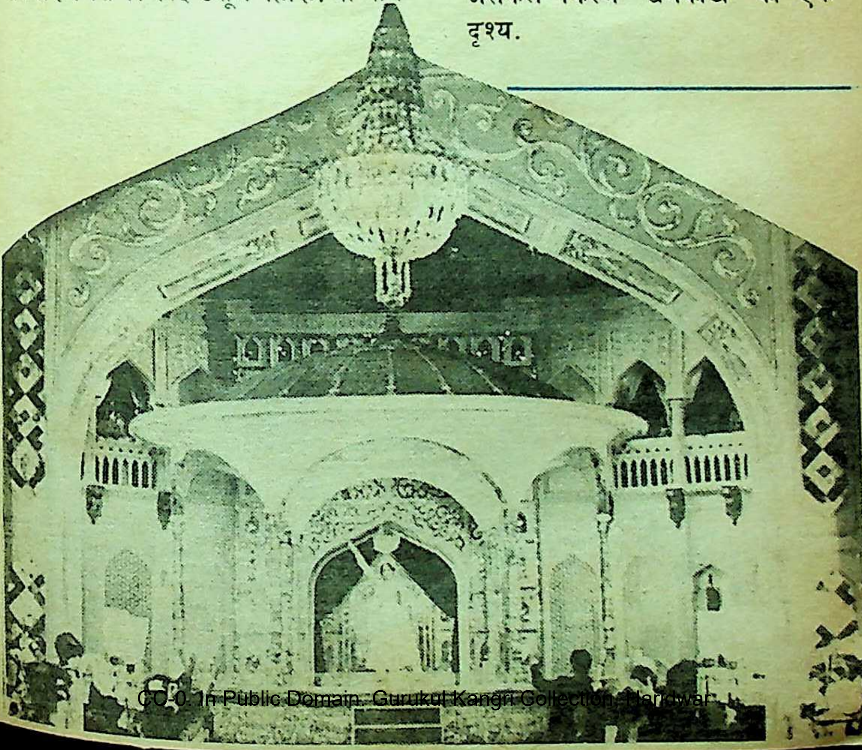

राजकुमार : शोहरत के लिए हथकंडों का प्रयोग व (नीचे) उन्हीं की एक असफल फिल्म 'धर्मकांटा' का एक दृश्य.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

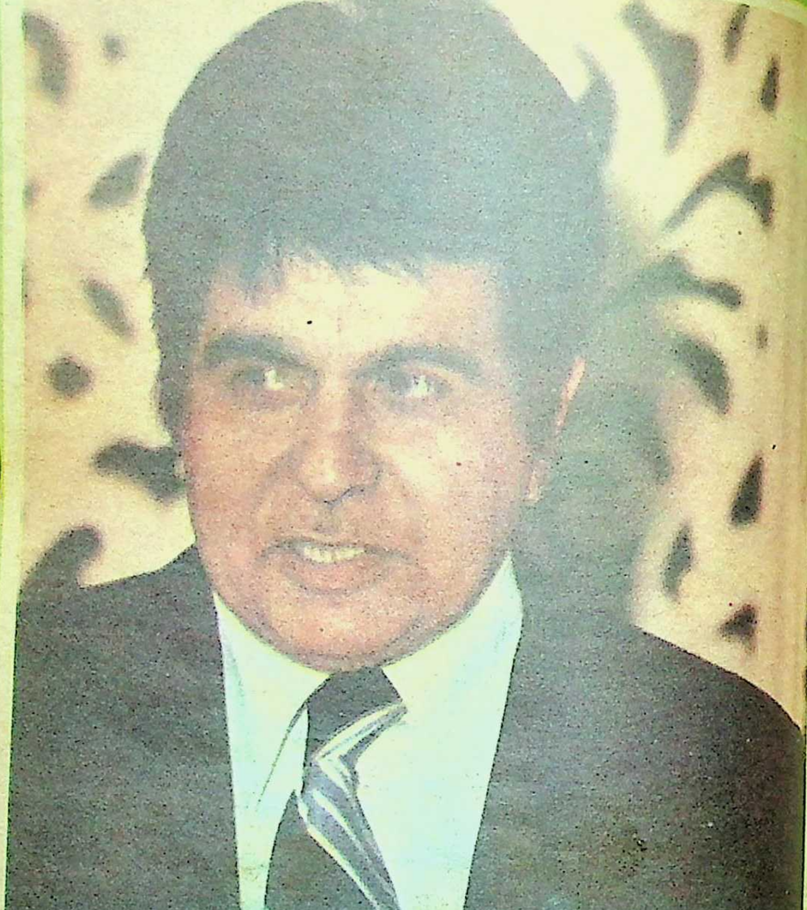

दिलीपकुमार : सब से बड़ा कौन?

इस संस्था के लोगों को पैसा देते हैं उन्हें ही पुरस्कार मिलते हैं. लेकिन राजकुमार जैसे कलाकार से लोगों को ऐसी उम्मीद नहीं थी कि वह झूठी शोहरत का इतना मुहताज है.

अपनेअपने सच

फिल्म 'शक्ति' के बाद एक बहस दिलीपकुमार और अमिताभ बच्चन के चाहने वालों में यह चल पड़ी कि दोनों अभिनेताओं में बड़ा कौन है? कुछ लोग 'शक्ति' में दिलीपकुमार को बड़ा मान रहे तो कुछ अमिताभ को. दिलीपकुमार के पुराने निर्देशक दोस्त से इस प्रतिनिधि ने इस सिलसिले में पूछा तो उन्होंने बड़ी अ... बात कही.

उन्होंने कहा, "शक्ति में न दिलीपकुमार बड़ा है न अमिताभ बच्चन बल्कि 'शक्ति' में सब से बड़ा रमेश सिप्पी जो फिल्म का निर्देशक है और जिस दिलीपकुमार और अमिताभ बच्चन के ... हम भी अपनी मर्जी की फिल्म बना कर दि...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलमा आगा : क्या फिल्मी दांवपेच का शिकार बनेगी?

दी." काश! दूसरे निर्देशक भी रमेश सिप्पी जैसा साहस कर सकें.

सलमा आगा की सफलता

बलदेवराज चोपड़ा की फिल्म 'निकाह' जिस का पहले नाम 'तलाक तलाक तलाक' था, अब काफी झगड़ों के बाद प्रदर्शन के लिए पेश कर दी गई है. अच्छे गीतसंगीत और सलमा आगा के अभिनय की वजह से यह फिल्म बाक्स आफिस पर काफी सफल रही है. एक ही फिल्म की सफलता के बाद सलमा आगा को कई निर्मातानिर्देशक अपनी अगली फिल्मों में लेने के लिए बेताब हो रहे हैं.

सलमा आगा ने इस फिल्म में अपने गीत खुद ही गाए हैं और लोगों को उस की आवाज में एक नया आकर्षण महसूस हुआ है. सलमा की सफलता से जीनत अमान और मंगेशकर बहनों को काफी ईर्ष्या हो रही है. देखिए, सलमा को परास्त करने के लिए अब क्या राजनीति का जाल बिछाया जाएगा. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मीना आपा की आवाज ही मेरी पहचान है"

साधना खोटे 'तमन्ना'

भेंटवार्ता • स. खान

साधना खोटे 'तमन्ना' को लोग भले ही उस के नाम से न जानते हों, मगर उस की आवाज से उसे जरूर पहचानते हैं. उस की आवाज मीना कुमारी की आवाज से हूबहू मिलती है.

"हूबहू तो नहीं मिलती, आप थोड़ा गौर कीजिए मेरी और मीना आपा की आवाज में थोड़ा तो फर्क है ही. बस धोखा सा होता है, सुनने पर," एक भेंट में वह कहने लगी.

"मेरी आवाज शुरू से मीना आपा जैसी नहीं थी. मेरी जिंदगी में एक ऐसा हादसा हुआ कि उस की बदौलत अपनेआप ही मे[री] आवाज बदल गई, और वह आवाज मी[ना] आपा जैसी थी. एक फिल्म के सैट पर जब [मैं] उन से मिली और उन से बातें कीं तो उन्हें [भी] मेरी आवाज सुन कर बड़ा ताज्जुब हु[आ]. दोचार मुलाकातों में वह मुझे अपनी बहन [की] तरह चाहने लगीं थीं. कई बार उन्हीं की [...] पर, उन्हीं के सामने मैं ने उन की आवाज [की] जगह अपनी आवाज दी, यानी उन के सं[वाद] मैं ने बोले और उन्हीं की सलाह पर मैं स्टेज [...] रेडियो पर कार्यक्रम देने लगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक बार उन्होंने मुझ से कहा था, 'साधना, मेरे मरने के बाद लोग मुझे तेरी आवाज की वजह से ही याद करेंगे.' मगर सचाई तो यह है कि मीना आपा की आवाज ही मेरी पहचान है. आज लोगों में मैं मीना आपा की आवाज की वजह से ही पहचानी जाती हूं. वरना मुझे कौन जानता.

"मगर मीना आपा की यह आवाज मेरे लिए अजाब भी बनी. एक बार किसी ने दुश्मनी में मुझे जहर खिला दिया था. मेरी जान तो बच गई मगर मेरा चेहरा खराब हो गया पर मेरी आवाज पर असर नहीं पड़ा. आवाज की वजह से आज भी लोग खुसुरफुसुर करते हैं– 'लो मीना कुमारी आ गईं.'

"मीना आपा की सोहबत में ही मुझे शेरोशायरी का शौक पैदा हुआ. उन्होंने उकसाया तो एक दिन मैं कलम ले कर बैठ गई. सोचने लगी क्या लिखूं कि तभी उन की प्यारी सी शख्सियत आंखों के सामने घूमने लगी और उन की तारीफ में कलम कागज पर चल पड़ा. गजल पूरी हुई तो सब से पहले मीना आपा को ही दिखाई. उन्होंने गजल पढ़ कर मुसकुरा कर कहा, 'भई तुम तो बहुत बड़ी शायरा हो.'

"गजल के आखरी शेर में मैं ने अपना नाम 'साधना' लिखा था. मीना आपा ने कहा– 'तखल्लुस 'तमन्ना' रख लो, अच्छा रहेगा.' बस तब से अब तक अपने नाम के आगे 'तमन्ना' ही लिखती हूं. मीना आपा की तारीफ में जो पहली गजल लिखी थी वह इस तरह हैं:

'तू गुलिस्तां में बहारों की
तरह दिलकश थी,
दहन में चांद सितारों की
तरह दिलकश थी.
मौसम ए गुल की
कहानी थी कहानी तेरी,
एक हसीं ख्वाब थी
दुनिया में जवानी तेरी.
तुझ को फितरत ने
तखैयुल में सजाया होगा,
कितने फूलों की
लताफत से बनाया होगा.
एक जादू था जो
दुनिया में उतर आया था,
यह कोई गीत था जो
साज पे लहराया था.
चांदनी रात
लब ए आब नहाए जैसे,
कोई गालिब का
हंसी शेर सुनाए जैसे.
चलताफिरता हुआ जादू था
तेरा पैकर ए नाज,
तेरी मखमूर खामोशी भी
थी पुरसोज आवाज.
पैकर ए नाज तेरा
सुबह का अफसाना था,
तू सनम थी कि
तेरा साथ सनम खाना था.'

"मेरे बारे में आप को यह सुन कर ताज्जुब होगा कि मैं सिर्फ शायरा ही नहीं बल्कि एक अदाकारा भी हूं. अब तक मैं ने हिंदी की लगभग 40 फिल्मों में काम किया है. जिन के नाम हैं– पूर्णिमा, बंदिनी, दो मतवाले, पहाड़ी नागिन, पांच रतन, फौलादी मुक्का, बेकसूर, प्रेमपत्र, टार्जन आफ हर्क्यूलिस, बेटी, डाक्टर एक्स, पुजारिन, गोपाल कृष्ण, सरस्वती चंद्र, दर्पण, हीर-रांझा, आखरी खत, कौरवपांडव, मन का मीत, मेरा साया, मीरा, रंगा राजा, मदहोश, फौजी, यारी जिंदाबाज, पंडित और पठान, शिवचरण, दुश्मनी यार की, हिसाबकिताब, डाकू और महात्मा, साहब बहादुर, वह मैं नहीं, टैक्सी, समाधि, जंजीर, भयानक, दरवाजा, नियाज और नमाज, बिन फेरे हम तेरे और कसम भवानी की. हिंदी की इन 40 फिल्मों के अलावा मैं ने भोजपुरी की 16 फिल्मों में भी काम किया है.

"अंत में मैं आप को इतना और बता दूं कि मीना आपा के लिए मैं ने 'पाकीजा, गोमती के किनारे, बहारों की मंजिल, दुश्मन और मेरे अपने– पांच फिल्मों में अपनी आवाज दी है. मीना आपा पर बनी फिल्म 'मीना कुमारी की अमर कहानी' में पूरी आवाज मेरी ली गई है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाबाश

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

दुर्घटनाग्रस्त लड़की से शादी

जालंधर की एक युवती का विवाह बुलंदशहर के एक युवक से तय हुआ. युवक के मातापिता शादी से एक सप्ताह पहले ही बुलंदशहर से जालंधर आ गए. संयोगवश शादी से ठीक तीन दिन पहले जब युवती अपनी बहन के साथ रिकशा पर बैठ कर जा रही थी तो एक ट्र से रिकशा की टक्कर हो गई और उस युवती की टांग को गंभीर चोट आई.

युवती को हस्पताल में दाखिल करवा दिया गया. टांग पर पलस्तर चढ़ाया गया और यह निश्चित नहीं था कि पलस्तर खुलने के बाद टांग ठीक हो जाएगी या नहीं. लड़की तथा उस के मातापिता परेशान थे. कहीं लड़के वाले अब शादी से इनकार न कर दें, लेकिन उन के लिए यह एक सुखद आश्चर्य की बात थी कि लड़के तथा उस के घर वालों ने इस बात पर कोई आपत्ति नहीं की तथा लड़की के पूर्ण स्वस्थ होने का इंतजार भी नहीं किया और हस्पताल में ही लड़की के साथ पूर्ण रीतिरिवाजों के अनुसार शादी कर ली.

लड़के से इस बारे में पूछने पर उस ने बताया कि मंगनी के बाद ही वह युवती को अपना जीवनसाथी मान चुका था और उसे इस प्रकार नहीं छोड़ सकता था.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक: सुरिंदरपाल कथूरिया)

(सर्वोत्तम)

*

जिलाधीश का आदर्श निर्णय

मध्य प्रदेश के मंदसोर जिले के जिलाधीश ने घोषणा की है कि वह सार्वजनिक समारोहों में न पुष्पहार पहनेंगे और न ही ऐसे कार्यक्रमों में जलपान ही करेंगे. उन्होंने कहा कि इस प्रकार की फजूलखर्ची से बच कर रहा जाए तो इस अपव्यय को एक हद तक रोका जा सकता है.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक: विमलकुमार बुरड़)

*

चार बच्चों की जान बचाई

पंजाब के नंगल ताल में हुई नौका दुर्घटना में, जिस में पटियाला के 'अवर लेडी आफ फातिमा' कानवैंट स्कूल के 22 छोटे छात्रछात्राओं सहित 24 लोग डूब गए थे, भारी आतंक और चीखपुकार के बीच एक 11 वर्षीया छात्रा रचना जैन ने अप्रतिम साहस दिखा कर अपने चार सहपाठियों की जान बचा ली.

छठी कक्षा की छात्रा रचना जैन ने पहले दो बच्चों को बचावनौका में हाथ से खींच कर चढ़ाया और फिर तैरतैर कर दो डूब रहे बच्चों को पकड़ कर नौका तक ले आई. रचना के मातापिता को भी इस बात पर काफी आश्चर्य है, क्योंकि उन के अनुसार रचना बेहद डरपोक है.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक: भूपेंद्र धरेजा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रद्दी अखबार

लेख: प्रतिनिधि

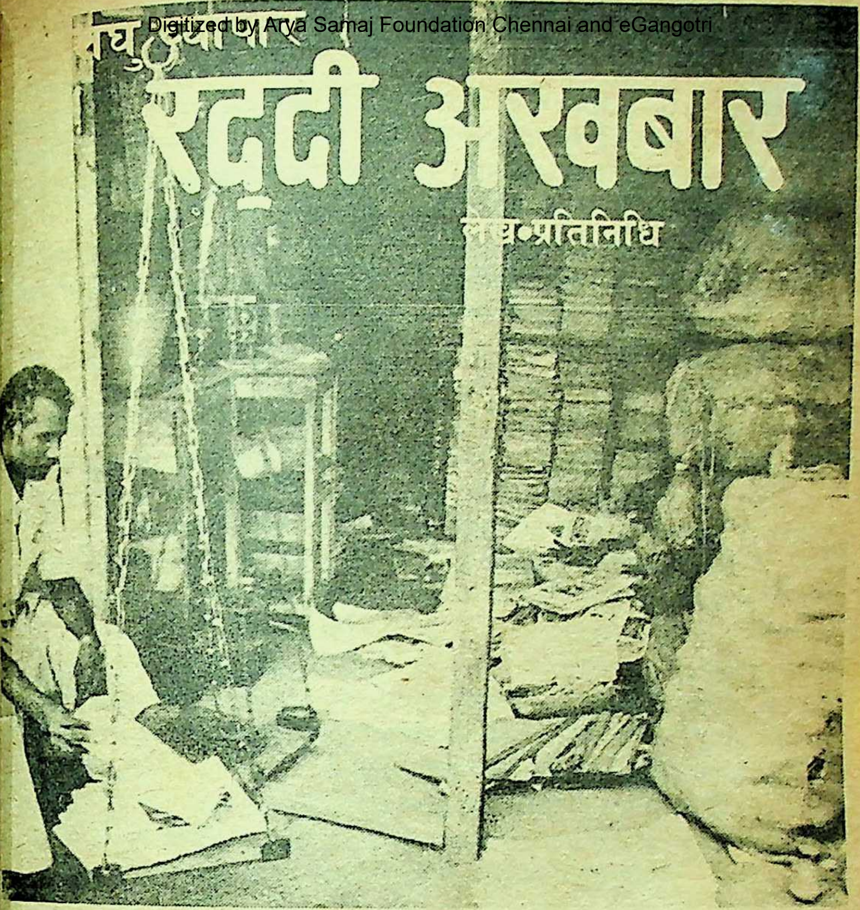

लगभग हरेक व्यक्ति कोई न कोई दैनिक अखबार या पत्रिका अवश्य खरीदता है. साधारणतया एकदो महीने के अखबार इकट्ठे होने पर रद्दी अखबार खरीदने वाले, जिसे कबाड़िया भी कहते हैं, को बेच दिए जाते हैं. रद्दी अखबारों का धंधा एक ऐसा धंधा है जिस में कम लागत पर अच्छा मुनाफा होता है.

इस के लिए दुकान में यद्यपि किसी खास सजावट अथवा बनावट की आवश्यकता नहीं है, फिर भी अगर दुकान का बाहरी हिस्सा कुछ साफ सुथरा रहे तो ग्राहकों की संख्या बढ़ जाती है.

इस धंधे में कुछ व्यावहारिक जानकारी रखने पर कम पूंजी से भी अच्छा मुनाफा प्राप्त किया जा सकता है.

यह धंधा शुरू करने के लिए अगर चार हजार से आठ हजार तक रुपए लगाए जाएं तो बहुत ही अच्छा रहता है, वरना तीन हजार में भी काम शुरू किया जा सकता है.

दुकान जमाने के लिए शुरूशुरू में आसपास के कबाड़ियों (जो गलियों में फेरी लगाते हैं) से संपर्क कर के उन्हें कमीशन बांध देना चाहिए, ताकि घरों से खरीदे गए रद्दी अखबार इत्यादि वह आप की दुकान पर आ कर बेचें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले सात वर्षों से दिल्ली के करोल बाग में कबाड़ी का धंधा कर रहे रामनिवास के अनुसार कबाड़ी का धंधा एक ऐसा धंधा है, जिस में कई तरह के गलत धंधो की गुजांइश सब से ज्यादा होती है. मसलन चोरी का सामान खरीदना. शुरू में गलत धंधों में हाथ बिलकुल नहीं डालना चाहिए, क्योंकि इस तरह के काम करने से दुकान की बदनामी हो जाती है तथा दुकानदार को जेल भी जाना पड़ सकता है. अतः लोहा, लक्कड़, पीतल, तांबा इत्यादि खरीदते वक्त यह तसल्ली कर लेनी चाहिए कि सामान चोरी का नहीं है.

इस धंधे में अखबार, प्लास्टिक, डब्बा, शीशा, बोतल, लोहा, पीतल, तांबा, रबड़, पत्रिकाएं, रद्दी कापियां इत्यादि आम लोगों से खरीद कर पुनः उन्हें जरूरतमंद लोगों को बेच दिया जाता है. मसलन रद्दी अखबार, तथा पत्रपत्रिकाएं फल विक्रेता या किराने की दुकान वाले खरीद कर ले जाते हैं. अखबार पुनः कागज बनाने वाली फैक्टरियों में भी चले जाते हैं.

रद्दी कागज इत्यादि का इ[...] गत्ता बनाने में भी होता है. प्लास्टिक, [...] शीशा इत्यादि पुनः कारखानों में [...] जाता है, जहां उन्हें गलाने के बाद [...] चीजें बनाई जाती हैं. दिल्ली के बा[...] आमतौर पर कबाड़ी के सामान खरी[...] बेचने की दरें सूची में दी गई हैं

कबाड़ी की दुकान खोलने के बा[...] करीब 400 या 500 रुपए हाथ में [...] चाहिए ताकि सामानों को खरीदा जा[...]

कबाड़ी की दुकानों में 150 या [...] रुपए प्रतिमाह पर एकदो नौकर भी र[...] पड़ते हैं, जो अखबारों तथा अन्य सामा[...] सिलसिलेवार रखने में मदद कर सकें.

आसपास के दफ्तर, पुस्तक[...] इत्यादि से संपर्क कर लेने पर भी धं[...] जमने की गुंजाइश ज्यादा होती है.

कबाड़ी की दुकान 4,000 रुपए [...] लागत में करने पर 20-30 रुपए रोज [...] आमदनी हो सकती है. ऐसी दुकानों [...] पंजीयन समय से करा लेना चाहिए.

कबाड़ी के सामान	खरीदने की दर (प्रति किलोग्राम)	बेचने की दर (प्रति किलोग्राम)
अखबार	दो रुपए से 2.20 रुपए तक	2.10 से 2.40 रुपए तक
प्लास्टिक	आठ से 10 रुपए तक	9.50 से 11 रुपए तक
डब्बे	25 पैसे प्रति डब्बा या 1.25 रुपए प्रति किलोग्राम	30 पैसे प्रति डब्बा या 1.50 रुपए प्रति किलोग्राम
शीशा	25 पैसे	30 पैसे
पीतल	20 रुपए	21 या 22 रुपए
लोहा	यह लोहे की किस्म के ऊपर निर्भर करता है—साधारणतया 70 पैसे, 1.00 रुपए तथा 1.50 रुपए प्रति किलोग्राम	10 पैसा प्रति किलोग्राम के हिसाब से मुनाफा
रबड़	25 पैसे	30 पैसे
पत्रिकाएं	1.50 रुपए से 2.25 रुपए	1.65 से 2.40 रुपए
प्लास्टिक, रबड़ के चप्पल इत्यादि	3.25 रुपए	3.50 रुपए
रद्दी कापियां	1.50 रुपए	1.60 या 1.65 रुपए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्वपूर्ण होती है. लेखकों का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दे दिया गया है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इन में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 75 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए
द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए
तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.
इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे.

इस के लिए 50 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पराजित आस्था

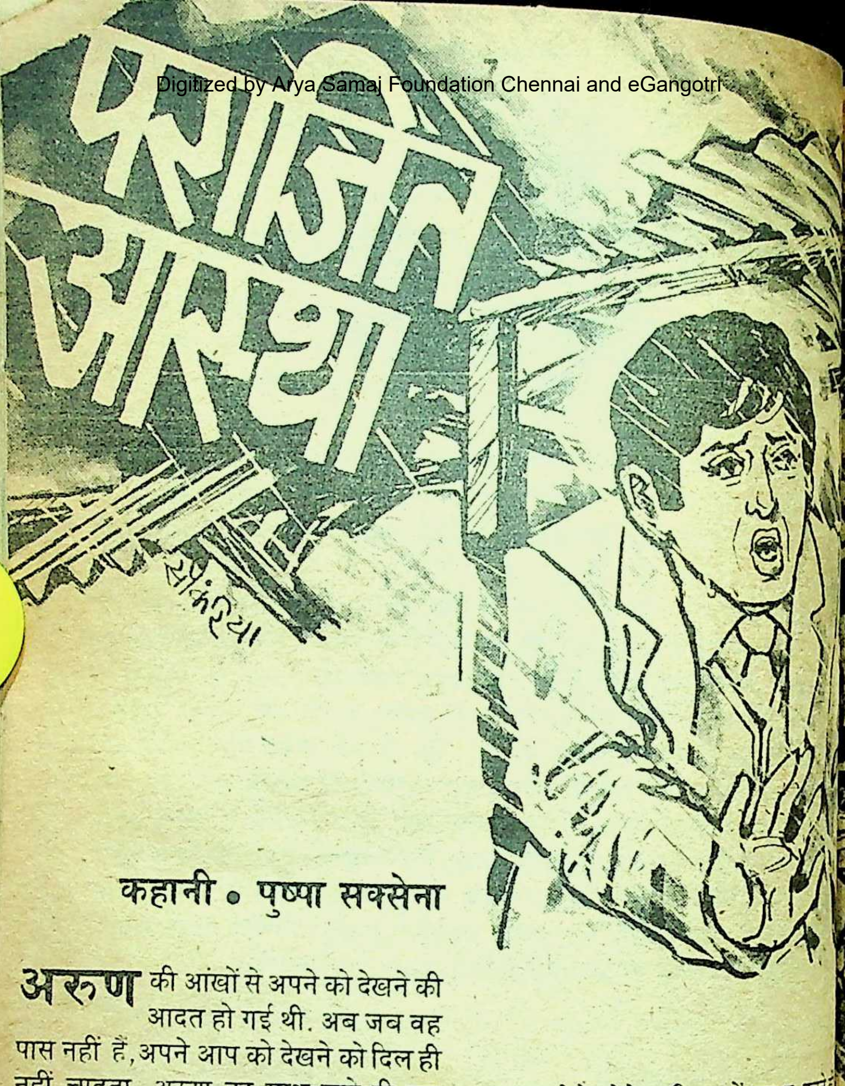

कहानी • पुष्पा सक्सेना

अरुण की आंखों से अपने को देखने की आदत हो गई थी. अब जब वह पास नहीं है, अपने आप को देखने को दिल ही नहीं चाहता. अरुण का साथ पाते ही मन बादलों से होड़ लेने लगता था, लेकिन अब... अब जेठ की तपती दोपहरी भरा आकाश को सहने की आदत हो गई है.

पता नहीं क्यों आज मेरा अतीत मेरे सामने आ खड़ा हुआ है.

उस रोज भैया ने अपने कमरे में से मुझे जोर से आवाज दी थी. उन के स्वर में उत्साह छलका पड़ रहा था. हमेशा की तरह धड़धड़ा कर मैं कमरे में घुसी थी, पर एक अपरिचित को देख कर जब थोड़ा सा ठिठकी थी, तो भैया हंस पड़े थे, "अरुण, यही है मिनी. इस का रंगरूप तो ठीक है, पर दिमाग की जगह खाली छूट गई है. वैसे साहित्य में एम.ए. करने की चेष्टा कर रही है," मेरी चढ़ी भृकुटी को अनदेखा कर भैया कहते गए थे, "मिनी, ये हैं डाक्टर अरुण. यहां मेडिकल कालिज में नएनए आए हैं, तो शायद अब इतना परिचय काफी है अब मैं निश्चित हो कर विदेश जा सकता हूं न?"

भैया को अमरीका जाना था इसीलिए उन्होंने अपने बचपन के मित्र अरुण को, जो कई साल बाद यहां डाक्टर बन आ गया था, हमारे घर में ही रख दिया था ताकि हमें उन की अनुपस्थिति न खले.

भैया के जाने की तैयारियों में चार...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

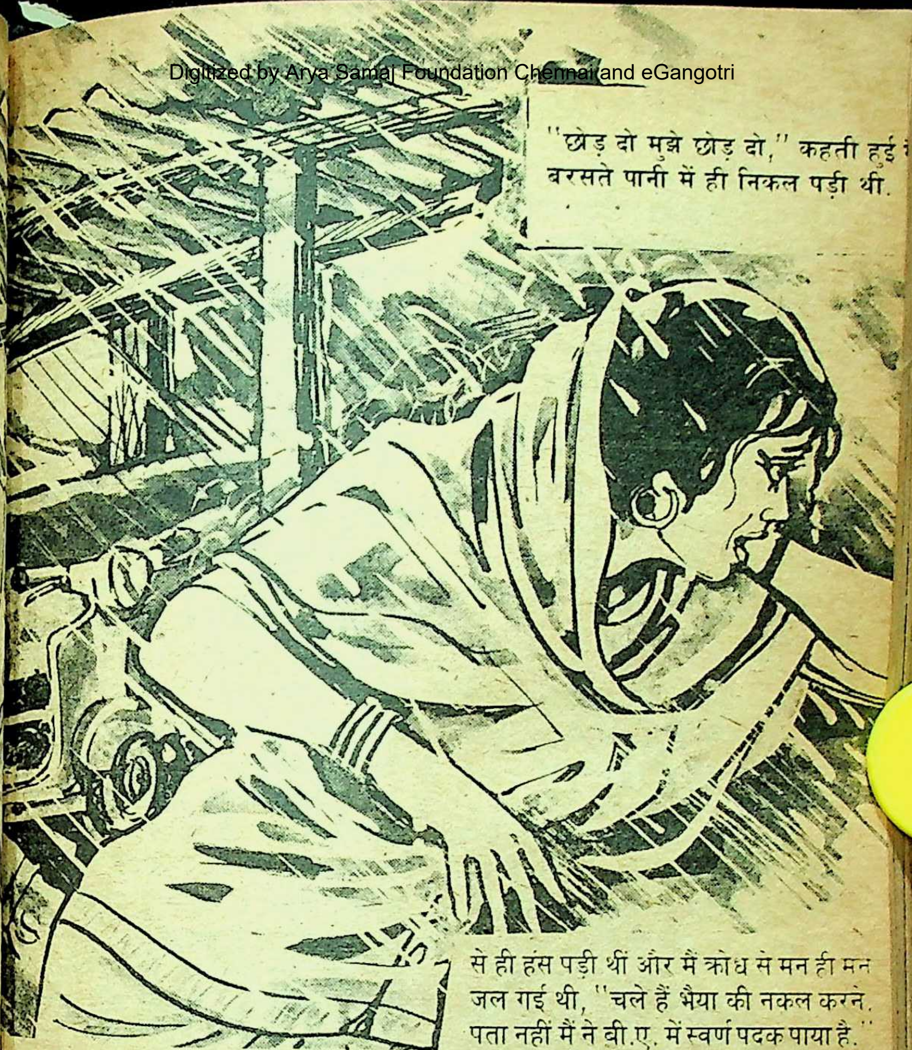

"छोड़ दो मुझे छोड़ दो," कहती हुई मैं बरसते पानी में ही निकल पड़ी थी.

मानों चार पल की तरह बीत गए. हर पल मैं भैया के साथ जीना चाहती थी, आखिर वर्षों का अंतराल जो भोगना था इस के बाद. इस बीच अरुण पर न जाने कब मैं अधिकार जमा बैठी, यह मुझे पता ही नहीं चला.

भैया को हवाई अड्डे तक पहुंचाने के लिए हमारे साथ अरुण भी आए थे. भैया के जाते समय जब मां अपना संयम खो बैठी थीं, तो अरुण बड़े सहज हो कर बोले थे, "मां क्या करें, अनिल को मिनी के कारण अमरीका जाना पड़ रहा है. अमरीका में मस्तिष्क प्रत्यारोपण सीखेगा ताकि मिनी के दिमाग की खाली जगह भरी जा सके." [illegible] से ही हंस पड़ी थीं और मैं क्रोध से मन ही मन जल गई थी, "चले हैं भैया की नकल करने. पता नहीं मैं ने बी.ए. में स्वर्ण पदक पाया है."

पर मेरे मुख को पढ़ते ही क्षमायाचना के

प्रेम की राह में एक मोड़ ऐसा भी आया जब मिनी ने अरुण को अपनी आदर्शवादी आस्थाओं के विपरीत पा कर उस से संबंध तोड़ लिए, पर कुछ दिन बाद उस की ये आस्थाएं खुद ब खुद क्यों टूटने लगीं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर में अरुण बोले थे, "ऐ मिनी, जरा मां को हंसाना था तभी यह बात कही, वरना तुम्हारी योग्यता की धाक तो हमारे मेडिकल कालिज तक है." चिढ़ कर भी मैं हंस पड़ी थी.

अरुण ने भैया की अनुपस्थिति कभी खलने नहीं दी. प्रातः मेडिकल कालिज जाने से पूर्व मां का डाक्टरी मुआयना करना मानो उन का प्रथम दायित्व था और अगर मां इस को मना करतीं तो वह हमेशा कहते, "अनिल आप दोनों का दायित्व मुझ पर छोड़ गया है. उस की धरोहर की ठीक से रक्षा न कर सका तो अपने प्यारे दोस्त की दोस्ती खो बैठूंगा."

संध्या होते ही अरुण आ जाते थे. कभी सिनेमा देखने, कभी कहीं घूमने और कभी खरीदारी करने, हम दोनों निकल जाते थे. ठंडी काफी मुझे बहुत पसंद है, यह अरुण जान गए थे.

कभी हस्पताल में ज्यादा व्यस्त होने पर अरुण फोन कर देते, "मिनी, तैयार रहना, यहां से सीधा तुम्हें ले कर पिक्चर देखने चलूंगा."

पर थोड़ा तुनक कर मैं कहती, "न बाबा न, मैं नहीं जाऊंगी तुम्हारे साथ, तुम्हारे कपड़ों से हस्पताल की सी गंध आती होगी. आज रिकशे से चली जाती हूं." पर ऐसा करने का अरुण ने मौका ही कब दिया?

बचपन से अपने ऊपर भैया की स्नेह छाया पाई थी. भैया ने हमेशा मेरा जन्मदिन बहुत धूमधाम से मनाया था. इस बार जन्मदिन पर आई भैया की शुभकामनाएं पा कर मन बहुत उदास हो गया था. अरुण एकदम कमरे में आ गए थे, कार्ड पर दृष्टि जाते ही चौंक गए थे, "वाह, अनिल की शुभकामनाएं" और फिर उन्होंने मां के साथ हड़बड़ी मचा दी थी. मां घबरा उठी थीं, "क्या करूं अरुण, हमेशा अनिल ही इन सब झंझटों से निबटा करता था. आज मिनी की साड़ी..."

बस मां का इतना कहना था कि अरुण ने मुझे जबरन स्कूटर पर बैठाया और साड़ी की दुकान पर ला कर खड़ा किया. पूरे उत्साह और आत्मविश्वास के साथ अरुण ... निकलवाते रहे और अंत में एक ... गुलाबी साड़ी देख जैसे उस पर मुग्ध हो ... थोड़ी देर में हम साड़ी, केक, मिठाइयां ... लौटे थे.

यह सब देख कर मां ने हलका ... विरोध किया था. इस पर अरुण उदास हो ... थे. तो मां ने हंस कर कहा था, "मिनी ... यह साड़ी पहन ही ले, तेरे मनपसंद ... है." अरुण की आंखों में चमक आ ... वह साड़ी पहन कर पहली बार अरुण ... आंखों से अपने को बहुत चाहा था.

विश्वविद्यालय में वाद... प्रतियोगिता होने वाली थी. विरोध पक्ष ... बोलने के लिए मेरा नाम दे दिया गया ... घबरा रही थी, पर अरुण हंस कर बोले ... "भई क्या मुशकिल है, जहां भूल ... खांसने लगना, हथेली पर लिखे प्वाइंट्स ... जरा सा मुसकरा कर 'सारी' कह कर ... बोलने लगना." अतः तरहतरह से अरुण ... उत्साहित करते रहे थे.

प्रतियोगिता में धाराप्रवाह बोल ... जब मैं मंच से उतरी थी, तो अरुण की ... प्रशंसा दृष्टि में मैं ने अपनी विजय ... परिणाम पहले ही पढ़ लिया था. मेरे ... पुरस्कार प्राप्ति के बाद अरुण ने मेरे ... हाथ फैला कर कहा था, "इस पुरस्कार ... मेरा अधिकार है. कितनी झूठी ता... बजाईं, तब मिला है."

"अच्छा, मेहनत मैं करूं, पुर... आप का?" फिर भी पुरस्कार अरुण के ... पर रख कर बहुत अच्छा लगा था.

एक दिन विश्वविद्यालय से ही ... सहपाठिन किरन साथ आ गई थी. इधर ... के साथ पकौड़ी की फरमाइश लिए अ... आ गए थे.

परिहास के स्वर में वह बोले थे, "... समझ में आया कि साहित्य के लोग रो... क्यों होते हैं...?"

इस से पहले कि अरुण अपनी बा... करते, किरन ने हंस कर कहा था. ... डाक्टर साहब, प्रोफेसर गंभीरता ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नायिका के 'नखशिख वर्णन' को पढ़ाते समय मिनी की ओर से आंखें ही नहीं हटाते. पूरे मन से मिनी पर स्नेह उंडेलते हैं."

इस पर मैं घृणा से होंठ चबा कर पकौड़ी लाने रसोई की ओर चल दी थी.

उन दिनों सर्दी ज्यादा पड़ने लगी थी. मुझे जुकाम हो रहा था. फिल्म उतरने का अंतिम दिन था. अरुण ने शाम को वह फिल्म दिखाने का वादा किया था. चलते समय हलके बादल छाए थे. मां ने मौसम देख कर हमारे जाने का हलका विरोध भी किया था, "आज सिनेमा नहीं जाएगी तो क्या हो जाएगा. फिर बीमार पड़ेगी तो... अरुण को तंग करेगी."

मां की बात सुनते ही अरुण हंस पड़े थे. फिर थोड़ी गंभीरता का नाटक कर के बोले थे, "सच मां, मिनी को इतनी फिल्में नहीं देखनी चाहिए. आपरेशन टेबल पर मरीज छोड़ कर इसे फिल्म दिखाने के लिए आया हूं, वरना कल क्या घर में घुसने देती?"

मां के मुख पर चिंता उभरी देख कर मैं खीज उठी थी, "ओह मां, आज तो इन की छुट्टी है, तुम भी किस का विश्वास करती हो." इस पर अरुण के साथ मां भी हंस पड़ी थीं और हम दोनों चल दिए थे.

फिल्म की समाप्ति पर बाहर निकले तो हलकी वर्षा शुरू हो गई थी. एक पल आकाश की ओर ताक कर अरुण ने कहा था, "मिनी जल्दी चलो, कहीं पानी तेज पड़ने लगा तो मुशकिल में पड़ जाएंगे."

पिक्चर हाल शहर के बाहर था. अरुण स्कूटर तेजी से भगा कर चल दिए, पर शायद पानी तेजी से पड़ने के लिए हमारी ही राह देख रहा था. पानी की बौछारें मुंह पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानो थप्पड़ मार रही थी. सड़क पर बत्तियां भी बुझ गई थीं. तेज हवा और बारिश में अरुण को स्कूटर चला पाना कठिन हो रहा था. परेशान हो कर एक बंद दुकान के आगे अरुण ने स्कूटर रोक दिया. हम दोनों उस दुकान के छज्जे की शरण पाने दौड़ पड़े थे.

तभी पास कहीं बड़े जोर से बिजली गिरी थी और मैं भयभीत सी हो कर अरुण के एकदम निकट हो गई थी. अरुण ने अचानक मुझे अपने आलिंगन में ले कर अपने होंठ मेरे होंठों पर रख दिए थे. विस्मय, घृणा और क्रोध से मैं तिलमिला गई थी, 'छोड़ दो मुझे छोड़ दो' कहती हुई मैं बरसते पानी में ही निकल पड़ी थी. पीछे से अपराधी स्वर में अरुण भागते हुए आए थे, "मिनी, सुनो तो, मुझे माफ कर दो, मुझ से गलती हुई है."

पर अरुण का हर अनुरोध अनसुना कर मैं आंसू बहाती, पागलों की तरह लगभग दौड़ पड़ी थी. एक रिकशा दिखा था. बस रिकशा वाले को किसी तरह घर का पता बता कर घर पहुंची थी. घर पहुंच कर द्वार की घंटी पर जोर से हाथ रख दिया था. पीछेपीछे स्कूटर पर अरुण भी आ गए थे.

मुझे पूरा भीगा देख कर मां भयभीत हो गई थीं, "देखा, बड़ों का कहना न मानने का नतीजा? चल, जल्दी कपड़े बदल, अभी चाय भेजती हूं. अरे, अरुण कहां है?"

उत्तर में मैं एक साथ कई सीढ़ियां चढ़ कर कमरे में पहुंच गई थी और धम्म से कुरसी पर बैठ गई थी. रिकशे वाले को पैसे जरूर अरुण ने दिए होंगे. पता नहीं मां से क्या कह कर अरुण उलटे पांव लौट गए थे. मां का उन से कपड़े बदलने, रुकने का आग्रह करना व्यर्थ ही हुआ था.

मैं कब, कैसे कपड़े बदल कर पलंग पर पड़ गई थी, कुछ याद नहीं आता. मां बारबार पूछती रही थीं, "क्या अरुण से लड़ कर आई है. इतना सीधा लड़का है, तू हमेशा उसे तंग करती है. मिनी, इतना अभिमान अच्छा नहीं होता. बेचारा अरुण..."

दूसरे दिन मुझे हलका बुखार हो आया था. मां के मना करने पर भी जरूरी काम का बहाना कर के मैं प्रात: अरुण के आने से पहले ही किरन के घर चली गई थी, फिर उस के साथ विश्वविद्यालय. हमारे विभाग के चपरासी ने जब डाक्टर अरुण के नाम की चिट ला कर मुझे दी तो कई जोड़ी आंखें उत्सुकता के साथ मुझ पर जम गई थीं. मैं ने चिढ़ कर चपरासी से कहा था, "कह दो क्लास में है."

थोड़ी देर बाद चपरासी ने एक लिफाफा ला कर मेरे हाथ पर रख दिया था. चारों ओर फुसफुसाहटें शुरू हो गई थीं. किरन ने रहस्यात्मक अंदाज में मुसकरा कर पूछा था, "क्या बात है भई, रोज मिलती हो, फिर भी बंद लिफाफे?"

क्रोध से जल कर मैं ने कहा था, "किरन, आदमी सब एक से होते हैं. कि... आदर करती थी मैं अरुण का, पर वह कितने दुर्बल पुरुष निकले." कहते... आवेश से मेरे होंठ थरथराने लगे थे.

मुझे पत्र फाड़ने की चेष्टा करती... किरन ने लिफाफा मुझ से ले कर मेरी पुस्... में रख दिया था और धीरे से कहा था, "... मिनी, अगर किसी व्यक्ति से किसी क्षण ... दुर्बलता हो जाए तो क्या उसे उस के ... चरित्र का मापदंड बना डालेगी? और ... जब मन शांत हो, तब यह लिफाफा खोल ... जरूर पढ़ना."

घर आते ही मां ने दो गोलियां और ... का गिलास मेरे सामने रख दिया था, "... दे गया है ये गोलियां. कह रहा था, ... बहुत खांस रही थी. क्या तूने उस से ... झगड़ा किया है, मिनी?"

क्रोध से मैं फिर तिलमिला गई ... गोलियां फेंक कर चीख पड़ी थी, "कुछ ... हुआ है मुझे, मां, बेकार के दिखावे से ... नफरत है."

इस पर मां क्रोध से बड़बड़ाती रह... थीं, "दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ा ... है, न जाने कैसे निभेगी."

मन को बहुत रोकना चाहा, पर ... बंद लिफाफा खोला गया था ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

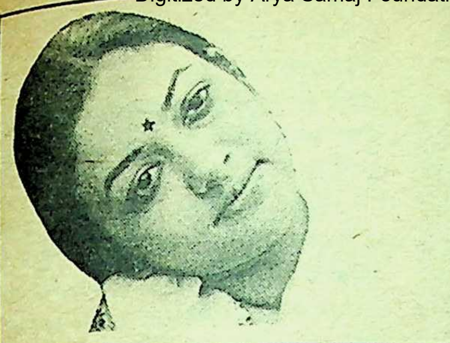

कौन

मझ से आंखें फेर के त ने
यह मशकिल भी आसां कर दी.
वरना तेरे गम के बदले
लेता कौन बसेरे दिल में.

—कतील शिफाई

कुछ नहीं लिखा था :

'मिनी,

कल की दुर्घटना के लिए क्षमा करना. डाक्टर हूं न, शायद इसी लिए शरीर का अस्तित्व झुठला नहीं सका. रोगियों, कीटाणुओं से लड़तेलड़ते मन के किसी कोने में तुम्हारी चाह का कोमल अंकुर पनप आया, मुझे पता ही नहीं लगा. इस शरीर के साथ ही मन है, अगर इस तथ्य को सच मान सको तो शायद मुझे अपराधी नहीं पाओगी.

—अरुण'.

पत्र हाथ में ले कर थोड़ी देर सोचती रही थी. अरुण भी एक साधारण पुरुष ही निकले. वही पुरुषोचित दुर्वलताएं उन में भी हैं. पर उसे मैं ने असाधारण पुरुष के रूप में देखना क्यों चाहा? बहुत चाह कर भी मैं अरुण को फिर उसी सामान्य सहज स्थिति में स्वीकार नहीं कर पा रही थी.

अरुण इस पत्र के बाद शायद मेरे पीछे ही मां के पास आते थे, क्योंकि मां की दवाइयां, चैकअप सब सामान्य रूप से चल रहा था. बस हम दोनों अपरिचित हो गए थे.

लंबी छुट्टी पर जाने से पूर्व अचानक अरुण घर जल्दी आ गए थे. अकस्मात उन्हें अपने सामने पा कर मैं चौंक गई थी. उन का सूखा मुंह देख कर मन हाहाकार कर उठा था. वह सूखे गले से बोले थे, ''लंबी छुट्टियों पर घर जा रहा हूं मीनाक्षीजी.'' फिर अपने हाथ में पकड़ी दवाओं की सूची व दवाएं मुझे थमाते हुए बोले थे, ''सब सावधानियां लिख दी हैं. मां को समय पर दवाइयां देती रहिएगा. फोन नंबर लिख दिया है, कोई समस्या होने पर डाक्टर गुलशन को बुला लीजिएगा, अच्छा नमस्कार.''

बिना किसी जवाब की प्रतीक्षा के अरुण मुड़ कर चले गए थे. मेरे कानों में उन का संबोधन 'मीनाक्षीजी' जैसे डंक बन कर पूरे शरीर में चुभता रहा था. मैं चाह कर भी अरुण को नहीं पुकार सकी थी, पर पता नहीं क्यों जैसे मेरा रोमरोम उन को रोकने का आग्रह करने लगा था.

अरुण को गए दो माह बीत गए. हर पल अनजाने ही उन की प्रतीक्षा करती रही. मन मानो अचानक ही रस विहीन हो उठा था.

कल किरन ने फोन कर के बताया कि अस्वस्थ अरुण मेडिकल कालिज में है. मां के साथ भाग कर उन को देखने पहुंची थी. नर्स ने बताया था कि ''विशेष चिंता की बात नहीं, शायद डाक्टर अरुण ने अपने स्वास्थ्य के प्रति बहुत लापरवाही बरती थी.'' फीकी मुसकान के साथ अरुण ने हमारा स्वागत किया था. उन के कमजोर शरीर को देखते ही मां ने मीठी झिड़की के साथ हिदायतों की झड़ी लगा दी थी. मेरी ओर न जाने कितनी गहरी दृष्टि से देख कर अरुण बस मुसकरा भर दिए थे. अरुण का उस दिन का चुंबन मेरे अधरों पर दहक उठा था. लज्जा से आरक्त मुख को ऊपर उठा कर अरुण की ओर ताकने का दुस्साहस न कर सकी थी, वह मेरी हर बात पढ़ जो लेते थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ने अपने तन को मन के बहुत कड़े अंकुश में रखा था फिर यह तन विद्रोही कैसे बन गया था, मैं सोचने लगी थी. झुक कर अरुण के माथे पर अपना स्नेह चुंबन अंकित करने को मन क्यों अधीर हो उठा था, बांहें उसे अपने में समेट लेने को क्यों व्याकुल हो गई थीं. मुझे अरुण की आंखों में प्यार का अथाह सागर लहराता हुआ क्यों लगा था. पता नहीं क्यों मुझे ऐसे किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं मिल पाया था.

उस पल लगा था जैसे पिछले दो महीनों से मन जिस आग में सुलग रहा था उसे केवल अरुण के इसी स्नेह सागर की अपेक्षा थी. अरुण को देखते ही मन का कोना कोना सुख से परिपूर्ण हो गया था. यह नया ... पलक कर चेहरे की लाज बढ़ा गया था ... अपने से धोखा खाया था. जिस से ... घृणा करनी चाही थी, उसे हर पल ... करने लगी थी.

आज अरुण घर आ रहे हैं. क्या ... वही गुलाबी साड़ी पहन लूं, जिसे पहन ... शीशे में अपने को देखने का साहस खो ... हूं? पर हाथों ने उसी स्नेह उपहार को हृ... लगा लिया है. गुलाबी साड़ी लिए ... आस्था को पराजित कर अरुण की प्र... कर रही हूं.

"कितनी अच्छी सलाह है... अब लोग यह नहीं कह सकते कि अंगूठा छाप भी मंत्री बन जाते हैं... हम आठवीं पास जो आसानी से हो जावेगें..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भारत ने मुझे बहुत प्रभावित किया है"

हैरी जी. बार्न्ज

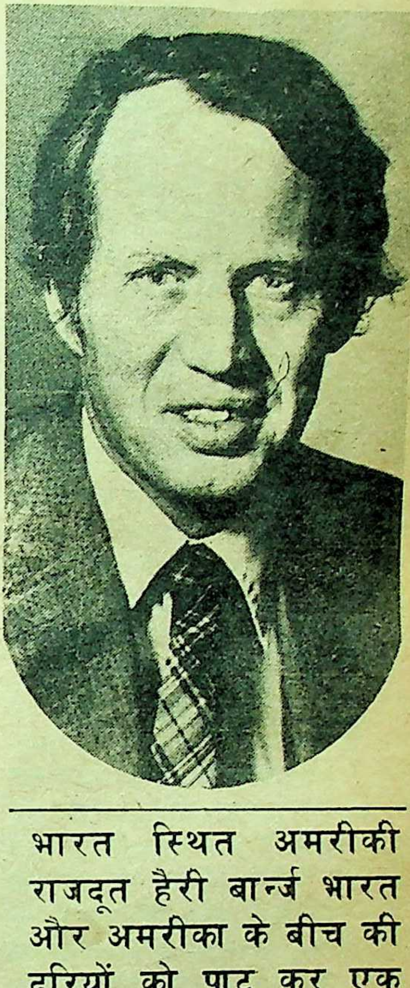

भेंटवार्ता • मृदुला हालन

भारत स्थित अमरीकी राजदूत हैरी बार्न्ज भारत और अमरीका के बीच की दूरियों को पाट कर एक सौहार्द भरा वातावरण बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं. प्रस्तुत है उन की सोच, कार्यप्रणाली और उन के व्यक्तिगत जीवन की झलक प्रस्तुत करती अंतरंग बातचीत.

17 नवंबर, 1981 को भारत में संयुक्त राज्य अमरीका के नए राजूदत हैरी जी. बार्न्ज ने अपना कार्यभार संभाला. राष्ट्रपति भवन में तत्कालीन राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी के समक्ष अपने प्रमाणपत्र प्रस्तुत करते हुए श्री बार्न्ज ने अमरीका और भारत की मैत्री की दीर्घायु की कामना की.

उन्होंने कहा, "हम अमरीकावासी आजादी का महत्त्व और उस का मूल्य पहचानते हैं. तभी तो भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में हम भारत के साथ थे." उन्होंने यह भी कहा कि लोकतंत्री देश एकदूसरे का शोषण कर के या उन के विकास में रुकावट डाल कर संपन्न और निश्चित नहीं रह सकते. आज यहां भारत में जो कुछ हो रहा है, वह अमरीका में हमारे लिए भी महत्त्वपूर्ण है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अगर भारत एक महान (गणतंत्र) शक्ति के रूप में उभर कर सामने आता है तो वह सिर्फ भारत की ही नहीं वरन समूची गणतंत्र शासन पद्धति की सफलता होगी.''

आशा और उत्साह से भरे इन शब्दों ने स्थान की दूरियों को पाट कर दोनों देशों के मध्य एक सौहार्द भरे वातावरण के निर्माण की आशा जगा दी.

उपर्युक्त विचारों को व्यक्त करने वाले श्री बार्न्ज का जन्म 5 जून, 1926 को मिनेसोटा में हुआ था. 1949 में वह स्नातक बने और 1968 में उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की. 1944-46 का समय उन्होंने अमरीकी फौज की सेवा में व्यतीत किया. अंततः विदेश सेवा में शामिल हो कर हैरी 1951 में अपनी पहली नियुक्ति पर बंबई पहुंचे. उस समय उन्होंने इस बात की कभी कल्पना तक नहीं की थी कि आने वाले वर्षों में एक दिन वह इस देश में राजदूत के गरिमामय पद पर प्रतिष्ठित होंगे. और अब जब ऐसा हो गया है तो राजदूत बार्न्ज इस संयोग पर सचमुच ही उत्साहित और प्रसन्न हैं.

भारत : संपूर्ण दुनिया का झरोखा

''1960 के दशक में जहां अनेक बार मेरा आनाजाना हुआ, समय की रफ्तार के साथ बदलते और आगे बढ़ते भारत को मैं ने देखा और समझा. आज फिर एक बार उसी देश में लौट आना, आप सोच सकते हैं, मेरे लिए कितना महत्त्वपूर्ण है.'' वह यह भी महसूस करते हैं कि वह भारत से बहुत प्रभावित हैं और संपूर्ण दुनिया को देखने के लिए भारत उन का झरोखा है.

1951 से 1981 तक का यह सफर कोरा सफर ही नहीं है, विदेशी राजनीतिशास्त्र में पारंगत होने का एक लंबा सिलसिला है. रूस, जरमनी, चेकोस्लोवाकिया, रूमानिया, नेपाल आदि अनेक देशों में विभिन्न पदों पर कार्य करने के साथसाथ हैरी ने अनेक भाषाएं भी सीख ली हैं, क्योंकि उन के विचार में, ''इस से एकदूसरे को समझना आसान हो

जानता हूं. फ्रेंच, नेपाली, रूमानि... भाषाओं के जानकार बार्न्ज अब हि... रहे हैं. हमारी बातचीत के अंत में ... विशेष आग्रह के साथ कहा था, ''जि... यह भेंटवार्ता प्रकाशित होगी, वह ... भेजना न भूलिएगा. उस को पढ़ कर ... मेरा हिंदी ज्ञान कहां तक पहुंचा है...

खूबियों भरा व्यक्तित्व

स्वभाव से मिलनसार, एकदम ... व्यक्तित्व, विनोदप्रिय और मृदुभाषी ... के रूप में एक ऐसा व्यक्तित्व इ... चाणक्यपुरी स्थित अमरीकी दूतावास ... अधिष्ठाता है, जो भारत और अमरीका ... संबंधों को मैत्री की ऊंचाइयों तक ले ... इच्छा रखता है. दोनों ही देश विशाल ... हैं, स्वतंत्रता का मूल्य पहचानते हैं ... की गरिमा से भी परिचित हैं, पर ... अपने प्रमाणपत्र प्रस्तुत करते हुए ... ''जैसा कि अभी हाल ही में आप की ... मंत्री ने कहा था, जहां एक से ज्यादा ... होंगे, मत वैभिन्न्य और लड़ाईझगड़े ... इसी लिए समयसमय पर दोनों ... सरकारों के मध्य मत वैभिन्न्य आ... रहा है. मेरा प्रयत्न होगा कि इस ... किया जाए और जो हैं उन को दूर ...

हलके नीले रंग की कमीज, ... रंग का कार्डीगन व ग्रे पैंट, कमीज की ... दो पेन टंगे थे, चश्मा भी झांक रहा ... हाथ की उंगली में एक अंगूठी जो बातचीत ... दौरान हाथ हिलाने में चमकदमक ... अमरीकी हिसाब से बार्न्ज का कद ... दरजे का ही कहा जाएगा. सिर के बाल ... से कुछ पलायन कर रहे हैं. उन की ... में एक आत्मीयता सी प्रतीत हु... बेतकल्लुफी भी. शायद इसी ... वातावरण भी ऐसा था कि प्रश्न बिना ... रुकावट के किए जाते रहे और राजदूत ... ओर से भी उन को दाबने या ढांपने का ... प्रयास नहीं किया गया.

समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों ... कर, उन से बातचीत कर के ही देश ...

अमरी... के लिए...

समाज क... इस सिद्ध... समयसम... हैं. उन ... हालात ...

रा... यानी लं... सपरिवार... जाने वा... बार्न्ज क... प्राकृतिक... जितना दे...

बा... उन के प...

उन... सब से ... दामाद भ... दूसरी पुत्र... रही है. प... भी पिता ... सब से ... मुक्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीकी राजदूत अपनी पत्नी और पुत्री के साथ : भारतीय संस्कृति को गहराई से जानने के लिए उत्सुक परिवार.

समाज को अच्छी तरह समझा जा सकता है. इस सिद्धांत पर बार्न्ज अमल भी करते हैं. समयसमय पर वह ऐसी गोष्ठियां करते रहते हैं. उन का कहना था, "इस से मुझे यहां के हालात को समझने में आसानी होती है."

राजदूत का एक अन्य शौक है—ट्रेकिंग यानी लंबी यात्राएं करना. उन्हीं दिनों वह सपरिवार नेपाल की तरफ ट्रेकिंग के लिए जाने वाले थे. अमरीकी शास्त्रीय संगीत बार्न्ज को सुहाता है और भारत में तो प्राकृतिक संपदा चारों ओर बिखरी हुई है. जितना देखो, खोजो, कम नहीं होगी.

बार्न्ज से हुई बातचीत देने से पहले जरा उन के परिवार से भी मिल लें.

उन की तीन पुत्रियां और एक पुत्र है. सब से बड़ी पुत्री का विवाह हो चुका है. दामाद भी अमरीकी विदेश सेवा में ही है. दूसरी पुत्री इन दिनों अमरीका में काम कर रही है. पुत्र का अभी विवाह हुआ है और वह भी पिता व जीजा की भांति विदेश सेवा में है. सब से छोटी साशा मातापिता के साथ नई दिल्ली के अमरीकी स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रही है.

राजदूत की पत्नी बैट्सी भी एक खुशमिजाज महिला हैं. उन में भारत की विभिन्न कलाओं को पूर्ण रूप से जान लेने की तीव्र इच्छा है और वह भारत की सक्रिय महिलाओं से अधिकाधिक मिलना चाहती हैं.

यहां प्रस्तुत है श्री बार्न्ज से हुई बातचीत.

भेंटकर्ता: भारत में अमरीकी राजदूत के रूप में आप को सरिता मुक्ता परिवार की ओर से शुभकामनाएं.

राजदूत: धन्यवाद.

प्रश्न: बंबई आप के विदेश सेवा जीवन का पहला पड़ाव था. आप ने कहा भी है कि आप भारत से अत्यधिक प्रभावित हुए हैं. तनिक स्पष्ट कीजिएगा.

उत्तर: 1951 में जब मैं बंबई आया, एकदम नया था (हंस कर) अर्थात अपने देश से बाहर वह मेरी पहली नियुक्ति थी. उधर दांवपेचों से भरी विदेशी राजनीति और मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अनुभवों की स्लेट एकदम कोरी. बंबई में आ कर हुए अनुभवों की नजर से मैं ने दुनिया को देखना सीखा. दुनिया को देखने के लिए बंबई को मैं अपना झरोखा मानता हूं. हमारी और यहां की भाषा में फर्क था, पर आपसी संबंधों में भाषा कभी अड़चन नहीं बनी. भावनाएं भाषा की मुहताज नहीं होतीं...फिर भारतीय समाज ने हमें बहुत प्यार दिया, खुले दिल से अपनाया. वह प्यार भरा व्यवहार उस कोरी स्लेट पर गहरे से लिखा गया.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न: आप ने एक दफा कहा था कि भारत और अमरीका, दोनों ही देशों में विभिन्नताओं में भी एकता है, इस से आप का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: भारतीय संस्कृति हजारों साल पुरानी है. विभिन्न धर्म, विभिन्न रीतिरिवाज इस संस्कृति में भरे पड़े हैं. इन सब के होते हुए भी भारतीयता एक है. तुलना में हमारी संस्कृति बहुत नई है और दुनिया के अनेक देशों के लोगों का उस में सहयोग रहा है. भारतीय प्रतिभा भी उन में से एक है. यही हम दोनों देशों की समानता है.

प्रश्न: 1950 से 1980 तक का समय भारत के विकास की कहानी है और आप ने इस कहानी को विभिन्न अवस्थाओं में देखा है. अपनी प्रतिक्रिया स्पष्ट कीजिएगा.

समस्याओं के बदले रूप

उत्तर: परिवर्तन तो वास्तव में अनेक आए हैं. वह समय विभाजन के फौरन बाद का था. सिद्धांत, लक्ष्य, तरीके कुछ स्पष्ट नहीं थे. उदाहरण के लिए 1950 में इस देश के सामने अन्न की बड़ी विकट समस्या थी. अकाल का डर बना हुआ था. लोग आशंकित थे. तो भी लोगों के मन में एक विश्वास था कि विकास संभव है. उपलब्धियां होंगी ही. और अब स्थिति यह है कि अनाज के सुरक्षित भंडार तो हैं, पर वितरण व्यवस्था ठीक नहीं है. मतलब यह कि समस्याएं तब भी थीं, अब भी हैं और शायद आगे भी रहेंगी. पर समस्याओं का रूप बदल गया है, उन को हल करने के तौरतरीके बदल गए हैं.

जनसंख्या का ही प्रश्न लें... समस्या नहीं थी. अब है, पर लोगों को परवाह नहीं है. तब लोगों के संभावनाएं नहीं थीं, अब नईनई संभा... और लोग कदम उठा भी रहे हैं.

प्रश्न: प्रमाणपत्र प्रस्तुत करते... आप ने 'अभी दिल्ली दूर है' मुहा... हवाला देते हुए कहा था कि दिल्ली... लिए अभी हमें बहुत कुछ करना है... आप का क्या आशय था?

उत्तर: बहुत सी समानताओं के बावजूद अमरीका और भारत उतने... नहीं हैं, जितने होने चाहिए थे या हो... जब तक यह दूरी है, हम दिल्ली कैसे... सकते हैं? ठीक है न? (हंसने लगे फि... की तह में जाते हुए सोच कर बोले)... देशों में मैत्री के लिए एक संयुक्त धरा... जरूरत पड़ती है. समस्याएं ऐसी हों... दोनों की समान अनुभूति हो तो नतीजा... रहता है

हम दोनों ही देशों की परंपराएं... हैं. लोग भले हैं, पर हमारी समस्याओं... है. अपनीअपनी परिस्थितियों के अ... भारत की प्राथमिकताएं कुछ और... अमरीका की कुछ और. फलतः यह द्वंद्व... है. मेरा प्रयास रहेगा कि किसी समान ध... को खोज निकाला जाए जिस पर दोनों... एक साथ आगे बढ़ सकें.

प्रश्न: आप आशान्वित हैं?

उत्तर: मैं स्वभाव से ही आशावा... मुझे पूर्ण आशा है.

प्रश्न: राजनीति की बात लें तो... पड़ेगा कि गुजरे वक्त में कई दफा ऐसे... आए जब भारत अमरीकी शुभेच्छा... आशा रखता था, पर वे मिलीं किसी और... ऐसा क्यों हुआ?

उत्तर: मैं ने अभी प्राथमिकता की... की न, वही कारण यहां प्रमुख रहा... हमारा नजदीकी पड़ोसी है, पर... विभिन्नताओं के द्वंद्व हम दोनों के मध्य... हैं. जब गैरगणतंत्र शक्तियां... प्रभावशाली होने लगती हैं तो तमाम...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को खतरा हो जाता है. ऐसे में पहला जरूरत है उस की बढ़ती हुई गैरगणतंत्री शक्तियों की रोकथाम की. फिर भले ही इस के लिए, उस विशेष समय में किसी गणतंत्र मित्र देश की भी उपेक्षा करनी पड़ जाए. जहां तक मैं समझता हूं, बस यही कारण रहा है ऐसे व्यवहार का.

प्रश्न: मेरा यह प्रश्न भी कुछ पिछले प्रश्न की ही पूर्ति करता है. हम दोनों देशों के लोग सामाजिक स्तर पर जब भी मिलते हैं, मैत्री की भावना उन में प्रगाढ़ होती है. हम उन से और वे हम से प्रभावित हैं, दोनों एकदूसरे की मनोभावनाओं को पहचानते हैं. पर ज्यों ही राजनीति बीच में आ जाती है, संपूर्ण नजरिया ही बदल जाता है. एक विरोध सा सतह पर उभर आता है. दोस्ती की इतनी आरजू होते हुए भी राजनीति उसे पनपने क्यों नहीं देती?

उत्तर: आप की बात से मैं पूर्णतया सहमत हूं. दोनों ही देशों की जनता के बीच पूर्ण सद्भाव है. भारतीय जनता का हमारे प्रति प्रेम है. मैं इस का जीताजागता प्रमाण हूं. मैं इस प्यार की पूरी कद्र करता हूं और जानता हूं कि हमारे लोग भी इन्हें पहचानते हैं. पर आप ने जो यह राजनीति की बात कही तो बात वही प्राथमिकताओं की है. एक बात और, हमारी सरकार हमेशा ही भारतीयों के विरोध में रही है, ऐसा तो नहीं है. कैनेडी, कार्टर के समय में अमरीकी सरकार स्पष्टतया भारत के साथ रही है. औरों के वक्त में ऐसा नहीं हुआ. अलगअलग दलों की सैद्धांतिक लड़ाई भी तो अलगअलग धरातल की है.

प्रश्न: मैं एक बात और पूछना चाहूंगी. प्रारंभ से ही अमरीकी सरकार पाकिस्तान सरकार के शस्त्रअस्त्र भंडार खुले दिल से भरती रही है, और उन शस्त्रों का इस्तेमाल हमेशा ही भारत के विरुद्ध लड़ाई में किया गया. अब फिर एक दफा यह दान दिया जा रहा है. ढाल बनाया गया है अफगानिस्तान में रूसी फौजों की मौजूदगी को. अगर रूसी फौजें अफगानिस्तान में न होतीं तो क्या यह शस्त्र दान न दिया जाता?

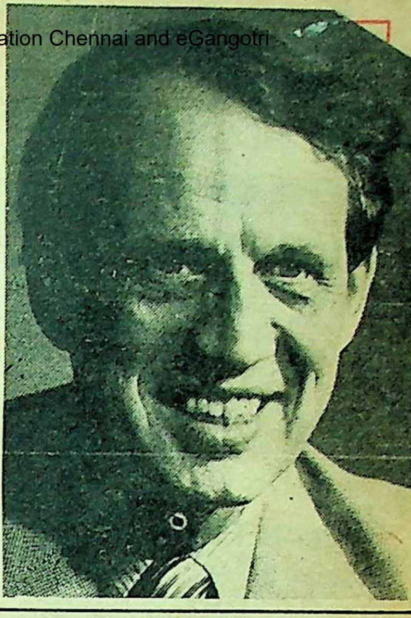

हेरीबार्न्ज : किसी भी देश के लोगों को समझने के लिए वहां की भाषा जानना जरूरी है.

उत्तर : मेरा जवाब है—'हरगिज नहीं.' जैसा कि मैं ने पहले कहा था, जब गैरगणतंत्री शक्तियां ज्यादा मजबूत होने लगती हैं तो हमारी प्राथमिकताएं बदल जाती हैं. यह घटना उसी का प्रमाण है. इस प्रमाण से मेरे कथन को आप अच्छी तरह समझ सकेंगी. यहां एक दफा फिर मैं यही कहूंगा कि इस पद पर काम करते हुए मेरा पूरा प्रयत्न होगा कि हम दोनों देशों के संबंधों में सुधार हो.

भेंटकर्ता: आप के इस प्रयास में मेरी पूर्ण शुभकामनाएं आप के साथ हैं.

समय काफी हो चला था. जितना वक्त राजदूत ने हमें दिया था, घड़ी की सूइयां उस को कभी का पीछे छोड़ चुकी थीं. रुखसत होना ही बेहतर था. श्री बार्न्ज को उस आत्मीयता के लिए धन्यवाद दे कर भेंटकर्ता ने विदा ली. दरवाजे तक साथसाथ आते हुए राजदूत ने 'उम्मीद है कि भविष्य में हम फिर मिलेंगे' शब्दों के साथ विदा दी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवजागरण की पाक्षिक पत्रिका

भूभारती

राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक घटनाओं में सीधे घटनास्थल से खोजपूर्ण जानकारी.

हर पक्ष नई घटनाएं, नए समाचार.

हर पक्ष 5 लाख लोग भूभारती पढ़ते हैं.

भू-106

भूभारती पढ़िए—जागरूक व जिम्मेदार नागरिक बनिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले छः महीनों की फिल्में

र्दीशिका	उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए	म. : मनोरंजक/देख लें	नि. :निर्देशक
	स. : समय काटिए/चलताऊ	अ. : अपव्यय/समय की बरबादी	मु. पा. : मुख्य पात्र

बचपन के शहजादे : विभिन्न धर्मों के पांच युवकों की ...ला कहानी. ये तथाकथित शहजादे बचपन में बिछुड़ ...ते हैं और एक के बाद एक कर के इन का मिलन होता ...बचकाना चित्रण. **नि.**: कुक्कू कपूर, **मु.पा.**: दीपक ...शर, रति, मुकेश खन्ना, धीरज, कल्पना अय्यर, ...त कपूर, रणजीत. **अ.**

दहशत : डाक्टर विशाल की दृष्टि में इनसान ...रा है. उस में जानवरों के कुछ गुण ला कर उसे संपूर्ण ...या जा सकता है. वह जानवरों पर तरहतरह के प्रयोग ...ता है. इन्हीं प्रयोगों में उस की शक्ल भयानक पशु ...हो जाती है. केवल भयानक चेहरों के बल पर बनी ...न कहानी. **नि.**: तुलसी रामसे, श्याम रामसे, ...: ओम शिवपुरी, नवीन निश्चल, सारिका, ...रा, देवकुमार. **अ.**

संबंध : बचपन में प्रकाश के सामने उस की मां की ...या हो जाती है, जिस से उस के मन में यौन संबंधी ग्रंथि ...जाती है. लेखक सलीम फैज ने इस विषय को ले कर ...धिक से अधिक यौन संबंधों का वितृष्णापूर्ण चित्रण ...या है. **नि.**: शिबू मित्रा, **मु.पा.**: अशोककुमार, ...नोद मेहरा, रति, तेज, सप्रू, अर्पणा चौधरी. **अ.**

निकाह : नीलोफर की वसीम से शादी होती है, पर ...द ही वसीम उसे तलाक दे देता है. नीलोफर दोबारा ...र से शादी करती है. पर उस के चरित्र पर शक कर के ...र भी उसे तलाक देने को तैयार हो जाता है. मुसलिम ...ज में तलाक के विषय में नारी की बेबसी का मार्मिक ...ण. **नि.**: बलदेवराज चोपड़ा, **मु.पा.**: राज बब्बर, ...मा आगा, दीपक पराशर, हिना कौसर. **उ.**

टैक्सी चोर : दो जुड़वां हमशक्ल भाइयों की ...पिटी कहानी. एक टैक्सी चोर है तो दूसरा गायक. ...न इन में से किसी भी भूमिका में जान नहीं डाल सका. ...: सुशील व्यास, **मु.पा.**: जरीना, मिथुन, मदन पुरी, ...मेहरा, अभि भट्टाचार्य, मुराद. **अ.**

गंगा मांग रही बलिदान : पृथ्वीराज चौहान की ...तिहासिक कहानी पर इतिहास की अपेक्षा काल्पनिक ...नाओं का बाहुल्य. फिल्म इतिहास एवं मनोरंजन दोनों ...ष्टियों से बेकार. **नि.**: राधाकांत, **मु.पा.**: सोहराब ...दी, देवकुमार, हिना कौसर, कमल कपूर, तिवारी, ...श्री तलपदे, महमूद जूनियर. **अ.**

शक्ति : कर्तव्यपरायण पुलिस अधिकारी पिता व ...रिस्थितियोंवश अपराध प्रवृत्ति पाल लेने वाले पुत्र के ...भावात्मक टकराव की कहानी जिस में अमिताभ व ...लीपकुमार ने शानदार अभिनय किया है. **नि.**: रमेश सिप्पी, **मु.पा.**: अमिताभ, दिलीप, राखी, स्मिता. **उ.**

बाल शिवाजी : बाल चित्र समिति द्वारा शिवाजी के जीवन पर बनाई गई एक दिलचस्प फिल्म जिस में उन की बहादुरी, देशभक्ति, न्यायप्रियता व स्वाभिमान का अच्छा चित्रण हुआ है. **नि.**: प्रभाकर पेठारकर, **मु.पा.**: आनंद जोशी, जाह्नवी खांडेकर. **उ.**

भीगी पलकें : पतिपत्नी के वैवाहिक संबंधों में अहं की वजह से आ जाने वाले टकराव और गलती का एहसास होने पर पश्चात्ताप का अच्छा विषय इस फिल्म में फार्मूला ढंग से उठाया गया है. **नि.**:शिशिर मिश्र, **मु.पा.**: राज बब्बर, स्मिता पाटिल, सुलमा. **अ.**

जियो और जीने दो : एक नारी प्रधान फिल्म, जिस में नूतन को उस का पति चरित्रहीनता के आरोप में घर से निकाल देता है. बीच में डाकुओं व तस्करों की मारपीट, रोमांस व तमाम जानेपहचाने मसाले हैं. **नि.**: शाम रल्हन, **मु.पा.**: जीतेंद्र, रीना, डैनी, नूतन व प्राण. **स.**

चोरनी : परिस्थितियों की वजह से चोर बनी नीतू को जब सहानुभूति का व्यवहार मिलता है तो वह बदल जाती है. अच्छे विषय का सही फिल्मांकन नहीं हो सका है. **नि.**: ज्योति स्वरूप, **मु.पा.**: नीतू, जीतेंद्र, डा. श्रीराम लागू. **अ.**

कसम दुर्गा की : बलात्कार व जमींदार के जुल्म के शिकार एक परिवार के बड़े लड़के द्वारा दुर्गा की मदद से अपराधियों का खात्मा करने की कहानी. बेहद ऊटपटांग घटनाएं व अति नाटकीय अभिनय. **नि.**:जोगिंदर, **मु.पा.**: जोगिंदर, विजय अरोड़ा, रजनी शर्मा. **अ.**

सुन सजना : एक गायक व ग्रामीण बाला की सामान्य प्रेम कहानी जिस का दुखद अंत होता है. गीतसंगीत प्रधान इस फिल्म में कोई भी खास विशेषता नहीं है. **नि.**: चंदर बहल. **मु.पा**: मिथुन, रंजीता. **स.**

राजमहल : दुष्ट सेनापति राजा की हत्या कर, खुद राजा बन जाता है. उस के खोए हुए बच्चे बड़े हो कर उस से बदला लेते हैं. बेतुकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर बनी सामान्य फिल्म. **नि.**: परवेज, **मु.पा.**: विनोद खन्ना, नीतूसिंह, अमजद. **स.**

गंगाधाम: ईश्वरीय सत्ता को चमत्कारों व अंधविश्वासों से मनवाने की कोशिश करने वाली बेतुकी फिल्म जो हर दृष्टि से कमजोर है. **नि.**: थापा, **मु.पा**: नमिता चंद्र, अरुण गोविल, शक्ति. **अ.**

फर्ज और कानून : ईमानदार पुलिस अधिकारी द्वारा फर्ज की रक्षा के लिए खुद को गिरा देने की अस्वाभाविक कहानी. जिस में जितेंद्र की दोहरी भूमिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

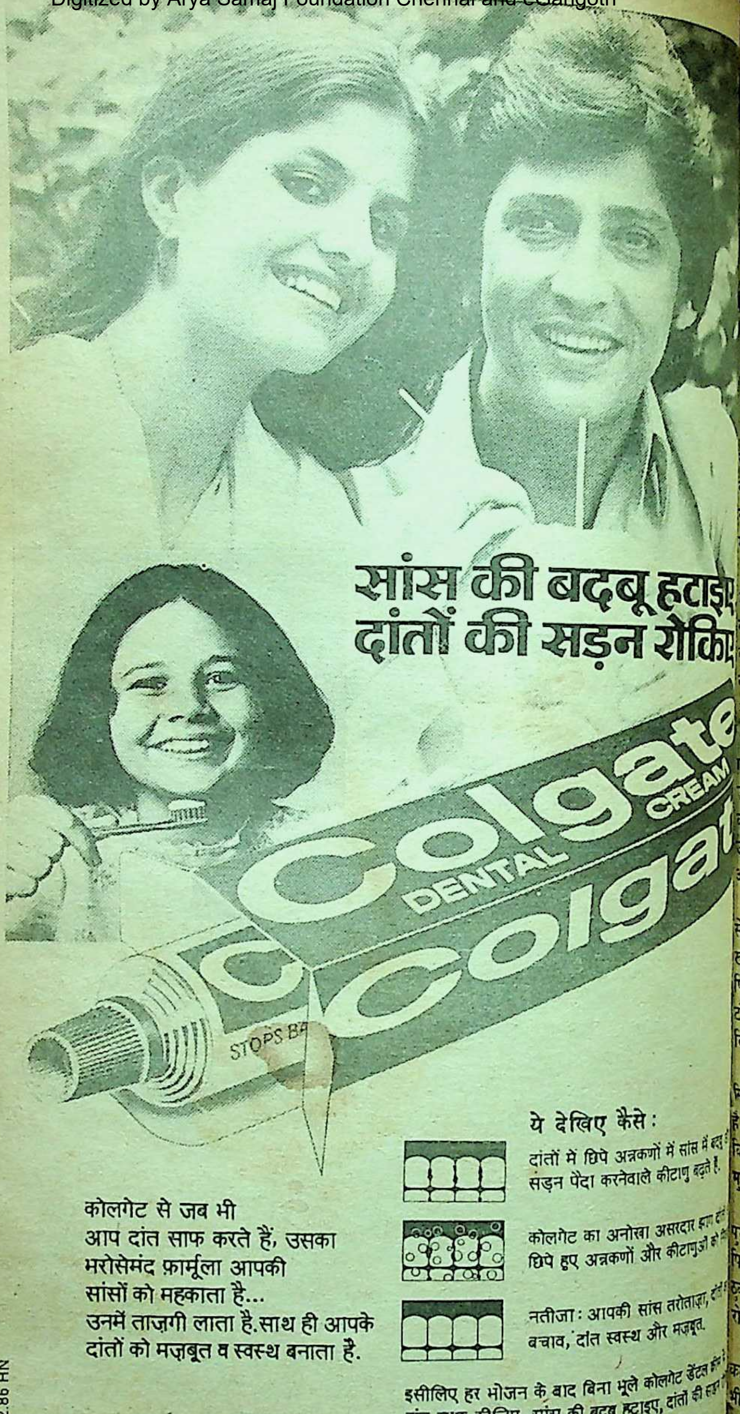

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. नि.: राघवेंद्र राज, **मु.पा:** जितेंद्र, हेमा, रति.**स.**

अपराधी कौन : हत्याओं और रहस्य रोमांच में उलझी हुई अनमेल विवाह की बेसिरपैर की कहानी. विधुर दीनदयाल जवान अरुणा से शादी कर लेता है और उस के परिणाम भुगतता है. **नि.** : मोहन भाकड़ी. **मु.पा.** : जावेद खान, रजनी शर्मा, अर्पणा चौधरी रजा मुराद, मदन पुरी. **अ.**

संबंध : प्रकाश के मन में बचपन में पिता द्वारा मां की हत्या के कारण कुछ ऐसी गांठें बन जाती हैं कि वह जब भी पत्नी के पास जाता है, उन्मत्त हो कर सुधबुध खो बैठता है. एक नए विषय को निर्माता ने केवल सैक्स प्रदर्शन के लिए इस्तेमाल किया है. **नि.** : शिबू मित्रा, **मु.पा.** : अशोककुमार, विनोद मेहरा, रति अग्निहोत्री, तेज सप्रू, अर्पणा चौधरी. **अ.**

डायल 100 : हीरों की चोरी की मारधाड़ से भरपूर सामान्य अपराध कथा. हीरे गिटार में छिपा दिए जाते हैं बाद में गिटार की खोज की कहानी बन जाती है. **नि.**: रामनाथन. **मु.पा.**: अशोककुमार, बिंदिया, विनोद मेहरा, रणजीत. **अ.**

मेहंदी रंग लाएगी : एक युवती की कहानी जो अपने पति को छोड़ कर दूसरी स्त्री का घर बसाती है और बाद में एक अन्य लड़की के लिए अपने प्रेम का भी बलिदान कर देती है. तर्कहीन कहानी. **नि.**: दासारी नारायण राव. **मु.पा.**: अशोककुमार, जितेंद्र, रेखा, अनिताराज, अरुणा ईरानी. **अ.**

बगावत : राजसिंहासन का उत्तराधिकारी अमर एक कबीले में पलता है. दुष्ट विक्रम को सिंहासन से उतारने और राजकुमारी पद्मा से प्रेम की बेसिरपैर की कहानी. सभी कलाकार फीके. फिल्म हर दृष्टि से उबाऊ. **नि.**: रामानंद सागर. **मु.पा.**: धर्मेंद्र, हेमा, अमजद, रीना राय, सुजीतकुमार. **अ.**

खुद्दार : गरीब टैक्सी ड्राइवर छोटू उस्ताद परिश्रम से भाई को पढ़ाता है. मैरी से प्रेम करता है और खलनायक बंसी के षड्यंत्रों का मुकाबला करता है. फिल्म में सभी रस भरने की कोशिश की गई है. **नि.**: रवि टंडन, **मु.पा.**: अमिताभ, संजीवकुमार, परवीन बाबी, विनोद मेहरा, तनूजा, बिंदिया, महमूद. **स.**

मेहरबानी : धर्मेंद्र के परिवार द्वारा डूबे गए सितारों को ले कर बनी इस फिल्म में न तो कोई रोचकता है और न ही नवीनता. हर दृष्टि से फिल्म इतनी लचर है कि सिर्फ बोरियत पैदा करती है. **नि.**: अजीतसिंह, **मु.पा.**: महेंद्र संधु, सारिका, नरेंद्रनाथ. **अ.**

बेगुनाह कैदी : अपराधी के हृदय परिवर्तन की पुरानी जानीपहचानी विषय वस्तु के आधार पर बनी इस फिल्म में वही पुराने मसाले हैं. जिन्हें दर्शक कईकई बार ठुकरा चुके हैं. **नि.**: वी.के. सोबती, **मु.पा.**: राकेश रोशन, आरती, शक्ति कपूर. **अ.**

पांच कैदी : अपराधी लोगों को ले कर उन से कानून की रक्षा करवाने की पुरानी कहानी इस फिल्म में भी है. कुछ घटनाएं अच्छा असर डालती हैं. वैसे फिल्म सामान्य ही है. **नि.**: शिबू मित्रा, **मु.पा.**: गिरीश सुक्ता

कारनाड, अमजद, जरीना. **स.**

घमंडी : दौलत के नशे में अमीर पत्नी का पति के घर से चला जाना और बाद में आंखें खुल जाने पर वापस आ जाना—इस फिल्म का विषय है. लेकिन बेहद घटिया ढंग से इसे फिल्माया गया है. **नि.**: रमेश बेदी, **मु.पा.**: मिथुन, सारिका, रंजीत. **अ.**

बाजार : मुसलिम समाज में प्रचलित कुरीतियों पर चोट करने वाली फिल्म. इस में दिखाया है कि समाज में एक स्त्री का बाजार में आम बिकाऊ माल से अधिक महत्त्व नहीं है. **नि.** : सागर सरहदी, **मु.पा.** : स्मिता पाटिल, सुप्रिया पाठक, सुलभा देशपांडे, नसीरुद्दीन. **म.**

इनसान : किसी व्यक्ति को महान सिद्ध करने का नरेंद्र बेदी का बेतुका फार्मूला. रवि विधवा सोना से शादी कर लेता है. जब उसे पता चलता है कि सोना का पति शंकर मरा नहीं था, बल्कि जिंदा है तो वह उस के लिए बलिदान हो जाता है. **नि.** : नरेंद्र बेदी, **मु.पा.** : विनोद खन्ना, जितेंद्र, रीना, अमजद, करण दीवान. **अ.**

मैं इंतकाम लूंगा : शीर्षक के अनुरूप प्रतिशोध की कहानी. मुक्केबाज कुमार गोवर्धनदास से अपने पिता की हत्या का बदला लेता है. **नि.** : रामा राव, **मु.पा.** : धर्मेंद्र, रीना राय, दारासिंह, श्रीराम लागू, निरूपा, अमरीश पुरी, शारदा. **अ.**

हमकदम : एक दकियानूसी परिवार की कहानी, जिस में नारी द्वारा नौकरी करना पसंद नहीं किया जाता. घिसापिटा पुराना विषय ले कर बनाई गई फिल्म. **नि.** : अनिल गांगुली, **मु.पा.** : राखी, परीक्षित साहनी, विश्वजीत, हंगल, मदनपुरी. **स.**

ईंट का जवाब पत्थर : प्रसिद्ध लेखक अलैक्जैंडर ड्यूमा के उपन्यास का भारतीयकरण कर के बनाई गई एक घटिया फिल्म. कुछ लोगों के षड्यंत्र का शिकार हो कर माधोसिंह जेल जाता है. जेल से भाग कर वह एकाएक कर के सब से बदला लेता है. **नि.** : पाछी, **मु.पा.**: नीता मेहता, सुरेंद्रपाल, प्रेमनाथ, अमजद, ओम प्रकाश. **म.**

गजब : आत्मा जैसी अविश्वसनीय बातों को ले कर गढ़ी गई कहानी, जिस में मानसिक रूप से विकलांग एक व्यक्ति की आत्मा अपने पिता की जायदाद हथियाने वालों से अपने जुड़वा भाई के जरिए बदला लेती है. 'अविश्वसनीय घटनाओं से भरपूर एक बेतुकी फिल्म. **नि.**: सी.पी. दीक्षित, **मु.पा.** : धर्मेंद्र, रेखा, मदनपुरी, रंजीत. **अ.**

सितारा : गांव की गरीब लड़की की नामी हीरोइन बनने की कहानी. चोटी पर पहुंच जाने के बाद वह सच्चा प्यार नहीं पाती और वापस अपनी दुनिया में लौट जाती है. कुछ दिलचस्प प्रसंग होने के बाद भी यह एक सतही **नि.** : मराज, **मु.पा.** : मिथुन, जरीना, कन्हैयालाल. **स.**

आधारशिला : क्षेत्र चाहे कोई भी क्यों न हो, हर युवा को सफलता पाने के लिए संघर्ष की कई बाधाएं पार करनी होती हैं. 'आधारशिला' में इसी विषय को उठाया गया है. कमजोर व प्रतीकात्मक प्रस्तुतीकरण की वजह से फिल्म कोई असर नहीं छोड़ पाती. **नि.** : अशोक आहूजा, **मु.पा.** : नसीरुद्दीन शाह, अनिता. **अ.** ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लखनऊ नाट्य समारोह-82

लेख • कृष्णकुमार श्रीवास्तव

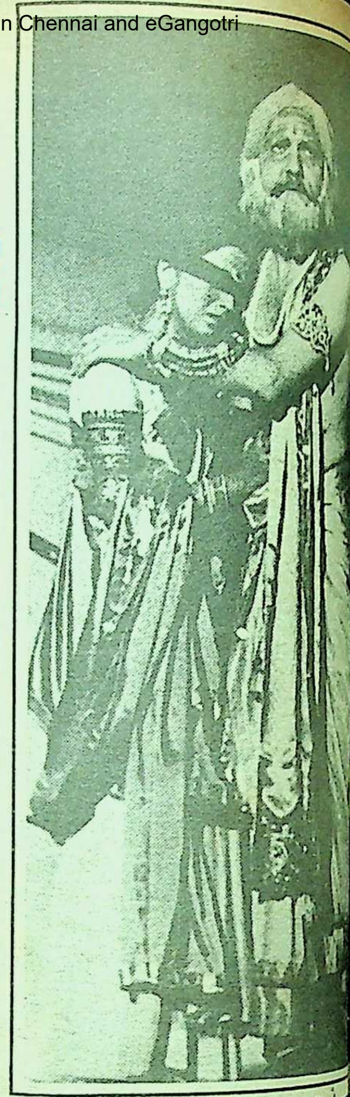

लखनऊ की नाट्य संस्था 'लक्रीस' द्वा मंचित 'बाकी इतिहास' का एक दृ (बाएं) व कानपुर की नाट्य सं 'दर्पण' द्वारा मंचित 'कोमल गांधार' राकेश वर्मा व रंजना गौड (ऊपर)

समूचे उत्तर प्रदेश में राज लखनऊ नाट्य गतिविधि प्रमुख केंद्र बन गई है. नगर के एक नाट्य थिएटर 'रवींद्रालय' में हर रोज कोई नाटक प्रदर्शित होता रहता है. नाट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सृजनात्मक शुरुआत

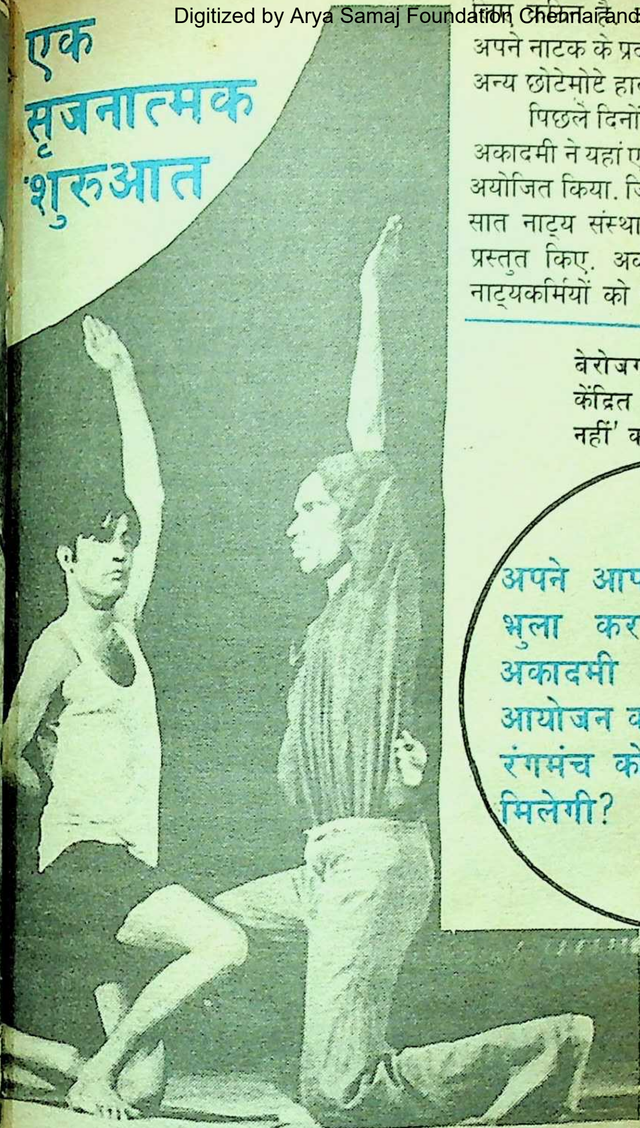

लिए कठिन है. अव्यवसायी संस्थाओं को अपने नाटक के प्रदर्शन के लिए स्कूल अथवा अन्य छोटेमोटे हाल किराए पर लेने पड़ते हैं.

पिछले दिनों उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी ने यहां एक हफ्ते का नाट्य समारोह अयोजित किया. जिस में प्रदेश एवं बाहर की सात नाट्य संस्थाओं ने अपनेअपने नाटक प्रस्तुत किए. अकादमी ने बाहर से आए नाट्यकर्मियों को एक नाटक के लिए 3,000

बेरोजगारी की समस्या पर केंद्रित नाटक 'हमारा कोई नाम नहीं' का एक महत्त्वपूर्ण दृश्य.

अपने आपसी मतभेदों को भुला कर संगीत नाटक अकादमी यदि ऐसे ही आयोजन करती रहे तो क्या रंगमंच को नई दिशा नहीं मिलेगी?

लोकप्रियता इतनी बढ़ गई है कि रवींद्रालय के दोनों रंगमंचों के लिए दो ढाई महीने पहले ही बुकिंग करानी पड़ती है. लेकिन वहां वही नाट्य संस्था अपने नाटक प्रस्तुत कर सकती है जो दोतीन हजार रुपए नाटक पर खर्च कर सकती हो. यहां प्रत्येक नाटक के मंचन के लिए 750 रुपए प्रतिदिन तो किराया ही देना पड़ता है, जो एक नवोदित नाट्य संस्था के

रुपए (आनेजाने का किराया तथा रवींद्रालय का किराया) तथा प्रदेश की नाट्य संस्थाओं को 2,000 रुपए का भुगतान किया, लेकिन इस मामले में भी नवोदित नाट्य संस्थाओं की सरासर उपेक्षा की गई.

1978-79 में उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी आपसी रंजिश एवं कतिपय राजनीतिक कारणों से निष्क्रिय हो गई थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब नगर की आ... बिना सरकारी सहयोग तथा अनुदान के नवंबर, 1972 में एक सात दिवसीय नाट्य समारोह का इसी रवींद्रालय में आयोजन किया था. फिर दूसरा नाट्य समारोह जुलाई, 1980 में तथा तीसरा 1981 में किया गया. इन तीनों समारोहों में केवल लखनऊ की ही नाट्य संस्थाओं ने भाग लिया था.

इस बार नाटकों का मंचन लखनऊ के बंगाली क्लब के विशाल कक्ष में निशुल्क किया गया, जो काफ़ी सफल रहा. इस से रवींद्रालय के भारी किराए से नवोदित संस्थाओं को मुक्ति मिली. लखनऊ नाट्य समारोह 1982 के सात नाटकों का मंचन भी इस क्लब में ही किया गया.

नए नाटकों की प्रमुख समस्या दर्शकों की कमी होती है. इस नए नाट्य समारोह के माध्यम से नाटकों के नए दर्शक तैयार करने का भी कार्य किया गया.

नाट्य समारोह में लखनऊ की चार संस्थाओं 'मेघदूत', 'खोज', 'नक्षत्र', 'लक्रीस', कानपुर के दो नाट्य दलों- 'दर्पण' और 'प्रतिध्वनी' तथा आजमगढ़ की नाट्य संस्था 'समानांतर' ने अपने नाटक बिना किसी सरकारी अनुदान या सहायता के प्रदर्शित किए.

इस समारोह में प्रेमचंद की कहानी पर आधारित नाटक 'सद्गति', डा. शंकर शेष के दो चर्चित नाटकों–'फंदी' तथा 'कोमल गांधार' एवं बादल सरकार के तीन नाटकों ... की रूप कथा', ... इतिहास' तथा 'स्पार्टाकस' का मंचन कि... गया. ये सभी नाटक नाट्य कला के वि... रूपों को प्रस्तुत करते हैं.

नाट्य समारोह में पिछले ना... समारोह की तरह आम दर्शकों से जुड़... प्रयास के साथ विषमताओं के खिलाफ ... करने की भी बात दिखाई दी. ले...

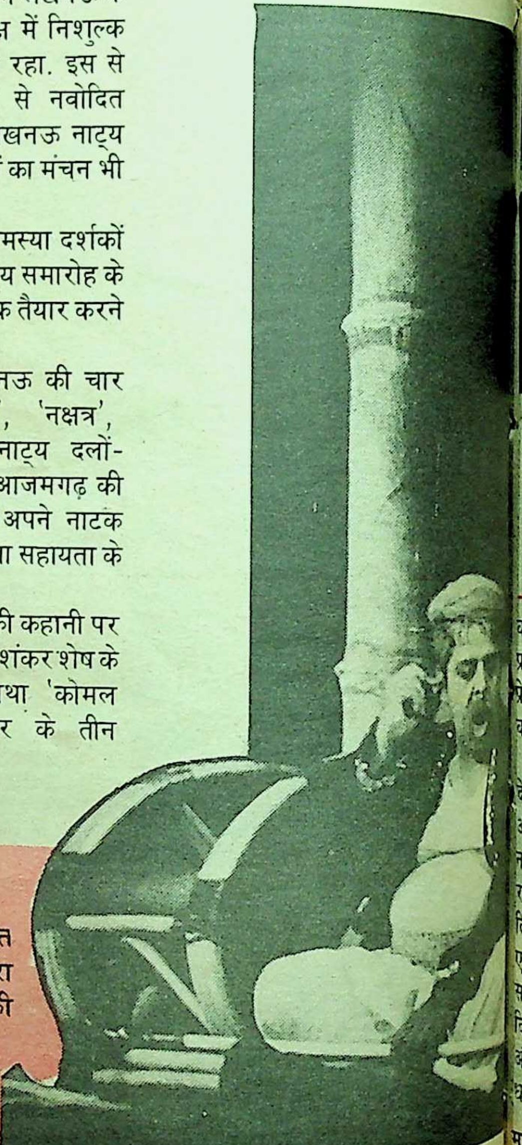

कला के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करता बादल सरकार द्वारा लिखित नाटक 'बल्लभपुर की रूपकथा'.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

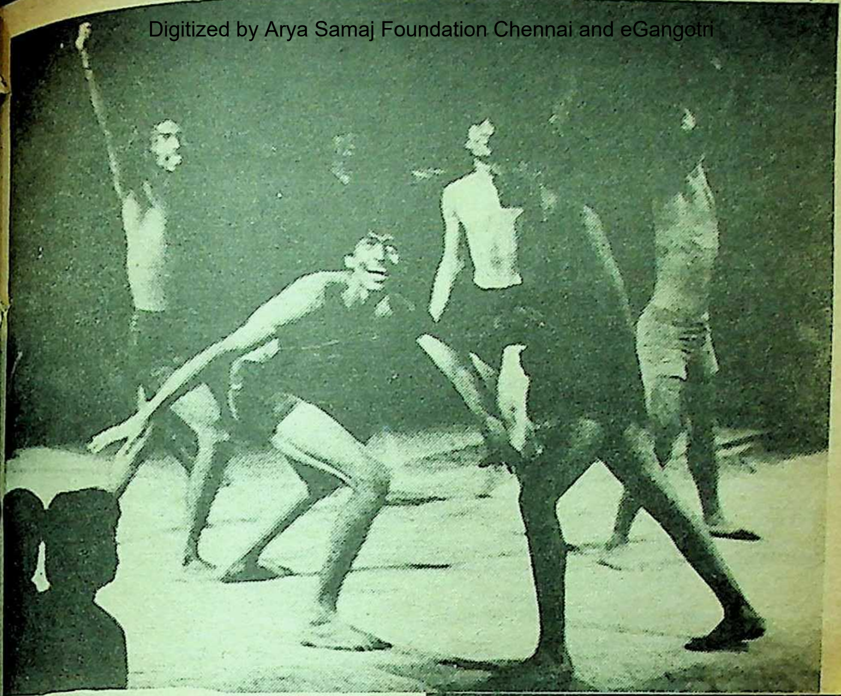

नाट्य संस्था 'समानांतर' द्वारा मंचित 'स्पार्टकस' जिसे जागरूक दर्शकों ने सराहा (ऊपर) व (दाएं) मध्यमवर्गीय तकलीफों को सामने रखता शंकर शेष कृत 'फंदी' का एक मार्मिक दृश्य.

कलात्मकता की दृष्टि से नाट्य समारोह की प्रस्तुतियां कुछ हलकी ही रहीं. यह नए प्रेक्षागृह और नए दर्शकों का परिणाम भी कहा जा सकता है.

पत्रपत्रिकाओं के प्रतिनिधियों को पास देने की गलत नीति, दर्शकों से दुर्व्यवहार आदि ने नए दर्शक कम पैदा किए. इस बार नाट्य संस्थाओं के पूर्वाग्रह भी काफी प्रबल रहे. अतएव मिल कर नाटक के उन्नयन के लिए कार्य करने के प्रयास को आघात लगा. एक रंगमंच पर मंचन का प्रयास भी ज्यादा सफल नहीं रहा. लेकिन हिंदी रंगमंच दिशाहीन है, राष्ट्र के निर्माण में बाधक है और आम आदमी से नहीं जुड़ रहा है—ये धारणाएं इस समारोह में गलत साबित हुईं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हद से हद हिंदी रंगमंच को भ्रमित कहा जा सकता है.

पहले दिन 'मेघदूत' (लखनऊ) ने प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' पर आधारित नाटक प्रस्तुत किया, जिस के निर्देशक थे सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ. 'सद्गति' का नायक दुखिया विषमताओं को सहता जाता है और शोषण का विरोध नहीं करता, लेकिन शहर से लौटा रघुवर शोषण के खिलाफ मुंह खोलने पर मारा जाता है. आजादी के बाद शोषितों में परिवर्तन आया है. रूपांतर कुछ कमजोर था. अनावश्यक प्रहसन नाटक को और निष्प्रभावी बनाते रहे. निर्देशक चाहता तो इन दृश्यों को छोड़ भी सकता था. अभिनय की दृष्टि से राजा अवस्थी व राकेश प्रभावी रहे. निर्देशक कुलश्रेष्ठ अपनी पुरानी प्रस्तुतियों की सीमा से बाहर नहीं आ सके और रंग कल्पना, प्रकाश तथा दृश्य संयोजन में कुछ नयापन नहीं दे सके.

दूसरी प्रस्तुति 'खोज' (लखनऊ) की थी. 'हमारा कोई नाम नहीं' नाटक अशोक अग्रवाल की कहानी पर आधारित था. नाट्य रूपांतर नफीस अफरीदी ने कि...

बेरोजगारी, गरीबी, शोषण ... समस्याओं में जकड़े नीचे तबके के लो... आधारित कथा को नाट्य लेखक तथा ... भी अधिक निर्देशक जितेंद्र मित्तल ने ... कर दिया.

इस समारोह की सर्वश्रेष्ठ प्र... 'कोमल गांधार' कानपुर की 'दर्पण' ... की थी. डा. शंकर शेष के इस ... नाटक को राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के ... रवि शर्मा ने काफी प्रभावशाली ढंग से ... किया. मनुष्य क्रूर और बदला लेने वाला ... बनता है, यह नाटक की कहानी है. महा... की पृष्ठभूमि पर आधारित यह नाटक ना... शोषण को उजागर करता है. नारी को ... बनाने का ढोंग रच कर पुरुष समाज ... स्वार्थसिद्धि के लिए सदियों से उसे ... कठपुतली बनाए हुए है. गांधारी भी ऐ... स्त्री थी, जिस की शादी छल से अंधे ... से कर दी गई थी. इस पर गांधारी ने ...

कभी आप ने सोचा:
हम हिंदू 2000 वर्ष गुलाम क्यों रहे?

क्यों गुंडे, गुलाम, डाकू, लुटेरे और यहां तक कि सौदागर भी हम पर 2000 वर्ष तक राज कर के जुल्म ढाते रहे जब कि हम संसार में किसी भी जाति या समुदाय से किसी तरह कम न थे?

इसे सोचिए और उत्तर दीजिए क्योंकि जिन कारणों से हम 2000 वर्ष गुलाम रहे वे आज भी उतनी ही तीव्रता से विद्यमान हैं.

सरिता

भारत की सब से अधिक प्रिय व साथ ही साथ सब से अधिक क्षुब्ध करने वाली पत्रिका.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंखों पर पट्टी बांध कर अपने पति का साथ दिया. पर प्रतिशोध की आग में जलते हुए उस के भाई शकुनि ने पूरे वंश से इस का बदला लिया.

सेट, प्रकाश, संगीत की दृष्टि से नाटक सफल था. इस का सर्वाधिक सशक्त पक्ष अभिनय था, जिस में गांधारी (रंजना गौड़), दासी (इंदु शर्मा), धृतराष्ट्र (राकेश वर्मा) ने विशेष रूप से प्रभावित किया.

लखनऊ की नाट्य संस्था 'नक्षत्र' ने बादल सरकार के नाटक 'बल्लभपुर की रूप कथा' का मंचन कुमुद नागर के निर्देशन में किया. इस का हिंदी अनुवाद प्रतिभा अग्रवाल ने किया था. चुनाव की दृष्टि से यह नाटक सही नहीं था. इस नाटक में अंधविश्वास, भूतप्रेत, आत्मा आदि का ज्यादा उल्लेख रहा. इसलिए दर्शक उस से भलीभांति जुड़ नहीं पाए. लेकिन अभिनय की दृष्टि से विष्णुदत्त गौड़ ने जरूर प्रभावित किया.

कानपुर की नाट्य संस्था 'प्रतिध्वनि' ने पंडित विजय दीक्षित के निर्देशन में डा. शंकर शेष के नाटक 'फंदी' का मंचन किया. समाज के आधुनिकीकरण के साथ पुराने कानूनों को भी बदलना चाहिए. फंदी एक ट्रक चालक है जो गरीबी के कारण कैंसर से पीड़ित अपने पिता का इलाज न करा पाने पर उस की गला घोंट कर हत्या कर देता है. क्या फंदी हत्यारा है? यही नाटक का कथ्य है. यह दर्शकों को भी सोचने को विवश करता है. वह यह सोचता है कि कोई व्यक्ति हत्या क्यों करता है.

फंदी और वकील के रूप में क्रमशः कुमार व अशोक गोस्वामी ने अच्छे अभिनय का प्रदर्शन किया गया.

'लक्रीस' (कानपुर) द्वारा बादल सरकार कृत 'बाकी इतिहास' नाटक प्रस्तुत किया गया, जिसे मनोशारीरिक (साइकोसोमैटिक) रंगमंच में प्रस्तुत किया गया. तीसरे अंक की प्रस्तुति में शरीर की भाषा होती है, महज संवाद या लटकेझटके नहीं. इस में ध्वनि, बिंब स्थितियां या थोड़े संवादों का प्रयोग होता है.

कर्म

वही कार्य सब से अच्छा है जिस से बहुसंख्यक लोगों को अधिक से अधिक आनंद मिल सके.

–हचिसन फ्रांसिस

लखनऊ और देश में यह अपने आप में एक नया प्रयोग था. इस में अतुल रस्तोगी, चित्रा बरनवाल, पारिजात नागर, लक्ष्मण वर्मा, हेमंत रस्तोगी, शशांक बहुगुणा ने अच्छा अभिनय किया.

अंतिम शाम आजमगढ़ की नाट्य संस्था 'समानांतर' के नाम थी, जिस ने बादल सरकार के चर्चित नाटक 'स्पार्टाकस' का मंचन श्री भौमिक के निर्देशन में किया. स्पार्टाकस गुलामों की बगावत की कहानी है. स्पार्टाकस शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है. वह आज भी अत्याचार के खिलाफ लड़ रहा है.

बादल सरकार के इस नाटक को भौमिक ने सीधीसादी शरीर की भाषा में संवादों का उपयोग कर के प्रस्तुत किया. साधारण प्रकाश में इस नाटक ने जागरूक दर्शकों को प्रभावित किया.

इस नाट्य समारोह में एक नई नाट्य संस्था 'यायावर' ने नाटकों को उपलब्ध कराने के लिए अपना सहयोग प्रदान किया, जो हिंदी रंगमंच के लिए बहुत जरूरी है.

काश, लखनऊ नाट्य समारोह समिति अपने क्षुद्र स्वार्थों, पूर्वाग्रहों, मतभेदों को मिटा कर समारोह आयोजित करे तो वह काफी यश प्राप्त कर सकती है और रंगमंच के लिए भी सार्थक कार्य कर सकती है. यह जरूरी है कि सब हिंदी नाट्य संस्थाएं मिल कर कार्य करें, तभी लखनऊ रंगमंच प्रदेश के रंगमंच को नई दिशा प्रदान कर सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवा गतिविधियां

नई प्रतिभाएं

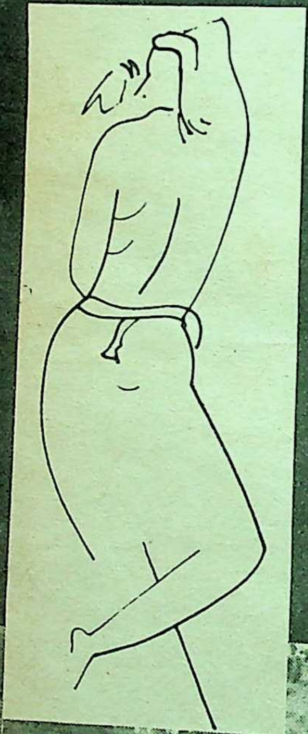

कला एवं शिल्प महाविद्यालय लखनऊ में युवा चित्रकार गंगादत्त उपाध्याय ने अपने चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन किया.

वह पिछले दिनों चित्रकूट व खजुराहो गए थे, वहां के दृश्यों को उन्होंने लैंडस्केप तथा स्केच ग्राफिक में चित्रित किया है.

22 वर्षीय गंगादत्त उपाध्याय कला एवं शिल्प महाविद्यालय के 'म्यूरल' चतुर्थ वर्ष के छात्र हैं. प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय वर्ष में उन्होंने पेंटिंग तथा ग्राफिक में द्वितीय तथा अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया. उन्होंने कई पुरस्कार भी प्राप्त किए हैं.

उन्होंने अपने रेखाचित्रों (स्केचों) में आम आदमी को काफी स्थान दिया है. उनका दृष्टिकोण है कि 'कला, कला के साथ आम आदमी तक पहुंचनी चाहिए.'

—राकेशचंद्र मिश्र, वि.वि.प्र.

उमा पटेल को भारत की प्रथम महिला टैक्सटाइल इंजीनियर होने का गौरव प्राप्त है. उसे म.स. विश्वविद्यालय में, टैक्सटाइल

गंगादत्त उपाध्याय की दो कलाकृतियां. खजुराहो का शिल्प (ऊपर), लैंडस्केप (नीचे).

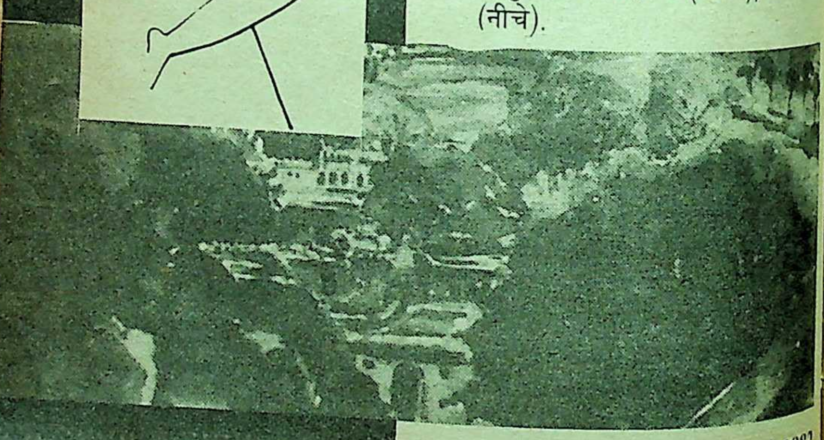

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवा गतिविधियां

इंजीनियरिंग में योग्यता सूची में प्रथम स्थान पर आने के लिए स्वर्ण पदक दिया गया है. उस की शिक्षण व कविता लिखने में रुचि है. उस की कविताएं यदाकदा छपती भी रहती हैं.

उमा पटेल : प्रथम महिला टैक्सटाइल इंजीनियर.

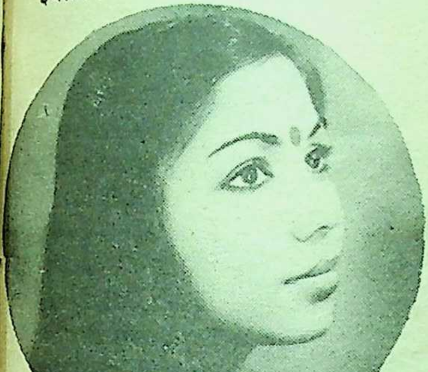

यह पूछे जाने पर कि उस ने इस क्षेत्र को क्यों चुना, उस ने कहा, "भारत की कपड़ा मिलें महिलाओं को उत्पादन इकाई में नियुक्त नहीं करती हैं. वे गुणवत्ता नियंत्रण (क्वालिटी कंट्रोल) या शिक्षण संस्थाओं में ही जा सकती हैं. आज किस क्षेत्र में महिलाएं नहीं हैं? हर उस क्षेत्र में जो पुरुष प्रधान था, महिलाएं आगे आ रही हैं. फिर उस क्षेत्र के संदर्भ में गौर करने पर मैं ने पाया कि महिलाएं इस में अपना काफी सुदृढ़ स्थान बना सकती हैं."

—मानवेन दुबे 'राकेश,' वि.वि.प्र.

•

13 वर्षीय शेफाली रावत ने भरतनाट्यम नृत्य में काफी नाम कमाया है. उस की संगीत और नृत्य के प्रति रुचि बचपन से ही रही है. उस ने चौथी कक्षा से गुरु सरकार से संगीत की शिक्षा ली. उस के बाद उस ने नौ वर्ष की उम्र में भातखंडे हिंदुस्तानी

अभियांत्रिकी महाविद्यालय रायपुर में मंचित नाटक 'जगाने का अपराध' का एक दृश्य.

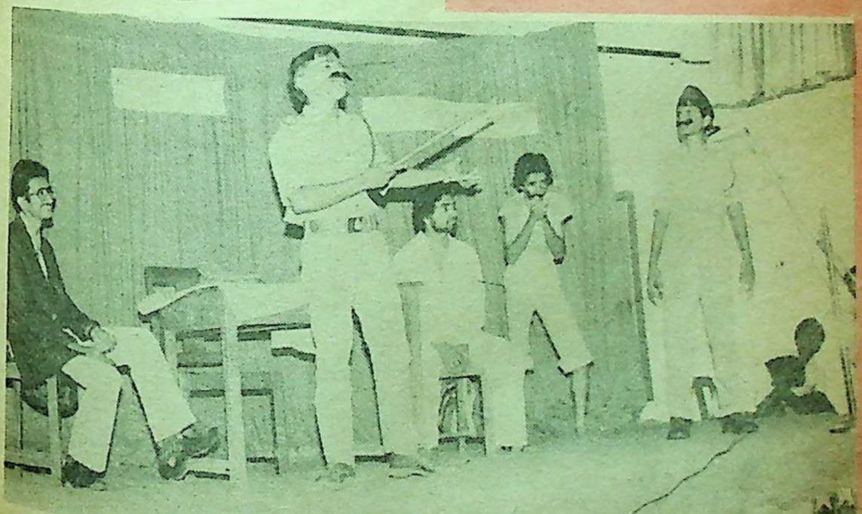

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय में हुई वालीबाल प्रतियोगिता का एक दृश्य.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

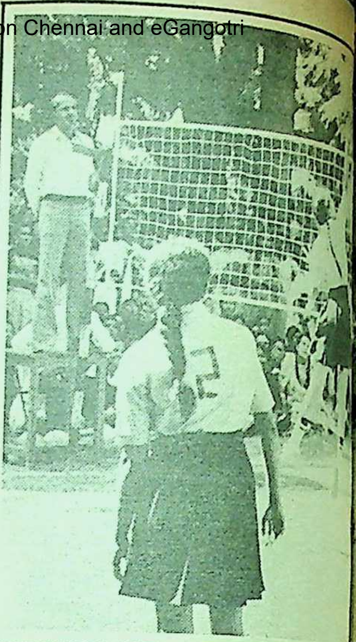

संगीत महाविद्यालय के भरतनाट्यम विभाग में प्रवेश लिया और पिछले तीन वर्षों से वह वसंती सुब्रह्मण्यम से भरतनाट्यम की शिक्षा प्राप्त कर रही है.

वह अब तक कई सफल कार्यक्रम दे चुकी है.

इस वर्ष एशियाई खेलों के अवसर पर मनोरंजन के लिए, उत्तर प्रदेश के राष्ट्रीय कैडेट कोर के कैडेटों द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले सामूहिक नृत्य में शेफाली को भी चुना गया है.

—राकेश, वि.वि.प्र.

रंगमंच

पिछले दिनों अभियांत्रिकी महाविद्यालय, रायपुर में 'नाट्य मंच' द्वारा नरेंद्र कोहली लिखित व्यंग्य 'जगाने का अपराध' के नाट्य रूपातंर का सफल मंचन किया गया, जो यांत्रिकीय गणनाओं के जाल में फंसे छात्रों की सांस्कृतिक चेतना का परिचायक कहा गया.

इस नाटक में आम आदमी की त्रासदी का सजीव चित्रण किया गया था, जो भ्रष्ट प्रशासन के पंजे में फंसा दम तोड़ता रहता है.

इस व्यंग्य में नाट्य रूपांतर से निर्देशन तक का कार्य अंतिम वर्ष के छात्र उमाप्रकाश ओझा ने किया और साथ ही नाटक के मुख्य पात्र थानेदार की भूमिका भी निभाई.

थानेदार अंधे प्रशासन का प्रतीक था, तो 'नारंग' एक ऐसा क्रूर पूंजीपति था जिस के लिए मानवता एवं नैतिकता सौदागरी की चीजें हैं. इस में अन्य पात्रों का अभिनय भी सराहनीय रहा.

—श्रीकांत च. रहाटगांवकर, वि.वि.प्र.

वालीबाल प्रतियोगिता

महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय में भोपाल विश्वविद्यालय महिला वालीबाल प्रतियोगिता संपन्न हुई. जिस में शासकीय महाविद्यालय ने मेजबान महाविद्यालय को 4-1 से पराजित किया.

मैच के प्रारंभ में मेहमान टीम, मेजबान टीम से 10-15 से पिछड़ गई थी, पर उस ने दूसरा गेम काफी संघर्ष के बाद 17-16 से जीत लिया. अंतिम दो गेम उस ने 15-11, 15-7 से आसानी से जीत लिए.

—माया माहेश्वरी, वि.वि.प्र.

वादविवाद प्रतियोगिता

जोधपुर विश्वविद्यालय सांस्कृतिक गतिविधियों के मामले में लगभग शून्य ही रहता है, परंतु इस सत्र में सांस्कृतिक गतिविधियों की शुरुआत हुई हिंदी वादविवाद प्रतियोगिता से, जिस का विषय था,-'इस सदन की राय में संसदीय प्रणाली ही भारत के हित में है.' विषय के पक्ष में बोलते हुए सुशीला मथा ने कहा कि "संसदीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

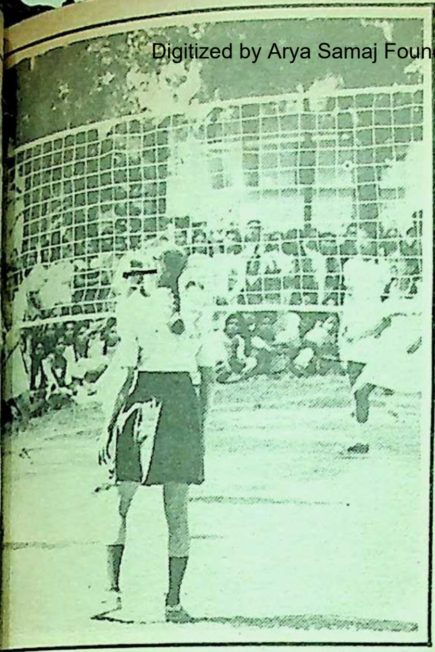

प्रणाली से व्यवस्थापिका व कार्यपालिका में सामंजस्य रहता है और जनता का शासकों पर नियंत्रण रहता है.'' इस प्रतियोगिता में उसे प्रथम पुरस्कार मिला.

द्वितीय पुरस्कार विजेता कमला नेहरू कालिज की छात्रा प्रभा भारती ने विषय के विपक्ष में बोलते हुए कहा कि ''संसदीय प्रणाली में चुने गए अधिकांश प्रतिनिधि अयोग्य होते हैं और वे जातिगत आधार पर चुनाव जीतते हैं. इस से तो अच्छा है कि योग्य व्यक्ति के हाथों में सत्ता सौंप दी जाए और फिर वह योग्य व्यक्तियों को ही अपने मंत्रिमंडल में सम्मिलित करे.''

प्रतियोगिता में अन्य अनेक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया. प्रतियोगिता का संचालन हिंदी विभाग के रीडर डा. जगदीशप्रसाद शर्मा ने किया.

—रामबाबू शर्मा 'मुद्‌गल', वि.वि.प्र.

गांधी जयंती के अवसर पर गांधी आश्रम के तत्त्वावधान में एक वादविवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस का विषय था — 'महिलाएं और उन की समस्याओं के संबंध में गांधीजी के विचार.' महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, भोपाल में संपन्न हुई इस वादविवाद प्रतियोगिता में कई छात्राओं ने भाग लिया.

प्रथम पुरस्कार विजेता ऋतु के अनुसार, ''गांधीजी एक व्यावहारिक नेता थे, अतः महिला समस्याओं के प्रति गांधीजी ने जो विचार व्यक्त किए हैं, वे नारी समाज में व्याप्त वर्तमान समस्याओं से मुक्ति पाने के लिए अत्यंत व्यावहारिक हैं.''

द्वितीय पुरस्कार विजेता पतलवी ने कहा, ''हालांकि गांधीजी जनसंख्या नियंत्रण के कृत्रिम उपायों से सहमत नहीं थे, पर उन के अन्य विचारों को अपना कर नारी अपना प्राचीन काल जैसा सम्मान प्राप्त कर सकती हैं.

—माया, वि.वि.प्र. ●

विश्वविद्यालय प्रतिनिधि

समाज निर्माण में पत्रकारिता के बढ़ते हुए महत्त्व व इस क्षेत्र में लोगों की बढ़ती हुई रुचि को देखते हुए दिल्ली प्रेस ने युवा वर्ग को इस क्षेत्र में आने के लिए प्रोत्साहित करने व उन का उचित मार्गदर्शन करने के उद्देश्य से विभिन्न कालिजों एवं विश्वविद्यालयों में छात्रछात्राओं की प्रतिनिधियों के रूप में नियुक्ति की है.

ये विश्वविद्यालय प्रतिनिधि अपने कालिज, विश्वविद्यालय व नगर से संबंधित गतिविधियों की रिपोर्ट, भेंटवार्ताएं आदि नियमित रूप से भेजते हैं. समयसमय पर ये प्रतिनिधि अपने कालिज या विश्वविद्यालय में ऐसी प्रतियोगिताओं का भी आयोजन करते हैं, जिन में भाग लेने वाले किसी निर्धारित विषय पर अपनेअपने विचार व्यक्त करते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेलीफोन

व्यंग्य • सिंधु गोय

एक दिन मेरी बचपन की सहेली वीना एकाएक मेरे कार्यालय में आई और जल्दी से बोली, ''चायपानी को पूछना बाद में. पहले जरा यह बता, तेरे दफ्तर का टेलीफोन कहां है?''

''क्यों?''

''क्यों, क्या टेलीफोन से इश्क लड़ाऊंगी? अरे, चाचाजी को एक जरूरी संदेश देना है.''

''पर टेलीफोन में तो ताला पड़ा है और प्रबंधकजी बाहर गए हुए हैं.'' मैं ने मजबूरी बताते हुए कहा.

''टेलीफोन जैसी जरूरी चीज में आखि ताला लगाने की क्या तुक है? बड़ा घटि दफ्तर है तेरा.'' वीना ने तुनक कर जरा गु में कहा.

मुझे ध्यान आया, ठीक यही बा रमणजी ने कहा था, जब वह बंगलौर से न दिल्ली स्थित इस कार्यालय का कार्यभा संभालने आए थे व अन्य महत्त्वपूर्ण चावि के साथ ही उन्हें एक सेंटीमीटर लंबी पीत की टेलीफोन की चाबी भी सौंपी गई थी.

बड़े बाबू ने थोड़ा झिझक कर कहा ''श्रीमानजी, ताला लगा रहने से लाइ खामखां एंगेज भी नहीं रहती व बेतुके वि भी नहीं आते...''

''नहींनहीं...'' बात काट कर रमण थोड़ा रोष से बोले थे, ''हम सब ठीक क लेंगे. अरे भाई, इस से ज्यादा क्या, कि जरूरी काम की वजह से ही हमारे कार्याल वाले टेलीफोन इस्तेमाल कर लेते होंगे, ज खुद सोचिए, क्या इन गरीब बाबुओं के घ पर टेलीफोन लगे हुए हैं जो ये इस से चिप रहेंगे?''

कार्यालय अनुशासन में अपने से ब अधिकारी के सामने चुप रहना ही ठीक है यह सोच कर ही बड़े बाबू, ''जैसा आप ठी समझें'' कह कर अपनी कुरसी पर चले गए थ

और फिर उस के बाद कार्यालय की मूर्तियां फिर सक्रिय हो गई थीं जिन टेलीफोन प्रेम ने पहले भी ताले को आमंत्रि किया था.

आरतीजी गोरी, लुभावनी और आकर्षक व्यक्तित्व की स्वामी हैं. वह हमा कार्यालय में विगत तीन वर्षों से पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं.

इतवार के दिन आरतीजी हिंदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का ताला

अंगरेजी के वे सारे अखबार खरीदती थीं जिन में वैवाहिक विज्ञापन होते थे.

अपनी शादी के लिए खुद चिट्ठी लिखना आरतीजी को पसंद नहीं था, अतः जिन विज्ञापनों में टेलीफोन नंबर दिया होता था, आरतीजी उन सभी नंबरों पर निशान लगा दिया करती थीं और सप्ताह के शेष दिनों में वह उन सभी नौजवानों के घर पर टेलीफोन करती थीं.

अकसर ही एकदो बार में संपर्क नहीं हो पाता था या बात अधूरी रह जाया करती थी, तो आरतीजी की नाजुक उंगली को पुनः नंबर मिलाने के लिए बड़ा कष्ट करना पड़ता था.

पर असली परेशानी तो तब आती थी जब मुआ टेलीफोन नंबर दिल्ली से बाहर—मद्रास, कलकत्ता, बंबई आदि का हुआ करता था.

आरतीजी को सीधी डायल सेवा में अधिक नंबर घुमाने पड़ते थे, साथ ही एक नंबर मिलाने के लिए उंगलियों को कईकई बार कसरत करनी पड़ती थी, बोलना भी जोर से पड़ता था और एक ही बार में लंबे समय तक बात करनी पड़ती थी, क्योंकि दूर के नंबर आसानी से नहीं मिलते हैं.

कार्यालय को टेलीफोन के इस खुले सदुपयोग का हजारों रुपए भुगतान करना पड़ा, परंतु आरतीजी कुंआरी से श्रीमती नहीं बन सकीं.

एक थीं कामनीजी, जो बस श्रीमती बनने ही वाली थीं. उन के मंगेतर भी पास ही के एक दूसरे कार्यालय में टाइपिस्ट थे.

कामनीजी को अपने भावी पति की चिंता खाए जाती थी, "आज बस में परेशानी तो नहीं हुई, बैठने को जगह तो मिल गई थी, किसी कालिज की छात्र[ा] के पास तो नहीं बैठे, ज्यादा आंकड़ों का का[म] तो नहीं मिला टाइप करने को, मशीन तो ठीक काम कर रही है, खाने में क्या लाए, अचार क[ा] तेल बह कर कपड़ों पर तो नहीं गिर गया, खीरे या आम के ऊपर पानी तो नहीं पिया, कहीं अम्मांजी गुड़ रखना तो नहीं भूल ग[ई] थीं, शाम को कहां मिलना है, कौन सी आइसक्रीम खानी है."

ऐसी हजारों समस्याओं का समाधा[न] करने के लिए कामनीजी घड़ीघड़ी टेलीफो[न]

कार्यालय का कार्यभार संभालते वक्त रमणजी ने टेलीफोन में ताला डालने का कोई औचित्य नहीं समझा था पर कुछ दिनों बाद वह खुद ही टेलीफोन में ताला डालने पर विवश क्यों हो गए थे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

का प्रयाग महीना तक करती रही थीं और यह अवधि उस समय और बढ़ गई थी जब विवाह से एक सप्ताह पूर्व उन की भावी ददिया सास का देहांत हो गया था.

पर ऐसे किसी भी मसले से दूर असलम साहब हैं. वह बहुत इनकलाबी व्यक्ति हैं. दुनिया में कहीं भी बेईमानी हो रही हो, ज्यादती या जुल्म हो रहा है— असलम साहब को गवारा नहीं होता.

सुबह आठ बजे वाली खबरें सुन कर तथा निविदाओं से ले कर संपादकीय तक अखबार चाट कर, असलम साहब दफ्तर चलने से पहले ही तय कर लेते थे कि आज कहां बिजली गिरानी है.

यदि मामला हिंदुस्तानी है तो वह संबद्ध मंत्री या दफ्तर के अधिकारी को टेलीफोन पर आड़े हाथों लेते थे.

एक बार जब उन्होंने अखबार में बिजली बोर्ड की कुछ लाख रुपए की निविदा के बारे में पढ़ा, तो फौरन बोर्ड के अध्यक्ष को टेलीफोन कर के ईमानदारी बरतने की सलाह दी, साथ ही सतर्कता विभाग को भी संभावित बेईमानी से आगाह करा दिया.

एक बार जब उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय में टेलीफोन कर के एक संवैधानिक मामले में मुख्य न्यायाधीश को सलाह देनी चाही, तो बात खासी बढ़ गई व असलम साहब का शुक्रिया अदा करने पुलिस आ गई.

अंतरराष्ट्रीय मामलों में असलम साहब सीधे संबंधित दूतावास या उच्चायोग को टेलीफोन कर के विरोध प्रकट करते हैं. साथ ही सख्त हिदायत भी कर देते हैं कि यदि आइंदा यह हरकत हुई तो उन से बुरा कोई न होगा.

हमारे खयाल से उन की पाक, साफ व लच्छेदार उर्दू किसी की समझ में ही नहीं आती होगी, वरना दूतावासों की ओर से भी पुलिस हमारे दफ्तर के चक्कर काटती.

एक हैं शिवधानजी. उन की रंगीन तबीयत के आगे सब कुछ फीका है. क्लब, कैबरे व हुस्न की तलाश ही जैसे उन की जिंदगी का अहम मकसद है.

किस थिएटर में कितना गरम पंजाबी ड्रामा चल रहा है, किस क्लब में कौन नर्तकी कैबरे कर रही है, कौन गायिका गजलें गा रही है, कौन से सिनेमाघर में वयस्कों के लिए हिंदी फिल्म या अश्लील अंगरेजी फिल्म लगी है, जैसे दिलफेंक सवालों के जवाबों के लिए शिवधानजी को टेलीफोन ही का तो सहारा था.

पर यह बात और है कि वह इन तमाम मनोरंजनों में से किसी भी एक का सिर्फ तनख्वाह मिलने वाले दिन ही आनंद ले पाते थे, पर उन का विचार था कि रोजाना की पूछताछ जहां उन का राजधानी के बारे में सामान्य ज्ञान बढ़ाती है, वहीं उन्हें तरोताजा व जिंदादिल भी रखती है.

परंतु 'कंजूस' उपनाम से विख्यात वीरेंद्रजी का रंगतरंग से कोई वास्ता नहीं. उन का शरीर ही हमारे कार्यालय में रहता था, दिल व दिमाग स्टाक एक्सचेंज में अटका रहता था.

देश की बड़ीबड़ी कंपनियों के भविष्य की चिंता वीरेंद्रजी को लगातार खाए जाती थी.

किसी कंपनी का 100 रुपए वाला शेयर 1,400 रुपए से गिर कर 740 रुपए पर आ गया, उसे किसी मजदूर यूनियन ने परेशान कर रखा है, किसी फैक्टरी को अपना उत्पादन बढ़ाने की इजाजत नहीं मिल पा

चोरी करने में महिलाएं आगे

न्यूयार्क के 'लेडीज होम जर्नल' के अनुसार दुकानों से सामान की चोरी करने के मामले में महिलाएं दूसरे लोगों की अपेक्षा कम संकोच करती हैं. वे एकरसता, अकेलेपन व शारीरिक रूप से संतुष्ट न होने की प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप ऐसा करती हैं. इस तरह की चोरी करने वाली अधिकतर महिलाएं 20 से 50 वर्ष तक की उम्र की होती हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

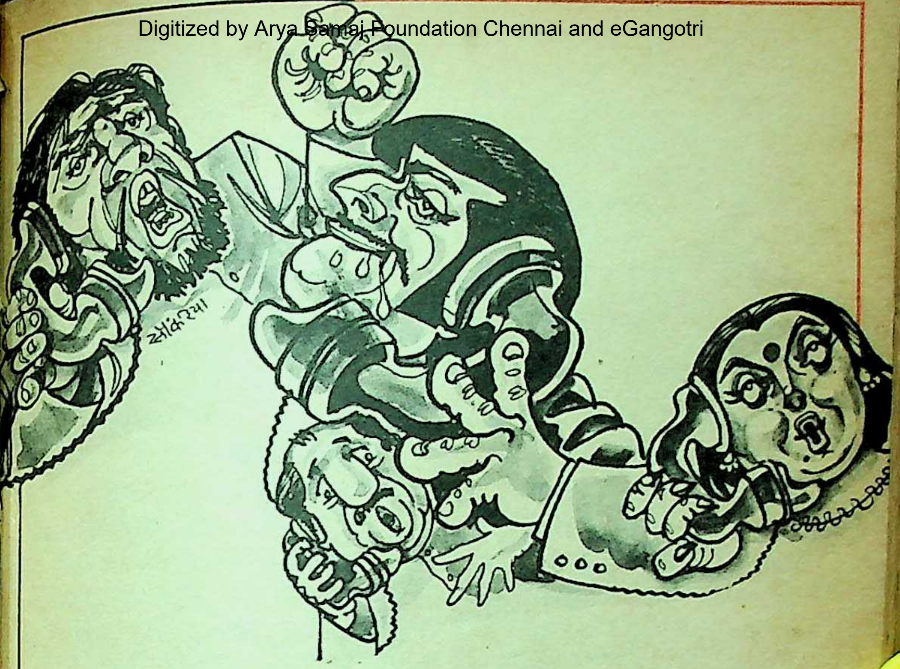

कार्य कैसा भी हो घरेलू या दफ्तरी टेलीफोन का प्रयोग प्रायः हर कोई अपनी चीज समझ कर ही करता है.

रही, किसी उद्योगपति का मलयेशिया में कारखाना लगाने का मामला अधर में अटका हुआ है, उद्योग मंत्री अमरीकी उद्योगपतियों को भारत में धन लगाने के लिए उकसा रहे हैं, एक नई आटो आ गई तो पहले से चल रही मोपेड का क्या होगा?

इन तमाम जिम्मेदारियों से लदे वीरेंद्रजी स्टाक एक्सचेंज, कंपनी, कार्यालयों व प्रमुख दलालों से अपने कार्यालय के टेलीफोन द्वारा लगातार विचारविमर्श करते रहते थे. प्रबंधक द्वारा दिया गया अनुवाद का काम पूरा हुआ या नहीं– इस से उन्हें कभी कोई मतलब नहीं रहता.

इसी क्रम में एक और महान विभूति से मिलिए, यह हैं– आशाजी.

यह इन का सौभाग्य कहिए या कंपनी के मालिक का दुर्भाग्य कि टेलीफोन आपरेटर हैं, पर साथ ही पत्रकारिता में गहरी दिलचस्पी रखती हैं. जनताजनार्दन को छूने वाले अछूते विषयों पर प्रारंभिक जानकारी स्वयं इकट्ठी करती हैं और फिर लेख लिखती हैं.

कुछ समय पहले उन्होंने 'समय की पाबंदी' लेख लिखा. सरकारी व निजी कार्यालय, क्लब, थिएटर, सिनेमाहाल, दूतावास, दुकानें, प्रतिष्ठान, बस, ट्रेन, जहाज, आदि समय से चल रहे हैं, खुल रहे हैं, या नहीं– इस जानकारी के लिए उन को सैकड़ों स्थानों पर लगातार कई हफ्ते तक फोन करना पड़ा. तब कहीं जा कर उन की रचना प्रभावी और महत्त्वपूर्ण हो पाई.

अंत में जब टेलीफोन का जबरदस्त बिल रमणजी ने देखा तो उन के होश उड़ गए थे और उन्होंने बड़े अदब से बड़े बाबू को बुला कर उस छोटी ताली के उपयोग का विनम्र आदेश दे दिया था.

रमणजी तो टेलीफोन में ताला लगाने का कारण समझ गए थे, पर वीना को इस का कारण कैसे समझाऊं? ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

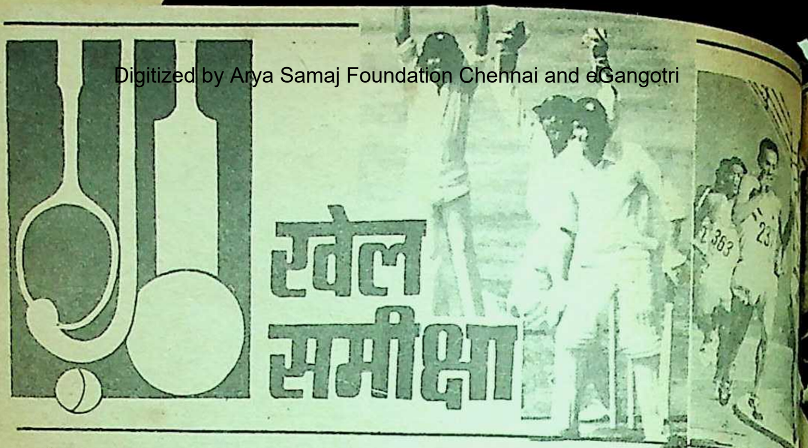

नवें एशियाई खेलों के आयोजन पर जरूरी व गैरजरूरी कामों पर 1,000 से 1,500 करोड़ रुपए तक खर्च किए गए हैं. न जाने कितने लोगों ने इस बड़ी रकम की वैतरणी में गोते लगाए हैं. सैकड़ों अधिकारी कईकई बार न सिर्फ मुफ्त में विदेश घूम आए हैं, बल्कि पिछले एकडेढ़ साल से वे एशियाई खेलों के लिए की जा रही अपनी 'सेवाओं' की

खिलाड़ियों से कहा है कि अगर एशि... खेलों में शामिल होने की उन की इच्छा है... वे अपना सारा व्यय, जो करीब साढ़े ... हजार रुपए है, खुद ही भरें. यानी ... खिलाड़ी, जो दो साल से कड़ी मेहनत कर ... है, उसे पदक जीतने की कोशिश के ... टैक्स भरना पड़ेगा. इस से ज्यादा ... मजाक क्या कोई और हो सकता है?

एशियाई खेल: यह कैसा इनसाफ

भारी भरकम कीमत वसूल रहे हैं.

फजूलखर्ची के इस आलम में भारतीय ओलंपिक संघ ने काफी मितव्ययता का परिचय दिया है. उस ने सभी खेल संगठनों से कहा है कि एशियाई खेलों में उन के जो खिलाड़ी हिस्सा लेंगे उन के आनेजाने, ठहरने व खानेपीने के अलावा खेल के सामान का व्यय उन्हें ही उठाना पड़ेगा. भारत के खेल संगठनों के पास तब तो काफी पैसा आ जाता है जब उन के अधिकारियों को भारतीय खेलों का स्तर सुधारने के नाम पर विदेश जाना होता है, लेकिन खिलाड़ी की मदद करने के लिए वे हमेशा कंगाल हो जाते हैं.

लगभग सभी खेल संगठनों ने

जब ब्रिसबेन के राष्ट्रमंडलीय खेलों ... हिस्सा लेने के लिए भारतीय खिलाड़ी गए ... तो उन से कुल खर्च का 15 प्रतिशत, क... सात हजार रुपए मांगे गए थे. ऐन वक्त ... अगर सरकार 15 प्रतिशत की भी अदा... का कदम नहीं उठाती तो बहुत से खिला... राष्ट्रमंडलीय खेलों में हिस्सा ही नहीं ले पा...

अगर यही तमाशे खिलाड़ियों के ... किए जाते हैं तो तमाम खेल संगठनों को ... कर ऐसा नियम क्यों नहीं बनाया दिया ज... कि जिस खिलाड़ी में अपना खर्च उठाने ... बूता हो, वही अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं ... हिस्सा ले.

रामप्रकाश मेहरा : बुरे क्यों समझे जाते थे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेहरे बदलने से कुछ नहीं होता

दिल्ली क्रिकेट संघ पर जब तक रामप्रकाश मेहरा का राज्य था, तब तक एक विरोधी गुट बारबार यह आरोप लगा रहा था कि उन्होंने दिल्ली क्रिकेट में अव्यवस्था फैलाई है. अब जब से विरोधी गुट के सरगना विशनसिंह बेदी के हाथों में दिल्ली क्रिकेट की बागडोर आई है, हालात और भी बिगड़ गए हैं.

हाल में फिरोजशाह कोटला में हुए

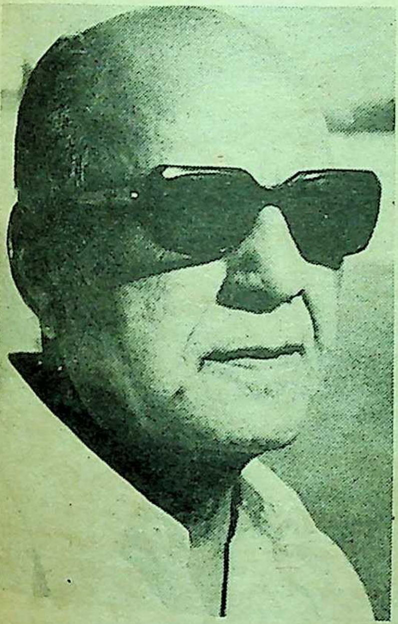

ईरानी ट्राफी मैच में यह अव्यवस्था काफी स्पष्ट रूप से देखने को मिली. पीने के पानी का कोई इंतजाम नहीं था. खानेपीने की चीजों के मनमाने दाम वसूले जा रहे थे.

प्रेस बाक्स में बेदी गुट के खेल पत्रकारों का ही दखल था. गुट से बाहर के लोगों से वे ऐसे सवालजवाब करते, मानों उन की शिनाख्त कर रहे हों. यह हालत तब और दुखद लगी जब यह मालूम हुआ कि इन गुटबाज पत्रकारों से अपमानित होने वाले लोगों के पास दिल्ली व जिला क्रिकेट संघ द्वारा जारी किए गए पास थे.

ईरानी ट्राफी मैच बेहद मामूली माना जाता है. आमतौर पर इस में ज्यादा भीड़ नहीं होती फिर भी किन्हीं पत्रकार महोदय को 15 पास तक दिए गए. यही काम रामप्रकाश मेहरा नहीं करते थे, इसलिए बुरे थे.

क्रिकेट टीम : नए चेहरे

पाकिस्तान की तीसरी यात्रा पर छः टैस्ट मैच खेलने जा रही भारतीय क्रिकेट टीम की घोषणा कर दी गई है. इस में तीन खिलाड़ियों का चयन आश्चर्यजनक है. ये हैं—मनिंदर सिंह (दिल्ली), शिवरामकृष्ण (तमिलनाडु) व बलविंदरसिंह संधु (बंबई).

भारत के लिए यह दौरा बेहद महत्त्वपूर्ण साबित होगा, क्योंकि हाल ही में पाकिस्तान की टीम ने आस्ट्रेलिया को तीन टेस्टों की शृंखला में 3-0 से हराया है. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

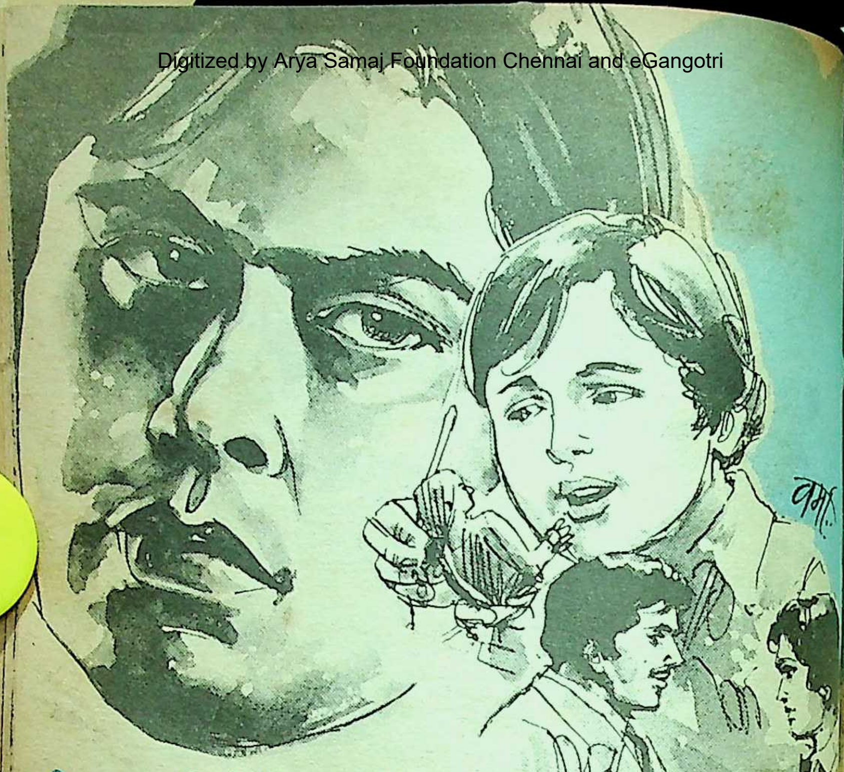

वीणा अपनी बेटी मधु को डाक्टर बनाना चाहती थी परंतु सुशील इस के खिलाफ था. वह नहीं चाहता था कि जो कुछ उस के साथ घटा है वही सब उस की बेटी के साथ भी घटे.

कहानी • चंद्रा र. देवत

समाचारपत्र पर दृष्टि गड़ाए सुशील कहीं खोया हुआ था. समाचार तो कोई विशेष नहीं था, पर एक सुंदर चित्र ने उस का ध्यान आकर्षित कर रखा था. खिलौने के लिए एक नए डिजाइन का धुंधला अक्स उस की कल्पना में उभर रहा था. तभी उस का ध्यान भंग हो गया.

"अजी, सुनते हो, तुम्हारी लाड़ली डाक्टर बनेगी बड़ी हो कर." उल्लसित स्वर में पुकारती वीणा मधु को उठाए बैठक में चली आई. सुशील ने चौंक कर पूछा, "तुम्हें कैसे मालूम? भविष्य जानने की कोई विद्या तुम्हारे हाथ लग गई है क्या?"

"अभी से थर्मामीटर वगैरह पसंद आते हैं इसे. मैं ने पूछा, 'डाक्टर बनेगी क्या?' इस पर फौरन 'हां' में सिर हिला दिया इस ने."

"मधु ने समझा होगा, यह भी कोई खिलौना होगा. इसी कारण उठा लिया होगा. अभी से यह क्या जाने कि डाक्टरी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपने अपने अपने

चिड़िया का नाम है."

सुशील की बात पर वीणा की ममता को बुरा लगा, "कैसी बातें करते हो जी? तुम्हें अपनी बच्ची के भविष्य की चिंता नहीं है? मैं तो इसे डाक्टर ही बनाऊंगी, इस के बाद ही हम इस का व्याह करेंगे."

"चिंता है, तभी तो कह रहा हूं. इस में जो कुछ बनने की योग्यता प्रकट होगी, हम इसे वही बनाएंगे. हमें तो केवल इतना ध्यान रखना है कि यह गलत रास्ता न चुने. बच्चे की रुचि न होने पर भी उस पर अपनी इच्छाएं थोपना ठीक नहीं होता."

वीणा तिलमिला कर मुंह फुलाए उठ कर चली गई. उस की स्वयं डाक्टर बनने की कितनी इच्छा थी, परंतु उस की यह इच्छा मन की मन में ही रह गई. अच्छा घरवर देख कर उस के मातापिता और स्वयं उस का मन डोल गया था. उस ने सोचा था, वह स्वयं डाक्टर नहीं बन सकी, पर अपनी बेटी को अवश्य डाक्टर बनाएगी. इस से ही उस के मन को संतोष मिल जाएगा. पर सुशील कुछ करने दे, तब न. नाराज, उदास वीणा कामकाज में व्यस्त हो गई.

सुशील भी क्या करता? अपने भटकते जीवन के कटु अनुभव उसे भूले नहीं थे.

एक दिन मिट्टी की गुड़िया में अंतिम रंग भर कर नन्हे सुशील ने उसे सामने रख कर देखा. अपनी ही कृति पर उस की आंखों में प्रशंसा के भाव उभर आए. वाह, कितनी सुंदर बनी है. आज तो पहली बार रंग भरा है. तनिक सांवली हो गई है. अगली गुड़िया ज्यादा खूबसूरत व गोरीचिट्टी बनाऊंगा. मुग्ध दृष्टि से गुड़िया को निहारता हुआ वह कल्पना जगत में खो गया.

तभी सब कुछ बिखर गया. गुड़िया टूटी हुई भूमि पर पड़ी थी. स्तब्ध सुशील अभी स्थिति को समझ भी नहीं पाया था कि एक जोरदार तमाचा उस के गाल पर पड़ा. साथ ही उस के पिता की क्रोध से भरी आवाज भी सुनाई दी.

आगबबूला हुए पिता ने दांत पीसते हुए गुड़िया को चूरचूर करने के लिए पैर उठाया ही था कि सुशील के मुंह से निकला, "नहीं." और उस ने टूटी गुड़िया को हथेली से ढक लिया. क्रोधांध पिता का पैर सुशील की उलटी हथेली पर पड़ा. बूट से पूरा जोर लगाते हुए उन्होंने हाथ सहित गुड़िया कुचल डाली.

सुशील की हृदय विदारक चीख निकल गई. हथेली के दोनों ओर रक्त छलक आया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था. दर्द से छट... गया.

एकबारगी उस के पिता भी सिटपिटा गए. चीख सुन मां व दादी दौड़ी आईं. दृश्य देख कुछ अनुमान तो हुआ, पर स्पष्ट नहीं. दादी ने पौत्र को तुरंत गोदी में भरने की चेष्टा करते हुए अपने पुत्र को फटकारा, "हर वक्त इस के पीछे पड़ा रहता है. बच्चा सारा दिन कैसे किताबों में मगज मारेगा? खेलेगा नहीं कभी?"

यों सुशील अब भी बिलख रहा था. पर मां व पत्नी को देख सुशील के पिता पुनः क्रोध में आ गए और बोले, "लाड़प्यार में बिगाड़ दो इसे. हजार बार कहा, पढ़ने में मन लगा. बड़ा हो कर आई.ए.एस. अफसर बनना है इसे. मगर यह...पिछले साल द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ. इस बार आसार उस से भी बुरे नजर आते हैं. नालायक कहीं का. जरा नजर चूकी नहीं कि ले कर बैठ गया मिट्टीपत्थरों को. ये काम आएंगे इस के? रोटी कमा कर देंगे इसे?" उन्हें चिल्लाता छोड़ सुशील की मां अपने सहमेसिसकते बेटे को ले सजल नयनों से भीतर चली गईं.

भीतर सुशील फूटफूट कर रो पड़ा. सुशील का हाथ साफ कर पट्टी बांधते हुए मां भी रोती हुई बोलीं, "क्यों तू दिन भर इन खिलौनों के पीछे पड़ा रहता है. तुझे मालूम तो है, तेरे बाबूजी तेरे ये खेल सहन नहीं कर पाते. क्यों रोजरोज मार खाता है? बेटा, छोड़ दे इन्हें. यही पढ़ाईलिखाई जिंदगी में काम आएगी. बड़ा अफसर बनेगा मेरा राजा बेटा. गाड़ी, बंगला, रुपयापैसा, शानशौकत सब कुछ होगा. इस के पास."

मां की सांत्वनामयी गोद में सिसकते हुए सुशील ने बताया, "मां, मैं पहले ही पढ़ रहा था. मुझे समाजशास्त्र का एक प्रश्न समझ में नहीं आया तो मैं ने बाबूजी से पूछा. उन्होंने मुझे डांट कर भगा दिया. फिर मैं ने सोचा, अभी अतुल आएगा तो उस से पूछूंगा. पर वह गुड़िया लिए बिना मुझे उत्तर नहीं बताएगा. उसी के लिए गुड़िया बनाई थी मैं ने, मगर बाबूजी ने तोड़ दी. अब मैं किस से पूछूंगा?"

अब तो मां को भी गुस्सा आ गया. पट्टी बांधते ही सीधे बाहर पहुंचीं और पति को खूब खरीखोटी सुनाई. सब जान कर सुशील के पिता भी सकपका गए. उन्हें अनुमान ही नहीं था कि सुशील की कला उस के मित्रों में इतनी लोकप्रिय है. वह देर तक खिसियाए से कुढ़ते, बड़बड़ाते रहे.

लेकिन सुशील को डांटने फटकारने का क्रम बराबर जारी रहा. अवकाश के क्षणों में लालायित बच्चे सुशील के आसपास जुट जाते और सुशील के हाथ अपनेआप मिट्टी, कागज थाम लेते. बच्चे ईर्ष्या, प्रशंसा, कौतूहल से पूछते और सुशील सब कुछ भूल प्रसन्नता से झूमता किसी नई रचना में डूब जाता. वह बच्चों के उत्सुक प्रश्नों का बड़ेबूढों की तरह गंभीर बन कर उत्तर देता. कोई आइस्क्रीम खिलाता, कोई टाफी.

धीरेधीरे उस की कला निखर रही थी. एकदो बार स्कूल में उस ने पुरस्कार भी जीते. पुरस्कार देख कर तो पिता प्रसन्न होते, पर उसे डांटनेफटकारने से बाज न आते. कभी पीट भी डालते, विशेषकर परीक्षा परिणाम के बाद. "सुशील परीक्षा में प्रथम क्यों नहीं आया?" ऐसा वह कहते.

लेकिन प्रशंसा किसे नहीं लुभाती? सुशील तो आखिर बच्चा ही था. कभीकभी तो अपना गुण उसे भयंकर अवगुण प्रतीत होने लगता. दूसरों के व्यंग्य उस के मन में हीन भावना के साथसाथ झल्लाहट पैदा कर देते.

नतीजा यह हुआ कि स्कूल की पढ़ाई उसे अरुचिकर, बोझ सी लगने लगी. सब के समक्ष अपमानित किए जाने का कारण उस का यह शौक ही तो है. इस से तो पिता जी पढ़ाई ही बंद करा दें तो अच्छा है. वह पास तो सदा होता रहा, पर विशेष योग्यता का प्रदर्शन कर के नहीं. थोपी गई इच्छा उस के स्वाभाविक गुणों का स्थान नहीं ले सकी.

बचपन यों ही बीता. फिर पिता ने मारनापीटना बंद कर दिया. अपने असंतोष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को प्रकट करने से वह कभी नहीं चूके, "एक ही बेटा है, मगर नालायक. मैं तो फिर भी अकाउंटेंट बन गया. बेटा यह भी बन पाएगा, कौन जाने."

पिता की निराशा देख सुशील उन का व परिचितों का सामना करने से कतराता. वैसे अब वह विभिन्न प्रकार के खिलौनों के अतिरिक्त बैठक का सजावटी सामान भी बना लेता था. अलबत्ता वे औरों के घर की शोभा बनते. पिता की निराशाजनित घृणा इतनी तीव्र थी कि सुशील की अपनी अलमारी को छोड़ इस की बनाई कोई चीज घर में कहीं नहीं थी.

पितापुत्र में बातचीत लगभग बंद थी. सुशील ने बी.ए. कर लिया था. ट्यूशन करते हुए एम.ए. भी कर लिया. फिर नौकरी ढूंढने लगा. पर बहुत प्रयत्न करने पर भी नौकरी नहीं मिली.

एक दिन बातोंबातों में किसी मित्र ने उसे सुझाव दिया, " तुम अपने बनाए खिलौने बेचने का धंधा क्यों आरंभ नहीं करते? चाहो तो..."

वहीं बैठे उस के पिता व्यंग्यपूर्वक हंस पड़े, "जरूर, बेटा, रेहड़ी लगा लो. सड़क पर खड़े हो कर 'टके के दो, आने के चार' चिल्लाना, पेट को रोटी और तन को लंगोटी तो मिल ही जाएगी."

"ऐसा क्यों कहते हैं, चाचाजी?" मित्र ने टोका, "छोटा ही सही, पर अपना धंधा करना अपमानजनक तो नहीं."

"ठीक है बेटा. इस के जी में जो आए करे. मेरी तो इस ने कभी सुनी नहीं, वरना आज अफसर होता. चार नौकर आगेपीछे घूमते. शान होती. जीवन में जूतियां चटखाते फिरना ही लिखा हो तो कोई क्या करे."

पर उस दिन सुशील फूट पड़ा, "नौकरी की शान होती है रिश्वत व बेईमानी के दम पर. जैसी आती है, वैसे ही चली भी जाती है. और बिना ऊंची डिगरी के भी ऊंची अफसरी हासिल कर लेते हैं लोग."

"चाचाजी, सिर्फ नौकरी करना ही प्रतिष्ठा की बात नहीं," मित्र ने सुशील का

पक्ष लिया.

"कुछ कर नहीं पाया तो कह दिया अंगूर खट्टे हैं. ऐसा ही गुमान है तो कुछ कर के दिखाता उन पत्थरों से."

विवाद देर तक चला. जब सुशील उठा तो उस के मन में इतनी पीड़ा थी कि खिलौने बनाना भी उस ने काफी समय के लिए लगभग बंद कर दिया.

पर उस दिन सुशील इंटरव्यू दे कर बाहर निकला तो वह थका हुआ था. यों ही पलट कर उस ने उस इमारत को देखा, जिस में से अभीअभी वह बाहर निकला था और तब लंबा सांस ले कर और सिर झटक कर लंबेलंबे डग भरता हुआ वह बस स्टाप की ओर चल दिया.

इंटरव्यू अच्छा ही हुआ था. इस पर भी पूर्व अनुभव के आधार पर वह जानता था कि उस के हाथ असफलता ही लगने वाली है. साक्षात्कार औपचारिक था. निश्चय ही उम्मीदवार चुना जा चुका था. एक कड़वी मुसकराहट उस के होंठों पर तैर आई.

वह बस की प्रतीक्षा में खड़ा हो गया. लाइन लंबी थी. वह सोचने लगा, शायद एकाध बस छोड़नी पड़े. उसे भी अभी क्या काम है? मन हुआ एक कप चाय पी आए. फिर जेब का खयाल कर स्वयं को समझा लिया. बहुत बढ़ गई है महंगाई, फजूलखर्ची से बचना चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तभी ब्रेक लगाने से एक कार के रुकने की आवाज आई. सुशील ने चौंक कर देखा. पहचानने में कुछ देर लगी, मगर आखिर वह श्याम को पहचान ही गया. स्कूल छोड़ने के बाद उस ने उसे पहली बार देखा था. शक्लसूरत काफी बदल गई थी. सुशील से दोतीन वर्ष बड़ा था वह. शरीर तनिक भराभरा मगर सुडौल था. कीमती सूट में व्यक्तित्व रोबीला लग रहा था.

अनुमानों की भूलभुलैया में खो सुशील औपचारिक अभिवादन भी भूल गया. श्याम ने मुसकराते हुए पास आ कर कहा, ''कहो, सुशील, कैसे हो?''

सुशील की तंद्रा टूटी. वह हड़बड़ा कर बोला, ''ओह.'' फिर संभल कर पूछा, ''कैसे हो? सब ठीकठाक है न?''

दृष्टि स्वयमेव कार की ओर उठ गई. मानो वह सब कुछ ठीकठाक होने का प्रमाण था. श्याम की मुसकान गहरा गई, ''हां, सब ठीक ही है. इतने दिनों से कहां थे? दिखाई नहीं दिए? क्या कर रहे हो आजकल?''

अनायास ही सुशील को ईर्ष्याजनित हीन भावना ने घेर लिया. कटुता से मुंह बना कर बोला, ''सब सवाल एक साथ? फिर भी बताता हूं. बेकार था, बेकार हूं. आगे भी बेकार रहने के ही आसार हैं. समझ ही गए होगे. नौकरी ढूंढ़ रहा हूं.''

श्याम ने गौर से उसे देखा. उस की कटुता का कारण समझते उसे देर नहीं लगी. गंभीर हो उस ने कहा, ''आओ, किसी रेस्तोरां में बैठ कर चाय पीएंगे और अपनीअपनी कहेंगे और सुनेंगे.'' उस का सौहार्द देख सुशील सकुचा गया. संभल कर नम्रता से बोला, ''क्षमा करना, यार, मेरी बस आने वाली है.''

''मैं छोड़ आऊंगा.'' तुम आओ तो.

''लेकिन...''

''पुराने मित्रों को यों टरकाते हैं, सुशील?'' श्याम ने शिकायत की. सुशील शर्मिंदा हो गया.

रेस्तोरां में चाय व कुछ खाने का आर्डर दे श्याम सुशील से बातें करने लगा. स्वयं आर्डर देने से पहले ... के लिए सुशील ने ... किया, ''तुम क्या कर रहे हो आजक...''

''अपने लिए तो पिताजी ने पैदा ... पहले ही काम तैयार कर दिया था. उ... व्यापार संभालता हूं.''

''मगर स्कूल में तो तुम कहते ... वकालत करोगे.''

''कहने में क्या जाता है, प्यारे, ... अपने अंदर योग्यता भी तो होनी चाहि...'' श्याम बोला.

''क्या मतलब?'' इस स्पष्टोक्ति ... सुशील सचमुच चकित रह गया.

''भई, जब स्कूल में था, तब कि... बुद्धि थी मुझ में, यह तो ... मैं अन्य दोस्तों की तरह सपनों के ... बनाता था कोई कहता डाक्टर बनूंगा, ... इंजीनियर. कोई आई.ए.एस. अफसर ... कोई कुछ. देखादेखी मैं भी कह देता ... वकील बनूंगा. हमारे यहां पिताजी के ... वकील मित्र का बहुत आनाजाना था. ... बेहद प्रतिभाशाली व्यक्ति थे. गुंडेबदमा... से ले कर पुलिस तक पर रोब था उनका. ... सब देख मैं भी सपनों में झूलने लगता. ... उन जैसा वकील बनूंगा मैं,'' बोलते... श्याम हंस पड़ा.

सुशील मूर्तिवत उसे देखता रहा. ... पूछा, ''तो तुम ने एलएल. बी. किया ... नहीं.''

''किया, जैसेतैसे डिगरी ले ली. सनद ... लिए आज आवेदन करूंगा, कल कर... सोचते हुए समय बीतता गया और ... पिताजी का हाथ बंटाना शुरू कर दिया. ... पता नहीं कब सनद मंगाने का विचार ... दिमाग से निकल गया. मैं व्यापार में ऐ... गया कि वकालत करने का विचार ही दि... से निकल गया.

''अब मैं समझ गया हूं कि ... स्वाभाविक प्रवृत्ति व गुण व्यापार उद्यो... ही सही तरह प्रयुक्त हो सकते थे. यह तो ... भी मानते होगे कि आदमी पूरी एकाग्र... तन्मयता से काम न करे तो कभी सफल ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्याम ने सुशील को जब अपने एक परिचित खिलौने के व्यापारी उमा शंकर से मिलवाया तो श्याम की प्रतिभा देख कर उन के मुख पर प्रशंसा के भाव छा गए.

हो सकता. और ये दोनों अपने स्वभाव व रुचि के कार्यों के प्रति ही बन पाती हैं. बहरहाल अब मैं खुश हूं."

सुशील के मस्तिष्क को ठोकर सी लगी थी. अभी वह विचार कर ही रहा था कि श्याम ने पूछ लिया, "नौकरी ढूंढ़ने के अलावा और क्या कर रहे हो?"

एक बार सुशील ने सहज, ईर्ष्यारहित भावना से उत्तर दिया, "कुछ नहीं, सड़कें नापता फिरता हूं. कमाई के नाम पर एकाध ट्यूशन कर लेता हूं."

तभी चायनाश्ता आ गया. खातेपीते हुए दोनों अपनेअपने विचारों में खोए रहे. एकाएक श्याम ने मौन भंग किया." बुरा न मानो तो एक बात कहूं, सुशील."

"हां, कहो, बुरा क्यों मानूंगा?"

"नौकरी हमारे लिए इतनी महत्त्वपूर्ण क्यों है? नौकरी की चाह में एड़ियां रगड़ना हम जैसे युवकों को शोभा तो नहीं देता. तुम अपना कोई व्यवसाय क्यों नहीं करते?"

"उस के लिए पूंजी चाहिए, जो मेरे पास नहीं है."

"तुम पूंजी किसे कहते हो दोस्त? सिर्फ रुपए को जिस का निरंतर अवमूल्यन हो रहा है? सुनो, जिसे सर्वप्रथम लगा कर फिर आवश्यकतानुसार कड़ा परिश्रम कर के उस से लाभ प्राप्त किया जाए वही पूंजी कहलाती है.

"इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में प्रकृति प्रदत्त जो गुण, रुचियां व प्रवृत्तियां हैं, वे ही मूल रूप में प्रत्येक मनुष्य की पूंजी हैं, जैसे किसी मजदूर की पूंजी उस का सबल शरीर, किसी कलाकार की पूंजी उस की जन्मजात प्रतिभा, किसी व्यापारी की पहली पूंजी उस की व्यापारिक प्रकृति व दृष्टिकोण होते हैं.

"सफलता पाने के लिए इन्हीं गुणों का यथास्थान उपयोग करने से प्राप्त रुपए, पैसे, यश, नाम, पद, मानप्रतिष्ठा इत्यादि के रूप में जो फल मिलता है, वही पूंजी पर मिलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वाला प्रथम लाभ है. इस के बाद ही इनसान इस से लाभ कमाता है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रुपया भी पूंजी है, किंतु अनाड़ी हाथों में पड़ कर अतिचंचलता लक्ष्मी सहज ही खिसक जाती है. इस निराशा को मन में स्थान मत दो कि तुम धनवान नहीं हो."

"मैं ने माना, फिर भी रुपए की आवश्यकता तो कदमकदम पर होती है और मैं..." सुशील वितृष्णापूर्वक हंसा, "मेरी हालत तो यह है कि बस की प्रतीक्षा के दौरान एक प्याली चाय पीने की इच्छा का भी दमन करना पड़ा था अभी."

"परंतु तुम्हारी पहली पूंजी तुम्हारी मेहनत, लगन, सूझबूझ तो तुम्हारे पास थी. उसे लगा कर लाभ स्वरूप रुपया व अनुभव कमाते. तब कोई लघु उद्योग आरंभ कर सकते थे. अब तक तुम स्वयं को एक बावली तलाश के पीछे दौड़ता नहीं पाते, बल्कि तुम्हें अनुभव होता."

सुशील भी स्वयं इसी दिशा में सोचने लगा था. श्याम की फटकार भली लगी थी. अपनी भूल निस्संकोच स्वीकारते हुए लज्जित हो उस ने पूछा, "तो क्या करूं मैं? मेरा मतलब है पैसा कमाने के अलावा. पैसा तो मैं कमा लूंगा. बूंदबूंद ही सही, घड़ा तो भर ही जाएगा, यह मुझे विश्वास है."

श्याम के होंठों पर संतोषपूर्ण मुसकान झलकी, "स्कूल के बाद से ही हम नहीं मिले. मैं नहीं जानता, अब तुम्हारे गुण व नैसर्गिक प्रतिभा क्या है. लेकिन बचपन में तुम मिट्टी के बहुत सुंदर खिलौने बनाया करते थे. बच्चे तुम्हारे खिलौने पाने को लालायित रहते थे. मुझे याद है, अतुल के लिए खिलौना बनाने पर तुम्हें अपने पिताजी से मार भी पड़ी थी. अभी भी यह गुण तुम में हैं या..."

सुशील की आंखें चमक उठीं. वह बोला, "अब तो मैं प्लास्टिक, कांच, कागज, कपड़े, मिट्टी इत्यादि वस्तुओं से खिलौने व घरेलू साजसज्जा का सामान बना लेता हूं."

"अभी होंगे कुछ?"

"हांहां, बहुत हैं. मुझे रास्ता मिल गया है, श्याम. तुम्हारा शुक्रिया दोस्त. तुम ने मुझे मेरे ही दर्शन करा दिए." सुशील एका... उतावला हो उठा था.

"मैं तुम्हारे बनाए खिलौने देख... चाहता हूं."

समय ने सुशील को गहरा सबक दि... था. पहले जैसी भूल वह दोहरा... नहीं चाहता था. उसी शाम दोनों श्याम के एक परिचित उमाशंकर से मिले, जिन के खिलौनों का ही व्यापार था. सब सुन कर त... खिलौने व सजावटी सामान देख उन के मु... पर सचमुच प्रशंसा के भाव छा गए. उन्हों... सुशील की ओर देखा. घबराहट से सुशील अनजाने ही उंगलियां चटखाने लगा. व... मुसकराए. सरल हृदय युवक कलाकार अपनी कलाकृतियों की भांति ही उन्हें भाया था.

श्याम ने पुनः कहा, "चाचाजी, मुझे विश्वास है, आप इसे निराश नहीं करें... अभी तक यह पगला एक मृगतृष्णा के पीछे भाग रहा था."

"देर आयद, दुरुस्त आयद," उन्हों... बात काटी, "बेटे, हमारी शिक्षा पद्धति ही दोषपूर्ण है. हम अपने बच्चों की बुद्धि का इ... ढंग से विकास नहीं करते कि वे कर्मक्षेत्र में पदार्पण करते ही अपनी राह आप चुन लें. उच्च शिक्षा के नाम पर हम ने बलात उन्हें एक दिशा में धकेल दिया है. सुशील बेटे, नैसर्गिक प्रतिभा ही तुम्हें जीवन में सफलता प्रदान करेगी. पर इस में कुछ समय लगेगा. अपनी कला में स्वाभाविकता कायम रखते हुए उसे तनिक व्यापारिक रूप भी देना होगा. प्रतीक्षा कर सकोगे?"

"जी हां, क्यों नहीं," खुशी से बावला हो सुशील झटके से खड़ा हो गया. य... बचपना देख उमाशंकर व श्याम हंस पड़े. तनिक झेंप कर संयत हो सुशील ने कृतज्ञ स्वर में कहा, "मैं आप के विश्वास को कभी ठेस नहीं पहुंचाऊंगा. आप के साथ कभी धोखा नहीं.."

"नहीं, बेटे. ऐसा मत समझो. मैं तुम्हें बांधना नहीं चाहता. व्यापारिक गुलामी की जंजीरों में कैद हो कर. सिर्फ बिकने वाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीज बन कर कलाकार की प्रतिभा कुंद हो जाती है. नैसर्गिक कला के स्वाभाविक विकास के लिए तो स्वतंत्र सहजता अत्यंत आवश्यक है. इसी लिए तो लोग कहते हैं कि कलाकार मूडी होते हैं."

तीनों हंस पड़े.

अगले दो वर्षों में सुशील एक कुशल व्यावसायिक कलाकार बन गया था. उमाशंकरजी ने उसे अपनी फैक्टरी में कुशल कलाकारों के साथ लगा दिया था. इस पर भी अपनी मौलिकता एवं अलग पहचान बनाए रखने के लिए उस ने अपनी कला को मात्र बिकाऊ नहीं बनने दिया. आर्थिक रूप से वह तुरंत इतना संपन्न नहीं हुआ, तब भी संतुष्ट था. अब वह पूर्ववत बेकार नहीं था. कुछ करते रहने का नशा शायद संसार में श्रेष्ठतम नशा है.

आत्मविश्लेषण के लिए अकसर सुशील की दृष्टि अपने अतीत में लौट जाती. पिता को वह अपराधी नहीं मानता था. मातापिता तो संतान के हितचिंतक ही होते हैं. उस के उज्ज्वल, सुखमय भविष्य की शुभकामना ही करते हैं. हां, कभीकभी उन की कामनाएं संतान के स्वाभाविक गुणों, रुचि व योग्यता से मेल नहीं खा पातीं. सुशील के पिता भूल कर रहे थे, किंतु दुर्भावनावश नहीं.

जो भी हो, सुशील उन्हें उन की कल्पना का छोटा सा सुख संसार दे सका, उस के लिए परम संतोष की बात यही थी. पिता के मुख पर कभीकभी पश्चाताप की भावना, नजरें चुराना उसे खलता था. फिर भी उस ने कभी कुछ नहीं कहा. दो वर्षों के बाद कुछ सपन्न होते ही सुशील ने विवाह कर लिया.

तंद्रा पुनः टूट गई. फ्राक पहने सजीधजी मधु उस का हाथ पकड़ कर हिला रही थी, "पिताजी...पिताजी...खाना." सुशील के होंठों पर स्नेहमयी मुसकान खिल उठी. उस ने उठते हुए बेटी को उठा कर हवा में उछाल कर लपक लिया. पितापुत्री दोनों आह्लाद से खिलखिला उठे.

तभी सुशील ने देखा, वीणा मुंह फुलाए भीतरी द्वार पर खड़ी है. सुशील उसे मनाने का निश्चय कर नम्र स्वर में बोला, "अब तक रुष्ट हो, वीणा? अरे पगली, मांबाप अपने बच्चों के पथप्रदर्शक, संरक्षक, सहायक, मित्र, सहयोगी हों, यह आवश्यक है. पर वे तानाशाह क्यों हों? मनुष्य में गुण, प्रवृत्ति, स्वभाव, रुचि, पसंद सभी उस के जन्म से उत्पन्न होते हैं. उन्हें केवल सही शिक्षा, संस्कार व वातावरण दे कर संवारानिखारा, सदुपयोगी बनाया जा सकता है. ऐसा ही हम भी करेंगे. जो कुछ करने की हमारी अपनी इच्छा नहीं होती, वह हम किसी के भी विवश करने पर नहीं कर सकते.

"मधु पर अपनी अपूर्ण इच्छा थोप कर तुम इसे भविष्य में कुंठित, भ्रमित ही करोगी. इस के स्वाभाविक गुणों का विकास होने दो, ताकि हम तदनुसार इस के लिए साधन व अवसर प्रदान कर सकें." यह कह कर उस ने उंगली से पत्नी का चेहरा उठाया और फिर उस की आंखों में झांकते हुए पूछा, "मेरे जीवन को भूल गईं तुम? वीनू, बच्चे हमारी अपूर्ण इच्छाओं की पूर्ति का साधन मात्र नहीं होते. उन का अपना जीवन होता है. है न?"

वीणा ने सहमति में अपना सिर झुका लिया. ●

जमाना

वैसे तो मेरे हाल पर
हंसता है जमाना,
यह क्या तेरी आंख में
नम देख रहा हूं.

—अख्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लुई ब्रेली मेमोरियल स्कूल

लेख • शिवराम शुक्ल

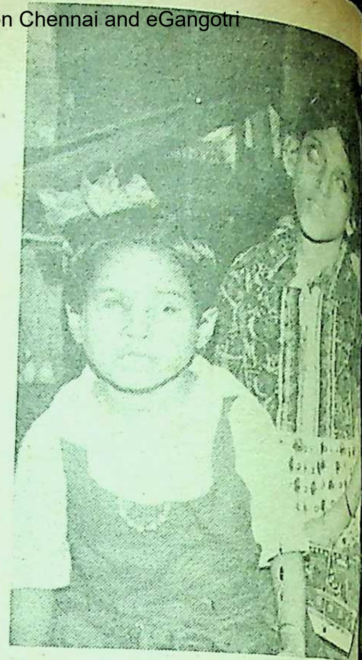

विश्व के पांच करोड़ अधों में से लाख अंधे केवल भारत में और इस में से छः लाख अंधे केवल पश्चि बंगाल में हैं. पशिचमी बंगाल में, अंधों पढ़ना सिखाने व संगीत या अन्य दस्तका आदि का प्रशिक्षण दे कर उन्हें आत्मनि बनाने के उद्देश्य से नौ प्राथमिक विद्याल एक अध्यापक प्रशिक्षण केंद्र (नरेंद्रपु रामकृष्ण मिशन में) स्थापित किया गया इन्हीं में एक प्राथमिक विद्यालय है–लुई ब्रे मेमोरियल स्कूल. वैसे देश में इस प्रकार कुल 150 स्कूल हैं. इन में सब से ज्यादा गुजरात में हैं.

इस स्कूल का नामकरण लुई ब्रेली नाम पर किया गया है. लुई ब्रेली ने दृष्टिही के लिए 'स्पर्श वर्णमाला' (टचिंग अलफाबे शिक्षा प्रणाली का आविष्कार किया 1853 में इस प्रणाली को मान्यता मिल थी. इस प्रणाली से केवल कक्षा आठ तक विधिवत शिक्षा प्राप्त की जा सकती है. इस आगे की शिक्षा सुन कर तथा स्पर्श वर्णमा पर याद कर के प्राप्त की जा सकती है, पर परीक्षा देते समय अपनी कक्षा से छोटी क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

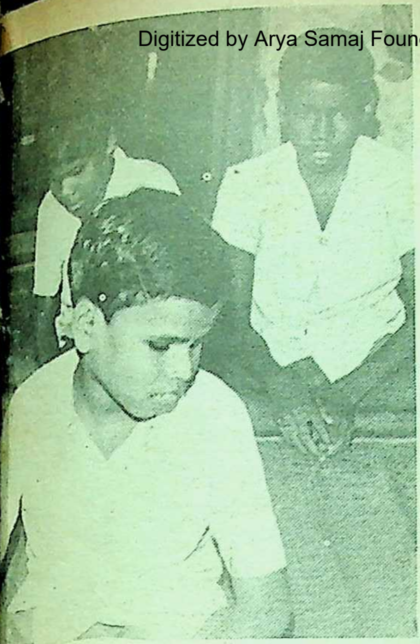

का एक छात्र अपने लेखक (राइटर) के रूप में लेना पड़ता है, जो अंधे व्यक्ति के बोलते रहने पर कापी पर लिखता है.

कलकत्ता में लुई ब्रेली मेमोरियल स्कूल की स्थापना 17 अक्तूबर, 1977 को कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा. मुखर्जी द्वारा की गई थी और पंकजकुमार दास (जो स्वय अंधे हैं) को प्रधानाध्यापक बना कर इस स्कूल की जिम्मेदारी सौंप दी गई थी. गत वर्षों से अनेक कठिनाइयों को सहते हुए पंकजकुमार दास इस जिम्मेदारी को निभा रहे हैं.

इस में प्रवेश पाने के दो आयुवर्ग हैं. पहले में छः से 14 वर्ष की आयु तथा दूसरे में 15 से 25 वर्ष तक की आयु के नेत्रहीन व्यक्ति अपनी रुचि के अनुसार प्रशिक्षण पाते हैं.

पश्चिमी बंगाल में नेत्रहीनों के सब विद्यालयों में मिला कर कुल 550 अंधे व्यक्तियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था है—पर इस लुई ब्रेली स्कूल में कुल 25 अंधे लोगों की पढ़ाई व प्रशिक्षण की व्यवस्था है. आजकल यहां इन 25 नेत्रहीन व्यक्तियों में आठ लड़कियां भी हैं. इस स्कूल में आवास की असुविधा तो है ही, इसे सरकारी आर्थिक सहायता भी प्राप्त नहीं होती जब कि इस प्रकार के अन्य स्कूलों को किसी न किसी रूप में सरकारी आर्थिक सहायता अवश्य मिलती है.

इस स्कूल को, इस में पढ़ते छात्रों के अभिभावक कुछ आर्थिक सहायता देते हैं, बाकी धन ये नेत्रहीन छात्र सड़क पर मांग कर प्राप्त करते हैं, जो किसी भी दृष्टि से उचित प्रतीत नहीं होता. आवास की सुविधा प्राप्त छात्रों के भोजन आदि पर 150 रु. दैनिक का खर्च आता है. इस के अलावा 300 रुपए मासिक किराए का स्कूल का भवन है.

इस स्कूल में भवन के नाम पर मात्र दो कमरे हैं. इन्हीं में पढ़ाई होती है व यंत्र रखे रहते हैं. इन्हीं में छात्र भी रहते हैं. रसोई अलग है. यहां एक प्रधानाध्यापक के अलावा दो अध्यापक व पांच अन्य कर्मचारी हैं. अध्यापकों की अत्यधिक कमी है, क्योंकि एक अध्यापक केवल तीन छात्रों को ही पढ़ा पाता है. प्रधानाचार्य ने इन सारी कठिनाइयों के संबंध में सरकार से पत्रव्यवहार भी किया है, पर अभी तक किसी के कान पर जूं तक नहीं रेंगी है.

अंधे विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से स्थापित यह विद्यालय आज केंद्र व राज्य सरकार की उपेक्षा का शिकार क्यों हो रहा है?

स्पर्श वर्णमाला प्रणाली से पढ़ने में 'ब्रेल स्लेट' तथा अंक गणित के लिए 'टेलर फ्रेम' का प्रयोग होता है. टेलर फ्रेम पर 450 छिद्र होते हैं. इन छिद्रों में धातु के टुकड़े (अक्षर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घुसाए जाते हैं. विलियम टेलर फ्रेम पर अंगरेजी के अलावा सभी भारतीय भाषाओं तथा अंक गणित का अध्ययन किया जाता है. लेकिन आजकल इन के स्थान पर टाइपराइटर की तरह का आधुनिक उपकरण बना लिया गया है.

सरकारी रवैया

इस स्कूल के प्रधानाध्यापक पंकजकुमार दास ने सरकार से स्कूल के भवन, छात्रछात्राओं के अलगअलग रहने की आवास व्यवस्था करने व आर्थिक सहायता देने की मांग की है. जनवरी 1982 में वह तीन व्यक्तियों का एक प्रतिनिधि मंडल बना कर राज्य के मुख्य सचिव से मिल कर उन्हें अपनी कठिनाइयों से अवगत करा चुके हैं. इस से पूर्व वह 1978 से सरकार को पत्र लिख कर अपनी समस्याओं से बराबर अवगत कराते रहे हैं. 5 जुलाई, 1982 को विशेष अधिकारी हिम्मतलाल ने स्कूल का निरीक्षण किया [...] सरकार को अपनी रिपोर्ट पेश कर दी. [...]

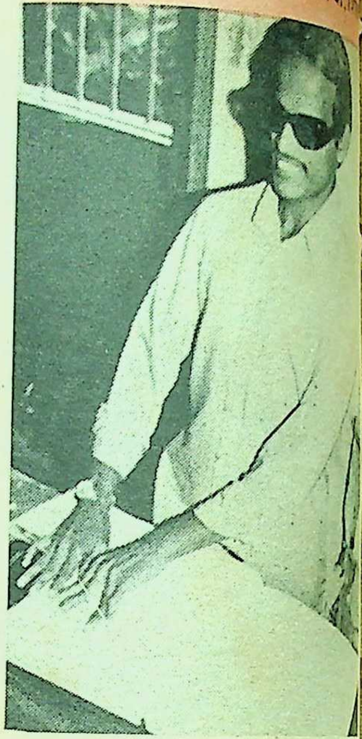

विद्यार्थियों को पढ़ाते हुए अध्यापक विद्याधर मल्लिक (दाएं) व (नीचे) विद्यालय के प्राचार्य पंकजकुमार दास.

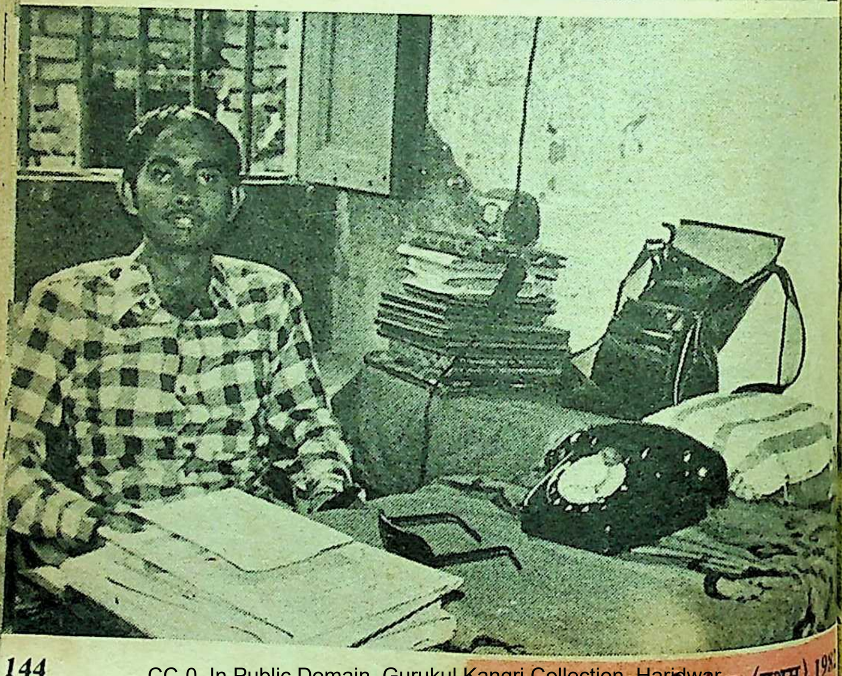

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

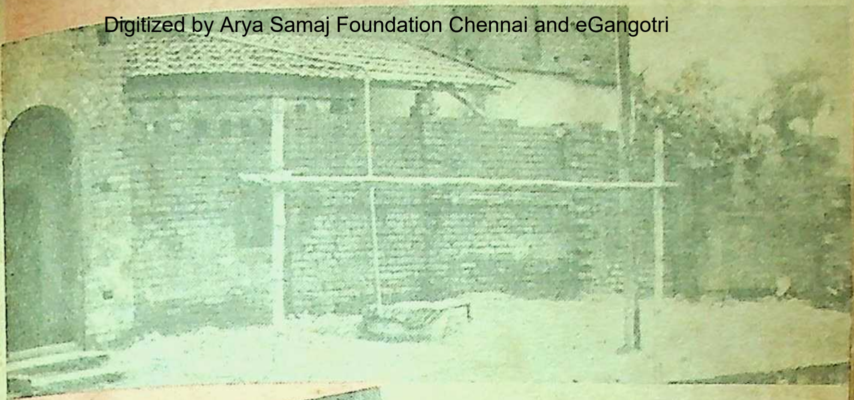

विभाग के तकनीकी निर्देशक ने भी स्कूल का मुआयना कर के अपनी रिपोर्ट विभाग को दे दी, पर अभी तक कहीं से कोई काररवाई नहीं हुई. हां स्कूल की पांचवीं वर्षगांठ पर प्रधान मंत्री व राज्य के राज्यपाल के शुभकामना संदेश अवश्य प्राप्त हुए.

क्या केंद्र और राज्य सरकारों का यह

किराए पर ली गई विद्यालय की टूटी-फूटी इमारत (ऊपर) व (वाएं) मिट्टी के खिलौने बनाते अंधे बच्चे.

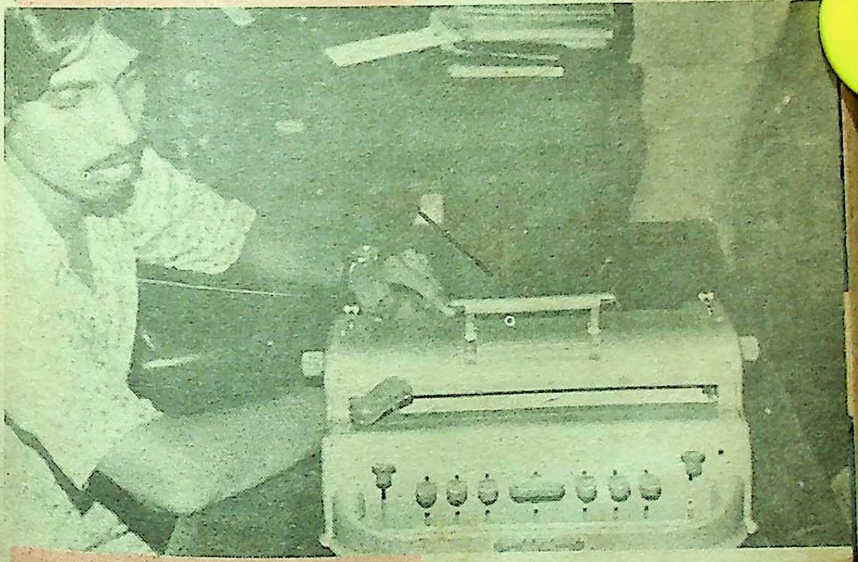

विद्यालय का एक छात्र आधुनिक यंत्र पार्किंग ब्रेलर का उपयोग करते हुए

कर्तव्य नहीं है कि वे ऐसी संस्थाओं की सहायता करें?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(पृष्ठ 23 से आगे)

देनी चाहिए. विश्वासघात करने वालों की आजकल कमी नहीं है. कभी पति पत्नी से विश्वासघात करता है, कभी पत्नी पति से. आखिर हम किसकिस की हत्या करते रहेंगे? हत्या करने से तो कोई समस्या नहीं सुलझती. ऐसा कर के हम अपना व अपने बच्चों का भविष्य अंधकारमय कर देते हैं. मुकदमेबाजी व भागदौड़ में सारा धन पानी की तरह बह जाता है और वाकी जिंदगी जेल की चारदीवारी के अंदर बीत जाती है. थोड़े से संयम से काम लेने पर इस स्थिति से बचा जा सकता था.

असंगत प्रेम भी कम दुखदायी नहीं होता. विवाहित पुरुष या स्त्री से प्रेम, निर्धन का अत्यंत धनी से प्रेम, चचेरी, मौसेरी, फुफेरी व ममेरी बहनों से प्रेम, घरेलू नौकरानी से प्रेम, साली से प्रेम आदि असंगत प्रेम के थोड़े से उदाहरण हैं. इस के संबंध में लोग यह तर्क दे सकते हैं कि प्रेम उचितअनुचित, संगतअसंगत किसी का ध्यान नहीं रखता. यह तो बिना सोचेसमझे कहीं भी, किसी से भी हो सकता है. बहुत से लोग तो यह कहते हैं कि वह उसे पसंद है, अच्छी लगती है या लगता है, इसलिए उसे उस से प्रेम हो गया है. सोचने की बात है कि अगर प्रेम संबंध इसी आधार पर होने लगें तो हम किसकिस से प्रेम करते रहेंगे. छोटे से छोटा निर्णय लेने से पहले हम कई बार सोचते हैं, तब हम बिना सोचेसमझे प्रेम कैसे कर लेते हैं, जब कि वह पूरी जिंदगी को प्रभावित करता है?

इस के अतिरिक्त प्रेम संबंध को लंबे तक खींचना भी दोनों को महंगा पड़ता है. समय के परिवर्तन से कब किस का विचार बदल जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता. इसलिए जो निर्णय करना हो, शीघ्र कर लेना चाहिए. मांबाप की अनुमति व सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रख कर यदि शीघ्र निर्णय ले लिया जाए तो ज्यादा अच्छा रहता है. वर्षों तक रोज मिलना व कोरे वादे करना कोई महत्त्व नहीं रखता. अगर विवाह हो जाए तब तो बहुत ही अच्छा है. लेकिन यदि यह संभव न हो तो दोनों को मिलनाजुलना बिलकुल बंद कर देना चाहिए. अगर वे मांबाप की अनुमति के बिना शादी करने का साहस रखते हों तो उन्हें इस में देर नहीं करनी चाहिए. कोरी भावुकता पर आधारित प्रेम का वास्तविक जीवन से कोई संबंध नहीं है.

वास्तव में हम जिसे प्रेम का नाम देते हैं, वह एक मित्रता के अतिरिक्त कुछ नहीं है. दोनों का एक दूसरे के प्रति आकर्षण स्वाभाविक है. लेकिन ऐसे हर संबंध को प्रेम संबंध का नाम नहीं दिया जा सकता. अगर हम ऐसा करते हैं तो अपने जीवन में निराशा, कटुता व असफलता को खुद निमंत्रण देते हैं. प्रेम वास्तव में एक वरदान है, लेकिन गलत परिस्थितियों में, गलत पात्र से किया गया प्रेम किसी अभिशाप से कम नहीं है. •

वधू आटा गूंधे, वर काटे लकड़ी

सोवियत गणराज्य एस्तोनिया के तार्तु जिले के उलेनुम बस्ती में यह प्रथा है कि नवविवाहित दंपती में से वधू को आटा गूंधना पड़ता है और वर को लकड़ी काटनी पड़ती है ताकि नए परिवार के लिए रोटी तैयार की जा सके. इस प्रथा को धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया जाता है.

इसी प्रकार यहां के सारेम्मा द्वीप के नवविवाहितों के लिए एक नई प्रथा शुरू हुई है. यहां किंगिसेप्प नगर में एक पुराने मध्ययुगीन किले का जीर्णोद्धार किया जा रहा है. जिस के लिए नव दंपति को अब पत्थर की छोटीछोटी ईंटें ला कर पहुंचानी पड़ती है. यह कार्य इस का प्रतीक माना जाता है कि नए परिवार का आधार भी उतना ही सुदृढ़ बन सके जितनी सुदृढ़ इस किले की दीवार है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

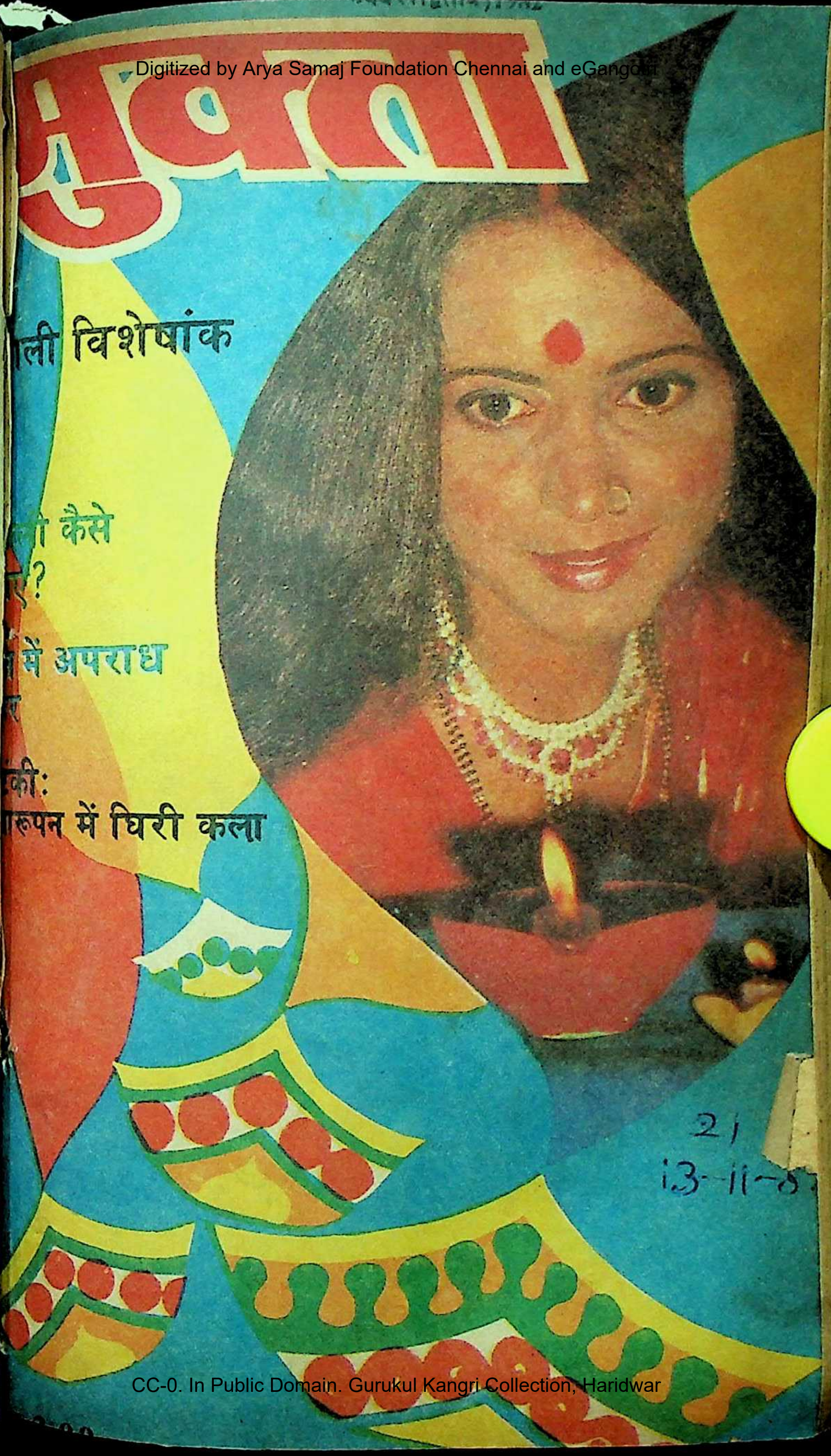

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

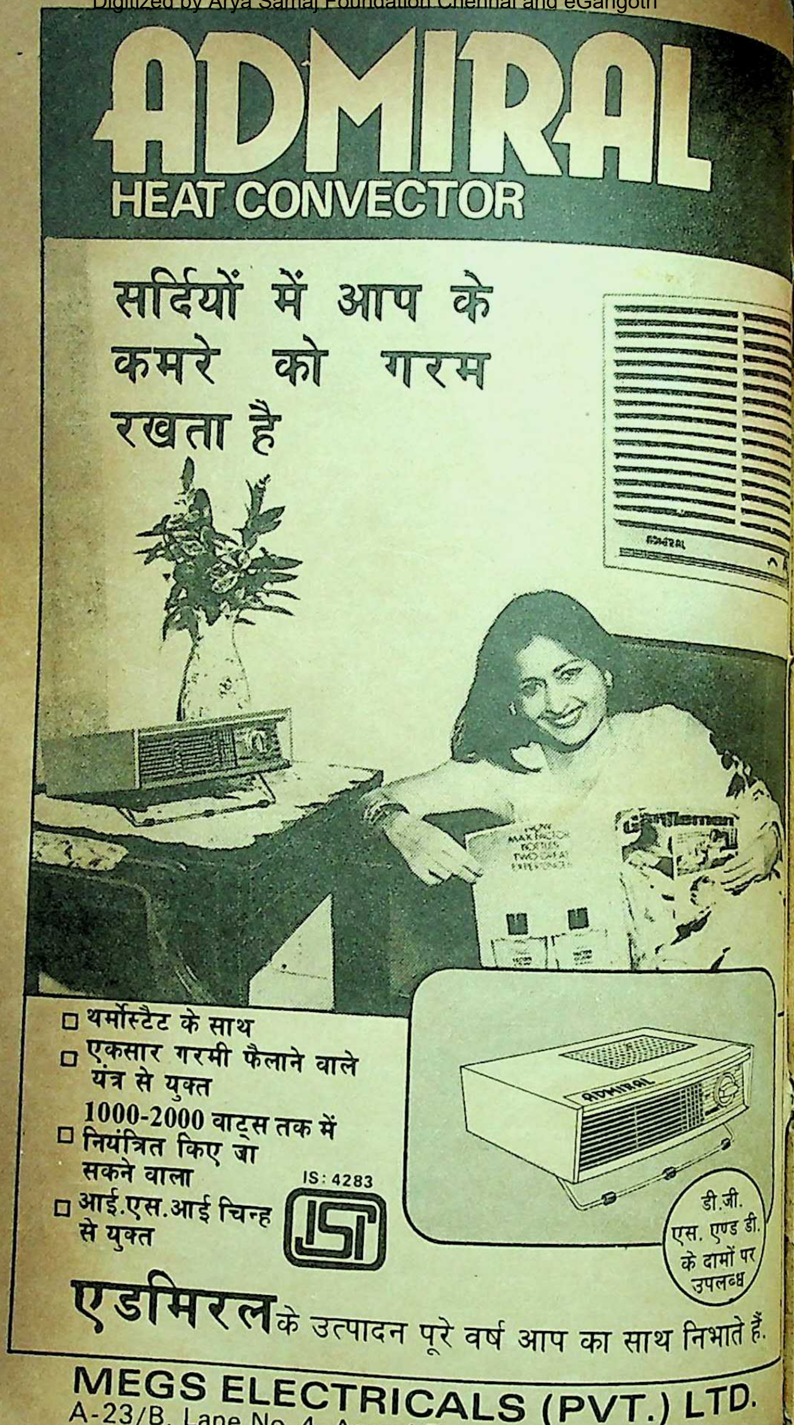

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला · क्रांति · कार्यक्षमता

मुक्ता

दीवाली विशेषांक

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ
नवंबर (द्वितीय) 1982
अंक : 391

लेख

दीवाली कैसे मनाएं	18	कुमार अंचल
चीन में अपराध लहर	22	हवासिंह
खचाखच भरे वायुयान	32	राजकुमार
...यरलैंड	38	अजय सिन्हा
...रिक्ष कार्यक्रमों...	51	दीपक
...ी	58	ब्रजगोपाल
...र की दुकान	77	प्रतिनिधि
...मों की...	86	नवरूप
	99	मानसिंह दीप
...ना	112	मनमोहन
	...28	राकेश रंजन
		जयगोपाल

कथा साहित्य

मन का उजाला	26	पूनम सहाय
पी.एफ. का जन्म	48	संतोषकुमार
रोशनी	70	शिशिरविक्रांत
एक्सीडेंट	104	रश्मि देसाई
बिन उजाले के दीप	124	कुमुद भटनागर
अंधेरा जो छंट गया	132	महावीर काला

कविताएं

ऐसे दीप जलाओ	35	इसाक अश्क
यादों के दीप	47	हरिशचंद्र
श्रम का दीप	83	प्रकाश मनु

स्तंभ

संपादक के नाम	7	96	मैं क्या करूं
मुक्त विचार	14	103	ये लड़के ये लड़कियां
...पने दफ्तर	36	117	शाबाश
	56	118	युवा गतिविधियां
	84	140	दुनिया भर की
...क्षा	150		

आर्निका—विश्व विख्या... के पोर-पोर में समा कर रक्त ... है—और स्वस्थ एवं सघन बालों ...

बालों की क्षतिग्रस्त जड़ें

आप बहुत से शैम्पू आज़मा ... ऐन्टी डैन्ड्रफ और दूसरे अनेक तथा... भी आपके बालों में वैसी सघनता तथा च... बालों का असमय पकना और झड़ना रुक नहीं पाया।

आर्निका सत्व बालों की जड़ों में रक्त का संचार बढ़ाता है

अधिकांश शैम्पू सिर्फ बालों को धोकर साफ कर देते हैं। किन्तु, बालों की जड़ों में रक्त का संचार नहीं बढ़ा पाते।

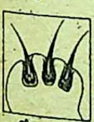
आर्निका की मदद से फिर से होने लगता है स्वस्थ, सतेज और कान्तिमान बालों का विकास

अब आर्निका फूलों के अनोखे सत्व से भरा इमामी शैम्पू सीधे बालों की जड़ों में पहुँच कर रक्त का संचार बढ़ाता है। आपका सपना पूरा होता है-आपके बालों में आ जाती है तरुणाई और कान्ति।

इमामी शैम्पू बालों की सफाई के लिये देता है भरपूर झाग एवं इसकी भीनी-भीनी मोहक सुगन्ध घंटो दिलो-दिमाग पर छायी रहती है।

अब १६० मि०ली० इकॉनोमी पेक में उपलब्ध।

इमामी शैम्पू — बालों की खूबसूरती का नया अन्दाज
यही तो है आर्निका के गुणों का असली राज

adcircle/kc/9-82

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

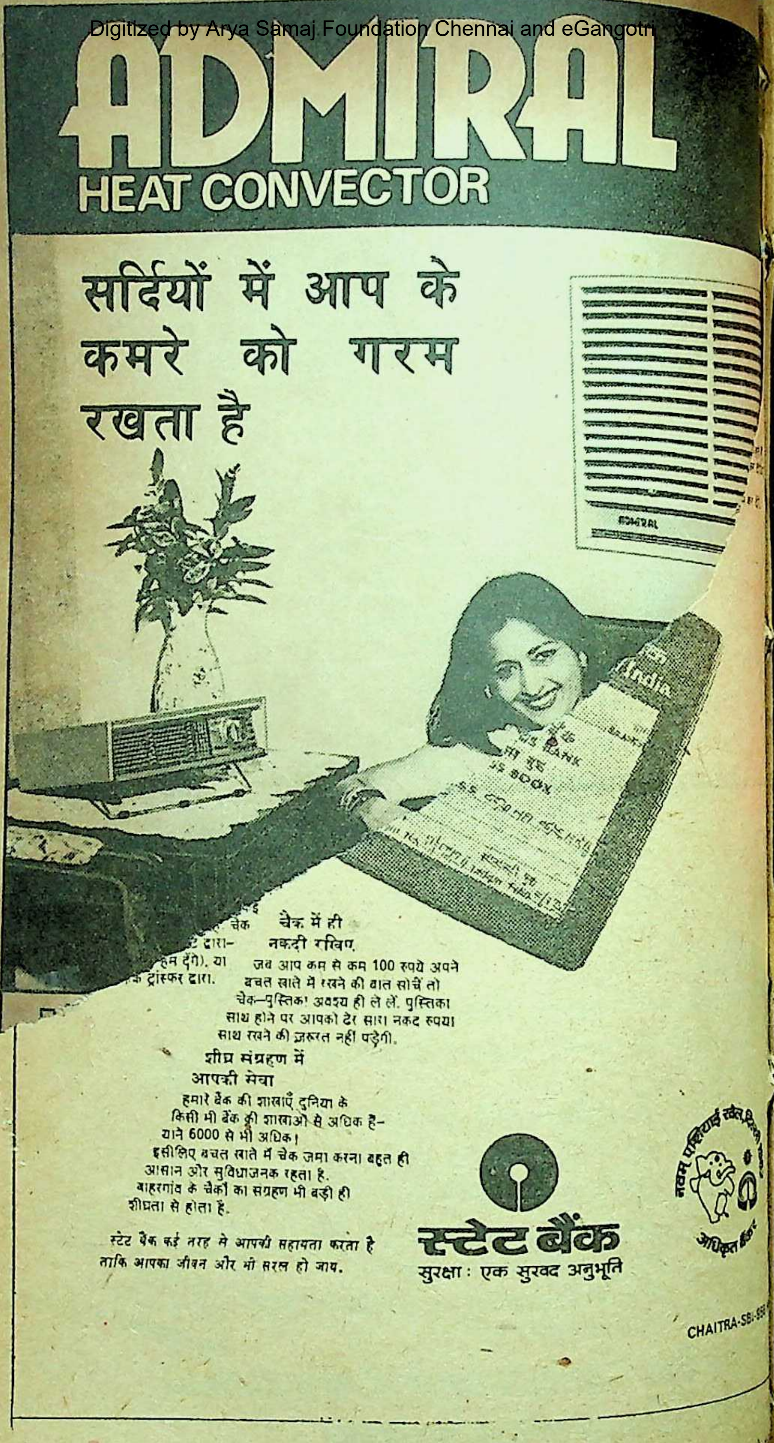

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

दीवाली विशेषांक

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ
नवंबर (द्वितीय) 1982
अंक : 391

लेख

दीवाली कैसे मनाएं	18	कुमार अंचल
चीन में अपराध लहर	22	हवासिंह
खचाखच भरे वायुयान	32	राजकुमार
आयरलैंड	38	अजय सिन्हा
अंतरिक्ष कार्यक्रमों...	51	दीपक
नौटंकी	58	ब्रजगोपाल
हार्डवेयर की दुकान	77	प्रतिनिधि
हिंदी फिल्मों की...	86	नवरूप
विजयेंद्र	99	मानसिंह दीप
पाइप लाइन योजना	112	मनमोहन
पदयात्री	128	राकेश रंजन
ईरान	144	जयगोपाल

कथा साहित्य

मन का उजाला	26	पूनम सहाय
पी.एफ. का जन्म	48	संतोषकुमार
रोशनी	70	शिशिरविक्रांत
एक्सीडेंट	104	रश्मि देसाई
बिन उजाले के दीप	124	कुमुद भटनागर
अंधेरा जो छंट गया	132	महावीर काला

कविताएं

ऐसे दीप जलाओ	35	इसाक अश्क
यादों के दीप	47	हरिशचंद्र
श्रम का दीप	83	प्रकाश मनु

स्तंभ

संपादक के नाम	7	96	मैं क्या करूं
मुक्त विचार	14	103	येलड़केलड़कियां
दास्ताने दफ्तर	36	117	शाबाश
धूपछांव	56	118	युवा गतिविधियां
ये शिक्षक	84	140	दुनिया भर की
खेल समीक्षा	150		

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : इ-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55. दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स.प.प्रा.लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मुक्ता नाम रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है. मुक्ता में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. द्वारा सुरक्षित हैं. © **दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. 1982**

मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपए. एक वर्ष 72.00 रुपए. विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 अमरीका में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 400.00 रुपए. यूरोप में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 325.00 रुपए. **मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान** : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. **व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग** : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001. **बंबई कार्यालय** : 79ए, मित्तल चैंबर्स, नारीमन पाइंट, बंबई-400021. **मद्रास कार्यालय** : अपार्टमेंट नंबर 342, छठी मंजिल, 31 2 ए पैंथन रोड, खलील शिराजी एस्टेट, मद्रास-600008.

मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्किटेक्ट

इन्टीरियर डेकोरेटर

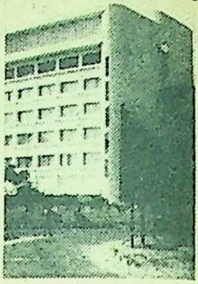

फाइव-स्टार होटल

गृहिणी

सब के सब एक बात से सहमत हैं...

सैनिटरीवेर लेने हों तो पैरीवेर ही लिया जाये!

वर्षों से कायम उच्च गुणवत्ता के कारण पैरीवेर का नाम एक स्थायी ख्याति बन गया है। पैरीवेर के सभी नमूनों पर आइ एस आइ निशान अंकित है और ये सफ़ेद तथा अन्य कई मोहक रंगों में उपलब्ध हैं.

Parryware
VITREOUS

ई. आइ. डी.-पैरी (इंडिया) लि.
सेरामिक्स डिविज़न
डेअर हाउस, मद्रास ३०० ००१

हमारे सभी उत्पादनों की क्वालिटी - सुपरफाइन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम

मेनका गांधी के संबंध में (मुक्त विचार/अक्तूबर/द्वितीय) व्यक्त आप के विचारों से मैं सहमत हूं.

मेनका ने इंदिराजी के विरुद्ध अभियान छेड़ कर उन के खेमे में खलबली मचा दी है. कई राज्यों में तो उसे भारी समर्थन भी प्राप्त हो रहा है.

यह तो उस की विशेषता ही कही जाएगी कि कम उम्र होने के बावजूद वह भारी जनसमर्थन अपनी ओर आकर्षित कर रही है.

इस बारे में इंदिराजी की बौखलाहट से स्वयं उन्हीं की छवि धूमिल होने की आशंका है.

—गुरविंदरसिंह नारंग

*

'वैज्ञानिक विलासिता' (मुक्त विचार/अक्तूबर/प्रथम) में व्यक्त आप के विचारों से मैं सहमत नहीं हूं. यह सही है कि विभिन्न उपग्रहों पर देश ने अरबों रुपए खर्च किए पर उन का देश को विशेष लाभ नहीं मिल सका. लेकिन इस आधार पर उन सभी वैज्ञानिकों को, जो इस कार्य में सहयोगी थे, नौकरी से निकाल देने का सुझाव उचित नहीं है.

जैसा कि आप ने भी लिखा है कि हमारे प्रतिभाशाली वैज्ञानिक अन्य देशों में जा बसते हैं और हमारे पास अपरिपक्व वैज्ञानिक ही रह जाते हैं, तो फिर क्या हम उन्हें नौकरी से निकालने की बात कह कर देश को वैज्ञानिकों से एकदम खाली कर देने का काम नहीं करेंगे.

विज्ञान के क्षेत्र में देश की क्षमता को देखते हुए ही सरकार को कदम आगे बढ़ाने चाहिए तथा प्रतिभाशाली वर्ग के लिए विभिन्न सुविधाएं जुटा कर देश से प्रतिभा पलायन को रोकना चाहिए.

—संयमराज

*

वैज्ञानिक विलासिता के संबंध में जो आप ने लिखा है कि उन सभी वैज्ञानिकों को नौकरी से निकाल देना चाहिए जो इनसेट की असफलता के लिए जिम्मेदार हैं, मैं इस से सहमत नहीं हूं. कारण, इस से अन्य वैज्ञानिकों का मनोबल ही गिरेगा और कोई लाभ नहीं होगा.

किंतु इस का मतलब यह भी नहीं कि हम अपनी संपत्ति को इस तरह वैज्ञानिक विलासिता में अपव्यय होने दें. सरकार को चाहिए कि वैज्ञानिकों को चेतावनी दे और उन्हें यह समझा दे कि जो धनराशि वैज्ञानिक अनुसंधान में खर्च की जाती है वह जनता के गाढ़े खूनपसीने की कमाई है, उस का भरसक अपव्यय नहीं होना चाहिए.

—प्रदीपनारायण भट्टाचार्य

*

शराब के संबंध में आप के विचारों

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग,
मुक्ता,
ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(मुक्त विचार/अक्तूबर/प्रथम) से मैं सहमत हूं.

सही बात है कि शराबसे मरने वालों के साथ हमदर्दी क्यों रखी जाए? उन का मरना तो उन के परिवार वालों एवं देश के लिए राहत की बात होनी चाहिए. जितनी ज्यादा संख्या में शराबी मरेंगे, देश के लिए उतना ही हितकार होगा. कितना अच्छा होता यदि इन शराबियों के परिवारों को दिए गए पैसे उन मजदूरों के सगेसंबंधियों को दिए जाते जो भवन निर्माण या पुल निर्माण के दौरान किसी दुर्घटना में काम करते हुए मर जाते हैं.

—दिवाकर

*

वन्य जीवों के खत्म होने से संबंधित लेख (अक्तूबर/द्वितीय) में लेखक ने सही लिखा है कि विभिन्न संरक्षित वनों, चिड़ियाघरों में जानवरों की स्थिति बहुत ही शोचनीय है. सरकारी कानून सिर्फ आम व्यक्तियों पर ही लागू होते हैं, वन विभाग के उच्च अधिकारियों पर नहीं. कभी ये अधिकारी शिकार करते वक्त रंगे हाथों पकड़े भी जाते हैं तो प्रशासन इन्हें सजा देने के इन्हीं का पक्ष लेता है.

जब तक प्रशासन वनों की देखरेख करने वालों के विरुद्ध कठोर दंड प्रक्रिया नहीं अपनाता है, तब तक हमारे दुर्लभ पशुओं का इसी तरह चोरीछिपे क्रियाकलाप होता रहेगा और उन पशुओं की ये दुर्लभ नसलें खत्म होती रहेंगी.

—मनोज़ आंचलिया

*

लेख 'अंगरेजी आसान बनें' (अक्तूबर/द्वितीय) में जिस वर्णमाला का उल्लेख है, उस से यह नहीं लगता कि इसे अपनाने से अंगरेजी अधिक आसान हो जाएगी. इस लिपि में न केवल मिलतेजुलते वर्ण हैं, बल्कि उन के उच्चारणों में भी काफी समानता और कठिनता है.

—गोवर्धन

*

लेख 'सुबह जल्दी उठने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डालिए' (अक्तूबर/द्वितीय) में इस आदत के बताए गए लाभ एकदम सही और महत्त्वपूर्ण हैं. परंतु लेख में यह नहीं बताया गया कि सुबह का समय दिन के बाकी समय से भिन्न क्यों होता है और उस वक्त उठने से लाभ क्यों होते हैं.

लेखक ने केवल इतना कहा है कि सुबह का समय सुहावना और शांतिपूर्ण होता है, परंतु इस से भी बड़ा कारण है—उगते सूरज की किरणें वायु से मिल कर ओजोन नामक गैस का निर्माण करती हैं, जो मनुष्य के लिए जीवनदायी गैस बताई गई है.

—अंगदकुमार

*

लेख 'भारतीय हाकी की मौत हो गई' (अक्तूबर/प्रथम) में लेखक ने भारतीय हाकी में व्याप्त राजनीतिक हस्तक्षेप, क्षेत्रीयता, फिरकापरस्ती एवं भारतीय खिलाड़ियों तथा अधिकारियों की धर्मांधता एवं चाटुकारिता पर करारा व्यंग्य किया है, लेकिन लेखक ने हाकी खिलाड़ियों की वर्तमान आर्थिक स्थिति पर कतई प्रकाश नहीं डाला.

आज एक हाकी खिलाड़ी को क्रिकेट खिलाड़ी के मुकाबले क्या मिलता है. क्रिकेट में तो खिलाड़ी के लिए ढेर सारा मानसम्मान और पैसा है.

अगर हाकी का स्तर पुनः ऊपर उठना है तो पुराने अनुभवी खिलाड़ियों को ही अधिकारी बनाया जाना चाहिए तथा खिलाड़ियों को ज्यादा से ज्यादा सुविधाएं दी जानी चाहिए. देश के हर क्षेत्र में खिलाड़ियों को उचित अवसर देना चाहिए. तब हम केवल हाकी में ही नहीं, सब खेलों में आगे हो सकेंगे.

—संयम

*

हाकी से संबंधित लेख के विषय में मेरा यह कहना है कि अगर हाकी की मौत हो गई तो उस के नाम पर खाने वाले लोग क्या हैं?

महाब्राह्मण तो मरने के बाद रिश्तेदारों को एक बार में जितना होता है लूट लेते हैं, किंतु डाक्टर? वे मरीज को न तो मरने देते हैं न जीने देते हैं, ताकि उन की लूट का

सर्दी की परेशानी से दिन बरबाद न कीजिये

सर्दी से राहत पाना आसान है

सर का भारीपन, बहती या बन्द नाक, गले में खराश या छाती में जकड़न—ये सभी ऐसे लक्षण हैं जो आपका अच्छा खासा दिन बरबाद कर देते हैं। मगर इनसे राहत पाना कोई मुश्किल नहीं।

खास सर्दी की दवा ही लीजिए

अन्य तकलीफ़ों की तरह सर्दी का इलाज करना काफ़ी नहीं। इसके लिये खास सर्दी की दवा ही लेनी चाहिये जो सर्दी से पीड़ित सभी भागों में एक साथ असर करती हो।

कोल्डरिन ख़ास सर्दी की दवा है

कोल्डरिन सर्दी से निढाल करनेवाले सभी लक्षणों से जल्द आराम दिलाती है। इसके विशेष तत्त्व सर्दी से पीड़ित सभी भागों में एकसाथ असर करते हैं। साथ ही इसमें मिश्रित विटांमिन 'सी' आपके अन्दर सर्दी रोकने की शक्ति पैदा करता है। सर्दी होनेपर उसका इलाज ख़ास सर्दी की दवा से ही कीजिये।

कोल्डरिन

ख़ास सर्दी की दवा

CASBC-64-172 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सिलसिला निरंतर चलता रहे.
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे विचार से तो भारतीय हाकी आज भी मरणासन्न अवस्था में है. खिलाड़ी, हाकी संघ के पदाधिकारी, सभी हस्पताल के डाक्टर, नर्स आदि हैं. सरकार और जनता हाकी के रिश्तेदार हैं. इन को कितना भी लूटो, किसे दर्द होगा?

—राजेंद्रकुमार

*

कहानी 'कर्फ्यू' (अक्तूबर/प्रथम)

मुक्ता
स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता में प्रकाशित होने वालें विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने रोचक अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजने के लिए अलगअलग लिफाफा प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है. एक ही लिफाफे में एक से अधिक स्तंभों में प्रकाशन योग्य सामग्री भेजी जा सकती है.

सामग्री भेजते समय स्पष्ट अथवा सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. साथ ही यह भी लिख कर भेजें कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है. भेजी हुई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ़ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में और रोचकतापूर्ण होनी चाहिए.

सभी स्तंभों के लिए सामग्री एक ही लिफाफे में रख कर इस पते पर भेजें: संपादन विभाग, मुक्ता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

पुलिस के कुकर्मों पर कड़ी चोट करती प्रतीत हुई. जन साधारण अर्थात भोलीभाली जनता पर किए जा रहे अन्याय का जो चित्रण कहानी में बेहतरीन ढंग से किया गया है. आजकल पुलिस रक्षक कम तथा भक्षक अधिक बनी हुई है. इस का मूल कारण सब को पता है. पुलिस कर्मियों को किसी न किसी रूप में राजनीतिक नेताओं का संरक्षण प्राप्त है.

साथ ही 'एक करोड़ बीस लाख का उपहार' व्यंग्य भी सटीक रहा. आज समाज में हर जगह दंभ तथा प्रपंच फैला हुआ है, स्वार्थ ही पूरा करने के लिए चोचलेबाजी व स्वांगों का सहारा लिया जा रहा है. उन में से एक का चित्रण इस व्यंग्य में बखूबी किया गया है.

—प्रकाशनारायण

*

'खेल समीक्षा' (सितंबर/द्वितीय) में यह जान कर कि एशियाई खेलों के लिए प्रशिक्षण पाने वाले खिलाड़ियों को दो रुपए का दैनिक भत्ता मिलता है, अत्यंत दुख हुआ. वर्तमान सरकार 'खेलों में क्या रखा है' कहने वाले भूतपूर्व प्रधान मंत्री चौधरी चरणसिंह की मानसिकता पर चल रही है.

—देव सरकार

*

कहानी 'काले मेघा पानी दे' और 'गुबार देखता रहा' (सितंबर/प्रथम) विशेष रूप से अच्छे लगे. इन दोनों में ऐसे तथ्यों व घटनाओं का वर्णन किया गया है जो आज लोगों के सामने घटित हो रही हैं.

—राजनाथसिंह 'अनजान'

*

फिलस्तीनियों से संबंधित लेख (सितंबर/प्रथम) में तथ्यों का गलत विवरण किया गया है. लेख की अंतिम पंक्ति में कहा गया है—'उधार की बंदूकों, तोपों और खोखले, जोशीले नारों से युद्ध नहीं जीता जाता, युद्ध लड़ा जाता है. अदम्य साहस और देशभक्ति की मर मिटने वाली भावना से.' सच पूछें तो उधार के हथियारों से फिलस्तीनी नहीं, इजराइली लड़ते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक हिटलर, नाजियों और मुसलमानों के अत्याचारों का रोना रोने वाले यहूदी बेरूत की निरपराध जनता (जिन का दोष इजराइल द्वारा खदेड़े गए लाखों फिलस्तीनियों को शरण देना मात्र था) पर 11-11 घंटे तक विनाशकारी कलस्टर और फासफोरस बमों की वर्षा कर के उसे भोजन, जल, चिकित्सा व बिजली जैसी अति आवश्यक सुविधाओं से वंचित कर के किस मानवता का परिचय दे रहे थे? क्या बेगिन हिटलर से कम अत्याचारी हैं?

छः दिन में युद्ध समाप्ति का दावा करने वाले इजराइली रक्षा मंत्री शैरों की सेना को अपने साधारण हथियारों और भूखेप्यासे रह कर ढाई मास तक नाकों चने चबवाने वाले छःसात हजार फिलस्तीनी योद्धाओं ने जिस अदम्य साहस का परिचय दिया है, उस से वियतनाम की याद आ जाती है.

वास्तव में यह युद्ध यहूदियों और मुसलमानों का न हो कर राष्ट्रवादियों और आक्रमणकारियों के बीच है. फिलस्तीनी अपने उसी राष्ट्र के लिए लड़ रहे हैं, जिसे अमरीका और ब्रिटेन की बंदरबांट राजनीति के कारण इजराइल बना दिया है. लाखों फिलस्तीनियों को न केवल वहां से उजाड़ा गया, अपितु उन के देश का नाम तक मिटा दिया गया.

वर्तमान युद्ध से फिलस्तीनियों की प्रतिष्ठा बढ़ी है, और अराफात तो हीरो बन ही गए हैं.

हमारी निष्ठा हर राष्ट्रवादी के प्रति होनी चाहिए न कि आक्रमणकारी के प्रति.

—रा.प्र. श्रीवास्तव

*

लेख 'यासर अराफात इजराइली घेरे में' पढ़ कर एक बात जो स्पष्टतः समझ में आई, वह यह कि लेखक पश्चिमी अखबारों के प्रचार का शिकार हैं. वह लिखते हैं कि 'लेबनानियों के विरोध के कारण फ़िलस्तीनियों को बेरूत छोड़ना पड़ा.' अगर लेखक लेबनानियों के बजाए ईसाइयों (जिन्होंने अपने देश का नमक तो खाया, लेकिन हमेशा बुरा समय पडने पर उसी से

बाल संवारें
रूप निखारें
सिमको
परमानेन्ट
हेयर डाई
सिमको कुदरती काले या ब्राउन रंग में सफेद बालों को रंगने का विश्वसनीय व आसान उपाय है ।
शिकाकाई
केश तेल
मधुर सुगन्धित
लम्बे, चमकीले, और काले बालों के लिये
सिमको हेयर फिक्सर
के निर्माताओं की भेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या दैनिक आहार से आप के शरीर को पूरी शक्ति और पूरा लाभ मिलता है?

सिकारा एकमात्र ऐसा टॉनिक है जिसमें विटामिनों और खनिज पदार्थों के अतिरिक्त १४ जड़ी-बूटियाँ भी हैं। यह मिश्रण आपकी पाचनक्रिया मज़बूत बनाकर शरीर को दैनिक आहार से पौष्टिकता दिलाता है।

सिंकारा

प्रत्येक ऋतु और प्रत्येक आयु में सबके लिए सर्वोत्तम टॉनिक

हमदर्द

HD-5949 CH

चंपक व सरिता की कहानियों का रेडियो प्रसारण

विविध भारती पर 'सरिता' और 'चंपक' की कहानियों के नाट्य रूपांतर का प्रसारण प्रति सप्ताह आकाशवाणी के निम्न केंद्रों से निम्न समयानुसार किया जा रहा है:

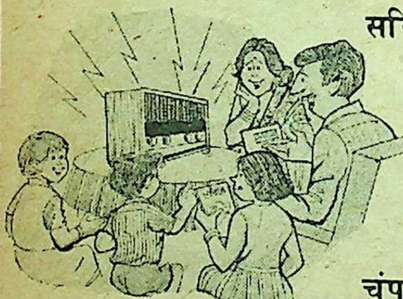

	केंद्र	दिन	रात्रि समय
सरिता -	दिल्ली	मंगलवार	7.45
	बंबई	सोमवार	9.45
	चंडीगढ़	शुक्रवार	9.30
	भोपाल	बुधवार	9.30
	पटना	मंगलवार	9.30
	लखनऊ	मंगलवार	9.30
	जयपुर	मंगलवार	9.30
चंपक -	बंबई	मंगलवार	8.45
	दिल्ली	शुक्रवार	7.45
	पटना	शनिवार	7.45

सुनना न भूलें और बच्चों को भी सुनाना न भूलें.

कार्यक्रम सुनने के बाद निम्न पते पर अपनी राय लिखना न भूलिएगा.

प्रचार एवं प्रसार विभाग, दिल्ली प्रेस,
ई-3, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गद्दारों की ओर इजराइल की जी हुजूरी की.) को लिखते तो सही होता. क्या लेखक महोदय बता सकते हैं कि बेरूत छोड़ते समय फिलस्तीनियों ने अपने भारी हथियार किसे सौंपे. क्या दुश्मन लेबनानियों को?

लेखक के अनुसार फिलस्तीनियों ने इजराइल पर जुल्म ढाए, उस पर किले से गोले बरसाए, जिस से मजबूर हो कर इजराइल को इन आतंकवादियों के खिलाफ 'शांति स्थापना हेतु' काररवाई करनी पड़ी. मैं नहीं समझता कि विश्व के पांच प्रतिशत लोग भी इस बात से सहमत होंगे.

'मौत के मुंह पर खड़े फिलस्तीनी,' 'बेचारे अराफात' आदि वाक्यांशों का प्रयोग कर शायद लेखक फिलस्तीनियों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डाल कर उन के मनोबल को गिराना चाहते हैं. इस सिलसिले में इतना ही कहूंगा कि इस का जवाब स्वयं लेखक ने लेख के अंत में दे दिया है. 'युद्ध लड़ा जाता है अदम्य साहस और देशभक्ति की मर मिटने वाली भावना से.' क्या लेखक अब भी इस बात से इनकार कर सकते हैं कि फिलस्तीनियों की सब से बड़ी ताकत, साहस और कुरबानी की यही भावना है.

इसी ताकत के भय से इजराइल, जो सिर्फ दो दिन (6 से 8 जून) में लेबनान के कई शहरों को रौंदता हुआ कई सौ किलोमीटर भीतर घुस आया था. पश्चिमी बेरूत में उसे लगातार छः सप्ताह तक घेरे रहने, स्थानीय ईसाइयों का खुला समर्थन होने, बिजली, पानी की लाइनें काट देने, डाक्टरी सुविधा न लेनेदेने तथा आकाश से दिनरात बमवर्षा करने के बावजूद केवल पांचसात किलोमीटर ही अंदर घुस सका. **—अब्दुल हलीम खान**

मुक्ता के लेखक

राकेश रंजन

इस अंक में प्रकाशित भेंटवार्ता 'विश्व पदयात्री युवक से भेंट' के लेखक राकेश रंजन मूलतः पत्रकार हैं. आप सामाजिक और राजनीतिक विषयों को ही अपने लेखन का आधार बनाते हैं.

रश्मि देसाई

इस अंक में प्रकाशित कहानी 'एक्सीडेंट' की लेखिका रश्मि देसाई हैं. आप हिंदी के अतिरिक्त गुजराती और मराठी भाषाओं की भी जानकार हैं. लेखन के साथसाथ संगीत में भी आप की रुचि है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्त विचार

अकालियों से कैसा समझौता?

इंदिरा सरकार अकालियों की मांगों के आगे झुकती नजर आ रही है. इन पंक्तियों के लिखे जाने के समय कहा जा रहा था कि इंदिराजी के प्रतिनिधि स्वर्णसिंह का अकाली नेताओं से लगभग समझौता हो गया है, पर समझौते की शर्तें अभी प्रकाशित नहीं की गईं थीं.

असम की तरह अकाली समस्या उलझ न जाए, इस के लिए कदम उठाना आवश्यक है. पर इस का यह मतलब हरगिज नहीं कि केंद्र या राज्य सरकार अकाली मांगों के सामने हथियार डाल दे. असम में आंदोलनकारियों की मांग तर्कपूर्ण है, क्योंकि वहां विदेशी नागरिक घुसपैठ कर के आ गए हैं. उन्हें घुसने देना ही सरकार की गलती थी और अब नागरिकता तक दे देना और भी बड़ी गलती होगी. इस गलती के विरुद्ध आंदोलन के औचित्य को समझा जा सकता है.

लेकिन पंजाब में ऐसी कोई स्थिति नहीं है. पंजाब में सिख अपनी हठधर्मी की राजनीति अपना रहे हैं और धर्म की आड़ में नए राष्ट्र की मांग कर रहे हैं. अपने राज्य में बहुसंख्या में होने के कारण भी राज सिख लोग ही कर रहे हैं. यह बात दूसरी है कि इस बार धार्मिक नेताओं के स्थान पर इंदिरा कांग्रेस के सिख चुन कर आए थे.

पंजाब देश का सब से अधिक अमीर राज्य है. वहां कोई ऐसे कर नहीं हैं जो और राज्यों को न देने पड़ते हों. उन्हें केंद्रीय कोष में से भी अच्छा खासा पैसा मिलता है.

पंजाब के सिखों के साथ नौकरियों में भेदभाव भी नहीं है. उन के भाईबंद सारे देश में फैले हुए हैं, जहां उन्हें इज्जत के साथ पूरी तरह कमाई करने के अवसर प्राप्त हैं. वास्तव में वे जहां भी हैं, ठाठ से पैसा कमा रहे हैं.

धर्म के नाम पर भी उन्हें खुली छूट है. वे कहीं भी जमीन पर कब्जा कर के भव्य गुरुद्वारा बना सकते हैं. उन्हें लाउडस्पीकरों पर रातदिन गुरुवाणी का प्रचार करने से भी कोई नहीं रोकता, चाहे इस से आसपास की जनता को कितनी ही परेशानी क्यों न उठानी पड़े. उन के गुरुद्वारों में पुलिस व सरकार के अनुसार मुजरिमों को पनाह दी जाती है जिस से कानून व व्यवस्था में बहुत बाधा पड़ती है.

आम हिंदू उन्हें न केवल अपने बराबर समझता है बल्कि ज्यादा इज्जत ही देता है.

मुक्ता के पाठकों को दीवाली की शुभकामनाएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेना में सिखों [illegible] को बचपन से ही पाठ्य पुस्तकों में पढ़ा दी जाती हैं.

जब उन के पास इतना सब कुछ है जितना एक देश के अन्य किसी नागरिक से कुछ ज्यादा ही है तो वे और क्या मांग कर सकते हैं? और यदि वे कुछ और चाहते हैं तो केंद्र सरकार आखिर उन्हें क्या दे सकती है?

सिख नेताओं की मांगों का एक ही मतलब है अलग राष्ट्र, देश का विभाजन. यह ऐसी मांग है जिस के लिए सारे सिख भी तैयार न होंगे. एक बड़े देश में रह कर व्यवसाय करने के जो अवसर हैं, वे छोटे देश में कभी नहीं मिल सकते. सिखों को तो सारा भारत भी छोटा पड़ रहा है तभी तो वे इंगलैंड, अमरीका, कनाडा आदि जा रहे हैं.

मोर्चों, बमों, हत्याओं से डर कर यदि इंदिरा सरकार क्षेत्रीय आंदोलन को सुलझाने के नाम पर अकालियों की बेबुनियाद मांगों को मानेगी तो यह गलत ही न होगा, बल्कि राष्ट्रद्रोह भी होगा.

असम चुनाव कैसे हों?

असम में बंगलादेश से आए विदेशी नागरिकों की समस्या को सुलझाए बिना ही केंद्रीय सरकार अब वहां चुनाव कराना चाहती है. असम के आंदोलनकारियों से कईकई बार वार्ताएं करने के बाद भी सत्तारूढ़ पार्टी मुसलिम मतदाताओं को नाराज करने और वोट खोने का जोखिम नहीं लेना चाहती और यथास्थिति बनाए रखने के पक्ष में है.

कुछ समय तो केंद्र सरकार यही सोचती रही कि जैसे देश की अन्य समस्याएं टलटला कर अपने आप फीकी पड़ जाती हैं और लोग उन के साथ जीने के आदी हो जाते हैं, उसी प्रकार असम की समस्या भी अपने आप खत्म हो जाएगी.

कई बार तो इस तरह के हथकंडों से समस्या सुलझ जाती है, पर इस बार नहीं सुलझी और असम की स्थिति [illegible] [illegible] हुई सी है.

अब यदि श्रीमती इंदिरा गांधी असम में चुनाव कराएंगी तो निश्चय ही वहां खूनखराबा होगा जो अब तक नहीं हुआ. उस में कौन स्वाहा होगा, इस का पूर्वानुमान लगाना संभव नहीं है और इस में भी संदेह नहीं है कि यदि एक बार येनकेन प्रकारेण चुनाव करा ही लिए गए तो सरकार फिर कभी असम के आंदोलनकारियों की बात न सुनेगी और बंगलादेश से भारी संख्या में नागरिक भारत के विभिन्न प्रदेशों में आते रहेंगे.

वैसे असमी आंदोलन के नेताओं की प्रशंसा करनी होगी कि उन्होंने इतने लंबे अरसे तक ऐसा आंदोलन चलाया जो सरकार को तो हिला गया, पर खूनखराबा रत्ती भर भी नहीं हुआ.

पहले मार फिर मरहम

पिछले कुछ समय से सर्वोच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश और सरकार द्वारा कानूनी सहायता के लिए जोरशोर से ढिंढोरा पीटा जा रहा है. कानूनी सहायता कैसे दी जाए, इस बारे में राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सभाएं की जा रही हैं और गरीब, निस्सहाय आदमी के अधिकारों की चर्चा की जा रही है.

इस में कोई संदेह नहीं कि आज लाखों गरीब व निस्सहाय व्यक्ति कानूनी सहायता न मिलने के कारण ही अपने वाजिब अधिकार खो चुके हैं. कानूनी कार्रवाई न केवल पेचीदा है, बेहद महंगी भी है. गरीब व्यक्ति अपनी आय से अदालती खर्च नहीं उठा सकता. अदालती शुल्क ही नहीं, वकीलों की फीस, टाइपिंग का खर्च, पेशकारों की रिश्वत आदि देने के बाद यदि कानूनी अधिकार मिलता भी है तो उस की कीमत एक चौथाई रह जाती है.

कहने को तो संविधान ने हर व्यक्ति को मौलिक अधिकार दे रखे हैं. संपत्ति के विवादों के लिए स्पष्ट कानून हैं. थोड़ीथोड़ी दूरी पर अदालतें हैं, पर जब जेब में पैसा ही न हो तो इन सब का क्या लाभ?

इसी बात को ले कर सरकार व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायाधीश चिंतित दिखाई दे रहे हैं, पर वास्तविकता यह है कि यह चिंता एक बनावटी मुखौटा है.

आज यदि आम ,गरीब व निस्सहाय व्यक्ति के अधिकार कोई छीनता है तो उस के लिए सब से ज्यादा जिम्मेदार सरकार ही है. और यदि इन अधिकारों को प्राप्त करने में कोई सब से बड़ी अड़चन है तो वह अदालती कारवाई ही है. इन दोनों की ओर से ऐसी स्थिति पैदा की जा रही है, जिस से न्याय अधिकाधिक दुर्लभ और महंगा होता जा रहा है.

आम व्यक्ति के अधिकारों का सब से अधिक हनन सरकार ही करती है. भूमि अधिग्रहण का मामला हो या बिजली देने का, बिक्री कर का सवाल हो या पटरी पर बैठने के लाइसेंस का, सरकार और उस के कर्मचारी ही सब से अधिक कानून तोड़ते हैं. जहां आप ने अधिकारी की मुट्ठी गरम नहीं की कि वह चट से चालान कर देता है और आप हजारों लाखों के देनदार हो जाते हैं.

यदि नागरिक अपने अधिकार के हनन के विरुद्ध वरिष्ठ अधिकारी के पास फरियाद करता है तो उसे रटारटाया उत्तर दे दिया जाता है कि जो कारवाई की गई, वह उचित थी. हार कर या तो नागरिक चुप बैठ जाता है या अदालत के दरवाजे खटखटाता है.

इसी कारण अदालतों में अब अधिकांश मामले सरकार या सरकारी विभागों से संबद्ध होते हैं.

कुछ मामले सरकार के अव्यावहारिक कानूनों के कारण भी हो जाते हैं. किराया कानूनों और श्रम कानूनों से समाज सुधार के नाम पर सरकार ने जनता को जिस तरह की अदालती उलझनों में डाल दिया है, उसे भुक्तभोगी ही समझ पाते हैं. यदि ये कानून सरल और व्यावहारिक होते तो न इतने मामले अदालतों में जाते, न कानूनी सहायता की गुहार लगती.

केंद्र व राज्य सरकारें हर साल सैकड़ों कानून, अधिनियम, नियम बनाती हैं, जिन का खमियाजा आम नागरिक को ही भुगतना पड़ता है.

अधिकार प्राप्त करने में दूसरा बड़ा रोड़ा अदालतें स्वयं हैं. निस्संदेह अदालतों के कारण ही नागरिकों के अधिकार सुरक्षित हैं पर अदालती कारवाई इतनी धीमी, भ्रष्टाचारपूर्ण व पेचीदा हो गई है कि इन अधिकारों की सुरक्षा अपने आप में खतरे में पड़ गई है.

अदालतों में न्यायाधीशों की नाक के नीचे पेशकार, टाइपिस्ट, चपरासी, रिश्वत लेते हैं, पर न्यायाधीश चाह कर भी उन्हें रोक नहीं पाते. वकील बातबेबात मामले लटकाते हैं और न्यायाधीश उन पर स्वीकृति की मुहर लगा देते हैं. लोग बेबुनियाद मामले अदालतों में ले जा कर दूसरे पक्ष व अदालत दोनों का समय व पैसा नष्ट करते हैं, पर न्यायाधीश चुप रहते हैं.

फिर अभी तक यह भी स्पष्ट नहीं हुआ है कि सहायता किस प्रकार दी जाएगी अदालती फीस माफ कर के या मुफ्त का वकील दे कर? अदालती फीस मुकदमे की सब से कम खर्च वाली मद होती है. मुफ्त का वकील पैरवी क्यों करेगा और क्या वह पैरवी उतनी ही प्रभावशाली होगी जितनी विपक्ष के पैसा लिए हुए वकील द्वारा की जाएगी?

हाय, मार डाला...

दिल्ली में हाल ही में दो और युवतियों की अस्वाभाविक मौतें हुईं. उन में एक 22 वर्ष की थी, दूसरी 23 वर्ष की. पर ये दहेज के मामले में असंतोष के कारण जलाई गई बहुएं नहीं थीं, बल्कि इन्होंने स्वयं गुस्से में आ कर आत्महत्याएं कर ली थीं.

इन में से एक युवती ने अपने ऊपर मिट्टी का तेल छिड़क कर इस कारण आग लगा ली थी कि उस के मातापिता किसी संबंधी के घर जाते समय उसे अपने साथ नहीं ले गए थे. दूसरी युवती एक सरकारी हस्पताल में काम करती थी और होस्टल में रहती थी. उस ने होस्टल की छत से कूद कर केवल इसलिए जान दे दी कि सुदूर विदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहरीन में रह रहे उस के पिता ने दूसरी शादी कर ली थी.

ये दोनों मामले स्पष्ट करते हैं कि युवतियां कितने छोटेछोटे मामलों में आत्महत्याएं कर लेती हैं. यदि इन दोनों युवतियों ने विवाह के बाद ऐसे ही किसी कारण से आत्महत्या की होती तो तथाकथित नारी रक्षा समितियों को होहल्ला मचाने का स्वर्णिम अवसर मिल जाता.

वे उन की ससुराल वालों की नाक में दम कर देतीं. पुलिस और अदालत पर दबाव डालतीं कि पति, सास व ससुर को बिना सजा सुनाए ही जेल में ठूंस दिया जाए. तुनकमिजाजी की आत्महत्या को दहेज के कारण हत्या का स्वरूप दे दिया जाता.

औरतों द्वारा छोटेछोटे मामलों पर आत्महत्या की धमकी देना या आत्महत्या कर लेना कोई नई बात नहीं है. पहले जब मिट्टी का तेल उपलब्ध न होता था तो औरतें गहनों, कपड़ों या सास ननद के झगड़े को ले कर कुएं में कूदने की धमकियां देती थीं. अब कुएं नहीं रहे हैं, अतः मिट्टी का तेल ही आत्महत्या का एकमात्र तरीका रह गया है.

खैर, प्रश्न यह है कि अब नारी रक्षा समितियां इन दोनों युवतियों के मातापिताओं के घरों के सामने उतने ही जोश खरोश के साथ धरना क्यों नहीं देतीं? क्यों नहीं वे उन को गिरफ्तार कराने की मांग करतीं?

बीमार उद्योगों को मरने दो

लगता है बीमार उद्योगों के सरकारीकरण की गलत नीति को अब सत्ताधारियों ने छोड़ दिया है. पिछले 10-15 सालों में केंद्र व राज्य सरकारों ने सैकड़ों ऐसे छोटेबड़े उद्योगों का सरकारीकरण किया है जो किसी न किसी कारण से बंद हो गए थे और जिन के मजदूर बेकार होने लगे थे.

चीनी, कपड़ा, भारी मशीनरी, चमड़े आदि के बहुत से उद्योग आज इसी गलतनीति के कारण सरकार का सिरदर्द बने हुए हैं. क्योंकि न तो उन का उत्पादन ही ठीक है और न ही वे कोई मुनाफा कमा पा रहे हैं.

बीमार उद्योग केवल प्रबंधकों की गलतियों से ही बीमार नहीं होता, इस के लिए आमतौर पर ऊपर से नीचे तक के सभी कर्मचारी जिम्मेदार होते हैं. अच्छेखासे मुनाफा कमाने वाले उद्योग भी कर्मचारियों की अनुशासनहीनता, रोजरोज की हड़तालों और आर्थिक मंदी से नुकसान देना शुरू कर देते हैं. आज के कानूनों के अनुसार आप नई मशीन लगा सकते हैं, नई पूंजी लगा सकते हैं पर पुराने कर्मचारी के स्थान पर नए कर्मचारी नहीं लगा सकते. इसी लिए नियोजकों के पास उद्योग को बंद करने के अलावा कोई चारा नहीं रहता.

जब से सरकार ने इस तरह के बंद उद्योगों का सरकारीकरण शुरू किया, यूनियन के नेताओं को एक और हथियार मिल गया. जिन उद्योगों में अच्छे वेतन मिल रहे थे और अच्छे चंदे वसूल होते रहे, वहां नेताओं ने हड़तालों से नुकसान की स्थिति जानबूझ कर पैदा कर दी ताकि नियोजक भाग जाएं और सरकार उद्योग को अपने अधिकारों में कर ले..

अधिग्रहण के बाद यूनियन नेताओं की भी मौज और मजदूरों की भी. काम न के बराबर करो और पैसा चार गुना लो. हानि को जनता के करों से पूरा कर लिया जाएगा.

श्रीमती इंदिरा गांधी ने तो कहा है कि नुकसान देने वाले उद्योगों के मजदूर अधिग्रहण के बाद वे मांगें रखते हैं जो वे पहले सोच भी नहीं सकते थे.

उद्योग की बीमारी के लिए जब नियोजक को दंड मिलता है तो मजदूर को भी मिलना चाहिए. इसलिए होना तो यह चाहिए कि बीमार उद्योग बिलकुल बंद कर दिया जाए और सारे कर्मचारियों को निकाल दिया जाए ताकि वे बराबर का दंड भोगें.

आशा है अब सरकार इसी नीति को पूर्ण रूप से अपनाएगी ताकि किसी उद्योग की हानि के साथ उस में काम करने वाले मजदूरों की भी हानि होने लगे. जब कि वे मुनाफे में भागीदार होते हैं तो हानि में क्यों नहीं? •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीवाल

लेख • कुमार अंचल

दीवाली का नाम सुनते ही कल्पना में हजारों दीप एक साथ जल उठते हैं. चारों ओर उजाला ही उजाला नजर आने लगता है. यहां तक कि मन का अंधेरा भी दूर होता हुआ सा लगता है. हृदय में एक नई उमंग व आशा का संचार होने लगता है. खुशियों के दीपक में उमंग की रोशनी

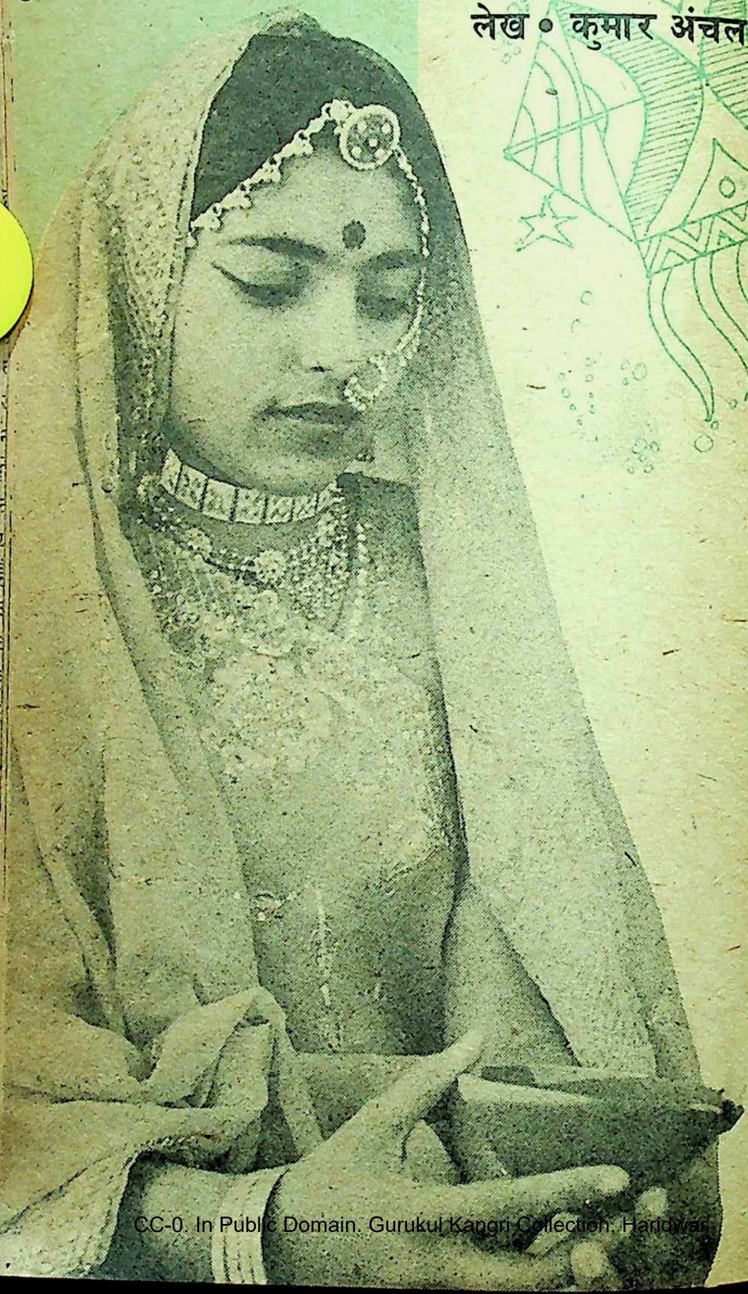

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे मनाएं ?

झिलमिलाने लगती है.

लगभग पूरे भारत में दीवाली बड़े जोश व उत्साह के साथ मनाई जाती है. घरों में रौनक बढ़ जाती है. दीवाली से कुछ दिन पहले से ही लोग इस की तैयारियां शुरू कर देते हैं. घर की सफाई होने लगती है, कपड़े खरीदे जाने लगते हैं और विशेष समारोहों के आयोजन की तैयारियां शुरू हो जाती हैं. वातावरण में एक नया उत्साह नजर आने लगता है.

दीवाली जहां उजाले का संदेश लाती है, वहीं सीमित आय वाले लोगों को उन की मजबूरी का एहसास भी कराती है. इस से उन का उत्साह फीका पड़ने लगता है. दीवाली की खुशियों पर महंगाई का ग्रहण सा लगता हुआ प्रतीत होता है.

दीवाली इस प्रकार भी मनाई जा सकती है कि आगेपीछे आर्थिक संकट भी उत्पन्न न हो और ज्यादा खुशियां व उमंगें भी हासिल हों, पर कैसे?

लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी सीमित आय को न देखते हुए अपने बजट से ज्यादा खर्च कर देते हैं और कर्ज की लपेट में आ जाते हैं. दीवाली के बाद उन्हें इन खुशियों की भारी कीमत चुकानी पड़ती है. इसलिए बेहतर है कि आप किसी भी हालत में अपने बजट से अधिक खर्च न करें. आप अपने बजट में ही दीवाली मनाएं ताकि कर्ज का दंश आप को मानसिक रूप से परेशान न करे.

इन पंक्तियों के लेखक के एक परिचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हैं. वह दीवाली के दिन तेल के सिर्फ पांच या सात दीपक जलाने के बाद कुछ मोमबत्तियां जलाते हैं. बच्चों के लिए थोड़ी मिठाई, दोचार फुलझड़ियां और दोचार ही पटाखे लाते हैं. जहां सारा महल्ला शान से खर्च करता है, वहां वह और उन का परिवार बस इतने से ही संतुष्ट रहता है. उन के चेहरे पर वही चमक रहती है, जो अन्य लोगों के चेहरों पर.

अपव्यय से बचें

एक बार दीवाली के अवसर पर लेखक ने उन से कहा, ''अरे भाई, इतनी कंजूसी भी क्या, बच्चों को कुछ और पटाखे ला कर दीजिए न. सारे महल्ले के बच्चे जोरशोर से पटाखे छोड़ रहे हैं, ये भी उन की तरह आनंद उठाएं.

उन्होंने जवाब दिया, ''भाई साहब, मैं आप को अपनी बात बताता हूं. पहले मेरी आमदनी बहुत अच्छी थी और मैं दीवाली पर काफी पैसे खर्च कर डालता था. सैकड़ों रुपए सिर्फ घर की सजावट पर ही खर्च कर देता था. बच्चों के लिए पटाखों पर भी पैसा पानी की तरह बहाता था.

''लेकिन धीरेधीरे वक्त ने पलटा खाया और मेरी आमदनी कम होती चली गई. स्थिति यहां तक बिगड़ी कि घर का खर्च चलाना भी मुशकिल हो गया.

''इस अभाव की स्थिति में जो पहली दीवाली आई, उस में मैं बहुत परेशान और उदास था. लेकिन उस दीवाली में मैं ने एक बात बड़ी शिद्दत से महसूस की और वह यह कि कुछ लोग कम पैसे खर्च कर के भी उसी खुशी और उत्साह से दीवाली मना रहे थे, जिस खुशी से मैं हजारों रुपए खर्च कर के मनाता था. यह देख कर मैं ने सोचा कि खुशी रुपयों से नहीं खरीदी जाती, बल्कि दिल के अंदर से पैदा होती है. यह विचार आते ही मैं ने सारी उदासी उतार फेंकी. उस के बाद जो दीवाली आई, उस में मैं ने खुद घर की सजावट की, कुछ दीपक जलाए और बच्चों के साथ दोचार पटाखे छोड़े. फिर अपने परिचितों व दोस्तों से दिल खोल कर मिला. सच मानिए

खुशी रुपए से नहीं खरीदी जाती बल्कि दिल के अंदर से पैदा होती है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

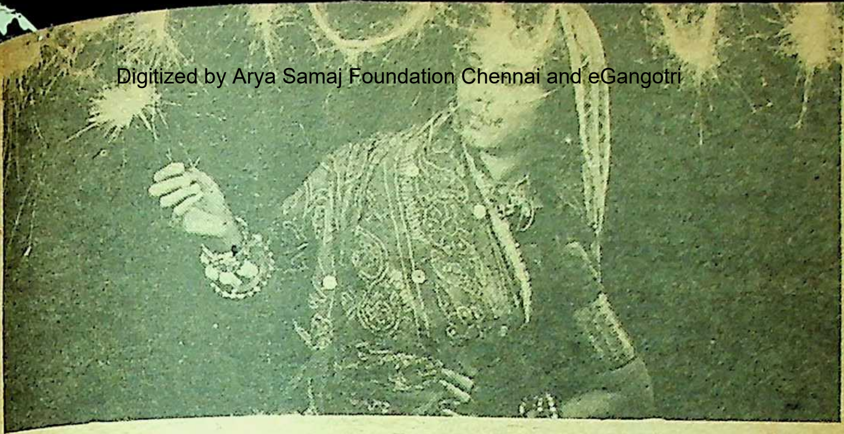

दीवाली पर हलके पटाखे व फुलझड़ियां छोड़ कर अपनी खुशी का इजहार अवश्य करना चाहिए.

मुझे इस से बड़ी शांति मिली. इस का सब से बड़ा कारण यह था कि पास में अधिक पैसे न होने के कारण जब मैं ने त्योहार पर अपव्यय ही नहीं किया तो बाद में मुझे दुखी भी नहीं होना पड़ा. कभीकभी तो मैं यह भी सोचता हूं कि यदि मैं ने दीवाली के पिछले मौकों पर अपव्यय न किया होता और वे पैसे बचे होते तो आज मेरी परेशानी के दिनों में काम आते."

उन का कहना सच था. दीवाली पर लोग व्यर्थ के आडंबरों पर पैसा पानी की तरह बहा देते हैं.

बंबई और दिल्ली जैसे महानगरों में कुछ लोग सैकड़ों ही नहीं हजारों रुपए तक के पटाखे छोड़ डालते हैं. जिधर भी जाइए रात भर पटाखों की आवाजें आती रहती हैं. लगता है जैसे पैसे का कोई मूल्य ही न हो.

पटाखों के संबंध में एक और महत्त्वपूर्ण व गंभीर बात यह है कि ये कभीकभी जानलेवा भी साबित होते हैं. हर साल दीवाली के बाद कुछ दिनों तक इस तरह की खबरें प्रकाशित होती रहती हैं कि पटाखों की वजह से अमुक जगह आग लग गई, अमुक व्यक्ति घायल हो गया आदि.

रश्मि नाम की एक आठ वर्षीया बच्ची को इन्हीं पटाखों के कारण अपने हाथ की चार उंगलियों से हाथ धोना पड़ा. रश्मि ने बम छोड़ने के लिए दियासलाई की जलती तीली बम से लगाई और उस के पास ही खड़ी रही जिस से उस की चार उंगलियां इस बुरी तरह जख्मी हो गईं कि बाद में उन्हें काटना जरूरी हो गया.

इस तरह की घटनाओं को देखते हुए बड़े लोगों को इस अवसर पर अपने बच्चों का विशेष ध्यान रखना चाहिए.

ये पटाखे किसी भी हालत में उपयोगी नहीं हैं. लेकिन इस का मतलब यह नहीं कि पटाखे बिलकुल छोड़े ही न जाएं. हां, कुछ हलके पटाखे व फुलझड़ियां छोड़ कर अपनी खुशियों का इजहार अवश्य करना चाहिए.

कुछ पत्नियां इस अवसर पर अपने पति से उपहार चाहती हैं. कुछ तो अपना अधिकार समझती हैं कि ऐसे अवसर पर एक अच्छी साड़ी मिलनी ही चाहिए.

पत्नी घर की आर्थिक स्थिति अच्छी तरह समझती है. यदि पति के पास अतिरिक्त पैसा नहीं है तो पत्नी को इस के लिए जोर नहीं देना चाहिए, नहीं तो पति उस की इच्छा को पूरा करने के लिए इधरउधर से कर्ज लेने के लिए मजबूर होगा. इसलिए बेहतर है कि ऐसे मौके पर आर्थिक स्थिति को देख कर ही कोई फरमाइश करें और बिना तनाव के प्रसन्नचित्त से दीवाली का आनंद उठाएं.

दीवाली एक उल्लासमय पर्व है. आप यदि समझदारी से काम लें तो इस पर्व का पूरापूरा आनंद उठा सकते हैं. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन 1949 से पूर्व चीन में अपराध करने वालों के गिरोहों का बहुत जोर था. सरे आम लोगों को लूटा लिया जाता था. कम्यूनिस्ट क्रांति की वजह से राजनीतिक और अर्थिक व्यवस्थाएं तहसनहस हो गई थीं. तब से अब तक के तीन दशकों के दौरान चीन की कम्यूनिस्ट सरकार बराबर यह दोहराती रही है कि चीन से अपराध समाप्त हो गए हैं. किंतु 1978 में जब चीन में उदारवाद का दौर शुरू हुआ और विदेशियों के लिए द्वार खोल दिए गए. तब से बाहरी देशों को यह जानकारी मिलने लगी है कि चीन में अपरा[illegible] न केवल अब भी अस्तित्व में हैं बल्कि उन[illegible] जोर बराबर बढ़ता जा रहा है.

चीनी समाचार पत्रों ने सन 1979 [illegible] पहली बार यह स्वीकार किया कि अपराध[illegible] केवल अस्तित्व में हैं. बल्कि काबू से भी बा[illegible] होते जा रहे हैं. ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शह[illegible] क्षेत्रों में हालत ज्यादा खराब होती जा रही[illegible] पिछले तीन वर्षों में चीन अपराधों के माम[illegible] में काफी बदनाम रहा है. चीनी नेता न[illegible] चाहते कि अपराधियों को उदारवाद [illegible]

चीन में अपराध लहर

लेख • हवासिंह हुड्डा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

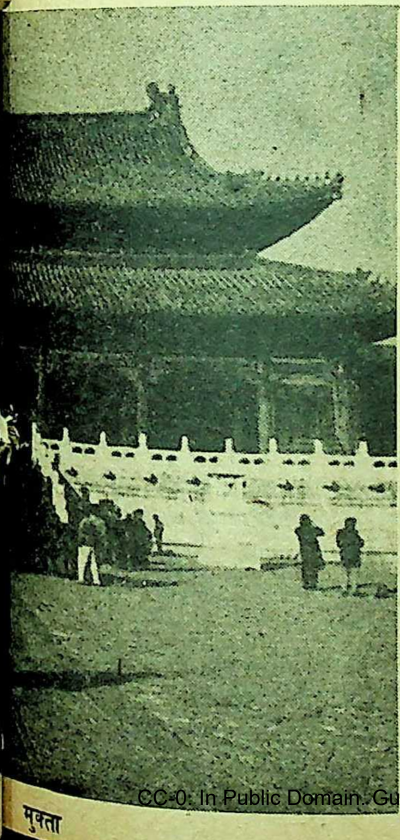

चीन में अखबारों के मुखपृष्ठ पर मृत्यु दंड के समाचार छाप कर लोगों को आंतकित किया जाता है (ऊपर), लेकिन सार्वजनिक स्थानों पर अपराधी सहज रूप से घूमते रहते हैं. (बाएं)

सुविधाओं का नाजायज लाभ मिले. वे इस प्रवृत्ति का मूल स्रोत पश्चिमी देशों को मानते हैं. चीन ने 1979 में यह स्पष्ट कर दिया था कि यद्यपि उसे पश्चिम की उन्नत तकनीक की आवश्यकता है, लेकिन उन की ऊंची दर वाली अपराध परंपरा की कतई आवश्यकता नहीं है. चीनी नेता इस विषय में आश्वस्त

चीन में सरकार मामूली से अपराध के लिए भी कठोरतम दंड दे रही है पर अपराध हैं कि दिन ब दिन बढ़ते ही जा रहे हैं और किस प्रकार कम्यूनिस्ट शासन प्रणाली खोखली साबित हो रही है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

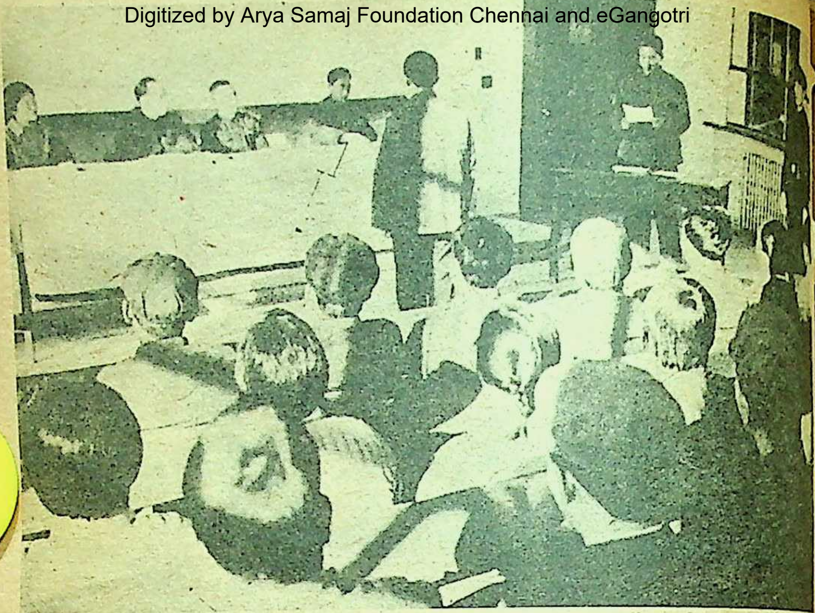

दंड देने से पहले न्यायविद आपस में खूब विचारविमर्श करते हैं.

होना चाहते हैं कि कहीं पश्चिम की अपराध लहर तो चीन में नहीं घुस रही है.

सन 1979 के आंकड़ों से पता चलता है कि सब से अधिक वृद्धि ऐसे अपराधों में हो रही है जो किशोर अवस्था के युवकों द्वारा किए जाते हैं. सांस्कृतिक क्रांति से अब तक ऐसे तरुण अपराधों में 1,000 प्रतिशत से अधिक वृद्धि हुई है. ये स्पष्ट आंकड़े देने इसलिए आवश्यक समझे गए हैं क्योंकि इस का दोष माओ त्से तुंग की पत्नी और उन की चौकड़ी तथा उन के समर्थक माओवादियों पर लगाया जा सके. लूटपाट, धोखाधड़ी, गुंडागर्दी और युवकों द्वारा सरकारी संपत्ति की लूटपाट के लिए किए गए हमलों को सांस्कृतिक क्रांति के दौरान उत्पन्न हुए तत्त्व माना जाता है.

सांस्कृतिक क्रांति के समय अनेक विश्वविद्यालयों को बंद कर दिया गया था. इन में ऐसे युवकों की संख्या काफी बड़ी थी जो देहातों से भाग कर शहरों में आ गए थे. शहरों में सरकार की तरफ से ऐसे नवयुवकों के लिए कोई जगह नहीं थी. परिणाम यह निकला कि सभी ने गिरोह बना कर सरकारी संपत्ति को लूटना आरंभ कर दिया. ऐसे अपराधियों को कठोर सजाएं दी गईं. चीन की सरकार ने यह स्वीकार किया है कि लूटपाट मचाने वाले माफिया किस्म के गिरोह अब भी अस्तित्व में हैं जो अंधेरे में घात लगा कर बैठे रहते हैं तथा मौका पाते ही राहगीरों पर चाकुओं से हमला करते हैं और उन का धन और सामान छीन लेते हैं. हत्याओं और बलात्कारों के ब्योरे भी प्रकाश में आए हैं. सामूहिक गुंडागर्दी सर्वव्यापी बन गई है.

चीनी नेताओं ने अपराधों के खिलाफ लड़ने के लिए जन संचार और प्रसार के सभी माध्यमों का प्रयोग पूरे पैमाने पर शुरू कर दिया है ताकि सरकार को आम जनता का सहयोग मिल सके. इस बात पर विशेष रूप से जोर दिया गया है कि आधुनिकीकरण के लिए एक शांत वातावरण और अपराध रहित समाज की अवश्यकता है. सरकार ने अपराधों के लिए कठोर दंड का प्रावधान किया है. हत्याओं और बलात्कारों के अपराधों के लिए सीधा मृत्युदंड दिया जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. मृत्युदंड की सजा खुले रूप में गोली से उड़ा कर दी जाती है और ऐसे समाचारों को अखबारों में प्रथम पृष्ठ पर छापा जाता है.

आगजनी, नशीली दवाओं का व्यवसाय, धोखाधड़ी, डकैती, सेंध लगाना तथा ब्लैक मेल जैसे दूसरे दरजे के अपराधों के लिए 15 वर्ष की सपरिश्रम कठिन कारावास की सजा दी जाती है. तीसरे दरजे के अपराधों जैसे जेब काटना, चोरी करना इत्यादि के लिए 10 वर्ष के कठोर सपरिश्रम कैद की सजा का प्रावधान है.

सांस्कृतिक क्रांति के दौरान बहुत से निर्दोष लोगों को भी सजा दी गई थी. चीन के सर्वोच्चय न्यायालय ने 1977, 1978 तथा 1979 के तीन वर्षों में 1.6 लाख निर्दोष लोगों की ऐसी सजाओं को समाप्त कर दिया. जब कि यह उन मामलों का 16 प्रतिशत ही भाग है जो पुनर्विचार के लिए न्यायालय के सामने लाए गए थे. सर्वोच्च न्यायालय के अध्यक्ष जियांग हुआ ने सिन हुआ समाचार समिति को एक भेंट में बताया कि अब तक 10 लाख मामलों पर पुनर्विचार किया जा चुका है. जियांग हुआ का यह भी कहना है कि कठिन सजाएं अपराधों पर अंकुश लगाती हैं और अपराधों के स्वाभाव को जानने के लिए न्यायपालिका को हर समय कार्यपालिका के निकट रह कर कार्य करना चाहिए.

अपराधों को रोकने के लिए चीनी सरकार ने लोगों में अवैध हथियारों के फैलाव को कम करने के लिए भी सख्त कदम उठाए हैं. जून 1981 से चीनी सरकार ने इस विषय में अधिक ध्यान दिया है. गत वर्ष जुलाई में सरकार के आहवान पर युवाओं ने 3,000 अवैध हथियारों को सरकारी शस्त्रागार में जमा करा दिया, जब कि लगभग इतने ही विस्फोटक हथियारों को सरकार ने जब्त किया. बीजिंग रेलवे स्टेशन पर 30 अक्तूबर, 1980 को एक भीड़ से घिरे हुए सैनिक ने अपने साथ लिए हुए विस्फोटक पदार्थ में आग लगा कर आत्महत्या कर ली थी, जिस में 11 अन्य निर्दोष यात्री मारे गए थे तथा 75 अन्य घायल हुए थे. इस घटना ने

चीनी अदालत का एक दृश्य : आरोप पढ़ता पुलिस अधिकारी, सामने बैठे न्यायविद पीठ किए खड़ा अपराधी और मुकदमे की काररवाई सुनते अन्य लोग.

चीनी अधिकारियों को झकझोर दिया था, जिस का परिणाम यह निकला कि विस्फोटक पदार्थ साथ रखने पर प्रतिबंध लगा दिया गया.

चीन में इस ओर भी ध्यान दिया गया है कि न्यायालयों में मुकदमों का निर्णय जल्दी किया जाए. इस विषय में चीनी अखबारों ने अगस्त 1981 में एक समाचार छापा था, जिस में बताया गया था कि कुछ हत्यारों को अपराध करने के मात्र आठ दिन बाद ही मृत्युदंड दे दिया गया. राष्ट्रीय जन सभा की कार्यकारी समिति के एक निर्णय के परिणामस्वरूप हत्या तथा बलात्कार के मामलों में सजा देने की प्रक्रिया बहुत तेज हो गई है. मृत्युदंड के मामलों में सर्वोच्च न्यायालय में अपील करने की अनुमति नहीं दी जाती.

अपराधों को रोकने के लिए चीनी सरकार ने जो कदम उठाए हैं. उन के प्रभाव अभी देखने बाकी हैं. शायद हिंसक अपराधों में कमी आ सकती है, किंतु लूटखसोट और जेब कतरने जैसे अपराधों में कमी आना संभव नहीं लगता. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

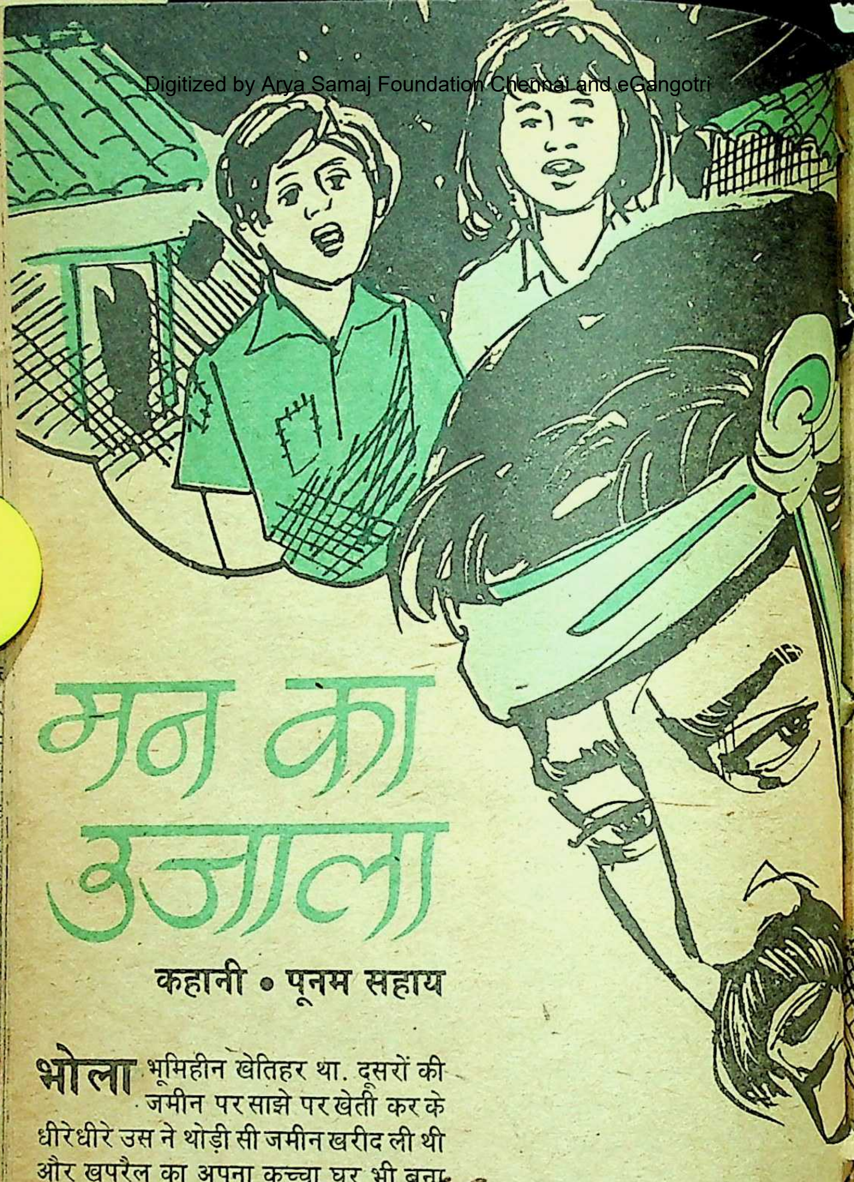

मन का उजाला

कहानी • पूनम सहाय

भोला भूमिहीन खेतिहर था. दूसरों की जमीन पर साझे पर खेती कर के धीरेधीरे उस ने थोड़ी सी जमीन खरीद ली थी और खपरैल का अपना कच्चा घर भी बना लिया था. जब वह बुढ़ापे के कष्ट को भोगे बिना इस दुनिया से कूच कर गया, तब तक उस के दोनों बेटे बूधन और बिदेशी खेती करने लगे.

बाप के मरने से पहले बड़े भाई बूधन की शादी हो चुकी थी. लेकिन दोनों भाई साथ रह कर अपनी खेती के साथसाथ दूसरे की खेती अधबटाई पर करते रहे थे. फिर कुछ वर्ष बाद जब बिदेशी की भी शादी हुई तो दोनों भाइयों का एक ही चूल्हे पर खाना दूभर हो गया और एक दिन उस घर के टुकड़े हो गए. गांव में किसी ने इस बात पर अब आश्चर्य नहीं किया कि दोनों भाई अलगअलग हो गए. क्योंकि इस प्रकार की घटनाएं तो अब वहां प्रायः होने लगी थीं.

ऐसा नहीं था कि दोनों भाइयों में झगड़ा था या बोलचाल बंद थी. बस वे दोनों अपनीअपनी गृहस्थी अलगअलग संभाल रहे थे. जमीन, मकान का बंटवारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारस्परिक समझौते से हो गया था. वैसे दोनों घरों में भाईभाई का रिश्ता अभी तक कायम था.

बिदेशी शरीर से काफी स्वस्थ था, जब कि बूधन यदाकदा बीमार पड़ जाता था. इस के कारण बूधन अपने भाई की अपेक्षा कम मेहनत कर पाता था. वैसे तो दोनों ही गरीब थे, बस गुजारे के काबिल कमा लेते थे. पर इधर कुछ दिनों से बिदेशी की आर्थिक स्थिति बूधन से कुछ बेहतर हो गई थी. बूधन के पास बुआई के लिए बीज भी नहीं बचता था जब कि बिदेशी काफी बीज बचा लेता था.

आपसी बंटवारे के समय जमीन का एक छोटा सा टुकड़ा अतिरिक्त बचा था, जिसे बूधन ने बड़े भाई होने के नाते स्वेच्छा से बिदेशी को दे दिया था. उस समय तक दोनों की स्थिति समान थी. उस के बाद जब बूधन की आर्थिक स्थिति काफी डांवांडोल हो गई तो उस की पत्नी ने उसे उस अतिरिक्त टुकड़े को वापस लेने को कहा, "इतने दिनों से बिदेशी उसे जोतबो रहा है. अब तुम्हें उस जमीन पर खेती करनी चाहिए. तुम उस जमीन को मांग लो न."

बूधन के दिल ने गवारा नहीं किया कि वह छोटे भाई से स्वेच्छा से दी हुई जमीन मांग ले. फिर उसे बड़े होने का खयाल भी था कि

बूधन जबजब उस अंधेरी दीवाली की कल्पना करता तबतब उस का मन बेचैन हो उठता. आखिर दीवाली को सुखद बनाने के लिए उस ने हल खोज ही लिया.

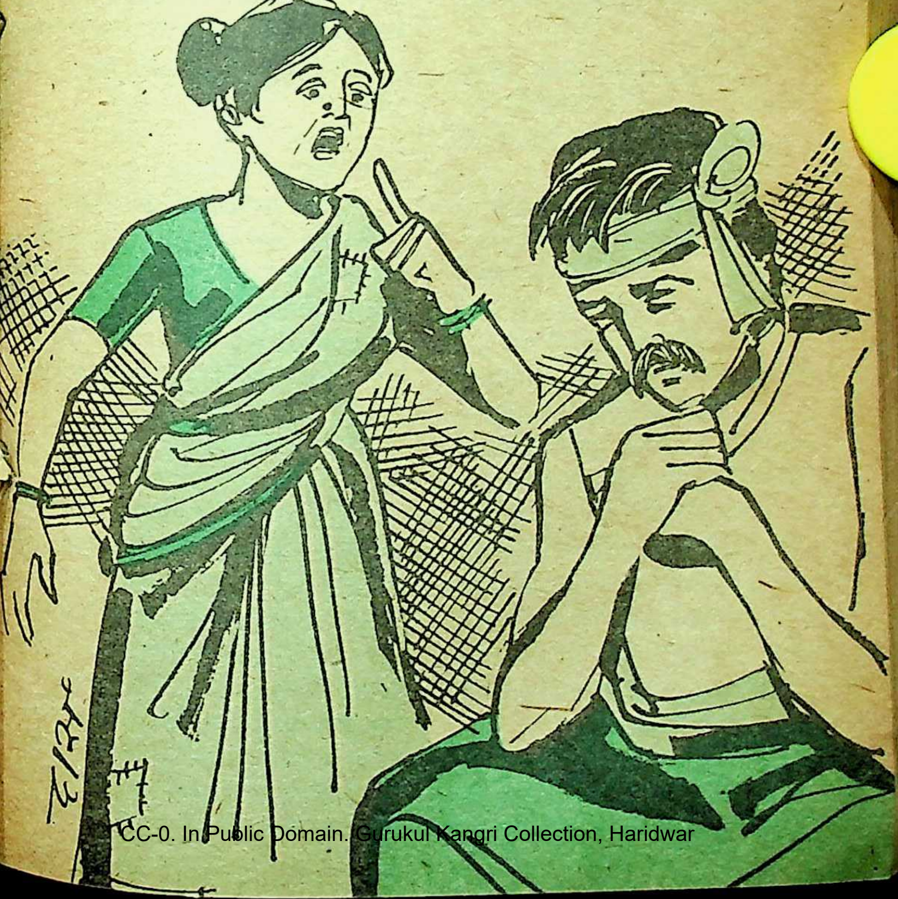

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटा भाई क्या सोचेगा, [illegible] की [illegible] परेशानी एवं पत्नी के निरंतर कहने पर वह इस बारे में सोचने पर विवश हो गया. उस वर्ष वर्षा भी नहीं हुई थी अतः कोई अन्य चारा न पा कर उस ने बिदेशी से जमीन की बाबत बात की.

बिदेशी सोच में पड़ गया. उस ने कहा, "मैं अपनी पत्नी से बात करूंगा."

उस की पत्नी ने जब यह सुना तो वह तुरंत बोली, "अब भैया को जमीन लेने का हक नहीं. उन्होंने मेहनत नहीं की तो अपनी जमीन से भरपूर नहीं उगा पाए. उस के लिए हम अपनी जमीन उन्हें क्यों दें? यह जमीन तो बंटवारे में हमें मिली है."

"परंतु भैया की हालत बहुत पतली हो गई है और यह ठीक भी तो है कि इतने दिन इस जमीन पर हम ने फसल उगाई, अब उन्हें उगाने दें."

"और जो हम लोगों ने इतनी मेहनत कर के जमीन को उपजाऊ बनाया है, सो. पहले तो इस पर घास भी नहीं उगती थी. मैं जमीन नहीं दूंगी."

"अरे, हम हमेशा के लिए थोड़े ही दे रहे हैं. जैसे कुछ साल जमीन हम ने अपने पास रखी, वैसे कुछ साल वे लोग भी रख लेंगे."

"इस विचार में न रहना कि कुछ साल के बाद जमीन वापस मिल जाएगी. एक बार गई तो बस गई. फिर जमीन हमेशा के लिए उन की हो जाएगी. उन से कह दो कि जमीन हमारी हो चुकी है, हम उसे उन्हें एक दिन के लिए भी नहीं देंगे," पत्नी अपनी हठ पर अड़ी रही.

बिदेशी की इच्छा थी कि वह अपने बड़े भाई की कुछ सहायता करे परंतु अपनी पत्नी की हठ के आगे विवश हो गया. उस ने जब अपनी पत्नी को और समझायाबुझाया तो वह और नाराज हो गई. लिहाजा उस ने बूधन को नकारात्मक उत्तर दे दिया.

बूधन की पत्नी ने जब यह सुना तो वह बिफर उठी, "इतनी जल्दी भाई से आंखें फेर लीं? हम ने तो उन को अपना समझ कर उन के साथ भलाई की और अब वे भलाई को [illegible] गए? मैं देखती हूं कि वे लोग जमीन कैसे नहीं देते."

बूधन चुप रहा. भाई के मना करने पर उसे विशेष दुख नहीं था. वैसे भी उस ने पत्नी के जोर देने पर ही भाई से जमीन की बात की थी. परंतु पत्नी की बातें सुन कर उसे अपमान का बोध हुआ.

उस की चुप्पी देख कर पत्नी ने हाथ नचा कर कहा, "तुम चुप हो कर बैठे रहो परंतु मैं नहीं चुप रहने वाली. 10 आदमियों को बुला कर फैसला करवाऊंगी."

उस की पत्नी ने गांव के गणमान्य लोगों के बीच मामला उठाया. गांव के रुके पानी की तरह शांत वातावरण में इस तरह की घटनाएं तरंगें पैदा करती हैं. लोगों की इस मामले में काफी दिलचस्पी हो गई. कुछ समझदार लोगों ने दोनों भाइयों को बुला कर समझौता कराने का प्रयास किया. परंतु कई लोग दिल से यही चाहते थे कि मामला आसानी से न सुलझे.

ऐसे कुछ लोगों ने बूधन के प्रति हमदर्दी जता कर बिदेशी के विरुद्ध उस के कान भरने शुरू किए, "तुम अपने हक के लिए लड़ने से पीछे नहीं हटना. यह भला कैसा सा इनसाफ है कि एक को अधिक जमीन मिले और दूसरे को कम?

"परंतु वह तो जमीन देने के लिए तैयार ही नहीं," बूधन ने कहा.

"अरे, ऐसे नहीं देगा तो कचहरी में जा कर अपना हक लेना."

"नहीं, नहीं. कोर्टकचहरी में जाने की मेरी हिम्मत कहां?" बूधन ने निराशा व्यक्त की.

"तुम क्यों घबराते हो? कचहरी में सब को न्याय मिलता है और फिर हम लोग तुम्हारी गवाही देंगे. बिदेशी अपने को समझता क्या है? बड़े भाई की भलाई का बदला बुराई से देगा?"

"मेरा दिल कचहरी जाने को राजी नहीं होता और फिर जमीन भी तो जरा सी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वकील साहब, मैं अपना मुकदमा वापस लेना चाहता हूं," बूधन की बात सुनकर वकील चौंक गया.

बूधन ने हिचकिचा कर कहा.

"अपना हक मांगने के लिए कचहरी जाने में हर्ज नहीं है. यदि तुम यहीं हथियार डाल बैठे तो तुम्हारी नाक कट जाएगी. लोग हंसेंगे कि छोटे भाई से हार गया. बिदेशी तो अभी से मूंछों पर ताव दिए फिरता है कि जान चली जाए पर जमीन नहीं देगा."

कुमति जागने में विलंब नहीं होता. भड़काने वाली इस प्रकार की बातों से बूधन की हिचक दूर होती गई और उस ने दिल में ठान लिया कि वह जमीन ले कर छोड़ेगा.

उधर कुछ लोगों ने बिदेशी को उकसाया, "तुम ने जमीन पर अपना खूनपसीना बहाया है. तुम्हारी मेहनत का फल देख कर बूधन को ईर्ष्या हो रही है. खुद तो मेहनत करना नहीं चाहता दूसरे को फलतेफूलते देख कर जलता है."

"ऐसी बात नहीं है. भैया बीमार रहते हैं," बिदेशी ने सहानुभूति से कहा. वह इतने लोगों की हमदर्दी से आश्चर्यचकित था.

बीमारी तो सब के साथ लगी रहती है. बूधन जानबूझ कर बीमारी का ढोंग करता है ताकि मेहनत न करनी पड़ी. यह तो अच्छा हुआ कि तुम दोनों अलग हो गए, वरना तुम को ही सारी मेहनत करनी पड़ती और वह आराम से चारपाई तोड़ता. सुना है बूधन कचहरी जाएगा."

"ऐं, कचहरी तक जाने की सोच ली?" बिदेशी ने आश्चर्य से पूछा.

"और नहीं तो क्या? वह चैन से बैठने वाला है? पर तुम क्यों डरते हो? तुम्हारी जमीन तो तुम्हारी रहेगी."

लोगों की बातों से भड़क कर दोनों भाइयों के बीच वैमनस्य इतना बढ़ गया कि बूधन ने कचहरी में मुकदमा कर दिया. कुछेक हितैषियों ने उन दोनों को फिर समझाने का प्रयास किया. गांव के मुखिया ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूधन और बिदेशी से अलगअलग बात की, "देखो बूधन, मैं ने काफी दुनिया देखी है. कोर्ट कचहरी के झंझट में भी फंसा हूं. मैं अपने अनुभव से कहता हूं कि तुम कचहरी मत जाओ. कचहरी में दोनों पक्ष हारते हैं. बहुत परेशानी होती है," मुखिया ने बूधन को समझाया.

"दोनों पक्ष कैसे हार सकते हैं?" बूधन ने पूछा.

"भाई तुम्हारी जिस जमीन के लिए झगड़ा हो रहा है, वह बहुत छोटी है. उस की कीमत से कहीं अधिक तुम दोनों को मुकदमा लड़ने में खर्च करना पड़ेगा. जमीनजायदाद का मुकदमा वर्षों चलता है. तुम लोग पढ़ेलिखे नहीं हो. वकील तुम्हें बहलाफुसला कर मनमाने रुपए ऐंठेंगे. तुम कचहरी के चक्कर लगातेलगाते परेशान हो जाओगे. मुकदमा लड़ने में बहुत पैसा लगता है."

"चाहे जितना पैसा लगे, अब मुझे इस की परवाह नहीं है, मैं जमीन ले कर रहूंगा," बूधन ने हठपूर्वक कहा.

"क्रोध से काम मत लो. मैं जानता हूं जमीन तुम दोनों में प्रतिष्ठा का प्रश्न बन चुकी है. तुम लोग ताव में आ कर मूंछ की लड़ाई लड़ रहे हो. ऐसी लड़ाई में दोनों पक्ष बरबाद होते हैं," मुखिया ने धैर्यपूर्वक कहा.

"मुखियाजी, मैं अब अपना इरादा नहीं बदल सकता. मैं ने बहुत अच्छा वकील किया है. उस ने मुझे विश्वास दिलाया है कि फैसला मेरे पक्ष में ही होगा," बूधन के स्वर में और अधिक हठ झलका.

"सभी वकील अपने मुवक्किलों को ऐसे ही फुसलाते हैं. हम गांव वालों को तो वे इतना मूर्ख बनाते हैं कि हम अपनी खूनपसीने की कमाई उन के और गवाहों के चक्कर में लुटा देते हैं. मेरी बात पर ठंडे दिमाग से गौर करो. मुकदमा कर दिया है तो वापस ले लो. अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है."

परंतु मूंछों की लड़ाई में विवेक लुप्त हो जाता है. मुखिया के समझाने का प्रयास विफल रहा. बूधन के कानों पर जूं तक न रेंगी. बिदेशी भी ताव में था. दोनों भा... के बीच घृणा की खाई चौड़ी होती गई. कु... दिनों तक तो जोश में दोनों को आर्थिक क... महसूस नहीं हुआ, परंतु कुछ समय बीतने के बाद दोनों ही इस बोझ से कराहने लगे. ... की आर्थिक स्थिति तो पहले से ही कमज... थी, वकीलों और गवाहों के खर्चे ने उन... चरमराती आर्थिक स्थिति को बुरी तरह झंझोड़ दिया. अब वे अपने परिवार का पे... काट कर एकएक पैसा जोड़ते और उ... मुकदमे में खर्च करते थे.

मुकदमे ने दोनों की खेती पर प्रतिकू... प्रभाव डाला. बूधन ने एकआध बार महसू... किया कि वह पहले से और अधिक परेशानी में पड़ गया था, परंतु वकील की चिकनीचुपड़ी बातों एवं दिलासों ने उ... मुकदमे में फंसाए रखा.

दीवाली आई. ऐसी अंधेरी दीवाली उ... लोगों के जीवन में पहले कभी नहीं आई थी. बूधन के बच्चे दीवाली में मिठाई तो द... बताशे तक खाने को तरस गए. साल में ... बार, होली और दीवाली में, घर भर के कप... किसी प्रकार बन जाते थे. इस बार कुछ ... नहीं हुआ.

दीवाली की छुट्टियों के बाद कचहरी ... बूधन के मुकदमे की तारीख थी. उसे वकील की फीस देनी थी तथा गवाहों को ले जाना था. बूधन ने अपनी समस्त आवश्यकताओं में कटौती कर के इस के लिए रुपए जुटाए थे. यहां तक कि दीवाली में भी घर में अंधेरा रहा था.

मुकदमे की तारीख वाले दिन बूधन अपने गवाहों के साथ कचहरी गया. उस दिन कचहरी में अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक भीड़ थी. वहां अधिकतर लोग गांव के ही थे. उन के चेहरों पर दीनता स्पष्ट झलक रही थी. बूधन को लगा जैसे वे सब उसी की तरह पे... काटकाट कर मुकदमा लड़ रहे हों. लोगों की भीड़ में यत्रतत्र काले कोट पहने वकील नज़र आ रहे थे.

कचहरी के अहाते में हलवाइयों की दुकानें ग्राहकों से खचाखच भरी थीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढाबानुमा दुकानें विभिन्न प्रकार के मिष्ठानों से अटी हुई थीं. अन्य मुवक्किलों की भांति बूधन भी अपने वकील एवं गवाहों को हमेशा की तरह एक दुकान पर जलपान कराने लाया. कचहरी के हलवाई भी बहुत चतुर होते हैं. वे जानते हैं कि मुवक्किलों के पैसे से वकील एवं गवाह वगैरह छक कर जलपान करते हैं, अतः एक वस्तु मांगने पर वे चार वस्तुएं सामने रख देते हैं और बेचारा मुवक्किल झिझक के मारे मना नहीं कर पाता है.

बूधन का वकील हमेशा रसगुल्लों का जलपान करता था. उसे रसगुल्ले खाते देख कर एकाएक बूधन के सामनें अपने बच्चों के चेहरे घूम गए, जो दीवाली के दिन बताशे तक खाने को तरस गए थे. उस के हृदय पर जैसे किसी ने घूंसा मारा. अपने घर की अंधेरी दीवाली उस के नेत्रों के समक्ष घूम गई. उसे अपने मासूम बच्चे याद आए. जो लालसा भरी नजरों से पड़ोस के बच्चों को मिठाई खाते एवं फुलझड़ियां छोड़ते देख रहे थे. उस का हृदय आत्मग्लानि से भर उठा.

सब गलती मेरी है. मैं ने बीवी, बच्चों का पेट काटा, उन की खुशियां छीनीं. केवल इसलिए कि वकील को पैसा दे सकूं? मेरे बच्चे दीवाली में मिठाई देखने को तरस गए और यह वकील मेरे बच्चों के पेट काट कर बचाए हुए पैसों से रसगुल्ले उड़ा रहा है. मुखिया ने ठीक कहा था कि मूंछ की लड़ाई में दोनों पक्ष बरबाद होते हैं. फिर जमीन भी तो इतनी कम है कि मैं यदि उसे किसी तरह ले भी लूं तो उस पर बहुत अधिक उपज नहीं हो सकती. उस से कितना अंतर आ जाएगा मेरी आर्थिक स्थिति में. यदि मैं अपने स्वास्थ्य का उचित खयाल रखूं और अधिक मेहनत करूं तो मेरी आर्थिक स्थिति तो वैसे ही सुधर जाएगी. मैं ने नाहक मूर्खता की. बिदेशी के घर भी तो दीवाली अंधेरी रही. वह भी मेरी तरह बच्चों का पेट काट के अपने वकील को रसगुल्ले खिलाता होगा.' बूधन का रोमरोम उसे धिक्कारने लगा, 'नहींनहीं. अब मैं और मूर्खता नहीं करूंगा. मैं आज ही मुकदमा

> बात अनोखी सही
> मगर,
> दर्द ही में मिला
> करार मुझे.
> —साहिर होशयारपुरी

वापस ले लूंगा.'

"वकील साहब मैं अपना मुकदमा वापस लेना चाहता हूं."

बूधन की बात सुन कर वकील का चलता हुआ मुंह खुला रह गया. उस ने आश्चर्यचकित हो कर पूछा, "लेकिन क्यों?"

"बस, मैं मुकदमा लड़ना नहीं चाहता."

दोनों गवाह भी बूधन की बात सुन कर चुप हो गए.

वकील ने कहा, "यह तो मूर्खता होगी. इतना खर्च करने के बाद पीछे हटने की क्या तुक है? सारी बातें तुम्हारे पक्ष में हैं. तुम्हारी जीत निश्चित है."

"मुझे हारजीत की चिंता अब नहीं है," बूधन ने दृढ़ स्वर में कहा.

"इस प्रकार पीछे हटने से तुम्हारी नाक कट जाएगी. लोग तुम पर हंसेंगे और तो और तुम्हारा भाई ही तुम पर झूठा मुकदमा करने के आरोप में मुआवजे का दावा कर सकता है."

"मैं वह सब सहने को तैयार हूं, परंतु मुकदमा नहीं लड़ूंगा."

वकील का बूधन को समझाने का सारा प्रयास विफल रहा. उस ने बूधन को हिकारत भरी नजरों से देखा और कागजात तैयार करने चला गया. दोनों गवाह भी बूधन को विचित्र नजरों से घूर रहे थे.

अब बूधन को पैसा बरबाद होने या अपनी नाक कटने की चिंता नहीं थी. उस का उद्विग्न मन शांत हो चला था. उस का मन आलोकित हो उठा. उसे लगा जैसे आज ही उस की दीवाली हो. वास्तविक दीवाली, जिस के दीयों ने उस के मन का अंधकार मिटा दिया हो. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खचाखच भरे वायुयान

रेलगाड़ियों, बसों और अन्य यातायात के साधनों के खचाखच भरे होने के हम इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि यदि बस या रेलगाड़ी कुछ खाली हो तो यह सोचना पड़ता है कि वह जा भी रही है या नहीं. लेकिन यातायात के एक अन्य साधन वायुयान का खचाखच भरा होना एक अविस्मरणीय घटना बन कर रह गया है.

11 फरवरी, 1982 को इंडियन एयरलाइंस का एक बोइंग विमान रांची से पटना जाने के लिए तैयार था. सभी सीटों पर निर्धारित यात्री बैठ चुके थे. इस के बाद भी, बाहर से और यात्री विमान के अंदर घुसने का प्रयत्न कर रहे थे. यह एक अभूतपूर्व दृश्य था. समाचारों के अनुसार इस आई.सी. 410 क्रमांक की उड़ान के यात्री पूरे होने के बाद भी कुछ यात्री शेष रह गए थे. उन के पास भी यात्रा के लिए उचित टिकट थे. तब वायु सेवा के इतिहास में, वायुसेवा कर्मचारियों ने एक अभूतपूर्व निर्णय ले डाला.

संभवतया उन्होंने सोचा, 'जब रेलगाड़ियां, बसें, नावें सभी खचाखच भरी जा सकती हैं. जब दरवाजों पर लटके और छतों पर बैठे यात्री भी रेल विभाग को पैसा दे सकते हैं, तो क्यों न इन उचित टिकट रखने वालों को भी इसी वायुयान से यात्रा करने दी जाए.' उन्होंने कुछ यात्रियों को वायुयान के चालक कक्ष में, कुछ को रसोई में और कुछ को प्रसाधन कक्षों में बैठ कर, खड़े हो कर यात्रा करने की अनुमति दे दी. आश्चर्य यह था कि ये यात्री भी इस हालत में यात्रा करने के लिए तैयार थे.

जहां तक आम यात्रियों का प्रश्न है, उन्हें यातायात के सभी साधन एक से ही प्रतीत होते हैं. सड़क पर चलने वाले वाहन खराबी आने पर रोके जा सकते हैं. रोक कर उन्हें ठीक किया जा सकता है. रेल यातायात में भी यही सुविधा उपलब्ध है. लेकिन मानव ने जब सड़क छोड़ कर, जल में यातायात प्रारंभ किया तो जो समस्याएं उपस्थित हुई प्रायः उसी प्रकार की समस्याएं तब उपस्थित हुई, जब उस ने वायु में यातायात करने की सोची.

नदियों को पार कराने वाली नावों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

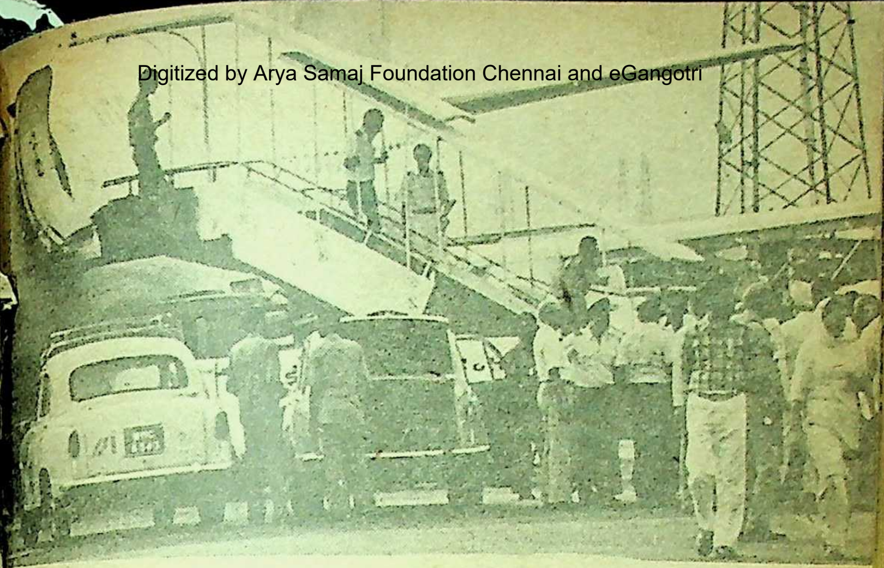

कितने सुरक्षित?

सड़क के यातायात साधनों वाली बात 'एक और बैठ सकता है, जगह तो है.' लागू होने ने अनेक दुर्घटनाओं को जन्म दिया है. खचाखच भरी नावें अतिरिक्त बैठने वाले यात्रियों के लिए ही नहीं, बल्कि संपूर्ण यात्रियों के लिए खतरा उत्पन्न करती हैं.

नाव, जहाज न तो ठोस जमीन पर होते हैं और न इन का रास्ता ही पहले से निर्धारित होता है. इस के बाद भी इन्हें रोक कर, इन में आई खराबी ठीक की जा सकती है पर भार की उच्चतम सीमा और भार का उचित वितरण (यानी भार को अनुपात से इधरउधर रखना) कर संतुलन बनाए रखने के नियम का उल्लंघन, इन की सुरक्षा के लिए खतरनाक हो सकती है.

सड़क तथा जल के सभी वाहनों में, जिसे हम खाली स्थान समझते हैं, वहां वायु भरी होती है. यह वायु, जल से लगभग 830 गुना हल्की होती है. यदि जल वाहनों में, वायु के स्थान पर, किसी प्रकार भी जल भर जाता है तो वे डूब जाते हैं. जल यातायात को आधार मान कर, जब वायु यातायात की बात उठी तो ऐसा लगा कि एक ऐसे पदार्थ की आवश्यकता है, जो वायु से भी हल्का हो. वायु यातायात में वाहन को पूर्ण रूप से वायु में हो कर और वायु को हटा कर ही, उत्पलावन बल प्राप्त करना था. आर्कीमिडीज के सिद्धांत को आधार मान कर, गुब्बारे और वायुपोत सर्वप्रथम वायु यातायात के साधन बन कर सामने आए.

वायुपोतों और गुब्बारों में वायु से हल्की गैस हीलियम, हाइड्रोजन या गर्मवायु भरी जाती है. बाह्य आवरण भी हलके से हलके

लेख • राजकुमार जैन

यात्रियों से भरे वायुयान पूरी तरह असुरक्षित होते हैं, वे किसी भी समय दुर्घटनाग्रस्त हो सकते हैं. आखिर इस की वजह क्या है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थ का बनाया जाता है. इस कारण ये यान या पोत अपने भार से ज्यादा उत्पलावन बल उत्पन्न कर, कुछ अतिरिक्त भार, सामग्री, यात्री आदि उठा कर यात्रा कर सकते हैं. यहां पर भी भार की सीमा, प्राप्त कुल उत्पलावन बल के ऊपर निर्भर करती है. यहां डूबने का खतरा नहीं होता, क्योंकि यहां यात्रा का प्रारंभ, वायुमंडल के सब से निचले स्तर से ही होता है. भार की उच्चतम सीमा का उल्लंघन, इन्हें जमीन से ऊपर उठने ही नहीं देता है. भार का उचित वितरण भी इन की संतुलित, समतल यात्रा के लिए आवश्यक होता है.

यातायात के उपर्युक्त सभी साधनों में इंजन का प्रयोग मात्र यात्रा करने के लिए ही किया जाता है. इस कारण इंजन के बंद हो जाने पर, यात्रा भले ही पूरी न हो पाए, वाहन की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न नहीं होता. इस के विपरीत आधुनिक वायुयान, वायु से भारी चिड़ियों की उड़ान को देख कर की गई कल्पनाओं पर आधारित हैं. बिना इंजन शक्ति के, ये न तो वायु में यात्रा ही कर सकते हैं और न वायु में टिके ही रह सकते हैं.

वायुयान और वायु यात्रा

वायुयान धरती से उड़ कर, वायु में यात्रा कर, पुनः जमीन पर उतर आता है. उड़ते या उतरते समय इस के पहिए धरती में न धंस जाएं, इस कारण इसे ठोस और मजबूत वायु पट्टी की आवश्यकता होती है. वायु में उड़ान भरने वाला यह वायुयान, वायु से भा[रो] होता है. इस कारण वायु में बने रहने के लि[ए] इसे पक्षियों की तरह शक्ति व सामर्थ्य की आवश्यकता होती है और इस का[रण] वायुयान का इंजन वायुयान का मुख्य अंग [माना] जाता है.

वायु में उड़ता वायुयान यदि वायु में अपनी सामर्थ्य के बल पर, टिका नहीं र[ह] पाता, तो वह अपनेआप ही जमीन पर [आ] जाता है. पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति उ[से] खींच लेती है. इस कारण वायु यात्रा में प्रय[ास] यह रहता है कि वायु में उड़ते समय ऐसी स्थिति उत्पन्न न हो कि वायुयान अनियंत्रित हो कर जमीन की तरफ चल दे. यह स्थिति वायुयान, यात्रियों और यहां तक कि जमीन पर चलने वालों, रहने वालों के लिए भी घातक सिद्ध हो सकती है.

इन्हीं वायु से भारी, वायुयानों की उड़ान के सिद्धांत का श्रेय बहुत कुछ सर केयले को जाता है. लेकिन आधुनिक वायुयान की प्रथम उड़ान का श्रेय अमरीका के राईट बंधुओं को प्राप्त है, जिन्होंने 1903 में वायु से भारी वायुयान को वायु में सर्वप्रथम उड़ा कर दिखलाया था.

वायुयानों की विशेषता व उन की उड़ान की सामर्थ्य उन के पंखों की बनावट में निहित है. इन पंखों की संरचना इस प्रकार की होती है कि विमान के वायु में उड़ने पर, इन्हें उत्थापन बल प्राप्त होता है. जब वायु तेजी से

(शेष पृष्ठ 156 पर)

उड़ते समय वायुयान का संतुलन उस के भार वितरण पर भी निर्भर करता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तावेजों की फोटो स्टेट प्रति[illegible] भिजवा दी.
इंजीनियर ने मामले की जांच की और उस निरीक्षक का तबादला कर दिया. लेकिन र्यालय की गोपनीय बात बताने के आरोप में उस लिपिक का तबादला भी कर दिया गया.

—प.ल. श्रीवास्तव

*

हमारे यहां एक स्टोर क्लर्क की ...ती हुई. वह कम पढ़ालिखा था, लेकिन ...सी की सिफारिश से नियुक्त हुआ था. ...र का पूरा ज्ञान और उस में रखी चीजों ...जानकारी उस की समझ से परे थी.

अपनी नालायकी छिपाने के लिए उस से यह कह दिया गया था कि जब ...सरे बाबू मौजूद नहीं हों तो किसी के कुछ ...ांगने पर कह देना, "स्टाक में नहीं है."

एक दिन कारखाने के मालिक ही अचानक दौरे पर आए. जब वह स्टोर में पहुंचे तो वही क्लर्क वहां मौजूद था. मालिक ने उस से अंगरेजी में पूछा, "तुम्हारे पिताजी का नाम क्या है?"

स्थिति को समझते हुए उस ने ...वाब दिया, "स्टाक में नहीं है."

—प्रेमप्रकाश

*

हमारे कार्यालय में एक नए कनिष्ठ लिपिक की नियुक्ति हुई. अधिकारी ने एक दिन उस से एक फाइल पर आलेख लिख कर लाने को कहा.

वह आलेख लिख कर फाइल अधिकारी के पास ले गया. अधिकारी ने कहा, "आप ने इस पर नोट तो लगाया नहीं."

लिपिक ने कहा, "श्रीमानजी, अभी वेतन नहीं प्राप्त हुआ है इसलिए नोट कहां से लगाता."

जब अधिकारी ने उसे नोट का अर्थ स्पष्ट किया तो वह भौचक्का रह गया.

—विपिनकुमार गुप्ता ●

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है. क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 और सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए :
संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपनी गीतांजलि का अंगरेजी अनुवाद आयरलैंडवासी अंगरेजी के महाकवि विलियम बटलर येट्स के पास भेज कर प्रस्तावना के दो शब्द लिख कर उसे प्रकाशित कराने का अनुरोध किया था. समूचे ब्रिटेन में येट्स प्रतिष्ठित राजकवि थे. श्री रवींद्रनाथ ठाकुर को नोबेल पुरस्कार मिलने के 10 वर्ष बाद 192... साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिला... येट्स के दो शब्द या प्रस्तावना के साथ गीतांजलि अंगरेजी में प्रकाशित हुई तो...

साहित्यिक प्रतिभा व रमणीयता का देश: आयरलैंड

लेख • अजयकुमार सिन्हा

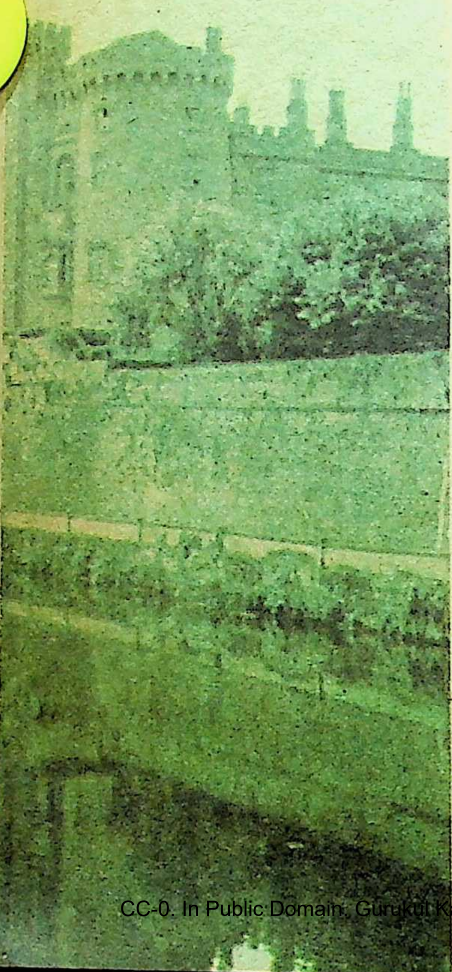

पाश्चात्य साहित्य जगत में तहलका मचा दिया.

भारत और आयरलैंड का ... सक्रिय व गहन राजनीतिक संबंध तो ... रहा है, पर साहित्य के माध्यम से उन... संबंध घनिष्ठ कहा जा सकता है. येट्स... लेखन में भारत के रहस्यवाद का प्रभाव... झलकता है. प्रसिद्ध अभिनेता अमि... बच्चन के पिता कवि हरिवंशराय बच्चन... इंगलैंड जा कर इसी विषय 'आकल्ट ... येट्स' पर शोधकार्य कर के डाक्टरेट ... की थी.

आयरलैंड की साहित्यिक प्रतिभा ... येट्स तक ही सीमित नहीं है. अने... आयरलैंडवासी लेखक व कहानीकार ... पर जाने जाते हैं. आयरलैंड का एक ... लेखक जेम्स जायस भी अंतरराष्ट्रीय ख्याति... का लेखक था. इस वर्ष (1982) में जायस... जन्म शताब्दी मनाई जा रही है. हाल ही... भारत के राष्ट्रपति ने आयरलैंड की यात्रा ... थी. उस घटना ने भारत से बहुत दूर पश्चिम... में स्थित इस द्वीप से उस के भावनात्मक... संबंधों को फिर से ताजा कर दिया.

सन 1921 तक आयरलैंड ब्रिटेन ...

ऐतिहासिक इमारतें पर्यटकों का आ... आकर्षण हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

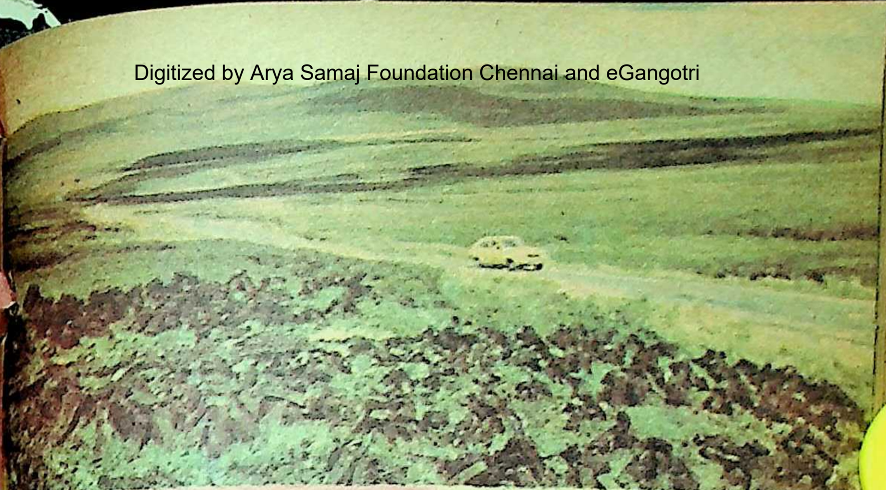

आयरलैंड में हरियाली और पहाड़ों के बीच सैर का आनंद ही कुछ और है.

आयरलैंड साहित्यिक प्रतिभाओं और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए तो प्रसिद्ध है ही पर इस की ऐसी कई अनेक विशेषताएं और हैं जिन से इस की अपनी अलग पहचान बनी हुई है.

अधीन था. उसे भी स्वाधीनता पाने के लिए डी वैलेरा के नेतृत्व में बड़ा संघर्ष करना पड़ा था. पिछले वर्षों में उत्तरी आयरलैंड के संघर्ष के समाचार भी प्रायः समाचारपत्रों में छपते रहे हैं और इस संघर्ष का ही फल था कि भारत के अंतिम वायसराय लार्ड माउंटबेटन को अपने प्राणों से हाथ धोने पड़े. आयरलैंड उत्तरी आयरलैंड से पृथक है. उत्तरी आयरलैंड अभी तक ब्रिटेन का ही हिस्सा है.

आयरिश लोग अधिकांशतः केल्ट जाति के हैं. केल्ट जाति के लोग मूलतः पश्चिमी फ्रांस के ब्रिटनी क्षेत्र के वासी थे और वे यहीं से ब्रिटेन जा कर बसे थे. ये लोग ब्रिटेन के पश्चिमी तटीय भाग वेल्स और आयरलैंड में बसे हुए हैं. ब्रिटेन की दूसरी जातियां ऐंग्लोसैक्सन व नारमन हैं. ब्रिटेन में सत्ता ऐंग्लोसैक्सनों के हाथ में रही है. नारमन लोग फ्रांस के नारमैंडी प्रांत से गए थे. ऐंग्लोसैक्सन लोग ब्रिटेन के शेष भागों में बसे हैं और ब्रिटेन में वे बहुसंख्यक हैं.

ये लोग केल्ट लोगों पर शासन करते रहे हैं. केल्ट लोग इसे पसंद नहीं करते. इसी लिए सन 1921 में आयरलैंड के स्वाधीन हो जाने के बाद से पश्चिमी ब्रिटेन के केल्ट भी ब्रिटेन से स्वाधीन होने के लिए आंदोलन चला रहे हैं. आए दिन वहां छिटपुट घटनाएं घटती रहती हैं. जब ब्रिटेन के मौजूदा युवराज चार्ल्स का 'प्रिंस आफ वेल्स' (ब्रिटेन के युवराज को वेल्स का राजकुमार कहते हैं) के रूप में अभिषेक हो रहा था तो उस समय वहां बम विस्फोट हुआ था. केल्ट लोगों ने इस प्रकार अपना विरोध प्रकट किया था.

कनाडा में भी फ्रांस से गए केल्ट जाति के लोगों और ऐंग्लोसैक्सनों में आपस में संघर्ष है. कनाडा के उत्तरी भाग (क्वेबेक आदि) में केल्ट बहुसंख्या में हैं. ये फ्रांसीसी बोलते हैं, फ्रांस के भूतपूर्व राष्ट्रपति जनरल दिगाल ने कनाडा की अपनी एक यात्रा के दौरान वहां के केल्ट लोगों को स्वाधीन हो जाने के लिए उकसाया तथा आंदोलन तेज करने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता मुक्ता विस्तार योजना में भाग लीजिए

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं किया फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. आज भी हजारों वर्ग मील भारतीय भूमि विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए बहुत बड़े पैमाने पर सामूहिक सहयोग और सद्भाव की आवश्यकता होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्थान, पूंजीपति या राजनीतिक दल से संबंधित नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रकार की सहायता स्वीकार करती है. यह केवल एक ही वर्ग की सहायता और बलबूते पर निर्भर है. और वह हैं सरिता के पाठक. इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्साहन से सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती है.

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी पूंजी सरकार का और देशी व विदेशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3–ई, रानी झांसी मार्ग, नई दिलली–110055.

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा था.

आयरलैंड व ब्रिटेन में परस्पर मनमुटाव होने का एक कारण यह भी है कि ब्रिटेन एक प्रोटेस्टेंट देश है जब कि आयरलैंड के लोग कैथोलिक हैं उत्तरी आयरलैंड में कैथोलिक व प्रोटेस्टेंट अनुयायियों के बीच काफी संघर्ष चलता है. वहां हिंसा की घटनाएं भी घटती रही हैं. आतंक फैलाने के लिए पत्रबमों का प्रयोग उत्तरी आयरलैंड के विद्रोहियों ने ही शुरू किया था. उत्तरी आयरलैंड के अल्सटर नगर का इस संबंध में प्रायः समाचारों में नाम आता था. यद्यपि उत्तरी आयरलैंड और आयरलैंड गणराज्य एक ही द्वीप पर हैं, किंतु आयररिश गणराज्य स्वाधीन है और उत्तरी आयरलैंड ब्रिटेन के अधीन है.

तराश कर और सुंदर बनाया गया प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटकों में मौजमस्ती भर देता है (दाएं), **आयरलैंड के नगर भी अत्यंत आकर्षक हैं** (नीचे).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

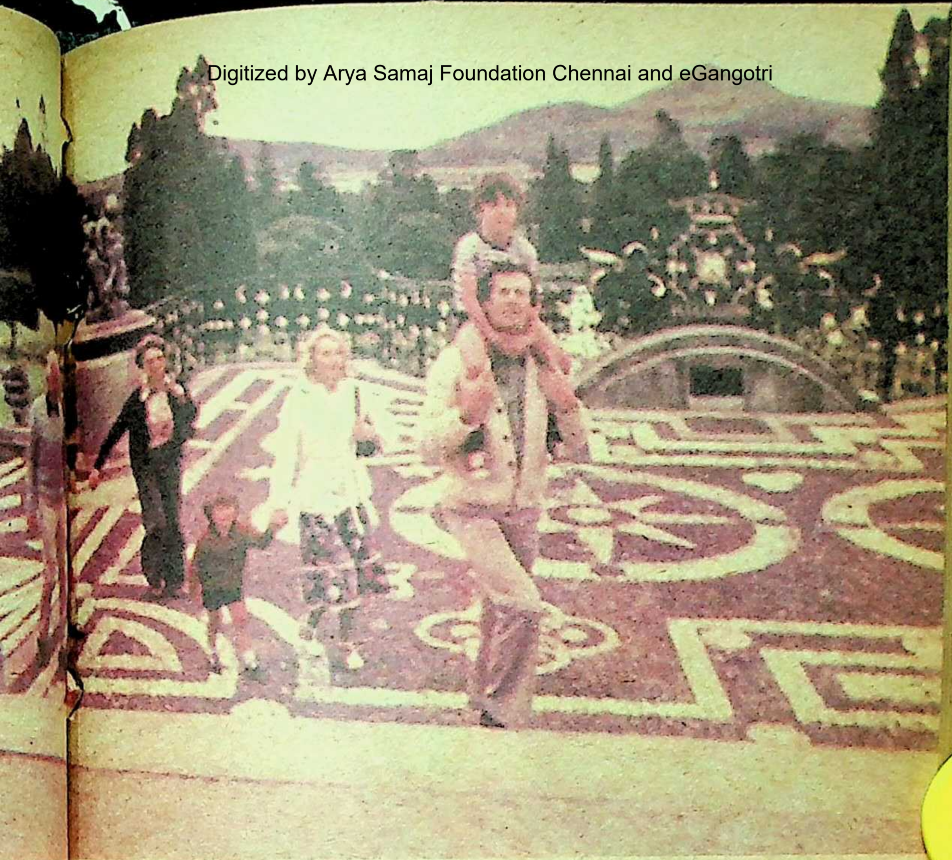

आयरलैंड के लोग अपने अत्यधिक स्नेह, मैत्रीभाव और आतिथ्य के लिए मशहूर हैं. भारत की ही तरह उन लोगों में भी पारिवारिक संबंध बड़े घनिष्ठ होते हैं.

संसार के प्रसिद्ध साहित्यकारों व लेखकों में येट्स सहित 16 लेखक आयरिश थे: इन में व्यंग्यकार जोनाथन स्विफ्ट (जिस की पुस्तक गुलिवर ट्रैवल्स दुनिया भर में प्रसिद्ध है), आस्कार वाइल्ड, जार्ज मूर, टामस मूर. आलिवर गोल्डस्मिथ, नाटककार जार्ज बर्नार्ड शा और सैमुअल बैकेट अधिक प्रसिद्ध हैं.

जार्ज बर्नार्ड शा को सन 1925 में साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिला था. सन 1876 में जार्ज बर्नार्ड शा डब्लिन से आ कर लंदन में बस गए थे. इस वित्ता भर के देश के तीन साहित्यकारों को नोबेल पुरस्कार मिल चुका है. येट्स व शा के अलावा तीसरे सैमुअल बैकेट है, जिन्हें 1969 में नोबेल पुरस्कार मिला.

आयरलैंड साहित्यिक प्रतिभा का ही देश नहीं, अत्यंत मनमोहक प्रकृति का भी देश है. यहां का देहात सुंदर हरियाली से ढका हुआ है. अपने हरेभरे कृषि क्षेत्र और चरागाहों के कारण इसे 'पन्ना द्वीप' (दी एमराल्ड आइलैंड) भी कहते है, क्योंकि पन्ना हरा होता है. समुद्र तटों के पास पर्वत हैं, दृश्यावलि अत्यंत मनोहर है. मध्ययुगीन दुर्ग, गिरजाघर, पाषाण काल के स्मारकों के भग्नावशेष इस देश को और आकर्षक बनाते है.

राजधानी डबलिन अपना विशिष्ट व्यक्तित्व लिए हुए है. यद्यपि यह नगर आधुनिक और सार्वदेशिक स्वरूप लिए हुए है, पर इस की जार्जियन वास्तुकला वाली इमारतें 18 वीं सदी का वातावरण प्रदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीमतें कम करने के लिए :
• सरकारी खर्च कम हो
• करों में कमी हो

बढ़ती हुई कीमतों की मूल वजह (और प्रायः एकमात्र) सरकार द्वारा आवश्यकता से ज्यादा खर्च किया जाना (करों व ऋणों से प्राप्त आय की तुलना में ज्यादा व्यय) और उस घाटे को पूरा करने के लिए नए करेंसी नोट छापना तथा माल व सेवाओं पर नएनए कर थोपना है.

हर नया नोट, हर नया कर माल व सेवाओं की कीमत में तुरंत वृद्धि कर देता है, जिस की वजह से सरकारी खर्च में और अधिक वृद्धि आवश्यक हो जाती है. इस वृद्धि की भरपाई के लिए फिर नए नोट छपते हैं, फिर नए कर लगते हैं और इस से कीमतें लगातार बढ़ती जाती हैं.

राजनीतिबाज बढ़ती हुई कीमतों का सारा दोष उत्पादकों व व्यापारियों के जिम्मे मढ़ कर आम लोगों को धोखा देने की कोशिश करता है, यह अच्छी तरह से जानते हुए भी कि करों द्वारा बढ़ी लागत उत्पादक और व्यापारी अपनी जेब से पूरी नहीं कर सकते. उन्हें चीजों के दाम बढ़ाने ही पड़ते हैं. आम लोगों के हाथ में अतिरिक्त धन आने से भी वस्तुओं की मांग ज्यादा बढ़ जाती है जिस से कीमतें भी और बढ़ जाती हैं.

इस के साथ ही राजनीतिबाजों की अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए, अपनी पार्टियों को चलाने के लिए और चुनाव लड़ने के लिए काले धन की मांग भी जुड़ जाती है. यह रकम सिर्फ माल व सेवाओं की कीमत से ही प्राप्त हो सकती है. इस प्रकार कीमतें और ज्यादा से ज्यादा बढ़ती जाती हैं.

कभीकभी यह कहा जाता है कि ज्यादा उत्पादन से कीमतें बढ़ना रोका जा सकता है. लेकिन अगर कहीं कोई ज्यादा उत्पादन होगा तो वह कच्चे माल और सेवाओं पर बढ़े हुए करों की वजह से ज्यादा कीमत पर ही होगा. इसलिए बढ़े हुए उत्पादन से भी कीमतें कम नहीं होंगी.

कीमतें कम करने के लिए
• करों में कमी कीजिए
• सरकारी खर्च कम कीजिए

इस के अलावा और कोई रास्ता नहीं है

करती
महाने
फीनि
डवलि
की मु
करती
इमार
चौक
गए थे
कोर्क
है. अ
से स
भाषा
यद्यपि
पर अ
भाषा
मूल
है. अ
कोमल
सामा
परंप
ब्रिटेन
पड़ोस
उद्यो
मुख्य
आलू
हजा
मुक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

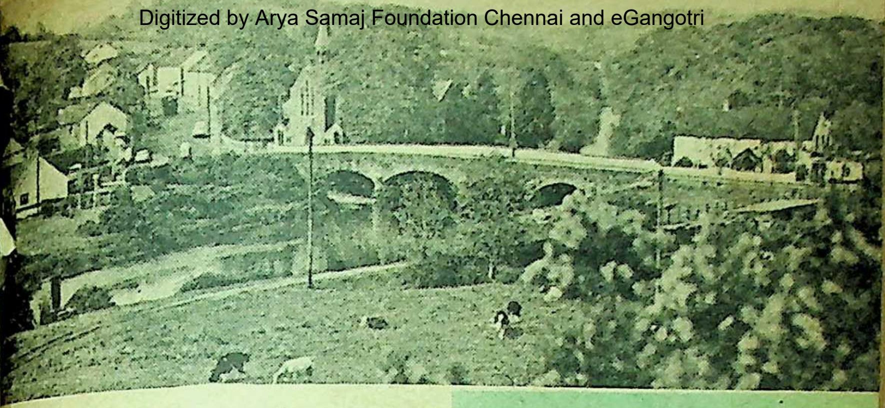

आयरलैंड के नगरों की छटा देखते ही बनती है.

करती हैं. यह नगर पूर्वी तट पर लिफे नदी के मुहाने पर स्थित है. विकलो पर्वत और फीनिक्स पार्क नगर के बहुत ही निकट है. डबलिन दुर्ग और सेंट पैट्रिक्स कैथेड्रल यहां की मुख्य इमारतें हैं, जो पर्यटकों को आकर्षित करती हैं. बैगोट स्ट्रीट की 18 वीं सदी की इमारतें बड़ी सुंदर हैं. इस नगर में अनेक सुंदर चौक हैं जो प्रायः सभी 18 वीं सदी में बनाए गए थे.

आयरलैंड का दूसरा सब से बड़ा नगर कोर्क है. यह भी डबलिन जितना ही आकर्षक है. आयरलैंड का लोक साहित्य यूरोप में सब से समृद्ध है. यह साहित्य प्राचीन आयरिश भाषा में है. इस साहित्य का विषय परियां हैं. यद्यपि आयरलैंड में अंगरेजी बोली जाती है, पर अनेक क्षेत्रों में आयरिश या गावलिक भाषा भी बोली जाती है, जो यहां के लोगों की मूल भाषा है. उन क्षेत्रों को गायेलटाट कहते हैं. आयरिश भाषा बड़ी मधुर, सुरीली व कोमल है. इन क्षेत्रों में आयरलैंड की सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषागत परंपराएं सुरक्षित हैं.

32,24,000 की जनसंख्या वाला तथा ब्रिटेन के पश्चिम में स्थित उस का यह पड़ोसी देश कृषिप्रधान देश है. कृषि से संबद्ध उद्योग यहां के मुख्य उद्योग हैं. आलू यहां की मुख्य उपज है. सन 1840 में आयरलैंड में आलू का भीषण अकाल पड़ा था जिस में हजारों व्यक्ति मर गए थे और लाखों देश

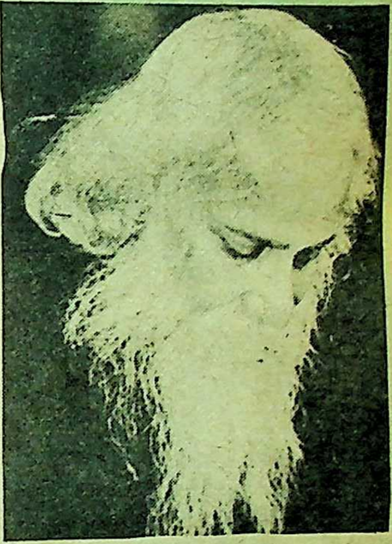

रवींद्रनाथ टैगोर : आयरलैंड की साहित्यिक संपन्नता को मान्यता दी.

छोड़ कर दूसरे देशों में जा बसे थे. इसी अकाल के दौरान अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति जान फिट्स जेराल्ड कैनेडी के दादा आयरलैंड से अमरीका जा बसे थे. जब राष्ट्रपति कैनेडी ने आयरलैंड की यात्रा की थी तो वहां वह अपनी एक मात्र रिश्तेदार महिला से मिलने भी गए थे.

आयरलैंड उद्योग के क्षेत्र में ज्यादा विकसित नहीं है. यहां पर रोजगार के अवसर बहुत कम हैं. इसी लिए यहां के लोग बड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

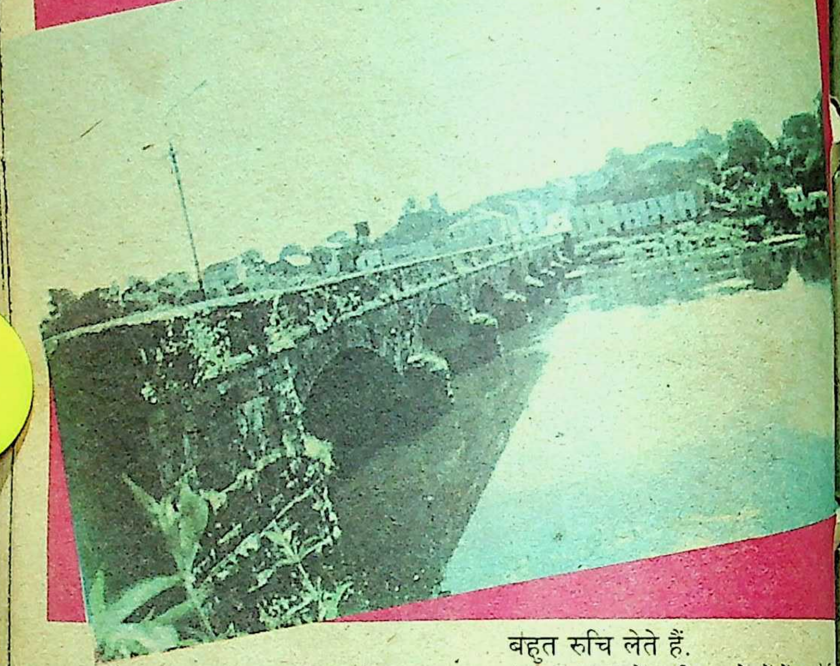

आयरलैंड की प्राकृतिक सुंदरता ने भी वहां के साहित्यकारों को बहुत कुछ लिखने पर विवश किया है.

संख्या में (15 लाख) रोजगार के लिए ब्रिटेन और अमरीका में जा बसे हैं. यद्यपि आयरलैंड एक सुंदर देश है, किंतु यह अमीर देश नहीं है. यहां आतिथ्यसत्कार की परंपरा बड़ी ऊंची है. यहां की सरकार पर्यटन को बहुत महत्त्व व बढ़ावा दे रही है, ताकि यहां के प्राकृतिक सौंदर्य का आर्थिक आय के लिए पूरापूरा लाभ उठाया जा सके.

आयरलैंड अपने ट्वीड (कोट का ऊनी कपड़ा) के लिए मशहूर है जो डोनिगल नामक स्थान पर विशेष रूप से बनाया जाता है. इसी प्रकार वाटरफोर्ड नामक स्थान पर बारीक शीशे का काम होता है. आयरलैंडवासी घोड़ों को बहुत पसंद करते हैं और घोड़ों पर चढ़ने और घुड़दौड़ आदि में बहुत रुचि लेते हैं.

आयरलैंड भी उन देशों में रहा है, जि का ब्रिटेन ने खूब शोषण किया है और ब उस पर शासन किया है. किंतु ब्रिटेन आयरिश लोगों (प्रवासियों) को बड़ी संख्या रोजगार मिला है. यह उसी पुराने संबंधों नतीजा है. ज़ार्ज बर्नार्ड शा जैसे प्रतिभाशा लेखक को भी रोजी के लिए लंदन आ क बसना पड़ा था. यहीं उन्हें सब कुछ मि इसी प्रकार येट्स को भी ब्रिटेन में ही सब कु मिला. किंतु फिर भी ये प्रतिभाशाली व्य आयरिश परंपरा को सुरक्षित रखे रहे. इ कारण कम से कम प्राचीन परंपराओं औ लोक साहित्य की दृष्टि से आयरलैंड ब समृद्ध है. ये उस के प्राकृतिक सौंदर्य में च चांद लगाते हैं.

आयरिश राष्ट्रपति के पद को कई सुशोभित करने वाले डी वैलेरा भारत स्वाधीनता आंदोलन के प्रबल समर्थक उन का नेताजी सुभाषचंद्र बोस और मह गांधी से गहरा संपर्क रहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यादों के दीप

वादों की शाम ढले,
यादों के दीप जले.

आंखों के मयखाने,
दिलों का जुआ था.
दस्तूर ए दीवाली,
प्यार सा हुआ था.
जगमग टिमटिम करते,
धरती आकाश मिले.

बातों की फुलझड़ियां,
हंसी के पटाखे,
विश्वासों के अनार
खुशी के धमाके.
हलकी कंदीलों में
भारी संदेह पले.

मन के लड्डू बिखरे,
अश्क से बतासे.
परवाने बिन सूने,
शमा के तमासे.
उजियारे में छिप कर
अंधियारा हाथ मले.

—हरिशचंद्र पाठक

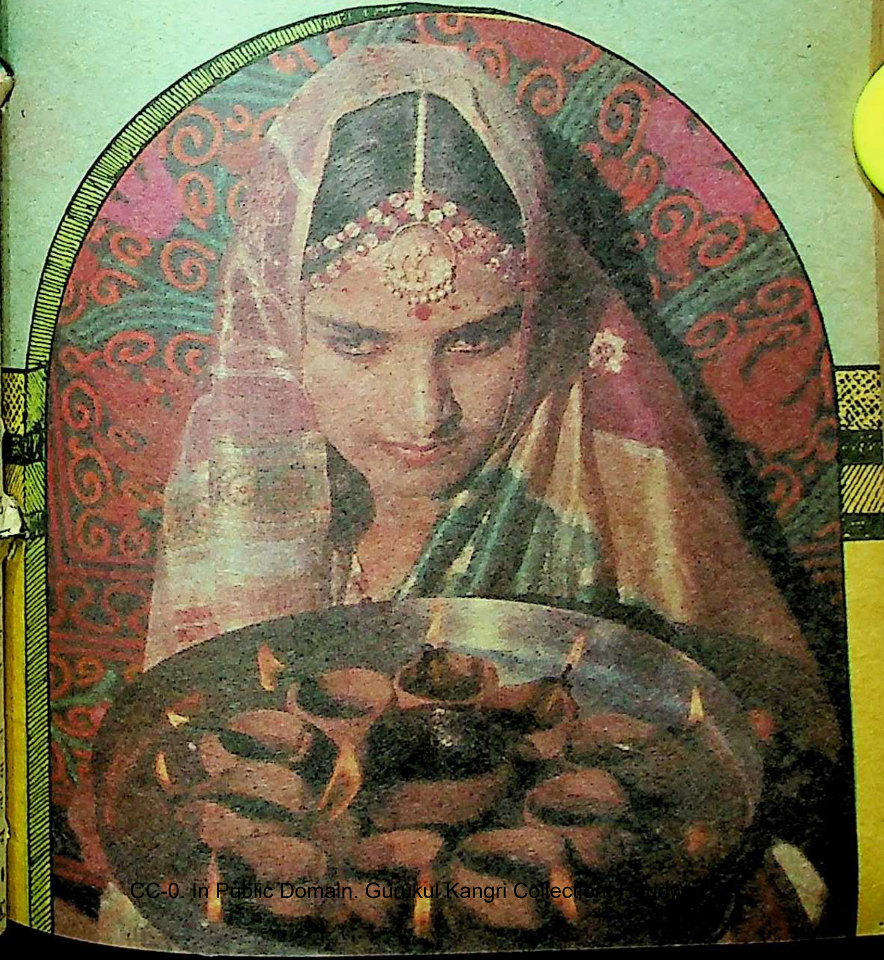

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए पी.एफ. का जन्म

कहानी • संतोष कुमार

एक जमाना था जब पालिटेक्नीक में प्रवेश के लिए आज की तरह बड़ी प्रतिस्पर्धा न थी. उस समय जो लड़के इंजीनियरी में नहीं जा पाते थे अथवा उस में उन्हें प्रवेश नहीं मिलता था, वही पालिटेक्नीक में अपने अभिभावकों की गाढ़ी कमाई का सदुपयोग करने पहुंच जाते थे. इंटरमीडिएट में कंपार्टमेंट आने पर जब मैं किसी भी डिगरी कालिज में प्रवेश पाने का हकदार न रहा तो पिताजी ने मुझे पालिटेक्नीक में भरती हो जाने को कहा. मुझे क्या था, मुझे तो जिंदगी के चंद साल ... करने थे. मेरे लिए कोई फर्क न था, चाहे ... पंडित पृथ्वीनाथ डिगरी कालिज हो अ... लाला लल्लूलाल पालिटेक्नीक.

तब पालिटेक्नीक वालों के मजे ... हलनुमा ड्राइंग टी लिए हुए जब ... पोलिटेक्नीक छात्र (भावी जूनियर इंजीनि... हालांकि पहले ...मैन या ओवरसियर ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते थे) जब सड़क पर किसी ट्रक को इशारा देता तो ट्रक वाला इज्जत के साथ उसे पालिटेक्नीक ले जाता था. कई बार यदि 10 मिनट तक उधर से आने वाली बस न मिलती तो वह स्टेशन जाने वाली बस में ही चढ़ जाता और फिर बिना टिकट और अपने शरीर से ड्योढ़ी जगह घेर कर वापसी बस से पालिटेक्नीक आता. जब कि किसी और व्यक्ति के लिए बस रुकेगी, यह भी निश्चित नहीं था.

मैं ने भी पालिटेक्नीक में प्रवेश लिया. हम नए लोगों को वरिष्ठ छात्र और नवागंतुक छात्र का रिश्ता और रैंगिग का महत्त्व पूरी तरह से समझाया जा रहा था. कक्षाएं अभी तक विधिवत नहीं लगी थीं कि दो दिन बाद ही जी.एफ. की घोषणा कर दी गई. जी.एफ. यानी जनरल फूटिंग. (छात्रों ने 'फूटिंग' शब्द की रचना हिंदी के शब्द 'फूटो' से की थी, जिस का अर्थ होता है-यहां से चले जाओ) कालिज के चारों ओर के मार्गों पर वरिष्ठ छात्रों ने नाकेबंदी कर ली. जी.एफ. का मतलब था कि एक निर्धारित अवधि तक कोई भी कालिज नहीं जाएगा. दूसरे शब्दों में न पढ़ना चाहने वाले छात्र तो जाएंगे ही नहीं और जो पढ़ना चाहते हैं, उन्हें भी जाने नहीं दिया जाएगा. वरिष्ठ छात्रों के इस आदेश का उल्लंघन करने वालों को मारपीट से मुर्गा बना कर नंगा कर के सड़क पर घुमाने आदि की सजाएं निर्धारित की गईं. ये सजाएं रैंगिग के रूप में हम लोग पहले से ही सह रहे थे.

एक महीने की जी.एफ. की अवधि के बाद हम लोग निश्चित तिथि को कालिज पहुंचे. कुछ लोग दोतीन दिन बाद पहुंचे. पता चला कि सब पी.एफ.पर थे. पी.एफ. यानी परसनल फूटिग (व्यक्तिगत रूप से कालिज न आना). इस जी.एफ. के दौरान सर्वे को छोड़ कर सभी विषयों में सभी छात्रों की उपस्थिति 80 प्रतिशत से ऊपर थी. कालिज का नाम कौन डुबोए, प्रधानाचार्य के भी यही निर्देश थे. केवल सर्वे के व्याख्याता शरदेंदु, जो नएनए आए थे और कुछ ज्यादा ही ईमानदार थे, अपने उपस्थिति रजिस्टर में बाकायदा सभी विद्यार्थियों की अनुपस्थिति दिखा रहे थे. जब जी.एफ. के बाद उन्होंने कक्षा ली तो स्पष्ट कर दिया कि वह प्रधानाचार्य को लिख कर देंगे कि हम लोगों का सर्वे का पाठ्यक्रम किसी भी तरह पूरा नहीं हो सकता. सर्वे का पीरियड मध्यावकाश के बाद था.

कक्षा समाप्त होने पर कालिज के छात्र नेताओं ने प्रधानाचार्य के पास जा कर शिकायत की कि वर्षों से चला आ रहा जी.एफ. का उन का 'जन्मसिद्ध' अधिकार क्यों छीना जा रहा है. प्रधानाचार्य महोदय ने कहा, ''यह भी आप लोगों की तरह कालिज से निकला छोकरा है. नया खून है. आप जानें, आप का काम, मैं कुछ नहीं कर सकता.''

सब छात्र उस दिन तो घर चले गए, पर दूसरे दिन मध्यावकाश में फिर बैठक हुई और जी.एफ., पी.एफ. के जन्मदाताओं ने एक नए पी.एफ. को जन्म दिया. यह निर्णय हुआ कि अब तक हम जनरल फूटिंग, परसनल फूटिंग करते रहे. अब पी.एफ. यानी पीरियड फूटिंग करेंगे. उसी दिन से शरदेंदु साहब की कक्षा में उपस्थिति शून्य हो गई. मध्यावकाश के बाद

यों तो अध्यापक शरदेंदुजी छात्रों के प्रति कड़ा रुख अपनाए हुए थे पर जब छात्रों ने नए पी.एफ. को जन्म दिया तो उन का रवैया एकदम नम्र क्यों पड़ गया? आखिर क्या था यह पी.एफ.?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक घंटा और कैंटीन में गुजरने लगा.

पूरी कक्षा ने प्रधानाचार्य महोदय को लिख कर दे दिया कि शरदेंदु साहब कहते हैं, "मुझ से ट्यूशन पढ़ो. जो ट्यूशन नहीं पढ़ेगा, उस की उपस्थिति रजिस्टर में कम कर के उसे परीक्षा में नहीं बैठने नहीं दिया जाएगा." यह क्रम 15 दिन तक चला. प्रधानाचार्य लड़कों के दबाव में थे ही. लड़के अन्य प्राध्यापकों की कक्षाओं में नियमित रूप से जा रहे थे, किंतु शरदेंदु साहब की कक्षा में उपस्थिति शून्य थी. पहली नौकरी और पर ही धब्बा. शरदेंदु साहब की गति छछूंदर की सी हो गई.

15 दिन बाद प्रधानाचार्य के कहने सब लोग शरदेंदु साहब की कक्षा में ग शरदेंदुजी ने उपस्थिति ली और फिर क "कृपया अब आप लोग नियमित रूप से क में आएं. अब आप का पाठ्यक्रम व उपस्थि दोनों पूरे हो जाएंगे." पूरी कक्षा ठहाकों गंज उठी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतरिक्ष कार्यक्रमों का औचित्य

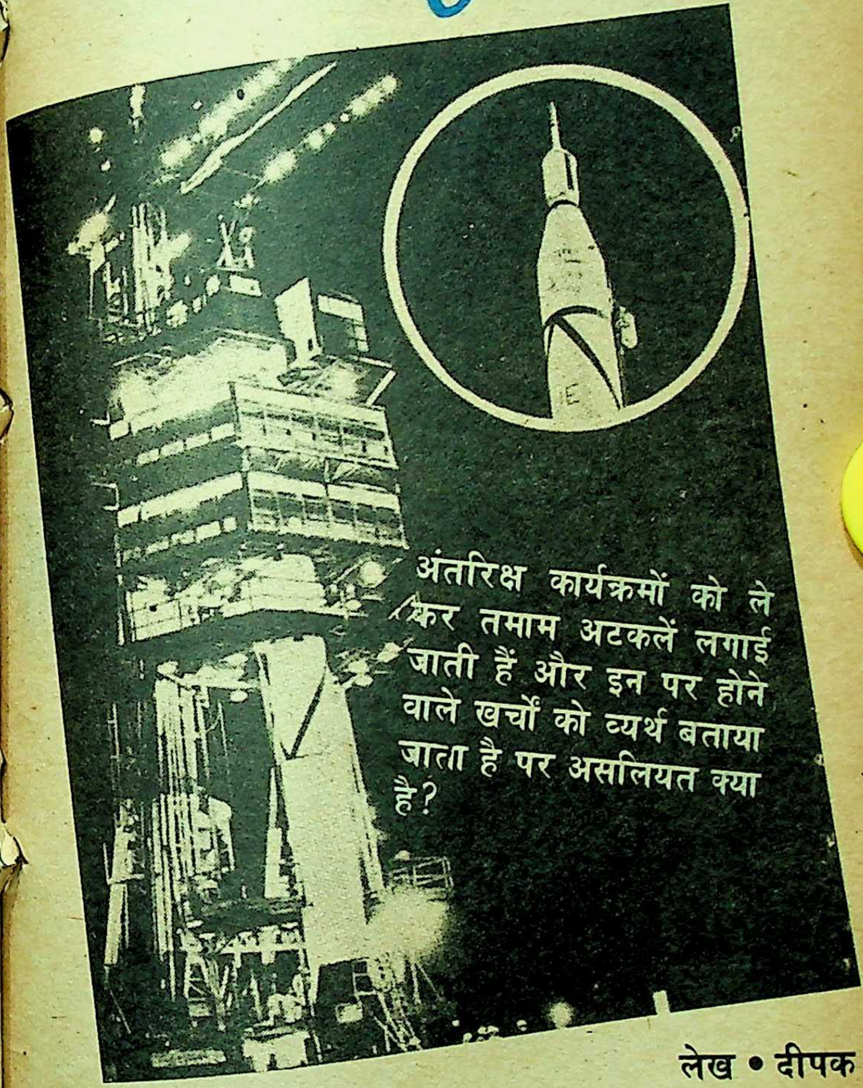

लेख • दीपक

बहुत से लोग अंतरिक्ष कार्यक्रमों को अनावश्यक खर्चों की श्रेणी में रखते हैं. ऐसे लोगों का कहना है कि खास तौर पर विकासशील देशों को पहले अपनी मूलभूत समस्या (यानी जनता के रहनसहन का स्तर उठाना) को हल करना चाहिए और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राकेट उस के बाद उड़ाने चाहिए. इस प्रवृत्ति के लोग विकसित देशों में मौजूद हैं, उन का कहना है कि यह कैसी विडंबना है कि वैज्ञानिक लोग तो अपना अधिकांश समय, धन, बुद्धि और श्रम चांद पर झंडा गाड़ने और अंतरिक्ष में अनुसंधान करने में खर्च कर रहे हैं, जब कि इसी धरती पर कितने ही देशों में लोग भूखों मर रहे हैं.

इस से इनकार नहीं किया जा सकता कि ऐसे लोगों का कहना गलत नहीं है. इस में भी शक नहीं कि ये लोग मानवतावादी आदर्शों से प्रेरित हो कर ही ऐसा कहते हैं. लेकिन अंतरिक्ष कार्यों के बारे में उन्हें निश्चय ही कोई गलतफहमी हो गई है. अगर उन्हें इस बात की जानकारी दी जाए कि अंतरिक्ष कार्यक्रमों से मानव समाज को क्या लाभ पहुंचे हैं तो निश्चय ही वे अपना रवैया बदल लेंगे.

1970 में जांबिया के काबवे नामक शहर में कार्यरत मिशनरी सिस्टर मेरी जुकुंडा ने अमरीकी प्रशासन के विज्ञान विभाग के उपनिदेशक डा. अर्नेस्ट स्टुलिगर को एक पत्र लिख कर अंतरिक्ष कार्यक्रमों का औचित्य जानना चाहा था. डा. स्टुलिगर ने उन्हें 10 पन्नों का विस्तृत और सद्भावपूर्ण पत्र लिख कर जवाब दिया.

अंतरिक्ष कार्यक्रमों पर होने वाले खर्च को ले कर चिंतित होने वाले लोगों का दृष्टिकोण कई जगहों पर- वस्तुतः बड़ा संकुचित है. इसलिए स्वाभाविक है कि जवाब उन्हें जरा कठोर लगे.

डा. स्टुलिगर ने अपने पत्र की शुरुआत एक सच्ची कहानी से की. चार सौ वर्ष पूर्व जरमनी के एक छोटे से शहर में एक आदमी का शौक लेंस बना कर उन से खिलवाड़ करना था. पड़ोसी तो उस का मखौल उड़ाते थे लेकिन वहां के काउंट को न जाने क्या सूझी कि उस ने न केवल उस आदमी को अपने महल में ही रहने को आमंत्रित किया, बल्कि उस के लिए कुछ तनख्वाह भी मुकर्रर कर दी. लोगों ने काउंट को उस की बेवकूफी और फजलखर्ची के लिए कोसा. इसी दौरान वहां प्लेग फैल गया. लोगों ने कहा कि काउंट [illegible] की रोकथाम न कर उस आदमी पर [illegible] खर्च कर रहा है. बाद को वह [illegible] माइक्रोस्कोप (सूक्ष्मदर्शी) का आविष्कार [illegible] हुआ. प्लेग की रोकथाम में सूक्ष्मदर्शी ने [illegible] चल कर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई- [illegible] की बदौलत प्लेग का टीका बन सका. काउंट [illegible] अपना खजाना लुटा कर भी प्लेग की [illegible] रोकथाम न कर पाता.

उपर्युक्त घटना शोधकार्य पर हुए [illegible] (जो आगे चल कर सार्थक सिद्ध होता है) [illegible] बहुत अच्छा उदाहरण है. अब आइए, [illegible] असली मुद्दे पर आएं.

अमरीका का वार्षिक बजट दो सौ [illegible] डालरों से भी अधिक का होता है. अंतरिक्ष [illegible] कार्यक्रमों पर इस का 1.6 प्रतिशत से ज्यादा खर्च नहीं किया जाता.

यहां यह गौर करना चाहिए [illegible] अमरीका ही नहीं अन्य विकसित देशों में [illegible] सिगरेट, शराब और सैकड़ों किस्मों के [illegible] प्रसाधनों पर इस से कहीं ज्यादा खर्च होता [illegible]

अंतरिक्ष कार्यक्रम: विरोध के स्वर [illegible]

वैज्ञानिकों ने यह साबित कर दिया है [illegible] कितने ही सौंदर्य प्रसाधन स्वास्थ्य के लिए [illegible] अत्यंत हानिकारक हैं. अंतरिक्ष कार्यक्रमों का [illegible] विरोध करने वाले इन उद्योगों के मालिकों [illegible] क्यों नहीं कहते कि "बंद करो यह सब [illegible] सारा पैसा संयुक्त राष्ट्र संघ को दे दो [illegible] अंतरिक्ष कार्यक्रमों के दौरान [illegible] टेक्नालाजी ने मानव समाज को क्या क्या दिया [illegible] है, इस का उल्लेख तो आगे चल कर किया [illegible] जाएगा, लेकिन क्या अंतरिक्ष कार्यक्रमों का [illegible] विरोध करने वाले बताएंगे कि समाज को [illegible] सिगरेट, शराब आदि से क्या हासिल हुआ [illegible]

इस धरती पर भूख और बेकारी [illegible] हैं जब किसी ने अंतरिक्ष कार्यक्रमों की बात [illegible] दूर साइकिल भी नहीं देखी थी. लेकिन तब [illegible] दसियों देशों की सरकारों ने बीसियों लड़ाइयों [illegible] में आज अंतरिक्ष कार्यक्रमों पर हो रहे खर्च [illegible] कहीं ज्यादा खर्च कर डाला था. आज [illegible] सेनाओं पर बेहिसाब खर्च हो रहा है [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोकना कहीं ज्यादा जरूरी है और क्या आप सोचते हैं कि अंतरिक्ष कार्यक्रमों पर होने वाला खर्च बंद कर के आप धरती से भूख, अशिक्षा वगैरह सब कुछ एकबारगी खत्म कर देंगे? बिलकुल नहीं. सच तो यह है कि राकेटों के इस जमाने में उपजी टेक्नालाजी इस धरती से अकाल, बाढ़ वगैरह दूर करने में ज्यादा मदद दे सकती है और दे रही है.

विकासशील देशों का दुर्भाग्य है कि वहां अंतरिक्ष या परमाणु कार्यक्रमों पर हो रहे खर्च से ज्यादा सरकारी पैसा तो हर साल दफ्तरों के अफसर व बाबू मार लेते हैं. अगर इस पैसे को बचाया जा सके तो उन के विकास कार्यों में ज्यादा मदद मिलेगी.

अब हम यह देखें कि अंतरिक्ष कार्यक्रमों से मानव समाज को क्या हासिल हुआ है. यह

अंतरिक्ष विज्ञान के जनक डा. गोडार्ड अपने एक प्रारंभिक राकेट के साथ.

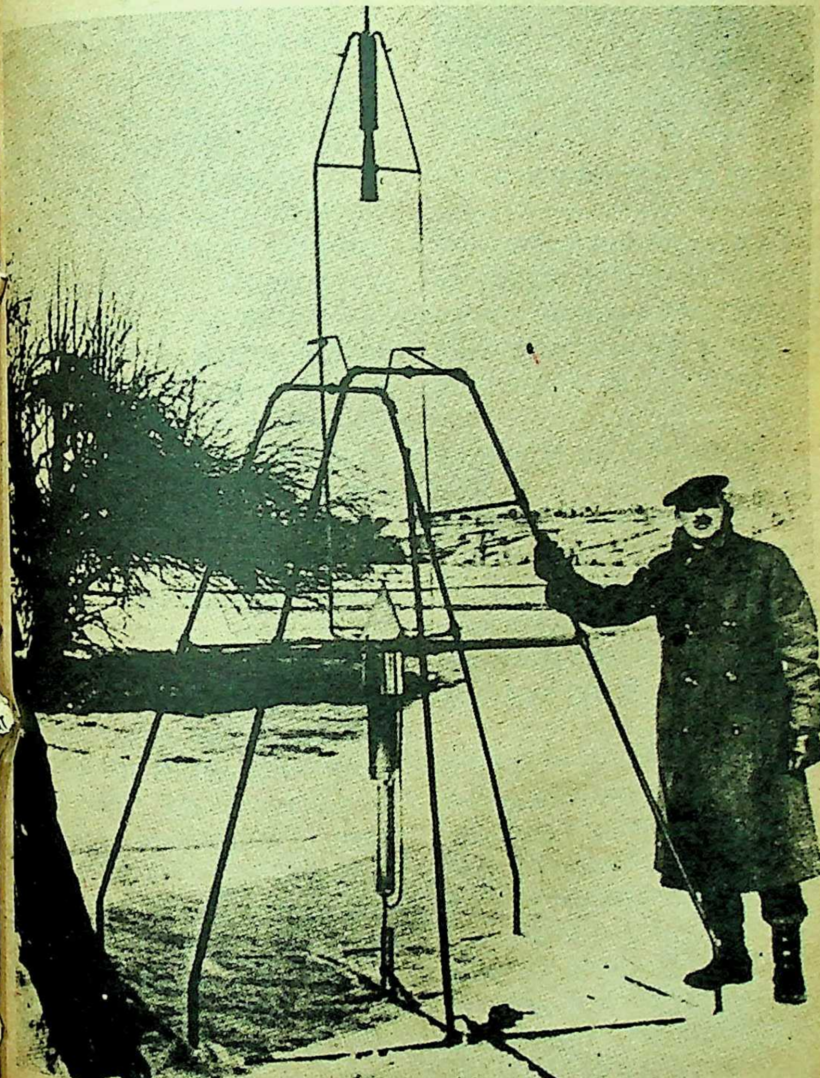

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

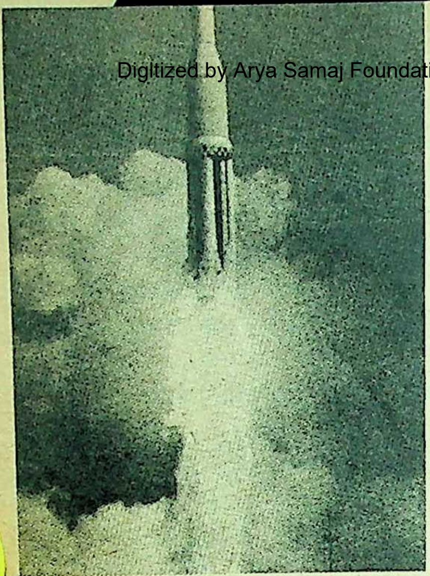

चांद की ओर सैटर्न शृंखला का प्रारंभ

तो ठीक है कि राकेट उड़ाने से जमीन पर खड़े आदमी को कुछ नहीं मिलता, लेकिन यह सच है कि राकेट उड़ाने में प्रयुक्त और उस दौरान विकसित टेक्नालाजी का जब विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता है तो उस से ठोस लाभ होता है.

इन लाभों में से कुछ खासखास इस प्रकार हैं :

उपग्रहों द्वारा मौसम की जानकारी और भविष्यवाणी.

ऐसे उपग्रह न केवल विशाल इलाकों में फैली खेती की स्थिति का सहीसही जायंजा ले सकते हैं बल्कि यह भी बता सकते हैं कि कहां की फसल रोगग्रस्त है, कहां जलक्षरण या भूमिक्षरण हो रहा है आदि.

उपग्रहों से नदियों और महासागरों के तल में बैठती तलछट की स्थिति और पानी के रुख का अंदाज लगाया जा सकता है. यहां ज्ञातव्य है कि बाढ़ आने की एक वजह हमारी नदियों के तल में अत्यधिक तलछट जम जाने से उन का उथला हो जाना भी है.

अंतरिक्ष प्रयोगशालाओं में उपलब्ध गुरुत्व हीनता की अवस्था में अत्यंत शुद्ध धातुओं का निर्माण संभव है और किया जा रहा है. इन अत्यंत शुद्ध धातुओं का प्रयोग ... उद्योग में हो रहा है, जि... महत्त्व से आज सभी परिचित हैं.

अंतरिक्ष यात्रियों के सूट में प्र... पदार्थों से अब फायर ब्रिगेड के कर्मचारि... वस्त्र बनने लगे हैं, जिन पर आग का ... असर नहीं होता. अमरीका की ड्यूरे... फाइप्रो कंपनी द्वारा निर्मित इस वस्त्र ... प्रयोग ह्यूस्टन शहर में शुरू हो गया है.

अंतरिक्ष यात्रियों के स्वास्थ्य की नि... खबर रखने वाले उपकरण अब हस्पता... आ गए हैं. इन का उत्पादन कनेक्टि... यूनाइटेड एयरक्राफ्ट कारपोरेशन ने कि... है. आर.के.जी. मानिटर सिस्टम नामक ... उपकरण एक साथ चार मरीजों ... कार्डियोग्राम ले कर रिकार्ड कर सकता ... मरीज चाहे चल फिर क्यों न रहा हो, अ... उस के दिल की दशा में कोई ऐसा परिव... आता है जिस की खुद उसे खबर न हो तो ... यंत्र टेलीमीटरी से डाक्टर को खबर दे दे...

ये तो खैर कुछ ही उदाहरण हैं, ... बातें अभी प्रयोगाधीन हैं. कुछ समय बा... भी लोगों को सुलभ हो जाएंगी.

भारत में तो अभी अंतरिक्ष कार्यक्र... पर बहुत कम खर्च हो रहा है. वैसे जो भी ... हुआ है उस के परिणाम सामने हैं ही.

विख्यात लेखक और वैज्ञानिक आ... चार्ल्स क्लार्क ने एक बार कहा था कि अंत... कार्यक्रमों की प्रगति संकीर्ण राष्ट्रवाद ... कमजोर करेगी. इस का सब से अ... उदाहरण अपोलो-13 की दुर्घटना के स... देखने में आया. उस समय सोवियत सं... अपने देश के तमाम सूक्ष्मतरंग के रेडि... प्रसारण स्थगित कर दिए ताकि अपोलो-... को अपने केंद्र से संपर्क स्थापित करने ... कठिनाई न हो और दुनिया भर के समु... बिखरे अपने तमाम सैनिक असैनिक जहा... को आदेश दिया कि वे यदि अपोलो-13 ... गिरते देखें तो उस की तत्काल मदद क...

हमें उम्मीद करनी चाहिए कि अंत... का सैनिक उपयोग नहीं होगा और उस ... टेक्नालाजी द्वारा हम एक बेहतर दुनिया ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैवाहिक रूप में समाज में उनकी कुछ भी
स्थिति हो. गर्भपात करवाना सभी
स्त्रियों के लिए कानूनन उपलब्ध है।(18 वर्ष से
कम की आयु हो तो अभिभावक की इच्छा से)
कृपया हमारी कम कीमत, विश्वस्त, तेज,
सुरक्षित जाँच के विषय में पूछताछ करें।

100/-रू शुल्क करके

गर्भपात

मुफ्त परिवार नियोजन सलाह, मशवरा
तथा गर्भनिरोध

अब नई आयातित टेक्नॉलोजी द्वारा पुरूषों/महिलाओं की तुरन्त, सरल व सुरक्षित नसबन्दी। न रातभर क्लीनिक में ठहरना, न कोई दर्द, न ही आराम की आवश्यकता।

एम० एस० एस० एक लाभनिरपेक्ष व्यवसायिक सोसाईटी है। एम० एस० एस० कल्याणकारी वातावरण में सुरक्षित, गुप्त, किफ़ायती तथा आधुनिक सन्तति–निरोधक सेवाएं उपलब्ध कराने में समर्पित है।

नवीन तथा आधुनिक तकनीकी सहायता से अब तक एम० एस० एस० 1,00,000 से भी अधिक स्त्री–पुरूषों को सफलतापूर्वक सन्तति निरोधक विधियां अपनाने तथा परिवार को नियमित रखने में सहायक सिद्ध हुई है।

अधिक जानकारी एवं तुरंत सेवा के लिए हमारे निम्नलिखित किसी भी क्लीनिक में मिलें अथवा सम्पर्क करें 9 बजे से 5 बजे तक
(करोल बाग – 8 बजे से 7 बजे तक)
• करोल बाग में 125/-रू

स्थापित 1921
लन्दन

मेरी स्टोप्स सोसाईटी क्लीनिक

करोलबाग नई दिल्ली	5439, आर्यसमाज रोड़, (सब्जीवाला तथा किकर वाला चौक के बीच) फोन: 561459, 566739 **रविवार की छुट्टी**
शाहदरा दिल्ली	शाहदरा नर्सिंग होम, 10906, 6 सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा **रविवार की छुट्टी**
नांगलोई दिल्ली	न:4 अशोक मोहल्ला(राजमार्ग 10 बहादुरगढ़/रोहतक के लिए) फोन : 87483 पी. पी. **मंगलवार की छुट्टी**
आगरा	1154, बाग मुज्जफरखान (रास्ता सेन्ट जोन्स कालेज से रघुनाथ टाकिज) फोन: 65530 **बृहस्पतिवार की छुट्टी**
जयपुर	21 मिशन कम्पाउन्ड, हाथरोई, अजमेर रोड, फोन: 79943 **बृहस्पतिवार की छुट्टी**
कलकत्ता	27, मिर्ज़ा ग़ालिब स्ट्रीट दूसरी मंजिल (पूर्व फ्री स्कूल स्ट्रीट) फोन: 214005 **बुधवार की छुट्टी**

3M

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

चूहों से लाखों का नुकसान

मध्य प्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम भंडार की नौ लाख रुपए मूल्य की पुस्तकें चूहे खा ग... यह भी पता चला है कि चूहों ने दो लाख रुपए मूल्य की छपाई का कागज और दो लाख रु... मूल्य के मुद्रित मुखपृष्ठ भी खराब कर दिए.

विश्वस्त सूत्रों के अनुसार निगम ने 1980 में साढ़े 22 लाख रुपए मूल्य का मुखपृष्ठ... कागज खरीदा तथा कुछ ऐसी पुस्तकें भी छपवाईं, जिन की बिक्री 25-30 वर्ष से पूर्व संभव न... है.

पता चला है कि निगम को कुछ प्रकाशकों को अधिक भुगतान के कारण भी क्षति उठा... पड़ी है, क्योंकि इन प्रकरणों में कानूनी कारवाई के लिए निर्धारित समय सीमा समाप्त हो चु... है.

—युगधर्म, जबलपुर (प्रेषक : प्रहलाद जसवानी) (सर्वोत्त...

*

बिहार प्रेस विधेयक का गलत उपयोग

बिहार सरकार द्वारा पारित प्रेस विधेयक को राष्ट्रपति ने अभी स्वीकृति नहीं दी है, लेकि... पटना में जिला और ब्लाक स्तर पर अधिकारियों ने पत्रकारों को धमकाना शुरू कर दिया है...

यहां प्राप्त समाचार के अनुसार बरौनी के एक क्षेत्राधिकारी ने वहां के एक पत्रकार... कानूनी कारवाई करने की धमकी दी है. अधिकारी ने उक्त पत्रकार को एक पत्र में लिखा है कि 'यदि आप गुप्त सूचनाएं एकत्र करने का प्रयास करेंगे तो हमें मजबूर हो कर आप के विरु... कारवाई करनी पड़ेगी.'

—आज, कानपुर (प्रेषक : मनोजकुमार 'सु...

*

बिना अध्यापक का स्कूल

हमीरपुर जनपद की तहसील कलपहाड़ के बघौरा गांव में जिला परिषद द्वारा ए... प्राथमिक स्कूल में पिछले छः वर्षों से एक भी अध्यापक नहीं है.

पता चला है कि वहां के स्कूल के लिए कागजों पर दो अध्यापकों की नियुक्ति दर्शाई गई... तथा वे बराबर वेतन भी प्राप्त कर रहे हैं.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक : रामकुमार अग्रवा...

*

जीवित भूतपूर्व विधायक की स्मृति में मौन

केरल विधान सभा में उस समय अजीब दृश्य उपस्थित हो गया जब एक जीवित भूतपू... विधायक की स्मृति में एक मिनट का मौन रखा गया.

सदन की कारवाई शुरू होने पर विधान सभाध्यक्ष पुरुषोत्तम ने तीन भूतपूर्व विधायकों... के नाम लिए, जिन में एक नाम इस विधायक का भी था. सदस्यों ने तीनों को श्रद्धांजलि अर्पि...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ओर एक मिनट का मौन रखा.

इस पर मुसलिम लीग के एक विधायक ने सदन का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित कराया कि यह विधायक तो पूर्ण स्वस्थ है और अपने घर में मौजूद है.

—दैनिक जागरण, भोपाल (प्रेषक : नारायणप्रसाद भट्ट)

*

अनोखा जुलूस

पिलखुवा नगर में जुआरियों का एक अनोखा जुलूस निकाला गया, जिस में वे एकदूसरे को जूते मार रहे थे तथा नारे लगा रहे थे कि 'अब हम जुआ नहीं खेलेंगे.'

पुलिस ने एक सिनेमाघर के पीछे छापा मार कर आठ जुआरियों को गिरफ्तार किया था और फिर उन का जुलूस निकलवाया था.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक : मन्नालाल)

*

पुलिस उपमहानिरीक्षक के घर चोरी

मध्य प्रदेश के एक पुलिस उप महानिरीक्षक के घर में उस समय चोरी हो गई जब वह बाहर गए हुए थे.

उप महानिरीक्षक के अरदली ने रिपोर्ट लिखवाई है, लेकिन अभी तक इस मामले में कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है और न ही चोरी गए माल का मूल्य पता लग सका है.

—देशबंधु, रायपुर (प्रेषक : हरभजनसिंह आजाद)

*

रिश्वत में ठगी

बटाली में यातायात के एक सिपाही के साथ बड़ी विचित्र घटना हुई. एक ट्रक वाला उसे 20 रुपए का चूरन वाला नोट दे कर चलता बना.

बताया जाता है कि बाहर से शहर में आने वाले सभी ट्रकों से यातायात सिपाही 'शहर क्रास फंड' इकट्ठा करते हैं.

बाद में जब उस ने नोट देखा तो ठगा रह गया.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : रमेशचंद्र टक्कर)●

आप मांग कर खाते हैं?
मांग कर कपड़े पहनते हैं?
मांग कर बस, ट्राम व रेल में सफर करते हैं?
मांग कर सिनेमा देखते हैं?
मांग कर रेस्त्रां में चायकाफी पीते हैं?
तब
मांग कर पत्रपत्रिकाएं व पुस्तकें क्यों पढ़ते हैं?
निजी पुस्तकालय आप की शोभा है, आप के परिवार की शान है, उन्नति का साधन है.
मांग कर नहीं, खरीद कर पढ़िए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौटंकी: बाजारूपन में घिरी कला

छोटा सा पंडाल. गैस के हंडे जल... तीन ओर से खुला तख्तों... बनाया गया मंच. मंच पर कोई परदा न... मंच के ठीक सामने एक बड़ी सी चौकी... दर्शकों की ओर पीठ किए कुल जमा... साजिंदे बैठे हैं. एक ढोलक वाला, ... नक्कारा बजाने वाला और एक हारमोनियम बजाने वाला. हारमोनियम पर कोई फि... धुन बज रही है. मंच के सामने हजारों द... बैठे हैं. महिलाएं नाममात्र को घूंघट काढ़े... दर्शकों के वर्ग में हैं—किसान, सब्जी और... बेचने वाले, ट्रक ड्राइवर, रिकशे, तांगे वा... मजदूर, कुली. मंच के बिलकुल आगे... उमर के लड़के बैठे हैं, जिन की अभी मसें... नहीं भीगी हैं.

लेख • ब्रज गोपालरा... 'चंचल'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्शकों की भीड़ में से सिगरेट और बीड़ी का बदबूदार धुआं निकल रहा है. इस धुएं में शराब की भी गंध मिश्रित है. भीड़ में शोर उभरता है, "खेल चालू करो...साढ़े ग्यारह बज गए." इस के बाद भद्दीभद्दी गालियां... फुसफुसाहटें... कौनकौन सी 'चेंचरी' (चालू लड़कियों और वेश्याओं के लिए प्रयुक्त स्थानीय शव्द) आई हैं. आदि.

इस के वाद मंच पर पांचछः स्वांग करने वाले आते हैं, चूड़ीदार पाजामा और कुरते में थोड़ी देर तक वंदना गाते हैं. इस के बाद एकएक कर के वे कोई लोक गीत गाते हैं. संगीत में हर बार, हर तोड़ पर नक्कारा अपनी विशिष्ट शैली में बजता है. इस के बाद महिला पात्राएं आती हैं और फिर शुरू होता है चालू फिल्मी गीतों और भोंडे उत्तेजक नृत्यों का कार्यक्रम.

ब्रज अंचल में—जिन में मथुरा, आगरा, अलीगढ़, एटा, इटावा, हाथरस, बुलंदशहर और आसपास के शहर, कसवे और गांव शामिल हैं, ऊपर का यह दृश्य आप को हर स्वांग, संगीत या नौटंकी में देखने को मिल जाएगा.

किसी जमाने में ब्याह और दूसरी किसी खुशी के मौके पर मशालें जला कर नौटंकी की जाती थी. इन्हें कराने वाले बड़े जमींदार होते थे. इन नौटंकियों में तवायफें भाग लेती

अपनी अदाओं से दर्शकों को मोहित करना नौटंकी की महिला कलाकारों का खास उद्देश्य है.

थीं, जो अश्लील गाने गाती थीं. अश्लील भावभंगिमाएं बना कर नाचती थीं. दर्शक 'इनाम' के नाम पर उन्हें पैसे लुटाते थे. ये सब अंगरेजों के जमाने की बातें हैं. उसी मानसिकता के कारण आज भी नौटंकी में काम करने वाली महिला कलाकारों को दर्शक उन्हीं नजरों से देखते हैं.

जहां तक ब्रज की नौटंकी का प्रश्न है, मथुरा ब्रज की नौटंकी का गढ़ है. यों पूरे उत्तर प्रदेश में 200 के लगभग नौटंकी मंडलियां हैं,

लोक कला का दरजा हासिल करने वाली नौटंकी आज सस्ते और अश्लील मनोरंजन का साधन बन गई है. लगातार विकृत होती यह कला समाज की किस कमजोरी को दर्शाती है.

जिस प्रकार गुजरात की भवाई, मध्यप्रदेश का माच, राजस्थान का खयाल वहां का लोक नाट्य है, उसी तरह उत्तर प्रदेश में नौटंकी को लोक नाट्य का स्थान प्राप्त है. उत्तर प्रदेश की नौटंकियों में दो शैलियां हैं—हाथरस शैली, दूसरी कानपुर शैली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथरस शैली के जनक पंडित नथाराम शर्मा गौड़ तथा कानपुर शैली के श्रीकृष्ण पहलवान और त्रिमोहन माने जाते हैं. ब्रज अंचल में इन दोनों ही शैलियों का मिश्रण है. यह शैली श्रीमती कमलेश आर्य की देन बताई जाती है.

कहते हैं कि पंजाब की एक शहजादी का नाम नौटंकी था. उसी को मुख्य पात्र बना कर एक नाटक खेला गया और उस की लोकप्रियता के कारण ऐसे नाटकों का नाम ही 'नौटंकी' हो गया. कुछ लोग इस नौटंकी को शेरशाह सूरी के जमाने से प्रारंभ हुआ मानते हैं. उत्तर प्रदेश में नौटंकी जहांगीराबाद (जिला बुलंदशहर) में आज से लगभग 89 वर्ष पहले इंद्रमल ने शुरू की थी. नथाराम इन्हीं के शिष्य थे. हाथरस शैली के स्वांग को आज भी नौटंकी न मान कर 'स्वांग' या 'सांगीत' ही माना जाता है.

नौटंकी या स्वांग चालू भाषा में कहा जाता है, जब कि वास्तव में इस का सही नाम 'सांगीत' है. आज जो नौटंकी हम देखते हैं उस का रूप काफी विकृत हो गया है.

इस सांगीत का प्रमुख तत्त्व है-उस की गायकी का अपना अंदाज. इस शैली में आमतौर पर एक कथानक लिया जाता है, जिस में पूरे के पूरे संवाद गा कर ही मंच पर प्रस्तुत किए जाते हैं.

गायकी सांगीत का प्राण है. सुर को अधिक से अधिक देर तक खींच कर रखना इस की खास विशेषता है. संपूर्ण कथानक दोहा, छंद, सोरठा, चौबोला आदि में गाया जाता है. नौटंकी का सब से अधिक लोकप्रिय छंद 'बहरे तबील' है. इसी छंद के बाद जोरदार नगाड़ा बजता है.

महिला पात्रों का प्रवेश

कानपुर की नौटंकी मंडली वालों ने सब से पहले नौटंकियों में महिला पात्रों को भरती किया. सब से पहले महिला पात्र गुलाबजान का नाम लिया जाता है. इस के बाद इस में महिला पात्रों की लोकप्रियता बढ़ती गई और आज बिना महिला पात्रों के नौटंकी की कल्पना नहीं की जा सकती.

ब्रज की नौटंकी को छोड़ कर अ... नौटंकियां तो पूरी तरह फिल्मों की नकल... उतर आई हैं. यहां तक कि किसी भी... फिल्म को पूरा का पूरा मंच पर प्रस्तुत... देना आजकल लोकप्रिय हो रहा है. इस... संवादों को तोड़ामरोड़ा जाता है और म... पात्रों द्वारा खूब अंग प्रदर्शन सहित अ... संवादों और ठुमकों की रेलमपेल मची र... है.

इन्हीं सब तथ्यों को मद्देनजर र... हुए पिछले दिनों लेखक ने मथुरा की तीन... नौटंकी कंपनियों के लोगों से बातचीत की... कंपनियों के नाम है—श्रीकृष्ण लोक क... मंडल, ब्रज सारंग और ब्रज कला संघ. लेख... ने उन के साथ रह कर और बातचीत कर... जो कुछ देखा, जाना और समझा, उस पर... के मन में कई सवाल उठे.

सब से अहम सवाल था—नौटंकी क... को 'बुरी' नजर से देखे जाने का. लगभग... नौटंकी वाले इस 'बुरी नजर' के कारण... केवल कुंठित हैं, बल्कि दुखी भी हैं. यहां... कि आरंभ में उन्होंने बातचीत करने त... इनकार कर दिया. अपनी जिस 'बुरी' दु... में वे रहते हैं, उस के कारण वे 'बाहर' के... 'भले' आदमी से कतराते हैं. अपनी दुनिया... ही वे खुशी और मस्ती का चोला धारण कि... बैठे हैं.

दूसरा सवाल था—नौटंकी के कथान... का. यों तो इन कथानकों की संख्या सैकड़ों... है, पर नौटंकी की अपनी शैली में सारे स... और कथानक गा कर प्रस्तुत किए जाते हैं. खास तौर से आठ या दस कथानक ही ऐसे... जो आम तौर पर प्रस्तुत किए जाते हैं. ... जनता वर्षों से देख रही है और इन में उ... आकर्षण अभी तक भी खत्म नहीं हुआ है... कथानक हैं— अमरसिंह राठौर, लैला म... दही वाली, सुलताना डाकू, भक्त पूरन... स्याहपोश, भक्त मोरध्वज, 'इंदल ह... आदि. वस्तुतः ये सभी कथानक पचासों... पुराने हैं. यहां इन कथानकों और उ... प्रस्तुतीकरण की एक पंक्ति में समीक्षा... जाए तो कहा जा सकता है कि ये सभी ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मी अंदाज में ऐतिहासिक घटनाएं : नौटंकी को लोकप्रिय बनाने का भौंडा प्रयास.

जनता में घोर अंधविश्वास और जलालत की भावना पैदा करते हैं.

इस बात को खोल कर समझने के लिए यह जरूरी है कि इन कथानकों पर जरा गौर किया जाए. वास्तव में कथानक तो अंधविश्वास पैदा करते ही हैं, उन का प्रस्तुतीकरण और भी विचित्रता पैदा कर देता है. यहां इस बात की आलोचना इसलिए और भी जरूरी हो गई है, क्योंकि आम तौर पर इन नौटंकियों को देखने वाले या तो गांवों के अनपढ़ किसान, मजदूर और निम्न वर्ग के लोग हैं जो घोर अंधविश्वास में जीते हैं या फिर कसबों के मनचले युवक और किशोर. दोनों ही वर्गों पर ये नौटंकियां बहुत बड़ा कुप्रभाव डालती हैं.

कुछ बड़े कसबों में होने वाली नौटंकियों में तो 'बड़े' लोग जाते नहीं, जाते भी हैं तो वे सिर्फ 'नाच' भर देखने जाते हैं. उन के लिए कथानक का कोई मूल्य नहीं होता. जहां सरकारी तौर पर इन्हें 'लोक नाट्य' समझ कर प्रस्तुत किया जाता है, वहां भी कथानक गौण हो जाता है और सिर्फ 'कला' ही रह जाती है. दूसरे शब्दों में नौटंकी वह सशक्त विधा है, जो लोक जीवन में रची, बसी और घुली है. वास्तव में यदि इस विधा द्वारा कुछ अच्छे कथानक लिखवा कर दिखाए जाएं तो इन भोलेभाले लोगों में अंधविश्वासों को दूर कर नैतिक और सामाजिक चेतना जगाई जा सकती है.

परिवार नियोजन, वृक्षारोपण, दहेज विरोध, बाल विवाह विरोध, स्त्री शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, विधवा विवाह, छुआछूत, सांप्रदायिक सद्भाव, खेती के उन्नत तौरतरीके आदि बीसियों ऐसे विषय हैं, जिन के बारे में नौटंकी के माध्यम से ग्रामीण लोगों को बहुत कुछ समझाया जा सकता है. इस से उन का मनोरंजन तो होगा ही, साथ ही शिक्षा भी मिलेगी.

सब से पहले 'अमरसिंह राठौर' नामक नाटक को ही लें. वीर रस से परिपूर्ण इस ओजस्वी नाटक को सुनने और देखने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीड़ सर्वाधिक लालायित रहती है. इस नाटक में दर्शकों का सब से प्रबल आकर्षण होता है—अमरसिंह और उस के भतीजे रामसिंह के जोशीले संवाद तथा अमरसिंह की पत्नी हाडी रानी का वह दृश्य, जब अमरसिंह की मौत पर हाडी रानी अपनी चूड़ियां तोड़ कर विलाप करती हुई सती होने की घोषणा करती है. मथुरा की नौटंकियों की तीन महिला कलाकार कृष्णाकुमारी, कमलेश और आशा इस भूमिका में वास्तव में कलाई पर कलाई मार कर चूड़ियां तोड़ती हैं. तब उन की कलाइयों से खून रिस आता है. इस दृश्य पर सभी दर्शक झुरझुरी सी महसूस करने लगते हैं.

सती प्रथा को प्रोत्साहन

अमरसिंह अपनी पत्नी हाडी रानी का गौना करा कर लाता है और नई नवेली पत्नी के प्रेम में डूब कर बादशाह शाहजहां के दरबार से सात दिन की छुट्टी लेने के बावजूद 14 दिन तक नहीं जाता. शाहजहां उसे क्षमा कर देता है, पर अपने हिंदू विरोधी वजीर सलावतखां के कहने पर सात दिन की अनुपस्थिति पर सात लाख रुपया जुरमाना कर देता है. अमरसिंह इस जुरमाने का विरोध करता है. इस पर हाडी रानी का भाई अर्जुन गौड़ स्वयं सिपहसालार बनने के लालच में अमरसिंह को धोखे से मार डालता है. इस के बाद उस का भतीजा रामसिंह किले से अमरसिंह की लाश ला कर अपनी चाची हाडी रानी को सती कराता है और स्वयं सिपहसालार बनता है.

इस छोटी सी कहानी में एक मुसलमान पठान नरसेवाज खां का अपने मित्र अमरसिंह राठौर के लिए अपने प्राण त्याग देने की बलिदान कथा भी जुड़ी है. जिस समय अमरसिंह राठौर हाडी रानी का गौना करा कर ला रहा होता है, रेगिस्तान में प्यास से तड़पते पठान को एक लोटा पानी पिला कर दोनों पगड़ी बदल कर दोस्त बनते हैं. यहां 'असली पठान' असली राजपूत के लिए अपनी जान देता है. इस तरह इस कथानक में हिंदू मुसलिम सद्भाव को भी पिरोया गया है.

पर यह कथानक काफी प्रभावपूर्ण होते हुए भी 'सती प्रथा' जैसे कलंकपूर्ण और अमानुषिक प्रथा के प्रति अंधभक्ति ही उत्पन्न करता है. पूरे नाटक में कहीं भी सती प्रथा के विरुद्ध एक भी संवाद न तो उस का भतीजा रामसिंह ही बोलता है और न कोई दूसरा चरित्रनायक. एक ऐतिहासिक कथा होते हुए भी कम से कम यह तो जरूरी है कि इस में ऐसा वातावरण तो बनाया जाए जो सती प्रथा के विरोध का आभास दे सके. जौहर के नाम पर अभिशापित सती प्रथा के प्रति जो गौरव भावना आज हिंदुओं में भरी पड़ी है उस के विरोध का कोई स्वर इस नाटक में नहीं उभरता.

फिर फिल्मी गानों के कारण सारी ऐतिहासिकता भी नष्ट हो जाती है. हाडी रानी अमरसिंह को जब 'तेरे मेरे बीच में कैसा है बंधन अनजाना' गा कर नाचती हुई रिझाती है तो सारी 'कला' के किले ढह जाते हैं. जोकर, जो एक बार अर्जुन गौड बनता है और एक बार सलावत खां, अपने अटपटे संवादों और फूहड़ उछलकूद से मनमाना मनोरंजन करता रहता है.

इसी तरह 'इंदल हरण' नामक नाटक भी ऊलजलूल कहानी को ले कर लिखा गया है. इस नाटक को देखने के लिए भी लोग उमड़ पड़ते हैं. पर यह नाटक भी भोलेभाले लोगों में घोर अंधविश्वास की भावना भरता है. लोक कथाओं के विख्यात नायक महोबा के राजा आल्हा और ऊदल इस के पात्र हैं. एक डुबकी लगा कर मुफ्त में पुण्य कमाने के लिए आल्हा की पत्नी मछला अपने बेटे इंदल को ले कर अपने देवर ऊदल के साथ गंगा स्नान करने जाती है. इंदल की खूबसूरती पर रीझ कर चित्ररेखा नामक एक जादूगरनी उसे छूमंतर कर के अपने महल में ले जाती है और उसे तोता बना कर पिंजरे में बंद कर देती है. वह रात को उसे 'मर्द' बना लेती है और दिन में तोता.

इंदल चालू फिल्मों के नायक की तरह आदर्शवादी है. इस दृश्य में चित्ररेखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर्षक पोशाकें, नाटकीय मुद्राएं : दर्शकों को आकर्षित करने की पूरी कोशिश.

दिया जाए कि छोड़ दिया जाए' से ले कर 'लगा ठुमका बदल गई चाल मितवा' और 'हम बने तुम बने एक दूजे के लिए' तक के कई फिल्मी गाने कभी घाघरा चोली, कभी साड़ी ब्लाउज में गाती है. इंदल खीसें निपोरता रहता है और 'माताजी,' 'देवीजी,' कहता हुआ चित्ररेखा के प्रणयदान की याचना को नकारता रहता है. इस के बाद चित्ररेखा एक बार फिर से 'छूमंतर' करती है और इंदल के चरित्र की तपस्या 'भंग' हो जाती है. इधर इंदल का मामा फिल्मी कलाकार जीवन की तरह आ कर आल्हा को भर देता है कि ऊदल ने अपने भतीजे की हत्या कर दी है. इसी बीच ऊदल आता है और आल्हा को समझाता है कि इंदल गंगा स्नान के मेले में खो गया है. इस दृश्य में लाख सिर पटकने के बावजूद यह समझ में नहीं आता कि इंदल की मां मछला वापस महलों में कैसे आ जाती है, जब कि वह स्वयं भी गंगा स्नान के लिए जाती है.

इस पर आल्हा अपने साले के कहने पर ऊदल को फांसी पर चढ़ाने का हुक्म देता है. यहां भाभी अपने देवर को बचाने के लिए जल्लाद को अपना नौलखा हार देती है. वह ऊदल को जंगल में छोड़ देता है. जंगल में एक साधु मिलता है जो ऊदल को इंदल का पता बता देता है. जंगल में ऊदल और उस का एक साथी मलखान साधुओं का वेश धारण कर के 'कस्में वादे प्यार वफा' टाइप 'भक्ति गीत' गाते हुए चित्ररेखा के यहां पहुंच जाते हैं. वहां चित्ररेखा के बगीचे की मालिन 'हरदम प्यारी' नामक एक फूहड़ औरत उन्हें चित्ररेखा के महल में 'साधु सेवा' के लिए ले जाती है. इस प्रसंग में 'हरदम प्यारी' के रूप में जोकर जनाना वेश धारण कर मंच पर आता है. इस बेतुकी भूमिका में वह इतना अधिक फूहड़ और अश्लील हास्य प्रस्तुत करता है कि हंसतेहंसते सिरदर्द पेटदर्द एक साथ ही होना शुरू हो जाता है.

उस की वेशभूषा भी बड़ी विचित्र होती है. वह जनानी धोती पहनता है, पर उस का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेटीकोट दिखाई देता रहता है. एक स्तन वह कपड़े ठूंस कर बना लेता है. दूसरा गायब रहता है. फिर उस का बैठने का अंदाज—हर बार उस का पेटीकोट टांगों से भी ऊपर उठ जाता है. इस प्रसंग में भी कई 'ठुमके' और ग्रामीण अश्लील गीत होते हैं. गीतों के अर्थ द्विअर्थक होते हैं, जैसे– 'मेरी जवानी ऐसी लुट गई जैसे लंका रावण की' आदि. चित्ररेखा और इंदल मिल जाते हैं, क्योंकि 'साधुओं' के ऊपर चित्ररेखा का 'छूमंतर' नहीं चलता. बाद में दोनों की शादी हो जाती है.

अब भला सोचिए, यह कथानक सिवाय जनता को 'छूमंतर' में विश्वास रखने, गंगा स्नान से पुण्य लाभ मिलने, ढोंगी साधुओं को मालमलीदा खिलाने के और क्या प्रभाव पैदा करता है? अश्लील गीत, हावभाव और दृश्य जो वासनात्मक भावना पैदा करते हैं, वह अलग.

'भक्त पूरनमल' नामक एक और नाटक भी ऐसे ही बेसिरपैर के कथानक को ले कर बुना गया है. यह नाटक रजनीश के 'भक्ति और काम' की तरह है. इस नाटक की कथावस्तु और प्रस्तुतीकरण दोनों ही वीभत्स हैं. एक राजा अपनी 16 साल की कन्या फूलनदे के विवाह का आयोजन ठीक द्रौपदी स्वयंवर की तरह मत्स्यवेध की शर्त रख कर करता है. पूरनमल का बूढ़ा मगर रसिक बाप अपने जोकर मंत्री की नेक सलाह को न मान कर इस आयोजन में जाता है और शर्त जीत कर फूलनदे को ब्याह लाता है. पहली ही रात को राजा को खांसी उठती है और वह बजाए सुहागरात मनाने के अपना इलाज कराने महल में चला जाता है.

इधर सुहाग की सेज पर तड़पती 16 साल की रानी फूलनदे अपनी नौकरानी से भयंकर पेटदर्द का बहाना कर के अपनी सौत के बेटे 'भक्त' पूरनमल को बुलवाती है. यहां पर फिल्मी आदर्श चलता है. कामपीड़ित रानी 'दिल में तुझे बिठाके कर लूंगी बंद मैं आंखें' टाइप फिल्मी गाने गाती, ठुमके लगाती सहवास की इच्छा प्रकट करती है. यह दृश्य द्विअर्थक संवादों के कारण इतना अधिक [illegible] होता है कि खुद को ही शर्म लगती है. 'भक्तजी' मां के समान 'मौसी' फूलनदे के सामने हाथ जोड़े खड़े हैं और जैसी मौसी सहवास की इच्छा कर रही है और उस समय तो अपना सिर नोंच लेने का मन करता है, जब वह स्पष्ट द्विअर्थक भाषा बोलती है—'या तो मेरा काम कर दो, वरना तुम्हें बदनाम कर दूंगी कि तुम ने मेरी इज्जत लूटी है' और इस के बाद 'मैं क्या करूं राम मुझे बुड्ढा मिल गया' गाना शृंगार रस के 64 कलाओं के हावभाव सहित प्रस्तुत किया जाता है.

खैर, भक्तजी इनकार कर देते हैं और रानी भिन्ना कर कोपभवन में चली जाती है. भक्तजी पर यह इलजाम लगाया जाता है कि उन्होंने अपनी मां का सतीत्व लूटा है. भक्तजी को फांसी पर चढ़ाने का हुक्म दिया जाता है. इस नाटक में भी राजा के मंत्री के रूप में जोकर अश्लील हरकतें करता है और मनमानी मसखरी करता रहता है.

यदि इस कथा द्वारा बूढ़े लोगों द्वारा जवान लड़कियों से शादी करने की कुप्रथा को ले कर व्यंग्य किया जाता और कोई समस्या सुलझाई जाती तो यह एक सशक्त नाटक बन जाता. मगर बेशुमार द्विअर्थक अश्लील संवादों, फूहड़ चालू फिल्मी गीतों और अश्लील हावभावों के कारण यह नाटक भी इतना सस्ता मानसिक मनोरंजन करता है कि देख कर घृणा होती है.

अंधविश्वासों को बढ़ावा

इन नौटंकियों में एक और भी महत्त्वपूर्ण नाटक 'मोरध्वज' खेला जाता है. इस कहानी में मोरध्वज को बहुत बड़ा दानी सिद्ध किया गया है. कृष्ण और अर्जुन एक शेर ले कर साधुओं के वेश में मोरध्वज से दान मांगने जाते हैं. दान में वह मोरध्वज के लड़के ताम्रध्वज को मांगते हैं. साथ ही शर्त रखते हैं, "आप को अपने बेटे को बीच में आरे से काटना होगा. उस का दायां अंग हमारा शेर खाएगा. बाएं अंग को चील कौओं को खिलाने के लिए महलों की छत पर फिंकवा दि[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौटंकी के पौराणिक कथानक में आधुनिक फिल्मी गीत : बेतुकेपन की सीमा.

जाएगा. साथ ही आप लोगों की आंखों से अगर आंसू की एक बूंद भी निकलेगी तो यह दान अस्वीकार कर दिया जाएगा."

इस कठिन अग्निपरीक्षा में भी मोरध्वज खरे उतरते हैं. इस प्रकार यह नाटक भी ढोंगी साधुओं के प्रति अंधभक्ति पैदा करता है. नाटक के अंत में रानी की आंखों में आंसू आ जाते हैं. वह कहती है, "महाराज, ये आंसू इसलिए हैं क्योंकि मेरे पुत्र का बायां अंग आप के 'काम' न आ सका."

दान के त्याग की पराकाष्ठा इस में है, मगर साधुओं जैसे कुपात्रों के लिए. कोई भी कथानक हो, उस में कितना ही ऊंचा आदर्श हो, पर वह आदर्श यदि जनजीवन को अंधविश्वास की ओर धकेले तो उस की आलोचना जरूर की जानी चाहिए.

इसी प्रकार स्याहपोश नामक एक और नौटंकी भी आजकल लोकप्रिय हो रही है. यह नौटंकी कानपुर शैली के श्रीकृष्ण पहलवान द्वारा लिखी हुई है. इस कथा के बारे में कहा जाता है कि यह 'पवित्र प्रेम' ('पाक मुहब्बत' इस नाटक का दूसरा नाम भी है) की कथा है. अगर अपनी चरित्रवान बीवी के रहते किसी कुंआरी लड़की से इश्क लड़ाना ही पाक मुहब्बत की सीढ़ी है तो फिर यह नाटक इसी

[illegible] में सर्वप्रथम है.

कहानी इस प्रकार है कि कबरू नामक एक विवाहित युवक रास्ते से गुजरते समय महलों में कुरान पढ़ रही किसी लड़की का गलत पाठ सुन कर ऊपर जाता है. ऊपर लड़की कबरू को बताती है:

'तख्तनशीं महमूद का, मेरा बाप बजीर.

हसन अली की दुख्तर हूं, मेरा नाम जमाल मुनीर.'

आधुनिक ट्यूशन शैली में दोनों में मुहब्बत हो जाती है. कबरू रोज रात को जमाल द्वारा लटकाई गई रस्सी के सहारे महल में जा कर जमाल को इश्क और कुरान दोनों का पाठ पढ़ाता है. समझ में नहीं आता कि ऐसे पाक इश्क के लिए रस्सी लटकाने और रात में जाने की क्या जरूरत थी? फिर यह इश्क 'पाक' किस दृष्टिकोण से हो गया? जब रात को कबरू की बीवी उसे जाने से रोकती है (इस दृश्य में भी ठुमके और फिल्मी गीत सुनाएदिखाए जाते हैं. जैसे—'आजा रे मेरे दिलबर आजा, दिल की प्यास बुझा जा रे') तो कबरू अपने कबूतर से चेहरे को और मासूम बना कर साफसाफ कह देता है कि वह कुरान की सही आयतें पढ़ाने के लिए जमाल के महल में चोरी से जा रहे हैं. कबरू की बीवी 'कुरान' की धार्मिक मान्यता के कारण उसे जाने देती है.

इस के बाद जब पूरा कुरान वह पढ़ा देता है और आखिरी आयत रह जाती है तो महमूद और उस का कोतवाल (जोकर) जो वेश बदल कर रात को घूमने निकले हैं, कबरू को पकड़ लेते हैं. इस नौटंकी की एक खास विशेषता यह भी है कि जहां नायक ने थोड़ी सी भी गलती की या हो गई या बादशाह या राजा को ऐसा लगा, तड़ से सीधा फांसी का हुक्म सुना दिया. कबरू को भी फांसी की सजा सुना दी गई. इस पर कबरू के एक दोस्त कमरुद्दीन ने उस की एक दिन की जमानत ले ली. यहां पर कमरुद्दीन की बीवी भाभी के रिश्ते को निभाते हुए कबरू की फिर अग्नि-परीक्षा लेती है कि वह वास्तव में ?ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीधासच्चा आदमी है या ढोंग करता है. इस दृश्य में कबरू के चरित्र को डिगाने के लिए कमरुद्दीन की बीवी नाना प्रकार से उसे रिझाती है. यह दृश्य फिल्मी गानों और ठुमकों के साथ कबरू के सिर झुकाए दृश्यों के साथ समाप्त होता है.

खैर, इस के बाद वह जमाल को कुरान की आखिरी आयत समझा कर उसे अपने को फांसी दिए जाने की बात दोहराता है. साथ ही कहता है कि "मैं चाहता हूं कि मेरी फांसी के समय तुम मौजूद रहो." जमाल अपने आशिक के लिए कोई विरोध या विद्रोह नहीं करती. उलटे चुपचाप सिर झुका लेती है और कहती है,

"स्याह लिबास, सजायतन बनूं मर्द गुलफाम.
दिलबर, मेरा जमाल से स्याहपोश हो नाम."

इस के बाद फांसी के समय उस के दोस्त कमरुद्दीन के 'दोस्ती के फर्ज' का भी बड़ा विचित्र प्रसंग है. कमरुद्दीन कहता है कि फांसी पर मैं चढ़ूंगा. मुझे दोस्ती के हक का फर्ज अदा करने दो. कमरुद्दीन किस खुशी में फांसी चढ़ना चाहता है, यह पता नहीं चलता. जैसेतैसे समझाबुझा कर कबरू स्वयं फांसी चढ़ने की तैयारी कर लेता है. तभी वजीर हसन अली की नजर स्याहपोश पर पड़ती है. फिल्मी अंदाज में सारा राज खुलता है और फिर दोनों की शादी हो जाती है. कमरुद्दीन को वजीर बना दिया जाता है. भला सोचिए, क्या कहानी है, क्या आदर्श है, कैसा प्रस्तुतीकरण है.

बेतुकी कथाओं का प्रस्तुतीकरण

इसी प्रकार लैला मजनूं, हरिश्चंद्र तारामती जैसी कथाएं ले कर उन्हें मंच पर प्रस्तुत किया जा रहा है, जब कि इन कथाओं का जनजीवन से कोई वास्ता नहीं. सिवा इस के कि इन से जनता में खोखले आदर्शों, सस्ती भावुकता और पाखंड तथा अंधविश्वास का बीजारोपण होता है.

ऊपर जिन नाटकों की चर्चा की गई है, वे ऐसे नाटक हैं जो आम तौर पर हर जगह खेले जाते हैं. अब आप स्वयं ही अंदाजा लगाएं कि इन नाटकों से आम जनता को क्या मिलता है. यदि केवल मनोरंजन की ही बात है तो फिर इन कथानकों की क्या आवश्यकता है? वह तो केवल ठुमके और फिल्मी गीतों से भी हो सकता है.

इन नाटकों में सब से अधिक गंदगी अगर कोई फैलाता है तो वह है—जोकर. जोकर का लगभग प्रत्येक संवाद अश्लील और द्विअर्थी होता है. 'सुलताना डाकू' नामक नाटक के एक दृश्य में, कुएं से सेठानी की लड़की को निकालने के बाद जोकर उस से बोला, "तेरे पेट में पानी भर गया होगा. अब मैं अपना हैंड पंप डाल कर तेरा पानी निकालूंगा."

इसी प्रकार इसी नाटक के एक अन्य दृश्य में सुलताना डाकू अपनी प्रेमिका फूल कुंवर को इज्जत के साथ लाने के लिए डाकू बने जोकर को आदेश देता है. जोकर फूल कुंवर के पास जा कर कहता है, "सेठानी जी, आप अपनी इज्जत मुझे दे दीजिए, क्योंकि सरदार ने ऐसा ही कहा है."

लगभग पूरे ही खेल में जोकर छाया रहता है. चरित्र कोई भी हो, दृश्य कोई भी हो, जोकर अपनी फूहड़ता से जबरदस्ती हंसाने का प्रयत्न करता है. वह अपने प्रयास में सफल भी रहता है, क्योंकि संवाद बोलने में वह पटु रहता है.

इन सभी बातों को देखते हुए अब यह जरूरी है कि नौटंकी की इस विधा में आमूल परिवर्तन किया जाए. अंधविश्वास, पाखंड फैलाने वाली, समाज के विकास के विरोधी इन नाटकों का पूर्णतः बहिष्कार किया जाए. नए शिल्प, नए कथानक ले कर नए नाटक तैयार किए जाएं. ध्यान रखने की बात यह है कि उस की 'लोक कला' को खत्म न किया जाए अन्यथा ग्रामीण अंचल के लोग 'भाषण' और 'शोध लेखों' को नहीं समझ पाएंगे. इस देश में ऐसे लेखकों और कवियों की कमी नहीं है, जो लोक कला के छंदों को ध्यान में रख कर उत्कृष्ट कथानक को छंदबद्ध कर सकें. ऐसे लोगों को नाटक लेखन में प्रेरित करने की जरूरत है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल्कि सेवाभावी, ... इस क्षेत्र में स्वयं भी आगे आना चाहिए. नौटंकी को ब्याहबारातों और सस्ते मनोरंजन की गंदगी से निकाल कर उसे एक स्वस्थ रूप देने की जरूरत है.

नौटंकी लोक कला है. वर्तमान नौटंकी के कलाकार शुद्ध व्यवसायी हैं और अधिकतर बहुत ही कम पढ़ेलिखे हैं. उन का अपना वैचारिक स्तर भी इतना उन्नत नहीं है कि वे स्वयं कुछ 'नया' खोज सकें. उन्हें जो प्रशिक्षण मिला है, वह भी अखाड़ेबाज गुरुओं का प्रशिक्षण है. दूसरी तरफ फिल्मों की चकाचौंध ने इस विधा को बहुत प्रभावित किया है. ब्रज की नौटंकी में तो अब भी यह गनीमत है कि गायकी का अंदाज देखने को मिल जाता है, जब कि कानपुर, वाराणसी, लखनऊ, आगरा आदि की नौटंकियों में तो अब कला को छोड़ कर शुद्ध रंबासंबा और डिस्को, कैबरे वगैरह हावी हो रहे हैं.

नौटंकी की सब से बड़ी विशेषता नुक्कड़ नाटकों की तरह उस की जनता से सीधी ... होना है. बहुत ही मामूली साजसज्जा, मामूली मंच और मामूली साज को ले कर यह कला बहुत गहरा प्रभाव डाल सकती है. आज भी व्यावसायिक नौटंकियां, रात को 10 बजे से ले कर सुबह पांचछः बजे तक हजारों लोगों को बैठाए रखती हैं.

और केवल कथानक ही क्यों, फिल्मों की चकाचौंध से प्रभावित हजारों प्रतिभावान कलाकार बंबई भागते हैं और फिल्मों की राजनीति के दांवपेचों में गच्चा खा कर लौट आते हैं, वे भी इस में प्रारंभिक सहायता तो कर ही सकते हैं. जो लोग इसे व्यवसाय बनाना चाहें, उन के लिए भी पर्याप्त अवसर हैं.

यदि कटु आलोचना न मानी जाए तो यह एक बहुत ही नंगी सचाई है कि देश की भूखीनंगी ग्रामीण जनता का शोषण भी फिलहाल ये ही नौटंकी वाले करा रहे हैं. जिस देश के किसान को नाटक, नौटंकी में भी अंधविश्वास की जड़ों को सींचने के दृश्य दिखाए जाएं, सती प्रथा का पक्षधर बनाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाए, छूमंतर से काम होते दिखाए जाएं, उस देश का किसान अपने खेत में ट्रैक्टर के उपयोग की बात क्यों सोचेगा? जब सुलताना डाकू जैसे जघन्य क्रूर डाकुओं के चरित्र को भी आदर्श बना कर मंच पर पेश किया जाएगा तो देश के गांवों के लोग डाकू क्यों न बनेंगे?

प्रश्न यह नहीं कि बुरे चरित्र को क्यों न दिखाया जाए. प्रश्न इस बात का है कि बुरे चरित्र को आदर्श की चटनी के साथ क्यों परोसा जाता है. जब डकैती, सतीप्रथा, छूमंतर, साधुसेवा, सैद्धांतिक रूप से बुरी चीजें हैं तो फिर देश, कला, परिस्थिति आदि झूठे शब्दाडंबरों की आड़ ले कर भी उन्हें आदर्श क्यों बनाया जाता है?

नौटंकी के नाम पर धूर्त लोगों द्वारा एक नई दुकानदारी भी इधर पिछले कई वर्षों से, खास तौर से ब्रज अंचल में शुरू हो गई है. जिस तरह बड़ेबड़े क्लब वाले कुछ बड़ीबड़ी आर्केस्ट्रा पार्टियों को बुला कर मनोरंजन के नाम पर पैसा इकट्ठा करते हैं, उसी तरह से मंदिर व धर्मशाला बनवाने, स्कूल खोलने के लिए भी स्वार्थी और मक्कार लोगों के लिए ये नौटंकियां माध्यम बन गई हैं.

'नेकी' और 'धर्म' का काम समझ कर ग्रामीण जनता चुप रहती है, लेकिन वास्तविकता यह है कि नौटंकी वालों को अपनी ओर से तंबू डेरे, प्रचार, पुलिस, टिकट, गुंडागर्दी से निजात मिल जाती है. इस से लोगों की आवाजकशी और भद्दे इशारों पर कुछ प्रतिबंध लग जाता है. जहां भी ऐसा होता है, नौटंकी वाले तुरंत ही अपना काम बंद कर देते हैं. वे मुंह मांगा पैसा ही ले चुके होते हैं. जनता चिल्लाती रह जाती है और नौटंकी वाले तामझाम और पैसा ले कर चलते बनते हैं.

आयोजक इस खतरे को इसलिए उठा... हैं कि वे जाली दान रसीदें बनाम टिकटें छपवा... कर स्कूल, धर्मशाला और मंदिर के नाम पर खूब मोटी कमाई कर लेते हैं. ऐसे मामलों में... लोग नेतागीरी कर के मनोरंजन कर भी माफ... करा लेते हैं. प्रायः एकएक दिन में 10,00... रुपए तक टिकटों की बिक्री हो जाती है. आम... तौर पर ऐसे आयोजन पांचपांच, छःछः दि... तक चलते हैं. इतनी मोटी राशि का कोई सही... हिसाबकिताब रखा नहीं जाता. न कोई... उंगली उठाता है. जाली वाउचरों पर... अनापशनाप पैसा खर्चे का दिखाया जाता है.

धर्म के धंधेबाजों की यह दुकानदारी पिछले कई वर्षों से चल रही है. ब्रज अंचल, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश के क... गांवों, कसबों में ऐसे सैकड़ों अधबने, न ब... स्कूल, मंदिर और धर्मशालाएं देखने को मि... जाएंगी, जिन की नींव 'लगा ठुमका...' 'क्या करूं राम मुझे...' 'टपकी जाए ज... रस की...' जैसे गानों और अंधविश्वास भ... नौटंकियों को देख कर आए पैसों से रखी ग... है.

धर्म के धंधेबाज अपने चेलेचपाटों ... अपने और अपने आलोचकों को भी 'शुद्ध... और 'पवित्र भावना' की बड़ी दुहाई देते हैं... फिर अश्लील ठुमकों से कमाई गई दौलत ... मंदिर और धर्मशालाएं बनवाते हैं? तब इ... भावना को वे कहां डकार जाते हैं? क्यों नहीं... गांवगांव जा कर चंदा मांगते? कारण स्पष्ट है. इतनी मेहनत कौन करे? फिर इ... चंदाखोरों को आम जनता क्या जानती नहीं... पर इन 'ठुमकों' के वशीकरण में जनता ... जाती है और रुपया बरसने लगता है.

पहले **चंपक** फिर आइसक्रीम या चाकलेट

चंपक आइसक्रीम या चाकलेट से बहुत सस्ता और बहुत अधिक गुणकारी है. ज्यादा मीठा खिलाकर बच्चे का स्वास्थ्य न बिगाड़िए-- उसे चंपक पढ़ने को दीजिए और उस का दिमाग बढ़ाइए.

नन्हेमुन्नों को मीठी सीख देने वाली पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्वपूर्ण होती है. लेखकों का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दे दिया गया है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इन में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 75 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए
द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए
तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.
इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे.
इस के लिए 50 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोशनी

कहानी • शिशिर विक्रांत

'**महल्ला** सुरक्षा व सुधार समिति के अध्यक्ष रजनीबाबू के घर पर ही समिति की बैठक हो रही थी. बैठक में उपस्थित समिति के चारपांच सदस्य अपने प्रयासों, सफलताओंअसफलताओं तथा भविष्य में किए जाने वाले कार्यों के बारे में अपनेअपने विचार प्रकट कर रहे थे.

''इतनी मेहनत, दौड़भाग करने और रुपए चटाने के बाद तो किसी तरह पाइप लाइन बिछवाई गई, पर जल का संकट दूर नहीं हुआ.'' समिति के उपाध्यक्ष मोहनलाल निराशा और अफसोस के साथ बोल रहे थे. ''पानी की सप्लाई इतनी धीमी है कि अधिकांश घरों में पानी ढंग से आता ही नहीं है. टोंटियों में से बूंदबूंद टपकता रहता है. जि... के घर नीचाई पर हैं, बस उन्हीं लोगों की मौज है.''

''इतना परेशान मत होइए मोहनबाबू, मैं इस समस्या से वाकिफ हूं और जल्द से जल्द इसे दूर करने की कोशिश कर रहा हूं.'' अध्यक्ष रजनीबाबू उन को आश्वस्त करते हुए बोले, ''आज दोपहर में भी मैं जलकल विभाग जा कर, अधिकारियों से मिला था. बस, हफ्ता भर में यह समस्या दूर हो जाएगी.''

फिर समिति के कोषाध्यक्ष शरदेंदु की ओर देखते हुए उन्होंने पूछा, ''विद्युत विभाग के अधिकारियों के पास आप ने ...

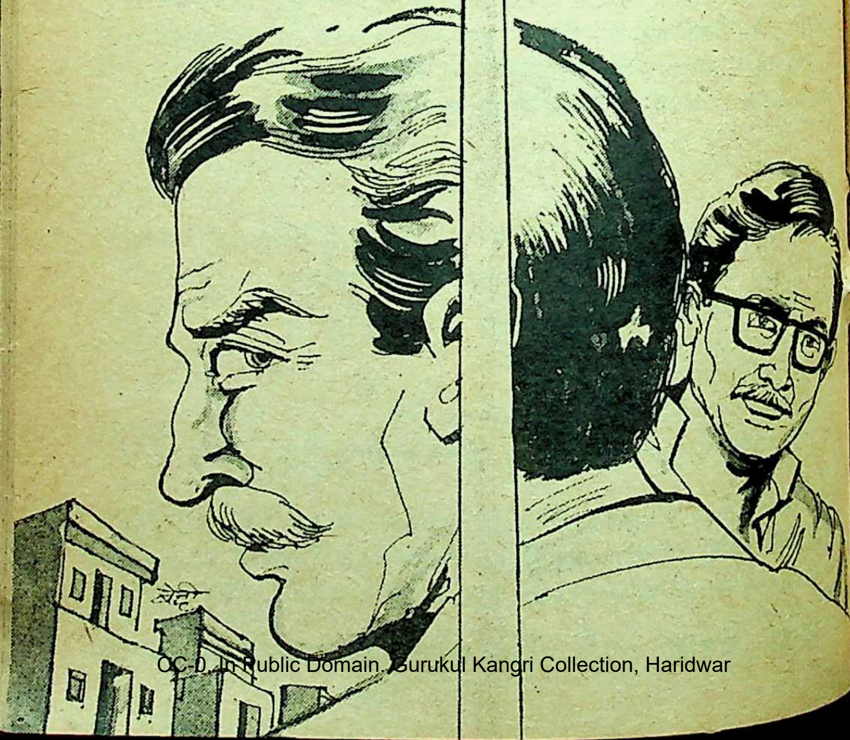

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

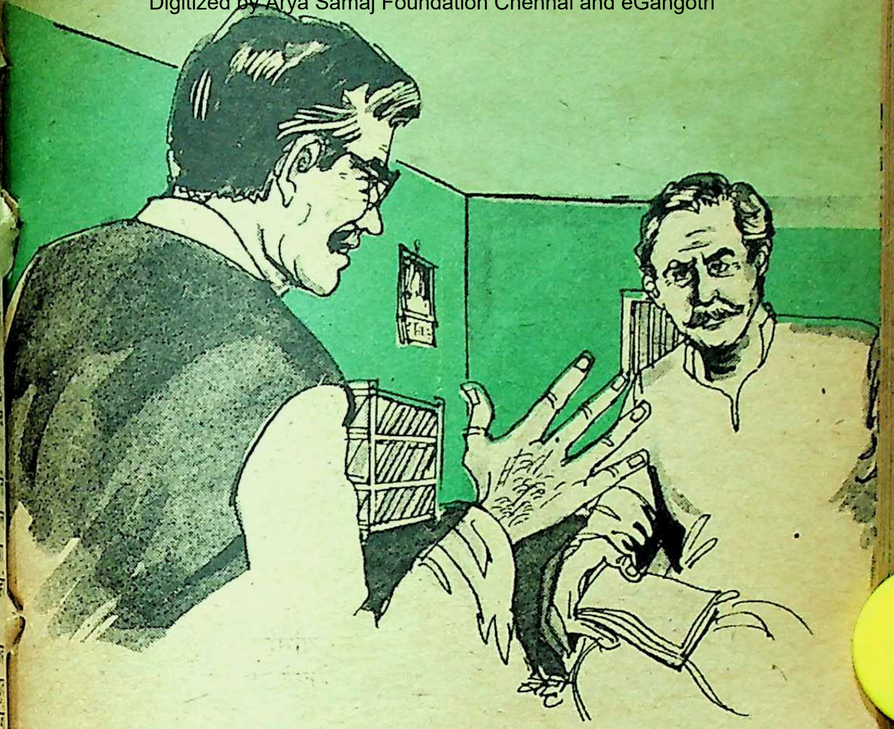

चार बिजली के खंभे और बढ़वाने के लिए रुपए जमा करवाए थे, उस विषय में क्या हुआ? जरा जल्दी कीजिए इस मामले में. आगे के मकान वाले बिना बिजली के बड़ी तकलीफ उठा रहे हैं. प्रतिदिन मेरे पास कोई न कोई आ जाता है, मैं किसकिस की परेशानी सुनूं."

"इस विषय में आप एकदम निश्चिंत रहें, रजनीबाबू." सिंह साहब हाथ नचाते हुए ठोस शब्दों में बोले, "बस, एकदो रोज से अधिक नहीं लगेगा. कलपरसों में ही खंभे खड़े हो जाएंगे. तार खिंचने में भी देर नहीं होगी."

"बहुत अच्छा." रजनीबाबू प्रसन्न हो कर बोले, "आप ने मेरी एक बहुत बड़ी चिंता दूर कर दी. समिति का अध्यक्ष होने के नाते एक न एक बोझ मेरे सिर पर लदा ही रहता है. यही कामना करता हूं कि हम लोगों के माथे कोई कलंक न लगे, वरना आप सभी जानते हैं कि आजकल चंदा इकट्ठा कर के कोई काम करवाना कोयले की दलाली करने जैसा है.

एक दीवाली ऐसी भी आई जब निर्मलजी और रजनीबाबू के दिलों में फैले अंधेरे रोशनी से जगमगा उठे पर उन के आपसी मनमुटाव की शुरुआत कहां से हुई थी?

मौका पाते ही लोग बदनाम करने से नहीं चूकते."

कुछ देर मौन छाया रहा. उपस्थित सभी सदस्य अपनीअपनी जिम्मेदारियों में डूब से गए.

पर समिति के सदस्य देवताप्रसाद के मजाकिया स्वर में कहे गए शब्दों से अचानक शांति भंग हुई, "निर्मलजी के बारे में आप ने अपने विचारों में कुछ परिवर्तन किया, रजनीबाबू?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन के वाक्य से वहां बैठे सभी लोग, गंभीरता के माहौल से उबर कर मजाक के मूड में आ गए. उन की आंखें इस की प्रतिक्रिया देखने की अपेक्षा से, रजनीबाबू के चेहरे पर जम गईं.

''परिवर्तन कैसा देवताप्रसादजी,'' निर्मलजी का नाम सुनते ही रजनीबाबू की आवाज में झल्लाहट और हल्का सा क्रोध आ घुला. वह अपेक्षाकृत तेज स्वर में बोले, ''मैं तो बस एक सीधी बात जानता हूं. जिस ने चंदा नहीं दिया, चंदे के सहारे की गई किसी भी सुविधा में उस को हिस्सा हरगिज नहीं दिया जा सकता. अरे, सभी को बिजली की सुविधा हो जाए, इसी विचार से मैं निर्मलजी के पास गया था, पर उन्होंने इस तरह से झिड़क दिया, मानो उन से भीख मांगने पहुंचा था. वह सोच रहे होंगे कि उन से चंदा ले कर मैं हजम कर जाऊंगा. ऐसा कंजूस और सनकी आदमी मैं ने आज तक नहीं देखा. 100 रुपए दे कर बिजली की सुविधा लेना उन को भला नहीं लगा, दीए की टिमटिमाहट में जिंदगी कुरबान करना उन्हें मंजूर है.''

''अब भूल भी जाइए पुरानी बातें रजनीबाबू.'' कोषाध्यक्ष शरदेंदुसिंह के स्वर में व्यंग्य का हल्का पुट झलक रहा था, ''महल्ला समिति के अध्यक्ष के नाते न सही, बतौर पड़ोसी ही उन के ऊपर उपकार कर दीजिए. बस उन की खंभे से बिजली लेने भर की बात पर राजी हो जाइए. इस में किसी की जेब से कुछ जाना है नहीं. उन्हें बिजली का आराम हो जाएगा. अरे, आप के पड़ोसी हैं, दिनरात के संगीसाथी हैं.''

''मुझे यही सोच कर तो अफसोस होता है, सिंह साहब... कि निर्मलजी जैसा घटिया शख्स मेरा पड़ोसी है. आमनेसामने की इन दोनों कतारों में बिजली की रोशनी रहती है. बस उन का ही घर अंधेरे में डूबा रहता है. लगता ही नहीं है कि वहां कोई इनसान रहता है. अंधेरा घिरते ही श्रीमानजी का घर मुर्दाघाट सा लगने लगता है. मुझे तो समझ नहीं आता कि पंखे, रेडियो वगैरा होते हुए भी उन सब के उपयोग और आराम से वंचित रह

... को किस बात पर संतोष है?'' ... बात सुन कर रजनीबाबू ने अपनी ... उगली.

''खैर छोड़िए इन बातों को. इस ... हम को क्या लेनादेना? अपने मन की ... और असली वजह तो निर्मलजी ही ...'' ''रजनीबाबू को हद से बढ़ते देख, उपाध्... मोहनलाल ने टोकते हुए आगे कहा, ''... बताइए कि आप लोगों की बोलचाल शु... या नहीं? सुना है आप दोनों में दुआसलाम ... नहीं है?''

''कैसी बात करते हैं आप ...'' रजनीबाबू बतौर जवाब नफरत से बोले, ''ऐसे घटिया और वाहियात आदमी से बोल... और दुआसलाम करना तो बहुत दूर की ... है, मैं तो उस की शक्ल देखना भी पसंद न... कर सकता. पहले तो सब कुछ बहुत अपन... भरा था. दिनरात का उठनाबैठना ... परिवार जैसे संबंध थे, पर जिस दिन से ... वाली बात पर उन्होंने चंदा देने से ... इनकार कर दिया, बस उसी दिन से मैं स... गया कि यह जनाब किस श्रेणी के हैं. उस ... से ले कर आज तक करीब डेढ़ साल हो ... पर तब की नफरत आज तक मेरे दिल ... बरकरार है. अब अगर निर्मलजी एक ... को मुझ से बोलें भी, तब भी मैं उन से ... नहीं कर सकता.

रजनीबाबू की ये बातें नई नहीं ... अकसर ही वह निर्मल... जी का प्रसंग चलने पर अपने मन में व्या... नफरत को शब्दों में बखानने लगते थे. निर्मलजी ने उन का कोई अहित नहीं कि... था. महल्ले के किसी अन्य व्यक्ति के साथ ... कोई बुराई नहीं की थी. फिर भी महल्ले वा... की नजर में उन का कोई सम्मान नहीं ... खास कर रजनीबाबू तो उन से बहुत ही ... खाते थे. अपनेअपने अनुसार सभी ने उन ... बहुत से अपमानजनक विशेषण रख दिए थे.

और इस सब की एक मामूली वजह थी. महल्ला अमरपुर नयानया ही बसा ... की ओर से अभी तक ... था. पर यहां प्रश्न ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

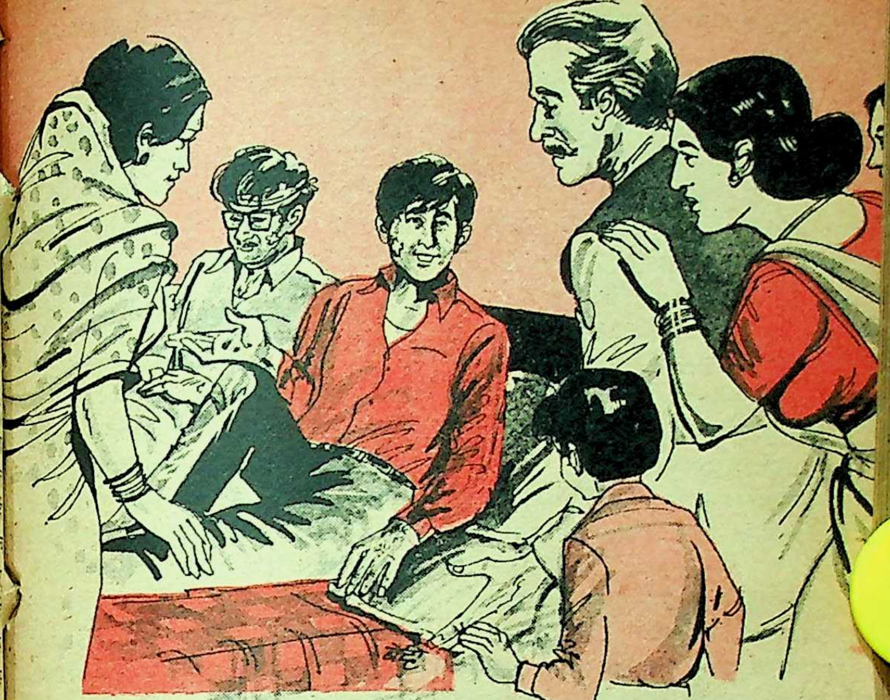

निर्मल चाचा बदमाशों से भिड़ गए, उन्होंने गहनों वाला झोला बदमाशों को नहीं दिया." सुंदर ने रजनीबाबू को बताया.

तो जल की सुविधा दी गई थी, न बिजली की. यह महल्ला था भी शहर के बाहर सा, लेकिन इन समस्याओं के बावजूद भी मकानों की भयंकर समस्या से परेशान लोगों ने चैन से रहने के लिए इस अविकसित महल्ले में अपनीअपनी सामर्थ्य के अनुसार मकान बनवा लिए थे. बहुत से लोग मकान बनवा भी रहे थे और जमीन की खरीदफरोख्त भी जारी थी.

लेकिन जैसेजैसे इस महल्ले की आबादी बढ़ती जा रही थी, लोग अनेक परेशानियां अनुभव करने लगे थे. महल्ले वालों का सब से बड़ा सिरदर्द था चोरी. अंधेरा घिरते ही महल्ला सायंसायं करने लगता था. दूरदूर मकान थे और सुरक्षा का कोई प्रबंध था नहीं.

चोरडकैत इस स्थिति का खूब फायदा उठाया करते. चोर को वैसे भी चांदनी रात भली नहीं लगती. अंधेरे और रात के सन्नाटे का नाजायज फायदा उठाते हुए चोर चोरी करने में सफल हो जाते. और हल्ला हो जाने पर भी साफ निकल जाया करते.

बात जब धीरेधीरे मारपीट और खूनखराबे तक पहुंची तो लोगों को इस समस्या पर एकजुट हो कर सोचविचार करने के लिए बाध्य होना पड़ा. लोग एकदूसरे के ज्यादा करीब आए. बैठकें होने लगीं.

लोगों ने असुरक्षा का सब से बड़ा कारण बिजली का न होना ही माना. बरसात में तो बिजली के अभाव से महल्लावासी बहुत दिक्कतें उठाते थे.

सोचविचार करने के बाद महल्ले में एक समिति का गठन किया गया, ताकि दिक्कतें आसानी से दूर की जा सकें.

समिति के पदाधिकारियों ने प्रत्येक घर से एक निश्चित मासिक चंदे का प्रावधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखा. किसी भी कार्य के लिए आर्थिक सहयोग जरूरी होता है. सभी लोग इस पर सहर्ष राजी हो गए.

फिर समिति ने समस्याओं के निराकरण के लिए बाकायदा अपनी दौड़भाग शुरू कर दी. लेकिन परिणाम, सफलता के रूप में न आ सका.

नगर स्तर के बाद और भी ऊंचे स्तर पर कारखाइयां की गईं. क्षेत्र के विधायक व संसद सदस्य आदि को भी परेशानियों से अवगत करा कर मदद करने का निवेदन किया गया. संबंधित मंत्री के पास भी अर्जियां भेज कर महल्ले की समस्याओं को दूर करने की प्रार्थना की गई. पर सब कुछ निष्फल ही रहा. कहीं कोई सुनवाई नहीं हुई.

थकहार कर समिति ने वही करने का निश्चय किया, जो आज के भ्रष्टाचार के युग में सरलतम और सफलतम उपाय माना जाता है. यानी रिश्वत दे कर काम करवाना और सुविधाएं लेना.

विद्युत विभाग तथा नगर महापालिका के संबंधित उच्च अधिकारियों के पास नजराने का प्रस्ताव रखा गया और वे सुविधाएं उपलब्ध कराने को राजी हो गए. घूस सहित कुल खर्च समिति वालों को बता दिया गया.

घूस की रकम और महल्ले के कुछ घरों की गणना कर के मालूम हुआ कि हर घर से 100 रुपए चंदा लेना होगा. सभी महल्ले वालों को इस से अवगत करा दिया गया. मात्र 100 रुपए के बदले बिजली की सुविधा लेना सभी को हर तरह से लाभदायक लगा.

चंदा इकट्ठा करने का भार समिति के अध्यक्ष रजनीबाबू ने अपने ऊपर ले लिया. और अगले दिन से ही वह अपने कार्य में जुट गए. घरघर जा कर चंदा इकट्ठा करने लगे. सभी खुशी से न केवल चंदा देते थे, बल्कि रजनीबाबू के प्रति कृतज्ञ भी होते थे.

एक दिन वह अपने पड़ोसी निर्मलजी के घर भी पहुंचे. सारी बात सुन कर निर्मलजी बोले, "मुझे बिजली की कोई जरूरत नहीं. मैं चंदावंदा नहीं दूंगा. अब तक जीवन बिना बिजली के गांव में ही काटा है. बच्चे भी कोई खास पढ़नेलिखने वाले नहीं हैं. हां, इस से पहले जरूर दो साल किराए पर एक मकान में रहा था, वहां बिजली थी. सो, बिजली की वजह से पंखा, रेडियो वगैरा खरीद लिए थे. अब यहां बिजली नहीं है तो कोई गम नहीं. सच रजनीबाबू, बगैर बिजली के रहने में मुझे कतई परेशानी नहीं है. इसलिए साफ बात है, मैं चंदा नहीं दूंगा."

"समझदार हो कर भी आप ये कैसी बातें कर रहे हैं?" उन की बात रजनीबाबू को एकदम अनुचित लगी. समझाने के भाव से बोले, "यहां सिर्फ अपनाअपना मतलब देखने से काम नहीं चलेगा, निर्मलजी. महल्ले के सभी लोगों की भलाई की बात है. आज नहीं तो कल, बिजली की आवश्यकता आप को भी महसूस होगी. गांव की बात भूल जाइए. अब आप शहर में हैं. अगलबगल हर मकान में बिजली जले और आप केवल 100 रुपए के कारण अंधेरे में रहें– क्या यह अच्छा लगेगा."

"अजी मेरे अच्छे लगने या न लगने से आप क्यों परेशान हो रहे हैं, रजनीबाबू, जब जरूरत महसूस होगी समिति को 100 रुपए दे कर बिजली ले लूंगा. फिलहाल तो मैं एक पैसा भी नहीं देने वाला."

रजनी बाबू के कलेजे में उन के शब्द बरछी से चुभ गए. उन को अपना अपमान प्रतीत हुआ. "मुझे आप से ऐसी उम्मीद हरगिज नहीं थी." कह कर वह उन के घर से चले आए थे.

जिस ने सुना, उसी ने निर्मलजी की भर्त्सना की. आतेजाते लोग उन पर छींटाकशी करते. संक्षेप में वह सारे महल्ले में एक अलगथलग से व्यक्ति हो गए.

चंदा इकट्ठा कर के बतौर रिश्वत दे दिया गया. फलस्वरूप सारे महल्ले में यथाशीघ्र बिजली आ गई. सभी बिजली का उपभोग करने लगे. बस, निर्मलजी ही एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन के घर में बिजली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुरसत

आदमी काम में उलझा है,
मशीनों की तरह,
किस को फुरसत है
तेरी मांग सजाने के लिए.

—सलीम अश्क

चकाचौंध नहीं थी.

धीरेधीरे लोगों की नजर में निर्मलजी की स्थिति सामान्य हो गई. लोगों ने उन से बातचीत करना भी शुरू कर दिया, पर रजनीबाबू के दिल में उन के लिए भरी हुई नफरत कम नहीं हुई. अब चंदे वाले प्रसंग की जगह वह उन से आपसी तौर पर नफरत करने लगे थे. उन्होंने अपने घर में सभी से निर्मलजी और उन के परिवार वालों से न बोलने की सख्त हिदायत कर दी थी.

बाद में निर्मलजी ने बिजली लेनी चाही भी थी, पर बात के बतंगड़ के डर से या न झुकने के हठ से उन्होंने रजनीबाबू से कभी कुछ नहीं कहा. हां, उन की यह इच्छा दूसरों के जरिए रजनीबाबू तक पहुंच गई थी. पर अध्यक्ष पद का पूरा फायदा उठाते हुए उन्होंने निश्चय कर लिया था कि जब हमारी जरूरत के समय वह हमें सहयोग देने से कतरा गया, तो हम उस की जरूरत के समय उस की मदद हरगिज नहीं कर सकते."

उन के आपसी मनमुटाव को अनुचित मानते हुए भी, लोग उन के अध्यक्ष होने के नाते चुप थे.

दीवाली के एक सप्ताह पूर्व महल्ले के शेष नवनिर्मित शेष मकानों में भी बिजली आ गई थी. सिर्फ निर्मलजी का मकान ही बिजली से वंचित था.

उन को लालटेन की रोशनी में रहते देख रजनीबाबू को विजय का एहसास होता था.

दीवाली से चार दिन पहले रजनीबाबू का 20 वर्षीय इकलौता लड़का सुंदर दोपहर में स्कूटर ले कर किसी कार्यवश घर से गया था. शाम को लौटा तो निर्मलजी के साथ रिकशे से. दोनों के शरीर पर कई जगह पट्टियां बंध रही थीं.

इस दृश्य को देख कर रजनीबाबू भौचक्के रह गए. आश्चर्य और घबराहट के मारे उन से कुछ पूछते नहीं बन रहा था. उन्होंने रिकशा वाले की मदद से, जल्दीजल्दी दोनों को रिकशे से उतारा और घर में ले जा कर पलंगों पर लिटा दिया. निर्मलजी ने इस तरह उन के घर में जाने और पलंग पर लेटने में कुछ आनाकानी भी की, पर रजनीबाबू ने उस पर कोई ध्यान ही नहीं दिया.

निर्मलजी ने अपने बैग को खोल कर उस में से कपड़े का एक झोला निकाला और रजनीबाबू को देते हुए बोले, "इसे संभालिए."

रजनीबाबू ने झोला खोल कर देखा. उस में गहने थे. "लेकिन यह सब हुआ क्या?" वह घबरा कर बोले. उन की पत्नी तथा निर्मलजी के घर वाले भी वहीं आ गए थे.

"दरअसल पिताजी, बैंक से गहने निकाल कर मैं अपने एक दोस्त के घर चला गया था. मुझे मालूम नहीं था कि मेरे पीछे दो बदमाश लग गए हैं. दोस्त के घर से लौटते वक्त वे दोनों बदमाश मोटर साइकिल से मेरा पीछा करने लगे. एक जगह उन्होंने मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूटर रुकवा लिया और चाकू दिखा कर गहने मांगने लगे. मेरे मना करने पर उन्होंने मुझे मारना शुरू कर दिया."

सुंदर दीवाली पर पूजन के लिए गहने लेने बैंक गया था. वह आगे बोला, "कुछ लोग दूर खड़े यह देख रहे थे, पर कोई बदमाशों से कुछ नहीं बोला. डर कर मैं ने उन को स्कूटर की चाबी दे दी. स्कूटर में से उन्होंने गहनों का झोला निकाला ही था कि अचानक निर्मलजी वहां आ गए. मेरे मुंह से बात सुनते ही बदमाशों से भिड़ गए. देखादेखी मैं भी भिड़ गया. कई जगह हम को चोटें लगीं, पर निर्मलजी ने अपने हाथ में लिया झोला उन को नहीं छीनने दिया. कुछ देर में इन के तीनचार परिचित भी वहां आ गए. बदमाश अपने को कमजोर समझ कर हमें छोड़ कर भाग गए. मेरा स्कूटर और इन की साइकिल ले कर इन के दोस्त यहां आते ही होंगे.

ऐन दीवाली के दिन तक वे ... सामान्य हो गए थे. रजनीबाबू बिजली के ... मिस्त्री को ले कर निर्मलजी के घर पहुंचे ... बोले, "आज तो प्रकाश का महान त्यो... दीवाली है. आप के घर में अंधेरा हो, यह ... पड़ोसी के लिए बहुत शर्म की बात है. मि... ले आया हूं, आप बिजली के लिए अर्जी दे... दीजिए. जब तक बिजली नहीं आती, तब तक मैं अपने घर से आप के यहां तार खिंचवा... देता हूं. मेरे और आप के घर बिजली ... सजावट यही कारीगर करेगा."

"अरे यों ही ठीक है." निर्मलजी ... कहना था कि रजनीबाबू बिगड़ते ... अधिकार से बोले, "खाक ठीक है. ... लीजिए आप के यहां बत्ती नहीं जली तो ... घर में भी अंधेरा ही छाया रहेगा." ... एकदूसरे को देखते हुए दोनों मुसकरा ... दोनों की आंखों में नमी सी आ गई थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार्डवेयर की दुकान

लेख • प्रतिनिधि

लोहे के इमारती सामान का व्यवसाय कर के अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है लेकिन यह कारोबार शुरू करने से पहले कुछ बातों का जानना बहुत आवश्यक है...

हार्डवेयर (इमारती सामान) का धंधा ऐसा है, जिस के चल निकलने पर भारी लाभ की संभावना होती है. हर आदमी अपने जीवन में एक मकान जरूर बनाना चाहता है. छोटे शहरों में भी नए बन रहे मकानों की संख्या काफी अधिक है. इसी लिए नए मकानों में काम आने वाले धातु आदि के सामान (हार्डवेयर) की मांग शहरों में खूब होती है.

दिल्ली के चावड़ी बाजार में हार्डवेयर का धंधा करने वाले मोहन का, अपने 10 वर्ष के अनुभव के आधार पर यह कहना है कि नई दुकान हमेशा ऐसी जगह पर खोलनी चाहिए, जहां कोई नई कालोनी बन रही हो या बनने की संभावना हो. नई आबादी वाली जगह पर दुकान खोलने से दुकान जल्दी चल निकलती है और बाजार में उस की साख बन जाती है. मोहन के अनुसार यह धंधा 20 से 25 हजार रुपए तक की लागत से शुरू किया जा सकता है.

दुकान के अंदर छोटेछोटे खानों वाली खुली अलमारियां बनवा लेनी चाहिए, ताकि ज्यादा सामान को करीने के साथ रखा जा सके. इस के अलावा कांच का एक शोकेस भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होना चाहिए, जिस से तरहतरह के सामान के खूबसूरत नमूने उस में सजाए जा सकें.

हार्डवेयर के सामान में दरवाजों की सांकलें, आगल, चटकनी, हैंडल, चैनल, विभिन्न प्रकार के ताले, कब्जे, पेच, डोरियां, परदों के डंडे, हुक्स, दराजों के नाब, जालियां, डोरक्लोजर, डोरस्टापर इत्यादि प्रमुख हैं. जालियों को दुकान के बाहरी हिस्से में ऐसे स्थान पर रखना चाहिए, जहां ग्राहक की नजर आसानी से जा सके.

दुकान खोलने से पहले बाजार का सर्वेक्षण कर लेना जरूरी होता है, मसलन यह जानना जरूरी है कि बाजार में किस चीज की खपत ज्यादा है तथा किस कंपनी का सामान ज्यादा टिकाऊ होता है. विभिन्न कंपनियों के बारे में जानकारी हासिल कर लेने से सामान की किस्म के बारे में आवश्यक जानकारी

हैंडल लाक के लिए प्रसिद्ध हैं.

अग्रवाल प्रोडक्ट्स—सभी प्रकार स्लाइडिंग फिटिंग होती है.

हैंडल में साधारणतया 7½ सेंटी से ले कर 25 सेंटीमीटर तक की बिक्री होती है. चटकनी हालांकि 5 सेंटीमीटर सेंटीमीटर तक की होती है, लेकिन के काम में आने वाली चटकनियां पांच सेंटीमीटर तक की ही होती हैं.

कब्जे, अलगअलग स्थानों पर प्रकार के लगते हैं, जैसे दरवाजे में सेंटीमीटर से ले कर 15 सेंटीमीटर तक कब्जे में लगते हैं, जिस के लिए सेंटीमीटर से ले कर पांच सेंटीमीटर के की आवश्यकता होती है. पेच दो सूत से सेंटीमीटर (चार इंच) तक के होते हैं. एक मकान में फिटिंग संबंधी जानकारी

दरवाजे की फिटिंग

दरवाजा	कब्जा	पें
185 सेंटीमीटर (छः फुट)	10 सेंटीमीटर	पौने चार सेंटीमीटर (8 नं
दो मीटर (साढ़े छः फुट)	12½ सेंटीमीटर	9 नं
215 सेंटीमीटर (सात फुट)	15 सेंटीमीटर	पांच सेंटीमीटर (10 नं

मिल जाती है. इस के अतिरिक्त नए बन रहे मकान में दरवाजे, खिड़कियों, अलमारियों की फिटिंग के बारे में भी थोड़ीबहुत जानकारी रखना जरूरी होता है. चूंकि हार्डवेयर के धंधे में लोहे का काम अधिक होता है, अतएव लोहे की विभिन्न किस्मों के बारे में भी जानकारी हासिल कर लेना लाभदायक है.

कुछ प्रमुख कंपनियां एवं उन के द्वारा तैयार किए जाने वाला सामान निम्नलिखित है.

नेटलफोल्ड—पेचों के लिए प्रसिद्ध है.

हैरिसन—तालों के लिए प्रसिद्ध है.

के.सी.ए., ई.सी., आई.इ., श्याम व रोहित,—हैंडलों एवं चटकनी के लिए प्रसिद्ध हैं.

प्रभात, हाईविन, एनेराइट,—डोरक्लोजर के लिए प्रसिद्ध हैं.

गोदरेज, टाइगर, प्लाजा, के.सी.ए.—

संक्षेप में दी जा रही है.

खिड़कियां: खिड़कियों में अकसर सात सेंटीमीटर का कब्जा एवं तीन सेंटी (सवा इंच) (सात नंबर) का पेच लगता

चटकनी: दरवाजों में ऊपर की अकसर 20 सेंटीमीटर की चटकनी तथा 15 सेंटीमीटर की चटकनी लगती है.

खिड़कियों में ऊपर की तरफ 15 सेंटीमीटर की तथा नीचे 10 सेंटीमीटर की चटकनी लगती है.

हैंडल: दरवाजों पर 10 सेंटीमीटर 12½ सेंटीमीटर के और खिड़कियों पर सेंटीमीटर के लगते हैं.

आगल: एक पल्ले के दरवाजे पर सेंटीमीटर या 25 सेंटीमीटर की, दो पल्ले दरवाजे पर 30 सेंटीमीटर की.

दरवाजों को अंदर से बंद करने के लिए बैठों में—सिंगल दरवाजों के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेंटीमीटर की तथा ऊपर से 25 या 30 सेंटीमीटर की.

हैंडल लाक: एक पल्ले के दरवाजों पर लगते हैं.

डोरक्लोजर: ये तीन माडलों में आते हैं. 61 माडल 6 फुटे दरवाजों के लिए, 62 माडल 7 फुट के दरवाजों के लिए तथा 63 माडल यूनिवर्सल साइज के लिए आता है.

ताले दो से सात लीवर तक के आते हैं, लेकिन ज्यादातर इस्तेमाल में दो से चार लीवर तक ही आते हैं.

बहुत से लोग जाली के दरवाजे भी लगाना चाहते हैं. वैसे भी नए दुकानदार को दुकान के मेल की सारी चीजें रखनी चाहिए. बाजार में आमतौर से तीन प्रकार की जालियों का प्रचलन है.

पावरलूम: ऐसी जाली जो मशीन के द्वारा बनाई गई हो, पावरलूम कहलाती है. देखने में ऐसी जालियां काफी खूबसूरत भी होती हैं.

हैंडलूम: हाथ से बनाई जाली बाहर से देखने में अच्छी लगती है. लेकिन अंदर से अच्छी नहीं होती.

खिंचे हुए तार की: ऐसी जालियां चमकती बहुत हैं, लेकिन बहुत जल्दी इन में जंग लग जाता है. नए दुकानदारों को ऐसी चीजें कम से कम रखनी चाहिए, जिस से ग्राहक बाद में असंतुष्ट हो. पावरलूम एवं हैंडलूम को दुकान पर अवश्य रखना चाहिए.

दुकान हमेशा बरसात के बाद खोलनी चाहिए. इस से दो फायदे होते हैं. पहला तो यह कि ज्यादातर नए मकान बरसात के बाद ही बनने शुरू होते हैं. अतः सामान की बिक्री बढ़ जाती है. दूसरा सब से बड़ा फायदा यह है कि लोहे के सामान में जंग नहीं लगता. बरसात के पहले दुकान खोलने पर बरसात के दौरान लोहे के सामानों में जंग लग जाता है. उस माल को ग्राहक खरीदना नहीं चाहते.

दुकान खोलने के बाद कुछ दिनों तक यह देखना चाहिए कि किस चीज की खपत सब से ज्यादा है. जिस चीज की खपत ज्यादा होती हो, उस की चार पांच किस्म रखनी चाहिए, जिस से ग्राहक को दूसरी दुकानों पर नहीं जाना पड़े.

नई दुकानों में हमेशा इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि अप्रचलित चीजें या वे चीजें जिन की खपत नहीं के बराबर हो कम से कम रखी जाएं. ऐसा नहीं करने से काफी पूंजी इसी में फंस जाने की आशंका रहती है. आमतौर से देसी पेच, स्लाईडिंग बोल्ट्स, खिंचे हुए तार की जाली, लोहे के नाप इत्यादि अप्रचलित चीजें हैं. जगह के अनुसार ये अप्रचलित भी अलगअलग होती हैं, क्योंकि लोग फैंसी सामान को ज्यादा खरीदते हैं. मध्यम वर्गीय कालोनी या छोटे शहर में बहुत फैंसी चीजें अप्रचलित हो जाती हैं.

नरभक्षी

मनुष्य मनुष्य को खा सकता है, इस बात पर आप भले ही विश्वास न करें. परंतु पोलैंड में हाल ही में एक ऐसी घटना घटी है.

पोलैंड के हेनटिक माडेला नामक एक व्यक्ति ने 23 वर्षीया महिला की हत्या कर के उस के हाथ, पैर सिर आदि अंग काट कर रख लिए. बाद में उस ने उन में से कुछ अंग खा भी लिए. सरकारी दूरदर्शन ने माडेला द्वारा इस्तेमाल की गई प्लेट एवं कांटे की फोटो भी प्रदर्शित किए.

इस जघन्य अपराध के बाद माडेला पास के वन में जा छिपा. वहां अपने घृणास्पद अपराध का बोध होने पर उस ने आत्महत्या कर ली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने सरदर्द के लिए
मैंने क्या-क्या नहीं किया,
पर बात बनी सिर्फ़ इस एक से!

सेरिडॉन
ट्रेडमार्क 'रोश'
शक्तिशाली. सुरक्षित.
सिर्फ़ एक काफ़ी है.

HTB-RPL-7799

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई सी जी के

...रखना ...न रखने से ...नहीं रखा जा

...वयर का सामान सप्लायर से दो से ... हजार रुपए के बदले में आठ से 10 हजार रुपए तक का सामान उधार प्राप्त किया जा सकता है. उधार चुका देने की अवधि 15 से 20 दिनों तक की होती है. सप्लायर को सामान लेने से पहले दी गई राशि जमानत राशि कहलाती है. प्रत्येक सामान पर 15 से 20 प्रतिशत का मुनाफा जायज है, लेकिन दुकान जमाने के लिए लाभ कम भी किया जा सकता है. दिल्ली में कई ऐसी कंपनियां भी हैं, जो अपने द्वारा बनाई गई चीजें सीधे व्यापारी को देती हैं. दुकान जम जाने पर ऐसी कंपनियों से संपर्क किया जा सकता है. शुरू में ऐसा नहीं किया जा सकता क्योंकि कंपनियां उधार सामान नहीं देती हैं.

सफल दुकानदारी के लिए सामान की अच्छी जानकारी और ग्राहक से धैर्य से पेश आना आवश्यक शर्तें हैं. ग्राहक किस दाम के अंदर चीजें खरीदना चाहता है, इसे ध्यान पूर्वक सुनना चाहिए. चीज दिखाते समय उस की खूबियां भी बताते जाना हमेशा फायदेमंद होता है. ऐसा करने से ग्राहक को यह विश्वास हो जाता है कि जो सामान वह खरीद रहा है, वह अच्छा एवं टिकाऊ है. उदारहण के लिए अगर दुकानदार दरवाजे के हैंडल दिखा रहा है तो उसे ग्राहक को यह बताना चाहिए कि इस का लोहा अल्युमिनियम कैसा है.

लोहे के सामान दो प्रकार के होते हैं. ढलाई की चीजों में मुनाफा कम होता है, लेकिन मशीन की चीजों में मुनाफा ज्यादा होता है.

पूरे माल का 15 से 20 प्रतिशत माल नकली भी रखा जा सकता है, क्योंकि बहुत से ग्राहक नकली ही खरीदना चाहते हैं. दुकानदार को भी इस में फायदा ज्यादा होता है. लेकिन नकली सामान बेचने से दुकान की बदनामी का डर रहता है, अतएव ज्यादा नकली माल कभी भी नहीं खरीदना चाहिए.

दुकान खोलने के लिए बैंक तथा सरकारी संस्थाओं से ऋण मिलते हैं. अगर जमीन अपनी हो तो बैंक 70 प्रतिशत तक ऋण दे देता है.

इस धंधे में लगने से पहले कुछ औपचारिकताएं भी पूरी करनी होती हैं. 'दुकान पंजीयन अधिनियम' के अंतर्गत अपनी दुकान का पंजीकरण अवश्य करा लेना चाहिए. पंजीकरण संबंधी कार्य में तकरीबन तीन दिन लग जाते हैं. फिर राज्य बिक्री कर व केंद्रीय बिक्री कर लाइसेंस लेने होते हैं. मोहन के अनुसार दुकान चल निकलने पर 15 से 25 प्रतिशत तक मुनाफा आसानी से कमाया जा सकता है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवजागरण की पाक्षिक पत्रि

भूभारती

राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक घटनाओं में सीधे घटनास्थल से खोजपूर्ण जानकारी.

हर पक्ष नई घटनाएं, नए समाचार.

हर पक्ष 5 लाख लोग भूभारती पढ़ते हैं.

म-108

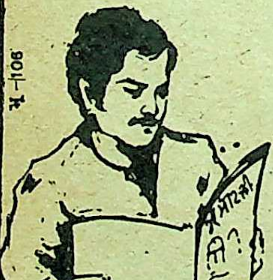

भूभारती पढ़िए—जागरूक व जिम्मेदार नागरिक बनिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रम का दीप

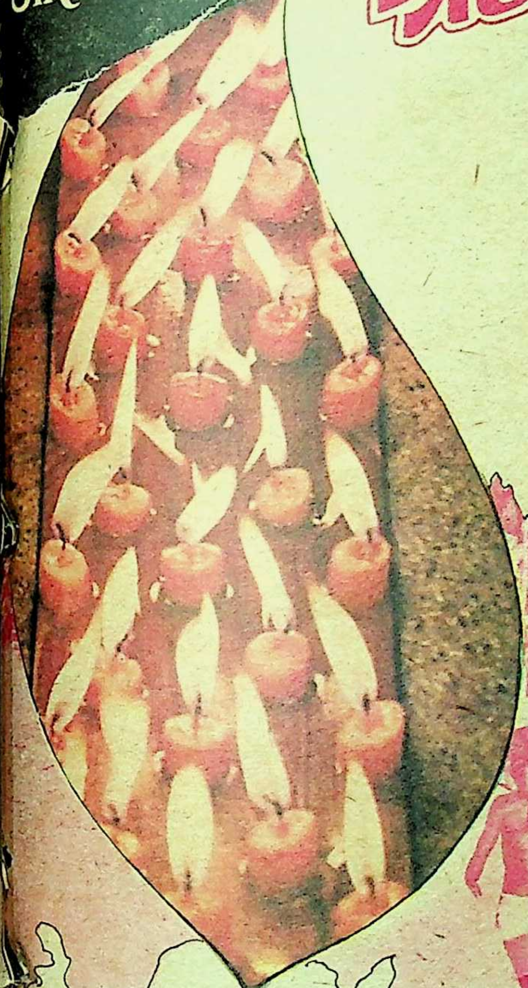

माटी को अब चंदन करने,
श्रम का दीप जलाओ रे.

मेहनत का मधु ही जीवन में
उज्ज्वल गान भरेगा,
वही पसीना फूल बनेगा
जो निर्माण करेगा.
अंबर को छू लें मीनारें
ऐसी लहर उठाओ रे.

तम को स्वर्णिम कर देते हैं
प्यार भरे रस्ते,
नए सृजन की लौ उकसाएं
आओ हंसते-हंसते.
सारा जग अपना हो जाए
मीठा राग सुनाओ रे.

फूलों जैसे हंसो-खिलो तुम
धरती को महकाओ,
देख रहा है तुम्हें जमाना
सब को ही अपनाओ.
किरणों से रंग जाए हर पथ
सूरज नया उगाओ रे.

—प्रकाश मनु

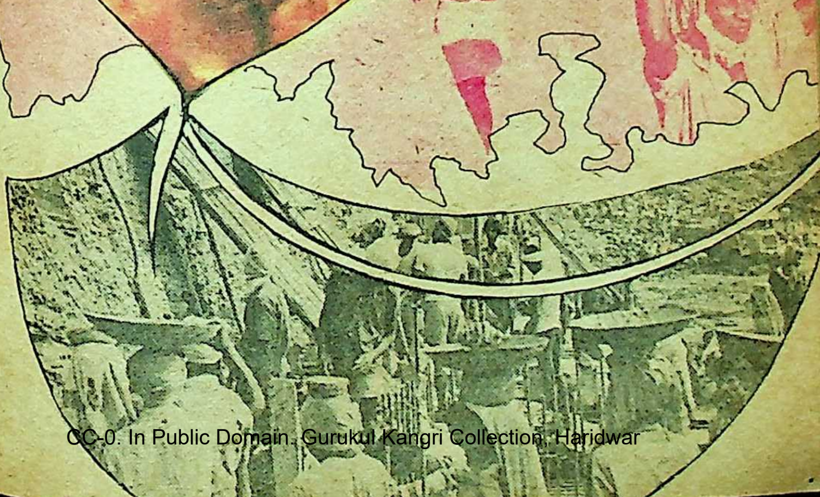

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये शिक्षक

इस स्तंभ
संस्मरण भेजिए.
साथ प्रकाशित किया
प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15
एवं सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें
पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ
अपना नाम व पता अवश्य लिखें.
भेजने का पता : संपादकीय विभाग
मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई
दिल्ली-110055.

मैं उन दिनों बी.ए. के अंतिम वर्ष में था. हमारे राजनीति शास्त्र के प्राध्यापक बहुत सुस्त किस्म के थे. वह काफी समय कुरसी पर बैठने व चश्मे को ठीक करने में लगा देते, फिर पूछते, "हम कल कहां थे?"

हमें उन के व्याख्यान की अंतिम पंक्तियां दोहरानी पड़तीं, फिर वह आगे पढ़ाना शुरू करते. कभीकभी वह जलपान गृह में ही बैठे रह जाते और घंटा वैसे ही निकल जाता.

एक बार वैसे ही वह जलपान गृह में बैठे रह गए और घंटा निकल गया. अगले दिन कक्षा में आए तो बोले, "हम कल कहां थे?"

जलेभुने एक छात्र ने कहा, "जलपानगृह में."

यह सुनते ही वह झेंप गए.

— प्रकाश आ...

*

हमारे गणित के अध्यापक हर बात में छात्रों से 'खड़े हो जाएं' कहा करते थे. एक बार वह कक्षा में हाजिरी ले रहे थे. कई छात्र अनुपस्थित थे. हाजिरी लेने के बाद वह खड़े हुए और बोले, "जो छात्र अनुपस्थित हैं वे खड़े हो जाएं." यह सुनते ही सभी छात्र हंसने लगे. जब अध्यापक को अपनी गलती का एहसास हुआ तो वह बहुत झेंपे.

— गिरीश ...

*

हमारे हिंदी के शिक्षक की छवि छात्रों में एक संकुचित विचारों वाले अंधविश्वासी और कट्टर पंथी व्यक्ति की थी.

लेकिन बहुत दिन बाद यह जान कर हमारा मन उन के प्रति श्रद्धा से भर गया कि वह कक्षा के एक विकलांग हरिजन छात्र को केवल सहायता ही नहीं करते बल्कि उन्होंने उसे पुत्रवत अपना लिया था, जब कि हम सब उस हरिजन छात्र से अलग रहते थे.

इस की ग्लानि हमें बहुत दिनों तक रही.

— राजेश कुसुम...

*

बात उस समय की है जब मैं प्राथमिक विद्यालय में पढ़ता था. हमारे एक शिक्षक का पुत्र भी हमारी कक्षा में पढ़ता था. वह पढ़ने में बहुत कमजोर था, लेकिन इस कारण निश्चित था कि उस के पिता अध्यापक हैं, तो वह पास हो ही जाएगा.

उस छात्र के पिता पक्षपात विरोधी थे. उन्होंने अपने साथी शिक्षकों से कह दिया कि "मेरा पुत्र अच्छी पढ़ाई करे तभी उस को उत्तीर्ण करना," और हुआ भी यही. उस वर्ष उन का पुत्र अनुत्तीर्ण रहा.

— धर्मराज ...
(सर्वोत्तम)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई सी जी के सौन्दर्य का वर्णन ! शब्द नही ..

छबी ही केवल करे बयां.

I.C.G.®

१००% पॉलिएस्टर साडियां
मोनालीसा • एलीगन्स
इनकी सुन्दरता का रूप
आपकी आंखों में
सुहाने सपने बन कर
बस जाएगा

आई.सी गांधी सिल्क
मिल्स लिमिटेड
अश्विनी कुमार रोड, सूरत ३९५ ००६

पॉलिएस्टर साडियां • अमेरिकन जॉर्जेट शिफॉन
निटेड शिफॉन • गजी सिल्क • सिल्की वूली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • नवरूप छाबड़ा

हिंदी फिल्मों की खलनायिकाएं

यदि हिंदी फिल्मों की नारी पर दृष्टि ... तो उस की दो छवियां सामने आ... हैं. एक पारंपरिक भारतीय नारी ... 'सतीसावित्री' जैसी छवि, जो हमेशा ... भोगती रहती है, उस के दिल में दर्द तथा ... पर मुसकान रहती है. दूसरी छवि इस ... बिलकुल विपरीत है. वह है एक मोहक दिख... वाली खलनायिका की. यह खलनायक ... रखैल के रूप में परदे पर आती है. यह ... होती है और अपना उद्देश्य पूरा करने ... लिए कुछ भी कर गुजरती है.

कुछ समय तक तो फिल्मी दुनिया ... जैसे यह एक अलिखित कानून सा बन गया ... कि जिस अभिनेत्री ने एक बार खलनायि... की भूमिका निभा दी, बस वह अब ऐसी ही भूमिकाएं करे. वह कभी एक नायिका नहीं बन सकती थी. उस से यही आशा की जा... थी कि वह अपने शरीर के अंगों को उभा... वाली पोशाकें पहन कर दर्शकों को लुभा... उसे फिल्म को चलाने के लिए फिल्मी मसा... के रूप में इस्तेमाल किया जाता था.

लेकिन धीरेधीरे फिल्मी नारी की इन ... छवियों के बीच की खाई कम होती गई ... एक नायिका कभीकभी खलनायिका ... भूमिका भी निभा देती है. फिल्म 'देवता' ... वैजयंती माला ने खलनायिका की भूमिका ... निभाई थी. अभी हाल ही की एक फिल्म ... 'जानी दुश्मन' में रेखा 'कैबरे नर्तकी' ... थी.

इधर कुछ वर्षों में हिंदी फिल्मों ...

पदमा खन्ना: अभिनय की चाह ने अ... भोजपुरी फिल्मों ... ला दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेलेन: खलनायिका की भूमिका तथा कैबरे नृत्य कर काफी समय तक तहलका मचाए रखा.

खलनायिका की भूमिका निभाने वाली काफी अभिनेत्रियां आई हैं. पर पहले एक ही खलनायिका थी— शशिकला. शशिकला ने सब से पहले फिल्म 'जीनत' में काम किया था. उस फिल्म में उस ने अपने यौन आकर्षण तथा कुछ नाक में बोलने जैसी आवाज से, जो दर्शकों को चांदी की घंटी की मधुर आवाज की तरह लगती थी, दर्शकों को मुग्ध कर दिया था. वह देखने में काफी अच्छी लगती थी, यहां तक कि जब वह बहुत बुरी भूमिकाएं निभाती थी तो भी उस का वह रूप प्रभावित नहीं होता था. फिल्म 'फूल और पत्थर' उस के अविस्मरणीय नृत्यों के कारण खूब चली थी.

हिंदी फिल्मों में खलनायिका का अभिनय करने वाली अभिनेत्रियों की निजी जिंदगी क्या है? परदे की यह छवि उन के किस रूप को दर्शकों के सामने रखती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान बनाने वालों की पहली पसंद

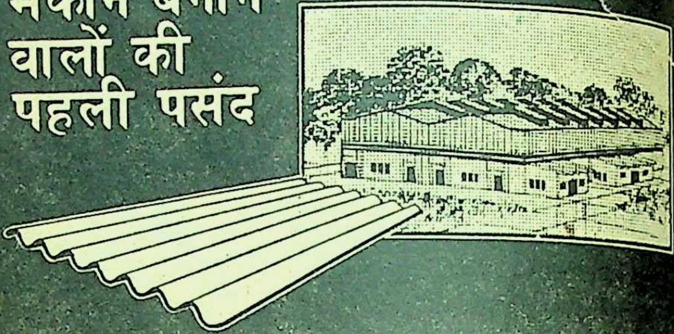

चारमीनार छत की चादरें

- टिकाऊ
- मौसम का असर नहीं
- आग का असर नहीं
- सस्ती

HYDERABAD ASBESTOS

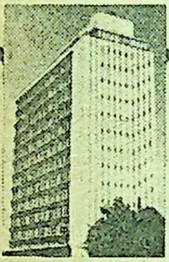

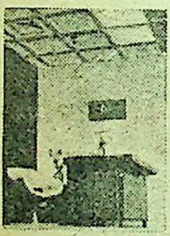

इमारती सामान में आप को व्यावहारिक, सुंदर, बहुउपयोगी और अग्नि प्रतिरोधक सामग्री चाहिए तो...

मांगिए

flex-o-board

फ्लैक्स-ओ-बोर्ड उच्च दबाव वाली स्टीम से उपचारित इस देश का बना एक मात्र ए.सी. बोर्ड है. इस अनूठे इमारती बोर्ड का इस्तेमाल विविध कार्यों में किया जा सकता है और यह खूबसूरती में बेजोड़ है. इसे चाहे अस्थायी छत (फाल्स सीलिंग) बनाने के काम में लाइए, चाहे पार्टीशन, पैनल, खोखे या साइनबोर्ड बनाने के. इस पर आग का कोई असर नहीं होता. ऊंची इमारतों में उपयोग के लिए यह बेहतरीन है.

इसे काटने, इस में छेद करने, कील गाड़ने या पेंच कसने के लिए साधारण औजारों से ही काम चल जाता है.

इसे काटने, इस में छेद करने, कील गाड़ने या पेंच कसने के लिए साधारण औजारों से ही काम चल जाता है.

इस पर जैसा चाहे रोगन कीजिए या सजावटी अथवा लैमिनेटिड पेपर लगाइए.

इसे कीड़ेमकोड़े नुकसान नहीं पहुंचाते.

HYDERABAD ASBESTOS
CEMENT PRODUCTS LIMITED
Hyderabad-500 018

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

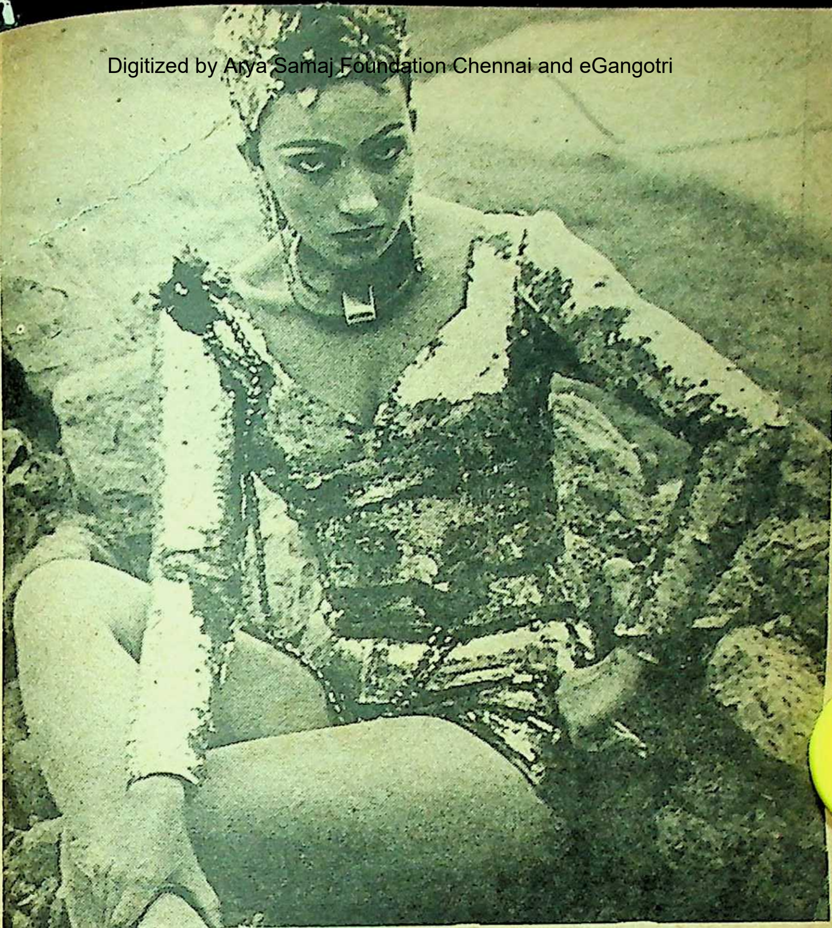
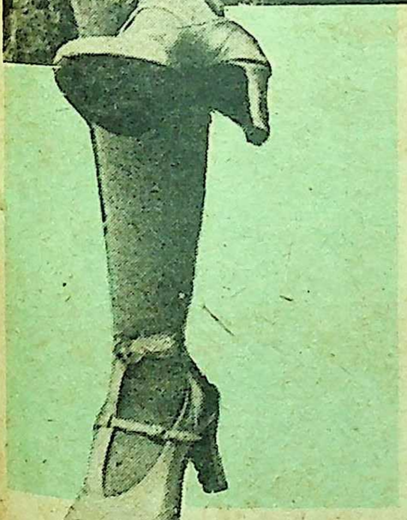

लेकिन यौन आकर्षण व सुंदर चेहरा होते हुए भी उसी की तरह की भूमिकाएं निभाने वाली नई अभिनेत्रियों के आ जाने के कारण उसे फिल्में मिलनी कम हो गईं और वह दर्शकों से दूर होती गई. बहुत समय बाद वह फिल्म 'दुल्हन वही जो पिया मन भाए,' 'संग्राम' और 'खूबसूरत' में दिखाई दी और इन फिल्मों से फिल्मी दुनिया में उसे एक नया जीवन मिला. 'खूबसूरत' में उस ने अपनी खलनायिका की छवि को बदलने की कोशिश की है और उस की यह कोशिश स्वागत योग्य है.

हेलेन ने भी कुछ समय तक खलनायिका की भूमिका तथा कैबरे नृत्य कर के फिल्मी दुनिया में तहलका मचाए रखा. सभी निर्माता इस तरह के नृत्यों व भूमिकाओं

कल्पना अय्यर: कल का इंतजार.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

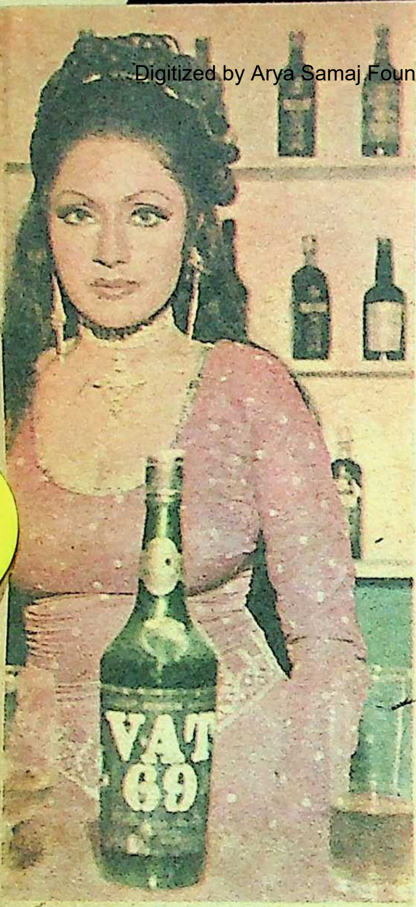

के लिए हेलेन को ही अपनी फिल्मों में लेना चाहते थे. एक कुशल नर्तकी तथा कुछ भारतीय, कुछ अंगरेज नारी की सी शक्लसूरत के कारण वह इस तरह की भूमिकाओं के लिए पूरी तरह उपयुक्त थी. फिल्म 'इंतकाम' में उस ने बहुत ही सुंदर कैबरे नृत्य किया था. उतना सुंदर कैबरे नृत्य फिल्मी दुनिया में दूसरा नहीं पेश किया जा सका है. बताया जाता है कि हेलेन अपने एक नृत्य के लिए तीन लाख रुपए लेती थी. आज इस तरह का नृत्य करने वाली अन्य फिल्मी नर्तकियां उस से कम पैसे लेती हैं.

हेलेन ने इतनी फिल्मों में काम किया है कि यह एक विश्व कीर्तिमान बन गया है. 'गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड्स' में उस का नाम छपा है.

चूंकि उस की उम्र अब ढल रही है

इसलिए उस ने अब दूसरे तरह की भूमिका लेनी शुरू कर दी हैं. फिल्म 'राम बलराम' में उस ने जीनत अमान की मां की भूमिका निभाई है. भारतीय फिल्मों में इतनी तड़कभड़क वाली मां की भूमिका किसी और ने अब तक नहीं निभाई है. उस की आने वाली फिल्म 'डायल 500' है.

उस के बाद बिंदु का जमाना आया. बिंदु का नाम सचमुच बहुत प्रसिद्ध हुआ. हेलेन के छरहरे शरीर के विपरीत बिंदु का शरीर कुछ ऐसा मांसल था कि दर्शकों की आंखें परदे से चिपक जाती थीं. बिंदु ने जहां 'कटी पतंग' तथा 'हीरामोती' फिल्मों में तेजतर्रार खलनायिका की भूमिका की है, वहीं 'अभिमान' जैसी फिल्म में उस ने एक अच्छी अभिनेत्री की भी भूमिका निभाई है. निर्मातानिर्देशक ऋषिकेश मुखर्जी ने उस के विषय में प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा था, ''बिंदु के चेहरे पर कोमलता है. मैं सोच ही नहीं सकता कि वह खलनायिका हो सकती है. इसी लिए मैं ने उसे 'अभिमान' में एक चरित्र भूमिका दी.''

फिल्मों में बिंदु एक खलनायिका की तरह नजर आती है, जो खलनायक के साथ शराब पर शराब पीती है, सिगरेट पर सिगरेट फूंकती है, लेकिन अपने निजी जीवन में वह एक पारंपरिक भारतीय नारी है.

बिंदु ने एक बार कहा था, ''मैं फिल्मों में जिस्म को उभारने वाली पोशाकें इसलिए पहनती हूं, क्योंकि लोग खलनायिका को इस प्रकार के कपड़ों में पसंद करते हैं. लेकिन इस का मतलब यह नहीं है कि मैं घर में भी उसी तरह के कपड़े पहनती हूं या उसी तरह की हरकतें करती हूं.''

धीरेधीरे नई अभिनेत्रियों और नर्तकियों के आ जाने के कारण बिंदु का फिल्मी जीवन अब उतार पर आ गया है.

एक समय तो ऐसा लगा था जैसे पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खन्ना बिंदु से आ[illegible] खन्ना केवल अपनी अभिनय प्रतिभा के आधार पर ही फिल्मी दुनिया में स्वयं को स्थापित नहीं कर सकी, इसलिए उस ने नृत्य पर ध्यान दिया. नृत्य के कारण उसे काफी लोकप्रियता भी मिली. उस ने फिल्म 'जानी मेरा नाम' में बहुत अच्छा नृत्य किया था.

लेकिन पद्मा नृत्य से ही संतुष्ट नहीं हुई और वह चुनौतीपूर्ण भूमिकाएं करना चाहने लगी. उस का कहना है, ''यह बड़े खेद की बात है कि बहुत से लोग सचाई से बचने के लिए फिल्में देखने जाते हैं. इस तरह की विचारधारा को रातोंरात नहीं बदला जा सकता. इसलिए हम को उसी ढर्रे पर चलना पड़ता है.''

पद्मा खन्ना की यह तीव्र उत्कंठा थी कि वह अपनी अभिनय प्रतिभा को दर्शकों के सामने पेश करे. लेकिन हिंदी फिल्मों में कड़ी [illegible] थी, इसीलिए वह भोजपुरी फिल्मों में चली गई. उस ने सोचा कि उन फिल्मों के माध्यम से अभिनय प्रतिभा को दिखाने का मौका मिलेगा. भोजपुरी फिल्मों में जाने के बाद वह उन फिल्मों की चोटी की अभिनेत्री हो गई है. अब हिंदी फिल्मों में वह यदाकदा ही दिखाई देती है.

इधर सीमा कपूर ने कैबरे नर्तकी के रूप में फिल्मों में कदम रखा है. सीमा कपूर फिल्मों में कैबरे नृत्य करने वाली पहली ऐसी नर्तकी हैं जो अपने वास्तविक जीवन में भी कैबरे करती है.

सीमा ने प्रमोद चक्रवर्ती की फिल्म 'वारंट' में काम किया था. इस फिल्म को देख कर लगा था जैसे वह निश्चित रूप से सफल

सीमा कपूर: परदे और निजी जिंदगी में समानता.

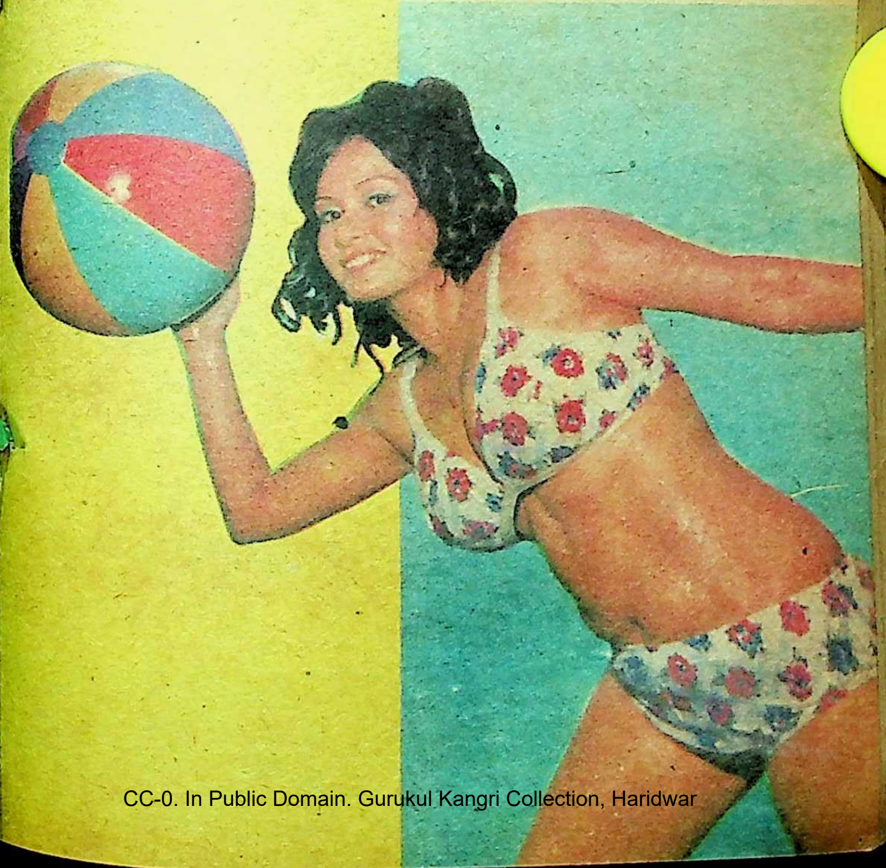

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलात्कार, हत्या, डकैती, तस्करी, जालसाजी, वेश्यावृत्ति की कहानियां –

क्या आप का सही मानसिक विकास करती हैं?

क्या आप का सही मनोरंजन करती हैं?

क्या आप को सही राह दिखाती हैं?

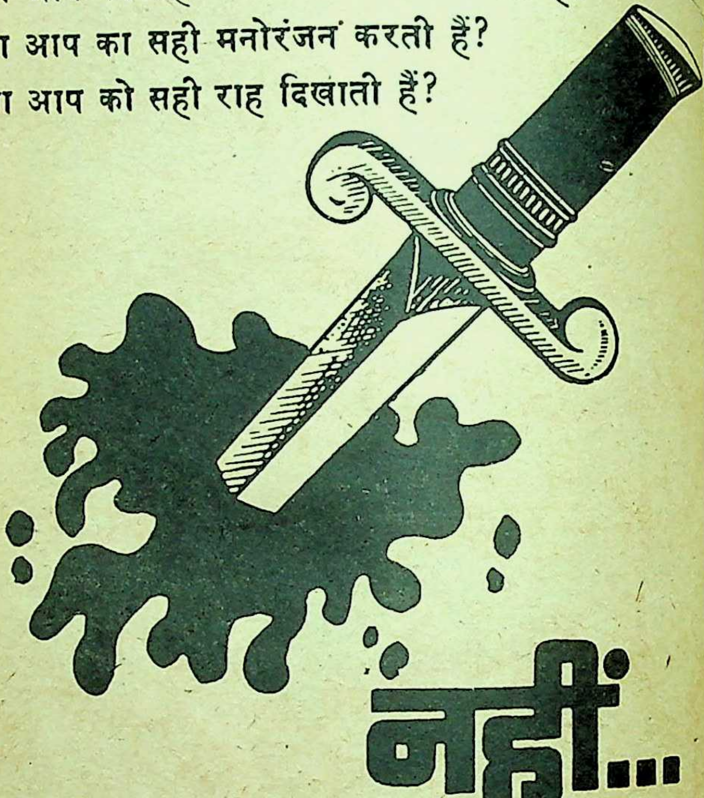

वे सिर्फ क्षणिक रोमांच देती हैं...

गलत दुनिया में भटकाती हैं...

चरित्रहीनता की ओर ले जाती हैं...

सुरुचिपूर्ण, स्वस्थ मनोरंजन के लिए प्रेरक और उद्देश्यपूर्ण साहित्य पढ़ें.

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं

ज्योति नए युग की घरघर जगाएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगी. उस ने 'गुप्त ज्ञान' तथा 'शैतान मुजरिम' जैसी फिल्मों में भी काम किया.

लेकिन उस ने पत्रिकाओं में अपने अधिक से अधिक खुले जिस्म के फोटो छपवाने में अधिक दिलचस्पी लेनी शुरू कर दी. इस से उस के फिल्मी जीवन पर बुरा असर पड़ा और वह फिल्मों में अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर सकी.

इस के बाद शीतल ने भी फिल्मों में कदम रखा तो लोगों की धारणा बनी कि उस का भविष्य उज्ज्वल होगा. वह अपने विषय में डींगें अधिक मारती थी. उस के विषय में यह अफवाह फैली थी कि वह नशीली दवाएं आदि खाने की आदी है. इसलिए निर्माता उसे अपनी फिल्मों में लेने से बचने लगे.

हालांकि शीतल का दावा है कि इस समय उस के हाथ में 50 से अधिक फिल्में हैं, लेकिन यह तो समय ही बताएगा कि उस की बात में कितनी सचाई है.

इधर खलनायिका के रूप में फिल्मों में आई कल्पना अय्यर की चर्चा है कि कुछ लोग उसे 'डायनामाइट' भी कहते हैं. वह 'भारत सुंदरी' का खिताब जीत चुकी है, इसलिए वह फिल्मों में बतौर नायिका आ सकती थी. लेकिन नायिका के बदले उस ने खलनायिका की भूमिकाएं करना अधिक पसंद कीं. उस ने यह सोच कर इस तरह की भूमिकाओं का चुनाव किया कि खलनायिकी के क्षेत्र में स्पर्धा कम है.

उस ने बड़े जोरशोर से फिल्म उद्योग में कदम रखा. उस ने सब से पहले इंद्रसेन जौहर की फिल्म 'नशाबंदी' में काम किया. उस फिल्म में उस ने चुंबन का दृश्य दिया, इसलिए उस के विषय में काफी विवाद उठ खड़ा हुआ. कुछ लोगों ने इस के लिए जौहर और कल्पना की कड़ी आलोचना की.

कल्पना का अपने विषय में कहना है, "मैं बिंदु की तुलना में अधिक सुंदर हूं तथा उस की अपेक्षा मुझ में झिझक भी कम है. मैं परदे पर कोई भी दृश्य दे सकती हूं और किसी भी तरह की भूमिका स्वीकार कर सकती हूं. मुझे विश्वास है कि मैं सफल होऊंगी."

'बंबई का महाराजा,' 'हकदार' और

(शेष पृष्ठ 98 पर)

शशिकला: जो अचानक दर्शकों से दूर होती गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

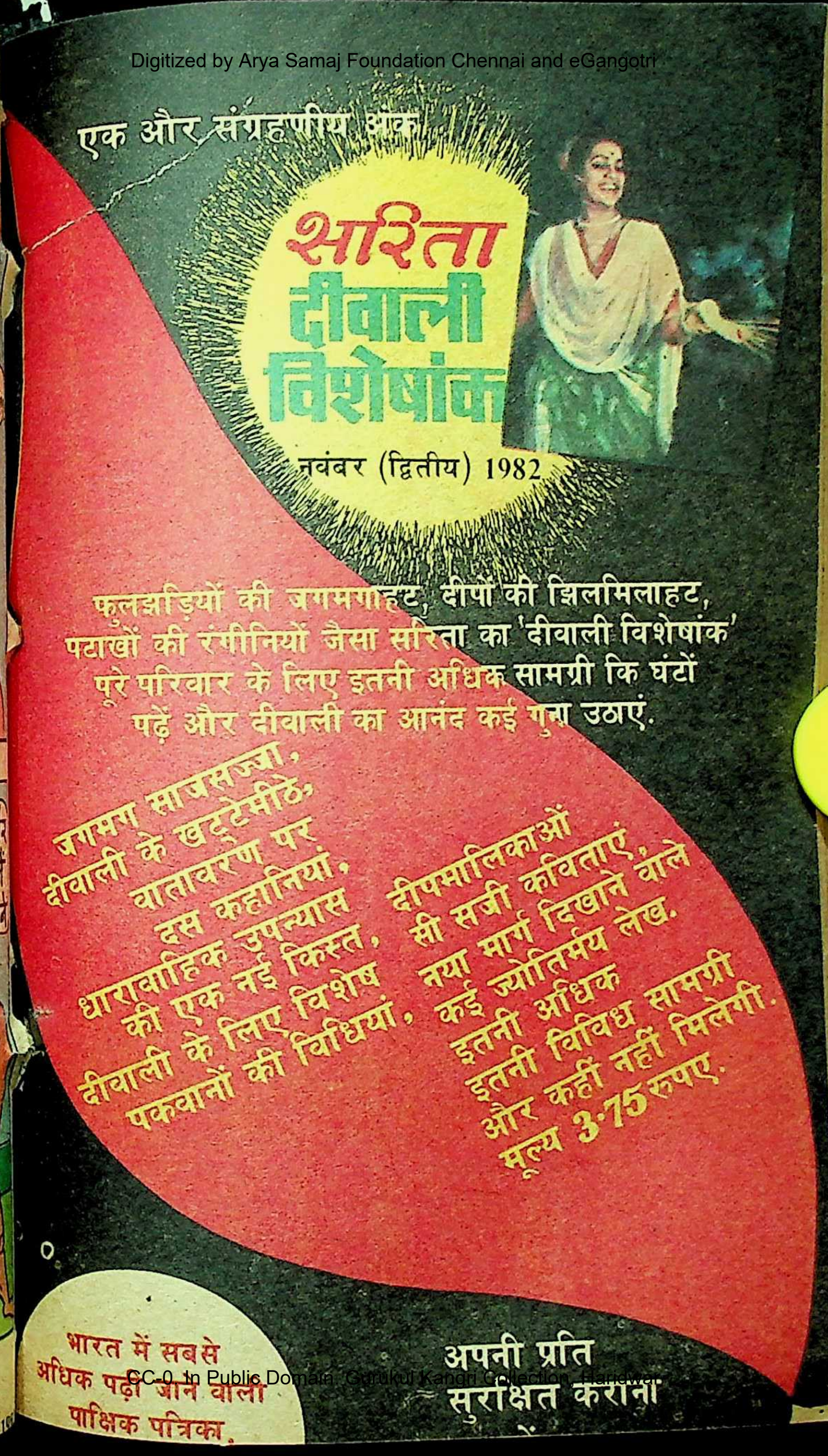

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं क्या करूं?

अपनी समस्याएं भेजिए. इस स्तंभ के अंतर्गत नीरजा द्वारा आप की समस्याओं का समाधान दिया जाता है. भेजने का पता: नीरजा, मैं क्या करूं? मुक्ता, नई दिल्ली-110055.

मैं विवाहित व्यक्ति हूं और अपनी पत्नी से प्यार भी करता हूं. मेरी एक मुंहबोली बहन थी जो मुझ से आयु में 15 साल बड़ी थी. पता नहीं कब हम एकदूसरे के काफी करीब आ गए और हमारे बीच शारीरिक संबंध स्थापित हो गए जो अभी तक चल रहे हैं. मैं मानता हूं कि हमारे इन संबंधों से दो परिवार उजड़ सकते हैं और हम दोनों की ही सामाजिक प्रतिष्ठा को भी आघात पहुंच सकता है, फिर भी हम बिना एकदूसरे से मिले नहीं रह सकते. समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं.

आप बहुत गलत रास्ते पर चल रहे हैं. ऐसे संबंध बहुत दिन तक छिपे नहीं रह सकते. आप दोनों की भलाई इसी में है कि आप एकदूसरे को भूल जाएं और आपस में मिलनाजुलना बिलकुल बंद कर दें. आप अपने को व्यस्त रखने की कोशिश करें और अपना ज्यादा से ज्यादा समय अपने परिवार को दें. जो प्यार आप उस महिला में पाने की कोशिश कर रहे हैं वही प्यार आप अपनी पत्नी से भी प्राप्त कर सकते हैं. यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप उस के कितने करीब हैं व उसे कितना चाहते हैं.

*

मेरी आयु 21 साल है. मैं बी. काम की पढ़ाई के साथसाथ एक नागरिक संस्थान में नौकरी भी कर रहा हूं. लेकिन स्थायी नौकरी न मिलने के कारण मेरे घर वाले मुझे परेशान करते रहते हैं. वे मुझे दूसरे शहर में भी नौकरी करने की अनुमति नहीं देते. मुझे क्या करना चाहिए?

आज के युग में नौकरी मिलना काफी कठिन समस्या है. हो सकता है इन्हीं कारण से आप के घर वाले आप को कोई स्थायी नौकरी ढूंढ़ने के लिए बाध्य करते हों अगर घर की आर्थिक स्थिति ठीक न हो. आप पढ़ाई के साथसाथ नौकरी कर रहे हैं, यह अच्छी बात है. पर इस बात का ध्यान रखें कि आप पढ़ाई की ओर पूरा ध्यान देते रहें. अगर आप को अच्छी नौकरी मिलती है तो भले ही वह किसी भी शहर में क्यों न हो, आप को कर लेनी चाहिए. पर ऐसा तभी होगा जब आप कम से कम स्नातक हो जाएंगे.

*

मैं मध्यम वर्गीय परिवार का लड़का हूं और दसवीं फेल हूं. मेरे ऊपर मां व छोटे भाई की जिम्मेदारी है. मैं ने फेरी लगा कर कुछ हजार रुपए इकट्ठा किए हैं. मैं अब यह काम नहीं करना चाहता, क्योंकि सुबह छः बजे से रात को 10 बजे तक मुझे कड़ी मेहनत करनी पड़ती है. मैं बहुत थक जाता हूं. बताइए मैं क्या करूं?

आप अभी तक जिस वस्तु की फेरी लगाते आ रहे हैं उस को बेचने के लिए आप दुकान भी खोल सकते हैं. वैसे मुक्ता के मई (प्रथम) व जून (प्रथम) अंकों में विभिन्न कामधंधों के बारे में जानकारी दी गई है. आप अपनी योग्यतानुसार उन में से किसी भी व्यवसाय का चुनाव कर सकते हैं. अपने कामधंधे में कुछ वर्ष कड़ी मेहनत करनी पड़ती है. आप अभी युवक हैं, इसलिए कड़ी मेहनत करने से न घबराएं.

*

मैं दसवीं कक्षा पास कर चुका हूं. मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं सकता और अगर किसी औ... उस किसी दूसरे अभिनेता की कुछ ... कोई सुख जाती हो तो भी दोनों में ... नहीं मिलेगी व रहता ही है. इस संब... ष सफलता मिलेगी. मैं लोग तो ... बात से बहुत परेशान हूं. क्या करूं?

आप तथाकथित ज्योतिषियों की बातों में न आएं. ये लोगों को बेवकूफ बना कर अपना धंधा चलाते हैं. यह भी स्मरण रखें कि सरकारी नौकरी भी वही लोग पाना चाहते हैं जो आरामपसंद होते हैं व जिन के मन में बहुत अधिक मेहनत कर के प्रगति करने की इच्छा नहीं होती. आप फिलहाल इन सब बातों को भूल कर अपना मन पढ़ाई में लगाएं.

*

मैं वाणिज्य का छात्र हूं. मैं ने हायर सेकंडरी की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की है. मेरे पिताजी की मृत्यु हो चुकी है और घर का सारा खर्च बड़े भैया चला रहे हैं. मैं उन की जिम्मेदारियों में हिस्सा बंटाना चाहता हूं और पुलिस इंस्पेक्टर बनना चाहता हूं. मुझे कोई उचित सलाह दें.

यह एक अच्छी बात है कि आप अपने परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी को महसूस करते हैं. आप ट्यूशन कर के कम से कम अपना खर्च तो उठा ही सकते हैं, पर ध्यान रहे कि इस से आप की पढ़ाई पर असर न पड़े, क्योंकि पढ़ाई पूरी करने के बाद ही आप कुछ बनने की उम्मीद कर सकते हैं. पुलिस इंस्पेक्टर बनने के लिए न्यूनतम योग्यता स्नातक है. इस में उम्मीदवार को स्वस्थ और खिलाड़ी होने के साथसाथ पहुंच वाला होना भी जरूरी है. — नीरजा

हिंदी

गुलामों गंवारों जाहिलों

की भाषा है न?

तभी तो आप

- हिंदी की बोलचाल में और वाक्य में दो तीन शब्द अंग्रेजी के जरूर रखते हैं. हर दूसरा वाक्य अंग्रेजी का बोलते हैं.
- अपने नाम का संक्षिप्तीकरण अंग्रेजी अक्षरों में करते हैं बी.पी. शर्मा, एस.एन. वर्मा, के.एम. गुप्ता, आई.एम. दास......
- अपने सांस्कृतिक, सामाजिक, पारिवारिक और निजी उत्सवों एवं सम्मेलनों के निमंत्रण अंग्रेजी में छपवाते हैं, चाहे आप और आपके आमंत्रित अंग्रेजी के चार वाक्य भी सही रूप में न लिख सकें और न समझ सकें.
- अपना निजी पारिवारिक पत्रव्यवहार अंग्रेजी में करते हैं.

अंग्रेजी साहबों की भाषा है. आप पूरी नहीं बोल लिख सकते तो आधी अधूरी ही सही, साहबी कुछ तो दिखाई देगी ही!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'शीतल: अनिश्चितता के घेरे में.

(पृष्ठ 93 से आगे)

वाग्दान आदि फिल्मों में उस ने काम किया है.

उस के तीखे नैननक्श शरीर की सुंदर बनावट तथा खुली विचारधारा के कारण उसे निश्चित रूप से सफलता मिलेगी.

हिंदी फिल्मों की खलनायिकाओं की एक निश्चित छवि बन गई है जिस से वे पहचानी जाती हैं. [illegible] जिस्म को उभारने वाले कपड़े पहनती हैं, सिगरेट या शराब पीती हैं तथा खलनायक के अवैध कामों में सहयोग देती हैं.

यदि खलनायिकाओं की एक ऐसी छवि बने कि वह आकर्षक व प्रभावी तो हो लेकिन पतित न हो, उस के दिल में मानवता के दर्शन हों तो दर्शक निश्चित रूप से उस का स्वागत करेंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं सकता और अगर किसी औ...
किसी दूसरे अभिनेता की कुछ झ...
जाती हो तो भी दोनों में...
रहता ही है. इस संद...
लोग तो...

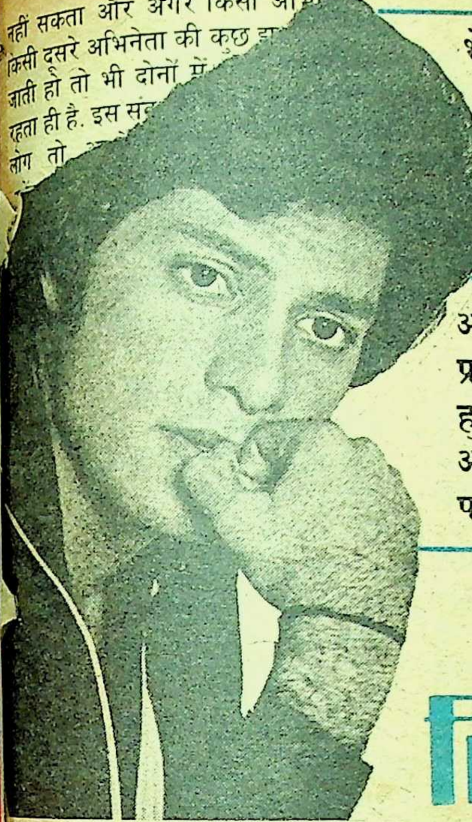

भेंटवार्ता • मानसिंह 'दीप'

आकर्षक व्यक्तित्व और प्रभावशाली आवाज के होते हुए भी विजयेंद्र आज अपनी अलग छवि क्यों नहीं बना पाया?

विजयेंद्र

सही स्थान पाने के लिए संघर्ष

फिल्म उद्योग में युवा अभिनेता विजयेंद्र का आगमन नई पीढ़ी के अभिनेताओं– राज बब्बर, राज किरण, अरुण गोविल, नसीरुद्दीन शाह तथा मिथुन चक्रवर्ती आदि से पहले हुआ है. 'चितचोर', 'अगर', 'कसमेवादे' आदि फिल्मों में विजयेंद्र अपनी अभिनय प्रतिभा का परिचय भी दे चुका है. उस में अभिनय की व्यापक संभावनाएं देख कर ही फिल्म उद्योग के प्रतिष्ठित निर्मातानिर्देशक राज कपूर ने अपनी फिल्म 'प्रेम रोग', कमाल अमरोही ने फिल्म 'रजिया सुलतान' तथा बलदेव राज चोपड़ा ने फिल्म 'चंद्रगुप्त चाणक्य' में उसे विशिष्ट भूमिकाओं के लिए चुना. फिर भी, इस बीच नायक के रूप में विजयेंद्र की ऐसी कोई फिल्म नहीं आई जिसे उपलब्धि माना जाए.

फिल्म 'आखिरी इंसाफ' में काफी गुंजाइश थी, पर विजयेंद्र उस में भी पूरी तरह नहीं उभर सका. अच्छे विषय के बावजूद उस फिल्म पर निर्देशक की पकड़ भी ढीली ही रही थी. इस के बाद 'शायद' में विजयेंद्र ने डाक्टर की भूमिका काफी संयत और सहज ढंग से अभिनीत की, लेकिन फिल्म के असफल हो जाने के कारण विजयेंद्र का अभिनय भी वाहियात माना गया, क्योंकि फिल्म उद्योग में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी अभिनेता की सफलता उस की फिल्मों की व्यावसायिक सफलता से आंकी जाती है. इस दृष्टि से विजयेंद्र की प्रदर्शित अन्य फिल्में भी उल्लेखनीय नहीं रहीं. फिर भी विजयेंद्र के पास कई दरजन निर्माणाधीन फिल्में हैं और नए अभिनेताओं की व्यावसायिक दौड़ में आज अभिनेता कमल हासन, राज बब्बर और मिथुन चक्रवर्ती के बाद ही उस का नाम आता है.

विजयेंद्र के थोड़ा पिछड़ जाने के मुख्य कारणों में पहला है– पिछले दशक में ज्यादातर मारधाड़पूर्ण 'मल्टी स्टार' फिल्मों का दौर, दूसरा है उस के व्यक्तित्व के अनुरूप उपयुक्त भूमिकाओं का न मिलना तथा तीसरा है उस की बेहतर भूमिकाओं वाली फिल्मों का अभी प्रदर्शन न हो पाना.

प्रारंभ में कुछ छोटे निर्माताओं की फिल्में स्वीकृत कर लेना भी विजयेंद्र के लिए घाटे का सौदा ही रहा, क्योंकि आर्थिक कठिनाई के कारण ऐसी फिल्में समग्र पर पूरी हो कर प्रदर्शित नहीं हो पातीं. ऐसी फिल्मों से जुड़े कलाकारों की प्रगति में निश्चित रूप से अवरोध पैदा हो जाता है. और विजयेंद्र के साथ भी यही हुआ है. आकर्षक व्यक्तित्व, अभिनय प्रतिभा और प्रभावशाली आवाज होते हुए भी उसे आज तक उपयुक्त स्थान प्राप्त नहीं हुआ है.

वैसे इस संदर्भ में विजयेंद्र की प्रशंसा करनी होगी कि वह कुछ आगे बढ़ने के लिए किसी ... हथकंडों का ... अपनी प्रतिभा के बल ... इस स्तंभ साथ अपना स्थान बनाने ... की है.

आज एक ओर यदि उस के पास नए और फारमूला फिल्मों के निर्माता निर्देशकों की फिल्में हैं तो दूसरी ओर ... श्रेणी के निर्मातानिर्देशकों की फिल्में ... के पास हैं. अतः उस की आने वाली फि... उस का भविष्य निश्चित करेंगी.

विजयेंद्र देखने में तो काफी ... और शांत स्वभाव का है, पर बातचीत ... रोचक ढंग और चुस्तीफुरती से करता है ... ही में एक मुलाकात के दौरान उस से ... बात करने का अवसर मिला.

प्रश्न : आप का व्यक्तित्व नाचने ... और उछलकूद करने वाले नायकों से मेल नहीं खाता, जब कि फिल्म उद्योग को ऐसे ... अभिनेता चाहिए. ऐसी स्थिति में आप ... महसूस करते हैं?

उत्तर : आप की बात बिलकुल ... मेरा व्यक्तित्व चिकनेचुपड़े नायकों जैसा ... है. उस में एक प्रकार की कठोरता है. ... जैसा आप ने कहा कि फिल्म उद्योग को ... अभिनेता चाहिए, तो क्या अमिताभ ब... धर्मेंद्र, सुनील दत्त, शत्रुघ्न सिन्हा, ... खन्ना व राज बब्बर आदि का व्यक्ति... नाचनेगाने या उछलकूद करने के अनुरू... लेकिन साहब, अगर फिल्म में रहना है ... वह भी अभिनेता बन कर तो यह सब करना ही पड़ेगा. ऐसी स्थिति में मेरे कुछ ... करने या न करने का कोई मतलब ... जाता.

प्रश्न : कुछ लोगों की धारणा है ... आप अमिताभ बच्चन को अपना आदर्श ... कर चल रहे हैं. क्या यह बात सही है?

उत्तर : देखिए साहब, मैं लोगों ... धारणा के बारे में तो कुछ नहीं कह ... मगर इतना अवश्य समझता हूं कि इस ... कोई किसी को आदर्श मान कर या ... शब्दों में कहें कि किसी की नकल कर ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं सकता और अगर किसी अभिनेता में किसी दूसरे अभिनेता की कुछ झलक आ भी जाती हो तो भी दोनों में मौलिक अंतर तो रहता ही है. इस संदर्भ में मैं तो कुछ भी नहीं, लोग तो अपने वक्त के जुबली हीरो राजेंद्रकुमार पर दिलीपकुमार की नकल करने का आरोप लगाते रहे हैं. वास्तव में इस भ्रांति का कारण हमारी फिल्मों के एक जैसे कथानक और भूमिकाएं हैं. मुझे कई बार उन लेखकों और निर्देशकों पर हंसी आती है जब वे मेरे पास प्रस्ताव ले कर आते हैं और कहानी के बारे में कहते हैं, "बस, आप अपने रोल को बिलकुल दीवार के अमिताभ वाला समझ लीजिए." ऐसी अवस्था में मेरे जैसा छोटा कलाकार क्या कर सकता है भला? सच तो यह है कि मेरी श्रेणी के कलाकारों को ऐसी परिस्थितियों में रह कर फिल्मों में काम करना पड़ता है कि निर्माता कम लागत में धर्मेंद्र और अमिताभ बच्चन की जरूरत पूरी कर लेते हैं. बाकी आदमी के लिए सीखना तो पूरे जीवन जारी रहता है.

प्रश्न : 'प्रेम रोग' और 'रजिया सुलतान' जैसी बहुचर्चित फिल्मों में आप का चुनाव कैसे हुआ? वहां आप की भूमिकाएं कैसी हैं?

उत्तर : इन फिल्मों में चुनाव होने के संबंध में मैं क्या बता सकता हूं? ये तो इन के निर्मातानिर्देशक ही बता सकते हैं. हां, मैं भूमिकाओं की बात कर सकता हूं. दोनों फिल्मों में मेरे पात्र अपनी अलगअलग अहमियत रखते हैं. 'रजिया सुलतान' में तो मेरे चरित्र के लिए विनोद खन्ना को लेने की चर्चा भी रही थी. बाकी मैं उन चरित्रों को किस हद तक चरितार्थ कर सका हूं, इस का फैसला तो दर्शकों पर छोड़ देना ही बेहतर होगा.

प्रश्न : क्या आप ने सफलता हासिल करने के लिए कभी किसी विशेष अभिनेत्री के साथ जोड़ी गांठने का प्रयत्न किया है?

उत्तर : नहीं, यद्यपि फिल्म उद्योग में अनेक जोड़ियां सफल रही हैं फिर भी मैं यह कभी नहीं मानता कि किसी विशेष जोड़ी की

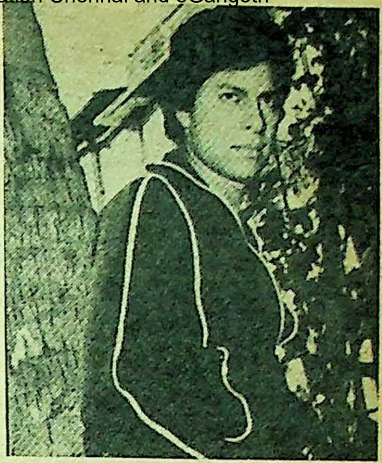

विजयेंद्र: खूबसूरत भविष्य की तलाश.

फिल्में हिट रहती हैं.

प्रश्न : जैसे कि अभिनेता आजकल ढेरों फिल्में लेते हैं. दरजनों फिल्मों में अभिनय करते रहते हैं, क्या ऐसी स्थिति में प्रत्येक भूमिका के साथ न्याय हो पाना संभव है?

उत्तर : बेशक, ऐसे में भूमिकाओं के साथ उचित न्याय होना तो कम ही मुमकिन होता है. मगर दरजनों फिल्म करना जहां आजकल के अभिनेताओं का व्यावसायिक नजरिया है, वहां उन की एक मजबूरी भी है. वास्तव में फिल्म आर्ट के साथ एक व्यवसाय भी है. फिल्म निर्माता प्रायः उन कलाकारों को ही अपनी फिल्म में रखना पसंद करता है जिन से उसे उस की पूंजी सुरक्षित लगती हो. दूसरे, यहां भेड़चाल भी है. किसी अभिनेता की एक फिल्म हिट हो जाने पर सब उस के पीछे भागने लगते हैं और तब कलाकार लाभ के अवसर गंवाना नहीं चाहता. वास्तव में इस क्षेत्र में कुछ भी निश्चित नहीं है. यहां सब में असुरक्षा का भाव रहता है. मैं तो कुछ ऐसा भी महसूस करता हूं कि हमारी व्यावसायिक फिल्मों के दर्शक भी अब इस अहम मुद्दे को नजरअंदाज करने लगे हैं अन्यथा वे आज के सफलतम अभिनेता अमिताभ बच्चन की बहुत सी फिल्मों में एक जैसी भूमिका को कभी भी अस्वीकार नहीं करते. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्दी में ठंड से जूझने के
४ नायाब उपाय

बजाज सुझाए

आज ही-खरीदें बजाज ही खरीदें

बजाज के कारण इस साल सर्दी का मौसम आपके घर में खासा गर्म रहेगा। इस साल ही क्यों, हर साल। हॉट-पॉइंट और रूम-हीटर से लेकर वॉटर-हीटर और पोर्टेबल गीज़र के कारण। सब के सब आई-एस-आई के कड़े मानदंड के अनुसार बने; यानी क्वालिटी की गारंटी। और फिर देश भर में फैले ३५०० विक्रेताओं के जरिये तत्पर सेवा भी आपको मिलती है; ये बात अलग है कि आपको उसकी जरूरत ही न पड़े।

bajaj

प्रेशर कुकर, मिक्सर, ओवन, इस्त्री, पंखे, वॉटर फ़िल्टर, गैस स्टोव, टोस्टर, वॉटर हीटर।

Heros'-BE-684

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये लड़के ये लड़कियां

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए: प्रकाशित होने पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी, पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता:
संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3 रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

लड़केलड़कियों का झुंड एक मैदान में पिकनिक मना रहा था. मैदान में फूलों के भी पौधे थे, जिन पर भंवरे मंडरा रहे थे.

उन को देख कर एक लड़के ने लड़कियों को छेड़ने के इरादे से कहा, ''भई, मंदमंद झोंकों में झूमती हुई कलियों को देख कर मेरा मन भी भंवरा बनने को होता है.''

उस की बात सुन कर सभी लड़के ठहाके लगाने लगे. इतने में एक लड़की ने कहा, ''जनाब, फूल देख कर भंवरा बनना चाहते हैं तो हरीहरी घास देख कर भैंस क्यों नहीं बन जाते.''

अब लड़कों का मुंह देखने लायक था. — शोभा गायधनी

*

बात उन दिनों की है जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था. कक्षा का एक शरारती लड़का शिक्षक को मुंह से ट्रिंगट्रिंग की आवाज निकाल कर चिढ़ाया करता था. वह ऐसा उस समय करता था जब शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखते रहते.

एक दिन ट्रिंगट्रिंग की आवाज सुन कर शिक्षक ने मुड़ कर कहा, ''इस कक्षा में तांगेवाला कौन आ गया है?''

यह सुन कर कक्षा में हंसी का ठहाका गूंजा और उस दिन से उस लड़के की यह आदत भी छूट गई. —अंबुजकुमार

*

गणतंत्र दिवस के अवसर पर मैं अपने पुत्र के स्कूल में गई. वहां मेरा पुत्र भाषण दे रहा था. इसी बीच हाथ में लिया कागज ले कर वह एक शिक्षक के पास गया और बोला, ''श्रीमानजी, यह शब्द समझ में नहीं आ रहा है. आप ने क्या लिखा है?''

यह सुनते ही पूरे हाल में हंसी गूंज उठी और उस शिक्षक का चेहरा देखने लायक हो गया.

— ईशू मूलचंदानी

*

दसवीं कक्षा में मेरा एक मित्र हर घंटे में उपस्थित रहता और पढ़ाई करता. जो अनुपस्थित रहते, उस पर तरहतरह के ताने कसते, ''देखते हैं कि बोर्ड में तेरा स्थान प्रथम कैसे आएगा?''

परीक्षा हुई, परिणाम निकला, उस छात्र का बोर्ड में तीसरा स्थान आया.

प्रधानाध्यापक ने उसे एक समारोह में पुरस्कार व प्रशंसा पत्र दिया.

मेरे मित्र ने सब को प्रणाम किया. उसी समय उस की नजर उन छात्रों पर पड़ी जो उसे चिढ़ाया करते थे. उन सभी के सिर झुके हुए थे, मानो वे पश्चात्ताप कर रहे हों.

— सतीशकुमार अग्रवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमा और उस की मां [illegible] के बाद खरीदारी करने को निकलीं. नाना चौक चौराहे के पास कुछ लोग जमा थे, दोचार पुलिस वाले भी थे.

उधर से निकलते हुए उमा ने देखा तो घबरा गई. अब सिपाही एक घायल को उठा कर ले जाने लगे थे. उस ने घायल व्यक्ति को देखा तो अपनी मां से बोली, "मां, देखो तो यह अमर हैं न...?" इस पर उस की मां ने जैसे चिढ़ कर उसे देखा, पर वह अपनी मां की ओर ध्यान न दे कर आगे बढ़ी.

"अमर बाबू..." उस ने घायल व्यक्ति के पास जा कर कहा.

"क्या आप इन्हें पहचानती हैं? इन्हें तुरंत ही हस्पताल ले जाना होगा." पुलिस इंसपेक्टर ने तुरंत ही उस से पूछा.

उमा ने स्वीकृति में मात्र सिर हिला दिया.

अब तक उस की मां भी वहीं आ गई थीं. और उमा के रवैए पर उस से नाराज लगती थीं, फिर भी वे एक टैक्सी कर हस्पताल के लिए चल पड़ी थीं. उन की टैक्सी पुलिस कार के पीछेपीछे चल रही थी. पुलिस कार में उमा, अमर, पुलिस इंसपेक्टर और दोतीन सिपाही थे.

बेहोश अमर को ज्योंत्यों कर हस्पताल में दाखिल करवाया गया और उस का इलाज शुरू हुआ. पुलिस इंसपेक्टर ने उमा से उस का लिखित बयान लिया. उस ने पुलिस इंसपेक्टर को अशोक का फोन नं...

एक्सीडेंट

कहानी • रश्मि देसाई

अमर ने हर वक्त उमा के प्रति उपेक्षा का व्यवहार रखा यहां तक कि उसे गंवार कह कर अमर ने विवाह करने से इनकार कर दिया था, पर अचानक अमर को ऐसा क्या हुआ कि उस ने उमा को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करना चाहा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया. इंसपेक्टर ने उस फोन पर अमर की दुर्घटना होने की सूचना कर दी.

उमा की मां काफी परेशान थी, क्योंकि इस सारी पुलिस काररवाई में काफी समय लग रहा था. उन की खरीदारी नहीं हो पाई थी. उसी दिन शाम की गाड़ी से उन्हें अहमदाबाद जाना था. उमा के पिता, छोटी बहन रीमा और दादी मां तो पहले से ही अहमदाबाद पहुंच चुकी थीं. एक दिन के बाद उमा और रीमा की अहमदाबाद में सगाई थी.

इतने में अशोक आ गया. उन्हें देख कर दोनों मां बेटी की जान में जान आई.

उमा को कुछ घंटों की छुट्टी मिल गई क्योंकि अशोक को दोपहर को कचहरी जाना था और तब वह चाहता था कि उमा ही अमर के पास रहे. उस ने उमा की मां को मना लिया था कि वह शाम को गाड़ी के वक्त उमा को स्टेशन पहुंचा देगा और वह खरीदारी के बाद शाम तक के लिए उसे हस्पताल में ही छोड़ दें, क्योंकि यहां तब तक आरती अकेली रहती.

मां उमा से बहुत नाराज थीं. रास्ते में उस पर बरस पड़ीं. "बरसात फिर से टूट पड़ेगी तो धरी रह जाएगी सारी खरीदारी, किस ने तुझे इस झमेले में पड़ने को कहा था? चुपचाप अपना रास्ता नापती." ऐसा लगता था जैसे वह उमा को एकाध थप्पड़ मार देंगी. पर उमा शांत थी, गंभीर थी, दुखी थी.

अशोक की पत्नी आरती अमर की चचेरी बहन थी. अशोक एक सुंदर युवा वकील था. आरती भी वकील थी. दोनों ने प्रेम विवाह किया था.

अशोक का जन्म उसी नाना चौक की

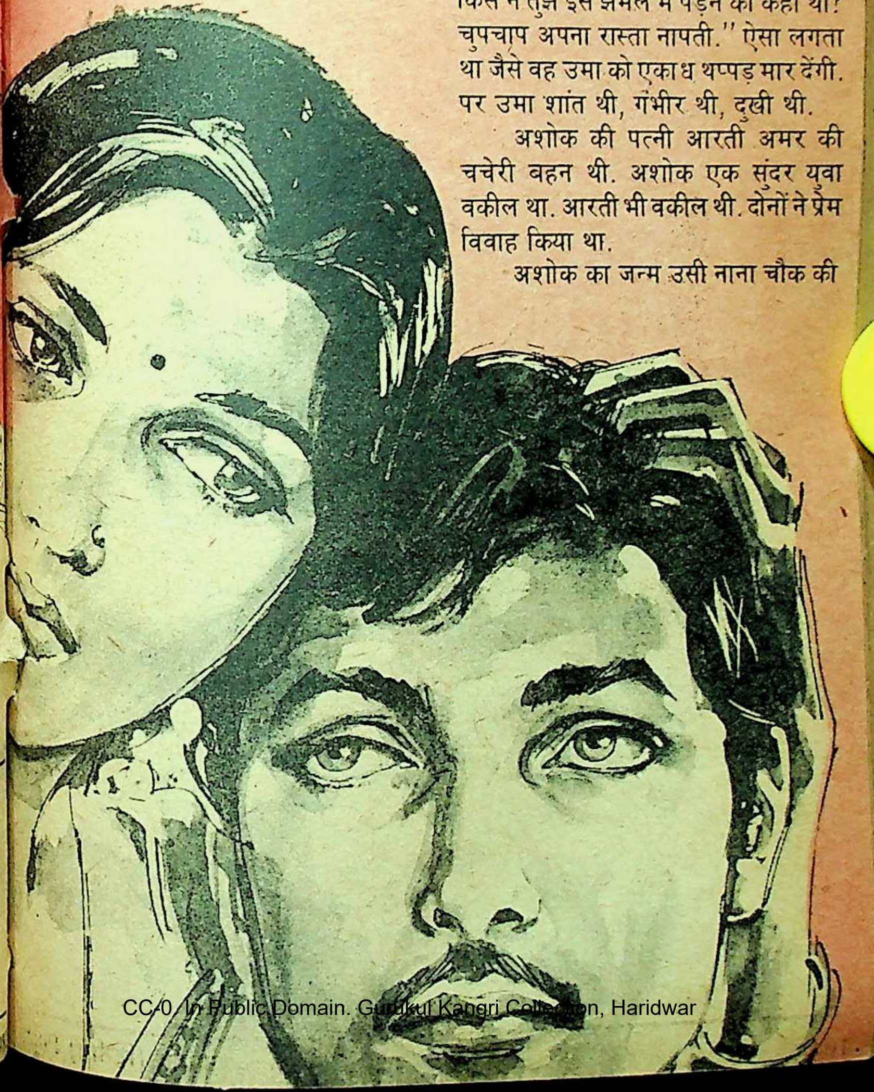

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमर के मातापिता कुछ धीरे बोल रहे थे. यकायक सुगंध का एक झोंका आने पर उन्होंने सामने देखा—उमा थी. पीछे से आरती और अशोक भी आ गए थे.

चाली में हुआ था, जहां उमा सपरिवार रहती थी. अशोक और आरती शादी के बाद इस चाली में थोड़े वक्त रहे. बाद में आरती के पिता ने उन्हें एक सुंदर फ्लैट दिला दिया. अशोक के पिता अपने बेटे के साथ रहने चले गए थे किंतु चाली का अपना हिस्सा उन्होंने अभी भी अपने कब्जे में रखा था. उमा और अशोक के परिवारों में आपस में बड़ा मेलजोल था. इसी नाते उमा अशोक को भैया कहती थी.

उमा जब तक हस्पताल लौट कर आई, वहां अमर के बड़े भाई और भाभी भी आ गई थीं. वे उमा को यों घूर रहे थे जैसे अमर उमा की वजह से ही घायल हुआ हो. वे दोनों धीरेधीरे आपस में बातें करने लगे थे. उमा को ग्लानि होने लगी थी. वह मन ही मन कहने लगी, 'मुझे भी क्या सूझी? क्यों मैं ने यह आफत मोल ली? किसी के पास नम्रता नहीं है, शिष्टता नहीं है. सभी को अपनी दौलत का अभिमान है, नशा है...'

चूंकि अमर को अभी तक होश नहीं आया था. इसी कारण उमा अपनी मां के साथ अहमदाबाद नहीं जा सकी थी. अशोक ने उस की मां को समझाया था, "चाचीजी, आप उमा के लिए जरा भी परेशान न हों. मैं ने आप को पहले भी समझाया है. उमा ने तो एक बहादुरी और होशियारी का काम किया है. वह आप के साथ अभी नहीं जा सकती तो क्या, मैं उसे कल सुबह ही हवाई जहाज में बैठा दूंगा. आप चाहें तो मैं उसे अहमदाबाद छोड़ने भी आ सकता हूं. आप बिलकुल ही बेफिक्र हो कर जाइए. अब उमा को भेजने की जिम्मेदारी मेरी है."

अशोक और उमा जब मां को विदा कर के स्टेशन से बाहर निकले तो बारिश आरंभ हो चुकी थी.

पूरे 12 घंटों के बाद अमर को होश आया. रात थी. हरेक अमर के पीछे परेशान था. सब थक चुके थे. अमर के होश आते ही आशा की ज्योति जली. पुलिस इंसपेक्टर ने आ कर उस का बयान लिया. उस बयान के बाद उमा मुक्त थी. सभी ने शांति की सांस ली. रात को अशोक और आरती उमा के यहां नाना चौक चाली में ही रुक गए. सवेरे सवेरे उन्हें उमा को हवाई अड्डे छोड़ना था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमा जब अपने मातापिता का कमरा इन दोनों के लिए ठीक करने लगी तो अशोक ने उमा को मना कर दिया कि "अब थोड़े घंटों की ही तो बात है." जूतों के फीते खोलते हुए वह आरती से बोला, "आखिर तुम्हारे लाखों में एक भाई की रक्षा उसी साधारण देसी तरह की लड़की ने ही की न..."

अशोक की बात अधूरी ही रह गई. उमा फूटफूट कर रोने लगी. अशोक और आरती दोनों ही घबरा गए. अशोक ने उमा के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा. "अरे पगली, मैं तो अमर पर व्यंग कर रहा था. तू क्यों दुखी होती है. तेरा दूल्हा अमर से कम थोड़े ही है. अमरीका में पढ़ा. वहीं बस गया, उस व्यक्ति ने आखिर तेरी खूबियों को पहचाना है. जब वह अभिमानी नहीं. उसे अपनी दौलत का घमंड नहीं. आज तो तेरी सभी तारीफ कर रहे थे. मैं तो बेहद खुश हूं. खुद आरती मुझ से कह रही थी कि अब उसे तुझ से शर्म आ रही है. पहले वह अपने दंभ में ऐंठी रहती थी."

थोड़ी देर बाद बत्ती बंद हो गई. सब सोने लगे, पर उमा की नींद हराम थी. बाहर जोरदार बारिश हो रही थी. अंदर उमा की आंखों से भी सावन बरस रहा था और एक माह पहले की बातें चलचित्र सी उस की आंखों के सामने घूमने लगीं.

जब अमर के लिए शादी की बात चली तो अशोक की पत्नी के सामने उमा का प्रस्ताव रखा गया. आरती किंतुपरंतु करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही, पर अशोक ने ... और अमर की पहली भेंट करवा दी. तब अशोक अपने ढंग से बातचीत करता रहा था. उसे लगता रहा कि अमर जरूर उस की बहन को पसंद करेगा किंतु बात एकदम विपरीत पड़ी. अमर उस के बड़े भाई और भाभी अपने व्यापार के बारे में ही बातें करते रहे. इन तीनों को उमा अत्यंत साधारण और गंवार सी लगी और उमा के मातापिता तो उस से भी गए-गुजरे लगे. उमा के साथ ही नहीं, उस के मातापिता के साथ भी इन तीनों का व्यवहार बड़ा ही विचित्र व अहंकार भरा रहा था. उस दिन उमा और उस के मातापिता को बड़ा दुख हुआ और उमा की मां तो अशोक पर बेहद नाराज भी हुई कि उस ने आर्थिक स्तरों में समानता न होते हुए यह बातचीत क्यों चलाई.

अमर करोड़पति था. उस का व्यापार बंबई, सिंगापुर और हांगकांग में फैला था. उस के मातापिता सिंगापुर में रहते थे. बंबई का व्यापार उस के भैया संभालते थे. वह चाहते थे कि अमर की भावी पत्नी उन की पत्नी की तरह धनवान हो. उस के घर वालों के भी उद्योगधंधे हों.

यह बात एक माह के करीब हो चुकी थी पर आज यह घाव फिर से हरा हो गया था क्योंकि हस्पताल में अमर के भाईभाभी आज भी पहले की तरह अपने घमंड में अकड़े रहे थे.

उमा यह सब भूलना चाहती थी. उसे कल सवेरे अहमदाबाद जाना है. सवेरे जल्दी उठना है. कल ही दोनों की सगाई होगी. वह अपने भावी जीवन साथी के विचार में खो जाना चाहती थी.

सवेरे ज्योंत्यों कर ये तीनों हवाई अड्डे पहुंचे. रास्ता साफ नहीं था. अब भी जोरदार बारिश हो रही थी. बंबई हवाई अड्डे पर वे तीन घंटे तक रुके रहे. पर सभी उड़ानें रद्द कर दी गई थीं.

उमा को घबराहट हो रही थी. आज अहमदाबाद न जाने पर उस के मातापिता, ... चाचाचाची, रीमा ... परेशान होंगे. उसे खुद पर क्रोध आ रहा ... कि उस ने अमर की दुर्घटना में क्यों ... खपाया? आखिर यह सब करने का उसे ... फायदा? अब सगाई कैसे होगी? यह ... सोचतेसोचते उमा की आंखों से आंसू ... लगे. अशोक हालांकि खुद भी बड़ा परेशान था, पर उस ने उमा को सांत्वना दी.

उमा और रीमा के बीच एक ... था—उदय, जो हाल ही में अमरीका में ... सरकार की ओर से छात्रवृत्ति पा कर पढ़ने ... था. उदय को उमा और रीमा की सगाई ... बात व अपने भावी जीजा का नाम ... पांचछः दिन पूर्व ही टेलीफोन से मालूम हुआ था. वह अहमदाबाद का अपने पिताजी ... मित्र का टेलीफोन नंबर भी जानता था. ... ये लोग जा कर ठहरे थे.

उमा के अहमदाबाद न जा सकने ... अशोक और आरती सचमुच घबरा गए ... अशोक ने पास के एक होटल से अहमदाबाद फोन करने का प्रयत्न किया. आखिर डेढ़ ... के घोर श्रम के बाद फोन मिला. आवाज ... धीमी थी. अशोक उमा के मातापिता से ... बात कहने में घबरा रहा था. किंतु उस ... हिम्मत कर के अपने दिमाग में सब बातों ... सोच कर बात करनी शुरू कर की.

अशोक ने जब उमा के पिताजी की आवाज सुनी तो वह खुशी से नाच उठा ... उस ने फोन उमा को दे दिया.

उमा ने अपने पिताजी की आवाज सुनी, "उमा बेटी बधाई हो. बेटी तुम बच गईं. ... ही उदय का अमरीका से टेलीफोन आया ... उस ने हमें बताया कि दिए गए पते पर ... उस ने जब पूछताछ कीं तो मालूम हुआ ... हम जिस लड़के को भला सुशिक्षित ... कर तुम्हारी सगाई करने जा रहे थे, शिक्षा ... में उस की अमरीकन पत्नी है, एक पत्री ... और उस की सभी डिग्रियां झूठी हैं. ... बेटी अच्छा हुआ वह लड़का भी यहां ... घर नहीं आया. हम बरबाद होतेहोते ... गए. हम लोगों ने तुम्हारा रिश्ता तोड़ दिया ... अब तुम्हें अहमदाबाद आने की जरूरत ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिकायत

किस से पूछ कर
आप के नजदीक हुए थे,
अब क्या कहें
किस से शिकायत है.

—सुरभि पांडेय

हैं, क्योंकि रीमा की सगाई कर के हम सब शीघ्र ही बंबई के लिए चल देंगे."

बातचीत बंद होने के बाद उमा पत्थर की मूर्ति सी मौन खड़ी रह गई. वह अत्यंत दुखी थी इसलिए अशोक उसे अपने घर ले आया, क्योंकि इस स्थिति में उसे घर में अकेला छोड़ना उन्होंने उचित नहीं समझा था. फिर तीनों शारीरिक और मानसिक रूप से थक गए थे. थोड़ी देर में वे तीनों अशोक के घर आ गए.

दिन भर वे सोते रहे. शाम को दूरदर्शन पर कार्यक्रम देखते रहे. अशोक के दो बड़े ही प्यारे बच्चे थे. उमा उन के साथ खेल कर अपना गम गलत करने लगी. वह कुछ स्वस्थ हो चुकी थी. दूसरे दिन जब अशोक कचहरी जाने लगा तो उमा ने अपने घर जाने की इच्छा प्रकट की. किंतु अशोक ने उसे यह कह कर जाने की अनुमति दी कि वह शाम को अशोक के साथ पुनः उस के घर लौटेगी. उमा अपना अस्तव्यस्त घर ठीक करना चाहती थी.

उमा अपने घर में अपने लंबे बालों में जब कंघा कर रही थी, तभी जोर से द्वार की घंटी बजी. इस बेवक्त कौन होगा? यह सोचते हुए उस ने बाजू की जाली से बाहर देखा तो एक प्रौढ़ सुंदर महिला और एक सज्जन खड़े थे. उमा ने इन दोनों को कभी नहीं देखा था. वह एक पल घबरा सी गई. पर उसे जाली में से झांकते देख कर वह महिला बोल उठी, "बेटी, हम दोनों अमर के मातापिता हैं. क्या तुम दरवाजा खोलोगी?"

उमा ने दरवाजा खोला और मौन खड़ी रही. उस की घबराहट देख कर अमर की मां बोल उठीं, "अमर को तुम्हीं तो एक्सीडेंट के बाद हस्पताल ले गई थीं. अमर को..."

"उन्हें क्या हो गया?" उमा ने कांपते स्वर में उन की बात काट कर पूछा.

अमर की मां ने उमा से कहा, "अमर को बचाने के लिए हम तुम्हारे आभारी हैं... बेटी, अमर अब बैठ सकता है. वह तुम्हारी राह देख रहा है. इस से पहले तुम्हारे साथ जो बरताव हुआ, मुझे उस का भी पता चल गया है."

अमर की मां रो पड़ीं. रोते हुए उन्होंने उमा से कहा, "बेटी, एक बेटे की मां तेरे सामने अपने बच्चे की खुशी के लिए भीख मांग रही है. बेटी हम सब से बड़ी भूल हुई है. तुम्हारे साथ बड़ा ही अन्याय हुआ है. अमर के भाईभाभी रुपए की चमकदमक में तेरी सच्ची चमक न देख सके."

उमा अधिक न सुन सकी. वह सजल नेत्रों से मां कहते हुए उन के सीने से लग गई. अमर के पिता जी ने भी अपनी आंखें पोंछीं. अमर की मां के ममतामयी हाथ उमा के बालों पर फिरने लगे.

उसे उठा कर वह कहने लगीं, "मेरी रानी गुड़िया, झटपट तैयार हो जा. अमर कब से तेरी ही राह देख रहा होगा." उन्होंने यह कहते हुए उमा का माथा चूम लिया.

उमा शरमाते हुए उन्हें ठंडा दूध और मिठाई दे कर खुद अंदर तैयार होने चली गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमर के मातापिता प्रसन्न थे. उन की लंबे सफर की थकान दूर हो चुकी थी. दूध पीते और मिठाई खाते वे उस स्वच्छ सजे हुए हाल का निरीक्षण कर रहे थे. वहां लगभग सभी सुखसुविधा के साधन मौजूद थे.

बाहर से चाल में अंदर आते वक्त उन्होंने जरा भी कल्पना नहीं की थी कि अंदर इतनी सुव्यवस्था होगी. अमर के मातापिता कुछ धीरे बोल रहे थे. उन की बात तब रुकी जब उन की नाक में सुगंध आई और उन्होंने अपने सामने उमा को देखा.

गुलाबी रंग की साड़ी में उमा खूब सुंदर लग रही थी. वे दोनों एकटक उमा को देख रहे थे.

यकायक आरती और अशोक ने भी भीतर प्रवेश किया और मुसकराते हुए वहीं सोफे पर बैठ गए. अमर की मां ने बात शुरू की, "अमर को जब मालूम हुआ कि तुम सगाई के लिए गई हो तो वह बहुत हताश हुआ. फिर जब अशोक ने कहा कि सारी उड़ानें रद्द हो गईं और तुम अहमदाबाद नहीं जा सकीं तो अमर को कुछ सुकून मिला. फिर अशोक ने कहा कि अगर आप सब को अब उमा पसंद हो तो मैं उसे अमर से विवाह के लिए मना सकता हूं."

उमा ने अशोक की ओर कनखियों से देखा और शरमा कर भीतर भाग गई.

कार में अमर की मां ने बताया कि अमर के बड़े भाई द्वारा टेलीफोन पर अमर के एक्सीडेंट की खबर करने पर वे तुरंत ही सिंगापुर से चल पड़े. बंबई हवाई अड्डे से वे सीधे ही हस्पताल गए. तभी से वे वहां अमर के साथ थे. वहीं उन्हें ये सारी बातें मालूम हुईं जिन्हें अशोक व अमर ने उन्हें बताया.

रास्ते में अमर की मां ने एक बहुत ही बढ़िया गुलाब के फूलों का गुलदस्ता लिया और एक सुंदर सा गुलाब का फूल उमा के बालों में लगाते हुए कहा, "बेटी, यह गुलदस्ता अमर के लिए है. उसे सुंदर फूल विशेष पसंद हैं. आज इन फूलों के अलावा वहां एक फूल तुम भी होगी."

हस्पताल में अपने कमरे में अमर पलंग पर लेटा था. उस की नजरें दरवाजे पर टिकी थीं. अपनी मां और उमा को उस ने अंदर आते देखा. अंदर आते ही उस की मां बोल उठीं, "बेटे, देख, मैं तेरी उमा को ले आई."

अमर ने अपना हाथ आगे बढ़ा कर उमा के हाथ से गुलदस्ता ले लिया और उसे अपने सीने पर रख लिया. वह कुछ बोलना चाहता था, पर उस का गला भर आया.

उमा ने एक नजर पीछे मुड़ कर देखा सभी की आंखों में आंसू थे. ये आंसू खुशी के थे, सब बहुत खुश थे, क्योंकि उमा और अमर का मिलन हुआ था, और यह मिलन एक एक्सीडेंट के कारण ही तो हुआ था. •

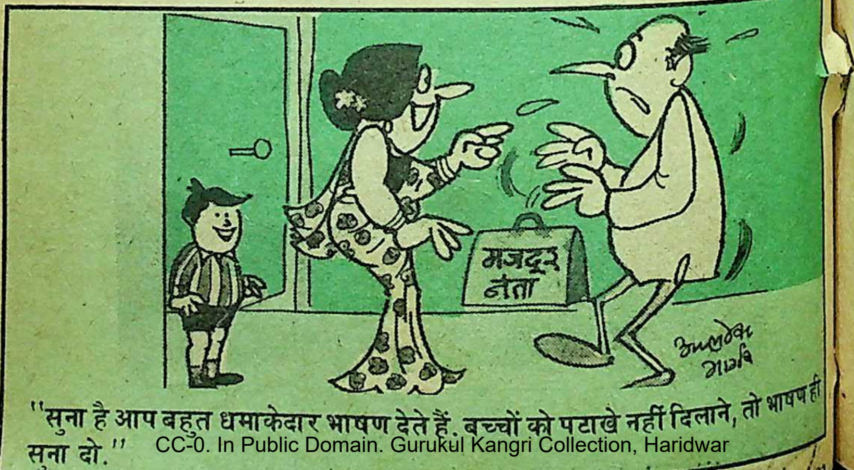

"सुना है आप बहुत धमाकेदार भाषण देते हैं. बच्चों को पटाखे नहीं दिलाने, तो भाषण ही सुना दो."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

50 लाख बच्चों की प्यारी
रंगीन पत्रिका

चंपक

9 भाषाओं में

हर पक्ष चंपक में प्रकाशित मनोरंजन व शिक्षाप्रद कहानियां, कविताएं, पहेलियां, चुटकले और लेख बच्चों को नई जानकारी देते हैं, उन का चरित्र संवारते हैं और नए स्वरूप में ढालते हैं.

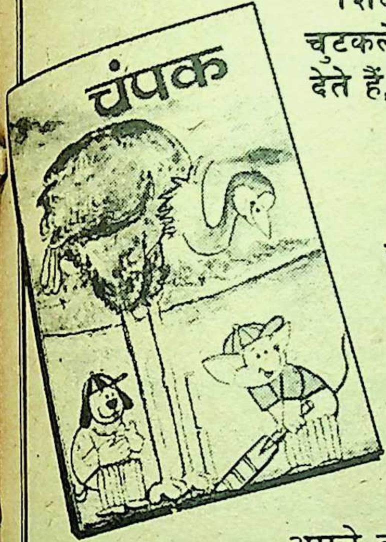

चंपक, पंजाबी और बंगाली भाषा के अलावा अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगु और मलयालम भाषाओं में भी प्रकाशित होता है.

अपने बच्चों को चंपक लेकर दें – उन का मनोरंजन भी करें और भविष्य भी संवारें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन दिनों सोवियत रूस की पाइप लाइन परियोजना ने पश्चिमी देशों की एकता में सब से बड़ी दरार पैदा कर दी है. अफगानिस्तान में सोवियत घुसपैठ, पोलैंड में रूसी दमन और रूस में हथियारों की बढ़ती संख्या से अमरीका इन दिनों वैसे ही चिंतित है. गैस पाइप लाइन परियोजना ने उस की कम्यूनिस्ट देशों के प्रति अपनाई जाने वाली नीति में नया गतिरोध पैदा कर अपने मित्र राष्ट्रों के प्रति अपनाई जा रही वर्तमान नीति पर फिर से सोचने को मजबूर कर दिया है.

पिछले काफी वर्षों से रूस की आर्थिक स्थिति काफी डांवांडोल है. एक तरफ तो रूस में कृषि पैदावार कोई खास नहीं हो रही है, दूसरी तरफ उस को कुछ देशों में सैनिक हस्तक्षेप करना पड़ा है. अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए रूस को हाल में जेनीवा, न्यूयार्क तथा अन्य स्वर्ण बाजारों में ढेरों सोना बेचना पड़ा है. एक अनुमान के अनुसार रूस ने जनवरी 1981 से दिसंबर 1981 तक 200 टन सोना और जनवरी 1982 में 60 टन सोना बेचा है. इतनी अधिक मात्रा में सोना बेचने का अर्थ यह भी है कि रूस के पास विदेशी व्यापार और विदेशों में सहायता कार्य के लिए दुर्लभ विदेशी मुद्रा-डालर और पौंड की काफी कमी पड़ गई है.

पश्चिमी देशों के राजनीतिक समीक्षकों का मत है कि रूस पर अब पूर्व की अपेक्षा अधिक आर्थिक दबाव है. पोलैंड, चेकोस्लावाकिया, हंगरी में रूसी सेनाओं की उपस्थिति तथा अफगानिस्तान में रूसी घुसपैठ ने उस की आर्थिक स्थिति को गड़बड़ा

पश्चिमी देशों में घुसपैठ की नई रूसी पाइप लाइन योजना

लेख • मनमोहन वशिष्ठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया है. पोलैंड में रूसी हस्तक्षेप ने तो पश्चिमी देशों को इस बात के लिए मजबूर कर दिया कि रूस के खिलाफ कारगर आर्थिक दबाव बढ़ाया जाए. लेकिन आर्थिक दबाव के प्रश्न पर सभी पश्चिमी देश एकमत नहीं हैं, जिस के कारण अमरीका को रूस पर अभी तक किसी प्रकार का प्रतिबंध लगाना संभव नहीं हो पाया है.

प्राकृतिक साधनों के मामले में रूस सब से आगे है. पेट्रोल, प्राकृतिक गैस, क्रोमियम और अन्य कई खनिज पदार्थों की दृष्टि से भी रूस संसार के सब से समृद्ध देशों में से एक है. रूस का साइबेरिया क्षेत्र प्राकृतिक गैस का भंडार है. रूस काफी अरसे से अपने इस विशाल गैस भंडार का समुचित उपयोग करने और इस से विदेशी मुद्रा कमाने की योजना बनाता रहा है. कई वर्ष पूर्व अमरीका के सहयोग से साइबेरिया के गैस भंडारों से रूस के पूर्वी बंदरगाह ब्लाडिवास्टक तक एक पाइप लाइन बिछाई गई थी, जहां से गैस को जहाजों द्वारा अमरीकी तट तक पहुंचाया जाता था और वहां से फिर पाइप लाइन द्वारा वह गैस अमरीकी घरों में पहुंचाई जाती थी. पश्चिमी यूरोप के देशों को भी साइबेरिया पाइप लाइन द्वारा गैस पहुंचाने के लिए रूस 5,000 किलोमीटर लंबी पाइप लाइन बिछा रहा है. इस पाइप लाइन से पश्चिमी यूरोप के देशों– पश्चिमी जरमनी, फ्रांस, इटली, बेल्जियम, हालैंड और नारवे आदि देशों को हर वर्ष 30 हजार से 40 हजार घनमीटर तक प्राकृतिक गैस प्राप्त होगी. इस गैस से इन देशों की जहां तेल पर निर्भरता घटेगी, वहा इन देशों की बहुत सी फैक्टरियों, कलकारखानों और घरों को गरम रखने के लिए आसानी से गैस प्राप्त हो जाएगी.

पश्चिमी यूरोपीय देश इस पाइप लाइन को बिछाने में मदद दे रहे हैं. पाइप लाइन तैयार हो जाने के बाद ये देश अगले 25 वर्षों तक 10 अरब डालर की गैस हर साल खरीद सकेंगे. इन देशों को यह गैस रिआयती भाव पर प्राप्त होगी और इस का भुगतान एक मुश्त न कर के कई वर्षों में कई किस्तों में किया जा सकेगा.

रूस ने पाइप लाइन बिछाने के लिए यूरोपीय देशों की फर्मों को सामान की सप्लाई

रूस अपने साइबेरिया क्षेत्र से व्यावसायिक स्तर पर प्राकृतिक गैस लेने का प्रयास कर रहा है, लेकिन कुछ देश रूस की इस पाइप लाइन परियोजना का विरोध क्यों कर रहे हैं?

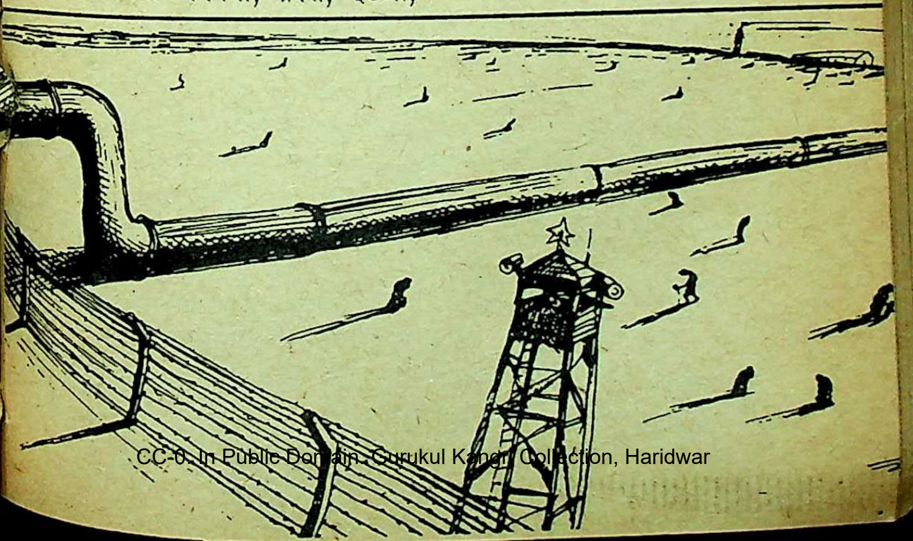

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए करोड़ों डालर के आर्डर दिए हैं, रूस ने इस गैस लाइन को बिछाने के लिए पश्चिमी देशों की बड़ीबड़ी कंपनियों से 10 अरब डालर यानी सौ अरब रुपया कर्ज पर ले रखा है. यह कर्ज रूस एक वर्ष में बेची गई गैस से चुका देगा. इस तरह रूस की यह परियोजना पूरी हो जाएगी और पश्चिमी देशों की पूंजी लगाने वाली कंपनियों को भी काफी लाभ हो जाएगा. इस तरह रूस की इस योजना से यूरोपीय देशों में जहां अब बेरोजगारी तेजी से बढ़ने लगी है, रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे.

अमरीका की आशंका

जून 1982 में वरसाई (फ्रांस) में दुनिया के सर्वाधिक उन्नत सात देशों– अमरीका, पश्चिमी जरमनी, फ्रांस, कनाडा, ब्रिटेन, इटली और जापान की शिखर वार्ता हुई थी. इस वार्ता में विचार विमर्श के दौरान रूस और पूर्वी यूरोप के देशों के साथ पश्चिमी देशों के बढ़ते व्यापार पर अंकुश लगाने का अमरीकी आग्रह स्वीकार कर लिया गया था. शिखर वार्ता के अंत में प्रकाशित विज्ञप्ति में रूस के खिलाफ सीमित आर्थिक नाकेबंदी के बारे में हुई सहमति के बदले अमरीका ने अपने साथी पश्चिमी देशों को कई तरह की सुविधाएं देने की बात स्वीकार की थी. पश्चिमी देशों ने तो अमरीका की बात मान कर रूस तथा उसके साथी देशों के साथ अपने आर्थिक संबंधों को सीमित कर लिया, किंतु अमरीका का व्यवहार और व्यापार पूर्ववत चलता रहा.

पश्चिमी देशों का अमरीका पर सब से बड़ा आरोप यह है कि वह औरों से तो रूस के खिलाफ आर्थिक प्रतिबंध लगाने के लिए कहता है, किंतु खुद रूस को पिछले कई वर्षों में 32 लाख डालर का गल्ला बेच चुका है और अब भी बेच रहा है. पश्चिमी जरमनी के भूतपूर्व चांसलर शिमट ने तो वरसाई में अमरीकी राष्ट्रपति रेगन से स्पष्ट कहा कि सन 1978 से पश्चिमी जरमनी और फ्रांस का तो रूस से व्यापार काफी घट गया है किंतु रूस के साथ अमरीकी व्यापार में 70 प्रतिशत

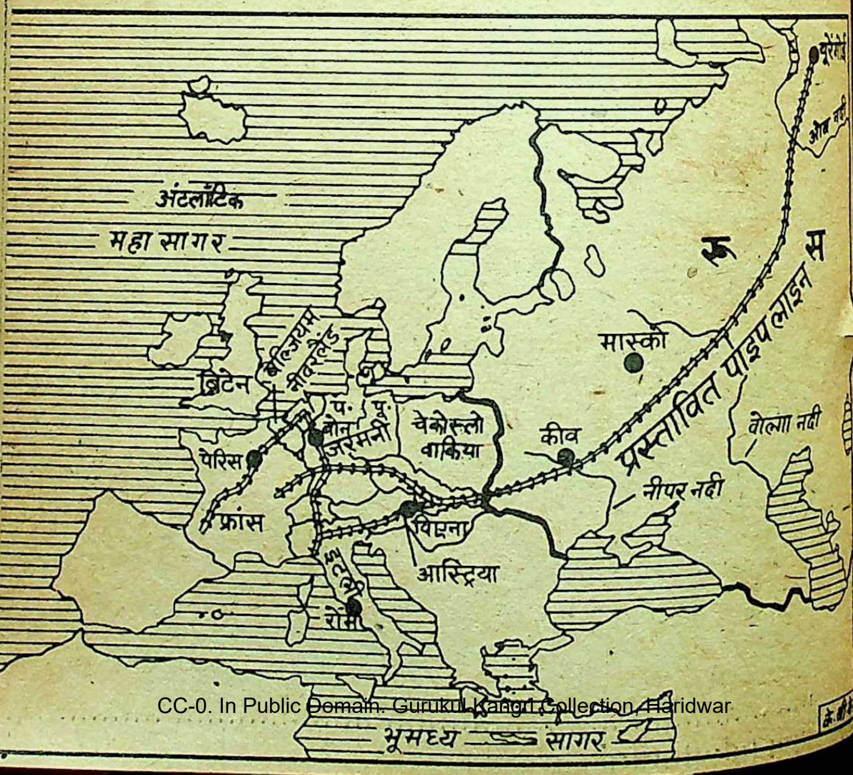

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

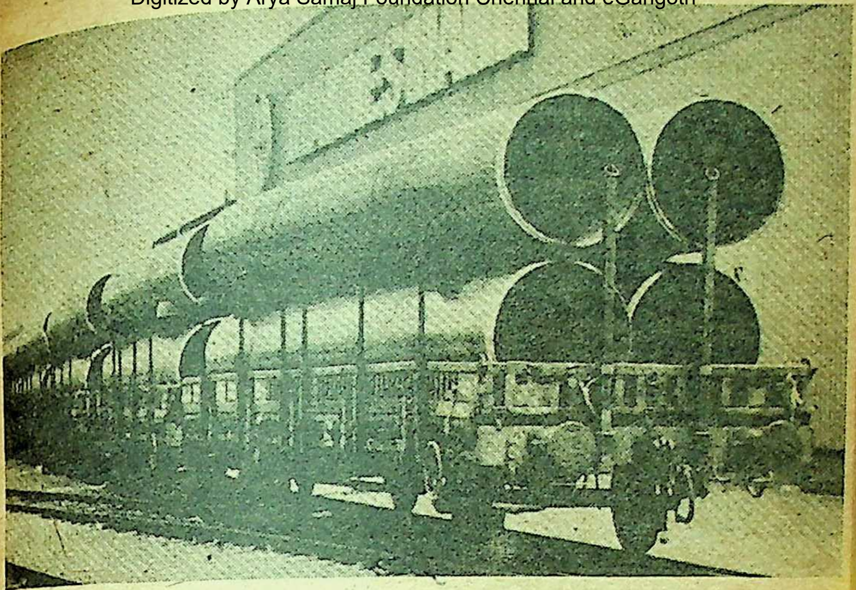

पश्चिमी जरमनी की एक फैक्टरी के बाहर माल गाड़ी पर लदे स्टील के पाइप जिन का प्रयोग रूस साइबेरिया से प्राकृतिक गैस लाने के लिए कर रहा है.

वृद्धि हो गई है.

इधर वरसाई शिखर सम्मेलन में पश्चिमी देशों में जितनी एकता रही, उतनी ही रूस की पाइप लाइन के प्रश्न पर उन में फूट पैदा हो गई है. सही बात तो यह है कि रूस की पाइप लाइन पश्चिमी देशों की सुरक्षा और एकता के लिए इस समय सब से बड़ा खतरा बन गई है. पश्चिमी देशों की आर्थिक हालत अब काफी खराब है. समस्त पश्चिमी यूरोपीय देशों में श्रमिकों की संख्या में 10 प्रतिशत की बेरोजगारी और बढ़ गई है. इस समय ब्रिटेन में 12.6 प्रतिशत, फ्रांस में 9, इटली में 11 और पश्चिमी जरमनी में 7.5 प्रतिशत बेरोजगारी फैली हुई है.

अमरीका की रूस की पाइप लाइन के प्रति आशंका निराधार नहीं है. पश्चिमी यूरोपीय देश अपने यहां खपत होने वाली कुल गैस में से आधी के लिए रूस पर निर्भर हो जाएंगे और रूस किसी भी समय तेल राष्ट्रों की तरह संकट पैदा कर सकता है. सन 1973 में अरब इजराइल युद्ध के बाद तेल के कारण पश्चिमी देश परेशान हो गए थे. दूसरी बात है गैस से होने वाली आमदनी. गैसें बेचने से रूस को स्थायी आय होने लगेगी, जिस से उस की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो जाएगी और वह सुरक्षा और नएनए हथियारों पर अधिक पैसा लगाना शुरू कर देगा.

अमरीका की इन आशंकाओं से पश्चिमी देश जरा भी प्रभावित नहीं हुए हैं. उन का स्पष्ट मत है कि आर्थिक प्रतिबंधों से रूस की नीति में जरा भी परिवर्तन नहीं होगा, अपितु रूस ने जिनजिन देशों में घुसपैठ कर रखी है, वहां के लोगों की परेशानियों में इस की वृद्धि ही होगी. पश्चिमी देश अमरीकी हितों की रक्षा के लिए अब अपने हितों की कुरबानी देने से कतराने लगे हैं. यही कारण है कि पाइप लाइन परियोजना में सहायता करने वाली फर्मों के खिलाफ रेगन प्रशासन के द्वारा उठाए गए कड़े कदम और उन को काली सूची में रखने की घोषणा के बावजूद ब्रिटेन की प्रधान मंत्री मागरिट थेचर, फ्रांस के राष्ट्रपति मितरां और पश्चिमी जरमनी के भूतपूर्व चांसलर श्मिट ने खुले आम अमरीकी प्रतिबंधों को न मानने की घोषणा कर दी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर इस विवाद का जापान पर भी असर पड़ रहा है. जापानी फर्में रूस के साइबेरिया क्षेत्र में तेल तथा गैस निकालने के काम में पहले से ही लगी हुई हैं. यदि जापान अमरीका से सहमति व्यक्त करता है तो अपना आर्थिक नुकसान करता है. कुछ पश्चिमी देश फ्रांस व अमरीका की इजराइल को थपथपाने की नीति से भी सहमत नहीं हैं. अरब देशों के प्रति भी अमरीकी नीति कहीं लचीली है तो कहीं कठोर.

गैस के मामले में रूस पर निर्भरता के प्रश्न पर पश्चिमी देशों का कहना है कि सन 1990 तक उन के यहां गैस की जो कुल खपत होगी, रूस से ली जाने वाली मात्रा उस का केवल 30 प्रतिशत ही होगी. लेकिन इस से अल्जीरिया और लीबिया से ली जाने वाली गैस और तेल पर भी उन की निर्भरता कम हो जाएगी. रूस ने यदि गैस को कभी डरानेधमकाने के हथियार के रूप में इस्तेमाल किया तो इस से उसे स्वयं करोड़ों का नुकसान उठाना पड़ेगा.

दुविधा में फंसी कंपनियां

गैस लाइन बिछाने के लिए रूस ने फ्रांस, पश्चिमी जरमनी, ब्रिटेन और इटली की जिन कंपनियों को करोड़ों के ठेके दिए हैं वे अमरीकी धमकी के बाद से यह सोच कर परेशान हैं कि वे किस देश का कहना मानें और किस का नहीं. फ्रांस के राष्ट्रपति मितरां ने अपने यहां की सरकार द्वारा नियंत्रित कंपनी 'आलसथोम एटलांटिक' को आदेश दिया है कि वह रूस को शर्त के मुताबिक सामान सप्लाई करे. लेकिन फ्रांस की एक दूसरी कंपनी 'ड्रेसर फ्रांस' को रूस को सामान सप्लाई करने में अवश्य कठिनाई होगी क्योंकि इस की मालिक अमरीकी फर्म ड्रेसर इंडस्ट्रीज इनकारपोरेटेड से उसे कोई सामान प्राप्त न हो सकेगा.

इसी तरह तीसरी कंपनी क्रेसूलोयर है, जिसे गियर और कंप्रेसर मुहैया करने का ठेका जिस गेयर और कंप्रेशर मुहैया करने का ठेका मिला है. ब्रिटेन की प्रधान मंत्री मारगरेट थैचर ने जान ब्राउन इंजीनियरिंग तथा 19 अन्य फर्मों को रूस को सामान सप्लाई करने को कहा है. ब्रिटिश कंपनियों को 1750 लाख डालर का सामान मुहैया करने का ठेका मिला है. जान ब्राउनिंग कंपनी भी इस बड़े ठेके को छोड़ने को उत्सुक नहीं है क्योंकि स्काटलैंड में जहां यह टरबाइन बनाती है, पहले ही श्रमिक बेरोजगारी में 20 प्रतिशत की वृद्धि हो चुकी है.

इधर इटली ने अपने देश की कंपनियों को रूस से हुए ठेके को पूरा करने को कहा है. इटली की कंपनी नुओवो पिगनोन को 6,000 लाख डालर का ठेका मिला है, यह कंपनी रूस को 59 टरबाइन तैयार कर के देगी.

इधर रूस ने भी अपनी उस परियोजना को 1984 तक हर हालत में पूरा करने की इच्छा जाहिर की है.

अमरीकी राष्ट्रपति रेगन द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के जवाब में रूस ने लेनिनग्राड स्थिति नेवस्की इंजीनियरिंग फैक्टरी में रातदिन काम कर पाइप तथा अन्य सामान तैयार करने की घोषणा की है. रूस इस गैस योजना को पश्चिमी देशों के प्रतिबंधों के बावजूद पूरा करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ है.

पर्वतारोहियों के लिए सिरदर्द

श्रीनगर में पश्चिम जरमनी के एक पर्वतारोही दल के लिए एक भालू आतंक बन गया. यह दल एवरेस्ट पर अभियान के लिए गया था.

पर्यटन विभाग के सूत्रों के अनुसार यहां का भूरे बालों वाला एक भालू अंडे और मछलियों का बहुत शौकीन है. पर्वतारोही दल ने जहां पड़ाव डाला वहां वह भालू चुपके से आया और 200 अंडे उड़ा गया. वह भालू पर्वतारोही दल को आते देख चट्टान के पीछे छिप जाता और मौका पाते ही खाने का सामान ले जाता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इस भालू ने पिछले वर्ष भी पर्वतारोही दलों को इसी तरह सताया था.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाबाश

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

महिला की वीरता

मुरादाबाद जिले के थाना मेनाठेर के अंतर्गत पोटा गांव में एक जाटव के यहां डाका डालने आए डाकुओं में से एक को एक महिला ने पकड़ लिया.

घटना के अनुसार उक्त व्यक्ति के घर सात डाकू आए और हजारों रुपए का माल लूट कर ले गए, लेकिन उस की पत्नी ने एक डाकू को बुरी तरह पकड़ लिया और उसे किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ा. **—अमृत प्रभात, इलाहाबाद (प्रेषक : अरुण सूर्यवंशी) (सर्वोत्तम)**

*

कर्मचारी की ईमानदारी

रोपड़ में एक इंजीनियरिंग फर्म के चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी ने ईमानदारी का अनुकरणीय उदाहरण पेश किया है. उस ने एक पर्स, जिस में एक लाख रुपए से अधिक के सोने के गहने थे, 12 दिनों की खोजबीन के बाद उस की मालकिन को लौटा दिया.

वह महिला बस से उतरते वक्त अपना पर्स भूल गई थी. वह कर्मचारी भी उसी बस में था. उस ने पर्स उठा लिया और ग्रामसरपंच के यहां जमा करवा दिया. बाद में पर्स में मिले कागज के आधार पर उस ने और सरपंच ने पर्स के सही मालिक को खोज निकाला.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : मनोज सेठी)

*

महिला की बहादुरी

मध्य प्रदेश के शाजापुर जिले के मारवाड़ा गांव में एक कुख्यात डकैत गिरोह का नेता एक महिला द्वारा पत्थर और लाठी से मारे जाने के कारण मारा गया.

छः डाकुओं का उक्त गिरोह जब एक मकान में डाका डालने गया तो उस मकान की महिला ने गिरोह के नेता पर पत्थर और लाठी मारना शुरू कर दिया.

महिला का शौर्य देख कर अन्य डाकू भाग खड़े हुए. बाद में पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और एक अन्य डकैत को बंदी बना लिया. **—देशबंधु, रायपुर (प्रेषक : श्रीकांत)**

*

ग्रामीणों की हिम्मत

नवादा में ग्रामीणों के साहस के कारण एक बैंक से 12 हजार रुपए लूटने वाले गिरोह के छः सदस्य मारे गए.

घटना के अनुसार ये डकैत माहूदार ग्राम स्थित बैंक को लूट कर भाग रहे थे. पुलिस ने बताया कि बैंक से 12 हजार रुपए लूटने के बाद लुटेरे भागने लगे, लेकिन ग्रामीणों ने उन्हें घेर लिया. उन में से एक लुटेरा तो भागने में सफल हो गया, लेकिन शेष छः ने ग्रामीणों की पिटाई से दम तोड़ दिया.

—ज्ञानयुग प्रभात, जबलपुर (प्रेषक : ज्ञानेंद्रमोहन खरे) ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई प्रतिभाएं

पिछले दिनों लखनऊ की नाट्य संस्था 'दर्प' ने अपने एक नाटक के प्रदर्शन के दौरान रंगमंच छायाकार (फोटोग्राफर) राकेश सिन्हा के 65 चित्रों की प्रदर्शनी लगाई.

युवा छायाकार राकेश सिन्हा ने रंगमंच के इतिहास को कैमरे में कैद किया है, उस के चित्रों की विशेषता यह है कि उन में पात्रों पर पड़ रहे प्रकाश और उन की संवेदनशीलता को भी समेटने की कोशिश की गई है.

उस ने अपने छाया चित्रों में नाटक की भावभंगिमा, जीवंत दृश्य और सजीवता को भी उतारने की कोशिश की है. 25 वर्षीय राकेश पिछले आठ वर्षों से छायांकन कर रहा है. उस ने अब तक लगभग एक हजार चित्र उतारे हैं जो रंगमंच की विकास यात्रा स्वयं कहते हैं.

—राकेशचंद मिश्र, वि.वि.प्र.

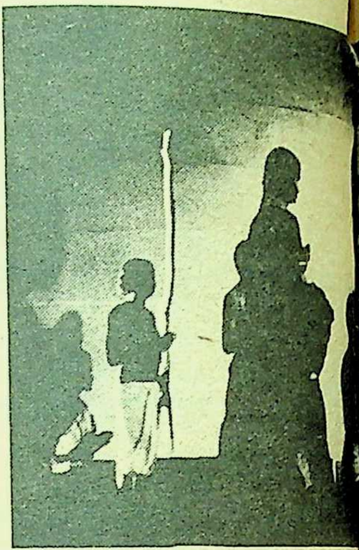

बंगलौर की कक्षा आठ की छात्रा, 12 वर्षीया लारेन वर्घीज इस वर्ष कर्नाटक राज्य महिला तैराकी प्रतियोगिता में व्यक्तिगत चैंपियन घोषित की गई है. उस ने पिछले दो वर्ष राष्ट्रीय जूनियर तैराकी प्रतियोगिता में त्रिवेंद्रम में कर्नाटक का प्रतिनिधित्व किया व कलकत्ता व कानपुर में ब्रेस्ट स्ट्रोक व फ्री स्टाइल में कांस्य पदक जीते. वह गत वर्ष 1981 में 12 वर्ष आयु वर्ग की तैराकी

लारेन वर्घीज: कर्नाटक को इस से बहुत आशाएं हैं.

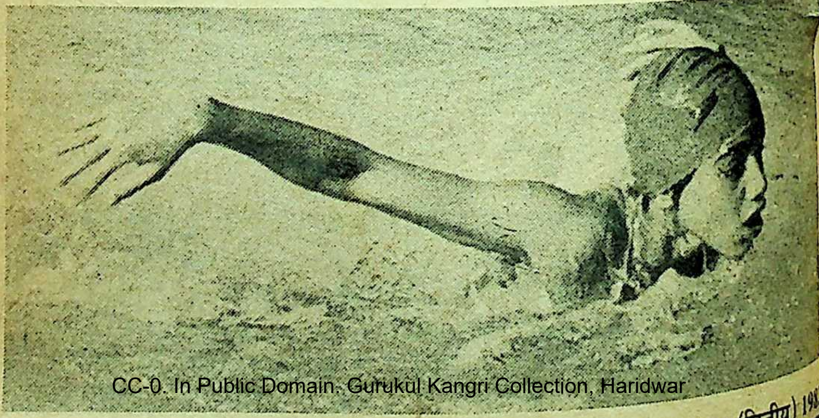

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवा गतिविधियां

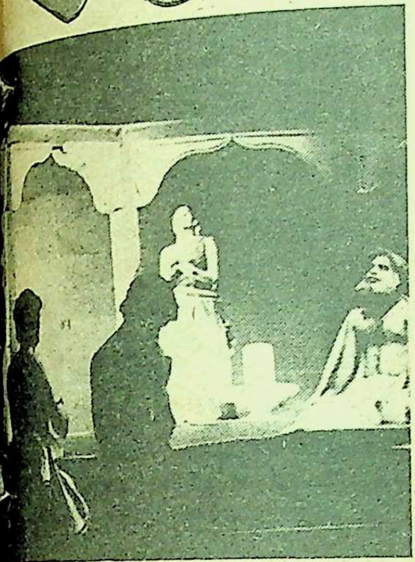

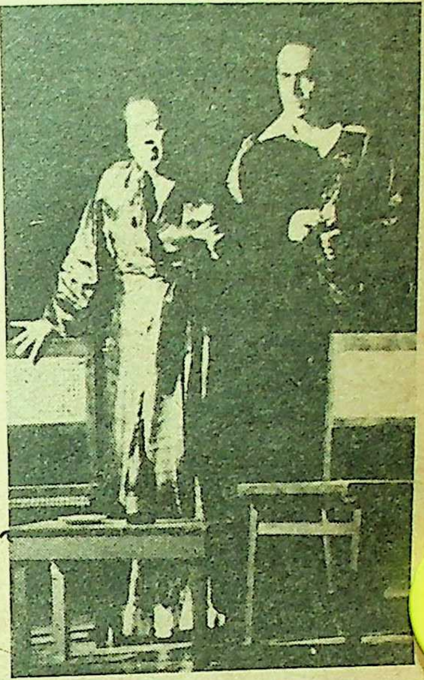

राकेश सिन्हा द्वारा खींचे गए दो छाया चित्र (ऊपर व दाएं), कैमरे में कैद अभिव्यक्ति.

प्रतियोगिता में भी चैंपियन रही थी.

वह अभ्यास के तौर पर अपने प्रशिक्षक मोहिते की निगरानी में प्रतिदिन 10 किलोमीटर तैरती है.

बी.एम.एस. के अंतिम वर्ष के छात्र प्रशांत ने भारतीय सिनेमा के इतिहास में हरियाणवी फिल्म उद्योग की स्थापना करने वाली फिल्म 'बहूरानी' में एकमात्र हास्य चरित्र–नशेबाज युवक की भूमिका की है. वह इस फिल्म निर्माण संस्था का जनसंपर्क अधिकारी है.

क्रीड़ा के क्षेत्र में भी प्रशांत पीछे नहीं है. क़ालिज स्तर तक उस ने टेबल टेनिस,

प्रशांत शुक्ल फिल्म 'बहूरानी' के एक हास्यपूर्ण दृश्य में.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैडमिंटन, क्रिकेट व एथलेटिक्स में काफी पुरस्कार जीते हैं.

जूडो व शास्त्रीय संगीत, नृत्य के अभ्यास में लगे इस प्रतिभावान कलाकार को अनेक फिल्म निर्माताओं ने अपनी फिल्मों के लिए अनुबंधित कर लिया है. हाल ही में कुछ उत्साही मित्रों व व्यवसायियों के साथ उस ने ब्रज चलचित्र विकास समिति का गठन किया है जो भारतीय फिल्म जगत में प्रथम बार संपूर्ण रूप से ब्रज संस्कृति पर आधारित हिंदी में रंगीन फिल्म 'कगार की आग' का निर्माण कर रही है. डा. शिवप्रसाद शुक्ल की कहानी पर बन रही इस फिल्म के संवाद व पटकथा आदि स्वयं प्रशांत ने तैयार की है.

—सर्वदमन सांगवान, वि.वि.प्र.

इंदौर की सीमा पाठक ने मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल की इस वर्ष की हायर सेकेंडरी परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है. एक भेंटवार्ता में सीमा ने बताया, ''मेरा प्रथम आने का रहस्य वर्ष भर खूब मन लगा कर अध्ययन करना है. मैं ने खूब परिश्रम किया और उस का मीठा फल पाया.'' वह न किसी खेल विशेष में रुचि रखती हैं और न ही ज्यादा फिल्में देखती है.

चित्रकला उस का प्रिय शौक है और विषय भी है. इस बारे में उस ने कहा, '... अभी तक 250 चित्र बनाए हैं. कई संस्... द्वारा आयोजित चित्रकला प्रदर्शनियों में ... ले कर 12 प्रमाणपत्र व अन्य पुरस्कार ... हैं.''

वह एक श्रेष्ठ चित्रकार बनना चाहती है, इस के अलावा वह नृत्य, नाटक ... कविताएं लिखने में भी रुचि रखती ... अखबारों में राजनीतिक समाचार बड़े चाव ... पढ़ती है.

—आशुतोष वाजपेयी, वि.वि.प्र.

सीमा पाठक: श्रेष्ठ चित्रकार बनने की चाह.

किरन भाटिया: बहुमुखी प्रतिभा की धनी.

जबलपुर विश्वविद्यालय के मोहन... हरगोविंददास महिला महाविद्यालय ... बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा किरन भाटिया ने न केवल बी.ए. प्रथम वर्ष की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया बल्कि वर्ष 1980-81 ... कई अखिल भारतीय स्तर की प्रतियोगिता... में भी भाग ले कर पुरस्कार प्राप्त किए.

वह इस वर्ष मध्य प्रदेश से राष्ट्रीय कैडेट कोर (सीनियर विंग) में सर्वश्रेष्ठ ... राउंडर कैडेट चुनी गई तथा दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड शिविर में उस ने मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया. छः महीने के लिए देश के राष्ट्रीय कैडेट कोर के सर्वोत्तम कैडेट भा... तथा कनाडा की यात्रा करेंगे, इस में किरन ... जाएगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

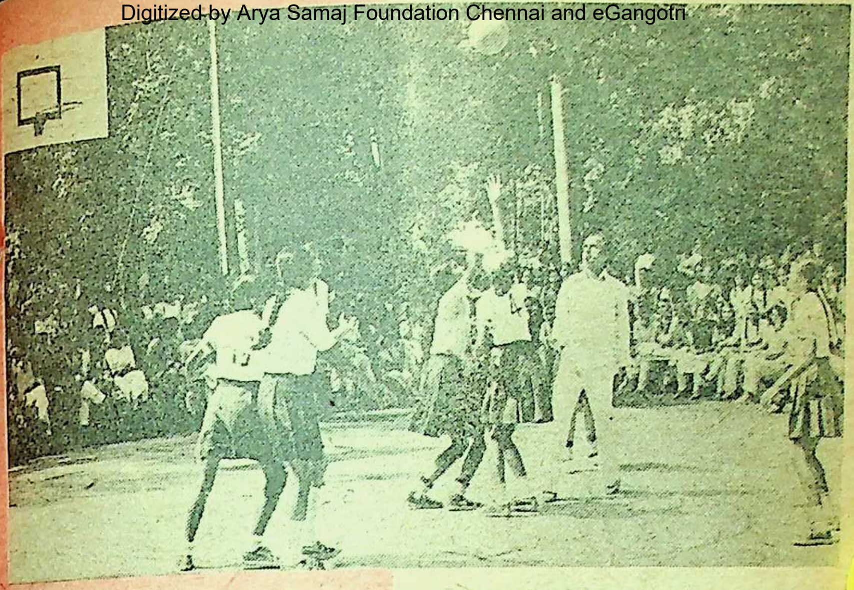

भोपाल विश्वविद्यालय महिला बास्केट बाल प्रतियोगिता के फाइनल मैच का एक दृश्य.

उस ने गीत, संगीत, नृत्य में भी पुरस्कार प्राप्त किए हैं. उस का इरादा भविष्य में डिजाइनर बनने का है.

—ज्योति भाटिया, वि.वि.प्र.

महिला बास्केटबाल प्रतियोगिता

भोपाल विश्वविद्यालय महिला वास्केटबाल प्रतियोगिता के फाइनल में महारानी लक्ष्मीबाई कन्या महाविद्यालय तात्याटोपे नगर को 64-33 अंकों से पराजित कर प्रतियोगिता जीती. मैच में, प्रारंभ में जहां संघर्ष का वातावरण बना रहा, वहीं मैच बाद में बिलकुल एकतरफा हो गया. इस प्रतियोगिता में अनेक महाविद्यालय ने भाग लिया.

—माया माहेश्वरी, वि.वि.प्र.

वन्य जीव संरक्षण सप्ताह

2 अक्तूबर को भोपाल विश्वविद्यालय में वन्य जीवों के संरक्षण के प्रयत्नों, उन के व्यवहार एवं उन की जाति एवं प्रजातियों को रहने के लिए आवश्यक वातावरण आदि विषयों पर व्याख्यान माला आयोजित की गई. इस में विभिन्न वैज्ञानिकों ने भाग लिया, जिन में-डा. बेलसरे, डा प्रदीप श्रीवास्तव, डा अरुण रघुवंशी, महेशकुमार तिवारी एवं अमरीकी वन्य प्राणी जीव वैज्ञानिक डा माइकल डेहटन आदि थे.

इस अवसर पर वन्य प्राणी संरक्षण से संबंधित चित्र एवं चलचित्र दिखाए गए.

—माया, वि.वि.प्र.

प्रशिक्षण शिविर

पिछले दिनों नोरवा (बीकानेर) में रोटरी क्लब द्वारा एक रोजगार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिस में विकलांग छात्रों को आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़े हो सकने के लिए विभिन्न प्रकार के रोजगार से संबंधित प्रशिक्षण एवं छात्रवृत्तियां प्रदान की गई.

—श्यामसुंदर मिश्रा, वि.वि.प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

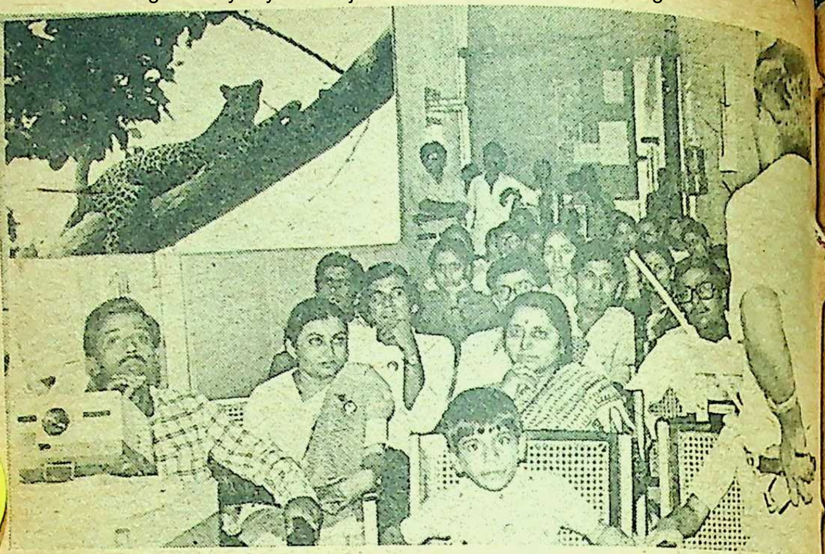

भोपाल विश्वविद्यालय में 'वन्य जीव संरक्षण सप्ताह' का आयोजन—एक दृश्य.

रंगमंच

राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में शिक्षक दिवस के अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया. छात्रों एवं शिक्षकों के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम की शुरुआत, ज्यूड विलियम जार्ज द्वारा गाए भजन से हुई.

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण, संस्था के अंतिम वर्ष (डेयरी टैक्नालजी) के छात्रों द्वारा प्रदर्शित लघु नाटिका 'एनुअल फंक्शन' रही. राजीव मित्तल द्वारा निर्देशित तथा दिनेश गुप्ता द्वारा लिखित इस नाटिका में आज के युवा पीढ़ी तथा छात्रवर्ग पर एक तीखा व्यंग्य करते हुए यह दर्शाया गया था कि गुरु का स्थान आज भी सर्वोपरि है. प्रधानाचार्य की भूमिका राजीव मित्तल ने तथा छात्रसंघ अध्यक्ष की भूमिका में दिनेश गुप्ता 'दिवाकर' का अभिनय अच्छा रहा. अन्य कलाकारों में कमलेश वं पदमकुमार का अभिनय सराहनीय था.

—दिनेश गुप्ता 'दिवाकर', वि. वि. प्र.

राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान में खेले गए नाटक में (बाएं से दाएं) ईश्वरबाबू, पदमकुमार, राजीव मित्तल, कमलेश नेगी व दिनेश गुप्ता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

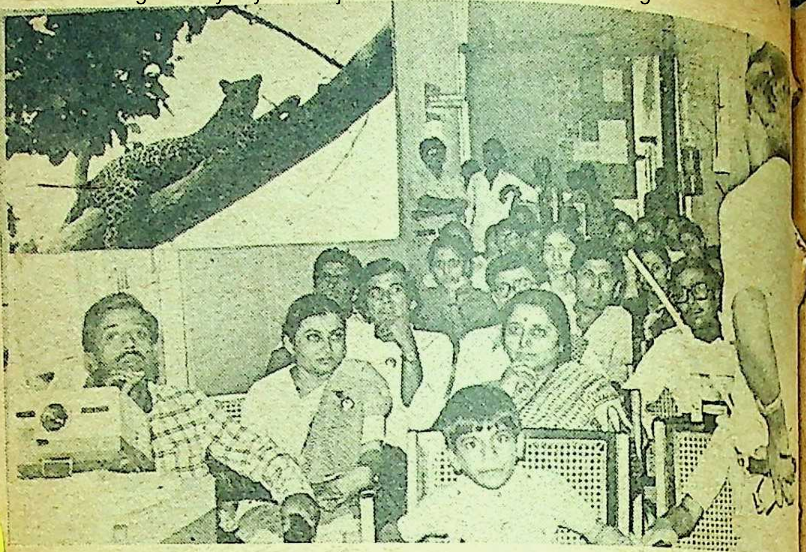

भोपाल विश्वविद्यालय में 'वन्य जीव संरक्षण सप्ताह' का आयोजन—एक दृश्य.

रंगमंच

राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में शिक्षक दिवस के अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया. छात्रों एवं शिक्षकों के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम की शुरुआत, ज्यूड विलियम जार्ज द्वारा गाए भजन से हुई.

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण, संस्था के अंतिम वर्ष (डेयरी टैक्नालजी) के छात्रों द्वारा प्रदर्शित लघु नाटिका 'एनुअल फंक्शन' रही. राजीव मित्तल द्वारा निर्देशित तथा दिनेश गुप्ता द्वारा लिखित इस नाटिका में आज के युवा पीढ़ी तथा छात्रवर्ग पर एक तीखा व्यंग्य करते हुए यह दर्शाया गया था कि गुरु का स्थान आज भी सर्वोपरि है. प्रधानाचार्य की भूमिका राजीव मित्तल ने तथा छात्रसंघ अध्यक्ष की भूमिका में दिनेश गुप्ता 'दिवाकर' का अभिनय अच्छा रहा. अन्य कलाकारों में कमलेश वं पदमकुमार का अभिनय सराहनीय था.

—दिनेश गुप्ता 'दिवाकर' वि. वि. प्र.

राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान में खेले गए नाटक में (बाएं से दाएं) ईश्वरबाबू, पदमकुमार, राजीव मित्तल, कमलेश नेगी व दिनेश गुप्ता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप के उत्पादनों का प्रयोग हमारे संस्थान में हो सकता है या नहीं यह हम आप के द्वारा दिए गए नमूनों को जांचनेपरखने के बाद ही बता सकते हैं," प्रशांत ने आगंतुक को बताया. "इस में 10-12 रोज लग सकते हैं. ऐसा करिए हमीद साहब, आप अगले से अगले सप्ताह किसी भी रोज आ जाइए."

"अगले से अगले हफ्ते तो दीवाली भी है. किस तारीख की छुट्टी है दीवाली की?" हमीद ने पूछा.

"मालूम नहीं," प्रशांत लापरवाही से बोला, "इस कमरे में कोई छुट्टियों वाला कैलेंडर भी तो नहीं है. क्यों सुशील, तुम्हें मालूम है कि दीवाली कब की है?"

"तीजत्योहारों का ब्योरा तो औरतें रखती हैं, उन्हीं से पूछो," सुशील ने कार्यालय में उपस्थित महिलाओं की ओर

बिन उजाले के दीप

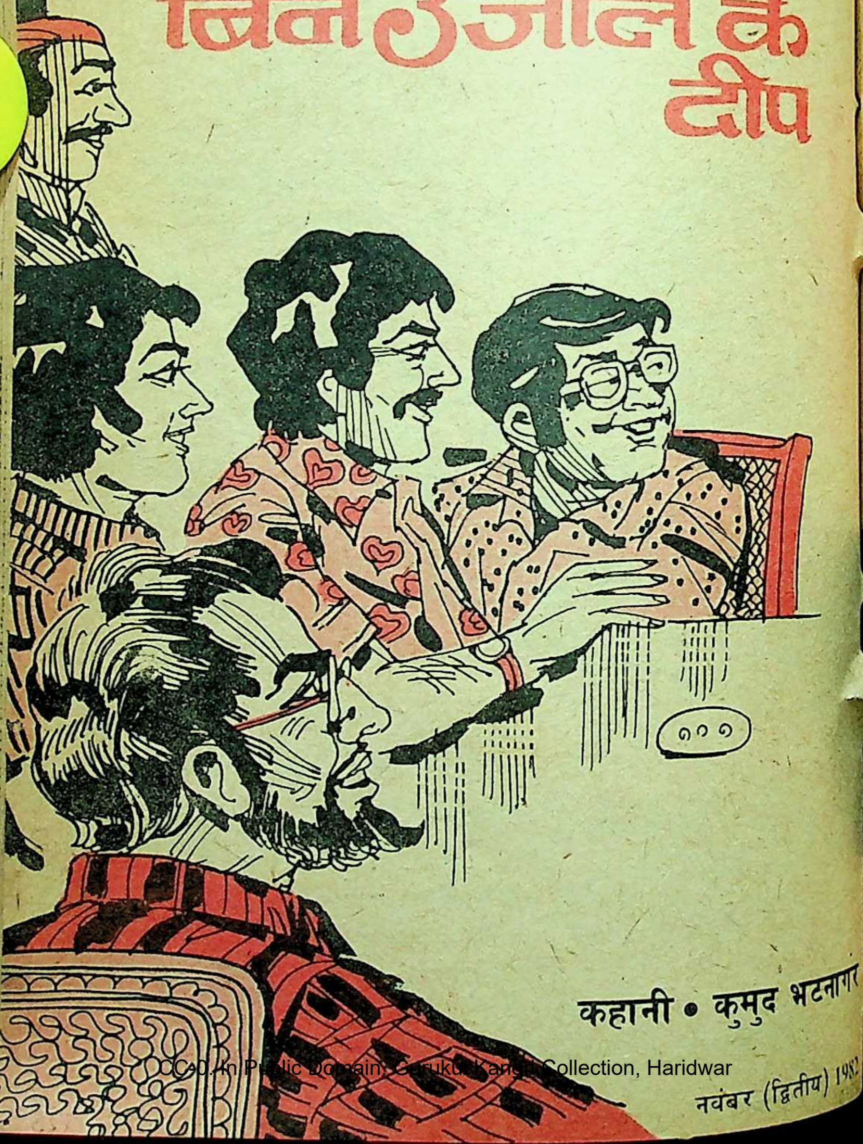

कहानी • कुमुद भटनागर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इशारा किया.

"मालूम नहीं," एक महिला का स्वर गूंजा.

"कमाल है, दीवाली जैसे त्योहार के लिए भी इतनी बेरुखी," हमीद ने उठते हुए कहा. "खैर, मैं अब दीवाली के बाद ही हाजिर होऊंगा."

"कहता तो ठीक था," अनवर ने हमीद के जाने के बाद कहा, "दीवाली जैसे सालाना त्योहार के लिए इतनी लापरवाही नहीं होनी चाहिए. मेरी और सिल्वी की तो खैर बात ही और है. मगर आप लोगों को तो इस के बारे में मालूम होना चाहिए."

दीवाली के प्रति उन लोगों के मन में कोई उत्साह नहीं था और न ही वे कोई दिलचस्पी दिखा रहे थे, फिर ऐसा क्या हुआ कि उन्होंने दीवाली मनाने का निश्चय कर लिया?

"अपने लिए तो सब ही दिन एक से हैं, अनवर साहब." स्नेहप्रभा ने आह भर कर कहा, "मैं तो एक पारसी परिवार के साथ रहती हूं, सो मेरे लिए तो क्या होली क्या दीवाली, मगर इन लोगों को तो मालूम होना चाहिए, क्यों रामस्वरूपजी?"

"आप तकदीर वाली हैं, प्रभाजी, जो इन चक्करों से बची हुई हैं. हम बालबच्चेदारों के लिए तो दीवाली दिवाला है. अब आप लोग ही बताइए भला दिवाले की तारीख कौन याद रखना चाहेगा?" रामस्वरूप खोखली सी हंसी हंसा.

"चलिए, आप की परेशानी भी समझ में आ गई, पर इन बरखुरदारों को तो अपने सालाना त्योहारों से इतनी बेरुखी नहीं होनी चाहिए.," अनवर ने प्रशांत, सुशील और प्रदीप की ओर देखा.

"बेरुखी नहीं है, अनवर साहब, मगर त्योहार तो घरपरिवार वालों के साथ मनाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए होते हैं, मैं अकेला रहने वाला क्या दीवाली मनाऊंगा," प्रशांत बोला.

"और हमारे लिए दीवाली का मतलब है हफ्ते भर खुद खाना पकाना और झाड़ूबरतन करना," सुशील प्रदीप के कंधे पर हाथ रख कर बोला, "हमारे कमरे पर काम करने वाला छोकरा दीवाली पर छुट्टी ले कर घर जाता है."

"आप लोग दीवाली पर घर नहीं जाते?" सिल्वी ने सुशील और प्रदीप से पूछा.

"न बाबा. लेदे कर आठदस रोज की तो छुट्टी मिल पाती है. उस में भी तीनचार रोज तो त्योहार के हंगामे में ही सत्यानास हो जाते हैं. घर जाने का मजा ही नहीं आता," प्रशांत ने उत्तर दिया.

"ठीक कहते हो," सुशील ने सहमति में सिर हिला कर कहा, "घर पर चार रोज तक तो सिर्फ दीवाली की मिठाई और पकवान ही खाने को मिलते हैं, घर की दालरोटी तो मिल ही नहीं पाती."

"और घर की बनी दालरोटी के लिए ही हम यहां तरसते रहते हैं," प्रदीप ने आगे जोड़ा.

"भई, आप लोग शादी क्यों नहीं कर लेते. दालरोटी जैसी मामूली, पर जरूरी चीजों के लिए तरसना बंद हो जाएगा," अनवर ने मुसकरा कर सलाह दी.

"हां, कर तो लें शादी, मगर उम्र भर दालरोटी ही खाना पड़ेगी, वह भी बगैर छौंकी दाल और बगैर चुपड़ी रोटी. घी बजट में नहीं समाएगा." प्रशांत ने हंस कर कहा.

"और अब जो बाजार से छोलेभटूरे, डोसा या चाट खा कर पेट भरते हैं उस के लिए तरसना शुरू हो जाएगा," प्रदीप ने चुटकी ली.

"कहते तो ठीक ही हो यार, इस तनख्वाह में तो तरसना ही जिंदगी की अनिवार्यता हो जाएगी. सो बेहतर है कि अभी दालरोटी को ही तरसें. साल डेढ़ साल में घर जा कर जी भर कर आराम से दालरोटी तो खा सकते हैं, मगर पूरियां या मिठाई खाने किस के दरवाजे पर जाएंगे." सुशील ने आह भर कर नाटकीय अंदाज में कहा.

"पूरियां और मिठाई ही नहीं, शादी के बाद तो कपड़ेलत्ते के भी लाले पड़ जाएंगे." सुशील ने ठहाका लगाया.

काफी निराशावादी दृष्टिकोण है आप लोगों का," सिल्वी मुंह बना कर बोली.

"इस गिनीचुनी तनख्वाह से भविष्य दिख रहा है परेशानियों से भरा हुआ. क्या दृष्टिकोण अपनाएं आशावादी. क्या बात करती हैं, सिल्वीजी." सुशील बोला, "जरा दिल पर हाथ रख कर कहिए क्या इस तनख्वाह में आप स्वयं आशावादी रह सकती हैं."

"बिलकुल, मैं तो आशावादी ही हूं. आप ने मुझे कभी उदास सूरत बनाए या बुझीबुझी बातें करते देखा है?"

"हम भी पहले कभी इसी किस्म की बातें किया करते थे, लेकिन जैसेजैसे दुनिया देखी, दृष्टिकोण बदलता गया. वास्तव में इतनी कम तनख्वाह में शादी करना और फिर त्योहार मनाना बड़ा मुशकिल है. मैं तो जब तक आमदनी नहीं बढ़ जाती शादी करने वाला नहीं," प्रशांत ने निर्णय लेते हुए कहा.

"कह तो ठीक रहे हो प्रशांत, मगर मैं एक बात सोच रही हूं. यहां हम सब ही अपने घरपरिवार से दूर अकेले रहते हैं."

"सिवा अनवर साहब और रामस्वरूपजी के," सिल्वी ने बीच में अपना चुलबुलापन दिखा कर प्रभा की बात सुधारी.

"हां, तो मैं यह सोच रही थी कि अपनेअपने कमरों में अकेले पड़े रहने से अच्छा है कि हम लोग आपस में चंदा कर के एक जगह मिलबैठ कर दीवाली मनाएं. दीवाली के बहाने ही, दफ्तर के अलावा एक रोज इकट्ठे बैठ कर खाएंपिएं, हंसेंबोलें. रामस्वरूपजी और अनवर साहब को भी सपरिवार बुलाएं." प्रभा ने एक प्रस्ताव रखा.

"खयाल तो अच्छा है, प्रभाजी. मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

परिस्थितियों ने हमें उदासीन बना दिया है, परंतु दिल का एक कोना यह जरूर कहता है कि कहीं आत्मीयों में बैठ कर एक छोटामोटा जश्न मनाएं.'' प्रशांत ने जैसे कहीं डूब कर कहा.

''मगर जश्न मनाओगे कहां,'' सुशील ने पूछा.

''तुम दोनों शायद पूरा मकान ले कर रह रहे हो. तुम्हारे यहां ही क्यों न आ जाएं?''

''वहां से अच्छा रहेगा कि सब लोग मेरे यहां आ जाएं. मैं अकेला तो बच्चों की दीवाली धूमधाम से नहीं मनवा पाऊंगा, आप के सहयोग से बच्चों की खुशी भी पूरी हो जाएगी.''

''हां आप आएंगे न अनवर साहब, और सिल्वी तुम भी आओगी न'' रामस्वरूप ने पूछा.

''क्यों नहीं आऊंगी, बरसों से साध थी कि कोई दीवाली पर बुलाए तो...'' सिल्वी ने कहा.

''यही साध मेरे बच्चों को भी है. सो अब की बार उन की यह ख्वाहिश भी पूरी हो जाएगी,'' अनवर ने अपनी खुशी प्रकट की.

''अब यह तो आप ज्यादती कर रहे हैं, अनवर साहब मय बीवीबच्चों के आप रामस्वरूपजी के घर धावा बोलने की तैयारी में हैं,'' सिल्वी के इस मजाक पर एक ठहाका लगा और सिल्वी ने आगे कहा, ''चलो यह बुझीबुझी सी बातें करने वाले भी हंसे तो.''

इस के बाद अनवर ने कहा, ''ये बरखुरदार हमारे समाज के चिराग हैं. इन्हें हम क्यों कर बुझीबुझी बातें करने देंगे. हम तो इन की तरक्की का रास्ता और इन के लिए खातीकमाती बीवियां खोजेंगे, ताकि इन के आशियाने में भी चिराग़ हो सके और हम इन के यहां दीवाली मनाने जाएं, बिन उजाले के दीप हमें पसंद नहीं हैं.'' ●

मैं इसलिए फेल होता हूं कि पिताजी हार कर पढ़ाई छुड़वा दें मगर वह हर बार नंबर बढ़वा कर मुझे अगली कक्षा में ठूंस देते हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व पदयात्री युवक से भेंट

भेंटवार्ता • राकेश रंजन

कलकत्ता के चार युवक पिछले डेढ़ वर्ष से पैदल यात्रा कर विश्व भ्रमण के सपने संजोए बैठे थे. पर यात्रा की शुरुआत के लिए उन्हें कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था. आखिर उन्होंने कई समाजसेवी संस्थाओं से संपर्क स्थापित कर के यात्रा की रूपरेखा बनाई और अपनी इस साहसिक यात्रा की तैयारी शुरू कर दी. तभी अकस्मात इन में से एक युवक को पीलिया हो गया और दूसरे युवक को डाक्टर ने स्वास्थ्य की दृष्टि से पैदल यात्रा करने से मना कर दिया. बाकी बचे दो युवक– अरुण रुद्र और सपन मजुमदार. इन की आंखों में विश्वभ्रमण के सपने कुलांचे भर रहे थे. ये अपनी आंखों से विश्व का कोनाकोना देखना चाहते थे. दुनिया भर के लोगों से मिलना चाहते थे. आखिर ये 14 बनियानें, चार स्वेटर, दो चादरें, दो रेन जैकेट, प्राथमिक उपचार की कुछ दवाइयां तथा मात्र सात रुपए नकद ले कर 1 सितंबर,

पगपग पर आने वाली कठिनाइयों की परवाह न करते हुए भी दो साहसी युवक विश्व भ्रमण पर पैदल ही निकल पड़े आखिर उन की इस रोमांचक यात्रा का उद्देश्य क्या था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1982 को अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार कलकत्ता से पैदल विश्वभ्रमण के लिए चल दिए.

हर रोज 35 से 40 किलोमीटर की पैदल यात्रा कर ये दोनों उत्साही युवक 800 किलोमीटर की यात्रा पूरी कर 4 अक्तूबर, 1982 को रात साढ़े नौ बजे पटना पहुंचे. यहां प्रस्तुत है, इन में से एक युवक अरुण रुद्र से ली गई भेंटवार्ता :

प्रश्न : विश्व भ्रमण के लिए आप ने पैदल यात्रा करने का ही निश्चय क्यों किया?

उत्तर : बहुत काम कर चुका हूं. 32 वर्ष की उम्र हो गई है. हिंदुस्तान जनरल एश्युरेंस कंपनी में शाखा प्रबंधक रहा, बंगाली फिल्मों में काम किया. पैदल घूम कर दुनिया को देखना चाहता हूं. जो अनुभव पैदल यात्रा में प्राप्त होगा, वह किसी सवारी से कहां प्राप्त होगा?

प्रश्न : इस कार्यक्रम के पीछे आप का क्या कोई खास उद्देश्य भी है?

उत्तर : हां, अनुभव प्राप्त करना. देशविदेश की संस्कृति देखना, जानना.

प्रश्न : इस से आप को या समाज को क्या लाभ हो सकता है?

उत्तर : मैं अपने अनुभवों को समाज के समक्ष रखूंगा. जहां भी जाऊंगा, शांति का संदेश ले कर. मेरा विश्वास है कि दुनिया की सभी समस्याओं का समाधान शांति के मार्ग पर चल कर ही होगा.

प्रश्न : अब तक की यात्रा कैसी रही?

उत्तर : सभी स्थानों पर लोगों ने काफी सम्मानित किया. सरकारी पदाधिकारियों के व्यवहार में जहांतहां अंतर मिला तो यह उन की मनोवृत्ति है, जिसे वे बदल नहीं सकते. कुल मिला कर अब तक की यात्रा संतोषप्रद है.

प्रश्न : आप ने विभिन्न क्षेत्रों को देखने तथा वहां के लोगों से मिलने पर कैसा अनुभव किया?

उत्तर : सुखद. उम्मीद से भी बेहतर. गांवों में भी अच्छा व्यवहार हुआ.

प्रश्न : इस यात्रा के लिए आप को सरकारी सहयोग भी मिला है?

उत्तर : नहीं. बंगाल सरकार से हम ने संपर्क किया था, लेकिन वहां से हमें कोई सहयोग नहीं मिला.

प्रश्न : आप ने जब विश्व भ्रमण करने का निर्णय लिया तो इस पर आप के परिवार के लोगों पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर : मैं अपने सात भाईबहनों में तीसरी संतान हूं. मेरे परिवार को तो कोई एतराज नहीं हुआ. हां, (सपन मजुमदार की ओर इशारा कर के) इन की मां ने इन्हें रोकने का अवश्य प्रयास किया, लेकिन समझाने पर वह मान गईं.

प्रश्न : जब किसी नए क्षेत्र में प्रवेश करते हैं तो कैसा अनुभव करते हैं?

उत्तर : नए क्षेत्र में प्रवेश करते ही एक आत्मसंतुष्टि का बोध होता है. जंगलों और बयाबान इलाकों से गुजरते हुए रोमांच का अनुभव होता है.

प्रश्न : आप किनकिन भाषाओं के ज्ञाता हैं?

उत्तर : अंगरेजी, बंगला और थोड़ीबहुत हिंदी.

प्रश्न : क्या आप ऐसा अनुभव नहीं करते कि विदेशों में यात्रा के दौरान आप को अन्य कठिनाइयों के अलावा भाषा संबंधी कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ेगा?

उत्तर : बहुत दिक्कत होगी, हम ऐसा अनुभव करते हैं. लेकन आत्मबल और भावों के द्वारा इन कठिनाइयों का सामना करेंगे.

प्रश्न : बिहार के बाद आप की इस यात्रा की रूपरेखा क्या होगी?

उत्तर : यहां से उत्तर प्रदेश होते हुए दिल्ली जाएंगे. फिर राजस्थान और गुजरात.

प्रश्न : विदेश यात्रा के लिए तो पासपोर्ट की जरूरत पड़ेगी?

उत्तर : वह बनवा चुका हूं.

प्रश्न : समूचा विश्व भ्रमण आप अनुमानतः कब तक पूरा कर लेंगे?

उत्तर : पंदरह से सत्तरह साल तक. अगर ताकत बची रही तो या तो पुनः फिल्म क्षेत्र में चला जाऊंगा या फिर आप की तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रकारिता करूंगा.

प्रश्न : आप की इस यात्रा का उद्देश्य कहीं सस्ती लोकप्रियता हासिल करना तो नहीं?

उत्तर : लोकप्रियता तो हर व्यक्ति चाहता है, यह मानव का स्वभाव है, लेकिन मैं सस्ती लोकप्रियता हरगिज नहीं चाहता.

प्रश्न : आप ने बताया है कि आप मात्र सात रुपए ले कर कलकत्ता से चले थे और वे रुपए अब तक सुरक्षित हैं. फिर खर्च कैसे चलता है?

उत्तर : जहां भी जाता हूं, लोग खुले दिल से सहयोग करते हैं.

प्रश्न : आप अभी तक किसी कठिनाई में पड़े हैं या नहीं?

उत्तर : नहीं.

प्रश्न : रास्ते में आने वाली प्राकृ विपदाओं से आप कैसे जूझेंगे?

उत्तर : एक आम आदमी की तरह

प्रश्न : अब तक की यात्रा में क्या कोई कटु या मधुर अनुभव हुए हैं?

उत्तर : कोई खास नहीं. रास्ते में ए बैग की चोरी हो गई. एक स्थान पर डा बंगले में एक सरकारी अफसर ने ज़लील किया और पटना के जिलाधिकारी के सचिव ने दुर्व्यवहार किया, बस. लेकिन आम लोगों से इतना प्यार मिला कि ये सब दुखद अनुभव उस के नीचे ढक गए.

"मैं यहां नहीं बैठूंगा! यहां तो आसपास कोई होटल भी नहीं है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब जब ऊन बचे
बिटिया रानी सजे...

आप के पूरे परिवार के लिए 16 से अधिक
आकर्षक डिजाइनों व रंगीन चित्रों के साथ.

दिसंबर 1982 अंक
गृहशोभा
बुनाई विशेषांक

- हलके नीले रंग में गहरे नीले व सफेद तिकोनों वाला कार्डीगन
- गुलाब के फूलों से सजा शाल
- बच्चे का कंबल
- गाजरी रंग का सामने से खुला कार्डीगन
- तिरंगा व गोल गले का ब्लाउज
- आकर्षक मीशा से सजा स्वेटर
- बिल्ली के मोटिफ वाला स्वेटर
- मोटिफ जोड़ कर बनाई गई वाल हैंगिंग
- ऊन का बुना हुआ कुत्ता

महिलाओं को रिझाने वाली
मनोरंजन से भरपूर
संपूर्ण पत्रिका
गृहशोभा

आज ही अपनी प्रति सुरक्षित कराएं.

विश्वविजय/ग.शो. 109

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंधेरा जो छंट गया

कहानी • महावीर काला

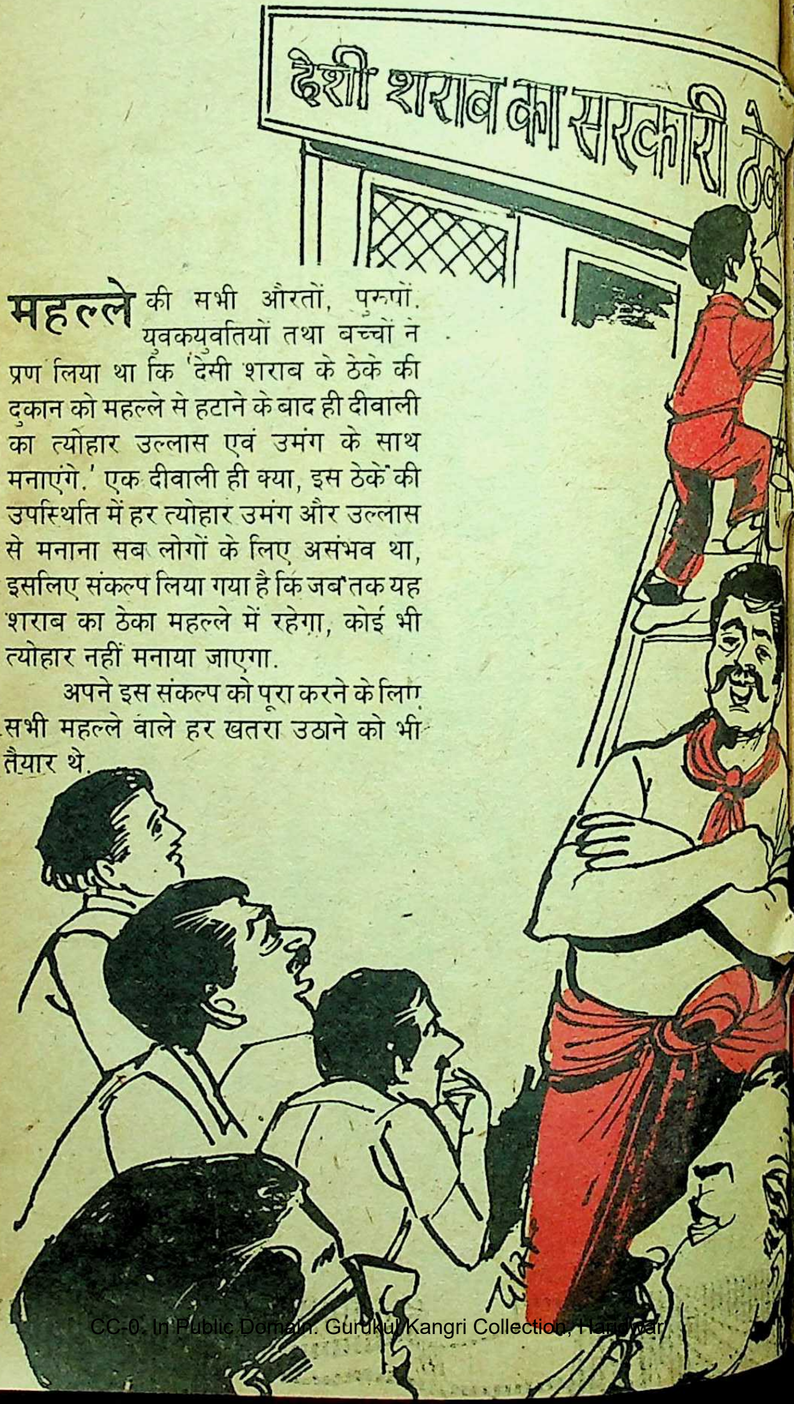

महल्ले की सभी औरतों, पुरुषों, युवकयुवतियों तथा बच्चों ने प्रण लिया था कि 'देसी शराब के ठेके की दुकान को महल्ले से हटाने के बाद ही दीवाली का त्योहार उल्लास एवं उमंग के साथ मनाएंगे.' एक दीवाली ही क्या, इस ठेके की उपस्थिति में हर त्योहार उमंग और उल्लास से मनाना सब लोगों के लिए असंभव था, इसलिए संकल्प लिया गया है कि जब तक यह शराब का ठेका महल्ले में रहेगा, कोई भी त्योहार नहीं मनाया जाएगा.

अपने इस संकल्प को पूरा करने के लिए सभी महल्ले वाले हर खतरा उठाने को भी तैयार थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नगर विधायक के खास चमचे और सत्तारूढ़ पार्टी के प्रमुख व्यक्ति कालूसिंह ने जो इस ठेके का मालिक था, हमेशा महल्ले वालों के विरोध को हंसी में उड़ाया था. पर इस समय उन के इस संगठन को देख कर वह भी सोचने को बाध्य हो गया कि कहीं यह ठेका न हटाना न पड़ जाए. इस ठेके के लिए उस ने 25-30 हजार रुपए खर्च किए थे, वह नहीं चाहता था कि उस का इतना पैसा मिट्टी में मिल जाए.

महल्ले के लोगों का आक्रोश उस अंधी सरकार के प्रति था, जिस ने इस तरह बस्ती के बीच में शराब की दुकान लगाने की इजाजत दी थी. कुछ लोग इस दुकान के मालिक हनुमान को भी गालियां दे रहे थे कि उस ने क्यों अपनी दुकान शराब के ठेके के लिए किराए पर दी? पर इस में हनुमान का दोष नहीं था. उसे तो अंधेरे में रखा गया था.

हनुमान की दुकान के आसपास पांचछः दुकानें और थीं. इन दुकानों के दोनों तरफ सड़कें थीं, दुकानों के कुछ मीटर आगे, इर्दगिर्द तथा किनारे भी मकान हैं, जिन की खिड़कियां इधर ही खुलती हैं. इन दुकानों के ऊपर भी मकान हैं. सभी का आनाजाना दुकान के दोनों तरफ बनी सड़कों पर से ही होता है.

उस दिन जब कालूसिंह हनुमान के घर पर आया तो हनुमान चौंक गया था. कालूसिंह शहर की मशहूर हस्ती है. चुनावों के दिनों में उस ने कई सभाओं का आयोजन किया था. विपक्ष की सभाओं में नारेबाजी व पत्थरबाजी इसी की देखरेख में होती थी. शहर से चुना गया विधायक भी कालूसिंह का अपना आदमी है.

"मैं ने सुना है गली के मुहाने पर तुम्हारी कोई दुकान खाली है?" कालूसिंह ने शालीनता से पूछा था.

"हां, है तो?"

"उस में कोई रहता तो नहीं है?"

"उस अंधेरी कोठरी में कौन रहेगा, साहब?"

"उस दुकान को तुम मुझे किराए पर दे सकते हो?"

दीवाली को हंसीखुशी मनाने के लिए महल्ले से शराब की दुकान का हटना जरूरी था और इस के लिए महल्ले वालों को कालूसिंह जैसे असरदार लोगों से भी टक्कर लेनी पड़ी.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"हांहां, क्यों नहीं, पर उस का कोई क्या करेगा?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह तुम छोड़ो, यदि किराए पर देना चाहो तो 300 रुपए महीना किराया मिलेगा."

"300 रुपए?"

"क्यों, मंजूर नहीं?"

"अरे साहब, मुझे मंजूर है. जो भी आप देना चाहें?"

"तो यह लो, तीन महीने का किराया पेशगी." कह कर कालूसिंह ने जेब से सौसौ रुपए. के नौ नोट निकाल कर हनुमान को दे दिए थे.

रुपयों को देख कर हनुमान इतना खुश हो गया था कि उस ने यह भी पूछने की जरूरत नहीं समझी थी कि आखिर दुकान किस चीज की करेंगे.

अगले दिन ही कालूसिंह दोतीन कारीगरों के साथ सुबह ही दुकान पर पहुंच गया था. कारीगर दुकान के अंदर सफाई करने लगे. चूना, पत्थर, सीमेंट भी था, जिस से दुकान की टूटफूट ठीक होनी थी. महल्ले के लोग कालूसिंह को जानते थे. कइयों ने उस से पूछा था, "किस चीज की दुकान लगा रहे हो?"

कालूसिंह ने हंस कर, सब को मधुरता से यही जवाब दिया था, "सरकारी लाभ की." किसी की समझ में नहीं आई थी उस की यह बात.

पर लोगों की जिज्ञासा का अंत शाम को ही हो गया था. शाम को पेंटर दुकान पर नाम लिखने आया था. 'देसी शराब का ठेका' यह नाम पढ़ते ही लोगों में खलबली मच गई थी. सभी घरों की उस ओर खुलने वाली खिड़कियां बंद हो गई थीं. लोगों में खुसुरफुसुर होने लगी थी.

किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि इस बस्ती में शराब का ठेका खोलने का औचित्य क्या था? जहां शराब होगी वहां जुआ भी होगा, लड़ाईझगड़े भी होंगे. सब तरह के अनैतिक कार्य होंगे. शराब पी कर शराबी बहकेंगे, गालियां बकेंगे. अ[illegible] भद्दी बातें करेंगे. पी कर नालियों [illegible] जाएंगे. ऐसे में बहूबेटियों और युवा [illegible] वर्ग पर क्या प्रभाव पड़ेगा?"

समस्या सचमुच गंभीर थी. [illegible] पढ़ने वाले कुछ युवा लड़कों ने इस सम[illegible] विचार किया - 'सचमुच अगर यह ठेक[illegible] नहीं तो महल्ले के वातावरण में ज़हर [illegible] जाएगा, घुटन भर जाएगी. हम [illegible] विधायक के घर पर चलना चाहिए. [illegible] प्रार्थना करनी चाहिए कि इस ठेके को [illegible] खोलने के आदेश को कृपया वापस [illegible] वरना जोरदार आंदोलन होगा.'

यह भी सोच लिया गया कि [illegible] विधायक ने बात पर ध्यान नहीं दि[illegible] संगठित हो कर खुद इस दुकान को उ[illegible] फेंकेंगे. किसी व्यक्ति को शराब लेने को [illegible] यहां आने ही नहीं देंगे. जब बिक्री होगी [illegible] नहीं तो कालूसिंह स्वयं ठेका बंद करने [illegible] मजबूर हो जाएगा.

इस तरह शराब के ठेके को हटा[illegible] लिए एक युवा दल संगठित हो गया. मह[illegible] बच्चेबच्चे में ठेके को बंद कराने की [illegible] बलवती हो उठी. लगने लगा था कि यह [illegible] सचमुच यहां नहीं चल पाएगा, [illegible] कालूसिंह भी कोई कम खिलाड़ी नहीं था. [illegible] के सिर पर अच्छेअच्छे मंत्रियों का हाथ [illegible] पुलिस. उस की मुट्ठी में थी. चंद लोगों [illegible] विरोध को दबाना उस के लिए क्या मुश्कि[illegible] था.

अगली सुबह दुकान का उद्घा[illegible] विधायक के हाथों होना था, लेकिन [illegible] महल्ले वालों का इस तरह का विरोधी रूप [illegible] देखा तो विधायकजी आने से मुकर गए. अं[illegible] शहर के एक 'प्रतिष्ठित समाज सेवी' [illegible] शराब के ठेके का विधिवत उद्घाटन कि[illegible] शहर के कई 'गण्यमान्य,' 'सम्मानि[illegible] 'बुद्धिजीवी' इस शराब के ठेके के उद्घा[illegible] पर आए. समारोह पर महल्ले का [illegible] व्यक्ति वहां नहीं पहुंचा. हां, दूर खड़े त[illegible] सब देख रहे थे. सब छोटेबड़े लड़के छात्र [illegible] रघुवीर के नेतृत्व में एक तरफ खड़े [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

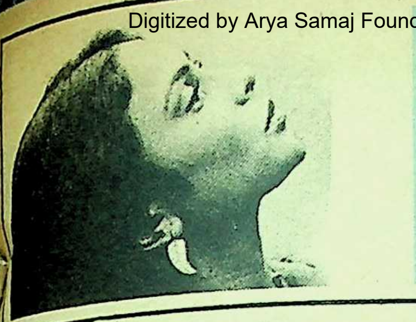

तनहा

गुम हो गया जो
ख्यालों के शहर में,
खुद से भी दूर भीड़ में
तनहा रहा है वो.

—सलीम अश्क

रघुवीर सब को कुछ समझा रहा था.

"इस को देखो, समाज का सब से प्रतिष्ठित व्यक्ति माना जाता है... और यह धार्मिक नेता है. यह दानवीर सेठ हैं. पर, ये सब शराब के ठेके के उद्घाटन पर आए हैं."

जिस समय फीता काटा गया था, उस समय रघुवीर ने दोनों हाथ हवा में ऊपर लहरा कर नारा लगाया, "शराब का ठेका..."

अन्य लड़के बोले, "बंद करो."

"शराब के ठेकेदारों हमारी जिंदगी में..."

"जहर मत घोलो... मत घोलो."

"गांधीजी का अनुसरण करो."

"नशाबंदी लागू करो."

नारों से आसमान गूंज उठा. मगर ठेके के उद्घाटन पर आए व्यक्तियों पर इस का कोई असर नहीं पड़ा. कालूसिंह पूरे समय मुसकराता रहा. अन्य व्यक्ति भी अपनी बातों में मशगूल रहे. या तो उन को अनुभव हो गया था कि यह मात्र दोतीन दिन का 'हुड़दंग' है, खुद बंद हो जाएगा.

चारों तरफ के घरों की खिड़कियां बंद थीं. उस दिन गली में किसी औरत की झलक तक दिखाई नहीं दी थी. सब अपने घरों के अंदर ही सरकार और ठेकेदार को कोसती रही थीं.

दोपहर को रघुवीर के नेतृत्व में गली के युवा व छोटेबड़े लड़कों का झुंड नारे लगाते हुए विधायक के घर गया था. पर विधायकजी घर पर ही नहीं थे. जिलाधीश के बंगले पर पहुंचा था तो जिलाधीश भी अपने बंगले से नदारद थे. ये लोग पुलिस चौकी पर भी गए थे, वहां भी नारे लगाए गए थे.

जब रघुवीर इसी सिलसिले में अपनी पार्टी के नगर अध्यक्ष से मिला तो वह बोले, "आज दिन में विधायकजी ने तुम्हारी बहुत तारीफ की थी. कालूसिंह भी तुम्हारी बहुत प्रशंसा कर रहा था कि तुम में वास्तव में एक अच्छे नेता के गुण विद्यमान हैं. नारे लगाने का तुम्हारा अंदाज, आवाज की बुलंदी, जोश व दृढ़ आत्मविश्वास सुननेदेखने लायक थे. कालूसिंह यह भी कह रहा था कि 'इस को अब आगे मौका दिया जाना चाहिए.' इसलिए आज से तुम्हें महल्ला शाखा अध्यक्ष और शहर की पार्टी का उप सचिव बनाया जा रहा है. मेरे खयाल से तुम बखूबी इस जिम्मेदारी को निभा लोगे. पर, अब तुम को कालूसिंह का विरोध करना शोभा नहीं देगा.

"और हां, कल सुबह विधायकजी राजधानी जा रहे हैं, तीन दिन के लिए, तुम्हें साथ ले जाना चाहते हैं, तैयार हो?"

अपनी तारीफ सुन कर रघुवीर गर्व से फूला नहीं समाया था. पार्टी का उपसचिव, विधायकजी के साथ राजधानी की यात्रा. वाह, ठेका चलता है तो चले. महल्ले का वातावरण दूषित हो तो हो. उस का क्या जाता है. कालूसिंह ने उस में एक नेता के सभी गुण देखे हैं. नेता बन जाएगा तो कौन इस महल्ले में रहेगा.

"रघुवीर बेटे, अब राजधानी जाने की तैयारी करो. कल सुबह जल्दी यहीं पर आ जाना."

"समझ गया साहब, अभी जाता हूं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल सुबह जल्दी ही आ जाऊंगा और देखता हूं कि कौन विरोध करता है अब ठेके का? यह तो अपना ठेका है." कह कर रघुवीर वहां से चला आया था.

ठेके के विरोध में जो युवा दल संगठित हुआ था, वह एक दिन में ही छिन्नभिन्न हो गया था. युवा दल का नेतृत्व रघुवीर के हाथों में था और वह अब ठेके का विरोधी नहीं, समर्थक था.

राजधानी जाने की बात रघुवीर ने किसी को बताई नहीं थी और न ही रघुवीर ने किसी को यह बताया था कि वह ठेके का विरोध अब नहीं करेगा. वह बिना किसी को कुछ कहे विधायकजी के साथ राजधानी की यात्रा पर चला गया था. चूंकि किसी को भी इस बात की जानकारी नहीं थी, इसलिए सब ने रघुवीर को लापता मान लिया था. लोगों के मन में यह बात भी बैठ गई कि रघुवीर को गुम कराने में जरूर कालूसिंह का हाथ है, क्योंकि कालूसिंह के ठेके का वही सब से जबरदस्त विरोध कर रहा था. सभी के मन में इस से भय का संचार हो गया, सब को अपनी सुरक्षा का भय सताने लगा और ठेके के विरोध में सब की अरुचि हो गई.

ठेका जमने लगा. महल्ले के बच्चे, जिन्होंने शराब का कभी नाम तक नहीं सुना था, इस बात को जानने लगे कि भारत में कितनी तरह की शराब बनाई जाती है? कौन शराब कितनी महंगी और किस तरह की शराब नशा देने वाली नहीं होती? शराब के इस ठेके ने महल्ले में हर तरफ शराब की लहर फैला दी थी.

कालूसिंह के इस ठेके पर सब से सस्ती शराब बिकती थी. 15 रुपए प्रति बोतल. गली के छोटेछोटे लड़कों को इस बात की खबर लग गई थी कि यह शराब आधे घंटे बाद अपना असर दिखाती है. छोटे, भोलेभाले बच्चों की एक टोली एक जगह बातचीत में व्यस्त थी. "अन्नू, कई लोग तो लेमोनेड की तरह बोतल को ही मुंह से लगा कर गटागट शराब पी जाते हैं. न जाने कैसा स्वाद आता है इस में?"

"यह तो पता नहीं बिन्नू, कि इस में [स]्वाद आता है. फिर भी लोगों के चेह[रे की] प्रतिक्रिया देख कर मैं बता सकता हूं कि [यह] ज्यादा कड़वी नहीं होती है."

"यार संजू, यह होती तो पानी की [तरह] है. इस को पीने से नशा कैसे चढ़ जाता [है?]"

अन्नू ठेके के पास से गुजर रहा था तो एक स्वर सुनाई पड़ा था, 'शराब पीने के बाद यदि कोई नींबू का रस मुंह में डाल ले तो सारा नशा दूर हो जाता है.'

"यार, हम भी देखें तो सही कि शराब पीने से नशा कैसे चढ़ता है?"

"गारंटी है कि शराब पीने के बाद नहीं बहक सकता."

"लेकिन, शराब पीएंगे कैसे?"

"अरे, पीनी किस को है? मैं तो यों ही मजाक में कह रहा था."

"खैर, पर मेरी बात सुन ले, कभी पीने की इच्छा हो तो बीयर पीना, उस में नशा बिलकुल नहीं होता."

जल्दी ही ठेका अपने पूरे यौवन पर आ गया था. सभी तरह के, सभी वर्ग के लोग शराब पीने आने लगे थे. कई तो बोतल ले कर चले जाते और कई झुंड बना कर दुकान के अंदर या दुकान के बाहर ही बैठ जाते, गिलास में डाल कर थोड़ीथोड़ी पीते. कोई पी कर तुरंत वहां से चला जाता. कोई पी कर वहीं पर बहकने लगता था. शुरू में तो ऐसे बहकने वाले लोगों को कालूसिंह जीप में बिठा कर आगे छोड़ आता था, लेकिन फिर उस ने उन की तरफ ध्यान देना छोड़ दिया था. कोई शराब पी कर गालियां बके तो बके, किसी की बहूबेटी को देख कर कोई अश्लील फब्तियां कसे तो कसे, उस की बला से.

दुकान की सुरक्षा के लिए उस ने दुकान पर दो दादा टाइप युवक रख छोड़े थे. वे ही दुकान संभालते, कालूसिंह कभीकभी हिसाब लेने आ जाता था. उस के पास दूसरे कई धंधे थे.

बहुत ढूंढ़ने के बाद भी जब रघुवीर का कहीं पता नहीं चला, तो कुछ लड़के ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो भाइयो, दीवाली बहुत नजदीक है, अगर यह ठेका नहीं हटा तो हम दीवाली ढंग से नहीं मना पाएंगे..." बजरंगलाल ने महल्लेवासियों से कहा.

लिखाने थाने गए. वहां थानेदार से ज्ञात हुआ कि रघुवीर तो विधायकजी के साथ राजधानी की यात्रा पर गया हुआ था.

यह सुन कर कइयों ने उस का नाम ले कर थूका था. पर कइयों ने निश्वास लिया था. 'मजे आ गए उस के तो.'

इस घटना के बाद 'युवादल' का नेता सुप्रणीत बना था. वह कपड़े की मिल में अस्थायी नौकरी पर था. नयानया ही काम पर लगा था. वह देखने में लंबाचौड़ा, छरहरे बदन का जवान छोकरा था. सुप्रणीत ने भी एकदो दिन नारेबाजी की. शहर भर में गली के लड़कों के साथ 'विधायक होश में आओ...' 'शराब का ठेका... बंद करो...' के नारे लगवाता रहा, लेकिन एक दिन महल्ले वालों ने उसे शराब के नशे में गंदे नाले में पड़ा पाया. फिर तो वह रोज ही नशे में रहने लगा.

एक रात तो हद हो गई. कुछ शराबियों ने आसपास के घरों की खिड़कियों पर पत्थर फेंके थे, दरवाजे खटखटाए थे. घरों में चोरियों की संख्या भी बहुत बढ़ गई थी. कभी किसी की घड़ी गायब होती तो किसी का ट्रांजिस्टर. किसी के रुपए गायब तो किसी के बरतन.

एक दिन तो दुकान की बाईं तरफ बने एक मकान की दीवार फांद कर एक शराबी युवक अंदर कूद गया था. उस का उद्देश्य चोरी करना ही था. पर आहट पा कर वह युवक चौंक गया था. उस ने देखा एक औरत स्नान कर रही थी. औरत को देखते ही उस का नशा और चढ़ गया. बिना कुछ सोचेसमझे वह उसी तरफ लपका और औरत पर झपट पड़ा. औरत चिल्लाने लगी, लेकिन उस शराबी पर उस की चिल्लाहट का कोई असर नहीं पड़ा था. औरत के चीखनेचिल्लाने की आवाज सुन कर सब घर वाले जाग गए. उस शराबी की बहुत पिटाई हुई.

लेकिन इस घटना ने महल्ले वालों को हिला डाला. कुछ किराएदार तो मकान तक खाली कर गए. वीरू नामक कालिज के छात्र ने कालूसिंह को धमकाया और चेतावनी दी कि यदि जल्दी ही ठेके को नहीं हटाया गया तो परिणाम अच्छा नहीं होगा. उस रात उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

युवक की कुछ अनजान लोगों ने बुरी तरह पिटाई कर दी थी.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन सब वारदातों के बाद भी पुलिस विभाग निष्क्रिय बैठा था. किसी को शराब पीने से रोका नहीं जा सकता था, क्योंकि यह कोई अपराध नहीं है. कुछ बुजुर्ग व्यक्ति शहर के विधायक के पास इस बात की शिकायत ले कर गए थे. मिलने पर विधायकजी ने कहा था, ''कालूसिंह ने बस्ती के बीच शराब का ठेका लगाया है? यह तो अच्छी बात नहीं. मैं आज ही बात करूंगा, और उसे दुकान तुरंत हटाने का आदेश दूंगा.''

लेकिन, कुछ नहीं हुआ. दशहरा आ गया. दीवाली के 20 दिन रह गए. पर किसी के मन में भी प्रसन्नता व उमंग की भावना नहीं थी. किसी ने भी घर की सफाई करने या सफेदी इत्यादि कराने में अभी तक रुचि नहीं दिखाई थी. पर उस दिन बजरंगलालजी की बेटी, संतोष के साथ घटी घटना ने सभी महल्लेवालों के दबे क्रोध को चिनगारी लगा दी.

शुक्रवार का दिन था. महल्ले के सब से बुजुर्ग और सम्मानित व्यक्ति बजरंगलाल जी की बेटी संतोष घर से निकली. सुबह का ही वक्त था, लेकिन लोग अब भी ठेके पर शराब पी रहे थे. रात के पिए हुए व्यक्ति भी इधरउधर पड़े थे.

वह किसी तरह अपनी सहेली के यहां चली गई, लेकिन जब वह वापस लौट रही थी तो एक शराबी युवक की नजर उस पर पड़ गई. वह उस की तरफ झपटा, ''कहां जाती हो मेरी छम्मक छल्लो?''

संतोष भय से चीख पड़ी थी. उस के हाथ से उस की किताबें छूट गई थीं. वह शराबी युवक कुछ कर तो नहीं सका था, क्योंकि तभी महल्ले के लोग उस पर टूट पड़े थे, लेकिन इस घटना ने महल्ले वालों को उत्तेजित कर दिया था.

बजरंगलालजी ने जोश में चिल्ला कर कहा था, ''मेरे भाइयो, बेशक आज उन्होंने संतोष के साथ छेड़खानी की है, कल तुम्हारी बेटियों के साथ भी तो करेंगे. एक दिन ऐसा भी आएगा, जब वे इन को उठा कर ले जाएंगे. आखिर हम हाथ में चूड़ियां पहन कर कब तक खामोश बैठे रहेंगे?''

एक बोला, ''तो हम क्या करें?''

''क्या करें, अरे यहां पर किसी भी शराबी को आने ही न दें. अभी जितने भी शराबी नशे में इधरउधर पड़े हैं, उन के कपड़े उतार कर मारमार कर महल्ले से बाहर निकाल दें. कालूसिंह को हम कुछ नहीं कह सकते, लेकिन शराबियों को तो यहां आने से रोक सकते हैं.''

''हम को यही करना चाहिए.'' एक समझदार औरत बोली थी, ''पहले तो किसी भी व्यक्ति को ठेके की तरफ आने ही मत दो और जो फिर भी आने की जिद करे तो उसे मार कर, धमका कर भगा दो.''

''बोलो, इस काम में सब साथ दोगे?'' बजरंगलाल ने पूछा था.

''हां देंगे, किसी भी शराबी को अब इस महल्ले में कदम तक नहीं रखने देंगे.'' सब महल्ले वाले एक साथ बोले थे.

''देखो, भाइयो, इसी सप्ताह दीवाली है. अगर यह ठेका नहीं हटा तो हम दीवाली भी खुशी से नहीं मना पाएंगे. एक दीवाली क्या, कोई भी त्योहार हम मन से नहीं मना पाएंगे.'' बजरंगलालजी ने कहा था.

''हम नहीं जागे तो इस बार दीवाली पर सिर्फ शराब के ठेके पर दीपक जलेंगे. ताश खेली जाएगी, जुआ होगा और हमारे घरों में अंधेरी दीवाली होगी.'' कई आवाजें एक साथ आईं, ''नहीं, हम ऐसा नहीं होने देंगे, हमारी यह रोशनी से भरी दीवाली होगी.''

सब ने उस दिन प्रण लिया था कि जब तक यह शराब का ठेका यहां से हट नहीं जाएगा, हम दीवाली ही नहीं मनाएंगे.

महल्ले की सभी औरतें लाजशरम, भय, संकोच त्याग कर युवकों के कंधे से कंधा मिला कर सहयोग दे रही थीं.

उस दिन दो संगठन बने. एक संगठन कालिज के लड़कों का था, जिस में तीन बुजुर्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़िंदगी

कहां से ढूंढ के अब लाएं
दुश्मनी के लिए,
वह जिंदगी जो कटी
आज तक वफाओं में.

—मुशीर झंझानवी

व तीन स्त्रियों को भी शामिल किया गया था. इस संगठन का काम था कि शराबियों को ठेके पर आने से रोका जाए.

दूसरा संगठन 20 से 32 साल तक के जवानों का था. इन का काम था ठेके पर जबरन आ कर शराब पीने वालों के कपड़े इत्यादि निकाल कर, उन को मारमार कर महल्ले से बाहर निकालना. दोनों दलों के लोगों ने अपना काम शुरू कर दिया था. ठेके के बाहर व आसपास जितने भी शराबी शराब पी कर मदहोश पड़े थे, उन के सारे कपड़े उतार कर चप्पलों व जूतों से मारा और महल्ले से बाहर खदेड़ दिया. कुछ और लोगों ने जो ठेके पर बैठ कर शराब पी रहे थे, जब यह देखा तो वे सिर पर पांव रख कर भाग खड़े हुए.

कुछ व्यक्तियों को इस बात की आशंका थी कि इतना होने पर भी यह शराब का ठेका यहां से हटेगा नहीं. जिस दिन कालूसिंह अपनी बर्बरता व शैतानियत का परिचय देगा, सब लोग उस का विरोध करना भूल जाएंगे. वह पुलिस व गुंडों का सहयोग भी ले सकता था. इस निराशावादी दृष्टिकोण के व्यक्तियों के मन में यह बात बैठ गई थी कि अब इस महल्ले में कभी भी दीवाली की रात जगमग नहीं करेगी. यहां हमेशा शराबियों के कहकहे ही गूंजेंगे.

पर लोग संगठित हों तो फिर कौन उन से जीत सकता है? एकदो बार पुलिस भी आई, पर लोगों ने उन को भी महल्ले में प्रविष्ट नहीं होने दिया. पुलिस अधिकारी के सामने ही उन्होंने एक शराबी को नंगा कर के, मारपीट कर भगा दिया था. पुलिस ताकत नहीं दिखा पाई, क्योंकि वह खुद लोगों की इतनी एकता देख कर डर गई थी. उसे बदनाम होने का डर था. सरकार को जवाब देना मुश्किल हो जाता. हो सकता था, मुख्य मंत्री को इस्तीफा तक देना पड़ जाता.

विरोध बढ़ता जा रहा था. ठेके पर बैठे आदमी अब मक्खियां मारने लगे थे. सातआठ बोतलें भी नहीं बिकती थीं. एकदो बार कालूसिंह भी अपनी जीप पर आया था, पर महल्ले वालों ने उसे भगा दिया था.

इस विरोध की खबर कुछ अखबारों में मय चित्रों के छपी. अब तो महल्ले वालों को पूरे शहर का समर्थन प्राप्त हो गया था. अखबार में खबर छप जाने के कारण कुछ विपक्षी नेताओं ने इस सवाल को विधान सभा में भी उठाया. उन्होंने सरकार की भर्त्सना की कि उस ने एक बस्ती के बीच में शराब का ठेका खोलने की इजाजत दी.

एक तो ग्राहकों का अभाव, ऊपर से जन विरोध इतना प्रबल और अब राजनीतिक विरोध भी. फलस्वरूप महल्ले वालों की जीत हुई. कालूसिंह को घाटा खा कर वहां से ठेका हटाना पड़ा. लोग जान गए कि जनता संगठित हो तो सरकार को भी हिला सकती है.

महल्ले वाले खुश थे कि इस बार की दीवाली अंधेरे से नहीं खुशियों से भरी होगी. दीवाली के दो दिन पहले ही घरों में दीपक झिलमिलाने लगे थे. अंधेरा छंट गया था और अब महल्ले में जगमगाती दीवाली मनाई जा रही थी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनिया भर की

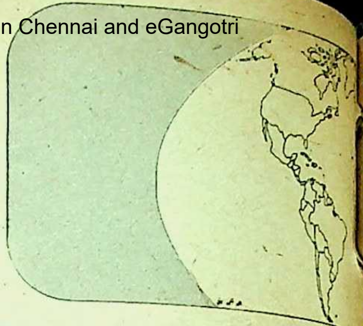

कारें बन गईं अब हनीमून सेंटर

स्कैंडिनेविया के देश विशेषकर स्वीडन अपनी यौन स्वच्छंदता के लिए प्रसिद्ध हैं. वहां सार्वजनिक उद्यानों में और सार्वजनिक स्थलों पर प्रेमीप्रेमिकाओं को बिना किसी आड़ का सहारा लिए बेझिझक प्रेमाचार करते देखा जा सकता है. किंतु अब इटली के उच्चतम न्यायालय ने भी अपने देश के युवकयुवतियों को रास्ते पर चलती अथवा पार्किंग स्थलों पर खड़ी गाड़ियों को हनीमून सेंटर के रूप में इस्तेमाल करने की छूट दे दी है. शर्त सिर्फ यह है कि कारों के दरवाजे और खिड़कियां पूरी तरह बंद हों.

न्यायालय ने यह फैसला 12 वर्ष पूर्व दायर किए गए एक मुकदमे के सिलसिले में दिया है, जिस में फैक्टरी में काम करने वाले एक युवक और युवती को कार में सहवास करते पुलिस ने पकड़ लिया था और निचली अदालत ने उन्हें कैद की सजा सुना दी थी.

अपने फैसले में न्यायाधीश ने लिखा कि, कार के दरवाजे व खिड़कियां बंद ही नहीं होनी चाहिए अपितु उन के शीशे भी पूरी तरह ढके होने चाहिए ताकि कोई भी व्यक्ति कार के अंदर का दृश्य न देख सके.

उच्चतम न्यायालय के फैसले से अब इटली की अनेक कारों में शीशे ढके रहने लगे हैं और टूरिस्ट सेंटर के लोग सिर पकड़ कर बैठे हुए हैं. हनीमून केंद्र, स्थल अब सुनसान दिखाई देने लगे हैं.

वेश्यालय के लिए कर्ज

ब्रिटेन के कुछ छोटे बैंकों ने अभी हाल में अमरीका के एक वकील और उस की एक भागीदार महिला को अमरीका का एक प्रसिद्ध वेश्यालय खरीदने के लिए ढाई करोड़ डालर का ऋण दिया है. बैंकों से कर्ज प्राप्त करने वाले हैं– फोर्ट लाडरडेल (फ्लौरिडा) के वकील वेन ड्रिजिन और फालो (नैवेडा) के साल्ट वैल्स वेश्यालय की मालकिन लिंडा विलसन. यह वेश्यालय नैवेडा के ऐसे क्षेत्र में है जहां वेश्यावृत्ति कानूनी रूप से जायज है. वेश्यालय खरीदने के लिए दिया गया कर्ज 10 वर्षों में 12 प्रतिशत ब्याज की दर से लौटाना होगा.

इस वेश्यालय में करीब 70 लड़कियां हैं जो वेश्यावृत्ति के व्यापार में लिप्त हैं. यह वेश्यालय दूरदूर तक प्रसिद्ध है. ब्रिटेन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

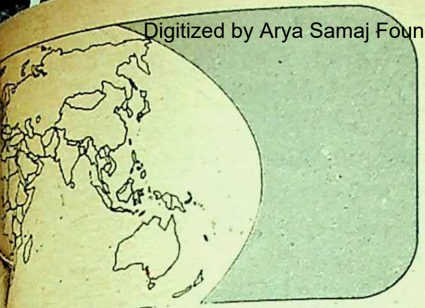

बेरोजगारी से त्रस्त चिली की युवा पीढ़ी आज सड़कों पर उतर आई है.

बैंकों द्वारा इस वेश्यालय को कर्ज में इतनी मोटी रकम दिए जाने की ब्रिटेन के पत्रों ने काफी आलोचना की है. कुछ नेताओं पर इस वेश्यालय का अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन करने व सहयोग देने का भी आरोप लगाया जा रहा है.

बेकारी भत्ते की मांग

दक्षिण अमरीका महाद्वीप में प्रशांत सागर के तट पर बसा चिली देश अंगूर के बड़ेबड़े बगीचों के कारण प्रसिद्ध है. सितंबर 1970 के आम चुनावों में मार्क्सवादी विचारधारा वाले डा. साल्वाडोर अलेंदे यहां के राष्ट्रपति बने. सन 1972 में सेना ने सरकार का तख्ता पलट दिया और थल सेनाध्यक्ष जनरल आगस्टो पिनोचेट राष्ट्रपति बन बैठे. नए शासन के दौरान प्रोफेसर मिलटन फ्रीडमैन द्वारा बनाई गई आर्थिक नीतियों को देश में लागू किया गया. नई आर्थिक नीतियों ने फौजी टोले की स्थिति तो मजबूत बना दी, पर जनता की स्थिति बिगाड़ दी, अब यहां बेकारी तेजी से बढ़ रही है. 10 से 15 लाख लोग बेरोजगार हैं. हर चार व्यक्तियों में से एक व्यक्ति रोजगार की तलाश में सड़कों पर घूम रहा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिली सरकार से बेरोजगारी भत्ता बढ़ाने की मांग करते नौजवान.

चिली में मुद्रास्फीति तेजी से बढ़ रही है. लोगों को जीवनयापन के साधन जुटाने में परेशानी हो रही है.

सरकार पिछले एक वर्ष से बेरोजगारों को प्रति सप्ताह 10 डालर की आर्थिक सहायता दे रही है. किंतु अब लोग इस सहायता में वृद्धि की मांग करते हुए गलियों में नारे लगा रहे हैं.

इंडोनेशिया में पानी का संकट

दक्षिण पूर्व एशिया और आस्ट्रेलिया के बीच लगभग 3,000 छोटेबड़े द्वीपों में फैला इंडोनेशिया इस समय देश में पानी की बढ़ती हुई कमी और अनाज के संभावित अकाल से चिंतित है. इंडोनेशिया के बड़े शहरों में पानी की कमी तथा गंदे पानी के इस्तेमाल से कई क्षेत्रों— कालीमनतान, बोर्नियो में हैजा, पीलिया तथा अनेक प्रकार की बीमारियां फैल गई हैं. इरियन जावा द्वीप में पानी की कमी और फसलों के चौपट होने से अकाल की स्थिति पैदा हो गई है.

कुछ द्वीपों में पिछले तीन महीनों से वर्षा न होने से पीने के शुद्ध पानी का अभाव हो गया है. पानी के सुरक्षित भंडारों में पानी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बेहद कमी हो गई है और धान की फसल पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी जकार्ता में बनी नहरें जिन से शहर के विभिन्न हिस्सों में नहानेधोने और पीने के लिए पानी पहुंचाया जाता था, अब कई जगहों पर सूख गई हैं. पानी का संकट इतना बढ़ गया है कि अब जकार्ता से 640 किलोमीटर दूर पश्चिमी कालीमनतान की राजधानी पोनटियानैक से जहाजों में शुद्ध पानी भरवा कर मंगवाया जा रहा है. पश्चिमी कालीमनतान के विभिन्न हिस्सों में भी पानी का संकट बढ़ रहा है. पानी का संकट अब दक्षिणपूर्व एशिया के अनेक देशों में भी बढ़ता जा रहा है.

समुद्र में खजाना मिला

प्राकृतिक गरम पानी के चश्मों के लिए प्रसिद्ध और एटलांटिक महासागर के उत्तर में स्थित आइसलैंड द्वीप इन दिनों यूरोप के अखबारों में चर्चा का विषय बना हुआ है. हाल में आइसलैंड की राजधानी रिकजेविक से खबर मिली है कि 22 गोताखोरों ने 22 वर्षों के अथक परिश्रम के बाद समुद्र में डूबा करोड़ों रुपए का खजाना प्राप्त कर लिया है.

ऐसा कहा जाता है कि सन 1667 में एक डच जहाज 'एमस्टरडम आर्म्स' आइसलैंड के दक्षिण में डूब गया था. इस जहाज के साथ आठ जहाज और भी थे. ये सभी जहाज सुदूरपूर्व से एमस्टरडम के लिए रवाना हुए थे. जहाजों के रवाना होने के समय समुद्र में कुछ जगहों पर यूरोप के कुछ देशों के बीच युद्ध की स्थिति बनी हुई थी. इन जहाजों में से एक जहाज 'एमस्टरडम' ने अपना निर्धारित रास्ता बदल कर आइसलैंड द्वीप में से जाने का निश्चय किया, लेकिन संयोग से समुद्री लहरों के कारण वह निर्धारित स्थान पर पहुंचने से पूर्व ही आइसलैंड के निकट डूब गया.

सन 1960 से आइसलैंड के निकट समुद्र में डूबे इस जहाज को ढूंढने के लिए 30 गोताखोरों ने सम्मिलित प्रयास शुरू किए. गोताखोरों ने इस जहाज के इर्दगिर्द के 10 किलोमीटर क्षेत्र का चप्पाचप्पा छान मारा और अंत में पूरे 22 वर्ष के बाद सफल हुए.

समुद्र में डूबे इस जहाज से गोताखोरों को 43 बड़ी पेटियों में सोने के टुकड़े और छड़ें, जेवर तथा कई टन हीरे मिले हैं. इन की कीमत इस समय करोड़ों रुपए है. समुद्र से पाए गए खजानों में इसे सब से बड़ा खजाना कहा जा रहा है.

बच्चे बढ़ाने पर मदद

कुवैत के एक सरकारी कर्मचारी जावेद अब्दुल्ला को सरकार ने अपना परिवार चलाने के लिए हाल में दोगुना वेतन देना शुरू कर दिया है. अब्दुल्ला के परिवार में इस समय चार बीवियां और 30 बच्चे हैं. बच्चों की अच्छी तरह परवरिश करने और बच्चों की संख्या बढ़ाने के लिए सरकार ने उस को दी जाने वाली 460 कुवैती दीनार की राशि बढ़ा कर अब 920 कर दी है.

अब्दुल्ला के परिवार में इस समय छः टेलीविजन, 12 फ्रिज हैं और घर के 17 कमरों में एकएक एयर कंडिशनर लगा हुआ है. अब्दुल्ला की चारों शादियां अचानक हुई हैं. पहली पत्नी से 18 बच्चे हैं. बच्चों और पत्नी से दुखी हो कर वह एक बार ईरान की यात्रा पर गया और एक ईरानी महिला से निकाह कर बैठा. इस दूसरी पत्नी से दो लड़के पैदा हुए. अब्दुल्ला घर की परेशानी से ऊब कर इराक घूमने गया और वहां तीसरी शादी कर बैठा. तीसरी पत्नी से आठ बच्चे हुए. अब्दुल्ला की चौथी शादी तब हुई जब वह हज करने सऊदी अरब गया और जिस मकान में ठहरा उस के मालिक की लड़की से शादी कर बैठा. इस से अब्दुल्ला के सात बच्चे पैदा हुए.

इस समय अब्दुल्ला के परिवार में चार औरतें, 20 लड़कियां और 10 लड़के हैं. बच्चे आपस में लड़ते हैं, लेकिन बीवियों में प्रेम है. उन्हें डर इस बात का है कि कहीं अब्दुल्ला अब और शादी न कर बैठे. इधर अब्दुल्ला सरकारी सहायता से निडर हो गया है. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईरान:

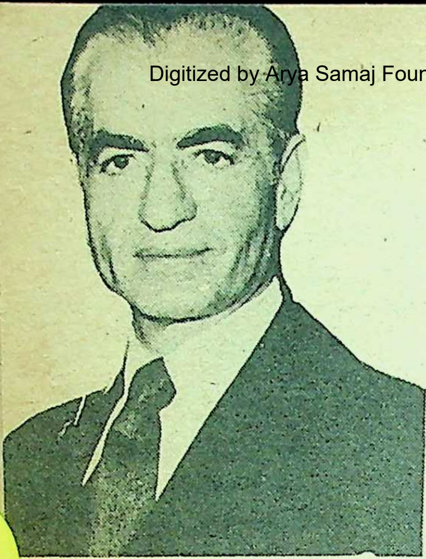

शाह : सत्ता में आते ही 'तुदेह' के विरोधी हो गए.

ईरान में सत्ता हथियाने के लिए दक्षिणपंथी, मध्यममार्गी व वामपंथी—ये तीनों गुट अपनी पूरी शक्ति से संघर्ष कर रहे हैं. उन के इस संघर्ष से ईरानी कम्यूनिस्ट पार्टी 'तुदेह' को तेजी से उभरने का मौका मिल रहा है. यदि तीन गुटों के बीच यह संघर्ष जारी रहता है तो वह दिन दूर नहीं जब कम्यूनिस्ट पार्टी सत्ता प्राप्त करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण प्रतिद्वंद्वी बन जाएगी.

'तुदेह' का गठन सन 1920 में रूस में बाकू नामक स्थान पर हुआ था. 'तुदेह' का अर्थ है—जनता. यह पश्चिम एशिया की सब से पुरानी कम्यूनिस्ट पार्टी है. इस का पहला सम्मेलन बाकू में ही सन 1921 में हुआ था. बोल्शेविकों ने तब पूर्वी देशों में क्रांति के लिए लोगों को प्रेरित करने का जो कार्यक्रम बनाया था, उस पर अमल करते हुए 'तुदेह' की सरगरमियां सारे ईरान में, विशेषकर गिलान के उत्तरी क्षेत्र में बढ़ गई थीं. इस ने गिलान में कठपुतली सरकार कायम करने के लिए वहां के कबीलों में फैले असंतोष का फायदा उठाया. लेकिन कृषि के क्षेत्र में अपनी अति वामपंथी नीतियों के कारण यह सरकार अधिक समय तक टिकी न रह सकी.

गिलान में कठपुतली शासन स्थापित करने के प्रयास में इसे उन रूसी सेनाओं का सहयोग प्राप्त था, जो सन 1908 में ब्रिटेन और रूस के बीच हुए समझौते के तहत वहां पहले से मौजूद थीं, लेकिन जिन्हें नई बोल्शेविक सरकार के आश्वासन के बावजूद वहां से हटाया नहीं गया था.

इस के साथ ही कम्यूनिस्ट पार्टी ने औद्योगिक क्षेत्रों में अपने केंद्र कायम कर लिए थे और रूस की आर्थिक सहायता से कई समाचारपत्रों का प्रकाशन भी शुरू कर दिया था.

सन 1941 में आंतरिक गड़बड़ी का लाभ उठा कर इस ने अजरबेजान में कठपुतली सोवियत रिपब्लिक की स्थापना कर दी. इस कार्य में भी ब्रिटेन व रूस के समझौते के अंतर्गत वहां मौजूद रूसी सेना ने मदद की. लेकिन अमरीका और ब्रिटेन के दबाव के कारण इस नई सरकार का कुछ समय बाद ही पतन हो गया.

सन 1940 के दशक में तुदेह ने दावा

ईरान में कम्यूनिस्टों द्वारा उग्रवादियों और असंतुष्टों को साथ ले कर सत्ता के लिए संघर्ष किया जा रहा है. इसलामी क्रांति के बाद क्या कम्यूनिस्ट वहां अपने पैर जमा सकेंगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम्यूनिस्टों का प्रभाव बढ़ रहा है

नूरुद्दीन किआनारी : निर्वासित जीवन बिताने के बाद फिर सक्रिय.

किया कि उस के 25,000 सदस्य हैं तथा विभिन्न ट्रेड यूनियनों के पांच लाख सदस्य उस के साथ हैं. सन 1949 में तुदेह पर प्रतिबंध लगा दिया गया, लेकिन 1950 के बाद देश की अनिश्चित राजनीति के कारण यह पार्टी फिर से उभरने लगी.

सन 1953 में डाक्टर मुसद्दिक के पतन और शाह के पुन: ईरान का शासनसूत्र संभाल लेने के बाद तुदेह को दमन का काफी सामना करना पड़ा. इस के नेता भाग कर पूर्वी जरमनी चले गए और सामान्य कार्यकर्ता या तो ठंडे पड़ गए या उन्होंने ऐसा राजनीतिक दृष्टिकोण अपना लिया, जिसे मान्यता प्राप्त थी. इस का नतीजा यह हुआ कि 1960 के दशक में इस के सदस्यों की संख्या घट कर 2,000 रह गई और 1973 में तो यह संख्या मात्र 500 ही रह गई.

तुदेह के एक महत्त्वपूर्ण नेता इस्कंदरी को पार्टी के प्रथम सचिव पद से हटा कर उन के स्थान पर नुरुद्दीन किआनारी को नियुक्त किया गया. इस्कंदरी इस पद पर आठ वर्षों से थे, किंतु उन के बारे में कहा गया कि वह ईरान में उभर रही धार्मिक भावनाओं और तुदेह पार्टी के लिए उस के महत्त्व को समझने में असमर्थ रहे हैं. उधर किआनारी 20 वर्षों से भी अधिक समय से पूर्वी जरमनी में निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे थे.

जब से तुदेह पार्टी का जन्म हुआ है, यह ईरान में सोवियत संघ की स्थानीय एजेंट के रूप में कार्य करती रही है. इस रूप में कार्य करना इस के लिए लाभदायक भी साबित हुआ और मुसीबत भी.

उदाहरण के तौर पर 1960 के दशक के मध्य में जब मास्को ने शाह से सहयोग की नीति अपनाई तो तुदेह की स्थिति बड़ी अजीब हो गई, क्योंकि उसे ऐसी नीतियों का समर्थन करना पड़ा जो उसे कमजोर कर रही थीं. रूसी नीति के फलस्वरूप 1964 व 1965 में पार्टी में दो बड़े विद्रोह हुए, जिस से पार्टी को काफी क्षति पहुंची.

लेकिन रूस के साथ संबंधों के कारण पार्टी को काफी लाभ भी हुआ. इस से पार्टी में और लोगों को भरती करने का मौका तो मिला ही, साथ ही उसे संरक्षण भी प्राप्त हो गया. रूसी धन और प्रेस की सुविधा भी मिली, जिस के कारण वहां कम्यूनिस्टों का काम आसान हो गया.

बाकू में रूस द्वारा गुप्त रूप से संचालित रेडियो स्टेशन ने 'नेशनल वायस आफ ईरान' के नाम से सन 1959 से फारसी तथा अजेरी भाषाओं में प्रसारण प्रारंभ कर दिया.

1979 में जब मुसलिम सिद्धांतवादियों ने क्रांति शुरू की तो तुदेह पार्टी को सिद्धांत और कार्यनीति संबंधी कई समस्याओं का सामना करना पड़ा. रूस के साथ इस के संबंध अब इस के लिए मुसीबत बन गए क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

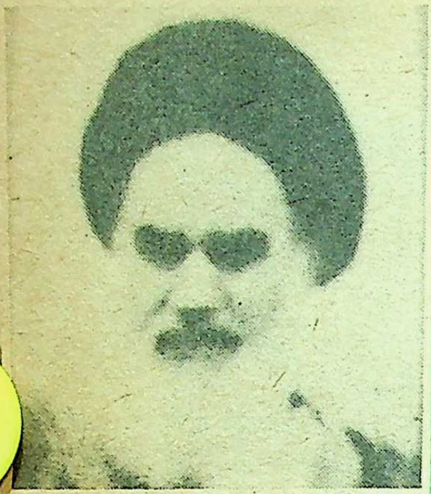

आयतुल्लाह खुमैनी

ईरान में हो रहा विद्रोह राष्ट्रीय भावना को प्रोत्साहित कर रहा था और उधर रूस नास्तिकता के पक्ष में था.

कुछ समय तक पार्टी बड़ी असमंजस की स्थिति में रही. वह यह निर्णय नहीं ले पा रही थी कि वह उभर रहे मजहबी लोगों का साथ दे या देश में छाई अव्यवस्था का लाभ उठा कर समाजवादी गणराज्य की स्थापना का प्रयास करे.

आखिर पार्टी ने आयतुल्लाह खुमैनी को गले लगाने का निर्णय लिया. तुदेह के नेता किआनारी का मत था कि वैज्ञानिक समाजवाद व इसलाम की सामाजिक विचारधारा में बहुत फर्क नहीं है. उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि तुदेह और आयतुल्लाह खुमैनी के कार्यक्रम एकदूसरे से काफी मेल खाते हैं.

मार्च, 1979 में तुदेह ने जनमत संग्रह में इसलामी गणराज्य का समर्थन किया. इस के प्रकाशनों में खुमैनी और उन के धार्मिक आंदोलन को 'क्रांति' तथा 'दलितों का दोस्त' कह कर उन की प्रशंसा की गई. तुदेह ने कहा कि उस ने जवाबी क्रांति के खतरे को दूर करने के लिए ही इसलाम का सहारा लेने का फैसला किया है.

अब तुदेह की नीति कुछ खास उद्देश्यों को प्राप्त करना, जनता तथा सत्ताधारी मुल्लाओं को उग्रवादी बनाना तथा उन उदारवादियों की निंदा करना हो गया, जो यह जानते थे कि तुदेह पार्टी ने ईरान में कम्यूनिज्म की स्थापना के लिए ही इसलामी क्रांति का सहारा लिया है तथा वह ईरान को रूस का आश्रित बनाना चाहती है.

हालांकि तुदेह ने खुमैनी के निर्णयों पर अपनी असहमति एवं अविश्वास को सार्वजनिक रूप से व्यक्त नहीं किया था, लेकिन सरकार के साथ इस के मतभेद जल्दी ही सामने आने लगे. इसी लिए अगस्त, 1979 में सरकार ने तुदेह पर प्रतिबंध लगा दिया.

सरकार के साथ तुदेह के विवाद का कारण यह था कि जिस समय कुर्द कबीले वालों के साथ सरकार का टकराव बढ़ रहा था, उस समय कम्यूनिस्ट ईरान में अल्पसंख्यकों का समर्थन कर रहे थे, तुदेह ने ईरान सरकार की इस बात के लिए भी आलोचना की कि उस ने दो महाशक्तियों के साथ संतुलित संबंध कायम कर रखे हैं और अमरीका से संबंध नहीं तोड़े हैं. साथ ही उस ने यह भी आरोप लगाया कि सरकार साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ने में असफल रही है और वह कम्यूनिस्टों व रूस का विरोध करने के लिए जनता को भड़का रही है. उस ने सरकार पर मुसलिम प्रतिक्रियावादियों, उदारवादियों तथा नववामपंथियों में गठबंधन को बढ़ावा देने का भी आरोप लगाया. उस का कहना था कि "यह गठबंधन क्रांति को उस के मूल रास्ते से हटा देगा."

इस लिए तुदेह ने देशभक्तों, प्रगतिवादियों तथा क्रांतिकारी शक्तियों का एक संयुक्त मोर्चा बनाए जाने की मांग की. तुदेह की इस मांग का रूस ने भी समर्थन किया. रूस ने ईरान की सीमा से लगे होने के कारण ईरान की सरकार पर इन मांगों को स्वीकार करने के लिए खुले तौर पर दबाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

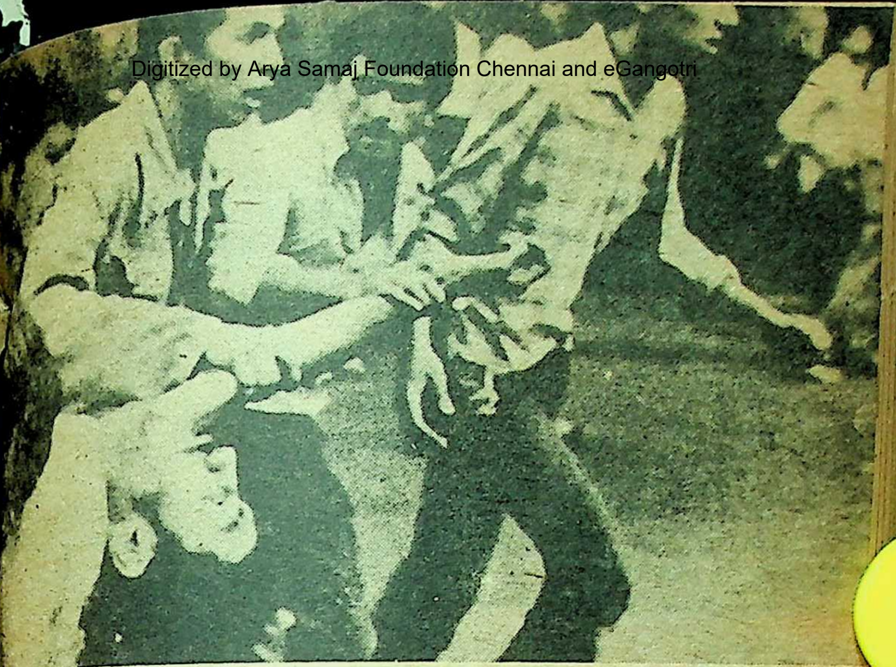

आज का ईरान : यह हिंसा क्या राजनीतिक अस्थिरता का परिचायक नहीं?

डाला और इस का परिणाम भी निकला. 2 अक्तूबर, 1979 को तुदेह पर लगाया गया प्रतिबंध हटा लिया गया तथा पार्टी का समाचारपत्र 'मरदान' पुनः प्रकाशित होने लगा.

तुदेह ने अमरीकी बंधकों के मामले का भी पूरा लाभ उठाया. इस से उसे अमरीका विरोधी प्रचार करने तथा सरकार पर अपने विचारों द्वारा दबाव डालने का अच्छा अवसर मिल गया.

1970 में ईरान में अमरीकी दूतावास पर किए गए कब्जे में तुदेह की क्या भूमिका रही, यह स्पष्ट नहीं है. फिर भी इस ने इस काररवाई का स्वागत करते हुए कहा था कि अमरीकी साजिशों का यह निर्णायक जवाब है.

तुदेह ने इस मौके का फायदा उठाते हुए अमरीका के साथ किए गए सभी समझौतों को रद्द करने, सरकार से अवांछनीय लोगों को निकालने तथा ईरान में अमरीकी प्रभुत्व को समाप्त करने की भी मांग की.

बाद की घटनाओं ने तुदेह को अपनी बात पर जोर देने के और अधिक मौके दिए. अप्रैल, 1980 में अमरीका ने अपने बंधकों को छुड़ाने का जो असफल प्रयास किया, उस से तुदेह को अपनी बात दोहराने का एक और मौका मिल गया. इस की केंद्रीय समिति ने 'अमरीकी हमले' को उस शृंखला की एक कड़ी बताया, जिस का उद्देश्य साम्राज्यवाद पर निर्भर स्वार्थसाधकों का शासन कायम करना था.

तुदेह ने ईरानियों से कहा कि अमरीका द्वारा बंधकों को छुड़ाने के लिए की गई काररवाई ईरान के लिए एक चेतावनी है. इस लिए ईरानियों को अपनी सुरक्षा के लिए साम्राज्यवाद विरोधी एक व्यापक राष्ट्रीय मंच बनाना चाहिए. इस के लिए सेना से अवांछित तत्वों को निकालना तथा सेना में क्रांति के प्रति समर्पित देशभक्त सैनिकों को प्रश्रय देना आवश्यक है.

तुदेह की गतिविधियों का केंद्र आजकल तेल क्षेत्र—विशेषकर अहवाज तेल क्षेत्र तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

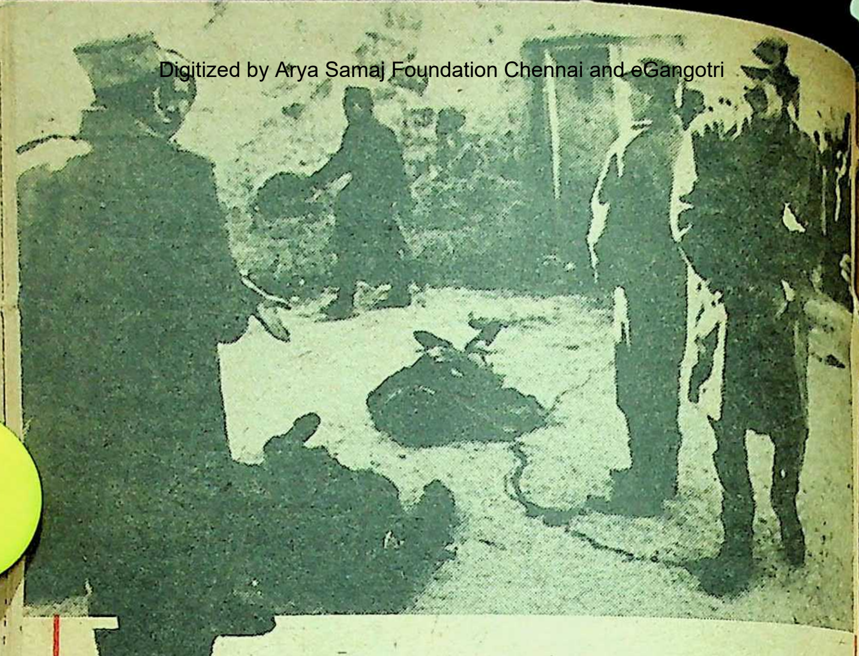

ईरान की उत्तरी सीमा पर रूसी सैनिकों का जमाव?

अबादान का तेलशोधक कारखाना है.

जनवरी, 1979 में किआनारी ने कहा था कि मजदूर लोग सिर्फ तुदेह की बात मानते हैं. हो सकता है कि यह बात बढ़ाचढ़ा कर कही गई हो. लेकिन यदि तुदेह पार्टी वास्तव में मजदूरों को संगठित करने में सफल हो गई तो भविष्य में सत्ता की लड़ाई में यह एक निर्णायक भूमिका अदा कर सकती है.

तुदेह को राष्ट्र के अल्पसंख्यकों—कुर्द, अजेरी, तुर्क तथा अरब लोगों का अच्छा समर्थन प्राप्त रहा है. देश की साढ़े तीन करोड़ जनता में से एक करोड़ 40 लाख अल्पसंख्यक हैं. इसलिए इन अल्पसंख्यकों का समर्थन प्राप्त कर के तुदेह पार्टी काफी प्रभावशाली हो सकती है.

कुर्दिश डेमोक्रेटिक पार्टी में भी कम्यूनिस्टों ने घुसपैठ कर ली है. इस ने अल्पसंख्यकों के स्वशासन तथा स्वायत्तता के अधिकार की बात का समर्थन किया है. उत्तरी ईरान में तुदेह की गतिविधियों तथा पार्टी में लोगों के भरती किए जाने के कई प्रमाण हैं. यहां अधिकतर अल्पसंख्यक रहते हैं और ये लोग सोवियत रूस के बिलकुल निकट है.

ईरान की अर्थव्यवस्था तथा प्रशासन के, महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में भी तुदेह समर्थक घुसे हुए हैं. ईरान के प्रधान मंत्री हुसेन मुसावी के हाल के एक वक्तव्य के अनुसार ईरान के कम्यूनिस्टों ने देश के महत्त्वपूर्ण उद्योगों, रेलवे तथा संचार व्यवस्थाओं को अपने प्रभाव में ले लिया है. तुदेह पार्टी जमालुद्दीन के नेतृत्व में सत्ताधारी मुल्लाओं को भी उग्रवादी बनाने में सफल रही है. जमालुद्दीन की मांग है कि रूस के साथ गहरे संबंध स्थापित किए जाएं.

तुदेह की गतिविधियों का एक और क्षेत्र भी है. क्रांति से पहले ईरान की शाही सेना में अमरीका में प्रशिक्षित 12,000 अफसर थे. ये अमरीका पर ईरान की निर्भरता के प्रतीक थे. तुदेह ने इन अफसरों को सेना से हटाने के लिए संघर्ष किया. अब इस ने सेना में भी अपने केंद्र स्थापित कर लिए हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुदेह की सफलता की क्या संभावनाएं हैं, यदि इस प्रश्न पर विचार करें तो कुछ इस प्रकार की स्थिति सामने आती है.

तुदेह ने ईरान में अपना जो प्रभाव खोया था, उसे 1980 तक पुनः प्राप्त कर लिया. इस के समाचारपत्र 'मरदान' के पाठकों की संख्या इस समय 40,000 है. 1979 मे संविधान सभा के चुनाव में तेहरान में इसे 50,000 मत मिले. मार्च 1980 के संसदीय चुनाव में इस का प्रभाव और बढ़ा और इसे 60,000 मत मिले. मतों की संख्या में यह सत्ता दल से भले ही स्पर्धा न कर सके, लेकिन यह अपनी कारवाइयां जनता के विशेष क्षेत्रों में केंद्रित किए हुए है. इस के अलावा तुदेह राजनीतिक दृष्टि से यथार्थवादी, अनुभवी तथा पूरी तरह अनुशासित पातें है.

रूसियों ने अब तक आयतुल्लाह खुमैनी की सरकार का समर्थन किया है. लेकिन चूंकि रूस को खुमैनी की सरकार की स्थिरता में संदेह है, इस लिए इस ने अपनी ईरान से लगी 1,000 मील लंबी सीमा पर अपनी गतिविधियां तेज कर दी हैं. वह अजरबेजान डेमोक्रेटिक पार्टी को पुनर्जीवित करने में सहायता दे रहा है.

इस पार्टी का ईरानी कम्यूनिस्टों से संबंध है. इस ने उन उत्तरी प्रांतों के विरोधी दलों को शरण भी दिया है, जिन पर वस्तुतः ईरान की केंद्रीय सरकार का कोई नियंत्रण नहीं है.

यह ईरान में उन उग्रवादी निर्वासितों को भी भेजता रहा है, जिन्हें रूस ने पहले अपने यहां शरण दे रखी थी. चूंकि ईरान में घुसपैठ करने वाले रूसी एजेंट उसी जाति के हैं जिस जाति के बहुत से ईरानी हैं, इस लिए ईरान की सरकार के लिए उन का पता लगाना मुशकिल है.

रूस फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के माध्यम से भी ईरान पर प्रभाव डालता है.

वह ईरान में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए ईरान से लगी अफगानिस्तान सीमा का भी इस्तेमाल करता है. वह ईरान की उत्तरी सीमा पर अपने सैनिकों को हमेशा तैयार रखता है. वहां रूस की 28 डिवीजन फौजें है. वक्त पड़ने पर वहां 14 डिवीजन फौज और लाई जा सकती है.

ईरान की पूर्वी सीमा पर अफगानिस्तान के शिनबाद स्थान पर भी रूस ने चार डिवीजन सेना रख छोड़ी है, जो वहां स्थानीय विद्रोह को दबाने की दृष्टि से बहुत अधिक है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेल समीक्षा

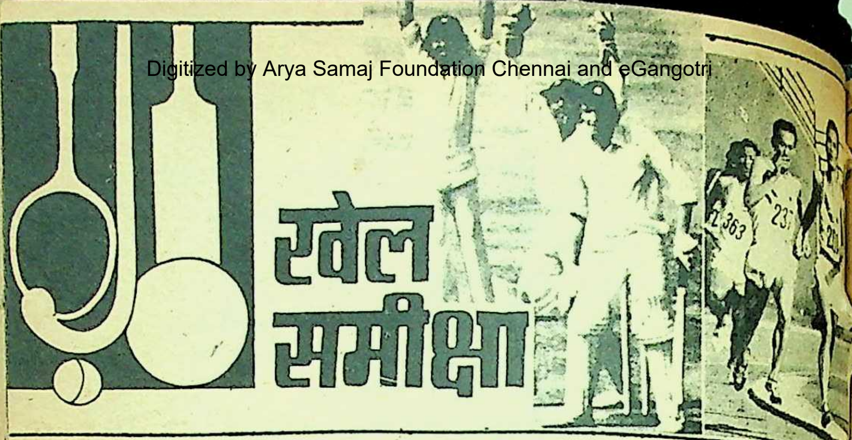

राष्ट्रमंडलीय ब्रिसबेन खेल : क्या खोया, क्या पाया ?

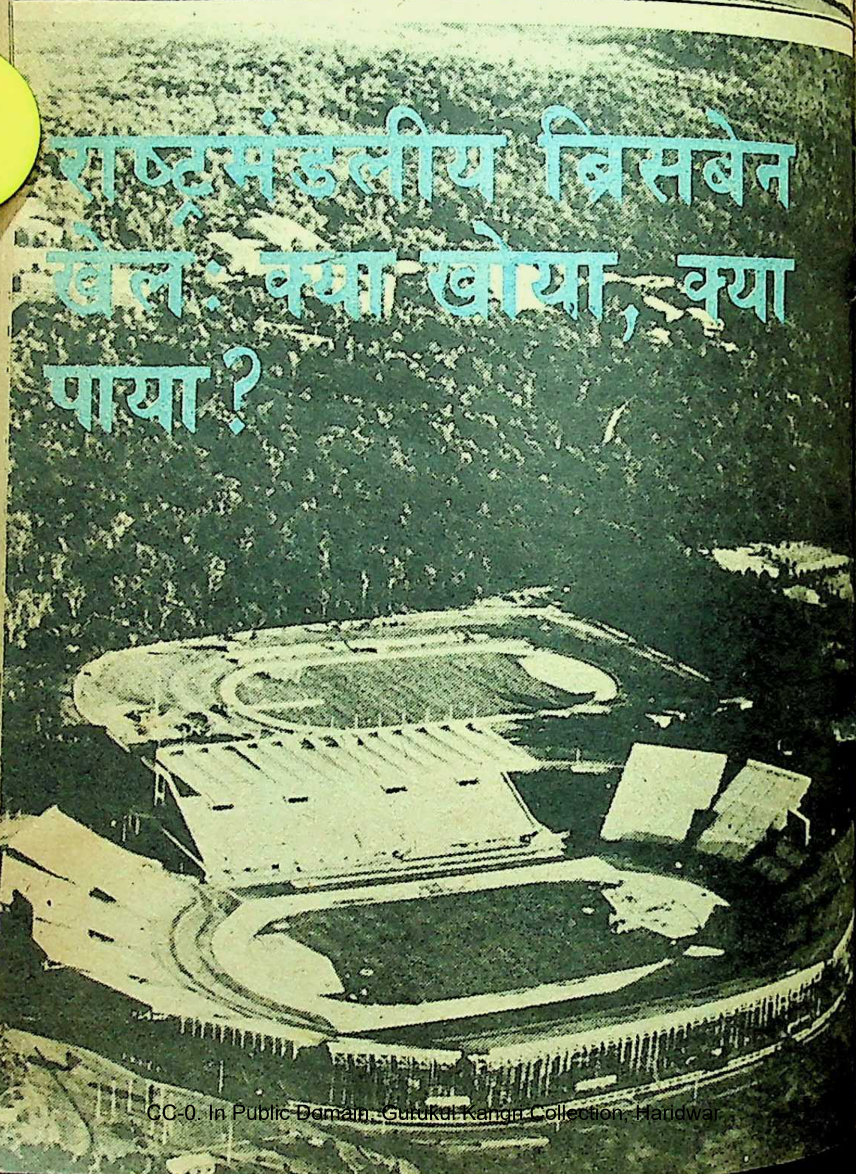

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब जब कि ब्रिसबेन (आस्ट्रेलिया) में 45 राष्ट्रमंडलीय देशों के दो हजार से ज्यादा खिलाड़ियों का 10 दिन का खेल समारोह खत्म हो गया है, इस बात का समय आ गया है कि इस खेल समारोह में भारतीय खिलाड़ियों की उपलब्धियों का आकलन कर लिया जाए.

यों तो किसी भी अंतरराष्ट्रीय मुकाबले के बाद आत्मनिरीक्षण की प्रक्रिया बेहद जरूरी हो जाती है लेकिन आगामी एशियाई खेलों के संदर्भ में यह प्रक्रिया आज की सब से बड़ी अनिवार्यता बन गई है.

ब्रिसबेन राष्ट्रमंडलीय खेलों के लिए हालांकि 58 देशों को आमंत्रित किया गया था लेकिन 45 देश ही इस में शामिल हुए. पदकों की होड़ में यह लगभग तय था कि मेजबान आस्ट्रेलिया के साथ इंगलैंड और कनाडा ही बाजी मारेंगे. पर भारत के लिए अहम सवाल यह था कि 1974 के क्राइस्ट चर्च खेलों और 1978 के एडमंटन खेलों की तुलना में उस के खिलाड़ियों को कितनी सफलता मिल पाती है.

1974 में भारत को चार स्वर्ण पदकों सहित 14 पदक मिले थे. जब कि 1978 में भारत अपने राष्ट्रमंडलीय खेलों के इतिहास में सब से ज्यादा पदक (पांच स्वर्ण, चार रजत और छः कांस्य) जीतने में सफल रहा था.

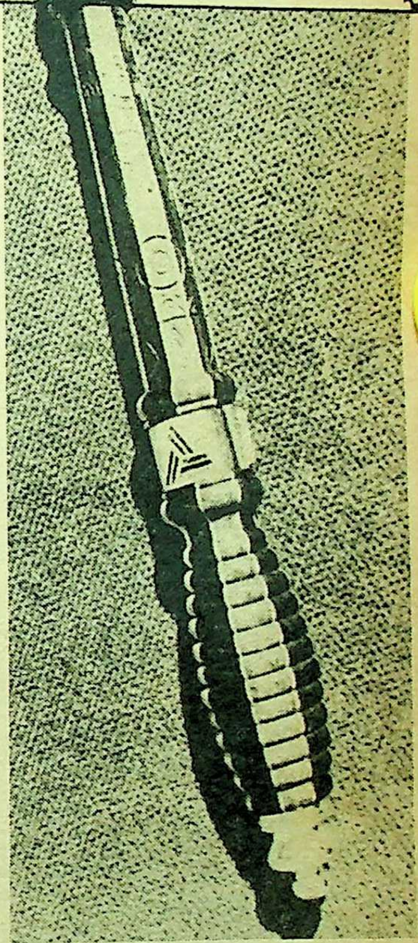

आस्ट्रेलिया की लकड़ी से बनी वह कलात्मक छड़ी जिस में रख कर खेलों के उद्घाटन समारोह के अवसर पर पढ़ा जाने वाला इंगलैंड की महारानी का संदेश इंगलैंड से ब्रिसबेन लाया गया (दाएं). कैंडलर स्पोर्ट्स कंपलैक्स (बाएं)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बार ज्यादा पदक जीतने की जो संभावनाएं व्यक्त की जा रही थीं, उस की कई वजह थीं. पहली बात यह है कि इस बार ब्रिसबेन खेलों में भारत ने सब से ज्यादा खिलाड़ी भेजे. 1974 में सिर्फ 18 खिलाड़ी भेजे गए थे. जब कि 1978 में लगभग 40 खिलाड़ी गए थे, पर इस बार 55 से ज्यादा खिलाड़ी राष्ट्रमंडलीय खेलों में शामिल हुए.

एशियाई खेलों को ध्यान में रख कर विभिन्न खिलाड़ियों को देशी और विदेशी प्रशिक्षकों द्वारा जो गहन प्रशिक्षण दिया गया था उस से भी ज्यादा पदक जीतने की आशाएं बलवती हो गई थीं. यह कहना गलत नहीं होगा कि ब्रिसबेन गया भारतीय खिलाड़ियों का दल अब तक किसी भी अंतरराष्ट्रीय खेल समारोह में शामिल होने वाले भारतीय दलों में सर्वाधिक प्रशिक्षित दल था.

लेकिन जितनी सफलता की उम्मीद इस दल से थी वह पूरी नहीं हो सकी. भारतीय ओलंपिक संघ ने कोई सवा सौ खिलाड़ियों का दल भेजने की मांग की थी. अखिल भारतीय खेलकूद परिषद ने 98 सदस्यीय दल को भेजने की सिफारिश की लेकिन शिक्षा मंत्रालय 76 सदस्यों का दल भेजने पर ही सहमत हुआ. इस दल में एथलेटिक्स के लिए सात, बैडमिंटन के लिए आठ, मुक्केबाजी के लिए छः, निशानेबाजी के लिए आठ, तैराकी और भारोत्तोलन के लिए भी आठआठ और कुश्ती के लिए 10 खिलाड़ी चुने गए थे. बाकी दल के प्रबंधक, अधिकारी व प्रशिक्षक थे. एक मालिश करने वाला व एक रसोइया भी भेजा गया था.

एथलेटिक्स में गोपाल सैनी, उषा और साबिर अली तथा निशानेबाजी में रणधीरसिंह ने टीम की रवानगी से ठीक पहले अपनी अस्वस्थता की वजह से ब्रिसबेन जाने में असमर्थता प्रकट कर दी. तैराकी में 12 वर्षीय विलक्षण प्रतिभा बूला चौधरी को बुखार हो गया. उस की जगह ब्रिसबेन गई भरोचा को भी मलेरिया ने धर दबोचा. पहलवान सतपाल और सतवीर अभ्यास के दौरान चोट खा बैठे. सैयद मोदी को फ्लू ने आ घेरा, पर इन परिस्थितियों में भी ब्रिस[illegible] खेलों में भारत ने पदक जीतने का सिल[illegible] पहले ही दिन से शुरू कर दिया.

30 सितंबर को एडिनबरा के [illegible] प्रिंस फिलिप द्वारा खेलों का विधि[illegible] उद्घाटन किए जाने के बाद पहली अक्[illegible] को पहले दिन के मुकाबलों में दो रजत पद[illegible] जीत कर भारत पदक तालिका में तीसरे स्थान पर पहुंच गया लेकिन इस के बाद वह [illegible] स्थान पर पहुंच गया.

ब्रिसबेन खेल समारोह में हुए कुल [illegible] खेलों में से तीन– साइकिल दौड़, तीरंदा[illegible] और बाल्स में भारत ने हिस्सा नहीं लिया. कु[illegible] 710 पदकों के लिए हुई होड़ में भारत ने [illegible] से ज्यादा सफलता कुश्ती में प्राप्त की. [illegible] एक ऐसा खेल है जो राष्ट्रमंडलीय खेलों [illegible] अब तक भारत के लिए सोने की खान सावि[illegible] हुआ है.

1930 में शुरू हुए राष्ट्रमंडलीय खे[illegible] में भारत ने पहली बार 1934 में लंदन में हु[illegible] खेलों में हिस्सा लिया था. तब से ले कर [illegible] तक कुल मिले 24 स्वर्णपदकों में से 20 भा[illegible] को कुश्ती में मिले हैं. ब्रिसबेन में यह कहा[illegible] दोहराई जाने से भला कैसे बच सकती [illegible]

इस बार 10 भारतीय पहलवानों ने [illegible] स्वर्ण, चार रजत और एक कांस्य पदक [illegible] कुल नौ पदक जुटाए. कुल आठ पहलवा[illegible] फाइनल में पहुंचे जिन में से 48 किलोग्राम व[illegible] में रामचंद्र सारंग, 52 किलोग्राम वर्ग [illegible] महावीरसिंह, 68 किलोग्राम वर्ग [illegible] जगविंदरसिंह और 72 किलोग्राम [illegible] राजेंद्रसिंह पहले नंबर पर रहे. उंगली में चोट लगने की वजह से 100 किलोग्राम वर्ग में सतपाल एक हाथ से लड़ते हुए कनाडा के रिचर्ड से हारा.

57 किलोग्राम वर्ग में अशोक कु[illegible] और इंगलैंड के ब्रायन का मुकाबला का[illegible] कांटे का रहा लेकिन अशोक को 4-6 के अं[illegible] के आधार पर पराजित होना पड़ा. [illegible] कनाडियन जजों द्वारा लिए गए इस फैसले [illegible] भारतीय अधिकारी संतुष्ट नजर नहीं आ[illegible] 90 किलोग्राम वर्ग में राजेंद्रसिंह ने रजत प[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

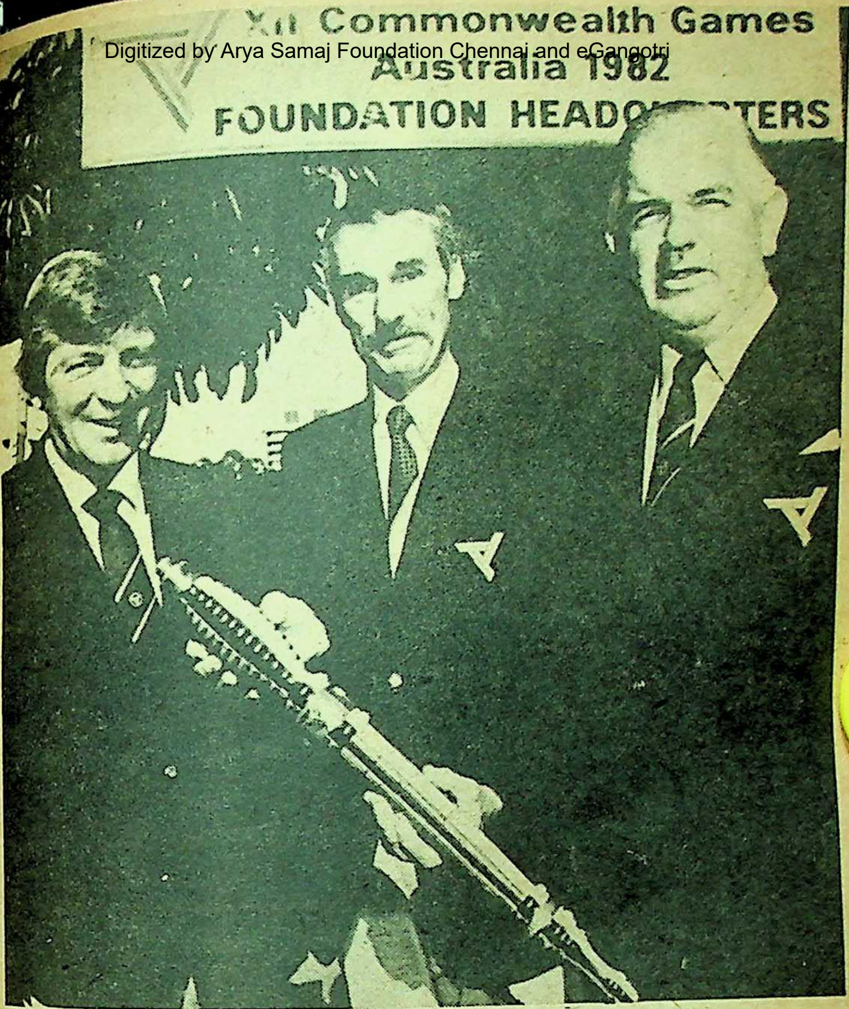

बारहवें राष्ट्रमंडलीय खेल समिति के (बाएं से) प्रधान प्रबंधक डान ह्वाइटहेड, उद्घाटन समिति के विभागीय प्रबंधक नोएल ड्यूग्योन् तथा खेल समिति के अध्यक्ष सर एडवर्ड विलियम्स.

जीता, कांस्य पदक 82 किलोग्राम वर्ग में जयप्रकाश को मिला. 62 किलोग्राम वर्ग में सतवीर ऐसा एकमात्र पहलवान रहा जिसे चोट की वजह से कोई पदक नहीं मिल सका.

टीम खिताब मामूली से अंतर से गंवाने के बावजूद भारतीय पहलवानों का प्रदर्शन राष्ट्रमंडलीय खेलों में अब तक के प्रदर्शनों से सर्वश्रेष्ठ रहा.

कुश्ती के अलावा भारत की एक मात्र सफलता बैडमिंटन में रही. टीम मुकाबलों में भारतीय टीम सेमीफाइनल तक नहीं पहुंच सकी. हालांकि उसे चौथे स्थान की वरीयता दी गई थी. ऐसी ही वरीयता 23 वर्षीय सैयद मौदी को व्यक्तिगत मुकाबलों में मिली थी.

एक समय ऐसा भी आया था जब फ्लू से पीड़ित मोदी ने प्रतियोगिता से हटने का फैसला कर लिया था. अगर उन्होंने ऐसा किया होता तो 1978 के एडमंटन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रमंडलीय खेलों में स्वर्णपदक जीत कर प्रकाश पादुकोन ने जो परंपरा शुरू की थी, वह अधूरी रह जाती.

लाइसेंसधारी खिलाड़ी होने की वजह से प्रकाश पादुकोन इस बार भारत की ओर से मैदान में नहीं उतर सका. लिहाजा सैयद मौदी पर एक अहम जिम्मेदारी आ पड़ी जिसे उस ने फाइनल में 75 मिनट के संघर्ष में इंगलैंड के निक वेट्स को (7-15, 15-6, 15-5 से) हरा कर बखूबी निभाया.

महिला एकल और युगल में अमि घिया और अमिता कुलकर्णी की तमाम कोशिशों ने क्वार्टर फाइनल में पहुंचतेपहुंचते ही दम तोड़ दिया.

भारोत्तोलन में 1978 में करुणाकरण ने स्वर्ण और तमिल सेल्वन ने रजत पदक जीता था. मुक्केबाजी में वीरेंद्रसिंह थापा को कांस्य पदक मिल पाया था. मुक्केबाजी में हिम हैन और भारोत्तोलन में लुबेमीर तोदारोव ग्रादिनारोव का प्रशिक्षण इस बार भी कोई खास करामात नहीं दिखा सका. मुक्केबाजी में तो यथा स्थिति ही रही. वेल्टरवेट में सिर्फ वेनंदा मछैया ही कांस्य पदक जीत सका.

लाइट फ्लाई वेट (48 किलोग्राम) में वीरेंद्रसिंह थापा पहले ही दौर में मात खा गया. बाकी मुक्केबाजो की भी वही हालत रही. भारतीय मुक्केबाज या तो पहले दौर में पिटे या फिर क्वार्टर फाइनल तक पहुंच कर अपने से कहीं ज्यादा तगड़े प्रतिद्वंद्वियों से परास्त हुए.

भारोत्तोलन में आस्ट्रेलिया, वेल्स और इंगलैंड की चुनौती के बीच भारत ने तीन रजत पदक जीते. तमिल सेल्वन (60 किलोग्राम वर्ग), विजयकुमार सतपथी (56 किलोग्राम वर्ग) व गुरुनाथन कोवेया (52 किलो वर्ग) ने ये पदक दिलाए.

एक रजत और एक कांस्य पदक भारत को निशानेबाजी में मिला. रेपिड फायर पिस्टल में बंबई के व्यवसायी शरद चौहान

40 हेक्टेयर क्षेत्र में बने कैंडलर स्पोर्टस कंपलैक्स का हवाई जहाज से लिया गया चित्र जिस में बैडमिंटन, तैराकी भारोत्तलन साइकिलिंग, टेबल टेनिस के मुकाबले हुए. तीन हजार गाडियां खड़ी कर सकने की क्षमता वाले इस खेल कंपलैक्स में बस स्टैंड, झीलें और कई पिकनिक स्थल हैं.

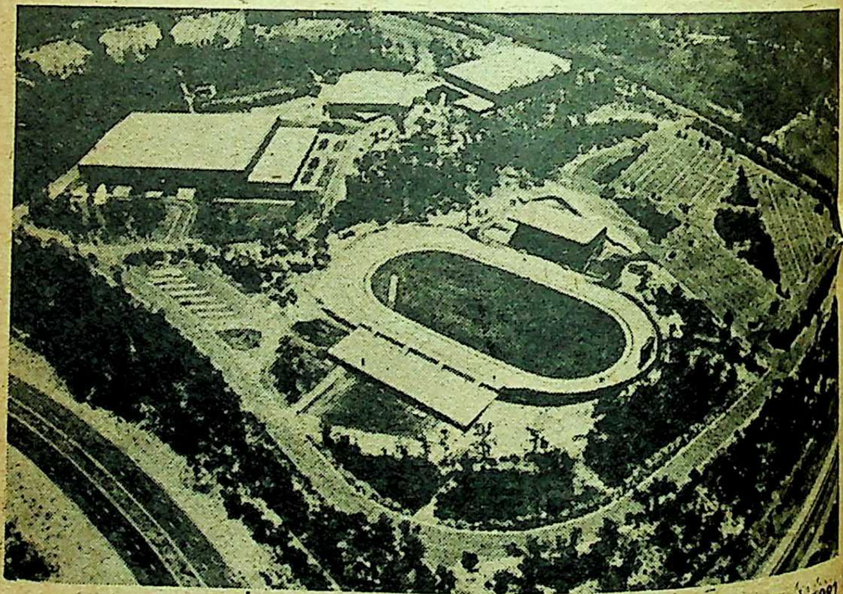

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

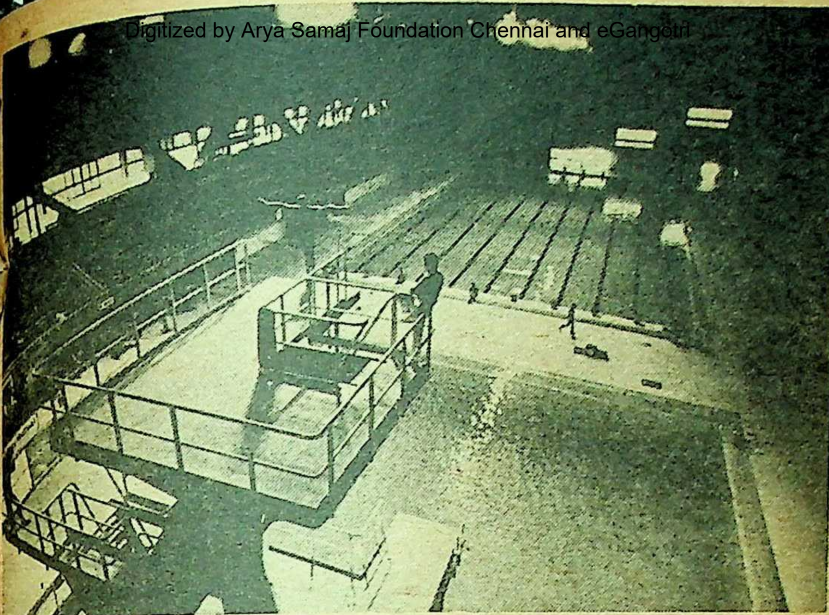

कैंडलर स्पोर्ट्स के भीतर का दृश्य. यहां तैराकी और गोताखोरी के मुकाबले हुए.

और विज को 1151 अंक प्राप्त करने पर कांस्य पदक मिला. उन में व विजेता जोड़ी में नौ अंकों का फर्क रहा. अमर चौहान एक लक्ष्य न चूक जाते तो स्वर्णपदक पा सकते थे. सेंटर फायर में सीमा सुरक्षा बल के अधिकारी मोहिंदरलाल और अशोक पंडित को 1138 अंक पाने पर रजत पदक मिला.

एथलेटिक और तैराकी के किसी भी मुकाबले में भारतीय खिलाड़ी क्वालीफाइंग स्तर तक नहीं पहुंच सके. पांच हजार मीटर की दौड़ में नया राष्ट्रीय रिकार्ड बनाने के बावजूद राजकुमार 10वां स्थान ही पा सका. बाकी एथलीटों की इस से भी बुरी हालत हुई.

सितंबर के परीक्षण खेलों में नए राष्ट्रीय रिकार्ड बनाने वाले किसी भी तैराक को सफलता नहीं मिल सकी. भारत ने गोताखोरी को छोड़ कर तैराकी की तमाम स्पर्धाओं में हिस्सा लिया था. लेकिन उस का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन केवल महिलाओं की 4 100 मीटर रिले में रहा. जहां उसे पांचवां स्थान मिल सका, गीता- आनंद, खजानसिंह, पर्सिस मुक्ता मदान, संजीव चक्रवर्ती, अनिता सूद जैसे नाम जो परीक्षण खेलों में यकायक चमके थे, ब्रिसबेन में नहीं चमक सके.

ब्रिसबेन राष्ट्रमंडलीय खेलों में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन कुश्ती और बैडमिंटन को छोड़ कर बिलकुल सामान्य रहा है. फिर भी एशियाई खेलों में ब्रिसबेन से बेहतर सफलता की जो संभावना नजर आ रही है उस के मूल में सब से बड़ी वजह यह है कि राष्ट्रमंडलीय खेलों में आस्ट्रेलिया, इंगलैंड, कनाडा, स्काटलैंड व न्यूजीलैंड की तरफ से जिस कड़ी प्रतियोगिता का सामना भारत को करना पड़ा था वैसी स्थिति एशियाई खेलों में पैदा नहीं हो सकेगी क्योंकि वे तमाम देश एशियाई खेलों की पदक तालिका में भागीदार नहीं बनेंगे. फिर भी इतने ही मजबूत जापान, चीन व कोरिया के खिलाड़ियों का मुकाबला तो भारतीय खिलाड़ियों को करना ही होगा और यह स्थिति भारत के पदक तालिका में दूसरे या तीसरे स्थान पर पहुंचने के लिए सब से बड़ी बाधा है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(पृष्ठ 34 से आगे)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन पंखों के [illegible] तो पंख के ऊपर रास्ता लंबा हो जाने से, वायु की गति बढ़ जाती है और उस का दाब कम हो जाता है. इस के विपरीत नीचे की सतह पर, रास्ता कम होने से, वायु की गति घट जाती है और उस का दाब बढ़ जाता है. ऊपरी, निचली सतहों में उत्पन्न दाब का यह अंतर जब संपूर्ण पंख के क्षेत्रफल पर कार्य करता है, तो पंखों पर एक परिणामी उत्थापन बल उत्पन्न हो जाता है.

पंख यदि अपने भार से ज्यादा, उत्थापन बल उत्पन्न कर लें तो दो पंखों के बीच में एक धड़ जोड़ कर उस धड़ में या पंखों के अंदर ही या किसी अन्य प्रकार से ये अतिरिक्त भार उठा कर ले जाने में समर्थ हो जाते हैं. इस उत्थापन बल के लिए यह आवश्यक है कि ये पंख तेजी से वायु में गति करें.

इस के लिए इन पंखों में पंखे लगा दिए जाते हैं. जब ये पंखे वायु में गति करते हैं तो इस उत्थापन बल के साथसाथ कर्षण बल भी उत्पन्न होता है. यात्रा के लिए इंजन यदि किसी प्रकार वायुयान को गति प्रदान कर सके, तो अपनी संरचना के कारण पंखों पर अपनेआप ही उत्थापन बल उत्पन्न हो जाता है और इस प्रकार वायुयान वायु में उड़ जाता है.

वायु में उड़ने के लिए आवश्यक उत्थापन बल, वायु की गति के साथ बढ़ जाता है. इसी प्रकार कर्षण बल भी वायु की गति के साथ बढ़ता है. वायु की गति के साथ बलों का बढ़ना 'आक्रमण कोण' पर भी निर्भर करता है. इस आक्रमण कोण के एक सीमा तक बढ़ने पर, उत्थापन बल बढ़ जाता है. परंतु आक्रमण कोण के चरम सीमा पर पहुंचने के बाद यह बल एकदम तेजी से कम हो जाता है. इस कारण उत्थापन बल बढ़ाने के लिए भी, इस कोण को एक सीमा के बाद बढ़ाया नहीं जा सकता. इसी लिए किसी कारण इस का बढ़ जाना, सुरक्षा के लिए खतरनाक हो सकता है. आधुनिक वायुयानों में, जब यह कोण एक सीमा से आगे बढ़ता है, तो पंख चालक को चेतावनी देना आरंभ कर देते हैं. यह चेतावनी ध्वनि या प्रकाश संकेत के रूप में होती है.

वायुयान में प्राप्त होने वाली निर्धारित सुविधाएं अतिरिक्त यात्रियों को नहीं मिल पातीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक वायुयान अपनी बनावट व सामर्थ्य के अनुसार, एक निश्चित भार को ले कर ही यात्रा कर सकता है. इस कारण उत्थापन बल एक निश्चित गति पर अपनेआप ही इतना हो जाता है कि वायुयान को ऊपर की तरफ घुमा कर वायु में ले जाया जा सकता है. इस निश्चित गति में वायु पट्टी की समुद्र तल से ऊंचाई, वायु का तापक्रम तथा वायु की गति के अनुसार थोड़ाबहुत परिवर्तन अवश्य होता है. इसी कारण यात्रा प्रारंभ करने से पहले, चालक को इस सारी जानकारी के साथसाथ वायु पट्टी की लंबाई आदि के बारे में भी जानकारी प्रदान की जाती है.

वायुयान जब अपने पहियों पर, वायु पट्टी के एक सिरे पर उड़ान के लिए तैयार खड़ा होता है तो उस के पंखों का आक्रमण कोण कोई ज्यादा नहीं होता. मात्र इस आक्रमण कोण के सहारे आवश्यक उत्थापन बल प्राप्त करने के लिए, बहुत लंबी वायु पट्टी की आवश्यकता होती है. छोटे और हलके वायुयानों को छोड़ कर सभी भारी-वायुयान (जिन्हें ज्यादा उत्थापन बल प्राप्त करना होता है), इस आक्रमण कोण को अस्थायी रूप से बढ़ाने का प्रयास करते हैं.

इस प्रयास के लिए वायुयान कुछ सतहों का उपयोग करता है जिन्हें 'स्लाट,' 'फ्लेप्स' आदि नामों से पुकारा जाता है. इन के उपयोग से पंख का आक्रमण कोण और उत्थापन बल बढ़ जाता है. इन सतहों में से कुछ सतहें कभीकभी पंख के अगले किनारों की तरफ किंतु अधिकांशतः पंख के पिछले किनारों की तरफ अलग होने वाली होती हैं. इन को आगेपीछे निकाल कर, नीचे कर के या झुका कर आक्रमण कोण में वृद्धि कर ली जाती है. इस से उत्थापन बल और कर्षण बल दोनों में वृद्धि हो जाती है.

यात्रा का प्रारंभ

यात्रा प्रारंभ करने पर वायु पट्टी पर दौड़ते समय ये सतहें निश्चित कर दी जाती हैं. ये सतहें तब तक अपने स्थान पर पुनः वापस नहीं लाई जातीं, जब तक कि वायुयान एक सुनिश्चित गति पर वायु में नहीं उड़ने लगता. जब गति इतनी हो जाती है कि वायुयान बिना इन की सहायता के अपनी उड़ानें बनाए रख सकता है, तो चालक इन्हें वापस खींच कर इन के पूर्व निर्धारित स्थान पर पहुंचा देता है. ऐसा करते ही उत्थापन बल और कर्षण बल दोनों घट जाते हैं. कर्षण बल घटने से वायुयान और तेजी से गति प्राप्त कर, घटे उत्थापन बल की पूर्ति करने में जुट जाता है.

वायुयान जब अपनी यात्रा प्रारंभ करता है, तो उस का भार अधिकतम होता है. जैसेजैसे रास्ता कटता जाता है, वायुयान का ईंधन घटता जाता है और वायुयान हलका होता जाता है. यात्रा प्रारंभ करते समय, निश्चित लंबाई वाली वायु पट्टियों से वे ही वायुयान उड़ते हैं जिन के इंजन और जिन की संरचना इस प्रकार की होती है कि वे इसी लंबाई के अंदर वह गति प्राप्त कर लेते हैं जिस पर वायुयान वायु पट्टी से उड़ कर वायु में आ सकता है. जैसे ही चालक देखता है कि वायुयान निर्धारित गति पा चुका है, वह पूंछ पर स्थित, एलिवेटर नाम की सतह को, अपने चालक कक्ष में स्थित एक स्टिक द्वारा थोड़ा सा उठा देता है. इस से एलिवेटर का आक्रमण कोण कम हो जाता है तथा उस पर उत्थापन बल भी कम हो जाता है और विमान की पूंछ नीचे तथा नाक ऊपर की तरफ हो जाती है. इस प्रकार अपने गुरुत्वकेंद्र के प्रति एक कोण पर घूम कर वायुयान वायु में यात्रा प्रारंभ कर देता है.

भार सीमा

इंजन के प्रणोद बल के, इस समय उत्पन्न हो रहे कर्षण बल और वायुयान के भार के कोणीय भाग से ज्यादा होने पर, वायुयान की गति में वृद्धि होती है. इस समय पंखों द्वारा प्राप्त उत्थापन बल वायुयान के भार से थोड़ा कम भी रखा जा सकता है क्योंकि वायुयान के भार के शेष भाग को इंजन का प्रणोद बल संभालता है. इस कोण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

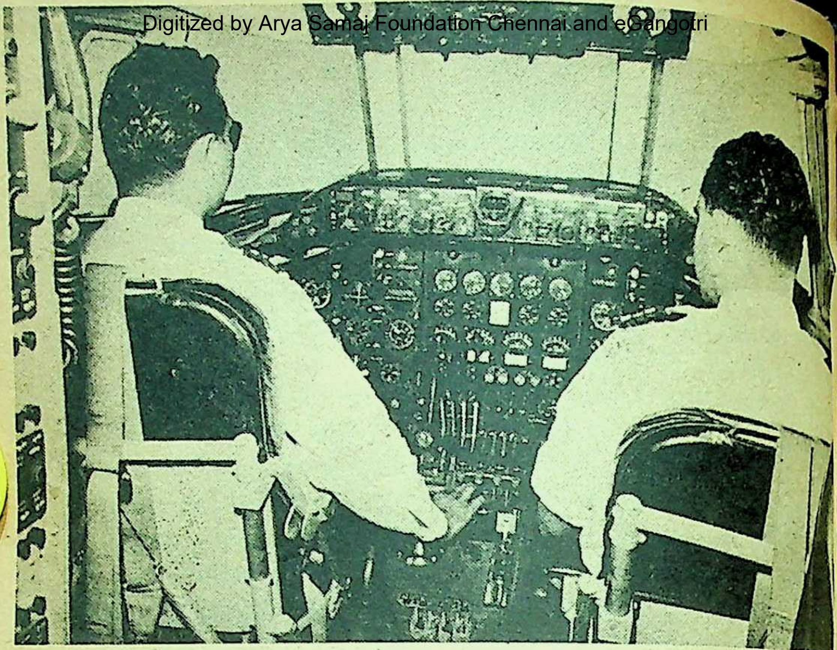

संचालन कक्ष: विमान चालक यहां उपलब्ध अनेक उपरकरणों की सहायता से विमान को दुर्घटनाग्रस्त होने से बचाने की कोशिश करता है.

पर उपलब्ध अतिरिक्त प्रणोद बल ही वायुयान को ऊपर ले जाता है.

यदि वायुयान का भार, निर्धारित उच्चतम भार से अधिक है और चालक आवश्यक उत्थापन बल से कम उत्थापन बल पर ही वायु पट्टी छोड़ देता है, तो हो सकता है कि वायुयान अपनी यात्रा पर निकल ही न सके. वायुयान को कोण पर हलके से घुमाने पर वायुयान ऊपर की तरफ उड़ने का प्रयास करता है किंतु यदि उत्थापन बल भार नहीं संभाल पाता, तो जल्द ही वह पुनः वायु पट्टी पर आ जाता है. इस समय वायु पट्टी की लंबाई भी इतनी शेष नहीं रह जाती कि वायुयान को वायु पट्टी में ही रोका जा सके. प्रारंभ में कर्षण बल ज्यादा होता है और यात्रा का कोण कर्षण से ज्यादा प्रणोद बल पर निर्भर करता है. इसी कारण प्रारंभ में उत्थापन बल इतना अवश्य होना चाहिए कि वायु के वेग में अचानक परिवर्तन आने के कारण यह कोण यदि कम भी हो जाए तो भी वायुयान वायु में टिका रहे. सीमा से अधिक भार ले कर उड़ने वाला वायुयान, निर्धारित वायु पट्टी छोड़ने वाली गति पर, इतना उत्थापन बल उत्पन्न नहीं करता कि वह सकुशल यात्रा पर निकल सके. वास्तव में अधिक भार वाला वायुयान लंबाई में उड़ान के लिए वायु पट्टी पर निर्धारित गति प्राप्त नहीं कर पाता. इस समय इंजन के पास इतना अतिरिक्त प्रणोद बल भी नहीं होता कि वह उत्थापन बल की कुछ ज्यादा सहायता कर सके. इस प्रकार यहां सीमा से अधिक भार ले कर उड़ने के प्रयास में दुर्घटना वायु पट्टी पर या उस के आसपास ही हो सकती है.

इस सब के बाद भी यदि वायु पट्टी पर परिस्थितियां अनुकूल हैं और चालक को वायुयान के अतिरिक्त भार के बारे में पता है, तो वह थोड़ी सी गति बढ़ा कर वायु पट्टी छोड़ सकता है. साधारणतया वायु पट्टी की इतनी लंबाई, अतिरिक्त रूप से उपलब्ध होती है. इस के बाद भी चालक को आने वाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाधाओं (भवन आदि) के बारे में जानकारी होना आवश्यक होती है. उन बाधाओं तक पहुंचने से पहले ही यह आवश्यक है कि वायुयान की ऊंचाई उन्हें पार करने लायक हो जाए. यदि ऐसा नहीं होता है तो वायुयान की टकरा कर भी दुर्घटना हो सकती है.

इसी प्रकार इस स्थिति में मौसम का प्रभाव भी निर्णायक सिद्ध हो सकता है. फिसलन वाली वायु पट्टी– चाहे वह पानी, बर्फ आदि किसी भी कारण से फिसलन वाली हो गई हो, वायुयान को न तो तुरंत गति प्रदान करने देती है और न उतरते समय उस को ब्रेक लगा कर सरलता से रुकने ही देती है. इस प्रकार की कम घर्षण वाली वायु पट्टी से उड़ते समय या उस पर उतरते समय वैसे भी ज्यादा लंबी वायु पट्टी की आवश्यकता पड़ती है. भार की सीमा बढ़ जाने पर वायु पट्टी की यह लंबाई और भी बढ़ जाती है. वायु पट्टी की आवश्यक लंबाई यदि वायु पट्टी की निर्धारित लंबाई से ज्यादा हो जाती है तो यह वायुयान के दुर्घटनाग्रस्त होने में सहायक हो सकती है.

उड़ान भरते समय और उतरते समय, वायुयान अपनी श्रेष्ठ क्षमता पर कार्य करता है. इस क्षमता में कमी आने पर, परिस्थितियां विपरीत हो जाने पर या चालक की थोड़ी सी असावधानी पर भी दुर्घटना हो सकती है. इस प्रकार वायुयान में ज्यादा भार होना या उस की उच्चतम भार की सीमा का उल्लंघन करना अत्यंत खतरनाक हो सकता है.

भार का वितरण

जैसा कि नाव में भार की सीमा के अलावा, भार का उचित वितरण यानी कि भार को इधरउधर रखना भी आवश्यक होता है, वैसा ही वायुयान की सकुशल यात्रा के लिए भी भार का उचित वितरण आवश्यक होता है. वायुयान में यंत्रों, यात्री और उपयोग के सामान का वितरण इस प्रकार किया जाता है कि अपने उच्चतम भार की सीमा पर भी, वायुयान का गुरुत्वकेंद्र ठीक ही रहता है. इस स्थिति में ही वायुयान की उड़ान ठीक रहती है. अब वायुयान पर यदि कोई बाह्यबल लगता है जो उस की इस स्थिति को बदलने का प्रयास करता है तो वायुयान स्वयं, उस बल के विपरीत, घूर्णबल उत्पन्न करता है जो उसे अपनी पूर्व स्थिति में वापस लाने का प्रयास करता है.

यदि वायुयान में भार का वितरण गलत ढंग से हुआ है और गुरुत्वकेंद्र दी हुई सीमाओं (साधारणतया गुरुत्वकेंद्र की सीमा इतनी होती है कि साधारण परिस्थितियों में इसे बनाए रखने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती.) के अंदर नहीं है तो वायुयान की स्थिति गड़बड़ा सकती है. अब अगर चालक वायुयान की नाक को ऊपर उठाने का प्रयास करे तो हो सकता है कि वायुयान की नाक ऊपर उठती ही चली जाए और वह दुर्घटनाग्रस्त हो जाए. इस प्रकार वायुयान में भार का सही वितरण होना आवश्यक होता है.

समतल उड़ान

वायु में पृथ्वी के समानांतर उड़ता हुआ वायुयान तभी संतुलन में रहता है जब उस पर लगने वाले बल संतुलन में होते हैं. इस स्थिति में वायुयान के गुरुत्वकेंद्र के प्रति कोई परिणामी घूर्ण या बल कार्य नहीं करता. उत्थान बल, भार के बराबर और प्रणोद बल, कर्षण बल के बराबर होता है. इन बलों के द्वारा उत्पन्न घूर्णबल, एकदूसरे के विपरीत और बराबर होते हैं. इस रूप में वायुयान, समतल में अपनी संतुलित उड़ान भरता है.

इन बलों में परिवर्तन होने से विमान असंतुलित हो जाता है. इस स्थिति में वायुयान ऊपरनीचे, अगलबगल कहीं भी जा सकता है. इस असंतुलन को नियंत्रित करने के लिए वायुयान में नियंत्रण सतहें होती हैं. ये सतहें भी तभी तक कार्य कर पाती हैं जब तक इन के द्वारा उत्पन्न बल, वायुयान को नियंत्रण में रख सकता है. इस के लिए आवश्यक है कि वायुयान का गुरुत्वकेंद्र अपनी सीमाओं के अंदर बना रहे. भारी तूफान या बवंडर ऐसी स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं जब नियंत्रण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

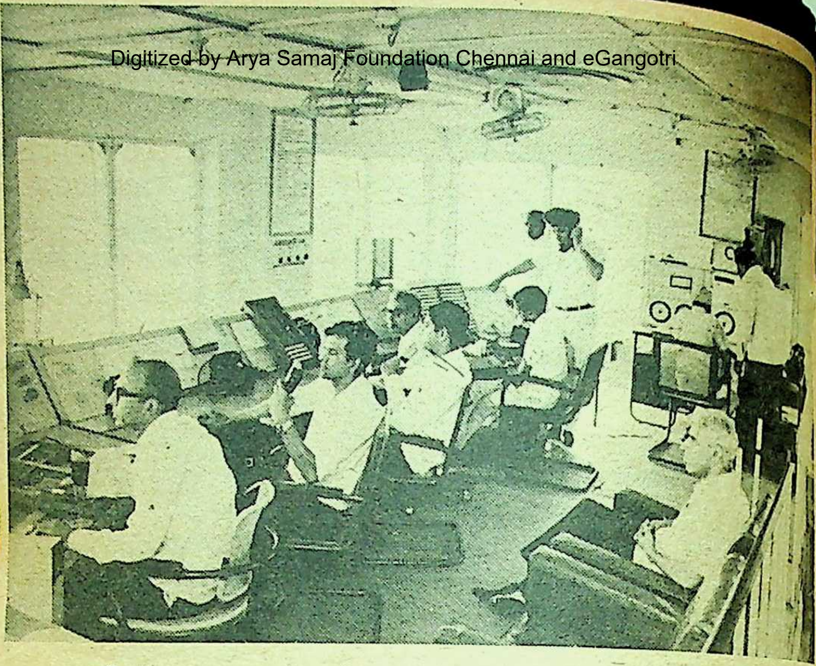

वायुयान नियंत्रण कक्ष: हवाई अड्डेपर उतरने से पहले, कुछ किलोमीटर से ही वायुयान पूरी तरह से यहीं से नियंत्रित किया जाने लगता है.

सतहें वायुयान पर नियंत्रण नहीं रख पातीं. यात्रा के दौरान ईंधन खर्च होने से, सवारियों के चलनेफिरने से गुरुत्वकेंद्र की स्थिति में लगातार परिवर्तन होता रहता है. इसी कारण पूरी यात्रा में चालक द्वारा या स्वचालित यंत्रों द्वारा वायुयान को लगातार संतुलन में बनाए रखना पड़ता है.

वायुयान पर लगने वाले बलों में इच्छानुसार परिवर्तन कर के वायुयान को नियंत्रित किया जाता है या इच्छानुसार उसे उड़ाया जाता है. नियंत्रण सतहों जैसे एलिवेटर, राडार, एनिराम आदि की सहायता से, वायुयान के अक्षों में परिवर्तन कर के उसे इच्छित दिशा में लाया जा सकता है. इसी प्रकार वायुयान को कलाबाजियां दिलाई जा सकती हैं.

लाभदायक स्थिति

वायुयान के पंखों के एक निश्चित आक्रमण कोण पर ही कर्षण बल और उत्थापन बल का अनुपात इस से कम होता है. प्रयास यह रहता है कि अधिकांश यात्रा ईसी कोण पर ही हो. इसी कारण पंख, धड़ से प्रायः इसी कोण के आसपास ही जुड़े होते हैं. वायुयान के इस स्थिति में यात्रा करने पर प्रणोद बल की कम से कम आवश्यकता होती है. इस प्रकार ईंधन भी कम से कम खर्च होता है. आर्थिक रूप से यह लाभदायक स्थिति होती है. इसी आधार पर वायुयान की समतल यात्रा की ऊंचाई और उस की गति निश्चित की जाती है.

बढ़ा हुआ भार ज्यादा प्रणोद बल की मांग करता है, क्योंकि अपनी निर्धारित गति पर यात्रा करने के लिए, उसे ज्यादा आक्रमण कोण की आवश्यकता पड़ती है. इस प्रकार कर्षण बल बढ़ जाता है. गति बढ़ा कर यात्रा करने पर भी कर्षण बल की उत्थान बल के अनुपात में वृद्धि हो जाती है. इंजन भी इस स्थिति में अपनी श्रेष्ठ क्षमता पर कार्य नहीं करता. अतः बढ़ा हुआ भार आर्थिक रूप से भी महंगा पड़ता है. इस के बाद भी वास्तविक आर्थिक हानिलाभ की गणना जटिल है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य अनेक बातों पर निर्भर करती है.

मार्ग निर्धारण और वापसी

वायुयान उड़ान के समय अपना मार्ग निर्धारण, अपने अंदर स्थित यंत्रों, नियंत्रण मीनारों व कक्षों से प्राप्त होने वाले निर्देशों व संकेतों के सहारे करता है. भटका हुआ वायुयान असुरक्षित होता है. यह भटकन वायुयान के भीतर स्थित, यंत्रों में खराबी के कारण भी हो सकती है. वायुयान इस स्थिति में लंबे समय तक वायु में टिका भी नहीं रह सकता. ईंधन की समाप्ति पर उसे नीचे उतरना आवश्यक हो जाता है. वह नीचे भी जहां चाहे वहां नहीं उतर सकता. उसे वायु पट्टी की आवश्यकता होती है.

ये वायु पट्टियां भी कुछ निर्धारित स्थानों पर ही होती हैं. इन की लंबाई भी स्थानस्थान पर बदलती रहती है. इस कारण प्रत्येक वायुयान प्रत्येक वायु पट्टी पर नहीं उतर सकता. उतरने के समय वायुयान अपनी फ्लेप्स का भी प्रयोग करता है. ये फ्लेप्स वायुयान को, वायु पट्टी के छूते समय तक, गति घटाने में सहायता करते हैं. इन की सहायता से वायुयान कम से कम गति पर भी वायु में टिका रहता है. किंतु यदि वायुयान का भार, उतरते समय भी निर्धारित उच्चतम भार से अधिक है तो उस के उतरने की गति बढ़ जाती है और वायुयान ज्यादा गति से वायु पट्टी को छूता है और रुकने के लिए उसे निर्धारित से ज्यादा लंबी वायु पट्टी की आवश्यकता पड़ती है. बढ़ी गति और लंबी वायु पट्टी दोनों ही सुरक्षा के लिए घातक हो जाते हैं.

वायुयान एकदम से नीचे न आ जाए इस के लिए सावधानीपूर्वक न्यूनतम गति बनाए रखनी पड़ती है. इंजन खराब होना या अन्य कोई मुसीबत आ जाने पर भी वायुयान वायु में रोक कर ठीक नहीं किया जा सकता. सुधारने के लिए उसे नीचे उतारना आवश्यक हो जाता है. इसी कारण वायुयान में सुरक्षा के साधन भी जुटाए जाते हैं.

वायु में ऊंचा उड़ता वायुयान, वहां उपलब्ध वायु से अपने इंजनों के लिए आवश्यक वायु की पूर्ति कर लेता है किंतु यात्रियों, चालकों के लिए यह वायु काम की नहीं होती. इस वायु का दाब और तापक्रम कम होता है. जो मानव की सहनशक्ति के बाहर होता है. इस कारण यात्री और चालक कक्ष में कृत्रिम वातावरण बनाया जाता है, जो प्रायः वायुमंडल की सामान्य ऊंचाई पर उपलब्ध वातावरण की तरह होता है.

साधारण उड़ान में यह सुविधा अतिरिक्त यात्रियों सहित प्रत्येक यात्री को उपलब्ध होती है. आपातकाल में यात्रियों को शुद्ध आक्सीजन की सुविधा, तब तक के लिए उपलब्ध कराई जाती है जब तक कि विमान उतर कर, सुरक्षित ऊंचाई तक नहीं आ जाता. यह सुविधा अतिरिक्त यात्रियों को साधारणतया उपलब्ध नहीं हो पाती.

तूफान, बवंडर आदि में फंसने पर, इंजन खराब हो जाने या अन्य नियंत्रण संबंधी कठिनाई आने पर वायुयान तेजी से ऊपरनीचे हो सकता है. इस समय निर्धारित यात्री सुरक्षा पेटी से बंधे रह कर अपनी सीट पर एक सीमा तक सुरक्षित रहते हैं. पर अतिरिक्त यात्री इस स्थिति में वायुयान की छत, अगलबगल या फर्श आदि से टकरा कर स्वयं अपने और अन्यों के लिए मुसीबत खड़ी कर सकते हैं. यही हालत दुर्घटना के समय भी हो सकती है. सीट पर बैठे, सुरक्षा पेटी से बंधे यात्री बिना नुकसान के ज्यादा बलों को सहन कर सकते हैं, क्योंकि सीट भी भारी बलों को सहने योग्य होती है.

मुसीबत के समय जमीन पर, वायुयान से जल्द से जल्द निकलने की सुविधा अतिरिक्त दरवाजों द्वारा होती है, पर ये अतिरिक्त यात्री इस में भी खचाखच भरी बसों, रेलगाड़ियों वाली मुसीबत पैदा कर देते हैं और बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है. इस प्रकार अतिरिक्त यात्री यानी खचाखच भरे वायुयान सभी के लिए खतरनाक हैं.

तेज गति वाले वायुयानों में किसी प्रकार की लापरवाही बरतना खतरनाक साबित हो सकता है, क्योंकि प्रत्येक पदार्थ यदि अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

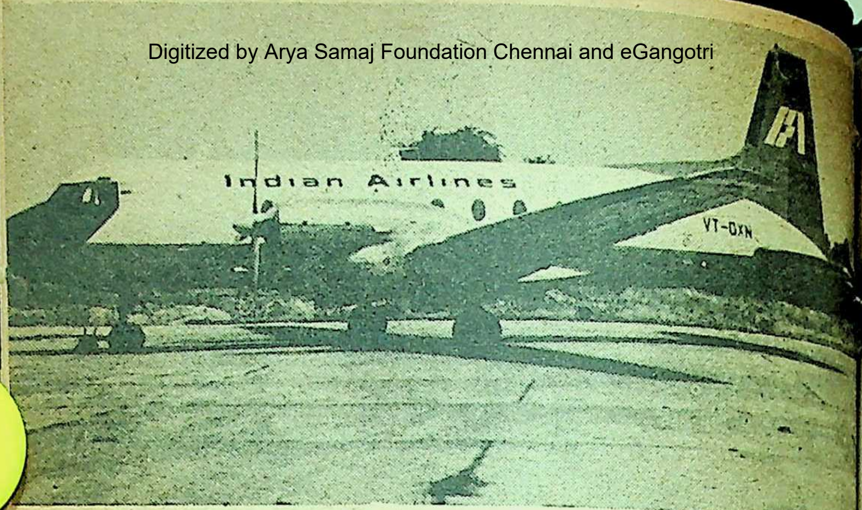

वायुयान के उड़नेउतरने के लिए वायु पट्टियां होती हैं पर प्रत्येक वायुयान प्रत्येक वायु पट्टी पर नहीं उतर सकता.

बल पर, वायु में नहीं बना रह सकता तो पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति उसे खींच लेती है. नीचे आते समय उस की गति इतनी बढ़ जाती है कि टकराते समय उत्पन्न होने वाला बल, उसे पूर्णतया नष्ट कर सकता है.

वायुयान कैसे उड़ा

वायुयान के कुल भार में यात्रियों का औसत भार, उन के सामान का भार, ढोए जा रहे अतिरिक्त माल का भार, खानेपीने के सामान और ईंधन आदि का भी भार सम्मिलित होता है. हो सकता है उस दिन अतिरिक्त ढोया जाने वाला भार कम रहा हो या यात्रियों में ज्यादातर महिलाएं और बच्चे ही हों. इस कारण हो सकता है कि वायुयान का कुल भार कम हो गया हो और उच्चतम भार की सीमा का उल्लंघन ही न हुआ हो.

जहां तक उचित भार के वितरण का प्रश्न है, उस का विवरण स्पष्ट ही है. क्योंकि अतिरिक्त यात्रियों में से कुछ चालक कक्ष में, कुछ रसोई में और कुछ प्रसाधन कक्षों में थे. यह वितरण जानबूझ कर किया गया था या उपलब्ध स्थान के कारण स्वयं हो गया था, यह कह सकना मुशकिल है किंतु यह प्रबंध उचित वितरण में सहायक था.

कुछ यात्री चालक कक्ष में थे इस से यह स्पष्ट है कि चालकों को इस अतिरिक्त भार की जानकारी थी. इस परिस्थिति में चालक इस बढ़े हुए भार के अनुसार अपनी उड़ान का निर्धारण कर सके होंगे. यहां तक सब ठीक था किंतु यदि उड़ान के समय या यात्रा के समय कोई विपरीत परिस्थिति उत्पन्न हो जाती तो यह उल्लंघन विकट व जटिल स्थिति को जन्म दे सकता था. यह अच्छा ही हुआ कि ऐसी कोई स्थिति, इस यात्रा के समय उपस्थित नहीं हुई.

इस प्रकार यात्री कक्ष और माल कक्ष को यात्रियों से खचाखच भरा जा सकता है, बशर्ते दरवाजे ठीक से बंद हों और यात्री बाहर न हों. किंतु व्यक्तिगत या सामूहिक सुरक्षा की दृष्टि से ऐसी यात्रा निश्चित रूप से खतरनाक है. वायुयान की यात्री क्षमता से अधिक यात्री भरना, उच्च तकनीक के सही उपयोग की अवहेलना तो है ही, साथ में तत्काल लाभ के लिए सुरक्षा को ताक पर रख देना भी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रजि. नं. 6502/60 डी (सी)-104

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

सदा मैत्री बंधुता

FRIENDSHIP·FRATERNITY·FOREVER

एशियाई खेल विशेषांक

एशियाई खेल : शुरुआत से अब तक

भारत कितने पदक लेगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैद्यनाथ च्यवनप्राश

सदा सबके लिए सेवनीय

स्फूर्ति

कफ खांसी नाशक

यौवन

दिमागी ताज़गी

विकास

बलवर्द्धक

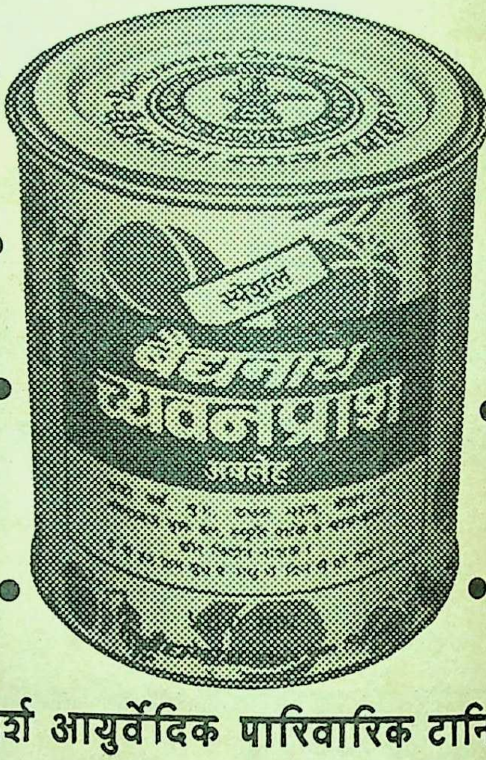

आदर्श आयुर्वेदिक पारिवारिक टानिक

बैद्यनाथ च्यवनप्राश क्यों ?

क्योंकि यह ५० से ज्यादा जड़ी-बूटियों के तत्वों से बना ऐसे प्राकृतिक विटामिनों से भरपूर है जो मानव शरीर के लिए आसानी से पाचन योग्य है। रासायनिक प्रक्रिया से बनाये गये दूसरे टानिकों में यह गुण नहीं होता। इसके अलावा, बैद्यनाथ च्यवनप्राश आपके लिए और आपके परिवार के लिए अति आवश्यक स्वास्थ्यवर्धक टानिक है क्योंकि यह है :

- विटामिन 'सि' से भरपूर
- कफ खांसी, जुकाम नाशक
- केल्शियम एवं खून की कमी के लिये
- ताजगी और तन्दुरुस्ती के लिये
- यौवन के लिये
- आयु व बलवर्द्धक
- त्रिदोष नाशक

बैद्यनाथ ७०० से अधिक दवाएं पांच आधुनिक कारखानों में तैयार करता है

BAB/2-81/HIN

SHRI BAIDYANATH AYURVED BHAWAN LIMITED CALCUTTA

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड

कलकत्ता • पटना • झाँसी • नागपुर • इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंजीत ने कल खेल का पासा ही पलट दिया - और घर लौटा तो सूरत देखने लायक थी!

हाई पावर सर्फ़ की सबसे सफ़ेद धुलाई ...जो देखने में आई!

BAB/2.81/HIN

यह बेहतरीन – कपड़े सफ़ेद हों या रंगीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

LINTAS.SU 253-1810 HI

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंपक

दीवाली विशेषांक

नवंबर (द्वितीय) 1982

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीवाली के खूबसूरत मौके पर विशेष सजधज के साथ आ रहा है– नन्हे नागरिकों के मनोरंजक पाक्षिक चंपक का उतना ही खूबसूरत दीवाली विशेषांक.

अपनी प्रति
आज ही सुरक्षित कराएं

100 पृष्ठों के इस आकर्षक विशेषांक में हमारे नन्हेमुन्ने पाठकों को पढ़ने को मिलेंगी– रंगबिरंगे चित्रों से सजीधजी डेढ़ दरजन से भी अधिक मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद कहानियां.

इस के अलावा 'दूर की सूझ,' 'चीकू,' 'चुंचू,' 'पिंटू और मोती' तथा 'पप्पू' जैसी मजेदार चित्रकथाओं के साथसाथ होंगे ज्ञान बढ़ाने वाले स्तंभ–150 रुपए के पुरस्कार वाली 'ज्ञान बढ़ाओ चित्र पहेली' एवं 'खेल का समय.' इस बार 'देशदेश से' स्तंभ में हम बच्चों को मेक्सिको की सैर कराएंगे.

मूल्य : 2.50 रुपए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ
नवंबर (प्रथम) 1982
अंक : 390

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

लेख

रत और भूटान	79	श्रीधर वर्वे
फिल्मी सितारे	86	नवरूप
रती गुप्ता	98	मोहनदीप
तोबाई	105	हरीश पाठक
हिला रोजगार	114	अजयकुमार
शीनी मानव	116	अजय सिन्हा
नाशाहीसेसंघर्ष	134	विनोदचंद्र
दिवासी नृत्य	154	शिवप्रसाद
-16 विमान	169	दीपक

कथा साहित्य

ये कार्यालय...	76	सिंधु गोयल
रिसते नासूर	110	बानो सरताज
तोहफा	122	कुमुद भटनागर
परदे के पीछे	147	चितरंजन
सुलतान की भूल	162	मुकारब खान
अनशन	175	संतोषकुमार

कविताएं

दिल की गलियों में	83	प्रवीण तन्मय
तुम्हारी याद	94	हरीश निगम

एशियाई खेल परिशिष्ट

सफर वहां तक जहां से शुरू हुआ था	24
चय उन खेलों का जो खेले जाने हैं	30
प्रस्थ इनडोर स्टेडियम	46
शियाई खेलों में भारतीय प्रदर्शन	66
शियाई खेलों की आयोजन व्यवस्था	73

स्तंभ

संपादक के नाम	7	127	ये शिक्षक
मुक्त विचार	19	128	युवा गतिविधियां
दास्तानेदफ्तर	96	140	दुनिया भर की
शाबाश	103	144	धूपछांव
येलड़केलड़कियां	109	161	सावधान

पिछले छः महीने 173

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55. दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस न.र.प्रा.लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मुक्ता नाम रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है. मुक्ता में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. द्वारा सुरक्षित हैं. © दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. 1982

मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपए, एक वर्ष 72.00 रुपए, विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 अमरीका में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 400.00 रुपए, यूरोप में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 325.00 रुपए. मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001. बंबई कार्यालय : 79ए, मित्तल चैंबर्स, नारीमन पाइंट, बंबई-400021. मद्रास कार्यालय : अपार्टमेंट नंबर 342, छठी मंजिल, 31 2 ए पैंथल रोड, खलील शिराजी एस्टेट, मद्रास-600008.

मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. **यह अंक रुपए 3.50**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसि टीवी हमारा लक्ष्य श्रेष्ठता

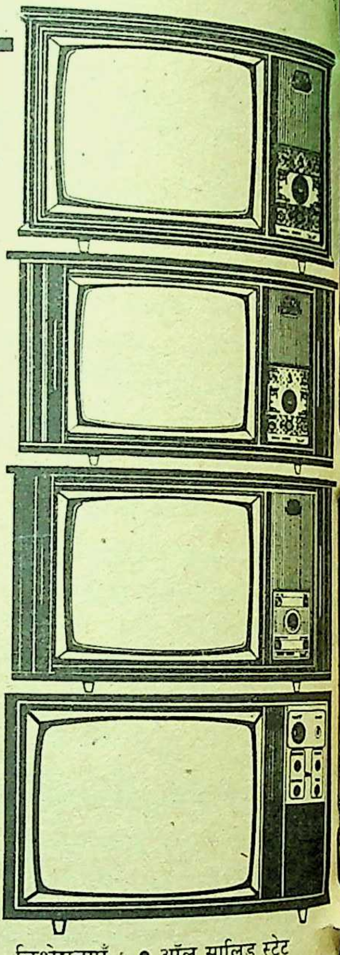

हमारा लक्ष्य था और आज भी है—श्रेष्ठता ECtv के हर एक टी वी में उत्तमता प्रदान करना । 'रिसर्च और डेवलपमेन्ट विंग' के निरंतर प्रयास और 'क्वालिटी कन्ट्रोल' के कड़े परिक्षण की बदौलत आज ECtv, टी वी टेक्नोलोजी के क्षेत्र में एक विश्वसनीय नाम है ।

उत्कृष्ट कार्यकारिता : बिना किसी नुक्स के चलनेवाला आपका मनोरंजन का साधन । इसकी स्पष्ट आवाज और साफ चित्रों का प्रसारण, ECtv की बेजोड़ टेक्नोलोजी का प्रमाण हैं ।

सर्विस: ECtv के सर्विस केन्द्र सारे देश में फैले हुए हैं । यह ही नहीं ECtv फैक्टरी में प्रशिक्षित सर्विस इंजीनियर ही आपके टी वी की सर्विस करेंगे, आपके घर में या सर्विस केन्द्र में । ECtv सर्विस विश्वसनीय और जल्द

विशेषताएँ : • ऑल सालिड स्टेट • मल्टी चैनल • डयूएल-कोन हाई-फाई स्पीकर • अधिक एम-टी बी-एफ।

ECtv इका EC
इलेक्ट्रानिक्स कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
हैदराबाद—५०० ७६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक के नाम

'वैज्ञानिक विलासिता' (मुक्त विचार/ …नवंबर/प्रथम) में व्यक्त आप के विचार …हां आने सही हैं. एक अमरीकी कंपनी से …करोड़ रुपए में खरीदा गया इनसैट-1 ए … उपग्रह छोड़े जाने के लगभग पांच माह …बेकार हो गया. इस का कारण भारतीय …निकों की अकुशलता ही है. अब सरकार …चाहिए कि वह उन वैज्ञानिकों को नौकरी …निकाल दे ताकि भविष्य में वैज्ञानिक उन्हीं …ों में हाथ डालें जो उन के बस के हों.

—जयनारायणसिंह राठी

*

'वैज्ञानिक विलासिता' एवं 'वैज्ञानिक …धों पर खर्च क्यों?' में आप के विचारों को …कर यह कहावत एकदम सही प्रतीत हुई …'हाथी के दांत खाने के और, दिखाने के …' होते हैं.

…भारत ने जब अंतरिक्ष विज्ञान में कदम …ा, आप ने उस की प्रशंसा के पुल बांधे. …ने संपादकीय में कभी आप ने उसे भारत …अंतरिक्ष में बढ़ते कदम बताया तो कभी … अंतरिक्ष विज्ञान में नई उपलब्धि के …क दिए. साथ ही आप ने वैज्ञानिकों की …नीय स्थिति पर मगरमच्छी आंसू बहाए.

आप के विचारों से लगता है कि … भी देश को पिछड़ा हुआ देखना चाहते … प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों को मामूली सी …फलताओं का जिम्मेदार ठहरा कर आप उन्हें नौकरी से निकाल देने और वैज्ञानिक शोधों पर होने वाले खर्च पर रोक लगाने की बात करते हैं.

सफलता एवं असफलता तो एक सिक्के के दो पहलू हैं. पर आप ने एक ही पहलू को देखा और यह भूल गए कि असफलता ही वह सीढ़ी है जिस से सफलता की मंजिल तक पहुंचा जा सकता है और भारत की यह असफलता यूरोपीय देशों की तुलना में बेहत मामूली सी है. अभी हाल ही में यूरोपीय देशों द्वारा अमरीका पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए छोड़ा गया करीब तीन अरब डालर मूल्य का उपग्रह नष्ट हो गया. क्या आप के विचारों के अनुसार वहां के वैज्ञानिकों को भी नौकरी से निकाल देना चाहिए और यह फिजूलखर्ची बंद कर देनी चाहिए?

—परमानंद सनाढ्य

*

'वैज्ञानिक विलासिता' एवं 'वैज्ञानिक शोधों पर खर्च क्यों' में आप के विचारों से मैं सहमत नहीं हूं. किसी वैज्ञानिक प्रयोग की सफलता या असफलता ही उस प्रयोग के सिद्धांत के सही या गलत होने का मापदंड नहीं होता.

मुशकिल यह है कि आज तक देश में

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग,
मुक्ता,
ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैज्ञानिक संस्कृति का विकास नहीं हो पाया है. हर क्षेत्र में भाईभतीजावाद, राजनीति और क्षेत्रीय संकीर्णता ही सर्वोपरि है. भारत में रह रहे सभी वैज्ञानिक बेकार और निकम्मे नहीं हैं, उन की भी काम कर सकने की अपनी सीमाएं और सही प्रकार काम न कर सकने की मजबूरियां हैं. —डा. अमरनाथ गर्ग

*

इनसैट-1 ए की विफलता से संबंधित आप के विचार पढ़े. इस तरह की असफलताओं के लिए वैज्ञानिकों से ... दोषी सरकार और राजनीतिबाज़ ... पश्चिमी देशों में अपना रौब गांठने ... से वैज्ञानिकों को ऐसा कार्य भी करने ... बाध्य करते हैं जिन में वे निपुण नहीं ...

इस अंक में प्रकाशित कहानी ... ओर' पसंद आई. इसी विषय पर ... मुक्ता में अनेक कहानियां प्रकाशित हो ... हैं. कृपया विविध विषयों पर लिखी ... प्रकाशित किया करें. —गोवर्धन ...

*

जहरीली शराब के संबंध में ... विचारों (मुक्त विचार/अक्तूबर/प्रथम) ... सहमत हूं. केरल में ही नहीं देश के ... सभी प्रांतों में जहरीली शराब से ... दुर्घटनाएं हो चुकी हैं. इंदौर, अहमदा... लखनऊ, मद्रास, बंबई, बंगलौर में ... लोग जहरीली शराब के शिकार हुए हैं.

जहरीली शराब पीने से बहुत से लो... की मृत्यु होने के अलावा अनेक की नेत्र... खो जाती है फिर भी सरकार की आंखें ... खुलतीं. पता नहीं राज्य सरकारें ऐसी कौन ... शराब पी कर बैठी हैं कि उन्हें यह सब दि... ही नहीं देता? —नरेंद्रसिंह ...

*

सरकार द्वारा नशाबंदी के प्रचा... लिए दीवारों पर चिपकाए गए पोस्टरों ... लिखा रहता है— 'शराब जहर है.' ... शराब जहर है तो इस के पीने से हुई ... आत्महत्या हुई और जब कि आत्मह... अथवा उस का प्रयास दंडनीय है तो फिर ... के पीने से जो व्यक्ति मरे, उन की मौत ... मुआवजा देने का क्या औचित्य है? इस ... नशाबंदी की आड़ में शराब पीने के ... प्रोत्साहन मिलता है.

—गोपालप्रसाद 'गुड्डे' ...

*

जहरीली शराब के संबंध में ... विचारों में इस बात को नकारा नहीं जा ... कि अधिकांश शराब सरकार स्वयं बेच... जो लोग शराब बनाते हैं, ... राजनीतिबाजों का पूर्ण सहयोग मिल...

मुक्ता

स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने रोचक अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजने के लिए अलगअलग लिफाफा प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है. एक ही लिफाफे में एक से अधिक स्तंभों में प्रकाशन योग्य सामग्री भेजी जा सकती है.

• सामग्री भेजते समय स्पष्ट अथवा सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. साथ ही यह भी लिख कर भेजें कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है. भेजी हुई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में और रोचकतापूर्ण होनी चाहिए.

सभी स्तंभों के लिए सामग्री एक ही लिफाफे में रख कर इस पते पर भेजें: संपादन विभाग, मुक्ता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहरीली शराब अब तक कितने ही लोगों की जानें ले चुकी है. इस शराब से अधिकांश गरीब लोग ही मरते हैं और सरकार मृतकों के परिवारों को कुछ राशि दे कर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेती है.

मध्य प्रदेश में एक अध्यादेश जारी किया गया है जिस के अनुसार जहरीली शराब बनाने वालों को मृत्यु दंड दिया जाएगा. परंतु जहरीली शराब बनाने वालों पर इस का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है, क्योंकि वे जानते हैं कि जब तक राजनीतिबाज उन के साथ हैं, उन का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता. जहरीली शराब बनाने वाले अपना काम धड़ल्ले से जारी रखे हुए हैं.

—गुरबीरसिंह चावला

*

'संपत्ति की बिक्री पर आय कर की नजर' (मुक्त विचार/सितंबर/द्वितीय) में व्यक्त आप के विचारों से मैं सहमत हूं. सरकार अपने हित के लिए मध्यमवर्गीय ... की आवश्यकताओं को अनदेखा करती है. बड़े नगरों में पहले ही मकानों की मांग बढ़ती जा रही है. इधर नौकरी व अध्ययन के लिए लोग शहरों की ओर दौड़ रहे हैं, उन्हें भी मकानों की आवश्यकता है. अब घर खरीदने वाले मध्यमवर्गीय व्यक्ति आय कर कार्यालय के चक्कर काटतेकाटते परेशान हो जाएंगे. इस से घर भी कम बनेंगे और आवास की समस्या तो बढ़ेगी ही, आय कर विभाग की रिश्वतखोरी भी बढ़ जाएगी.

—कटारिया ज्ञानदेव

*

गोद लेने के नियमों के संबंध में आप के विचार (मुक्त विचार/सितंबर/द्वितीय) पढ़े. इस समाचार को अखबारों आदि में बहुत ही घटिया तरीके से प्रस्तुत किया गया, मानो विदेशी लोग हमारे देश के बेसहारा शिशुओं को बलि चढ़ाने के लिए ले जा रहे हों.

यदि बेसहारा बच्चों को संरक्षक मिल जाए तो इस में कुछ भी अनुचित नहीं, अपितु

चंपक व सरिता की कहानियों का रेडियो प्रसारण

विविध भारती पर 'सरिता' और 'चंपक' की कहानियों के नाट्य रूपांतर का प्रसारण प्रति सप्ताह आकाशवाणी के निम्न केंद्रों से निम्न समयानुसार किया जा रहा है:

	केंद्र	दिन	रात्रि समय
सरिता -	दिल्ली	मंगलवार	7.45
	बंबई	सोमवार	9.45
	चंडीगढ़	शुक्रवार	9.30
	भोपाल	बुधवार	9.30
	पटना	मंगलवार	9.30
	लखनऊ	मंगलवार	9.30
	जयपुर	मंगलवार	9.30
चंपक -	बंबई	मंगलवार	8.45
	दिल्ली	शुक्रवार	7.45
	पटना	शनिवार	7.45

सुनना न भूलें और बच्चों को भी सुनाना न भूलें.

कार्यक्रम सुनने के बाद निम्न पते पर अपनी राय लिखना न भूलिएगा.

प्रचार एवं प्रसार विभाग, दिल्ली प्रेस,
ई-3, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मानवता के दृष्टिकोण से यह प्रशंसनीय है.

इन बेसहारा बच्चों की बात तो दूर रही भारत में लाखों बच्चों पर मांबाप व अन्य संरक्षकों का साया होते हुए भी उन का मानसिक व शारीरिक विकास सही ढंग से नहीं हो पाता.

आर्थिक तंगी और मांबाप के अशिक्षित होने के कारण हर वर्ष हजारों बच्चे कुपोषण और उचित चिकित्सा न मिलने से अल्पायु में ही मर जाते हैं. **—संजय चोपड़ा**

*

'हिंदी की प्रगति धीमी ही सही' (मुक्त विचार/सितंबर/प्रथम) में आप के विचार प्रेरणादायक रहे. अब हिंदी माध्यम से भी लोग प्रशासकीय सेवा में जा सकते हैं. वरना हम जैसे अंगरेजी कम जानने वाले लोग प्रशासकीय सेवा में तो जाने से दूर, उल्टे हीन भावना के शिकार रहते.

इस संबंध में एक सुझाव देना चाहता हूं कि आप उन के साक्षात्कार प्रकाशित करें, जो इस परीक्षा में हिंदी माध्यम से सफल हुए हैं. इस में उन्होंने किन पुस्तकों, विषयों आदि का अध्ययन किया, उन के अध्ययन का समय क्या रहता था, उन की क्या शैक्षणिक योग्यताएं थीं आदि की जानकारी दें ताकि हम जैसे अनेक प्रशासनिक सेवा में आने के इच्छुक हिंदी भाषी उम्मीदवारों को कुछ दिशा निर्देश व प्रोत्साहन मिल सके.

—राजीवकुमार जैन

*

भारतीय हाकी की मौत से संबंधित लेख (अक्तूबर/प्रथम) बहुत अच्छा लगा.

बहाना बनाना, एक दूसरे का विरोध करना, अंपायरों की बेईमानी आदि हाकी की मौत के कारण बने हैं.

यह लगभग तय है कि हाकी का स्तर सुधरने वाला नहीं है, क्योंकि खिलाड़ियों के पास एक दूसरे का खेल समझने का वक्त नहीं है. हां, यदि उन के लिए लगातार प्रशिक्षण की सुविधाएं जुटाई जाएं तो भारतीय हाकी के गिरते हुए स्तर को सुधारा जा सकता है.

—गुरविंदर नारंग

दरअसल हम भारतीय हाकी के बारे राजा के एक मृत हाथी की तरह उसे मृत न कह कर यह तो कहते रहे थे कि वह न हिलताडुलता है, न उठताबैठता है, न खातापीता है, न आवाज निकालता है और न सांस लेता है किंतु सीधे शब्दों में यह नहीं कह पा रहे थे कि वह मर गया है, सो आप ने कह दिया.

भारतीय हाकी की असामयिक एवं अप्रत्याशित दुखद मृत्यु पर संबंधित अधिकारी मेरी हार्दिक संवेदना स्वीकार करें.

—गिरिराजकिशोर यादव

*

कुछ हाकी खिलाड़ी कहते हैं कि क्रिकेट के लिए बहुत पैसा है और हाकी के लिए मामूली सुविधाएं तक नहीं हैं. मगर क्रिकेट अत्यंत लोकप्रिय है इसलिए उस में पैसा है. इस के अलावा कोई आदमी पैसे से खिलाड़ी नहीं बन सकता अन्यथा सब पैसे वाले लोग खिलाड़ी ही होते. भारतीय हाकी टीम कुछ कर के दिखाए तो उसे धन और सम्मान दोनों मिलेंगे, लेकिन इस से पहले रोने से क्या मिलेगा?

—समर जैन

*

फजूलखर्ची से संबंधित लेख (अक्तूबर/प्रथम) बहुत अच्छा लगा.

मेरे भाई को पान मसाला खाने की आदत है. वह अपनी दुकान पर पान मसाले का डब्बा रखते हैं और आतेजाते उन के दोस्त भी उस में से फंकी मार जाते हैं. इस प्रकार 13 रुपए का डब्बा मुशकिल से दो दिन चल पाता है. इस प्रकार हमारे यहां 2,340 रुपए का फालतू वार्षिक खर्च है.

—उत्तम अग्रवाल

*

लड़कियों से छेड़खानी से संबंधित लेख (सितबर/द्वितीय) की कुछ बातें विचारणीय हैं. लेकिन यह लेख एकपक्षीय है. आज के आधुनिक युग में कोई आधुनिक लड़की छेड़खानी की शिकायत करे, तो समझ लीजिए कि वह लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहती है. दिल्ली परिवहन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीय हाकी के बारे
रह उसे मृत न क
हे थे कि वह
उठताबैठता है,
निकालता है और
ब्दों में यह नहीं
ा है, सो आप ने

ी असामयिक
त्यु पर संवेद
वेदना स्वीकार करें
राजकिशोर यादव

कहते हैं कि क्रिकेट
और हाकी के लिए
ीं हैं. मगर क्रिकेट
ए उस में पैसा है
मी पैसे से खिलाड़ी
सब पैसे वाले लोग
य हाकी टीम कुछ
और सम्मान दोनों
हले रोने से क्या
—समर रैन

संबंधित लेख
च्छा लगा.
मसाला खाने की
न पर पान मसाले
जाते उन के दोस्त
हैं. इस प्रकार 13
दो दिन चल पाता
2,340 रुपए का
—उत्तम अग्रवाल

से संबंधित लेख
बातें विचारणीय
ीय है. आज के
ाधुनिक लड़की
करे, तो समझ
यान अपनी ओर
दिल्ली परिवहन
(प्रथम) 1982

क्या आपका मुन्ना ३ महीने का हो गया?

अब सिर्फ़ दूध उसकी आयरन की ज़रूरत नहीं पूरी कर सकता

उसे दीजिये आयरन से भरपूर - फ़ैरेक्स

"जन्म के समय बच्चे को माँ से जो आयरन भंडार प्राप्त होता है वह जन्म के बाद धीरे-धीरे घटने लगता है। हालाँकि दूध एक अच्छा आहार है फिर भी आयरन की कमी के कारण यह अपने आप में पूर्ण आहार नहीं। इसीलिए बच्चे को आयरन वाले ठोस आहार चाहिए।"

—डॉ. सुभाष सी. आर्य :

डॉक्टरों की सिफ़ारिश है

फ़ैरेक्स

CASGLF-32-183 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निगम की 'यूनीवर्सिटी स्पेशल' बसों में तो सारा माहौल ही उल्टा नजर आता है, जहां पांचछ: लड़कियों की टोली किसी लड़के को घेर कर उस से छेड़छाड़ और अश्लील बातें किया करती हैं. दरअसल आज की आधुनिक लड़कियां जानबूझ कर छेड़खानी का हौआ खड़ा करती हैं ताकि लोग यह समझें कि इस जमाने में उन की भी कुछ पूछ है.

—शुभ्रा किशोर

*

लड़कियों से छेड़खानी से संबंधित लेख में लड़कियों की आकर्षक पोशाकों की तुलना स्कूटर से की गई है, जो हास्यास्पद होने के साथसाथ यह भी दर्शाती है कि लड़कियों का आकर्षक पोशाकें पहनना गुनाह है.

जहां तक आकर्षक पोशाक का प्रश्न है, मैं यह समझता हूं कि सिर्फ वह पोशाक जो अपने में आकर्षक है, छेड़छाड़ का कारण नहीं बनती बल्कि उन पोशाकों से जो पारदर्शक अथवा ओछी होने के कारण लड़की के अंगों का प्रदर्शन करती हैं, पुरुष वर्ग में उत्तेजना पैदा होती है.

इसी विषय पर कविता अरोड़ाजी का यह विचार पूर्ण रूप से उचित है कि ऐसा माहौल तैयार किया जाए जिस में युवकयुवतियां एकदूसरे से मिल सकें, तभी इस समस्या का हल संभव है.

मैं ने स्वयं देखा है कि लखनऊ के महाविद्यालयों में सहशिक्षा न होने से वहां के छात्र जब किसी कार्यवश विश्वविद्यालय (जहां सहशिक्षा है) जाते हैं तो छेड़छाड़ करते हैं, जब कि वहीं सहशिक्षा में पढ़ने वाले छात्र इस में विशेष रुचि नहीं लेते. यदि वे कभी छेड़छाड़ करते भी हैं तो इसलिए कि अपने उन मिलने वालों में शेखी बघार सकें, जिन्हें युवतियों से मिलनाजुलना सुलभ नहीं है.

—दिलीपकुमार

*

कहानी 'इश्क ए रूहानी' (सितंबर/द्वितीय) का आधार यों तो अच्छा था किंतु इस में वही घिसापिटा, पुराना विषय लिया गया था जिस में पति किसी दूसरी स्त्री के संपर्क में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान बनाने वालों की पहली पसंद

चारमीनार छत की चादरें

- टिकाऊ
- मौसम का असर नहीं
- आग का असर नहीं
- सस्ती

HYDERABAD ASBESTOS

इमारती सामान में आप को व्यावहारिक, सुंदर, बहुउपयोगी और अग्नि प्रतिरोधक सामग्री चाहिए तो...

मांगिए

flex-o-board

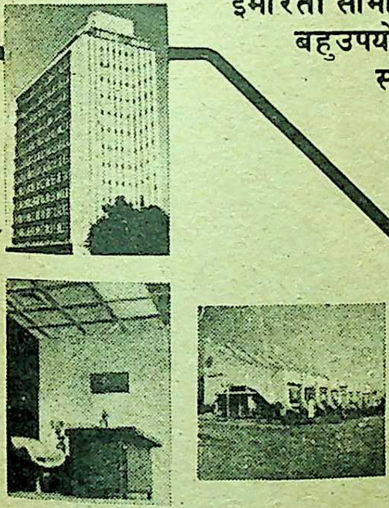

फ्लैक्स-ओ-बोर्ड उच्च दबाव वाली स्टीम से उपचारित इस देश का बना एक मात्र ए.सी. बोर्ड है. इस अनूठे इमारती बोर्ड का इस्तेमाल विविध कार्यों में किया जा सकता है और यह खूबसूरती में बेजोड़ है. इसे चाहे अस्थायी छत (फाल्स सीलिंग) बनाने के काम में लाइए, चाहे पार्टीशन, पैनल, खोखे या साइनबोर्ड बनाने के. इस पर आग का कोई असर नहीं होता. ऊंची इमारतों में उपयोग के लिए यह बेहतरीन है.

इसे काटने, इस में छेद करने, कील गाड़ने या पेंच कसने के लिए साधारण औजारों से ही काम चल जाता है.

इसे काटने, इस में छेद करने, कील गाड़ने या पेंच कसने के लिए साधारण औजारों से ही काम चल जाता है.

इस पर जैसा चाहे रोगन कीजिए या सजावटी अथवा लेमिनेटिड पेपर लगाइए.

इसे कीड़ेमकोड़े नुकसान नहीं पहुंचाते.

HYDERABAD ASBESTOS
CEMENT PRODUCTS LIMITED
Hyderabad 500 018

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृतांजन

दर्द, जुकाम और मोच का एक सुरक्षित, निश्चित और तुरंत इलाज

८५ से भी अधिक वर्षों से एक भरोसेमंद घरेलू इलाज

अमृतांजन में १० प्रभावकारी औषध-पदार्थ, अपने सही अनुपात में, मिले हुए हैं। इसीलिए अमृतांजन सरदर्द, सर्दी-जुकाम, बदन के दर्द और मोच से फौरन आराम देता है। बिना किसी नुकसान देह प्रतिक्रिया या प्रभाव के। अमृतांजन १२ और २४ ग्रा. शीशी और ५.२५ ग्रा. छोटे टिन में उपलब्ध है।

अपने घर में सदा अमृतांजन रखिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ कर रास्ते से भटक जाते हैं और फिर स्वयं ही किसी घटना आदि से प्रभावित हो कर सही राह पर आ जाते हैं.

इस प्रकार की कहानियां कई बार तो हमारी हिंदी फिल्मों में भी देखने को मिल जाती हैं.

—संजय

*

स्वतंत्रता दिवस से संबंधित लेख (अगस्त/द्वितीय) में व्यक्त विचारों से मैं पूर्णतः सहमत हूं. यह महान राष्ट्रीय त्योहार प्रत्येक भारतीय को मनाना चाहिए. किंतु मुझे जहां तक मालूम है इस महान दिवस के बारे में आदिवासी व ग्रामीण क्षेत्रों के लोग जानते ही नहीं हैं. लेखक ने लिखा है, 'पहले प्रभात फेरी होती थी, नारे लगते थे किंतु आज इस सर्वथा अभाव है.'

खैर यह तो अशिक्षित, ग्रामीणों बात हुई किंतु आज शिक्षित लोग भी राष्ट्रीय त्योहार को महत्त्व नहीं देते. स्वतंत्रता दिवस केवल छुट्टी के दिन के में मनाते हैं और औपचारिकता के रूप में झंडा फहरा कर अपने कर्तव्य से मुक्ति पा हैं.

एक बार तो मैं ने देखा कि माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्या जल्दबाजी में उलटा झंडा फहरा कर भाग थे.

—नरसिंह महते

मुक्ता के लेखक

कुमुद भटनागर

इस अंक में प्रकाशित कहानी 'तोहफा' की लेखिका हैदराबाद निवासी कुमुद भटनागर हैं. आप ने अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की उपाधि ली है. लेखन के अतिरिक्त चित्रकला व फोटोग्राफी में भी आप की रुचि है.

विनोदचंद्र पांडेय

इस अंक में प्रकाशित लेख 'तानाशाही से संघर्ष की अभिनव पोलिश शैली' के लेखक विनोदचंद्र पांडेय औषधि निर्माण व पत्रकारिता से संबद्ध हैं. आप मूलतः राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय समस्याओं को अपने लेखन का विषय बनाते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कर्कश और दानेदार मंजन आपके मसूढ़ों और दांतों को नुकसान पहुंचा सकते हैं..."

कोलगेट टूथ पाउडर से अपने दांतों और मसूढ़ों की सुरक्षा कीजिये—और सांस की दुर्गन्ध भी रोकिए!

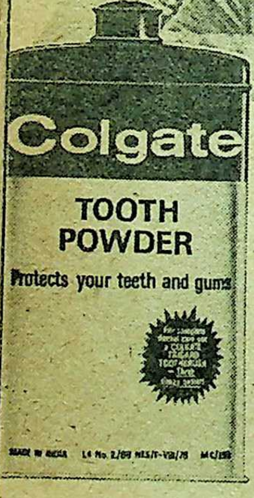

कोलगेट टूथ पाउडर अति सूक्ष्म और सफ़ेद है। यह कोमलता के साथ आपके मसूढ़ों की मालिश करता है, जब कि इसका पालिश करनेवाला तत्व आपके दांतों पर से मैल की परत हटाता है, इन्हें ज्यादा साफ़ और ज्यादा सफ़ेद बनाता है। कोलगेट भरपूर झागदार होने के कारण आपके दांतों के बीच की जगहों में घुसकर दुर्गंध और दंत क्षय पैदा करनेवाले कीटाणुओं को नष्ट कर देता है और सांस की दुर्गंध खत्म हो जाती है।

कोलगेट टूथ पाउडर से अपने परिवार को आधुनिक दंत संरक्षण दीजिये। उन्हें इसका पेपरमिंट का ठंडा स्वाद बेहद पसंद आयेगा।

TP.G.31HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

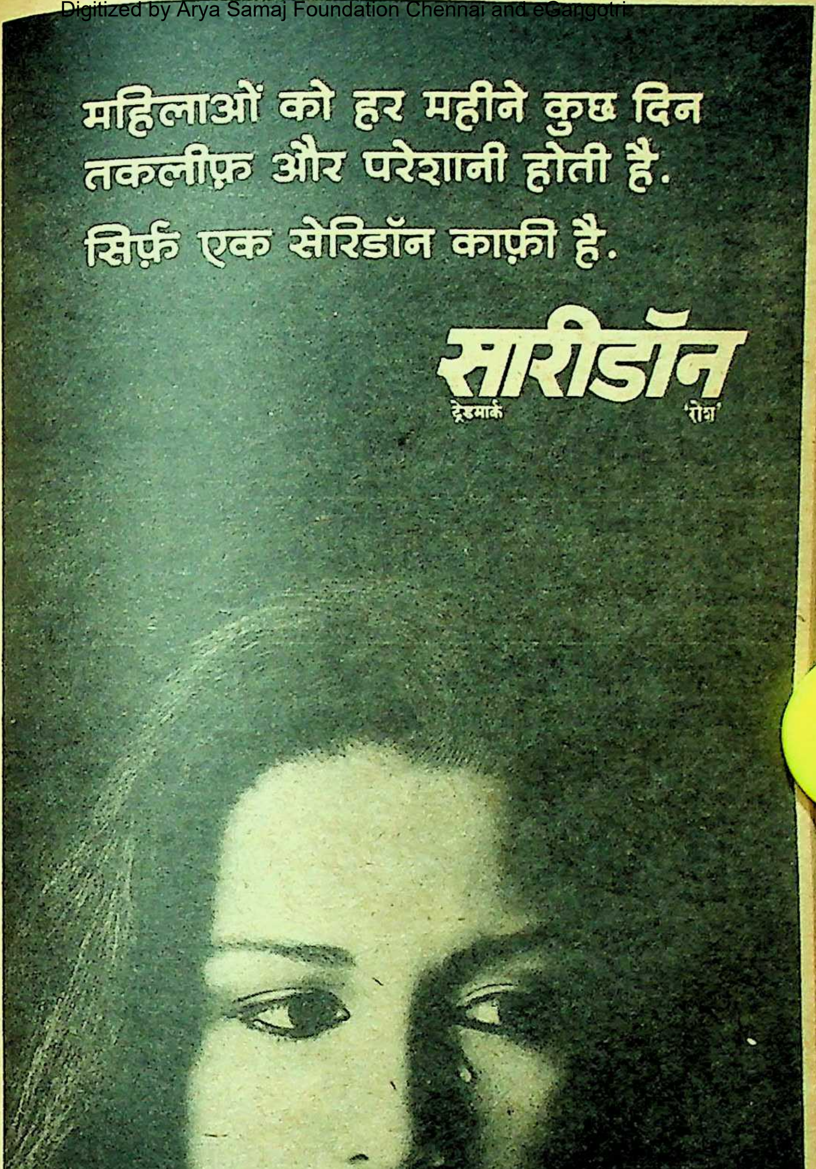

HTB-RPL-8614

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

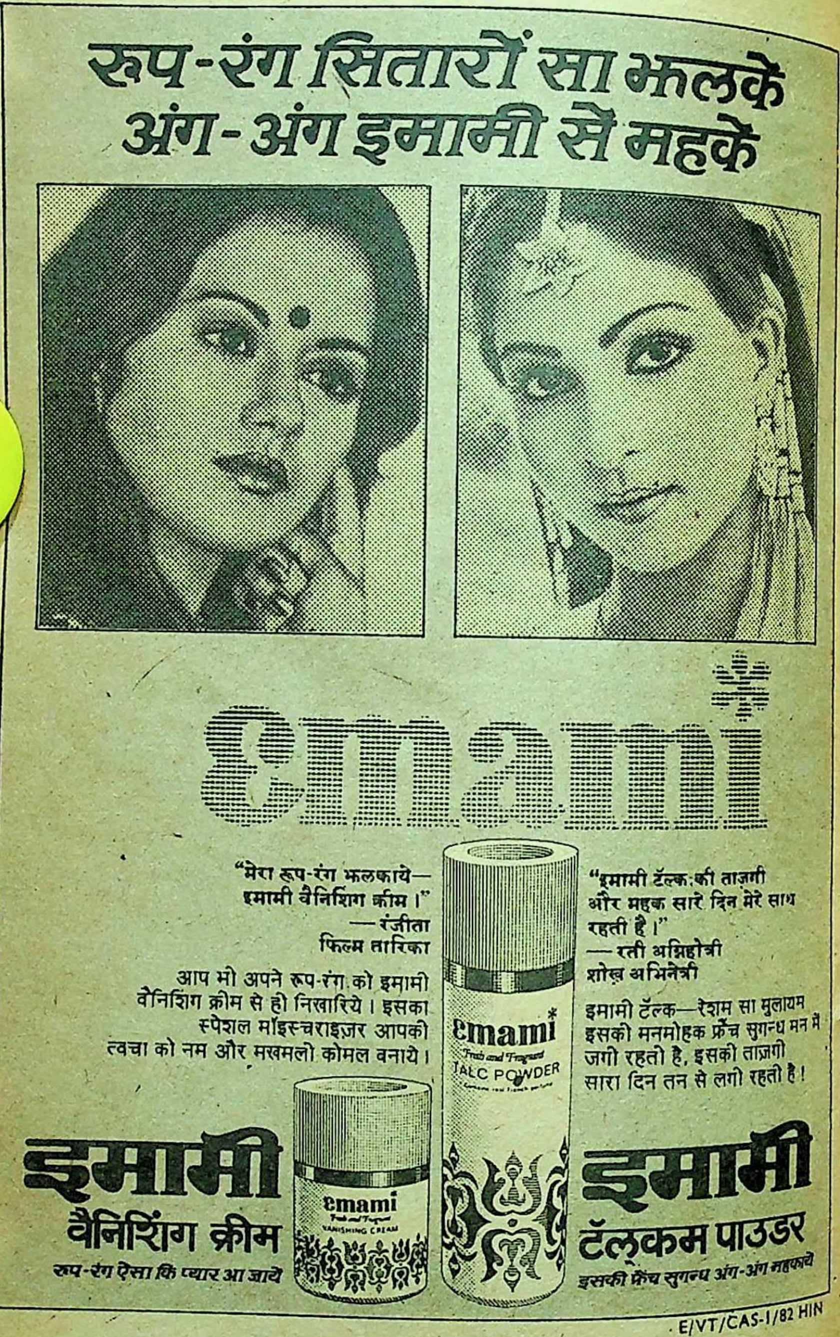

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्त विचार

खतरे से भरी रेलें

रेलों में यात्रा करना अब खतरे से खाली नहीं रह गया है. यात्रा के दौरान डकैतियों के मामले इतने बढ़ गए हैं कि अब संसद सदस्य भी इन की चपेट में आने लगे हैं. हाल ही में तिनसुकिया मेल में चलती गाड़ी में हुई एक डकैती में लोक दल व इंदिरा कांग्रेस के संसद सदस्य भी लूट लिए गए और प्रशासन देखता रह गया.

मजेदार बात यह है कि जब यह मामला संसद में उठाया गया तो रेल मंत्री अब्दुलगनी खां चौधरी ने भी हर बार की तरह यह कह कर टाल दिया कि सरकार जल्द कुछ कदम उठाएगी.

रेलों में अपराध बढ़ने का सब से बड़ा कारण है देश में बढ़ती अव्यवस्था. अपराधी चाहे औरतों की गले की जंजीरें खींचने वाले हों, सेंधमारी करने वाले हों या रेलों को लूटने वाले, पकड़े ही नहीं जाते. यदि कभीकभार गलती से कोई पकड़ में आ भी जाए तो उस के विरुद्ध पुलिस पर्याप्त प्रमाण नहीं जुटा पाती और वह बेदाग छूट जाता है.

रेलों में अपराध करने के पीछे अपराधियों को एक और आराम रहता है कि कोई भी पुलिस विभाग इस डकैती को अपने क्षेत्र में मानने को तैयार नहीं होता. यदि डकैती पड़ने वाले स्थल पर ही गाड़ी रुकवा कर रिपोर्ट दर्ज कराने की कोशिश की जाए तो सारा यातायात ही ठप हो जाएगा, क्योंकि पीड़ित लोगों को थाना ढूंढने और रिपोर्ट दर्ज कराने तक गाड़ी को कई घंटे वहीं खड़े रहना पड़ेगा. और अगर गाड़ी को अगले स्टेशन तक लाया जाए तो घटनास्थल के इलाके की पुलिस यह कहेगी कि अपराध उस के इलाके में हुआ ही नहीं.

यही नहीं, यदि मामला दर्ज हो भी सके तो पुलिस यात्री को यही डराती है कि मुकदमा चलने पर उसे बारबार गवाही आदि के लिए आना पड़ेगा.

अब ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो एक बार लूटे जाने पर फिर बारबार पुलिस, अदालत और मुजरिमों द्वारा लूटे जाने के लिए तैयार होगा?

इस बात का पुलिस व अपराधी खूब लाभ उठाते हैं. वे मिल कर यात्रियों को लूटते हैं.

रेल मंत्री ने समस्या से निबटने के लिए पुलिस अधिकारियों को और अधिकार देने की बात कही है. यह अब सरकार की सामान्य परंपरा बन गई है. जहां किसी ने उन के काम की आलोचना की कि उन्होंने मनमानी करने के अधिकार मांग लिए.

रेलवे पुलिस हो या राज्य पुलिस, पहले ही उन के पास बहुत अधिक अधिकार हैं. वे अब जिसे चाहें गिरफ्तार कर सकते हैं. अब वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहते हैं कि गिरफ्तार करने के बाद उन्हें कैदी को अदालत में प्रस्तुत करने और उस के विरुद्ध प्रमाण प्रस्तुत करने के लिए भी न कहा जाए. और उन्हें मनमानी करने की छूट मिल जाए.

वैसे पुलिस को और अधिकार मिलने पर भी होगा कुछ नहीं, क्योंकि समस्या अब पुलिस अधिकारों की नहीं, काम के प्रति अवहेलना की है. रेलवे सुरक्षा बल हो या राज्य पुलिस, सभी बिना काम किए पैसा खाना चाहते हैं, वे जानते हैं कि उन्हें काम न करने पर नौकरी से तो निकाला नहीं जा सकता है. उन के क्षेत्र में अपराध बढ़ें या कम हों, उन की बला से. बस उन का दबदबा, ऊपरी कमाई और सुविधाएं बरकरार रहनी चाहिए.

जब तक अच्छा काम करने पर पुरस्कार और खराब या कम काम करने पर दंड की व्यवस्था न होगी, प्रशासन का कोई भी भाग सही काम न कर पाएगा.

कम्यूनिस्ट तानाशाही चालू है

पोलैंड की कम्यूनिस्ट सरकार ने देश की सभी स्वतंत्र यूनियनों के गठन पर पाबंदी लगा दी है.

इस पाबंदी से किसी व्यक्ति को आश्चर्य नहीं होना चाहिए, क्योंकि कम्यूनिस्ट देशों में 'स्वतंत्र' शब्द से ही शासकों को चिढ़ होती है, अगस्त, 1980 में सोलिडेरिटी स्वतंत्र यूनियन ने गंडस्क में हड़ताल कर के शासकों के विरुद्ध आंदोलन छेड़ा था, लेकिन 16 महीने बाद ही देश की सत्ता सेना के हाथ में सौंप दी गई थी और यूनियन के नेता लेक वालेसा को गिरफ्तार कर लिया गया था.

दिसंबर, 1981 के बाद किसी को भी आशा नहीं रह गई थी कि भविष्य में पोलैंड में फिर कोई आजादी की बात उठने दी जाएगी. अब कानूनी प्रतिबंध लगा कर यूनियनों का गठन हमेशा के लिए समाप्त कर दिया गया है.

पोलैंड की ये यूनियनें मजदूरों की नहीं बल्कि जनता की यूनियनें थीं. उन्होंने गलती यह की कि केवल पैसे बढ़वाने आदि के बजाए ये यूनियनें कम्यूनिस्ट प्रणाली की भी आलोचना करने लगीं. इन्होंने बोलने, काम करने और संगठित होने की आजादी मांगनी शुरू कर दी.

कम्यूनिस्ट देशों में यह कभी भी बरदाश्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि 'मज़दूरों का स्वर्ग' केवल बंदूक की नोक पर तानाशाही के हाथों ही बन सकता है. जिन मजदूरों का नाम लेले कर कम्यूनिस्ट शासक सत्ता में रहते हैं, उन्हें वे गुलामों से ज्यादा नहीं समझते.

इस का कारण भी स्पष्ट है. कम्यूनिस्ट देशों में श्रम व शक्ति की इतनी बरबादी होती है कि यदि मजदूरों से जबरन काम न लिया जाए तो सरकार का काम दो दिन भी न चले.

केंद्रीयकरण एवं योजनाबद्ध विकास के नाम पर वहां छोटे से छोटा निर्णय लेने में महीनों लग जाते हैं. प्रबंधकों का अधिकांश समय आपसी राजनीतिबाजी में चला जाता है. दसियों रिपोर्टें तैयार होने और मीटिंगें होने के बाद भी उत्पादन की समस्याएं नहीं सुलझ पातीं.

पूर्वी यूरोप के कम्यूनिस्ट देशों के मजदूर इसी कारण पश्चिमी यूरोप के मजदूरों के मुकाबले बहुत गरीब हैं और कुंठित हैं. इसी लिए पूर्वी यूरोप के किसी न किसी कम्यूनिस्ट देश में अशांति पैदा होती रहती है.

कम्यूनिस्ट खेमे का दादा रूस इस अशांति को आखिर कैसे सहन कर सकता है? यदि पोलैंड में स्वतंत्र यूनियनें शक्ति पकड़ जातीं तो न केवल पूर्वी यूरोप बल्कि स्वयं रूस में भी हर जगह मजदूर विद्रोह कर बैठते. रूसी कम्यूनिस्ट शासक हाथ में आई सत्ता को इतनी आसानी से नहीं छोड़ सकते. इस के लिए तो जनता को वैसे ही संघर्ष करने पड़ेंगे जैसे सामंतशाही से छुटकारा पाने के लिए किए गए थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोलैंड की घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि पश्चिमी देशों जैसी मिश्रित प्रणाली ही वास्तव में एकमात्र ऐसी शासन व्यवस्था है जिस में लोकतंत्र जीवित रह सकता है और नागरिकों को अपनी इच्छा व सामर्थ्य के अनुसार काम करने के अवसर उपलब्ध हो सकते हैं.

रंगीन टेलीविज़न घाटे का सौदा

कई बार सरकार के छोटे से निर्णय किस तरह बड़ेबड़े उद्योगों को विनाश के कगार पर ला कर खड़ा कर सकते हैं, उस का एक ताजा उदाहरण रंगीन टेलीविजन का मामला है.

एशियाड के दौरान रंगीन प्रसारण शुरू होगा इसलिए सरकार ने कोरिया और जापान से लगभग 90,000 टेलीविजन सैटों के किट मंगवा कर भारतीय कंपनियों द्वारा जोड़ कर बेचे जाने की योजना स्वीकार की.

भारतीय कंपनियों ने सैटों के पुर्जों, मशीन आदि के आदेश दिए, प्रचार किया, अग्रिम राशि जमा की. लाखों रुपया इस में लगाया. यह उद्योग के लिए एक नई चुनौती थी, एक नया अवसर था. इन रंगीन टेलीविजनों की बिक्री लगभग 8,000 रुपए प्रति सैट के हिसाब से होनी थी.

जब यह सामान आ गया और टेलीविजन बनने ही वाले थे कि सरकार ने एक अप्रत्याशित निर्णय ले लिया कि विदेशों में बसा कोई भी व्यक्ति भारतीय नागरिक को रंगीन टेलीविजन उपहार के रूप में भेज सकता है और उस पर सीमा शुल्क भी बहुत कम कर दिया गया है.

इस प्रकार मंगवाए जाने वाले टेलीविजन सैट की कीमत दस से साढ़े दस हजार के करीब पड़ेगी.

अब समस्या यह है कि मात्र दो ढाई हजार रुपए ज्यादा दे कर विदेशी कंपनी का बढ़िया माल मिल रहा हो तो कौन व्यक्ति देशी कंपनियों का माल खरीदेगा?

देशी कंपनियों के लाखों रुपए के टेलीविजन सैट अब डब्बों में बंद रह जाएंगे और बहुत सी कंपनियों का दिवाला भी पिट सकता है.

यदि सरकार ने यह निर्णय पहले ले लिया होता तो बात दूसरी थी. तब या तो देशी कंपनियां रंगीन टेलीविजन बनाती ही नहीं या फिर केवल उतनी तादाद में बनातीं जितने बाजार में आसानी से बिक जाते.

दोतीन राजनीतिबाजों और दोचार नौकरशाहों के इस कदम से हजारों लोगों की आर्थिक स्थिति डावांडोल होने की नौबत आ गई है.

सिद्धांततः रंगीन टेलीविजन को आयात करने की छूट देने में कोई हर्ज नहीं है, क्योंकि इस तरह विदेशों में बसे भारतीयों की विदेशी मुद्रा अपनेआप देश में आ जाती है. नई तकनीक का आयात और देशी उत्पादकों से प्रतिस्पर्धा भी उद्योग को मजबूत करती है. यहां खराबी है तो केवल यह कि उत्पादकों ने इतने अधिक सामान का आयात करने में अपना पैसा लगा दिया है, जो अब बिक नहीं पाएगा.

यदि सरकार यह निर्णय तीनचार माह पहले ही ले लेती तो उत्पादक और खरीदार भलीभांति सोचसमझ कर इस बारे में कदम उठाते.

असंतुष्टों की सुनो

जैसेजैसे कुछ विधान सभाओं के चुनावों का समय निकट आता जा रहा है, इंदिरा कांग्रेस के राजनीतिबाज अपने पैंतरे बदलने लगे हैं. अब तक इंदिराजी का नाम सुनते ही उन के दल के नेता लोग पूंछ टांगों में दबा कर कान व सिर नीचे कर लेते थे कि उन्हें जहां हांकना है, हांक लो. अपने मुख्य मंत्री के सामने शेरों की तरह गुर्राने वाले राजनीतिबाज दिल्ली राजदरबार में पालतू पशु बन जाते थे.

लेकिन अब स्थिति बदलने लगी है. आंध्र प्रदेश के श्री अंजैया व भास्कर रेड्डी ने कुछ समय पहले दिल्ली में हुई कांग्रेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारिणी की गोष्ठी में बताए जाने के बावजूद आने से ही इनकार कर दिया, क्योंकि उन्हें डांटफटकार के लिए बुलाया जा रहा था. इंदिरा कांग्रेस में रहते हुए भी आंध्र के उन नेताओं ने इंदिराजी के आदेश की अवहेलना कर दी.

इसी तरह महाराष्ट्र में मुख्य मंत्री बाबा साहेब भोंसले की स्थिति इस प्रकार ढीली कर दी गई कि उन्हें अपने मंत्रिमंडल में अपने विरोधियों को ही शमिल करना पड़ा. मध्य प्रदेश में भी मंत्रिमंडल में परिवर्तन लाजिमी हो गए हैं.

जिन असंतुष्टों को दिल्ली दरबार के आदेश से अब तक मुंह तक नहीं लगाया जा रहा था अब उन्हें मनाफुसला कर किसी न किसी तरह दल की छवि सही रखने की कोशिश की जा रही है.

इंदिरा कांग्रेस का कांग्रेसी जानता है कि दल में वोट लेने की क्षमता सिवाए इंदिराजी के और किसी के पास नहीं है, इस के बावजूद वह अपनी पूरी कीमत मांगता है. राजनीति में आज कोई भी व्यक्ति देश या जनता की सेवा के लिए नहीं बल्कि पैसा और शक्ति बटोरने के लिए है. जब लंबे समय तक दल में रहने के बावजूद सत्ता में हिस्सा न मिले तो विद्रोह के अलावा चारा है ही क्या.

अब देखना यह है कि लाखों की तादाद में छुटभैयों से ले कर वरिष्ठ कांग्रेसियों को इंदिराजी कैसे संतुष्ट कर पाती हैं.

संघर्ष रिश्वत के हक का

बंबई के टेलीफोन कर्मचारियों ने शोषण, भेदभाव, अत्याचार, निर्ममता, तानाशाही आदि के खिलाफ जेहाद बोल दिया है. देश का मजदूर अब किसी की धौंस नहीं सहेगा. वह अपने अधिकारों के लिए लड़ेगा और उन्हें लड़ कर लेगा.

आखिर प्रबंधकों की यह हिम्मत कैसे हुई कि उन्होंने खार टेलीफोन एक्सचेंज के 70 कर्मचारियों के तबादले कर दिए, जिन में लाइनमैन व तकनीकी कर्मचारी भी शामिल हैं. यदि खार एक्सचेंज के ग्राहकों को नि… खराब टेलीफोन सेवा की शिकायत है तो… के लिए कर्मचारी कैसे दोषी हो सकते हैं… के लिए तो दोष सदा ही अधिकारियों का… है, जो वास्तविकता को पहचानते नहीं…

ये कर्मचारी तो वास्तव में ग्राहकों… सेवा करते हैं. तभी तो कईकई दिन त… खराब रहने वाले टेलीफोन, जो सैकड़ों… शिकायतों पर भी ठीक नहीं होते, लाइनमैन… का हफ्ता बांधते ही ठीक हो जाते हैं. जो लोग… इस हफ्ते को रिश्वत कहते हैं, वे वास्तव… मजदूरों के शोषक हैं. वे मजदूरों को बदनाम… करना चाहते हैं.

टेलीफोन कर्मचारी केवल उन ग्राहकों… की लाइनें खराब करते हैं जो कर्मचारी को… मनुष्य मानने से इनकार करते हैं, जो बि… पैसा दिए ही नायाब सेवा चाहते हैं. दुनिया… मजदूरों के हितों की रक्षा होती रहे, इस के… लिए आवश्यक है कि इस तरह की सामंती… मनोवृत्ति वाले ग्राहकों को सबक सिखाया… जाए, उन की टेलीफोन लाइनें काट दी जा…

जो लोग इस तरह के सबक को… गुंडागर्दी कहते हैं, वे ही वास्तव में अत्याचारी… हैं. उन्हें नजदीकी समुद्र में डुबा देना चाहिए… उन की अर्थी निकाली जानी चाहिए.

जो अधिकारी इन शिकायतों को सुने… वह तो मजदूरों का सब से बड़ा दुश्मन है और… आज का मजदूर नेता इस मनमानी को कैसे… सहन कर सकता है. एक बार नौकरी पाने के… बाद काम करना या न करना हर मजदूर का… मौलिक अधिकार है. सालों की अथक लड़ाई… के बाद ही तो यह अधिकार मजदूरों को मिला… है. विभागीय कारंरवाई, तबादले, पदोन्नति… पर रोक आदि हथियारों से इन मूल अधिकारों… को छीनने की कुत्सित कोशिश कोई मजदूर… सफल नहीं होने देगा.

दुनिया के मजदूरो एक हो जाओ. खार… टेलीफोन केंद्र के कर्मचारियों के साथ सहयोग… करो. आप के पास सिवा काम खोने के कुछ… खोने को नहीं है. हड़ताल के दौरान का वेतन… वर्दी, सुविधाएं सुरक्षित हैं, ग्राहक चाहे भाड़… में जाएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एशियाई खेल परिशिष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एशियाई खेल:

लेख • श्रीशचंद्र मिश्र

एक सफर वहां तक जहां से शुरू हुआ था

एशियाई खेल आंदोलन की शुरुआत 4 मार्च से 11 मार्च, 1951 तक नई दिल्ली में हुई थी. 31 साल 8 महीने 8 दिन बाद अब फिर एशियाई खेल नई दिल्ली में होने जा रहे हैं. बीच के इस अरसे में एशियाई खेलों के स्तर व रूप में काफी ज्यादा अंतर आ गया है. 1951 में छः खेलों में हिस्सा देशों के 489 खिलाड़ियों ने छः खेलों में हिस्सा लिया था, जबकि इस बार 32 देशों के हजार से ज्यादा खिलाड़ी 21 खेलों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

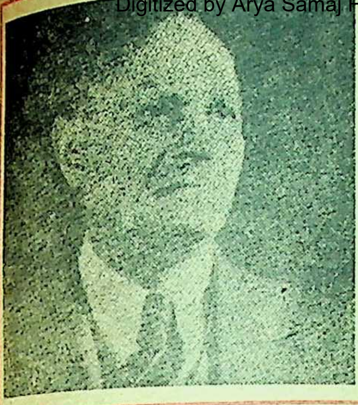

गुरुदत्त सौंधी: तमाम मुश्किलों के बाद जिन का सपना साकार हो सका.

कोरिया 441 सदस्यों का, चीन 400 सदस्यों का, सऊदी अरब 375 सदस्यों का व मलयेशिया 371 सदस्यों का दल भेज रहा है. कुल 463 स्वर्ण, 463 रजत व 503 कांस्य पदक दिए जाएंगे. स्वर्ण पदक मूलतः चांदी के बने हैं. उन पर सोने का पानी चढ़ा है. फिर भी इस बार के पदक अब तक के एशियाई खेलों की तुलना में सब से ज्यादा महंगे हैं. एक स्वर्ण पदक पर 570 रुपए की लागत आई है. कुल 14 सौ से ज्यादा पदक 12 लाख रुपए में बने हैं.

तीन दशक बाद फिर एशियाई खेल भारत में होने जा रहे हैं. अपनी लंबी यात्रा से गुजरते हुए ये खेल आज किस मुकाम तक पहुंचे हैं?

टोकियो में हुए एशियाई खेलों में हाकी में भारत और पाकिस्तान के बीच कड़ा संघर्ष रहा.

मुकाबला करेंगे.

सिर्फ तीन देश ही ऐसे हैं जो सभी खेलों में हिस्सा ले रहे हैं. मेजबान देश होने के नाते भारत, आज तक हुए आठों एशियाई खेलों की पदक तालिका में चोटी पर रहने वाला जापान व 1986 में दसवें एशियाई खेल आयोजित करने वाला दक्षिण कोरिया.

सब से बड़ा दल भारत का है—493 सदस्यों का. जापान 470 सदस्यों का, दक्षिण

31 सालों में एशियाई खेल विकसित हुए. इतना ही समय इस खेल आंदोलन को शुरू करने की कोशिशों में लग गया.

1896 में एथेंस में आधुनिक ओलंपिक खेल शुरू हुए. एशियाई देशों ने इन खेलों में हिस्सा लिया, लेकिन काफी समय तक यूरोपीय देशों के उच्च स्तर के सामने उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई विशेष सफलता नहीं मिल सकी.

ओलंपिक खेलों के इतिहास में नार्मन प्रिटचार्ड नाम के एक भारतीय खिलाड़ी का जिक्र आता है, जिस ने 1900 के पेरिस ओलंपिक खेलों में एथलेटिक्स मुकाबलों के दो रजत पदक जीते थे. लेकिन मूलतः वह भारत का नहीं था. वह ब्रिटिश नागरिक था और कलकत्ता छुट्टियां मनाने आया था. शौकिया तौर पर वह भारतीय प्रतिनिधि के नाते ओलंपिक खेलों में शामिल हो गया था.

एशियाई देशों को पहला स्वर्ण पदक दिलाया जापान के मीकिओ ओदा ने त्रिकूद में. यह 1928 के एम्सटर्डम ओलंपिक की बात है.

लेकिन ओलंपिक खेलों का प्रभाव एशियाई देशों में ऐसा गहरा पड़ा कि उसी स्तर के खेलों को एशिया के स्तर पर आयोजित करने की कोशिश शुरू की जाने लगी.

केंजी कीमिहारा: एशियाई खेलों का इतिहास पुरुष.

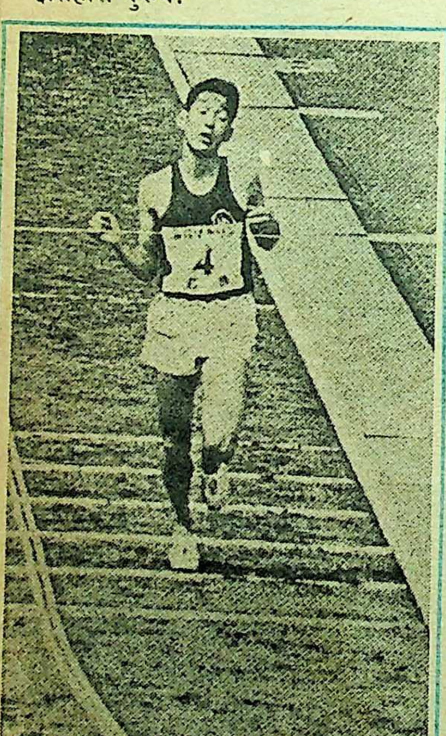

1913 में चीन, जापान व फिलीपीन ने मिल कर 'फार ईस्टर्न चैंपियनशिप गेम्स' या 'ओरिएंटल ओलंपिक गेम्स' का आयोजन किया. पहली बार यह मनीला में हुआ जिस में एथलेटिक्स, तैराकी, लान टेनिस, बास्केट बाल, वालीबाल व बेसबाल के मुकाबले हुए. फिलीपीन 141 अंक ले कर पहले स्थान पर रहा, चीन को 42 व जापान को सिर्फ 16 अंक मिले.

1915 में शंघाई में इन खेलों को एक स्थायी नाम– 'सुदूर पूर्वी खेल' दे दिया गया. साइकिल दौड़ को इस बार मुकाबलों में और शामिल किया गया. 92 अंक ले कर चीन इस बार चोटी पर रहा. फिलीपीन को 72 व जापान को 32 अंक मिले. 1917 में टोकियो में जापान 120 अंक ले कर चोटी पर पहुंच गया.

1919 में जब एक बार फिर मनीला में खेल हुए उस समय तक अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक महासंघ ने उन्हें मान्यता दे दी थी. 1921 में शंघाई में, 1923 में ओसाका में, 1925 में मनीला में और 1927 में फिर शंघाई में ये खेल आयोजित किए गए.

1927 में इन्हें हर चार साल में ओलंपिक खेलों के बीच में करने का फैसला किया गया. लिहाजा 1928 व 1932 के ओलंपिक खेलों के बीच टोकियो में खेल हुए जिन में भारत के कुछ एथलीटों ने भी हिस्सा लिया. मनीला में 1934 में आखिरी बार हुए खेलों में इंडोनेशिया डच ईस्ट इंडीज के नाम से शामिल हुआ.

गहरे मतभेद

प्रतिनिधि देशों के बीच गहरे मतभेद उभर आने की वजह से ये खेल बंद हो गए. इसी साल भारतीय ओलंपिक संघ के सचिव प्रोफेसर गुरुदत्त सोंधी ने पटियाला के महाराजा यजुवेंद्रसिंह के आर्थिक सहयोग से नई दिल्ली में 'पश्चिमी एशियाई खेल' शुरू किए. इस में भारत, फिलिस्तीन, अफगानिस्तान व श्रीलंका ने एथलेटिक्स, तैराकी व हाकी के मुकाबले में हिस्सा लिया. भारत को तीनों मुकाबलों में विजय मिली. तेल अवीव में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

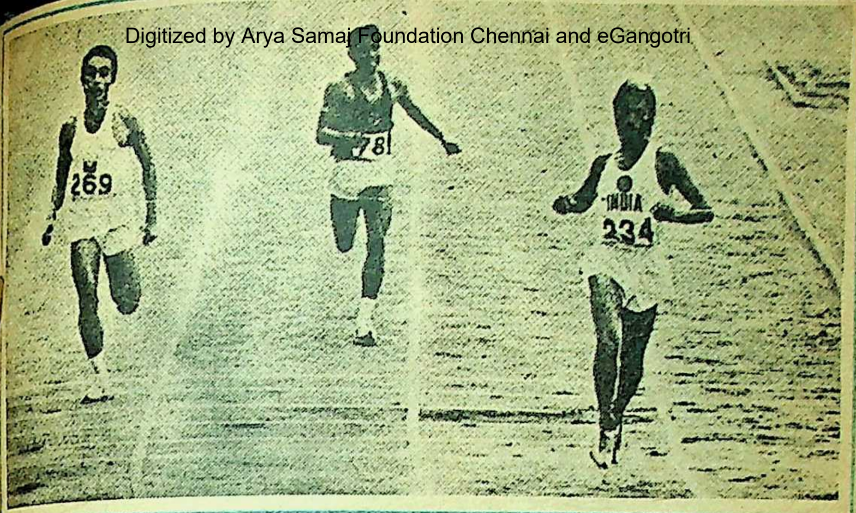

टोकियो के एशियाई खेलों में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले मिल्खासिंह प्रतियोगिता के निर्णायक क्षणों में.

होने वाले दूसरे खेल द्वितीय विश्व युद्ध की आशंका से नहीं किए गए और इस के बाद यह परंपरा ही खत्म हो गई.

लेकिन प्रोफेसर सोंधी ने हार नहीं मानी. 1947 में एशियाई देशों के सम्मेलन में उन्होंने एशियाई खेलों की जरूरत पर बल दिया. जब पटियाला के महाराजा व तत्कालीन प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू का उन्हें समर्थन मिला तो उन्होंने 'एशियन एथलेटिक' के नाम से पहला आयोजन 1948 में करने का प्रस्ताव रखा. लेकिन उसी साल लंदन में ओलंपिक खेल हो रहे थे, इसलिए यह योजना असली रूप नहीं ले सकी.

8 अगस्त, 1948 को लंदन की बैठक में कोरिया, चीन, फिलीपीन, बर्मा व श्रीलंका के प्रतिनिधियों ने 1950 में एशियाई खेल नई दिल्ली में करने के भारत के प्रस्ताव का समर्थन किया. यजुवेंद्रसिंह एशियाई खेल महासंघ के अध्यक्ष चुने गए जब कि प्रोफेसर सोंधी को सचिव व अर्थ सचिव बनाया गया.

फरवरी, 1950 व नवंबर 1950 की दो निर्धारित तिथियों पर न हो कर पहले एशियाई खेल 4 मार्च, 1951 को शुरू हो सके. लेकिन इस से पहले बाकायदा नाटकबाजी हुई. एशियाई खेलों के आयोजन के लिए आवश्यक धनराशि जुटा पाने में खुद को असमर्थ पा कर प्रोफेसर सोंधी ने एशियाई खेलों के निदेशक पद से 13 अप्रैल, 1950 को इस्तीफा दे दिया. लेकिन इस से आर्थिक समस्या नहीं सुलझी.

क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के तत्कालीन अध्यक्ष व राष्ट्रीय स्पोर्ट्स क्लब के सचिव एंथनी डी मेलो के अनुरोध पर राष्ट्रीय स्पोर्ट्स क्लब ने एक लाख रुपए की मदद दी. यजुवेंद्रसिंह ने भी कुछ मदद दी. जनरल करियप्पा ने सेना के दो विशाल भवन खिलाड़ियों के ठहरने के लिए मुहैया करा दिए.

राजपथ के पास 600 एकड़ जमीन पर आठ लाख रुपए की लागत से नेशनल स्टेडियम बनाया गया, जिस में 30 हजार दर्शक बैठ सकते थे. हाकी, फुटबाल व एथलेटिक्स के मुकाबले यहीं हुए. 11 देशों के 489 खिलाड़ियों ने एथलेटिक, तैराकी, फुटबाल, बास्केटबाल, साइकिल दौड़ व भारोत्तोलन के मुकाबलों में हिस्सा लिया.

इस प्रकार प्रोफेसर गुरुदत्त सोंधी का सपना पूरा हो गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन खेलों में जापान 24 स्वर्ण, 20 रजत व 16 कांस्य पदक जीत कर पहले नंबर पर रहा. 15 स्वर्ण, 16 रजत व 21 कांस्य पदकों से भारत को पदक तालिका में दूसरा स्थान मिला.

1954 के दूसरे एशियाई खेलों में मनीला में 18 देशों के 1,021 खिलाड़ियों ने आठ खेलों के 77 मुकाबलों में हिस्सा लिया. 38 स्वर्ण पदकों से जापान फिर चोटी पर रहा.

1958 के तीसरे एशियाई खेल जापान की राजधानी टोकियो में हुए. इस के लिए 63 लाख रुपए की लागत से 80 हजार दर्शकों की क्षमता वाले स्टेडियम, तरणताल, दो जिमनेजियम व एक छोटे स्टेडियम का निर्माण किया गया.

भारत के मिल्खासिंह (200 व 400 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक) व ताइवान के येंग चुआन क्वांग (डिकेथलन में स्वर्ण, 110 मीटर बाधा दौड़ व लंबी कूद में रजत और 400 मीटर बाधा दौड़ में कांस्य पदक) इन खेलों के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किए गए.

कुल 138 पदकों (67 स्वर्ण, 41 रजत व 30 कांस्य) से जापान पहले नंबर पर रहा. संयुक्त रूप से दूसरा स्थान पाने वाले फिलीपीन व दक्षिण कोरिया को सिर्फ आठआठ स्वर्ण पदक ही मिल सके. इन खेलों के दौरान 75 एशियाई व 2 विश्व कीर्तिमान टूटे.

राजनीतिक हस्तक्षेप

1962 के जकार्ता एशियाई खेल राजनीतिक हस्तक्षेप की वजह से बेहद कड़वे माहौल में हुए. इंडोनेशिया अधिकारियों ने ताइवान व इजराइल को खेलों में भाग लेने की इजाजत नहीं दी. गुरुदत्त सोंधी ने इस का विरोध किया, जिस की वजह से उन्हें काफी अपमानित किया गया. इंडोनेशिया का छात्र वर्ग हिंसात्मक हो उठा और प्रोफेसर सोंधी को जान बचाने के लिए चोरीछिपे जकार्ता से निकलना पड़ा.

अंतरराष्ट्रीय भारोत्तोलन संघ ने इजराइल व ताइवान की अनुपस्थिति में भारोत्तोलन के सभी खिलाड़ियों को अयोग्य करार देने की धमकी दे डाली. लिहाजा भारोत्तोलन को जकार्ता एशियाई खेलों में शामिल ही नहीं किया गया.

17 देशों के 1,600 खिलाड़ियों ने 12 खेलों में हिस्सा लिया. जापान 122 पदक ले कर फिर चोटी पर रहा. भारत 11 स्वर्ण, 13 रजत व 10 कांस्य पदकों से तीसरे नंबर पर पहुंचा. भारत की सर्वश्रेष्ठ सफलता फुटबाल में रही, जिस में तमाम दर्शकों की हूटिंग का सामना करते हुए उस ने दक्षिण कोरिया जैसी मजबूत टीम को 2-1 से हरा कर स्वर्ण पदक जीता.

पांचवें एशियाई खेल 1966 में बैंकाक में हुए. 12 दिन के इन खेलों में 18 देशों ने 13 मुकाबलों के लिए 1945 खिलाड़ी व अधिकारी भेजे.

भारतीय दल के चुनाव को ले कर सरकार व भारतीय ओलंपिक संघ के अधिकारियों के बीच काफी जबरदस्त विवाद पैदा हो गया. तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के हस्तक्षेप से यह विवाद सुलझा. 78 स्वर्ण, 53 रजत व 33 कांस्य पदक ले जापान ने फिर से पहला स्थान पाया. भारत को पदक तालिका में पांचवां स्थान ही मिल सका, लेकिन राहत की बात रही एशियाई खेलों की एकमात्र हाकी सफलता.

1970 के एशियाई खेल करने की बारी दक्षिण कोरिया की थी, लेकिन अधिक खर्च को देखते हुए उस के द्वारा एशियाई खेल आयोजित करने में असमर्थता व्यक्त करने के बाद बैंकाक में ही छठे एशियाई खेल किए गए. 13 खेलों में इस बार 18 देशों के दो हजार से ज्यादा खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया.

74 स्वर्ण, 47 रजत व 23 कांस्य पदक जीत कर जापान ने लगातार छठी बार एशियाई खेलों की पदक तालिका में पहला स्थान पाया.

1974 के तेहरान एशियाई खेलों में ताइवान की जगह चीन को निमंत्रित किया गया. 1972 के म्यूनिक ओलंपिक में हुए हत्याकांड को ध्यान में रख कर इस बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरक्षा के कड़े प्रबंध किए गए. लेकिन इस के बावजूद गंदी राजनीति का जहर इन खेलों को विषाक्त कर ही गया. उस के लिए भला कौन सी सुरक्षा व्यवस्था की जाती?

चीन, पाकिस्तान व अरब देशों ने इजराइल का कई खेलों में खुल्लमखुल्ला विरोध किया.

25 देशों के तीन हजार खिलाड़ियों ने 16 खेलों में हिस्सा लिया. कुल 15 नए कीर्तिमान इन खेलों के दौरान बने. चीन व ईरान से कड़ी चुनौती मिलने के बावजूद जापान फिर चोटी पर रहा.

1978 में एशियाई खेल फिर बैंकाक में हुए. 1976 में पाकिस्तान ने इन खेलों को आयोजित कर पाने में अपनी असमर्थता व्यक्त कर दी. विभिन्न देशों से आर्थिक सहयोग पा कर बैंकाक इन खेलों के आयोजन के लिए तैयार हुआ. 12 दिन तक 19 खेलों में 25 देशों के तीन हजार से ज्यादा खिलाड़ियों ने 200 स्वर्ण पदकों के लिए मुकाबला किया.

जापान 70 स्वर्ण, 60 रजत व 49 कांस्य पदकों से चोटी पर रहा. चीन को 51 स्वर्ण, 54 रजत व 47 कांस्य पदकों से दूसरा स्थान मिला.

प्रतिकूल माहौल

राजनीतिक विसंगतियां इन खेलों के दौरान कहीं ज्यादा उभर कर सामने आईं. अरब देशों ने इन खेलों के लिए काफी मोटी रकम दी थी, इसलिए उन्होंने इजराइल को खेलों से बाहर रखने की अपनी शर्त मनवा ली. दक्षिण कोरिया व उत्तर कोरिया की महिला व पुरुष खिलाड़ियों के बीच मुठभेड़ की स्थिति लगातार पैदा होती रही. उत्तर कोरिया के खिलाड़ी दुर्व्यवहार करने में सब से आगे रहे.

बहरहाल खिलाड़ियों ने अपनी निजी सफलताओं से इस कटुता को काफी हद तक कम किया. हरीचंद ने 5,000 मीटर व 10,000 मीटर की दौड़ में दोहरी सफलता प्राप्त की. उत्तर कोरिया की किम ओक सुन ने 1,500 मीटर व 3,000 मीटर की दौड़ों में

अनुसुया बाई: एशियाई स्तर तक पहुंचने का सपना पूरा नहीं हो सका.

ऐसी ही सफलता प्राप्त की.

तैराकी के मुकाबलों में जापान ने 2 स्वर्ण, स्वर्ण, 17 रजत व 5 कांस्य पदक जीते टी. शुजी ने दो, तकाहाशी शिगेहिरो ने दो एस. कयामा ने भी दो ही व्यक्तिगत खिता जीते. महिला वर्ग में सी. वातानाबे, या हात्सुदा, हिराता माओ के साथ सिंगापुर क जूनी भी दोहरी सफलता पाने में सफल रही

इस-बार एशियाई खेलों में सब से ज्यादा देश व सब से ज्यादा खिलाड़ी हिस्सा ले रहे हैं. सब से ज्यादा खेल भी इस दौरान होंगे उम्मीद की जानी चाहिए कि नवें एशियाई खेलों में कई नई विलक्षण सफलताएं हासिल की जाएंगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचय उन खेलों का जो

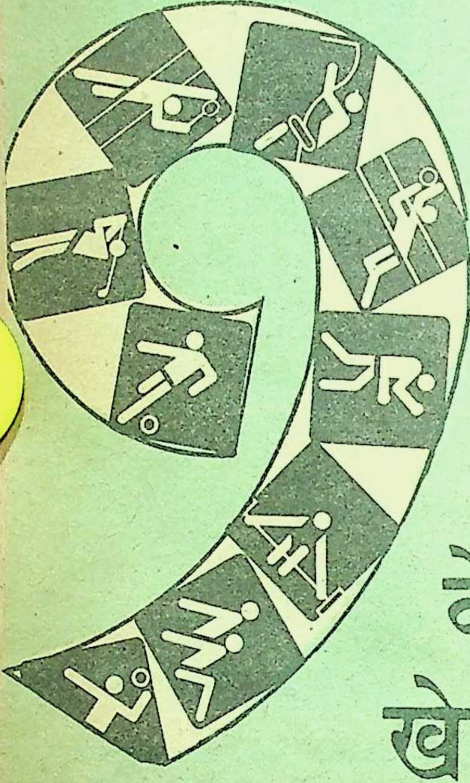

वें एशियाई खेलों में खेले जाते हैं

एशियाई खेल आंदोलन का जितना विकास हुआ, उसी के ानुपात में खेल स्पर्धाओं और उन में हिस्सा ाने वाले खिलाड़ियों की संख्या में भी वृद्धि हुई . 1951 में कुल छः खेल स्पर्धाओं में ुकाबले हुए थे. जिन के नाम हैं : एथलेटिक्स, ास्केट बाल, भारोत्तोलन, फुटबाल, तैराकी र साईकिल दौड़. इस बार कुल खेलों की ंख्या 21 है. 1974 में तलवारबाजी को व 978 में बाउलिंग को एशियाई खेलों में शामिल किया गया था. दिल्ली के एशियाड खेलों में ये दोनों स्पर्धाएं नहीं होंगी. इन की जगह चार नए खेल– गोल्फ, घुड़सवारी, नौकायन व हैंडबाल शामिल किए गए हैं.

इन 21 खेलकूद स्पर्धा के अलावा दो और खेल भी होंगे, लेकिन उन को प्रदर्शनी खेलों का नाम दिया गया है. इन में विजेताओं को कोई पदक नहीं दिए जाएंगे. ये खेल हैं– भारत का कबड्डी व मलेशिया का सेपक ताकरा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीरंदाजी

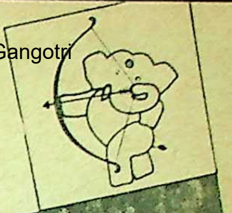

भारत या एशिया में ही नहीं समूचे विश्व में तीरंदाजी यानी धनुर्विद्या का बहुत पुराना इतिहास रहा है. लेकिन खेलों में विश्व

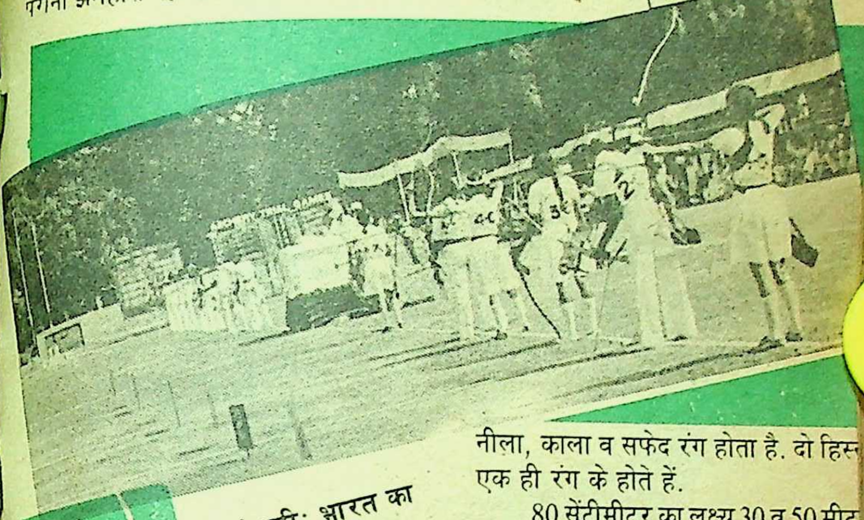

तीरंदाजी: भारत का संदेहास्पद भविष्य.

स्तर पर तीरंदाजी का जो रूप सामने आया है, उस में तीर कमान की पुरानी परिभाषा पूरी तरह बदल गई है. उस की जगह अब आधुनिक किस्म के उपकरणों ने ले ली है. आजकल विश्व खेल प्रतियोगिताओं में फाइबर ग्लास के धनुष इस्तेमाल किए जाते हैं, इन में लचक होती है.

तीरंदाजी में लक्ष्य गोल चांद जैसा होता है. यह जमीन से 1.295 मीटर की ऊंचाई पर रहता है. लक्ष्य का अर्धव्यास 122 सेंटीमीटर या 80 सेंटीमीटर होता है. इसे दस हिस्सों में बांट दिया जाता है. अगर अर्धव्यास 122 सेंटीमीटर हो तो 6.1 सेंटीमीटर की चौड़ाई में और अगर 80 सेंटीमीटर हो तो 4 सेंटीमीटर की चौड़ाई में. इन दस हिस्सों में पांच रंग किए जाते हैं. बीच वाला हिस्सा सुनहरा रहता है और उस के बाद लाल, नीला, काला व सफेद रंग होता है. दो हिस्से एक ही रंग के होते हैं.

80 सेंटीमीटर का लक्ष्य 30 व 50 मीट की दूरी से निशाना लगाने के लिए व 12 सेंटीमीटर का लक्ष्य 60,70 व 90 मीटर क दूरी से निशाना लगाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है. अगर तीर सुनहरे घेरे में ल तो 10 अंक मिलते हैं और बाहरी सफेद सि पर लगे तो एक अंक मिलता है.

पुरुष खिलाड़ियों को 30, 50, 70 व 9 मीटर की दूरी से निर्धारित निशाने लगा होते हैं, जब कि महिला खिलाड़ियों के लि यह दूरी 30, 50, 60 व 70 मीटर होती है निशाना खड़े हो कर साधा जाता है. तीन ती फेंकने के लिए ढाई मिनट का समय दिय जाता है. कमान 1.676 मीटर (66 इंच) 1.575 मीटर (62 इंच) तक की होती है. इ 65 से 70 सेंटीमीटर (26 इंच से 28 इंच) त खींचा जा सकता है. इस का वजन महिला के लिए 10.9 से 11.8 किलोग्राम व पुरुषों लिए 11.8 से 12.73 किलोग्राम तक होता है

तीरंदाज चमड़े का बना पट्टा पहनते जो कुहनी तक उन के हाथ की सुरक्षा करत है, रबर के दस्ताने भी होते हैं. ती अल्युमिनियम के होते हैं और इन का आकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

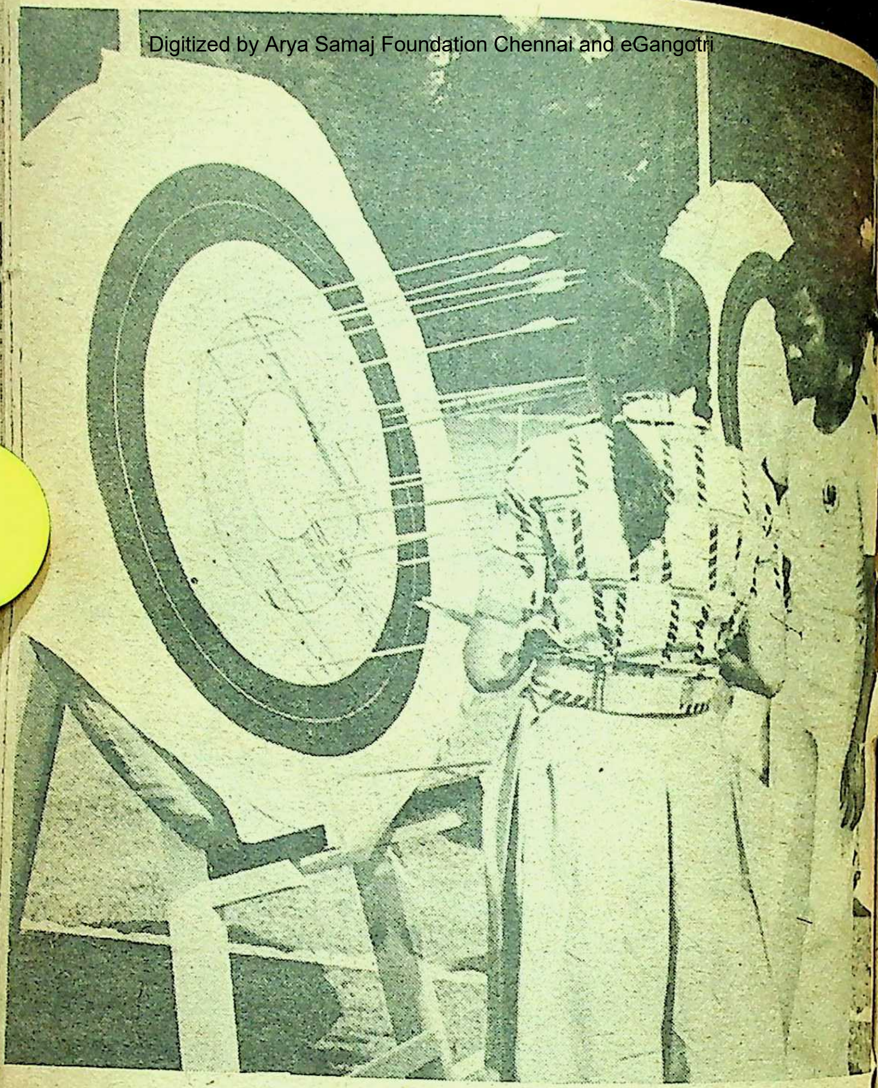

प्रतियोगिता के पूर्व प्रतियोगी निरीक्षण करते हुए.

ज़न व लंबाई चुनना तीरंदाज के हाथ में होता है.

तीरंदाजी को एशियाई खेलों में 1978 में पहली बार शुरू किया गया था. तब पुरुष वर्ग में जापान और महिला वर्ग में जापान व कोरिया संयुक्त विजेता रहे थे. अब तो इस खेल में इंडोनेशिया व चीन ने भी दखल देना शुरू कर दिया है.

व्यक्तिगत मुकाबलों में इंडोनेशिया के डोनाल्ड पाडियागम के 1272 अंकों के कीर्तिमान की तुलना में भारत का प्रदीप कुंड 1140 अंकों के साथ काफी पीछे हैं. पश्चिम बंगाल की कृष्णा दास का भारत में 1122 अंकों का कीर्तिमान है जो चीन की फान आइ मेंग के 1243 अंकों के एशिया कीर्तिमान से काफी पीछे है.

तीरंदाजी में भारतीय यदि तीसरा स्थान भी पा लें तो गनीमत होगी. तीरंदाजी दिल्ली विश्वविद्यालय के मैदान में 21 व 22 नवंबर को होगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

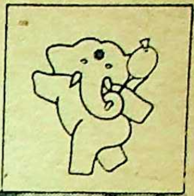

बैडमिंटन

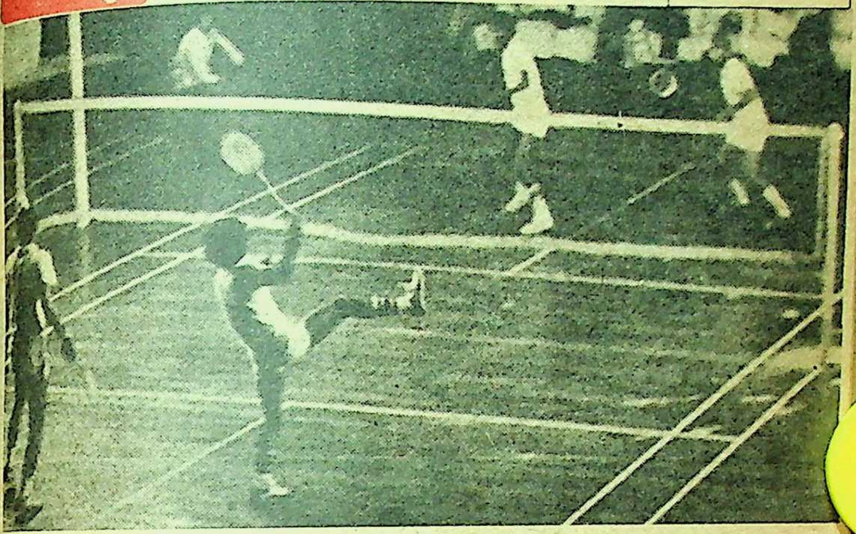

बैडमिंटन के मुकाबले राजघाट के नजदीक बने इंद्रप्रस्थ इनडोर स्टेडियम में 25, 26, 27, 28 व 29 नवंबर को और 1 से 3 दिसंबर तक होंगे.

1962 के यकर्ता एशियाई खेलों में पुरुष व महिला वर्ग के बैडमिंटन मुकाबले शुरू किए गए थे. 1966 के बैंकाक खेलों के दौरान इस में मिश्रित युगल मुकाबला भी जोड़ दिया गया.

अब तक हुए छः एशियाई खेलों के बैडमिंटन के मुकाबलों में इंडोनेशिया मलयेशिया, जापान व चीन का ही दखल रहा है. बाजी इंडोनेशिया के हाथ रही है. कुल 14 स्वर्ण पदक इंडोनेशिया इन में जीत चुका है.

भारत को अब तक बैडमिंटन में कोई स्वर्ण पदक नहीं मिल सका है और इस बार भी प्रकाश पादुकोन की गैर मौजूदगी की वजह से इस की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती. प्रकाश अधिकृत रूप से पेशेवर खिलाड़ी बन गया है और नियमों के तहत वह एशियाई खेलों में हिस्सा नहीं ले सकता.

बैडमिंटन में सात मुकाबले होते हैं—पुरुषों व महिलाओं के एकल, युगल व टीम मुकाबले और मिश्रित युगल. टीम में चार खिलाड़ी होते हैं. इस बार बैडमिंटन मुकाबलों के लिए कुल 80 पदक दिए जाएंगे, जिन में से 20 स्वर्ण पदक हैं.

एकल मैचों के लिए कोर्ट 44 फुट लंबा व 17 फुट चौड़ा होता है. युगल मैचों के लिए मैदान (कोर्ट) की चौड़ाई 20 फुट हो जाती है. जो चिड़िया (शटल काक) इस्तेमाल की जाती है. उस में अर्धगोलाकार आकार लिए बेलननुमा कार्क होता है. चिड़िया में 16 पंख होते हैं. वजन 73 से 85 ग्रेंस के बीच में होता है.

पहले 15 अंक बनाने वाला खिलाड़ी जीत जाता है, बशर्ते कि उस के प्रतिद्वंद्वी के 13 से कम अंक हों.

नवें एशियाई खेलों में बैडमिंटन के खिलाड़ी के लिए चीन व इंडोनेशिया के बीच टक्कर होगी. भारतीय खिलाड़ियों के लिए सफलता तीसरा स्थान पा लेना होगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एथलेटिक्स

एथलेटिक्स या दौड़कूद प्रक्षेपण की स्पर्धाओं में पुरुष व महिला दोनों वर्गों में कुल 52 मुकाबले होंगे.

एथलेटिक्स में होने वाले मुकाबलों को तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है– दौड़ने, कूदने, फेंकने व सम्मिलित खेलों में.

दौड़ने की स्पर्धाओं में भी चार वर्ग हैं. कम दूरी की दौड़ें (इन में बाधा दौड़ व रिले दौड़ भी शामिल हैं) पहले वर्ग में आती हैं. ये हैं–100 मीटर, 200 मीटर की फर्राटा व 400 मीटर की दौड़ें. पुरुषों के लिए बाधा दौड़ 110 मीटर व 400 मीटर की होती है, जब कि महिलाओं के लिए 100 मीटर व 400 मीटर की. 400 मीटर की दौड़ 80.3 मीटर के दो सीधे ट्रेक व 119.7 मीटर के 2 घुमावदार ट्रेकों पर होती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाधा दौड़ में खिलाड़ी को कुदान मारते [illegible] बाधाएं भी पार करनी होती हैं. पुरुषों के [illegible] 110 मीटर की दौड़ में बाधाएं 1.067 [illegible] ऊंची व 400 मीटर की दौड़ में 0.914 [illegible] ऊंची होती हैं. महिलाओं के लिए [illegible]ओं की ऊंचाई 100 मीटर में 0.84 [illegible] रहती है. 400 मीटर बाधा दौड़ में हर [illegible] के बीच 35 मीटर का अंतर होता है.

रिले दौड़ में चार खिलाड़ी दौड़ते हैं. [illegible] में 0.28 से 0.30 मीटर लंबी व 50 ग्राम [illegible]नी खोखली ट्यूब हर खिलाड़ी को अपने [illegible] की दौड़ पूरी करने के बाद अपने साथी [illegible] देनी होती है.

दूसरे वर्ग में मध्यम दूरी की दौड़ें आती हैं–800 मीटर व 1,500 मीटर.

5,000 मीटर, 10,000 मीटर व [illegible],000 मीटर की पानी बाधा दौड़ [illegible]टीपलचेस) के अलावा मैराथन दौड़ [illegible]2,195 मीटर) व महिलाओं की मैराथन [illegible] दूरी की दौड़ें तीसरे वर्ग की दौड़ों में आती [illegible] पानी बाधा दौड़ में लकड़ी की 28 व पानी [illegible] 7 बाधाएं होती हैं. पानी की सतह 70 सेंटीमीटर लंबी व 366 सेंटीमीटर चौड़ी होती है. उस से पहले की बाधा 91.4 सेंटीमीटर ऊंची होती है.

20 किलोमीटर की तेज चाल चौथे वर्ग की एकमात्र स्पर्धा है.

कूदने के मुकाबलों में ऊंची कूद, लंबी कूद, त्रिकूद व बांस कूद शामिल हैं. लंबी कूद 1.22 मीटर लंबे, 200 मिलीमीटर चौड़े व 100 मिलीमीटर गहरे स्थान से शुरू की जाती है और खत्म होती है 4 मीटर चौड़े व 5 मीटर लंबे मैदान में. हर खिलाड़ी को 6 मौके दिए जाते हैं और इस में उस के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को उस की उपलब्धि माना जाता है.

ऊंची कूद के लिए 2 किलोग्राम वजनी क्रास बार को पहले 3 मीटर से 4 मीटर तक की ऊंचाई पर रखा जाता है. पोल वाल्टया बांस कूद में 2.26 किलोग्राम तक वजनी क्रास बार को 3.86 से 4.52 मीटर की ऊंचाई तक रखा जाता है. बांस सामान्यतः फाइबर ग्लास का होता है और कितनी भी लंबाई व वजन का हो सकता है.

त्रिकूद में पहले कूद कर थोड़ा तेजी से

नेहरू स्टेडियमः यहां पर एथलीट के मुकाबले होंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

डग भर [illegible] होती है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फेंकने या प्रक्षेपण के मुकाबलों में गोला फेंक, भाला फेंक, तारगोला फेंक व चक्का फेंक की स्पर्धाएं आती हैं.

गोला फेंक में पुरुषों को 7.26 किलोग्राम वजनी व 110 से 130 मिलीमीटर व्यास का व महिलाओं को चार किलोग्राम वजनी व 95 से 110 मिलीमीटर के व्यास का लौह पिंड अधिकतम 2.135 मीटर व्यास के घेरे में खड़े हो कर फेंकना होता है.

चक्का फेंकने के लिए घेरे का व्यास 2.50 मीटर होता है. चक्के का वजन पुरुषों के लिए दो किलोग्राम व व्यास 219 से 222 मिलीमीटर तथा महिलाओं के लिए क्रमशः एक किलोग्राम व 180 से 182 मिलीमीटर तक होता है.

तारगोला में कुल वजन 7.26 किलोग्राम होता है. 2.135 मीटर व्यास के घेरे से इसे फेंका जाता है. भाले का वजन पुरुषों के लिए 800 ग्राम व महिलाओं के लिए 600 ग्राम होता है. इस की लंबाई क्रमशः 260 से 270 सेंटीमीटर व 220 से 230 सेंटीमीटर तक

डिस्कस थ्रो (नीचे) व ऊंची कूद (दाएं) खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर टिका भविष्य.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

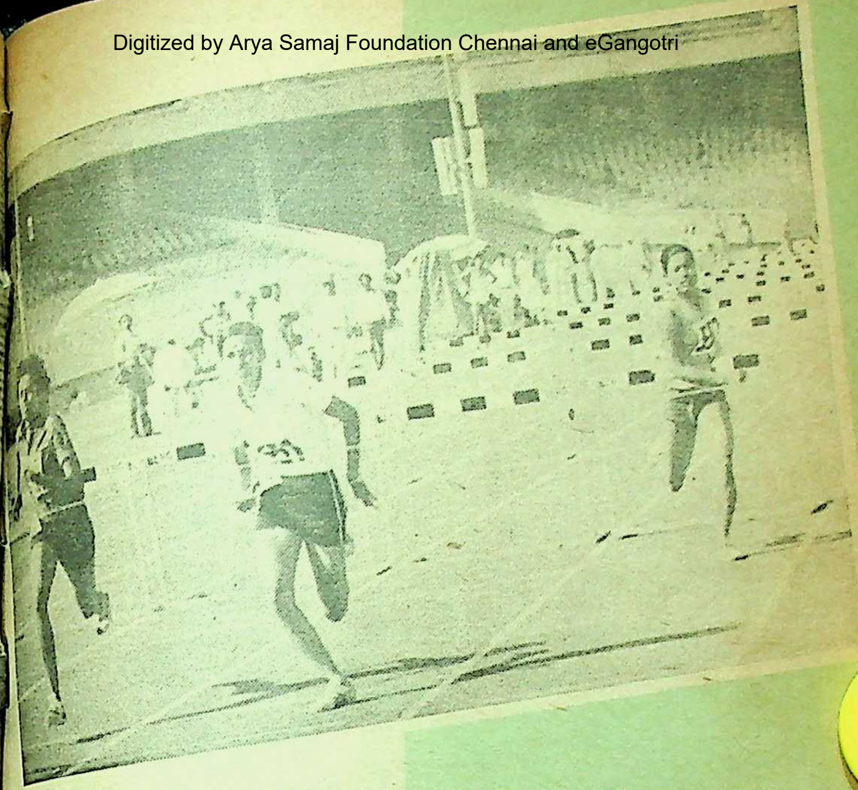

भारतीय एथलीट: कुछ दौड़ों में सफलता की उम्मीद.

रहती है.

सम्मिलित खेलों में पुरुषों के लिए डिकेथलन (दस खेल) व महिलाओं के लिए पेंटेथलन (पांच खेल) स्पर्धा होती है. प्रत्येक के लिए एकएक हजार अंक नियत होते हैं.

एशियाई खेलों के इतिहास में भारत को सब से ज्यादा सफलता एथलेटिक्स में ही मिली है. 1951 में एथलेटिक्स में 11 स्वर्ण पदक जीतने के बाद 1954 में व 1962, 1966, 1970 व 1974 में भारत ने चारचार स्वर्ण पदक जीते थे. 1958 में उसे पांच व 1978 में 9 स्वर्ण पदक एथलेटिक्स में मिले थे.

इस बार भी हालांकि कोई अप्रत्याशित सफलता नहीं मिलने वाली है, फिर भी पिछले खेलों जैसी स्थिति तो रह ही सकती है.

एथलेटिक्स के मुकाबलों में जापान का शुरू से ही बोलबाला रहा है. चीनी खिलाड़ियों के मैदान में आ जाने से उस की पकड़ थोड़ी ढीली जरूर हुई है.

मार्च 1980 के बाद से अब तक करीब 16 प्रशिक्षण शिविर भारतीय एथलीटों के लिए लगाए जा चुके हैं. लेकिन कुछ दौड़ों में भारतीय खिलाड़ियों को सफलता मिलने की उम्मीद है. श्रीराम सिंह, हरीचंद, गोपाल सैनी, गीता जुत्शी, राजकुमार, हाकमसिंह, ए. राजन दौड़ों में और साबिर अली डिकेथलन में सफलता पा सकते हैं.

ऊंची कूद में चीन के झू जिया हुआ, त्रिकूद में उसी के जोऊ झेनेकर्सियान व लंबी कूद में यू हुआंग सब से आगे हैं. कम व ज्यादा दूरी की दौड़ों में जापानी धावकों का वर्चस्व कायम रहने की संभावना है.

महिला वर्ग में मुख्य मुकाबला जापान व चीन के बीच होगा. फिलीपींस की लीडियो डे बेगा जरूर कड़ी चुनौती दे सकती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

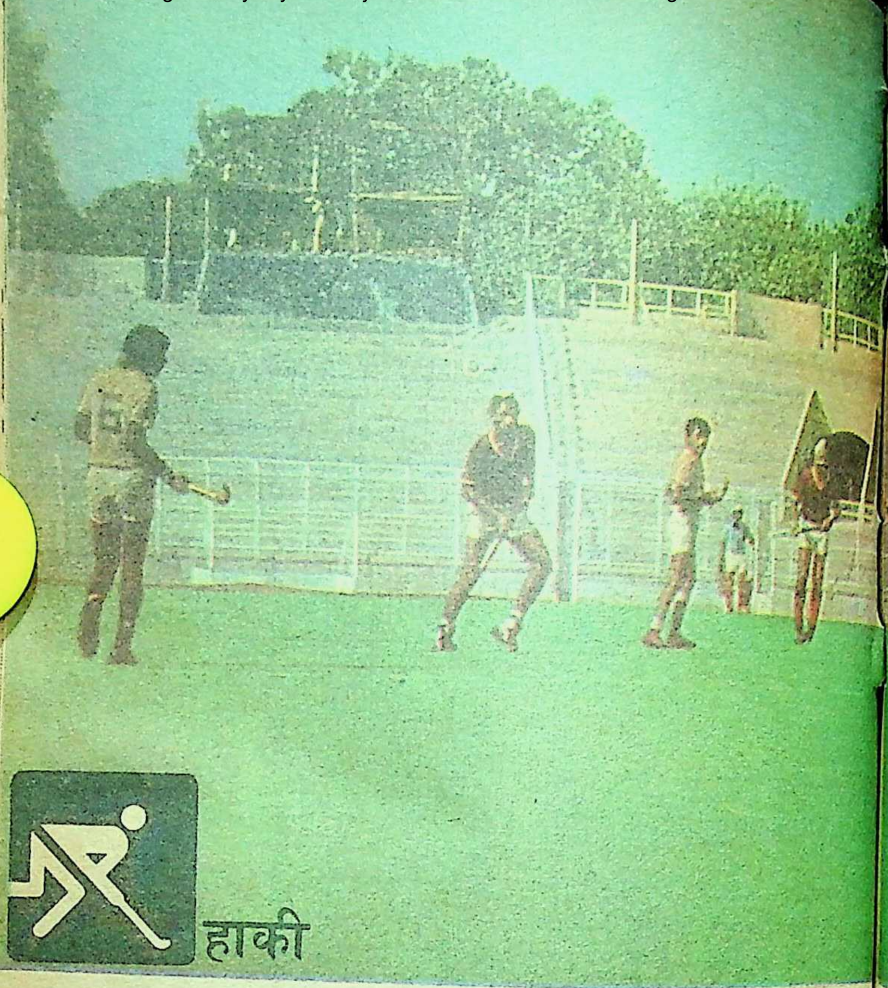

हाकी

हाकी का खेल एशियाई खेलों में 1958 में पहली बार शामिल किया गया था. तब से हुए कुल छः खेलों में सिर्फ एक बार 1966 में भारत को स्वर्ण पदक मिला, बाकी पांचों मौकों पर पाकिस्तान बाजी मारने में सफल रहा. पिछले एक साल में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दोनों देशों की जो स्थिति रही है, उस में नहीं लगता कि इस बार भी पाकिस्तान को हाकी का स्वर्ण पदक जीतने से कोई रोक पाएगा.

1981 की विश्व कप हाकी प्रतियोगिता में भारत व पाकिस्तान के लिए भिड़ने का कोई मौका ही नहीं आ सका. पाकिस्तान विश्व विजेता बना, जब कि भारत पांचवें स्थान पर रहा. कराची में 1982 में हुए एशियाई कप मुकाबलों में पाकिस्तान ने भारत को 5-0 से हराया. एम्सटर्डम में चैंपियंस कप हाकी में हिस्सा लेने के लिए जाने से पहले भारतीय टीम दुबई में पाकिस्तान से दोनों प्रदर्शनी मैच हारी. चैंपियंस कप में भारत ने जरूर पाकिस्तान को 5-4 से हराया, लेकिन जहां पाकिस्तान तीसरे नंबर पर रहा, वहां भारत को पांचवां स्थान मिला. यही हालत दोनों देशों की कुआलालंपुर में आयोजित विश्व जूनियर हाकी प्रतियोगिता में हुई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

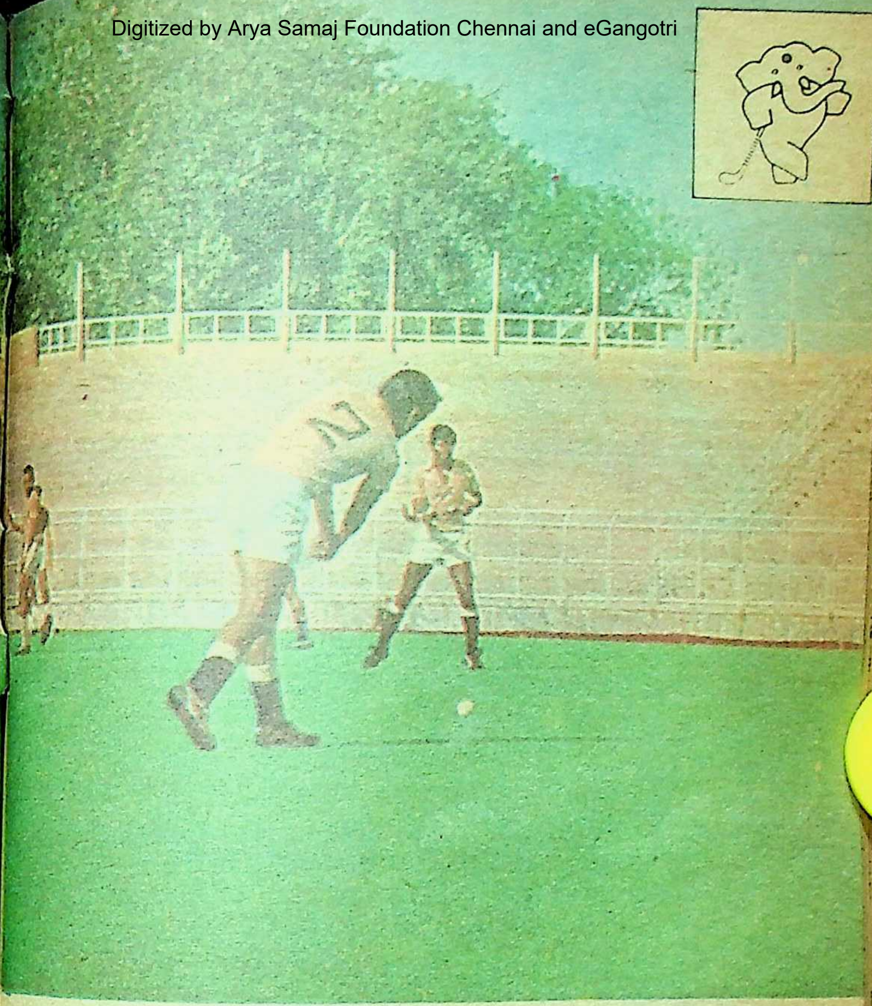

इस बार मलयेशिया भारत के लिए परेशानी पैदा कर सकता है, फिर भी भारत के लिए रजत पदक जीतना मुशकिल नहीं होना चाहिए.

पुरुष वर्ग में नौ टीमें हिस्सा ले रही हैं, ये मैच 20 नवंबर से 1 दिसंबर तक नेशनल स्टेडियम के एस्ट्रोटर्फ (कृत्रिम घास का मैदान) पर खेले जाएंगे.

पहली बार एशियाई खेलों में महिला वर्ग की हाकी के मुकाबले भी हो रहे हैं, जिस के लिए छः टीमें 20 से 26 नवंबर तक शिवाजी स्टेडियम में भिड़ेंगी. जापान भारत को थोड़ी चुनौती दे सकता है. कम से कम इस वर्ग में थोड़ी कोशिश से स्वर्ण पदक पाया जा सकता है. हाकी का खेल 100 गज लंबे व 55 से 60 गज चौड़े मैदान में 11-11 खिलाड़ियों की दो टीमों के बीच 35-35 मिनट के दो हिस्सों में खेला जाता है. बीच में 10 मिनट का विश्राम दिया जाता है.

हाकी स्टिक का वजन पुरुषों के लिए 28 औंस व महिलाओं के लिए 23 औंस रहता है. हाकी स्टिक लकड़ी की होती है व इस की लंबाई 36 इंच रखी जाती है. गेंद का गोलाई $8\frac{13}{16}$ इंच से $9\frac{1}{4}$ इंच के बीच रखा जाता है. वजन साढ़े पांच औंस से पौन छः औंस के बीच होता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

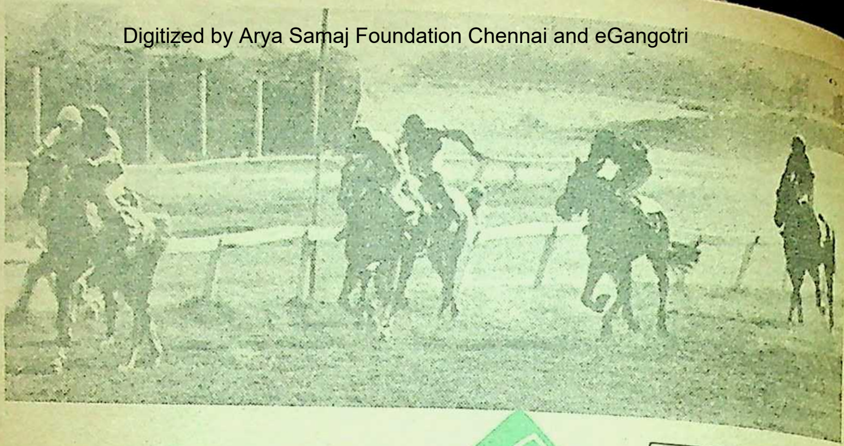

घुड़सवारी

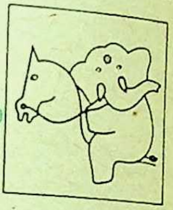

मेजबान देश होने के नाते भारत इस खेल में पहली बार हिस्सा ले रहा है. घुड़सवारी के मुकाबले हरबख्शसिंह स्टेडियम व निकल्सन रेंज में 20, 21, 23,25,व 27 नवंबर को होंगे. कुल 10 देश सात सेट पदकों के लिए इस में हिस्सा लेने जा रहे हैं.

एशियाई खेलों में शामिल यह नया खेल है, इसलिए पिछले प्रदर्शनों के आधार पर इस मुकाबले के विजेताओं का अनुमान नहीं लगाया जा सकता. घुड़सवारी की आयोजन व्यवस्था का सारा काम सेना ने किया है और इस मुकाबले में अधिकांशतः सभी खिलाड़ी सेना के हैं. भारतीय मैदानों पर भारतीय परिस्थितियों में घुड़सवारी का फायदा उन्हें निश्चित रूप से मिलेगा.

एशियाई खेलों में घुड़सवारी की तीन स्पर्धाएं होंगी. थ्री डे इवेंट, शो जंपिंग व टेंट पैगिंग.

थ्री डे इवेंट सब से कठिन मुकाबला है. जैसा कि नाम से जाहिर है, इस में तीन दिन तीन अलगअलग किस्म के मुकाबले होते हैं. पहले दिन घोड़े की गति, कितनी दिशाएं वह बदल पाता है– इन तमाम बातों का परीक्षण किया जाता है और घुड़सवार को शून्य से 10 के बीच अंक दिए जाते हैं.

दूसरे चरण में क्रास कंट्री दौड़, पानी बाधा व अन्य बाधाओं को पार करना होता है. घोड़े के गिर जाने व बाधा पार न करने की हालत में पेनल्टी अंक दिए जाते हैं. नियत समय में पहले सारी बाधाएं पार कर लेने वाले को बोनस अंक भी मिलते हैं. तीसरे चरण में कुदान का काम होता है.

मूलतः यह टीम प्रतियोगिता है, लेकिन पहले तीन सर्वश्रेष्ठ घुड़सवारों को व्यक्तिगत पदक भी दिए जाते हैं.

शो जंपिंग में विभिन्न बाधाओं से घोड़े को कुदाना होता है. बाधाएं 1.20 मीटर से 3.60 मीटर ऊंचाई तक की 10 से 12 होती हैं. घुड़सवार को 700 से 900 मीटर तक की दूरी तय करनी होती हैं. बीच में साढ़े चार मीटर चौड़ी व 1.50 मीटर से 2.20 मीटर तक फैली झाड़ियां भी पार करनी होती हैं. दो राउंड में सब से कम गलतियां करने वाले को विजेता माना जाता है.

टैंट पैगिंग में 750 मीटर प्रति मिनट की रफ्तार से दौड़ते हुए घुड़सवार को 6 सेंटीमीटर व 3 सेंटीमीटर चौड़े चारचार खूंटे गाड़ने होते हैं. 8 दौड़ों में सब से ज्यादा अंक पाने वाला विजेता माना जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ी दौड़, पानी
करना होता
र न करने की
ते हैं. नियत
कर लेने वाले
सरे चरण में

ा है, लेकिन
ी व्यक्तिगत

ाओं से घोड़े
0 मीटर से
से 12 होती
टर तक की
ं साढ़े चार
.20 मीटर
होती हैं. दो
ने वाले को

ा मिनट की
र को 6
रचार खूंटे
यादा अंक

बास्केट बाल

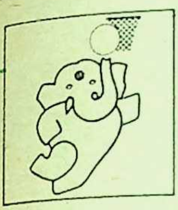

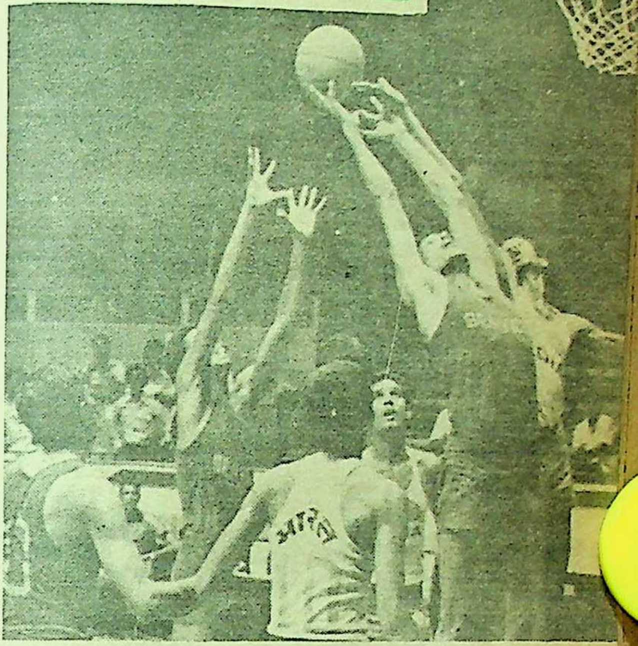

अमरीकी खेल बास्केट बाल की शुरुआत डा. नाइस्मिथ ने 1891 में की थी. 1936 के ओलंपिक खेलों में इसे पहली बार शामिल किया गया. यह 1951 के एशियाई खेलों की छः खेल स्पर्धाओं में से एक रहा.

पुरुष वर्ग में तब सिर्फ दो टीमों ने हिस्सा लिया था, जिस में फिलीपींस ने स्वर्ण पदक व भारत ने रजत पदक जीता था. फिलीपींस 1962 तक बास्केटबाल में एशियाई विजेता रहा. इजराइल 1966 व 1974 में जीता. पिछली बार यानी 1978 में चीन ने इस खेल पर अधिकार जमाया था, लेकिन महिला वर्ग में फिलीपींस के बाद कोरिया का ही बोलबाला रहा है.

आजकल अंतरराष्ट्रीय स्तर का बास्केट बाल 26 मीटर लंबे व 14 मीटर चौड़े मैदान में खेला जाता है. सभी बाहरी लाइनें पांच सेंटीमीटर मोटी होती हैं. इस लाइन के भीतरी हिस्से में 1.20 मीटर की दूरी पर बैकबोर्ड होता है जो 1.20 मीटर ऊंचा, 1.80 मीटर चौड़ा व तीन सेंटीमीटर मोटा होता है

हर सिरे पर लगी बास्केट में रिंग होता है, जाल सफेद तारों का बना होता है. जाल की ऊंचाई 40 सेंटीमीटर तक हो सकती है. गेंद गोलाकार होनी जरूरी है. और उस क गोलार्द्ध 75 से 78 सेंटीमीटर के बीच में हो सकता है. वजन 600 से 650 ग्राम के बीच होता है. सख्त लकड़ी के फर्श पर 1.80 मीटर की ऊंचाई से पटकने के बाद उसे 1.20 मीटर से 1.40 मीटर के बीच दोबारा उछलना चाहिए. गेंद में फीते नहीं होते और उस में प्रति वर्ग सेंटीमीटर 5.5 किलोग्राम हवा का दबाव रहता है.

10 मिनट के विश्राम के अलावा 20-20 मिनट की दो पारियां खेली जाती हैं. खेल में गेंद विपक्षी खेमे की बास्केट में डालनी होती है.

चीन, जापान, कोरिया व फिलीपींस की मौजूदगी में भारत के लिए इस खेल में तीसरा स्थान पाना भी संभव नहीं है. इस खेल में कुल 24 सेट पदक दिए जाएंगे. 20 नवंबर से दिसंबर तक तालकटोरा के इनडोर स्टेडियम में बास्केट बाल के मुकाबले होंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

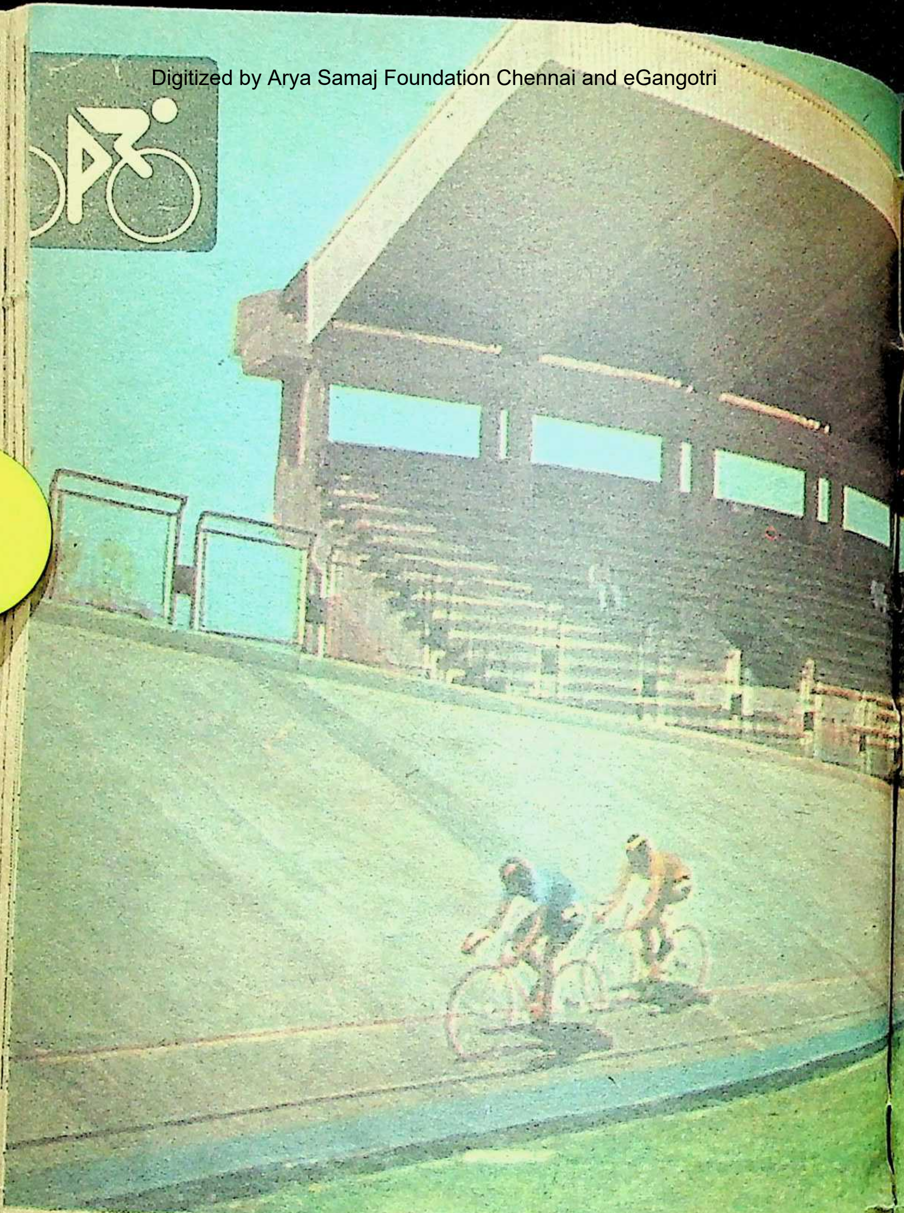

साइकिल दौड़

साइकिल दौड़ की प्रतियोगिताएं विश्व के अन्य देशों में 1878 में ही शुरू हो गई थीं, लेकिन भारत में एशियाई खेलों में इस तरफ तब ध्यान दिया गया, जब 1951 में एशियाई खेलों के लिए वेलोड्रोम बनाने की बात आई.

बाद में इस ट्रैक को तोड़ दिया गया, इसी वजह से साइकिल दौड़ न तो भारत में लोकप्रिय हो सकी और न ही एशियाई खेलों में इस मुकाबले में भारत को सफलता मिल सकी. पहले एशियाई खेलों में 4,000 मीटर टीम पर्सूट, 1,000 मीटर स्प्रिंट, 1,000 मीटर टाइम ट्रायल, 100 किलोमीटर मेट्रेस व 180 किलोमीटर रोड मैसेड स्टार्ट के मुकाबले हुए थे. ये सभी जापान ने जीते. अब तक इस प्रतियोगिता में जापान को थोड़ीबहुत चुनौती कोरिया व थाइलैंड ने ही दी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

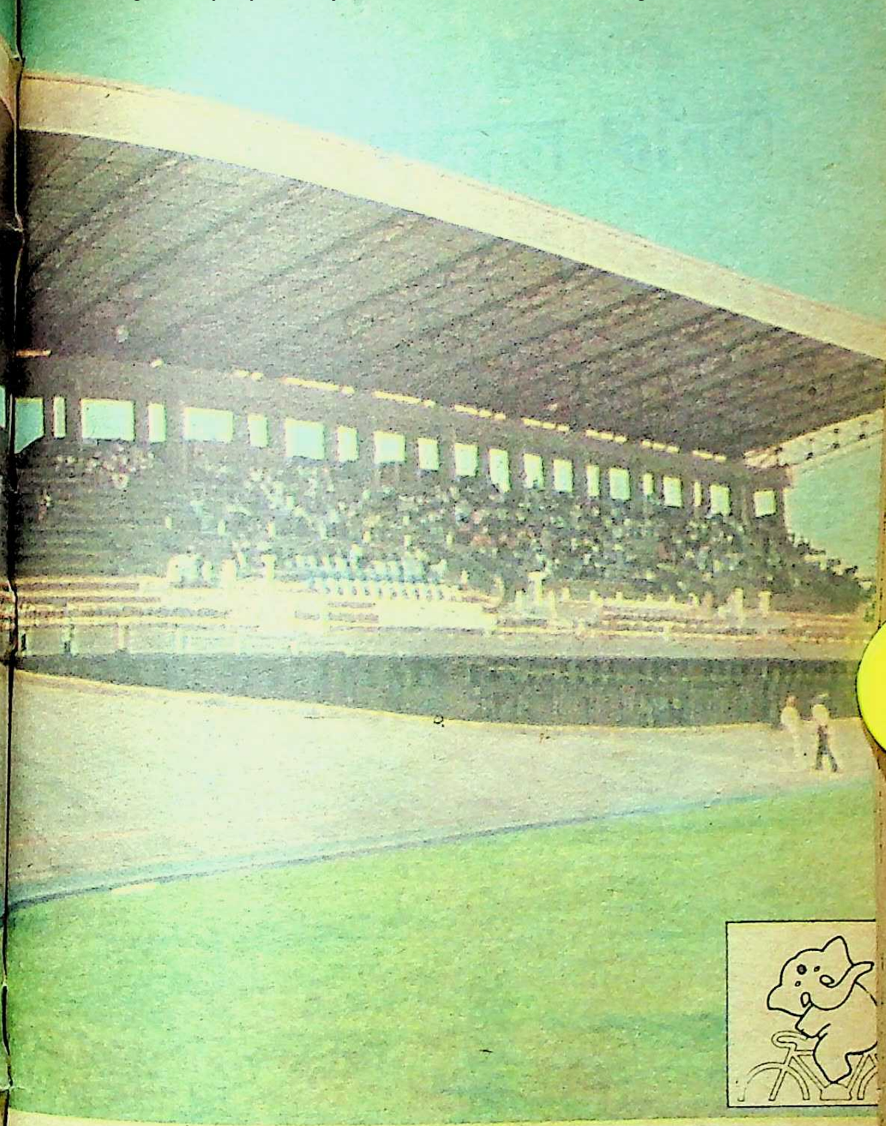

साइकिल दौड़ के सभी एशियाई कीर्तिमान फिलहाल जापानी खिलाड़ियों के नाम दर्ज हैं और उन्हें इस स्थिति से हटा पाना असंभव दिखता है. भारत के खिलाड़ी जापानी कीर्तिमानों से काफी पीछे हैं.

नवें एशियाई खेलों की साइकिल दौड़ प्रतियोगिता में सात खेलों में 13 सेट पदक दिए जाएंगे. एक करोड़ रुपए की लागत से इंद्रप्रस्थ इनडोर स्टेडियम के नजदीक बने यमुना वेलोड्रोम में 17 देशों के खिलाड़ी 23 नवंबर से 26 नवंबर तक साइकिल दौड़ स्पर्धाओं में भिड़ेंगे.

185 किलोमीटर की दौड़ के लिए दिल्ली छावनी के पास की 15 किलोमीटर की सड़क चुनी गई है. 100 किलोमीटर की टीम साइकिल दौड़ राष्ट्रीय मार्ग संख्या 8 पर गुड़गांव से आगे रिवाड़ी की तरफ के 25 किलोमीटर रास्ते पर होगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुटबाल

फुटबाल एशियाई खेलों का सब से ज्यादा लोकप्रिय व सब से ज्यादा संघर्षपूर्ण खेल है. इस बार कुल 19 देश फुटबाल में हिस्सा ले रहे हैं. विभिन्न मैचों के लिए तीन स्टेडियम इस्तेमाल किए जाएंगे. 20 नवंबर से 25 नवंबर तक दिल्ली गेट स्थित अंबेडकर स्टेडियम व माडल टाउन स्थित छत्रसाल स्टेडियम में और 20 नवंबर से 28 नवंबर तक लोदी रोड स्थित जवाहर लाल नेहरु स्टेडियम में फुटबाल के प्रारंभिक मैच खेल जाएंगे. यहीं 30 नवंबर से 3 दिसंबर तक अंतिम दौर के महत्त्वपूर्ण मैच होंगे.

1951 के एशियाई खेलों में नई दिल्ली में फुटबाल में 6 देशों ने हिस्सा लिया, जिन में विजय भारत को मिली थी, लेकिन इस के बाद 1954 व 1958 में चीन विजेता रहा. 1962 में भारत को आखिरी बार फुटबाल में कोई पदक मिला. 1966 व 1970 में बर्मा, 1974 में ईरान व 1978 में कोरिया फुटबाल का विजेता रहा.

इस बार बर्मा, चीन कोरिया, इराक, ईरान, थाइलैंड व 1982 की विश्व कप प्रतियोगिता में हिस्सा ले चुके कुवैत की टीमें मैदान में हैं. कुवैत से हालांकि पेशेवर खिलाड़ियों की टीम नहीं आ रही है, लेकिन दमखम में उस की शौकिया टीम भी किसी भी टीम से कम नहीं है. भारत को छठा स्थान भी मिल जाए तो गनीमत होगी.

फुटबाल के मैदान की लंबाई 110 से 120 गज व चौड़ाई 70 से 80 गज के बीच होती है. एक टीम में 11 खिलाड़ी हिस्सा लेते हैं. खेल 45-45 मिनट के दो हिस्सों में खेला जाता है. बीच में पांच मिनट का विश्राम होता है.

गेंद की गोलाई 27 से 28 इंच तक होती है. हवा का दबाव प्रति वर्ग इंच 9 से साढ़े दस पौंड तक रहता है. वजन 14 से 16 औंस तक होता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोल्फ एशियाई खेलों में शामिल होने वाला नया खेल है. यह प्राचीन रोम में खेले जाने वाले पैगानिका खेल का ही आधुनिक रूप है. पैगानिका भी मुड़े हुए डंडे व गेंद से खेला जाता था.

गोल्फ

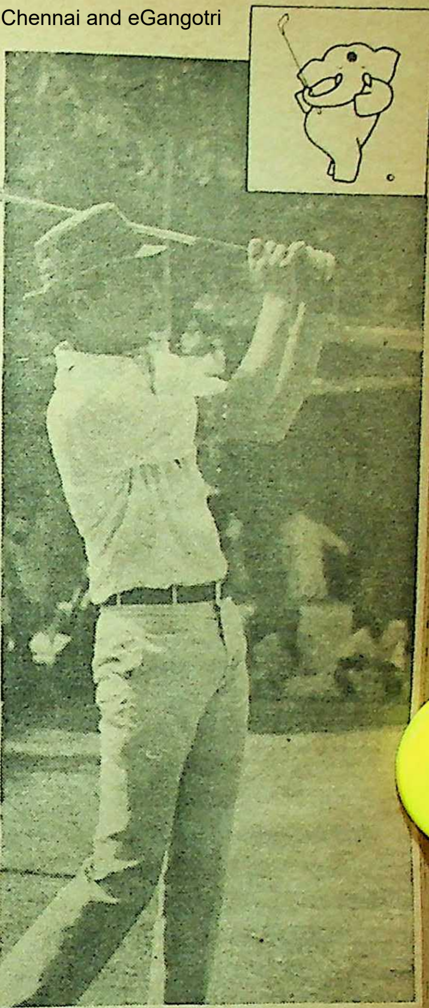

आज जो गोल्फ का स्वरूप देखने को मिलता है उस की शुरुआत 15वीं शताब्दी में स्काटलैंड में हुई थी. शुरू में चमड़े की पंख लगी गेंदें इस्तेमाल की जाती थीं.

1886 में शौकिया खिलाड़ियों की पहली गोल्फ प्रतियोगिता इंगलैंड में हुई. 1921 में गेंद के आकार व वजन के संबंध में नियम बने. इंगलैंड व अमरीका की दो संस्थाएं हर चार साल में नियमों के नवीकरण के लिए मिलती हैं.

गोल्फ जिस मैदान में खेला जाता है, उसे गोल्फ कोर्स कहा जाता है जो छः हजार से सात हजार गज तक लंबा होता है. 150 से 600 गज की दूरी तक अलगअलग दिशाओं में 18 छेद (होल) होते हैं. छेद का व्यास साढ़े चार इंच व न्यूनतम गहराई चार इंच होती है. हर छेद पर झंडा लगा रहता है.

गोल्फ की गेंद का व्यास 1⅝ इंच से 1¾ इंच तक व अधिकतम वजन 1.62 औंस होता है. गोल्फ की छड़ी कई आकार में मिलती है. लेकिन कोई भी खिलाड़ी 14 से ज्यादा छड़ियां इस्तेमाल नहीं कर सकता. आम तौर पर स्टील की पांच व लकड़ी की नौ छड़ियां इस्तेमाल की जाती हैं.

खेल का उद्देश्य कम से कम स्ट्रोक में गेंद को छड़ी की मदद से छेद में डालना होता है. दो तरह के खेल होते हैं—मैच प्ले व स्ट्रोक प्ले. मैच प्ले में कम स्ट्रोक में छेद तक गेंद पहुंचाने वाला जीता माना जाता है, जो सब से ज्यादा छेदों में गेंद डाले उसे ही पहला स्थान मिलता है.

स्ट्रोक प्ले में सभी छेदों में गेंदों को कम स्ट्रोक में पहुंचाने वाला विजयी होता है. इस बार गोल्फ के लिए पांच सेट पदक दिए जा रहे हैं, जिन के लिए 10 देश मुकाबला करेंगे. पिछले कुछ सालों के प्रदर्शन के आधार पर गोल्फ में कोरिया, जापान, थाइलैंड के खिलाड़ी पदक जीत सकते हैं. एकाध पदक के लिए भारत से भी उम्मीद की जा सकती है.

गोल्फ के मुकाबले दिल्ली गोल्फ क्लब के मैदान में 21 नवंबर से 24 नवंबर तक होंगे.

(अन्य खेलों का परिचय पृष्ठ 51 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तमाम आशंकाओं व तकनीकी समस्याओं के बावजूद इंद्रप्रस्थ में 25 से 30 करोड़ रुपए तक की लागत से बनने वाला तथा 30 हजार दर्शकों की क्षमता वाला विश्व का तीसरा सब से बड़ा इनडोर स्टेडियम काफी हद तक बन गया है, लेकिन अपने पूरे निर्माणकाल में यह विवादों से अलग नहीं रह सका है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब से पहले जो महत्त्वपूर्ण विवा उठा, वह डिजाइन के चयन के मामले को ले कर था. बाकायदा विज्ञापित की ग प्रतियोगिता में जिस डिजाइन को 50 हजार रुपए का पहला इनाम दिया गया था, उ चुना नहीं गया. इस के विपरीत जिस डिजाइन पर स्टेडियम बन रहा है, उसे प्रतियोगिता में सांत्वना पुरस्कार के ही योग्य समझा गया था.

इंद्रप्रस्थ इनडोर स्टेडियम:

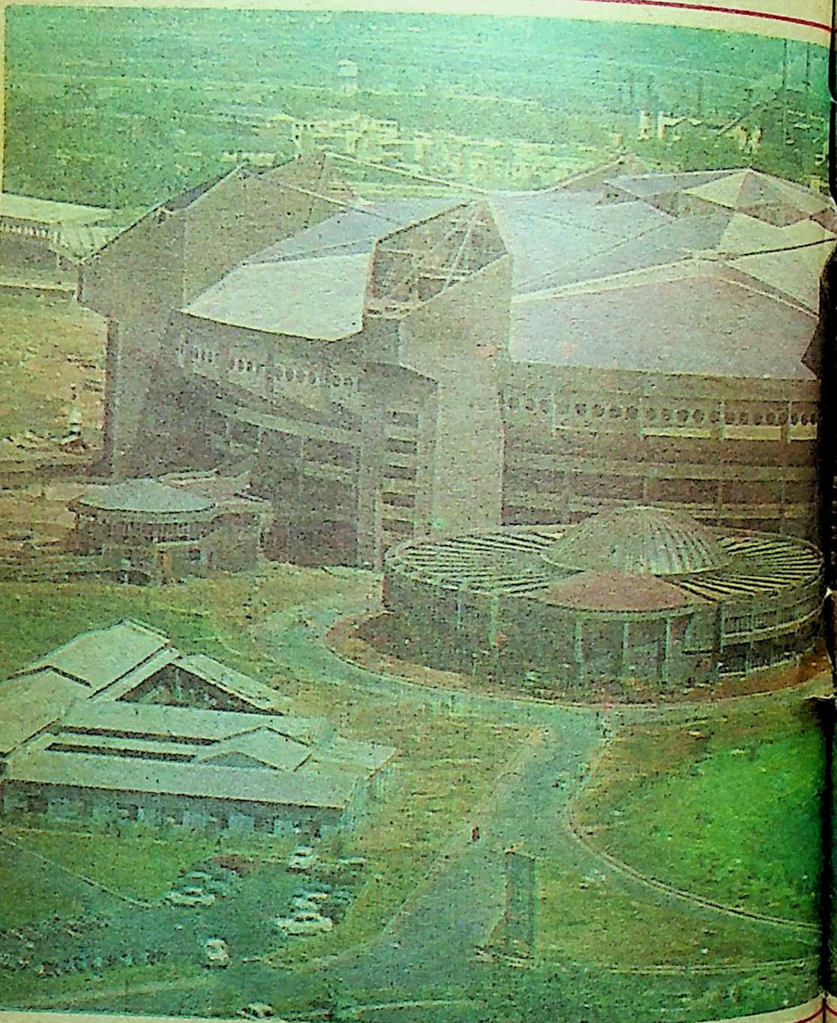

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरी कहानी काफी दिलचस्प व हर काम में राजनीति के हावी होने की दास्तान है.

जनता शासन से पहले दिल्ली विकास प्राधिकरण के तत्कालीन उपाध्यक्ष जगमोहन ने 10 से 15 हजार दर्शकों की क्षमता वाले इनडोर स्टेडियम के बनाने की सोची थी. गुड़गांव में मारुति फैक्टरी बनाने वाली फर्म 'प्रधान घोष एसोसिएट्स' को उन्होंने स्टेडियम का नक्शा बनाने का काम सौंपा था, लेकिन किसी न किसी वजह से यह योजना खटाई में पड़ती गई.

जनवरी, 1980 में इंदिरा गांधी के दोबारा सत्ता में आ जाने के बाद जगमोहन दिल्ली में उपराज्यपाल बने और विद्यासागर ऐलावादी दिल्ली विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष. इनडोर स्टेडियम की बात फिर

जो विवादों से न बच सका

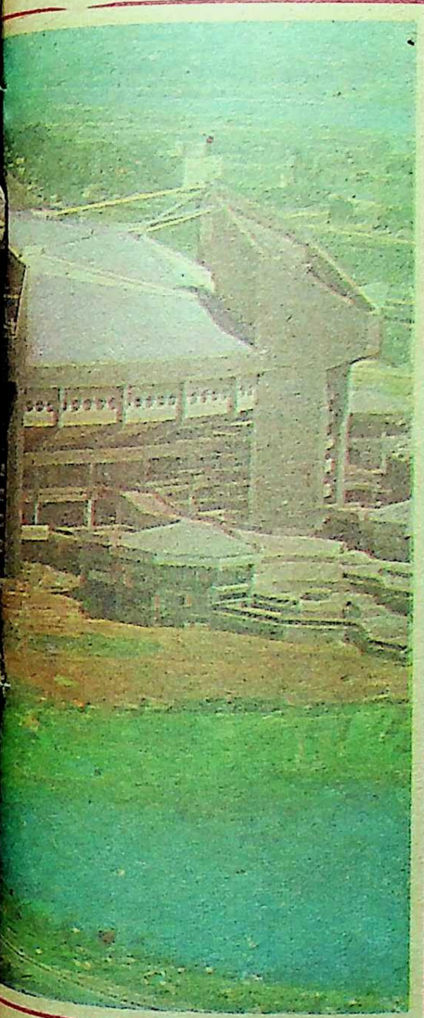

चली, अब उसे 25 से 30 हजार दर्शकों के बैठ सकने लायक बनाने की बात हुई.

फिर प्रधान घोष एसोसिएट्स को डिजाइन पेश करने के लिए कहा गया, लेकिन जब इस फैसले की आलोचना की गई तो तब देशव्यापी प्रतियोगिता के तहत डिजाइन मंगवाया गया. समय की कमी की बात रख कर यह शर्त रखी गई कि इस प्रतियोगिता में वही आर्किटेक्ट हिस्सा ले सकेंगे, जिन्होंने स्वीमिंग पूल व दिल्ली महानगर परिषद द्वारा बनाए जा रहे स्टेडियम के लिए हुई डिजाइन प्रतियोगिता में हिस्सा लिया था.

निर्णायक मंडल में अध्यक्ष के रूप में जगमोहन थे, जब कि बाकी सदस्य थे– श्री कानविडें, श्री झाववाला (दोनों आर्किटेक्ट) व आई.आई.टी. दिल्ली के निदेशक श्री जैन, अंतरराष्ट्रीय ख्याति के निर्माणविद, नई दिल्ली नगर निगम के प्रशासक, एशियाई

डिजाइन के चयन से ले कर निर्माण तक यह स्टेडियम विवादों में उलझा रहा. लगातार उलझते इस के निर्माण के पीछे क्या विवशता थी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

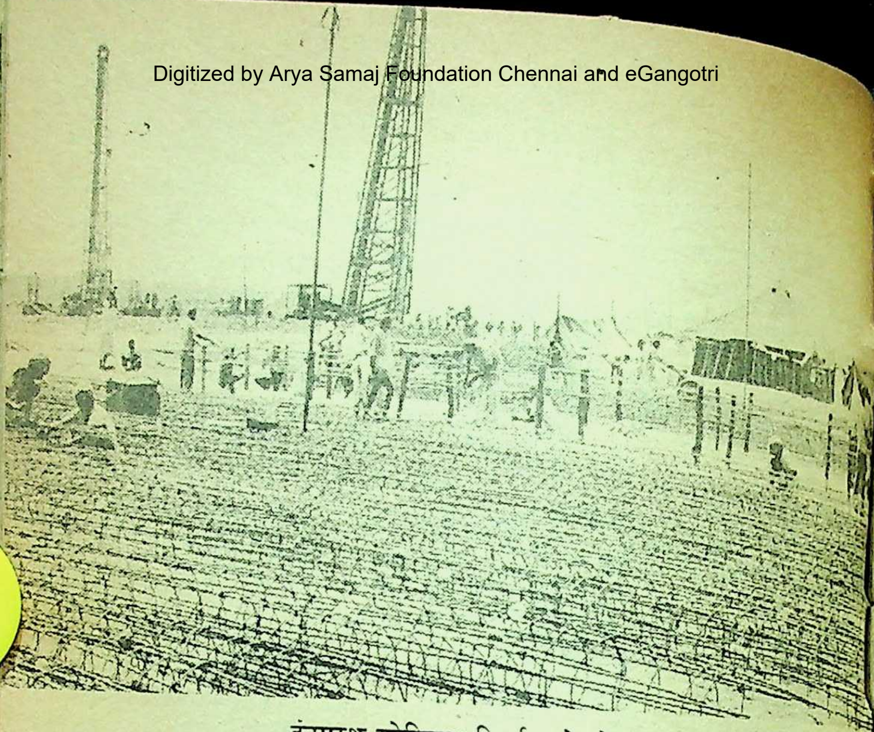

इंद्रप्रस्थ स्टेडियम निर्माण के दौरान.

खेलों की विशेष संयोजन समिति के अध्यक्ष और प्राधिकरण के मुख्य आर्किटेक्ट के अलावा प्राधिकरण के तीन अधिकारी (उन्हें वोट देने का अधिकार नहीं था) भी बोर्ड में शामिल थे.

इस बोर्ड को निर्माण के टिकाऊपन, वातावरण निर्माण की सुविधा और लचीलेपन के आधार पर डिजाइन को चुनना था. बोर्ड को यह अधिकार था कि अगर उस की कसौटी पर कोई डिजाइन खरा न उतरा, तो वह बिना कोई कारण बताए प्रतियोगिता को रद्द कर सकता है.

राम शर्मा व राज रेवाल के डिजाइन को पहला इनाम दिया गया— 50 हजार रुपए का. उन के निर्माण सलाहकार थे— महेंद्र राज. बोर्ड की निगाह में दूसरा व तीसरा इनाम पाने योग्य कोई प्रविष्टि नहीं थी. जितने भी डिजाइन प्रतियोगिता में आए, सभी को 10-10 हजार रुपए दे दिए गए. लेकिन दो डिजाइनों को प्रत्येक को साढ़े सतरह हजार रुपए का सांत्वना पुरस्कार दिया गया. ये डिजाइन 'प्रधान घोष एसोसिएट्स' तथा महरोली में इंदिरा गांधी का फार्म हाउस डिजाइन करने वाली फर्म 'शरत दास एंड डिजाइन कन्सोर्टियम' के थे. 30 मई, 1980 को प्रतियोगिता के नतीजे सभी समाचारपत्रों में प्रकाशित कर दिए गए.

राम शर्मा व राज रेवाल को पता था कि उन के पास समय कम है और इसी में उन्हें अपना हुनर दिखाना है, लेकिन इस का उन्हें मौका नहीं दिया गया.

दिल्ली विकास प्राधिकरण ने विद्यासागर ऐलावादी की अध्यक्षता में एक उपसमिति बनाई, जिसे पहले डिजाइन की किस्मत का फैसला करना था. पांच सदस्यों की इस उपसमिति में वह आर्किटेक्ट भी था, जो इसी स्टेडियम की डिजाइन प्रतियोगिता में असफल करार दिया जा चुका था.

राज रेवाल व महेंद्र राज इस उपसमिति के सामने पेश हुए. उन से पूछा गया कि क्या वे सही समय पर काम पूरा कर सकेंगे? महेंद्र राज का जवाब था कि समय कम है, इसलिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतिम तौर पर ... दिल्ली, बंबई व कानपुर के तकनीकी संस्थानों के कंप्यूटरों की मदद से निर्माण पद्धति का विश्लेषण करना होगा. उन्होंने कहा कि उन के पास हालांकि 30 से 40 तक आर्किटेक्ट हैं और वह अकेले सारा काम कर सकते हैं, लेकिन ऐसे प्रोजेक्ट पर जिस में हर महीने एक करोड़ रुपए से ज्यादा खर्च होगा, कुछ बड़े कांट्रेक्टरों की मदद की जरूरत पड़ सकती है.

उपसमिति ने इस बात का नतीजा यह निकाला कि पहला पुरस्कार प्राप्त डिजाइन बनाने वाले अगस्त, 1982 तक स्टेडियम को पूरा कर देने के मामले में आश्वस्त नहीं हैं. लिहाजा सांत्वना पुरस्कार जीतने वाले शरत दास को ठेका दे दिया गया. इस का व्यापक विरोध हुआ, लेकिन न तो दिल्ली विकास प्राधिकरण के कानों पर जूं रेंगी और न ही केंद्रीय मंत्रिमंडल के.

शरत दास को ठेका दिए जाने के बाद भी विवादों का सिलसिला खत्म नहीं हुआ. म्यूनिख ओलंपिक में स्टेडियम डिजाइन करने वाले जरमन विशेषज्ञ प्रोफेसर बेनिच ने प्राधिकरण की कई बैठकों में इस बात पर जोर दिया कि समय कम है और ऐसे में अगर सभी सुविधाएं बहुत जल्दी मुहैया कराई जाती हैं, तो भी निर्माण के स्तर में गिरावट आने का खतरा पैदा हो सकता है. उन्होंने ... रिंग रोड की जगह को भी ठीक नहीं बताया, क्योंकि वह स्थान यमुना नदी के एकदम पास होने से बाढ़ का जल्दी शिकार हो सकता है.

पहले यह बात कही गई थी कि इनडोर स्टेडियम के निर्माण के लिए स्वदेशी तकनीक ही इस्तेमाल की जाएगी, लेकिन जब छत डालने की बात आई, तब कई समस्याएं उठ खड़ी हुईं. दिल्ली विकास प्राधिकरण ने जब इस के लिए टेंडर मंगवाए, तब मद्रास की एक ही कंपनी सामने आई और वह भी एक शर्त पर कि छत के लिए कुछ जानकारी व सामग्री उसे विदेशों से मंगानी पड़ेगी.

इतना ही नहीं, 150 मीटर की छत का निरीक्षण करने के लिए एक तरफ तो ब्रिटिश विशेषज्ञ श्री मैकास्की को सितंबर, 1981 में भारत बुलाया गया और उन की यात्रा पर 5.8 लाख रुपए खर्च कर दिए गए. दूसरी तरफ छत की तकनीकी जानकारी पाने के लिए कई इंजीनियर इंगलैंड जा पहुंचे.

इनडोर स्टेडियम की जगह अगर ओपन एयर स्टेडियम बनाया जाता तो खर्च में काफी कमी की जा सकती थी. आशंका इस बात की भी है कि 25 हजार दर्शकों को आकर्षित कर सकने वाले कितने खेल भविष्य में किए जा सकेंगे. स्टेडियम और उस के चार हजार टन के एयरकंडीशनिंग प्लांट की देखरेख में हर साल 50 लाख खर्च होंगे. ●

आप मांग कर खाते हैं?
मांग कर कपड़े पहनते हैं?
मांग कर बस, ट्राम व रेल में सफर करते हैं?
मांग कर सिनेमा देखते हैं?
मांग कर रेस्त्रां में चायकाफी पीते हैं?
तब
मांग कर पत्रपत्रिकाएं व पुस्तकें क्यों पढ़ते हैं?
निजी पुस्तकालय आप की शोभा है, आप के परिवार की शान है, उन्नति का साधन है.
मांग कर नहीं, खरीद कर पढ़िए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक और संग्रहणीय अंक

सरिता
दीवाली
विशेषांक

नवंबर (द्वितीय) 1982

फुलझड़ियों की जगमगाहट, दीपों की झिलमिलाहट, पटाखों की रंगीनियों जैसा सरिता का 'दीवाली विशेषांक' पूरे परिवार के लिए इतनी अधिक सामग्री कि घंटों पढ़ें और दीवाली का आनंद कई गुना उठाएं.

जगमग साजसज्जा,
दीवाली के खट्टेमीठे,
वातावरण पर
दस कहानियां,
धारावाहिक उपन्यास
की एक नई किस्त,
दीवाली के लिए विशेष
पकवानों की विधियां,

दीपमालिकाओं
सी सजी कविताएं,
नया मार्ग दिखाने वाले
कई ज्योतिर्मय लेख.
इतनी अधिक
इतनी विविध सामग्री
और कहीं नहीं मिलेगी.
मूल्य 3·75 रुपए.

भारत में सबसे
अधिक पढ़ी जाने वाली
पाक्षिक पत्रिका.

अपनी प्रति
सुरक्षित कराना
न भूलें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(पृष्ठ 45 से आगे)

मुक्केबाजी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्केबाजी में मुकाबलों के लिए ...गति मैदान में नए सिरे ...हाल आफ स्पोर्ट्स बनाया ...या है. 12 सेट पदकों के लिए ...19 देशों के मुक्केबाज 26 नवंबर से 3 दिसबर ...तक भिड़ेंगे.

आधुनिक किस्म की शौकिया मुक्केबाजी के नियम 1867 में इंगलैंड के ...बेरी ने पहली बार बनाए थे.

मुक्केबाजी के मुकाबले रिंग में होते हैं, ...जो 250 वर्ग फुट के क्षेत्रफल का होता है. ...चारों तरफ रस्सियों की दोतीन घेराबंदी होती ...है. सामान्यतः तीन रस्सियां रखी जाती हैं. ...सब से ऊंची रस्सी रिंग की सतह से चार से ...पांच फुट तक ऊपर रहती है. रिंग में अब ...आम तौर पर रबड़ के गद्दे बिछे होते हैं, जिन ...की मोटाई आधे से पौना इंच तक होती है.

हाथ के दस्तानों में बाहर चमड़ा व अंदर ...रबड़ होती है. पैडिंग का वजन चार से आठ ...औंस के बीच हो सकता है. यह प्रतियोगी की ...इच्छा पर रहता है कि वह जूते पहन कर लड़ेगा या नंगे पैर.

मुक्केबाजी में मुकाबले वजन के आधार पर होते हैं. इस के लिए कुल 11 वजन वर्ग निर्धारित हैं ये हैं— लाइट फलाइवेट (48 फलाईवेट (51), पैंटमवेट (54), फेदर वेट (57), लाइटवेट (60), लाइट वेल्टर वेट (63.5), वेल्टरवेट (67), लाइट मिडिलवेट (71), मिडिलवेट (75), लाइट हैवीवेट (81.5), हैवीवेट (81 से ऊपर) सभी वजन किलोग्राम में हैं.

हर मुक्केबाज को तीनतीन मिनट के तीन दौर (राउंड) खेलने होते हैं. हर दौर के बीच एक मिनट का विश्राम होता है, जिस में पसीना आदि पोंछने के लिए वह सहायक की मदद ले सकता है. प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ी पर मुक्के जमाने के आधार पर अंक मिलते हैं.

लाइटवेट में पदम् बहादुर मल ने 1962 में व हैवीवेट में हवासिह ने 1966 व 1970 में स्वर्ण पदक जीते थे.

1978 के पिछले एशियाई खेलों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैवीवेट में बृज मोहन ने रजत पदक व मुछैया और मलूकसिंह ने कांस्य पदक जीते थे. इस बार भारतीय मुक्केबाजों को प्रशिक्षित करने के लिए विदेशी प्रशिक्षण बुलाए गए हैं, लेकिन फिलहाल थापा (लाइट फ्लाईवेट) व मुछैया (लाइट मिडिलवेट) से ही थोड़ी उम्मीद की जा सकती है.

एशियाई खेलों के मुक्केबाजी के मुकाबलों में प्रायः फिलीपींस, जापान, कोरिया व थाइलैंड के मुक्केबाज हावी रहे हैं. इस बार भी ऐसा ही होने की संभावना है. पाकिस्तान के इकबाल मोहम्मद (लाइट हैवीवेट) व इम्तियाज महमूद (हैवीवेट) ने 1978 में जो करामात दिखाई थी, उस की पुनरावृत्ति मध्य पूर्व एशिया के एकाधिकार को चुनौती दे सकती है.

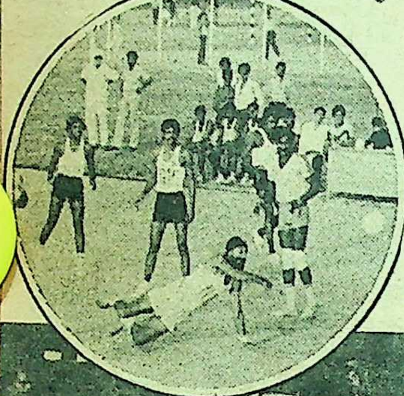

हैंडबाल

यह खेल 40 मीटर लंबे व 22 मीटर चौड़े मैदान में खेला जाता है. दोनों तरफ दो

एशियाई खेलों में पहली बार शामिल किए जाने वाले इस टीम खेल में 12 देश हिस्सा लेंगे. विभिन्न मैच 23 से 28 नवंबर व 30 नवंबर को दिल्ली विश्वविद्यालय के मैदान पर खेले जाएंगे.

वैसे हैंडबाल नया खेल नहीं है. 1936 के बर्लिन ओलंपिक में इस खेल को शामिल किया गया था. वैसे 1887 में हैंडबाल का पहला अंतरराष्ट्रीय मुकाबला हो चुका था. यह देखने में फुटबाल जैसा ही है, लेकिन इस में पैरों को छोड़ कर बाकी शरीर का इस्तेमाल किया जाता है.

मीटर ऊंचा गोल होता है. चमड़े की बनी गोलाकार गेंद से दो टीमों के 7-7 खिलाड़ी गोल करने की कोशिश करते हैं. गेंद एक या दो हाथ से पकड़ी जाती है, लेकिन इसे फौरन पास दिया जाता है, गेंद का व्यास 55 से 60 सेंटीमीटर व वजन 15 से 17 औंस तक होता है. दस मिनट के विश्राम के अलावा 30-30 मिनट के दो हिस्सों में यह खेल खेला जाता है. फैसला न होने पर पांचपांच मिनट का अतिरिक्त समय दो बार दिया जाता है.

चीन, कोरिया व जापान का इस खेल में प्रभुत्व है. भारतीय इस नए खेल में कैसा प्रदर्शन कर पाते हैं, यह देखने की बात है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकायन

नवें एशियाई खेलों के दौरान जो दो मुकाबले दिल्ली से बाहर होंगे, उन में एक नौकायन है. जयपुर के नजदीक रामगढ़ झील में 20 से 22 नवंबर व 24 व 25 नवंबर तक नौकायन के मुकाबले होंगे, जिन में कुल 11 सेट पदक दिए जाएंगे व नौ देश हिस्सा लेंगे. एशियाई खेलों में शामिल किया जाने जाने वाला यह नया खेल है.

नौकायन में दो किस्म के खेल होते हैं-रेगरा, जिस में नावों को अपनी निर्धारित लेन में रहना पड़ता है व हैड रैस, जिस में अपनी लेन में बहने की कोई शर्त नहीं है. रेगरा दौड़ की दूरी 1,500, 1,000 व 7,000 मीटर तक होती है.

इस दौड़ में इस्तेमाल की जाने वाली डांड की लंबाई 3.82 मीटर होती है. जापान व थाईलैंड जैसे देश इस खेल में बाजी मा· की क्षमता रखते हैं. अपने मैदानों पर अपन दर्शकों के सामने मुकाबला होने पर भार· खिलाड़ी भी सफलता पा सकते हैं

पाल नौका दौड़

इस मुकाबले में पांच खेल होते हैं. एंटरप्राइज, फायर बाल, थ्रो.के. डिंगी, फ्लाइंग डचमैन व सुपर मोथ क्लास फ्लाइंग डचमैन के मुकाबले 1970 के एशियाई खेलों में हुए थे. 1974 में पाल नौका को शामिल नहीं किया गया था. 1978 के पिछले एशियाई खेलों में फ्लाइंग डचमैन को छोड़ कर इस प्रतियोगिता में बाकी चार मुकाबले हुए थे.

एंटरप्राइज में दो खिलाड़ी 4.039 मीटर लंबी नाव को खेते हैं. डांड (चप्पू) 1.600 मीटर लंबी होती है और नाव में मास्तूल होता है. फायरबाल में भी दो खिलाड़ियों के लिए मास्तूल वाली 4.928 मीटर लंबी नौका होती है. डांड की लंबाई इस में 1.395 मीटर होती है. इस में खिलाड़ियों के लिए ट्रैपीज भी होती है. ओ.के. डिंगी में 4 मीटर लंबी पालदार नौका को 1.420 मीटर लंबे डांड से एक ही खिलाड़ी खेता है. चौथे किस्म के खेल में नाव 3.95 मीटर लंबी व डांड 0.675 मीटर लंबा होता है.

इन सभी नौका दौड़ों में ज्यादातर हवा के रुख का इस्तेमाल किया जाता है. गलत हरकत करने पर पेनल्टी अंक मिलते हैं. जिस के कम से कम पेनल्टी अंक हों, उसी को विजेता माना जाता है.

1970 में बर्मा, थाइलैंड व जापान और 1978 में पाकिस्तान, जापान व थाइलैंड के नौकाबाज इस में विजयी रहे थे. भारत को अब तक एंटरप्राइज वर्ग में एक रजत व एक कांस्य पदक मिल सका है. इस बार स्वर्ण पदक की उम्मीद भी की जा सकती है.

बंबई में 21 से 27 नवंबर तक 12 देश इन मुकाबलों में हिस्सा लेंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

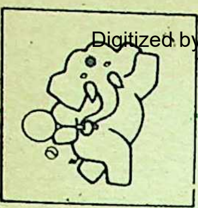

लान टेनिस

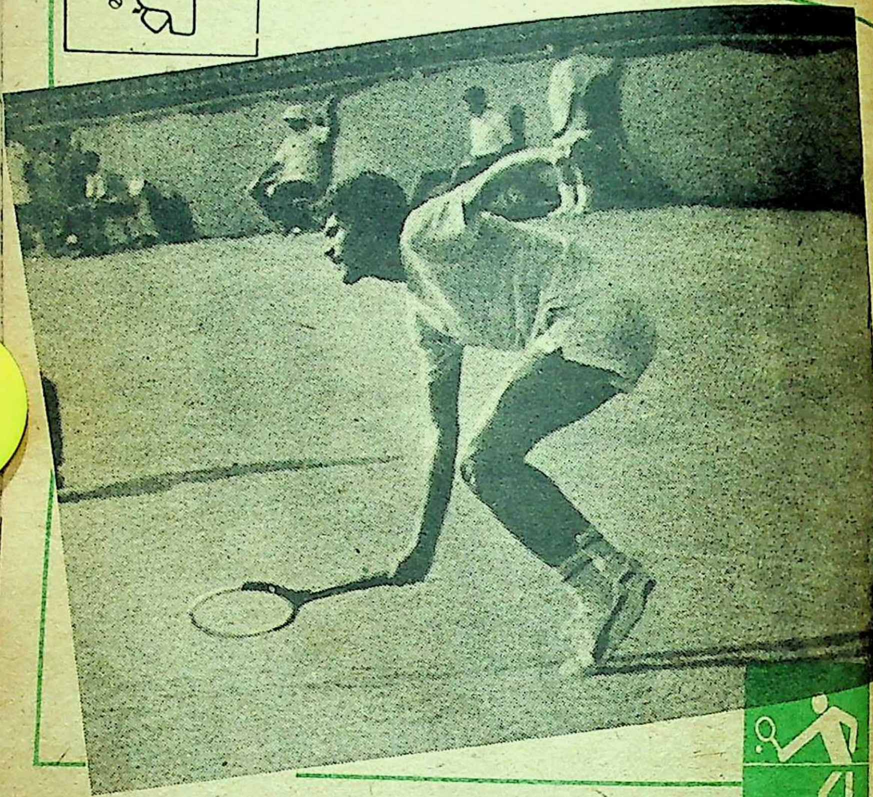

एशियाई खेलों में लान टेनिस को भी 1958 में टोकियो में शामिल किया गया था. तब पुरुष एकल, पुरुष युगल, महिला एकल, महिला युगल व मिश्रित युगल के मुकाबले हुए थे. 1974 के तेहरान एशियाई खेलों में दोनों वर्गों की टीम प्रतियोगिताएं भी जोड़ी गई थीं.

इस खेल में शुरू में फिलीपींस व इंडोनेशिया का जोर रहा. लेकिन पिछले कुछ सालों से जापान ने इस पर पूरा नियंत्रण जमा रखा है. 1978 के पिछले एशियाई खेलों में इंडोनेशिया ने उसे जबरदस्त चुनौती दी थी. पुरुष वर्ग के तीनों मुकाबले इंडोनेशिया ने ही जीते थे.

नवें एशियाई खेलों में इंडोनेशिया व जापान के प्रभुत्व को तोड़ने की कोशिश करने वाले बाकी 13 देशों में कोरिया व चीन की चुनौती ही मजबूत साबित हो सकती है. शौकिया स्तर पर भारत के पास कोई टेनिस खिलाड़ी नहीं है, जो स्वर्ण पदक जुटा सके.

लान टेनिस के मुकाबले हौज खास के टेनिस स्टेडियम में 20 नवंबर से 1 दिसंबर तक होंगे.

लान टेनिस का कोर्ट 78 फुट लंबा व 27 फुट चौड़ा होता है. मैदान के बीच में दो पोस्टों (खंभों) की मदद से जाली लगाई जाती है. पोस्ट 3 फुट 6 इंच ऊंचे होते हैं. गेंद गोल होती है और उस का व्यास 2½ इंच से 2⅝ इंच होता है. वजन 2 औंस से 2 1/16 औंस के बीच रहता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वालीबाल

यह टीम खेल अमरीका में 1895 में श्री मार्गन ने शुरू किया था. एक समय में इस खेल में पहले नौ खिलाड़ी एक टीम की तरफ से खेला करते थे, अब छः खिलाड़ियों द्वारा खेला जाता है.

वालीबाल का मैदान 18 मीटर लंबा व 9 मीटर चौड़ा होता है. इनडोर स्टेडियम में खेले जाते समय छत कम से कम सात मीटर ऊंची होनी जरूरी है. इस का जाल काला या गहरे भूरे रंग का होता है और इस की ऊंचाई 2.43 मीटर व लंबाई 9.5 मीटर होती है.

बाल (गेंद) गोल होती है और उस में चमड़े के कवर में रबर ब्लैडर होता है. गेंद की परिधि 65 से 67 सेंटीमीटर व वजन 260 से 280 ग्राम के बीच में रखा जाता है.

यह खेल तीन गेम जीतने तक चलता है. एक गेम में विपक्षी से दो अंक का अंतर रखने वाली जो टीम पहले 15 अंक ले वही गेम जीत जाती है. हाथ, सिर या कूल्हे के ऊपर के शरीर के किसी भी हिस्से से गेंद को हिट किया जा सकता है.

1958 के टोकियो एशियाई खेलों में

पुरुष वालीबाल को व 1966 के बैंकाक एशियाई खेलों में महिला वालीबाल को शामिल किया गया था. पुरुष वर्ग में जापान ने 1958 से 1974 तक विजय हासिल की. 1978 में दक्षिणी कोरिया जीता. महिला वर्ग में कोरिया की टीम लगातार तीन एशियाई खेलों में जापान से फाइनल में हारी. इन दो देशों के अलावा चीन व ईरान का भी इन खेलों में काफी दखल है.

भारत 1962 में पुरुष वर्ग में रजत पदक विजेता रहा था. 1958 में उसे कांस्य पदक मिला था, लेकिन पिछले 20 सालों में वालीबाल में भारत की कोई ऐसी हैसियत नहीं रही है कि उस से इस बार कोई पदक जीतने की उम्मीद की जाए. 21 देशों की टीमें दोनों वर्गों में 20 से 25 नवंबर व 2 नवंबर से 3 दिसंबर तक इंद्रप्रस्थ स्टेडियम में भिडेंगी.

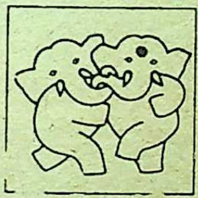

एथलेटिक्स के बाद यही एक ऐसा खेल है, जिस में भारत ने अच्छेखासे पदक जीते हैं. 1954 में खालिद ने रजत पदक व सोहनसिंह राव ने कांस्य पदक जीता था. 1962 में भारत ने कुश्ती में तीन स्वर्ण, छः रजत व तीन कांस्य पदक जीते थे. 1966 में यह सफलता एक रजत व पांच कांस्य पदक तक ही सीमित रही. 1970 में एक स्वर्ण, एक रजत व तीन कांस्य पदक जीते. 1974 में चार कांस्य पदक ही मिल सके, जब कि 1978 के पिछले एशियाई मुकाबलों में दो स्वर्ण पदक व एक रजत पदक भारत को मिला.

कुश्ती

कुश्ती के जानमाने प्रशिक्षक गु हनुमान का दावा है कि इस बार भारती पहलवानों को कम से कम पांच स्वर्ण पद मिलेंगे.

1954 के मनीला एशियाई खेलों में आ वजन वर्गों में कुश्ती के मुकाबले हुए थे, जि में फ्लाइ वेट वर्ग में पाकिस्तान का दी मुहम्मद जीता था, बाकी सभी सात व मुकाबले जापान ने जीते थे.

1958 में जापान ने पांच व ईरान ने ती वजन वर्ग खिताब जीते थे. 1962 में पहल बार ग्रीको रोमन पद्धति की कुश्तियां शुरू की गई. कुल 16 में से 10 मुकाबले जापान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ीते. पाकिस्तान ने भी तीन स्वर्ण पदक जीते. 966 में जापानी व ईरानी मल्ल जीते. 1970 हैवी वेट वर्ग में चंदगीराम को छोड़ कर ाकी सभी मुकाबलों में फिर जापानी व रानी और 1974 में जापानी, ईरानी, दक्षिणी ोरियाई व मंगोलियाई पहलवान विजयी हे. 1974 में दोनों पद्धतियों के 20 मुकाबलों ईरान ने 12 मुकाबले जीते व एक में वह ापान के साथ संयुक्त विजेता रहा.

1978 के पिछले एशियाई खेलों में ुश्ती के 10 स्वर्ण पदकों में से जापान ने छः ारत ने दो व दक्षिणी कोरिया और मंगोलिया एकएक जीता.

इस बार भी इस वजन वर्गों के लिए ही ुकाबले होंगे. वे हैं– 48, 52, 57, 62, 68, 4, 82, 90 व 100 और 100 किलोग्राम से ऊपर. 48 किलोग्राम में ईश्वर सिंह, 52 किलोग्राम में महावीर सिंह, 68 किलोग्राम में ागमिंदर, 74 किलोग्राम में राजेंद्रसिंह, 90 किलोग्राम में करतार सिंह व 100 किलोग्राम में सतपाल से पदकों की उम्मीद की जा सकती है. दक्षिणी कोरियाई, ईरानी, मंगोलियाई व जापानी मल्लों से उन्हें कड़ी चुनौती मिलेगी. कुश्ती के मुकाबले 28 से 30 नवंबर व 1 और 2 दिसंबर को राजघाट के पास अंबेडकर स्टेडियम में होंगे.

कुश्ती के मुकाबले नौ मीटर व्यास के 10 सेंटीमीटर मोटे गद्दे पर होते हैं. हर मुकाबला तीनतीन मिनट के तीन चक्रों का होता है. मुकाबले वाले दिन हर प्रतियोगी का वजन लिया जाता है. जो पहलवान चित हो कर हारे उसे चार पेनल्टी अंक मिलते हैं. ऐसे छः पेनल्टी अंक मिलने पर पहलवान प्रतियोगिता से बाहर हो जाता है. 10 से ज्यादा अंकों मे आगे रहने वाले पहलवान को आधा अंक व उसके विरोधी को साढ़े तीन पेनल्टी अंक मिलते हैं. 10 से कम अंकों में जीतने की हालत में यह अनुपात 1:3 पेनल्टी अंकों का हो जाता है.

तैराकी

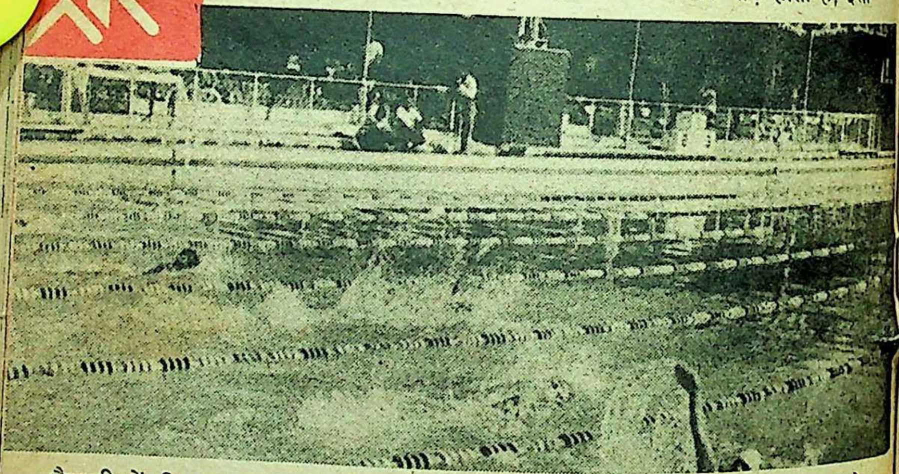

तैराकी में तीन तरह के मुकाबले होते हैं– पानी में दौड़, गोताखोरी व वाटर पोलो.

तैराकी दौड़ पांच तरह की होती है– फ्री स्टाइल, बटर फ्लाई, बैक स्ट्रोक व ब्रेस्ट स्ट्रोक और मेडले फ्री स्टाइल व मेडले रिले दौड़.

फ्री स्टाइल में 100, 200, 400 व 800 और 1,500 मीटर की दौड़ें होती हैं, इसी पद्धति में 4×100 मीटर व 4×200 मीटर रिले दौड़ भी की जाती है. इस पद्धति में तैराक अपनी इच्छानुसार किसी भी तरीके से तैर सकता है.

बटर फ्लाई पद्धति में दोनों हाथों व पैरों को एक साथ चला कर तैरा जाता है. बैक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्ट्रोक में पीठ के बल व ब्रेस्ट स्ट्रोक में सीने के बल तैरा जाता है. इन तमाम शैलियों में 100 मीटर व 200 मीटर की दौड़ें होती हैं.

मेडले में तैराक को फ्री स्टाइल, बटर फ्लाई, बैक स्ट्रोक व ब्रेस्ट स्ट्रोक पद्धति से समान दूरी तय करनी होती है. इस में 200 मीटर व 400 मीटर के व्यक्तिगत मुकाबले व

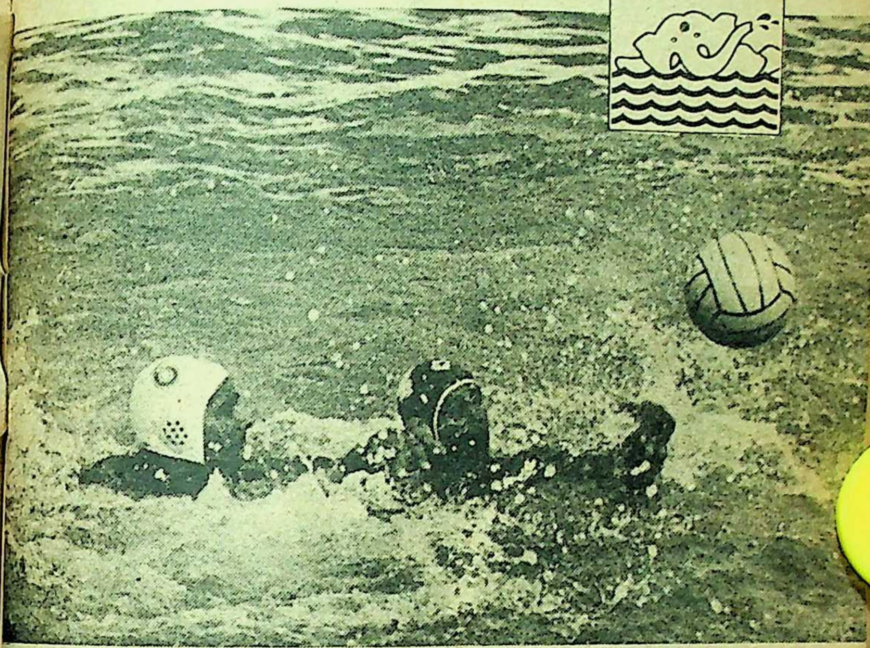

वाटरपोलो : हैंडबाल की तरह का खेल जो तरणताल में खेला जाता है.

4×100 मीटर का रिले मुकाबला होता है.

गोताखोरी के दो मुकाबले होते हैं— स्प्रिंग बोर्ड व प्लेटफार्म. स्प्रिंग बोर्ड में तीन मीटर की ऊंचाई वाली लचीली तख्ती (बोर्ड) से कूदना होता है. लेकिन पानी में जाने से पहले उसे हवा में कलाबाजियां खानी होती हैं और इन्हीं कलाबाजियों की श्रेष्ठता व सटीकता पर विजेता का फैसला होता है.

प्लेटफार्म गोताखोरी में दस मीटर की ऊंचाई से कठिन कोणों से चार ऐच्छिक व छः अन्य गोते तैराक को लगाने होते हैं.

वाटरपोलो हैंडबाल की तरह का ही टीम खेल है जो 20 मीटर लंबे, आठ मीटर चौड़े व 1.80 मीटर गहरे तरणताल में खेला जाता है. पांचपांच मिनट के चार हिस्सों में खेले जाने वाले इस खेल में दोनों टीमों के 7-7 खिलाड़ी हिस्सा लेते हैं. हर पांच मिनट के खेलों के बाद दो मिनट का विश्राम दिया जाता है.

तैराकी एशियाई खेलों के प्रारंभिक खेलों में से एक है. 1951 के पहले एशियाई खेलों में तैराकी के कुल 11 मुकाबले हुए थे जिन में चार भारत ने, चार ही सिंगापुर ने और तीन फिलीपींस ने जीते थे.

जापान जो पहले एशियाई खेलों के तैराकी मुकाबलों में आश्चर्यजनक रूप से पिछड़ गया था, 1954 के दूसरे एशियाई खेलों में जिन में महिला वर्ग के मुकाबले भी हुए, इस तरह आगे आया कि उसे आज तक तैराकी में दूसरे स्थान पर नहीं धकेला जा सका है. 1954 के कुल 16 मुकाबलों में से 1[illegible] जापान ने जीते थे. जापान के इसी अभ्युदय के साथ भारत का पराभव शुरू हो गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के.पी. ठक्कर को, जिहोंने पहले ृशियाई खेलों में दो स्वर्ण पदक जीते थे, ूसरे एशियाई खेलों में प्लेटफार्म डाइविंग में ांस्य पदक मिला. 1970 मे भारत को ाटरपोलो का रजत पदक मिला. यही ारत की अब तक की सफलता रही है.

तैराकी के मुकाबले तालकटोरा गार्डन के नवनिर्मित तरणताल में 20 से 29 नवंबर तक होंगे. 20 से ज्यादा देश इस में सब से ज्यादा सेट पदकों (61) के लिए मुकाबला करेंगे. कुल 34 स्पर्धाएं होंगी.

तैराकी में जापान की सफलता का यह आलम है कि पुरुषों के 200 मीटर बैकस्ट्रोक 100 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक व 100 मीटर बटर फ्लाई, 200 व 400 मीटर मेडले, 4×200 मीटर फ्री स्टाइल रिले, 4×100 मीटर मेडले रिले और महिलाओं के 100 व 200 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक, 200 मीटर मेडले, 4×100 मीटर फ्री स्टाइल रिले में अब तक सिर्फ जापानी ही जीत सके हैं.

1978 के पिछले एशियाई खेलों में 34 मुकाबलों में से जापान ने 25 जीते थे. इस बार चीन, थाइलैंड, कोरिया व फिलीपींस से उसे थोड़ी चुनौती मिल सकती है.

बूला चौधरी, अनिता सूद व खजानसिंह जैसे भारतीय खिलाड़ियों से सफलता की बहुत ज्यादा उम्मीद की जा रही है, हालांकि अनिता सूद ने साफ कहा है कि नवें एशियाई खेलों में भारत को सफलता मिल सकने की कोई गुंजाइश नहीं है.

निशानेबाजी

निशानेबाजी को एशियाई खेलों में 1954 में शामिल किया गया था. तब कुल पांच मुकाबले हुए थे. 1966 से इस में नौ नए मुकाबले शुरू किए गए. 1974 में इन में सात और नए मुकाबले जोड़े गए. नवें एशियाई खेलों में एथलेटिक्स के बाद सब से ज्यादा—22 देश (टेबल टेनिस में भी इतने ही होंगे) निशानेबाजी में हिस्सा ले रहे हैं. कुल 22 स्पर्धाओं में तैराकी के बाद सब से ज्यादा सेट पदक 55 निशानेबाजी के लिए ही दिए जाने हैं. मुकाबले तुगलकाबाद में नए बने शूटिंग रेंज में 22 नवंबर से 2 दिसंबर तक होंगे.

निशानेबाजी के मुकाबलों में कोरिया, चीन, जापान का बोलबाला रहा है. 1978 के एशियाई खेलों में निशानेबाजी के 21 मुकाबलों में से आठआठ चीन व कोरिया ने जीते थे, जब कि बाकी पांचों में जापानी जीते थे. इस बार इन तीन देशों को इंडोनेशिया व थाइलैंड से चुनौती मिल सकती है.

जहां तक भारत का सवाल है 1962 में हरीचरण शा ने कांस्य पदक जीता था. 1974 में डाक्टर कर्णीसिंह को एक रजत व एक कांस्य पदक मिला था. 1978 में रणधीरसिंह ने निशानेबाजी के मुकाबले का एकमात्र स्वर्ण पदक भारत को दिलाया था. इस सफलता को देखते हुए इस बार भी कोई ज्यादा शानदार सफलता की उम्मीद नहीं की जा सकती. पी.के. चटर्जी व एस.के. राय चौधरी जैसी राष्ट्रीय सफलताएं भी कोई निशानेबाज नहीं पा सका है.

निशानेबाजी में मुख्यत: तीन उपकरण इस्तेमाल होते हैं— पिस्टल, राइफल व शाट गन. पिस्टल निशानेबाजी में फ्री पिस्टल व रैपिड फायर पिस्टल मुकाबले होते हैं. राइफल निशानेबाजी में एयर राइफल, स्माल बोर राइफल व फ्री राइफल शामिल हैं. शाट गन निशानेबाजी में स्कीट व ट्रेप मुकाबले होते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

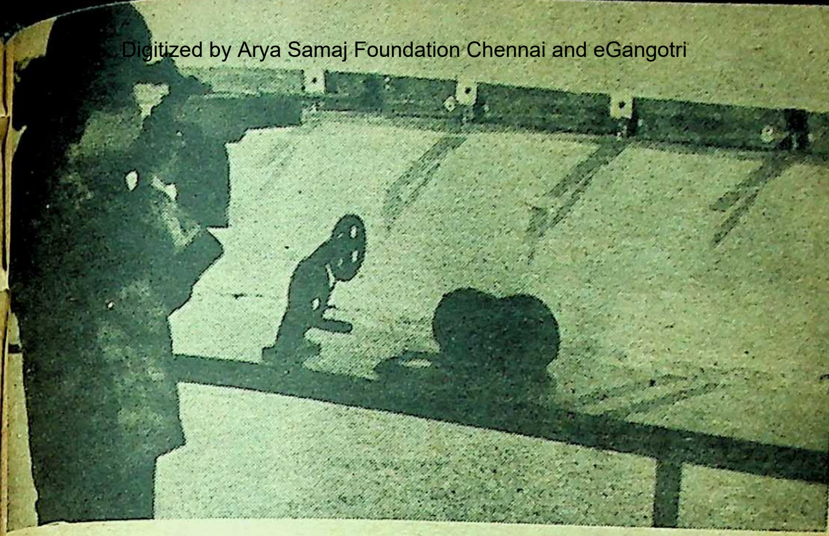

राइफल निशानेबाजी में लक्ष्य 10 गोल हिस्सों में बंटा होता है. बाहरी हिस्से पर गोली लगने से एक अंक व भीतरी हिस्से पर लगने से 10 अंक मिलते हैं. लक्ष्य के भीतरी हिस्से में काला रंग व बाहरी हिस्से में सफेद रंग होता है. स्माल बोर राइफल में 5.6 मिलीमीटर के कारतूस इस्तेमाल किए ज़ाते हैं. प्रोन पोजीशन में 50 मीटर की दूरी से दो घंटे में निशाने लगाने होते हैं. इस में कुल 60 निशाने साधे जाते हैं. लक्ष्य 162.4 मिलीमीटर के व्यास का होता है.

फ्री पोजीशन में 120 निशाने तीन स्थितियों में खड़े हो कर लगाए जाते हैं. राइफल पांच किलोग्राम वजनी होती है.

एयर राइफल में 4.5 मिलीमीटर के कारतूस इस्तेमाल किए जाते हैं. इस में 10 मीटर की दूरी से 46 मिलीमीटर के अधिकतम व 31 मिलीमीटर के न्यूनतम व्यास वाले डेढ़ मीटर ऊंचाई के लक्ष्य को भेदा जाता है.

फ्री राइफल में 0.303 (7.62 मिलीमीटर) के कारतूस इस्तेमाल होते हैं. 300 मीटर की दूरी से व आठ किलोग्राम वजनी राइफल से 600 मिलीमीटर से 1000 मिलीमीटर के व्यास वाले लक्ष्य को भेदा जाता है. पिस्टल निशानेबाजी के फ्री पिस्टल मुकाबले में ढाई घंटे में 50 मीटर की दूरी से 60 निशाने 500 मिलीमीटर के अधिकतम बाहरी व्यास के लक्ष्य पर दागे जाते हैं. 5.6 मिलीमीटर के कारतूस इस में प्रयोग किए जाते हैं.

रैपिड फायर पिस्टल में 5.6 मिलीमीटर के ही कारतूसों से 1.60 मीटर ऊंचे व 0.45 मीटर चौड़े लक्ष्य को पांचपांच शाट की छः शृंखलाओं के दो दौरों में दागा जाता है. लक्ष्य घूमने वाला होता है और निशानेबाज के सामने पांच या छः सैकंड तक ही रहता है.

शाट गन निशानेबाजी में स्कीट मुकाबले में मिट्टी की तश्तरियों को हवा में उछाल कर निशाना साधा जाता है. तश्तरियां एक अर्द्धवृत के दो सिरों से छोड़ी जाती हैं. कुल 200 निशाने इस में लगाने होते हैं. ट्रेप मुकाबले में भी तश्तरियां निशाने के लिए इस्तेमाल की जाती हैं. इस में पांच अलगअलग स्थानों से 200 निशाने लगाए जाते हैं.

रनिंग गेम टारगेट में लक्ष्य भागते हुए सुअर के आकार का होता है. 50 मीटर की दूरी से 60 निशाने इस में लगाए जाते हैं. 10-10 शाट के तीन दौर 10 मिलीमीटर के छिद्र में से साधे जाते हैं जिस में लक्ष्य पांच सैकंड के लिए नजर आता है. बाकी ऐसे ही तीन दौर ढाई सैकंड तक सामने रहने वाले भागते हुए लक्ष्य पर निशाना लगाने के होते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

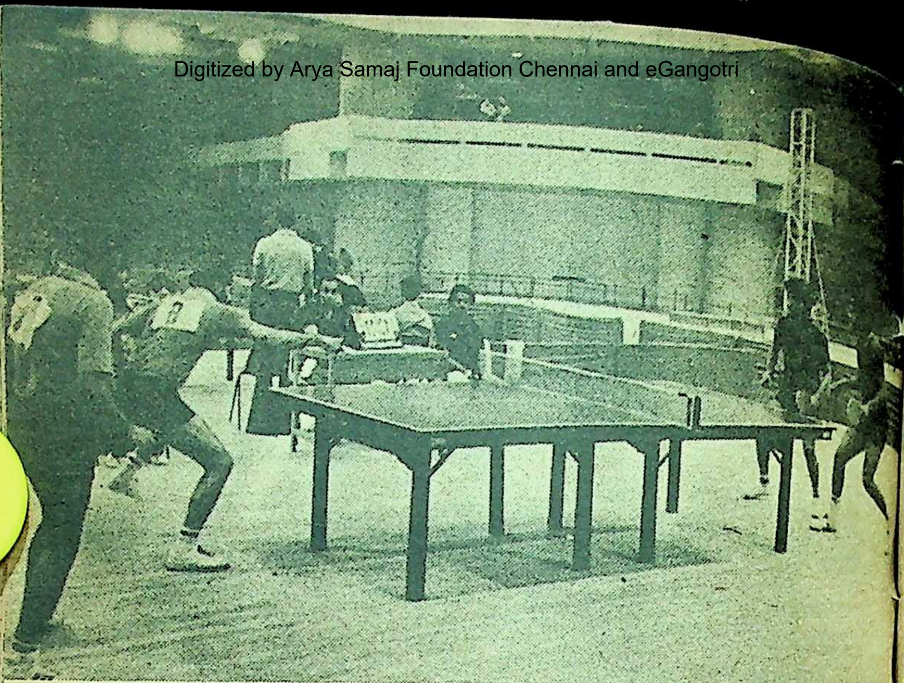

टेबल टेनिस

जो एकाधिकार जापान का तैराकी में है, वही चीन ने टेबल टेनिस में कायम कर रखा है. 1958 के एशियाई खेलों में टेबल टेनिस के सात मुकाबले शामिल किए गए थे. तब ताइवान की वजह से चीन एशियाई खेलों में हिस्सा नहीं लेता था. उस की गैर मौजूदगी में विएतनाम, जापान (1962 में सभी सात, 1966 में छः मुकाब्ले जीते) व दक्षिणी कोरिया इस खेल में जीतते रहे, लेकिन 1974 में एशियाई खेलों में शामिल चीन ने छः मुकाबले व 1978 में सभी सात मुकाबले जीत कर बाकी देशों की धाक को मिट्टी में मिला दिया.

इस बार जापान से ही या फिर इंडोनेशिया व कोरिया से उसे थोड़ी चुनौती मिल सकती है. भारत के किसी भी खिलाड़ी द्वारा पदक जीत पाने की कोई उम्मीद नहीं है. 22 से ज्यादा देश 17 सेट पदकों के लिए प्रगति मैदान के हाल आफ स्टेट में 19 से 25 नवंबर तक उतरेंगे.

जैसा कि नाम से जाहिर है, यह खेल टेबल यानी मेज पर खेला जाता है. मेज नौ फुट लंबी, पांच फुट चौड़ी व ढाई फुट ऊंची होती है. मेज ऐसी होती है, जो गेंद को पौने नौ इंच तक बाउंस दे सके. मेज की बाहरी रेखा तीन चौथाई इंच मोटी व मध्य रेखा 1/8 इंच मोटी होती है. यह रेखाएं सफेद रंग की होती हैं.

गेंद का वजन 37 ग्राम से 39 ग्राम व परिधि साढ़े चार से पौने पांच इंच तक होती है. जाल की लंबाई छः फुट व ऊंचाई छः इंच.

यह खेल गेमों में खेला जाता है. विपक्षी से दो अंक का अंतर रखते हुए पहले 21 अंक पाने वाला खिलाड़ी गेम जीत जाता है.

टेबल टेनिस में पुरुष व महिला वर्ग के टीम मुकाबलों के अलावा एकल, युगल व मिश्रितयुगल मैच भी होते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिमनास्टिक

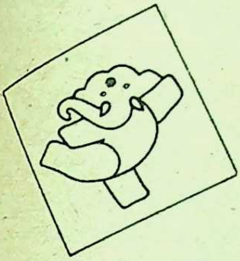

एशियाई खेलों में पुरुषों के आठ, महिलाओं के छः जिमनास्टिक मुकाबले होते हैं. जिन के लिए 24 सेट पदक दिए जाते हैं. 1974 में पहली बार जिमनास्टिक को एशियाई खेलों में जगह मिली थी. अब तक कुल 28 स्वर्ण पदकों में चीन ने 17 स्वर्ण पदक जीते हैं. जापान को सात पदक मिले हैं. जब कि बाकी चार कोरिया के हिस्से में आए हैं.

इस बार कुल 15 देशो में भारत भी है, जो पहली बार इन मुकाबालों में हिस्सा ले रहा है. इसलिए कड़ी चुनौती के बीच उस के खिलाड़ियों से कोई पदक जीत लेने की उम्मीद नहीं की जा सकती. मुकाब्ला चीन, कोरिया, जापान व हांगकांग के बीच ही रहेगा.

जिमनास्टिक के मुकाबले 20 नवंबर से 23 नवंबर तक इंद्रप्रस्थ इनडोर स्टेडियम में होंगे.

जिमनास्टिक में पुरुषों के लिए छः उपकरण-फलोर, साइड हार्स, रिंग्स, हार्सवाल्ट, पैरेलल बार्स व हारिजेंटल बार्स और महिलाओं के लिए चार उपकरण-फलोर, हार्स वाल्ट, एसिमिट्रकल बार्स व बैलेंस बीम इस्तेमाल किए जाते हैं.

प्रतियोगियों को चार जजों व एक रेफरी द्वारा अंक दिए जाते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस जज ने सब से ज्यादा व जिस जज ने सब से कम अंक दिए हों, उन्हें छोड़ कर बाकी दो जजों के अंक का औसत निकाला जाता है. हर व्यायाम पर 0 से 10 तक अंक दिए जाते हैं. गलत प्रदर्शन, नियंत्रण की कमी उपकरण से गिर जाने व निर्धारित से ज्यादा समय लेने पर प्रतियोगी के अंक कट जाते हैं.

जिमनास्टिक में पहले टीम स्पर्धा होती है, जिस में एक टीम के सभी छः सदस्य एक आवश्यक व एक ऐच्छिक उपकरण पर व्यायाम करते हैं. पुरुष टीम के लिए अधिकतम 600 अंक व महिला टीम के लिए 400 अंक होते हैं. हर व्यायाम में सर्वाधिक पांच अंक पाने वालों का योग कर विजयी टीम का फैसला किया जाता है.

व्यक्तिगत स्पर्धाओं में टीम स्पर्धा में एक व्यायाम में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी हिस्सा लेते हैं.

फ्लोर एक्सरसाइज में 45 मिलीमीटर मोटे व 12 मीटर लंबे और इतने ही चौड़े गद्दे पर करतब दिखाए जाते हैं. इस के लिए नियत समय है- पुरुषों के लिए 70 सैकंड व महिलाओं के लिए 90 सैकंड. इस में कलाबाजियां दिखानी होती हैं. महिलाओं के लिए 13 व्यायाम व पुरुषों के लिए 24 व्यायाम इस में जरूरी होते हैं.

हार्सवाल्ट या वाल्टिन हार्स में पुरुषों के लिए 1.35 मीटर की ऊंचाई पर व महिलाओं के लिए 1.10 मीटर की ऊंचाई पर चमड़े की गद्दी होती है. 20 मीटर से भागते हुए आ कर इस गद्दी पर कलाबाजियां खानी होती हैं.

पामेल हार्स या साइड हार्स में चमड़े की गद्दी के 0.12 मीटर ऊंचे व 0.28 मीटर चौड़े दो हैंडल होते हैं, इस में तीन ऐच्छिक व 18 आवश्यक व्यायाम होते हैं.

रिंग्स में दो गोल घेरे एक दूसरे से आधा मीटर की दूरी पर रहते हैं. ये 0.70 मीटर व 35 मिली मीटर चौड़े फीते से बंधे होते हैं. रिंग का भीतरी व्यास 0.18 मीटर होता है और यह फर्श से 2.50 मीटर की ऊंचाई पर होता है. इस में कुल 17 आवश्यक व्यायाम होते हैं.

पैरेलल बार्स में लचीली लकड़ी के 3.5 मीटर लंबे व एक दूसरे 42 से 48 मिलीमीटर दूरी पर और फर्श से 1.70 मीटर की ऊंचाई पर दो बार होते हैं. यह 41 मिलीमीटर चौड़े व 51 मिलीमीटर मोटे होते हैं, इस पर 13 आवश्यक व्यायाम होते हैं.

एसिमिट्रिकल बार्स, जैसा कि नाम से जाहिर है, एक ऐसा खेल है जिस में एक बार 2.30 मीटर की ऊंचाई पर व दूसरी बार डेढ़ मीटर की ऊंचाई पर रखी जाती है. कुल 12 आवश्यक व्यायाम इस में होते हैं.

होरीजेंटल या हाईबार्स में स्टील की 2.40 मीटर लंबी व 28 मिलीमीटर मोटी छड़ को फर्श से ढाई मीटर की ऊंचाई पर लगाया जाता है. 15 से 30 सैकंड के बीच में 13 आवश्यक व्यायाम इस पर करने होते हैं.

बैलेंस बीम में पांच मीटर लंबी व 10 सेंटीमीटर की गोल बीम पर जो 16 सेंटीमीटर मोटी होती है और फर्श से 1.20 मीटर ऊंची होती है, 80 से 105 सैकंड में खिलाड़ी को सात आवश्यक व्यायाम करने होते हैं.

विश्व सुंदरियां किसे महानतम मानती हैं

विश्व की सुंदरतम युवतियां किस व्यक्ति को महानतम मानती हैं? इस प्रश्न का उत्तर विश्व की 77 सुंदरतम युवतियों को ले कर किए गए एक सर्वेक्षण के दौरान सामने आया.

लीमा (पेरू) में विश्वसुंदरी प्रतियोगिता में भाग लेने आई इन युवतियों से जब इस प्रश्न का उत्तर पूछा गया तो सर्वाधिक 22 मत पाने वाले व्यक्ति पोप जान पाल द्वितीय थे.

आठ सुंदरियों की नजर में मदर टेरेसा महानतम थीं और अमेरिका के राष्ट्रपति तथा (भूतपूर्व फिल्म अभिनेता) रोनाल्ड रीगन को छः सुंदरियों ने महानतम बताया.

पांच सुंदरियों की नजर में उन की माताएं ही महानतम थीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

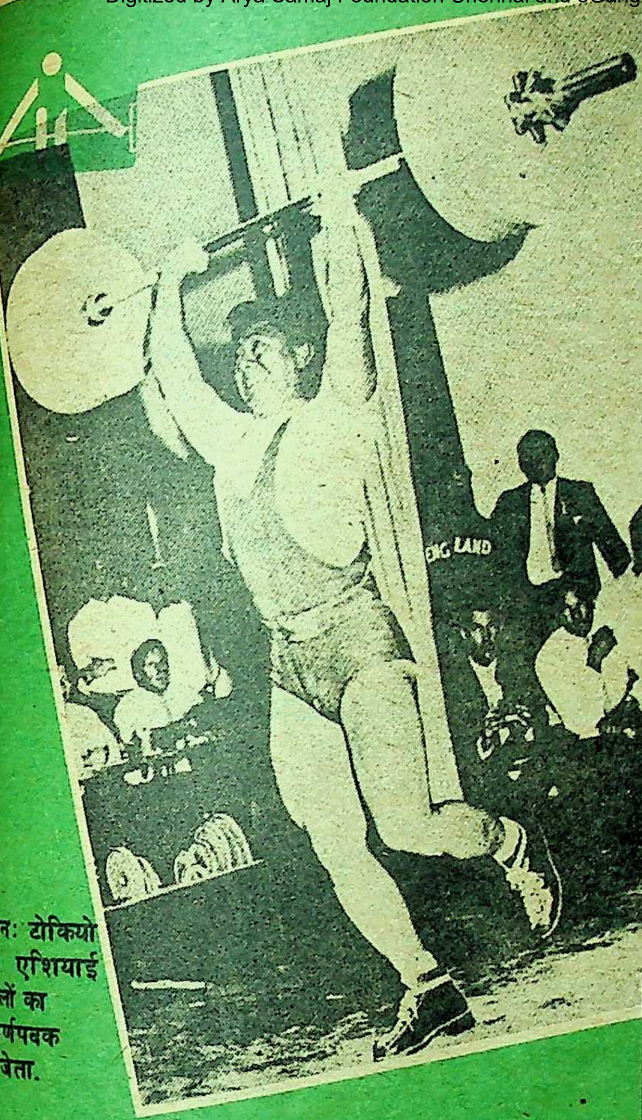

तान: टोकियो के एशियाई खेलों का स्वर्णपदक विजेता.

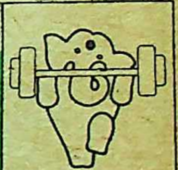

भारोत्तोलन

भारोत्तोलन के मुकाबले 20 से 29 नवंबर तक एशियाड सेंटर में होंगे. 18 देशों के भारोत्तोलक 30 सेट पदकों के लिए मुकाबला करेंगे.

इस में 10 वजन वर्गों में मुकाबले होते हैं– फ्लाइवेट (52 किलोग्राम), बैंटम वेट (56 किलोग्राम), फैदरवेट (60 किलोग्राम), लाइटवेट (67.5 किलोग्राम), मिडिलवेट (75 किलोग्राम), लाइट हैवी वेट (82.5 किलोग्राम), मिडिल हैवी वेट (90 किलोग्राम) हैवी वेट (100 किलोग्राम), सुपर हैवीवेट (110 या 110 किलोग्राम से ऊपर).

वजन दो तरह से उठाया जाता है– जर्क व स्नैच पद्धति से. जर्क में दो हिस्सों का खेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है. पहले [illegible] कंधें तक लाया जाता है और फिर उसे सिर के ऊपर तक ले जाया जाता है. स्नैच में सीधे झटके से यह काम किया जाता है.

वजन गोलाकार इस्पात के चक्के के रूप में होता है और कम से कम ढाई किलोग्राम के अंतर में होता है. चक्कों को संभालने वाली छड़ 2.20 मीटर लंबी होती है. हर खिलाड़ी को तीन मौके दिए जाते हैं. अंतिम स्थिति में दोनों पैरों को 40 सेंटीमीटर की दूरी पर रखते हुए वजन को दो सैकंड तक यथास्थिति में रखना होता है.

1951 के पहले एशियाई खेलों में भारोत्तोलन के बैंटम वेट, फैदर वेट, लाइट वेट, मिडिल वेट, लाइट हैवी वेट, मिडिल हैवी वेट व हैवी वेट वर्ग के मुकाबले हुए थे. इन सभी सात मुकाबलों में ईरान के खिलाड़ी सफल रहे थे. 1954 में सात में से पांच फाइनल मुकाबले दक्षिणी कोरिया ने व दो [illegible] बर्मा ने जीते थे.

1958 में फ्लाइवेट का मुकाबला शुरू हो जाने के बाद कुल आठ मुकाबलों में दक्षिणी कोरिया, जापान, सिंगापुर, ताइवान व ईरान ने मिलीजुली सफलताएं प्राप्त कीं. बाद के एशियाई खेलों में भी लगभग यही स्थिति रही. 1978 में जरूर सीरिया व लीबिया के भारोत्तोलकों ने अच्छा प्रदर्शन किया.

उत्तरी कोरिया, दक्षिणी कोरिया, जापान व ईरान इस बार के 10 खिताबों के लिए प्रमुख दावेदार हैं.

1951 में मिडिल हैवी वेट में भारत के ईश्वरराव ने रजत पदक जीता था. हैवी वेट मे गोपाल को कांस्य पदक मिला था.

आज की परिस्थितियों में विभिन्न वजन वर्गों के एशियाई व भारतीय कीर्तिमानें में जो अंतर है, उसे देखते हुए भारत के लिए एकदो कांस्य पदक जीत लेने के अलावा और किसी सफलता की कोई संभावना नजर नहीं आती●

विश्व के सब से प्राचीन व हिंदू धर्म का आधार ग्रंथ

सरल, सुलभ भाषा में पहली बार प्रकाशित

ऋग्वेद

(ऋग्वेद की संपूर्ण 'शाकल संहिता' का हिंदी भाषांतर)

भाषांतरकार :

डा. गंगासहाय शर्मा एम. ए. (संस्कृत), पीएच. डी. व्याकरणाचार्य

वेद में क्या है, क्या नहीं है, दूसरों से न सुन कर स्वयं पढ़िए. यह वही वेद है जो आज तक एक गोपनीय विधा रहा है और जिस के लिए शास्त्र कहते हैं कि शूद्र के कान में यदि इस का एक अक्षर भी पड़ जाए तो उस के कान में पिघला सीसा भर देना चाहिए.

हर हिंदू परिवार के लिए आवश्यक

मूल्य 65/- डाक व्यय 10/- अतिरिक्त

पूरा मूल्य अग्रिम भेजने पर डाक व्यय केवल 5 रुपए

प्राप्य : **दिल्ली बुक कंपनी,** एम/12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

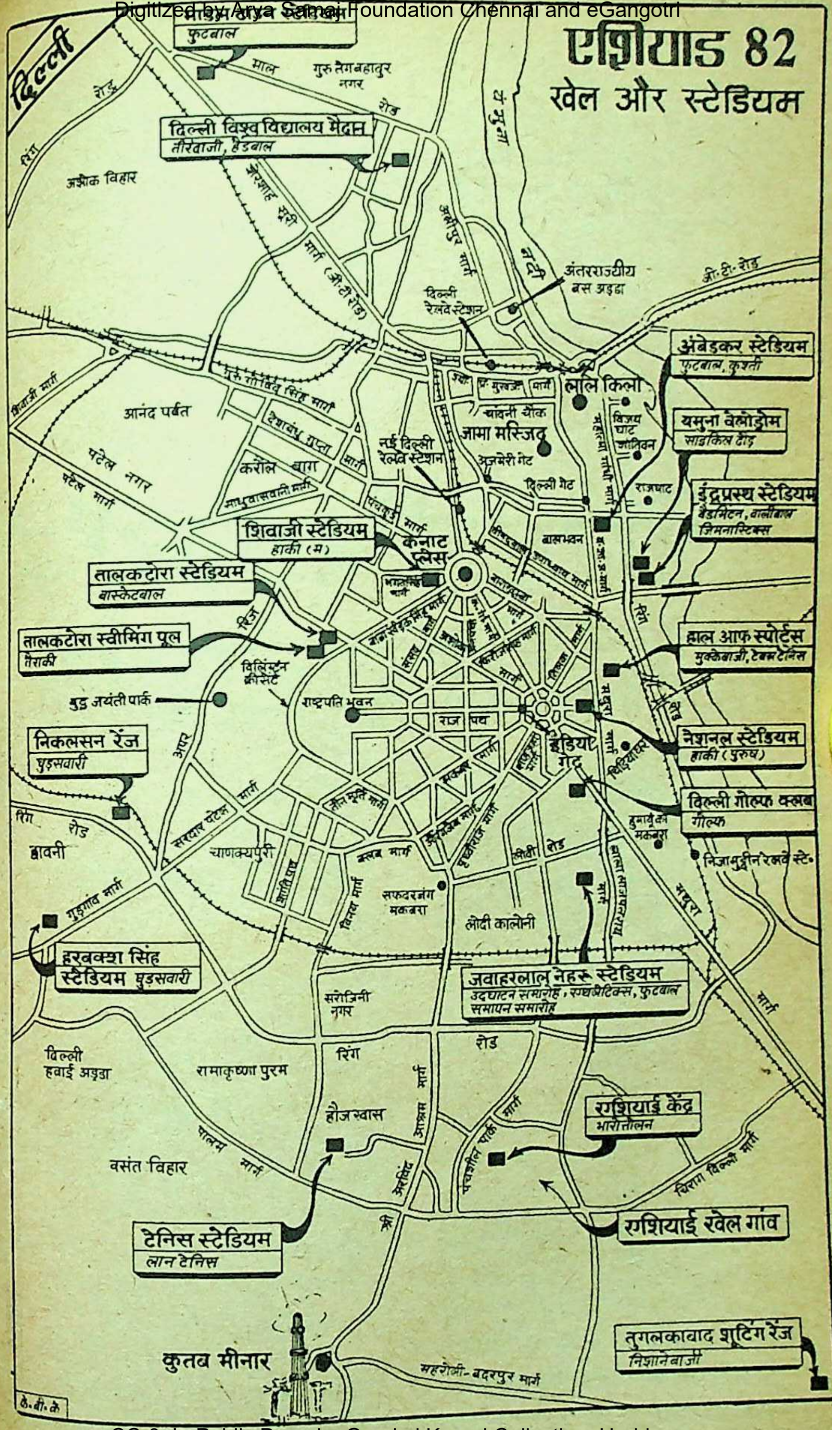

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एशियाई खेलों में भारतीय प्रदर्शन

एक कहावत है—इतिहास अपने आप को दोहराता है. एशियाई खेलों में भारतीय प्रदर्शन के मामले में यह बात कहां तक खरी साबित होगी, यह देखने की बात है. 1951 में हुए पहले एशियाई खेलों में भारत 15 स्वर्ण पदक जीत कर पदक तालिका में दूसरे नंबर पर रहा था. लेकिन इस के बाद के सात एशियाई खेलों में 1962 को छोड़ कर भारत को न तो दूसरा स्थान मिल सका और न ही 15 स्वर्ण पदक.

पहले एशियाई खेलों में 24 स्वर्ण पदक जीतने वाला जापान 1954 में 38, 1958 में 67, 1966 में 78 स्वर्ण पदक तक पहुंच गया. लेकिन भारत को मनीला के दूसरे एशियाई खेलों में सिर्फ पांच स्वर्ण पदक व पदक तालिका में पांचवां स्थान मिला. 1958 में भारत सातवें स्थान पर जा पहुंचा. 1962 में भारत ने एशियाई खेलों के इतिहास में 11 स्वर्ण पदक जीत कर दूसरी बार स्वर्ण पदकों की दहाई की संख्या पार की और इस प्रकार वह दूसरे नंबर पर रहा. लेकिन पहले नंबर पर 60 स्वर्ण पदक ले कर बैठा जापान उस से कहीं ज्यादा आगे था. 1966 व 1970 में पांचवें स्थान पर रहने के बाद 1974 में भारत आठवें स्थान तक पिछड़ गया. 1978 में भारत ने 11 स्वर्ण पदक जरूर जीते, लेकिन उसे पांचवां स्थान ही मिल सका.

पिछले आठ एशियाई खेलों में भारत की सफलता व असफलता का लेखाजोखा पेश है:

लेवी पिंटो : 1951 के प्रथम एशियाई खेलों में 100 व 200 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक विजेता.

1951 नई दिल्ली

स्वर्ण पदक

एथलेटिक्स : लेवी पिंटो (100 व 200 मीटर दौड़), रणजीतसिंह (800 मीटर दौड़), निक्कासिंह (1,500 मीटर दौड़), छोटासिंह (लंबी दूरी की मैराथन दौड़), मक्खनसिंह (चक्का फेंक), महावीरप्रसाद (10 किलोमीटर चाल), बख्तावरसिंह (50 किलोमीटर चाल), मदनलाल (गोला फेंक), भारतीय टीम (4X400 मीटर रिले).

फुटबाल : भारतीय टीम

तैराकी : सचिन नाग (100 मीटर फ्री स्टाइल), क.प. ठक्कर (स्प्रिंगबोर्ड व हाई बोर्ड गोताखोरी), भारतीय टीम (वाटरपोलो)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

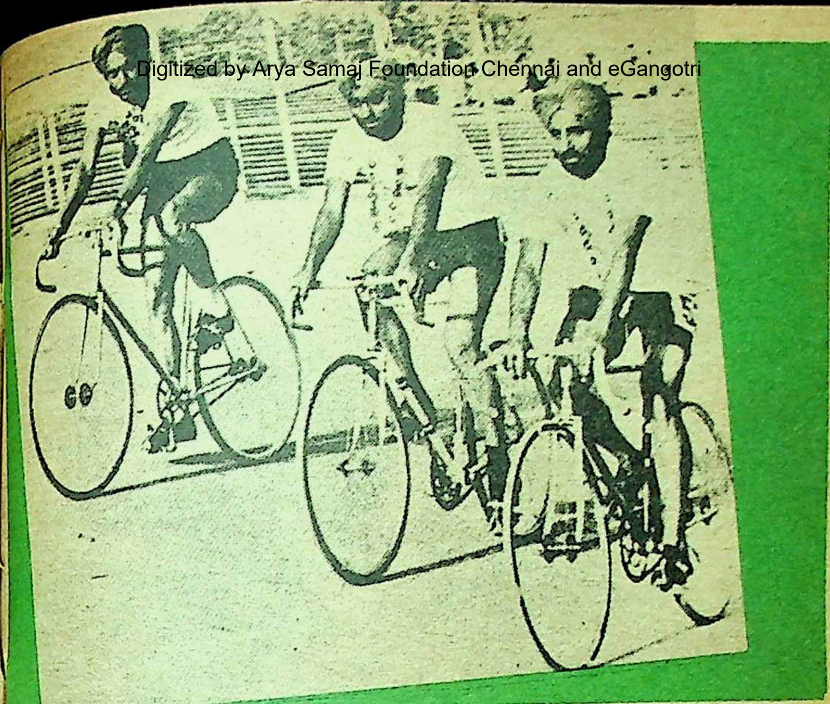

भारत के प्रख्यात साइकलिस्ट. सुच्चासिंह, दलवीरसिंह और अमरसिंह.

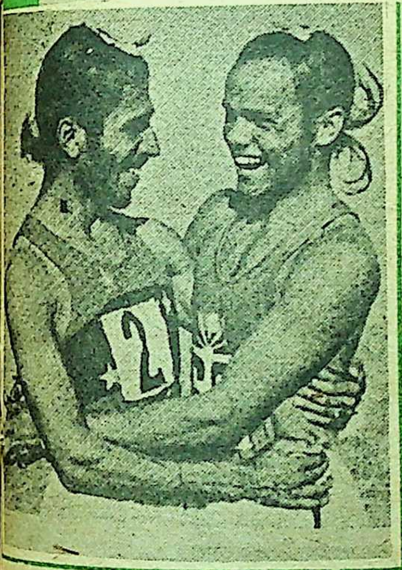

मिल्खासिंह व मक्खनसिंह : दौड़ में लंबे समय तक अपनी धाक जमाए रखे.

बाडी बिल्डिंग : वर्ग दो में परिमल राय व वर्ग तीन में जनार्दन राव और खले मुकाबले में परिमल राय प्रथम रहे. यह मुकाबला गैर प्रतियोगी वर्ग में हुआ था, फिर भी परिमल राय को 'श्री एशिया' का खिताब व स्वर्ण पदक दे दिया गया.

रजत पदक

एथलेक्स : गैब्रियल (200 मीटर, बख्शी (400 मीटर), कुलवंतसिंह (800 मीटर), प्रीतमसिंह (5,000 मीटर), तेजासिंह 400 मीटर बाधा), भारतीय टीम (4X100 मीटर रिले) बलदेवसिंह (लंबी कूद), पारसासिंह (भाला फेंक), सोमनाथ (तार

पहले एशियाई खेलों में 15 स्वर्ण पदक पाने वाला भारत आगामी एशियाई खेलों में क्या अपनी परंपरा को बरकरार रख सकेगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

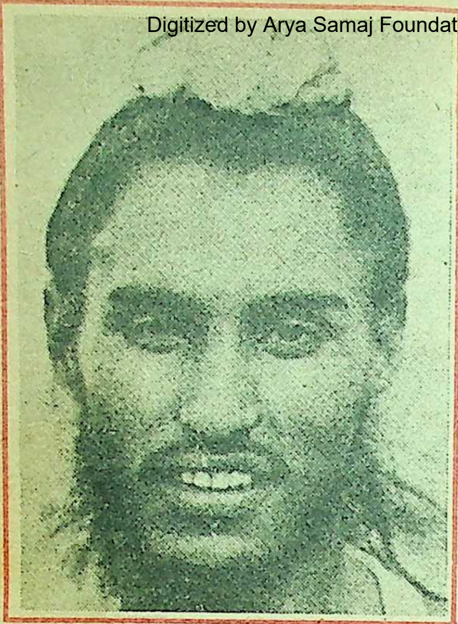

गुरुबचनसिंह : लंबा, छरहरा पुलिस-कर्मी जो अरसे तक एथलेटिक्स में अपना प्रभुत्व जमाए रखा.

गोला फेंक), बी. दास (50 किलोमीटर चाल), रोशन मिस्त्री (100 मीटर महिला), भारतीय महिला टीम (4X100 मीटर रिले).

साइकिल दौड़ : भारतीय टीम (4,000 मीटर टीम पर्सूट)

भारोत्तोलन : ईश्वर राव (मिडिल हैवी वेट).

तैराकी : कांति शाह (100 मीटर बैक स्ट्रोक) व आशुदत्त (स्प्रिंगबोर्ड गोताखोरी).

कांस्य पदक

एथलेटिक्स : गोविंदसिंह (400 मीटर), , अजीतसिंह (3.000 मीटर पानी बाधा दौड़) गुरुवचनसिंह. (10 किलोमीटर दौड़), किशनसिंह (तारगोला फेंक), खुरशीद अहमद (डिकेथलन यानी 10 खेलों की प्रतियोगिता), सूरतसिंह (मैराथन), केसरसिंह (10,000 मीटर चाल), मेरी डिसूजा (200 मीटर), सिमोसँ (ऊंची कूद), गाप्लेट (लंबी कूद), बारबरा वेब्स्टर (भाला व गोला फेंक).

साइकिल दौड़ : वायसेक (1,000 मीटर टाइम ट्रायल), आर.आर. नोबेल (1,000 मीटर स्प्रिंट) व भारतीय टीम (4,000 मीटर टीम पर्सूट)

तैराकी : जहांगीर बेगमवाला (200 मीटर ब्रस्ट स्ट्रोक), विमलचंद (400 मीटर फ्री स्टाइल), भारतीय टीम (4X100 मीटर फ्रीस्टाइल रिले व 300 मीटर मेडले रिले), टी.टी. दंड (प्लेटफार्म डाईविंग).

भारोत्तोलन : डी.आर गोपाल (हैवी वेट).

1954 मनीला

स्वर्णपदक

एथलेटिक्स : सरवनसिंह (110 मीटर बाधा दौड़), अजीतसिंह (ऊंची कूद), प्रद्युम्नसिंह (चक्का फेंक व गोला फेंक), महिला भारतीय टीम (4X100 मीटर रिले).

एलिजाबैथ डेवनपोर्ट : भाला फेंक में, दो दशकों से भी अधिक समय तक जिसका रिकार्ड अक्षुण्ण रहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजत पदक

एथलेटिक्स जोगिंदरसिंह : (400 मीटर), सोहनसिंह (800 मीटर) व भारतीय टीम (4X100 मीटर रिले).

कुश्ती : खालिद (लाइट वेट)

कांस्य पदक

एथलेटिक्स : गैब्रियल (100 मीटर दौड़), डालूराम (3,000 मीटर पानी बाधा दौड़ व पांच हजार मीटर), ब्रिन (डिकेथलन), ईशरसिंह (गोला फेंक) व ब्राउन (100 मीटर).

तैराकी : ठक्कर (प्लेटफार्म डाइविंग डाइविंग)

कुश्ती : सोहनसिंह (मिडिल वेट)

1958 टोकियो

स्वर्ण पदक

एथलेटिक्स : मिल्खासिंह (200 व 400 मीटर), मोहिंदरसिंह (त्रिकूद), बलकारसिंह (चक्का फेंक), प्रद्युम्नसिंह (गोला फेंक).

ज्ञानशेखरन : जिन्होंने पिछले एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक प्राप्त किया.

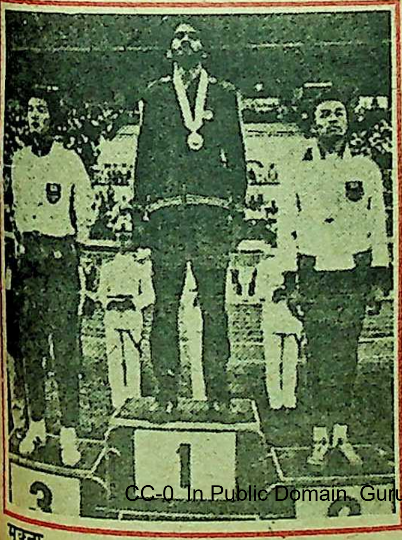

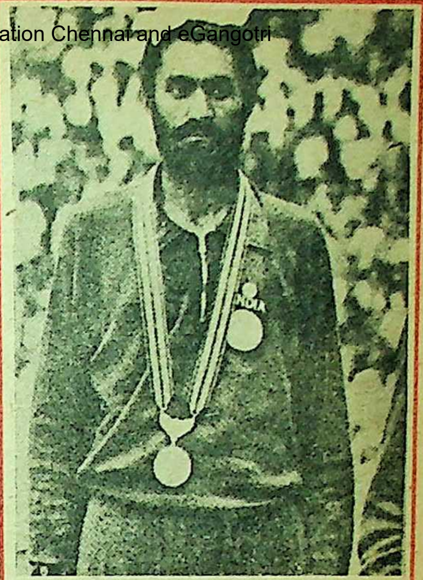

मोहिंदरसिंह : जकार्ता में हुए एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक विजेता.

रजत पदक

एथलेटिक्स : डिसूजा (200 मीटर), एलिजा बैथ डेवनपोर्ट (भाला फेंक)

कुश्ती : हरिसिंह (मिडिल वेट)

हाकी : भारतीय टीम.

कांस्य पदक

एथलेटिक्स : प्रद्युम्न सिंह (चक्का फेंक), भारतीय महिला टीम (4X100 मीटर रिले).

मुक्केबाजी : राव (लाइट वेट)

वालीबाल : पुरुष टीम.

1962 जकार्ता

स्वर्ण पदक

एथलेटिक्स : मिल्खासिंह (400 मीटर), मोहिंदरसिंह (1,500 मीटर), त्रिलोकसिंह (10 हजार मीटर), भारतीय टीम (4X100 मीटर रिले), गुरुबचनसिंह (डिकेथलन).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्केबाजी : पद्मबहादुर मल्ल (लाइट वेट)

कुश्ती : गणपत अंदालकर (हैवी वेट, ग्रीको रोमन), मालवा (फ्लाइट वेट, ग्रीको रोमन) व मारुति माने (हैवी वेट, फ्रीस्टाइल),

फुटबाल : भारतीय टीम.

रजत पदक

एथलेटिक्स : मक्खनसिंह (400 मीटर), दलजीतसिंह (800 मीटर), अमृतपाल (1,500 मीटर), दिनेशा ईरानी (गोला फेंक), प्रद्युम्नसिंह (चक्का फेंक).

कुश्ती : उदयचंद (लाइटवेट, ग्रीको रोमन), सज्जनसिंह (मिडिल वेट, ग्रीको रोमन), गणपत अंदालकर (लाइट हैवी वेट, फ्रीस्टाइल), मारुति माने (हैवी वेट, ग्रीको रोमन), उदयचंद (लाइटवेट फ्रीस्टाइल) व सज्जनसिंह (मिडिलवेट फ्रीस्टाइल).

हाकी : भारतीय टीम

वालीबाल : भारतीय टीम.

कांस्य पदक

एथलेटिक्स : अमृतपाल (800 मीटर), त्रिलोकसिंह (पांच हजार मीटर), जोगिंदरसिंह (गोला फेंक), व एलिजाबेथ डेवेन पोर्ट (भाला फेंक),

मुक्केबाजी : लेली डिसूजा (लाइट मिडिल वेट), व सुरेंद्र सरकार (मिडिल वेट).

कुश्ती : लक्ष्मीनारायण पांडे (वेल्टरस्वेट, ग्रीको रोमन),नारायण धीम (बेंदम वेट, ग्रीको रोमन) व मालवा (फ्लाइवेट फ्रीस्टाइल).

निशानेबाजी : हरिचरण शा (स्माल बोर रायफल, प्रोन पोजीशन).

1966 बैकांक

स्वर्ण पदक

एथलेटिक्स : अजमेरसिंह (400 मीटर), बी. एस. बरुआ (800 मीटर), भीमसिंह (ऊंची कूद), प्रवीणकुमार (चक्का फेंक), जोगिंदरसिंह (गोला फेंक).

मुक्केबाजी : हवासिंह (हैवी वेट)

हाकी : भारतीय टीम.

रजत पदक

एथलेटिक्स : अजमेरसिंह (200 मीटर)

कुश्ती : विश्वनाथसिंह (लाइट हैवी वेट, फ्रीस्टाइल)

मुक्केबाजी : नामदेव मोरे (बैटम वेट).

कांस्य पदक

एथलेटिक्स : प्रवीणकुमार (तारगोला फेंक), लाभसिंह (त्रिकूद), बलकारसिंह (चक्का फेंक), मनजीत वालिया (80 मीटर बाधा दौड़, क्रिस्टियानी फारेज़ (लंबी कूद).

कुश्ती : शामराव सावले (फ्लाइवेट), विशंभरसिंह (बैंटम वेट) उदयचंद (लाइट वेट), सज्जनसिंह (वेल्टर वेट), भीमसिंह (हैवी वेट) सभी फ्रीस्टाइल पद्धति में.

लान टेनिस : शिवप्रसाद मिश्र व वी. धवन (पुरुष युगल).

1970 बैकांक

स्वर्ण पदक

एथलेटिक्स : मोहिंदरसिंह गिल (त्रिकूद), प्रवीणकुमार (चक्का फेंक), जोगिंदर सिंह (गोला फेंक), कमलजीत संधु (400 मीटर).

कुश्ती : चंदगीराम (हैवी वेट, फ्रीस्टाइल)

मुक्केबाजी : हवासिंह (हैवी वेट).

रजत पदक

एथलेटिक्स : श्रीरामसिंह (800 मीटर), एडवर्ड सिक्वेरा (पांच हजार मीटर), भारतीय टीम (4X400 मीटर रिले), लाभसिंह (त्रिकूद), एम. जी. शेट्टी (डिकेथलन)

कुश्ती : जीतसिंह (लाइट हैवी वेट,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

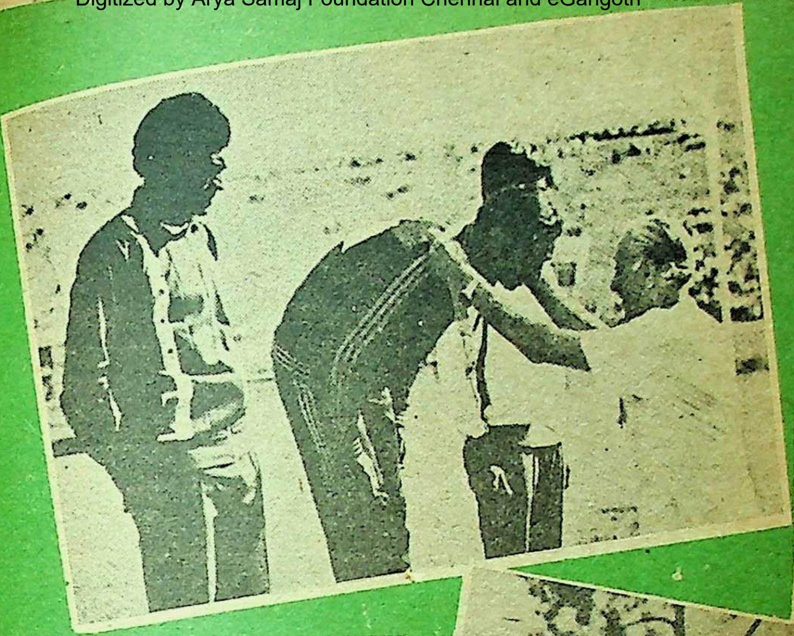

श्रीराम सिंह : मध्य दूरी की दौड़ों में अग्रणीय (ऊपर) व डा. कर्णीसिंह बीकानेर के महाराजा जिन्होंने निशानेबाजी में भारत को कई पदक दिलवाए.

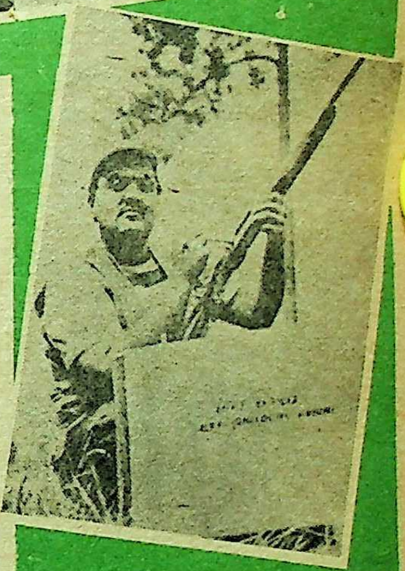

फ्रीस्टाइल)

मुक्केबाजी : मुन्नूस्वामी वेणु (फेदर वेट)

वाटरपोलो : भारतीय टीम.

हाकी : भारतीय टीम.

कांस्य पदक

एथलेटिक्स : सुच्चासिंह (400 मीटर), गुरमेजसिंह (3,000 मीटर पानी बाधा दौड़), भीमसिंह (ऊंची कूद), लाभसिंह (लंबी कूद) व भारतीय टीम (4X400 मीटर रिले)

कुश्ती : ओमप्रकाश ओमी (लाइट वेट), मुख्त्यारसिंह (वेल्टर वेट) नेत्रपालसिंह (मिडिल वेट) सभी फ्री स्टाइल में.

नौका चालन : ए. कंट्रेक्टर (एंटरप्राइज क्लास)

फुटबाल : भारतीय टीम.

1974 तेहरान

स्वर्ण पदक

एथलेटिक्स : श्रीरामसिंह (800 मीटर), शिवनाथसिंह (पांच हजार मीटर), टी.सी. योहानन (लंबी कूद) व विजयसिंह ओहान (डिकेथलन).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजत पदक

एथलेटिक्स : गुरमेजसिंह (3,000 मीटर पानी बाधा दौड़) शिवनाथसिंह (10 हजार मीटर), मोहिंदरसिंह गिल (त्रिकूद), भारतीय टीम (4X400 मीटर रिले दौड़), प्रवीणकुमार (चक्का फेंक), बहादुरसिंह (गोला फेंक), निर्मलसिंह (तारगोला फेंक)

मुक्केबाजी : मेजरसिंह (लाइट वेट), मेहताबसिंह (लाइट हैवी वेट) व टी. बूरा (हैवी वेट)

निशानेबाजी : डा. कर्णीसिंह (ट्रैप-शूटिंग)

हाकी : भारतीय टीम.

कांस्य पदक

एथलेटिक्स : लेहंबरसिंह (400 मीटर बाधा दौड़), सतीश पिल्लै (लंबी कूद), जगराजसिंह (गोला फेंक), सुरेश बाबू (डिकेथलन)

कुश्ती : सतवीरसिंह (फ्लाइवेट फ्री स्टाइल), सुखचैनसिंह (हैवी वेट, फ्री स्टाइल व ग्रीको रोमन), सतपालसिंह (मिडिल वेट फ्री स्टाइल)

मुक्केबाजी : चंद्रनारायण (फ्लाइवेट), मुन्नूस्वामी रेणु (लाइट वेट)

निशानेबाजी : डा. कर्णीसिंह (स्कीट शूटिंग)

बैडमिंटन : भारतीय टीम.

1978 बैकांक

स्वर्ण पदक

एथलेटिक्स : रामास्वामी ज्ञानशेखरन (200 मीटर), श्रीरामसिंह (800 मीटर), हरीचंद (पांच हजार मीटर व 10 हजार मीटर), हाकिमसिंह (20 किलोमीटर चाल), सुरेश बाबू (लंबी कूद), बहादुरसिंह (गोला फेंक), गीता जुत्शी (800 मीटर).

कुश्ती : राजेंद्रसिंह (फ्री स्टाइल, वेल्टरवेट) व करतारसिंह (लाइट हैवी वेट, फ्री स्टाइल)

निशानेबाजी : रणधीरसिंह (ट्रैप शूटिंग)

रजत पदक

एथलेटिक्स : रामास्वामी ज्ञानशेखरन (100 मीटर), उदय प्रभु (400 मीटर), गोपाल सैनी (3,000 मीटर पानी बाधा दौड़), भारतीय टीम (4X400 मीटर रिले), गीता जुत्शी (1,500 मीटर), एंजेल मेरी जोजेफ (पैंटेथलन व लंबी कूद)

कुश्ती : सतपाल (मिडिल हैवी वेट फ्री स्टाइल)

मुक्केबजी : बृजमोहन (हैवी वेट)

नौका चालन : भारतीय टीम (एंटरप्राइज क्लास)

हाकी : भारतीय टीम.

कांस्य पदक

एथलेटिक्स : मुरली कुरटन (400 मीटर), रतनसिंह (1,500 मीटर), सतवीरसिंह (110 मीटर बाधा दौड़)

मुक्केबाजी : मद्दैया (लाइट वेल्टर वेट) व मलूकसिंह (लाइट मिडिलवेट)

लान टेनिस : चिरदीप मुखर्जी (पुरुष एकल), चिरदीप मुखर्जी व श्याम मिनोत्रा (पुरुष युगल).

इस तरह भारतीय खिलाड़ियों को पिछले आठ एशियाई खेलों में 64 स्वर्ण, 72 रजत व 81 कांस्य पदक मिले हैं.

विश्व में सब से अच्छी वेशभूषा वाले 12 व्यक्ति

अमरीका के राष्ट्रपति रीगन को विश्व की सब से अच्छी वेशभूषा वाले 12 व्यक्तियों में माना गया है. उन के अतिरिक्त उन की पत्नी, ब्रिटेन के युवराज चार्ल्स तथा उन की पत्नी डायना को भी सब से अच्छी वेशभूषा वाले व्यक्तियों में माना गया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एशियाई खेलों की आयोजन व्यवस्था

मामला उलझा क्यों?

नवम एशियाई खेल दिल्ली
IX ASIAN GAMES DELHI 1982

श्रीमती गांधीः एशियाई खेलों में सतरंगी राजनीति का कमाल.

एशियाई खेलों के आयोजन को ले कर आज जो आपाधापी नजर आ रही है, दो महीने का समय शेष रहते हुए जो ढेर सा काम अधूरा पड़ा लग रहा है उस की सिर्फ एक वजह है– गलत लोगों द्वारा गलत समय पर लिए गए कई गलत फैसले.

भारत में ही 1951 में पहले एशियाई खेल हुए थे. उस के बाद दूसरी बार एशियाई खेल कराने के लिए 1970 से पहले से ही कोशिशें शुरू हो गई थीं. 1970 में गृह राज्य मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा, केंद्रीय आवास मंत्री श्री सत्यनारायण सिन्हा व मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मल्होत्रा को ले कर इस के लिए समिति बनाई गई ताकि संभावित एशियाई खेलों की आयोजन व्यवस्था के तमाम पहलुओं पर विचार कर लिया जाए. समिति में कई नक्शे बने और यह तय पाया गया कि एशियाई खेल भारत में छः करोड़ रुपए में किए जा सकते हैं.

1970 में बैंकाक एशियाई खेलों के दौरान 1974 में खेल कराने के लिए दो देश उम्मीदवार थे– भारत व ईरान. बैठक वाले दिन एशियाई खेल परिषद के तीन भारतीय सदस्यों में से दो पहुंचे ही नहीं और तीसरे ने बैठक में हिस्सा ही नहीं लिया, लिहाजा 1974 के एशियाई खेल ईरान को मिल गए.

1978 के एशियाई खेलों के लिए वित्त संकट की वजह से भारत ने अपना दावा वापस ले लिया. पाकिस्तान को ये खेल आयोजित करने का मौका मिला, लेकिन दो साल बाद

•

सरकारों के बदलते रहने के कारण एशियाई खेल शुरू से ही विवादास्पद रहे. राजनीतिक हस्तक्षेप ने किस प्रकार इन की व्यवस्था को कमजोर बना दिया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस ने एशियाई खेलों के आयोजन में अपनी असमर्थता व्यक्त कर दी.

1976 में मांट्रियल में हो रहे ओलंपिक खेलों के दौरान भारत को 1982 के नवें एशियाई खेलों के लिए चुन लिया गया. कनाडा में भारत के उच्चायुक्त ने इस दावे पर हस्ताक्षर किए और बाद में केंद्रीय मंत्रिमंडल की भी इसे स्वीकृति मिल गई. लेकिन मार्च, 1977 में जब केंद्र में सत्ता पलटी, तब तक एशियाई खेलों के आयोजन के लिए कुछ भी नहीं किया गया.

जनता पार्टी के भी 1977-78 के बजट में एशियाई खेलों के लिए कोई व्यवस्था नहीं की गई. शिक्षा मंत्रालय ने तो खेलों के आयोजन पर 80 से 100 करोड़ रुपए तक खर्च होने की बात कही.

1978-79 के बजट अधिवेशन में तत्कालीन शिक्षा मंत्री ने कहा कि एशियाई खेल भारत में नहीं होंगे. प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई भी ज्यादा खर्च की बात सोच कर इस के खिलाफ थे.

दिसंबर, 1978 में भारत से फिर यह पूछा गया कि अगर वह एशियाई खेल अपने यहां न कर पाए तो बता दे ताकि समय रहते किसी दूसरे देश को इस का जिम्मा दिया जा सके.

'एशियाई खेलों पर खर्च होने वाला धन फजूल है'-चरणसिंह

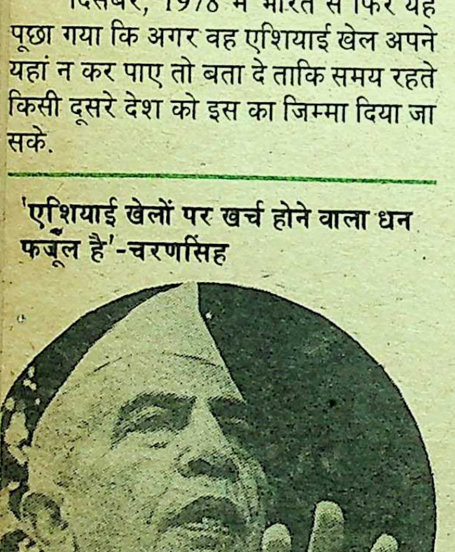

मोरारजी देसाई: एशियाई खेलों पर ज्यादा खर्च के विरोधी.

फरवरी, 1979 में ओलंपिक संघ की बैठक में विजयकुमार मल्होत्रा आयोजन समिति के अध्यक्ष बने. उन्होंने 17 सदस्यों का कार्यकारी बोर्ड नामजद किया, 24 समितियां बनीं. जापान की ओमेगा व सीको कंपनियों से तकनीकी सामान मंगाने पर बातचीत हुई.

इसी बीच जनता सरकार का पतन हो गया और चरणसिंह कामचलाऊ प्रधान मंत्री बन गए. उन्होंने आते ही कहा, "एशियाई खेलों पर होने वाला खर्च फजूल है. इतने पैसे से तो राजस्थान नहर को पूरा करवाया जा सकता है."

नई सरकार के आने से अभियान समिति में नए गृह मंत्री, शिक्षा व आवास मंत्री शामिल हो गए, आयोजन समिति वैसे की वैसी रही.

जनवरी, 1980 में श्रीमती इंदिरा गांधी फिर सत्ता में आ गईं.

इस से पहले एशियाई खेल दिल्ली के साथसाथ राई (हरियाणा) व कलकत्ता में भी कराए जाने की बात सोची गई थी, लेकिन बाद में इस योजना को अव्यावहारिक मान कर उसे रद्द कर दिया गया. लेकिन श्रीमती इंदिरा गांधी के सत्ता में आते ही यकायक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैसला हो गया कि खेल राई में होंगे. प्रधान मंत्री ने इस की वजह बताते हुए कहा, "दिल्ली में ये खेल आयोजित करने से प्रदूषण बढ़ जाएगा."

राई में न तो होटलों का इंतजाम था और न ही टेलीविजन प्रसारण, इलेक्ट्रानिक उपकरणों व विदेश संचार सेवा तथा कंप्यूटरों के इस्तेमाल की कोई सुविधा थी. कुछ हजार की आबादी वाले राई में तुरतफुरत यह व्यवस्था कर पाना भी असंभव था. फिर दिल्ली से हजारों लोगों को राई तक ले जाना व वहां से वापस लाना कोई आसान काम नहीं था.

साइकलिंग व तीरंदाजी संघ ने राई का विरोध किया. इन खेलों के अलावा राई में कुश्ती, जिमनास्टिक व निशानेबाजी के मुकाबले कराने की भी योजना थी. वैसे तो हरियाणा के मुख्य मंत्री भजनलाल ने यह घोषणा की थी कि अगर इन्हें 20 करोड़ रुपए दिए जाएं तो वे राई में ही पूरे खेल आयोजित कर के दिखा देंगे, लेकिन सिर्फ छः खेल राई में आयोजित करने की बात मानी गई तो भजनलाल ने इस के लिए 30 करोड़ रुपए की मांग की. दिल्ली में इन खेलों के लिए 37 लाख रुपए की रकम रखी गई थी जो बाद में 50 लाख रुपए तक पहुंच गई थी.

बाद में पता चला कि यह सारा तमाशा विजयकुमार मल्होत्रा को आयोजन समिति से हटाने के लिए किया गया था. लेकिन इस से एशियाई खेलों की आयोजन व्यवस्था को तो जबरदस्त धक्का लगा.

जब विजयकुमार मल्होत्रा एशियाई खेलों की आयोजन समिति के अध्यक्ष थे तो उन्होंने 27 करोड़ रुपए में एशियाई खेल कराने की बात कही थी. श्रीमती इंदिरा गांधी ने सत्ता में आने के बाद एशियाई खेलों के लिए 38 करोड़ रुपए की मंजूरी दी. लेकिन हाल में लोकसभा में आयोजन समिति के अध्यक्ष बूटा सिंह ने बताया कि खेलों पर 70 करोड़ रुपए खर्च होंगे.

लेकिन ये तमाम कोशिशें लोगों की आंखों में धूल झोंकने की कोशिश है.

विजयकुमार मल्होत्रा: राजनीति के शिकार.

एशियाई खेलों पर खर्च होने वाली रकम को सहीसही इसलिए नहीं बताया जा रहा ताकि गरीबी और कंगाली का रोना रोने वाली सरकार की शाही तबीयत का भेद न खुल जाए.

आयोजन समिति के महासचिव सुरेंद्र सिंह गिल ने जब कहा कि एशियाई खेलों पर 400 करोड़ रुपए खर्च होंगे तो काफी हाय बावेला मचा. बूटा सिंह ने उन्हें झूठा कहा और गिल के अनुमान का मजाक उड़ाया.

सचाई यह है कि एशियाई खेलों पर 400 करोड़ नहीं, बल्कि 500 करोड़ रुपए के आसपास खर्च होने जा रहे हैं.

स्टेडियम, खेल गांव, यमुना बैलोड्रोम, टेबल टेनिस हाल (प्रगति मैदान), शूटिंग रेंज, स्विमिंग पूल, विश्वविद्यालय का मैदान बनाने में करीब 125 करोड़ रुपया लगा है. फ्लाई ओवरों के निर्माण, सड़कों की मरम्मत व होटलों के निर्माण और विकास में 325 करोड़ रुपए की लागत आएगी. विभिन्न मंत्रालय व एजेंसियां, जिन में रेलवे व दिल्ली परिवहन निगम भी शामिल है, अलगअलग सुविधाएं जुटाने के लिए 60 करोड़ रुपए खर्च करेंगी.

सफेद रंग के अप्पू हाथी को एशियाई खेलों का शुभंकर चुन कर सही ही किया गया है. आम जनता के लिए तो एशियाई खेल सफेद हाथी ही साबित होने वाला है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर कार्यालय में यह 'शुभचिंतक' आप को मिलेंगे. हो सकता है आप इन से मिल चुके हों.

ये कार्यालय 'शुभचिंतक'

व्यंग्य • सिंधु गोयल

प्रत्येक कार्यालय में एक न एक जीव ऐसा अवश्य होता है, जिसे कार्यालय शुभचिंतक की संज्ञा देना अनुचित नहीं होता. चूंकि मैं ने भी रोजीरोटी के चक्कर में अनेक कार्यालयों के दरवाजे खटखटाए हैं इसलिए मेरा पाला इस प्रकार के अनेक शुभचिंतकों से पड़ा है.

इन में पहला नंबर है गणपतिजी का.

दफ्तर की प्रायः प्रत्येक मेज पर आलपिनों की आवश्यकता होती है, फिर गणपतिजी तो टिप्पणी (नोटशीट) नत्थी करते थे, अतः उन्हें तो और भी ज्यादा आलपिनों की जरूरत थी.

गणपतिजी जानते थे कि यदि उन के दांतों के बीच मैल की परतें होंगी, मसूड़ों व दांतों के बीच में सुबह खाए भोजन के टुकड़े आराम करते नजर आएंगे तो आने वालों पर कंपनी का अच्छा असर नहीं पड़ेगा.

अतः हर 10-15 मिनट बाद वह एक साफ सी, लंबी व नुकीली आलपिन छांटते और इस प्रक्रिया में अनुपयुक्त आलपिनों को रद्दी की टोकरी के हवाले करते जाते. अपनी पसंदीदा आलपिन से वह अपना हरेक दांत साफ करते जाते और परिश्रम से निकाले मैल को मेज पर पड़े मेजपोश पर क्रम से लगाते जाते.

इस काम में उन्हें इस कदर महारत हासिल थी कि फाइल से कुछ पढ़ते हुए भी दांत कुरेदते जाते. बात करने में भी उन का दांत कुरेदना अड़चन नहीं बनता था.

कभीकभी यह आलपिन पैर के अंगूठे के नाखूनों व कान का मैल निकालने में भी काम आ जाती.

सफाई के प्रति गणपतिजी की यह निष्ठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन के प्रतिदिन कार्यालय समय के करीब दो घंटे चाट जाती. 50-60 आलपिनें बरबाद होतीं व मेजपोश भी जल्दीजल्दी धुलवाना पड़ता. पर दांत गंदे रहें, यह वह बरदाश्त नहीं कर सकते.

छोटे बच्चों का एक खानेदार झूला होता है, जिस में बच्चों को बैठा कर घुमा दिया जाता है. इसे चकरइया भी कहते हैं.

उमेशजी एक कंपनी में कार्यालय प्रबंधक थे. मालिकों की कृपा से उन्हें घूमने वाली कुरसी मिली हुई थी. उमेशजी को बचपन में जब पाठ याद नहीं होता था तो वह बच्चों के झूले चकरइया में जा बैठते थे और एकदो चक्कर में ही उन्हें पाठ कंठस्थ हो जाया करता था.

आदत से मजबूर उमेशजी दिन भर अपनी चकरइया कुरसी पर चक्कर काटते रहते. इस से उन्हें कितनी शांति मिलती यह तो वह ही जानते होंगे, पर केवल छः महीने में चार बार कुरसी के बालबियरिंग बदले जाते जो मालिकों के लिए सिरदर्द बन जाता.

तीसरे नंबर पर हैं एक शुभचिंतिका—श्रीमती लक्ष्मी. अन्य महिलाओं की तरह लक्ष्मीजी को भी सजनेसंवरने का बहुत शौक था, उन का विचार था कि इस से दफ्तर में खुशगवारी कायम रहती है.

पाउडर को फैलाना हो, लिपिस्टिक को एकसार करना हो, माथे की बिंदिया गोल करनी हो, नाक साफ करनी हो, थोड़ीथोड़ी देर में पसीना पोंछना हो आदि, लक्ष्मीजी बेधड़क हो कर टिशू पेपर का सदुपयोग करतीं. इसे वह शौचालय से ही अच्छी मात्रा में अपने पर्स में भर लातीं. वहां तो इस का रोलर लटका रहता था.

एक बार जब कार्यालय के विभाग अधिकारी ने उन की रद्दी की टोकरी से प्रयोग किए हुए 16 टिशू पेपर निकलवा कर लक्ष्मीजी से यहां उन पेपरों की मौजूदगी का कारण जानना चाहा तो कई दिन तक वह कहती हुई सुनी गईं कि अधिकारीगण उन के रूप से जलते हैं व दफ्तर को खुशगवार नहीं देख सकते.

एक और शुभचिंतक थे गिरीशबाबू. इन के सुपुर्द था डाक में जाने वाले लिफाफों आदि को पैक कर के चिपकाने का काम.

गिरीश बाबू रोजाना ही जरूरत से ज्यादा लेही बनवाते क्योंकि उन्हें इस बात की बहुत चिंता रहती कि कहीं लिफाफे में रखी सामग्री अच्छी चिपकाई के अभाव में सरक न जाए. नतीजा यह कि जहां दो या तीन ग्राम लेही लगानी होती वहां गिरीशजी अपनी बीच वाली उंगली से 15-20 ग्राम लेही निकाल कर लिफाफे को पूरे का पूरा पोत डालते. इस बेरहम पुताई के बाद भी जो बेशर्म लेही उन की उंगली से चिपटी रह जाती उसे वह बहुत ही बेदर्दी से मेज के निचले हिस्से, पास की दीवार या खिड़की के परदे से पोंछ देते.

उन्हें इस बात का पूरा एहसास था कि इस प्रकार जहां प्रत्येक महीने सैकड़ों रुपए की लेही बरबाद चली जाती है, वहीं दीवार आदि भी खामखां गंदी होती हैं, पर लिफाफों की मजबूती कायम करने में उन्हें इस बात का कोई एहसास नहीं था कि उन के हाथों से निकली बहुत सी चिट्ठियां अपने लिफाफे से हमेशा के लिए चिपक जातीं व कुछ लिफाफे आपस में इतने प्रेम से गले मिलते कि फिर फट कर ही अलग होते.

अंत में अपने कार्यालय की एक अनोखी शुभचिंतिका सुश्री अर्पिताजी का जिक्र करना जरूरी है.

धनी परिवार की एक मात्र सुपुत्री अर्पिताजी का हमारे कार्यालय में लिपिक के पद पर कार्य करना हम सभी के लिए आश्चर्य का विषय रहा.

यों तो अर्पिताजी कहती थीं कि वह कार्य के लिए स्वयं को अर्पित कर अपने नाम को चरितार्थ कर रही थीं, पर तेजी से बदलते हावभावों ने शीघ्र ही उन की नीयत को उजागर कर दिया.

शुरूशुरू में अर्पिताजी एकदम सादे कपड़ों में कार्यालय में आतीं, लंबे केश चोटी में गुथे रहते, कम बोलतीं और काम में व्यस्त नजर आतीं. उन की इस सादगी ने सभी पर ... कायम कर दी. ... कि अर्पिताजी एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ ही दिनों में एक ऐसा समय आ गया जब कि हरेक का दिमाग अर्पिता जी की तरफ ही उलझा रहने लगा. इस से कार्यालय की एकएक मेज पर फाइलों के ढेर लगने लगे.

अच्छी कर्मचारी हैं.

परंतु छुट्टियों के बाद जब अर्पिताजी मिडी पहन कर, बालों को इटैलियन स्टाइल में लहराते हुए आईं तो कार्यालय के सहकर्मी युवकों का तो कहना ही क्या, बुजुर्गवारों में भी हलचल मच गई.

अर्पिताजी जहां बातचीत में शोखी ले आई थीं; वहीं उन की चालढाल में नजाकत भी साफ झलकने लगी थी. युवकों को वह गहरी निगाहों से देखतीं. प्रौढ़ मुख्य प्रबंधक से वह छोटी से छोटी बात को समझने जाने लगीं.

कुछ ही समय में उन का नाम इस उस के साथ जुड़ने लगा. चर्चा के बाजार गर्म होने लगे और अर्पिताजी की खूबसूरत पोशाकों की लंबाईचौड़ाई घटने लगी.

कुछ ही दिनों में एक ऐसा समय आ गया कि हरेक का दिमाग अर्पिताजी की तरफ ही उलझा रहने लगा. इस से कार्यालय की एकएक मेज पर फाइलों के ढेर लगने लगे. पर एक दिन जब कार्यालय की प्रत्येक मेज पर अर्पिताजी की एक बड़े उद्योगपति से शादी का कार्ड रखा मिला तो सब के मुंह खुले रह गए?

आखिर उन्होंने चार सौ रुपए की नौकरी क्यों की थी.

पता चला कि लेखन, चित्रकला व नाटकों में अभिनय आदि किसी भी क्षेत्र में उन्हें प्रमुखता नहीं मिल सकी थी और जनसामान्य में चर्चित होने की इच्छा ने उन्हें यह सब करने पर मजबूर कर दिया था.

परंतु अपनी इस लीला से अर्पिताजी अपने कितने ही सहकर्मियों में आपस में ही दरार डलवा चुकी थीं व कितनों को काम करने की जगह प्रेम के सपने देखने की आदत डाल चुकी थीं.

"दफ्तर में आप काम करने आते हैं या इश्क लड़ाने?" जातेजाते अनेक सहकर्मियों से उन का यह सवाल क्या कार्यालय के प्रति उन की शुभचिंता को जाहिर नहीं करता? •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शताब्दियों तक हिमालय प्रदेश देश की उत्तरी सीमा का अभेद्य प्रहरी माना जाता रहा. परंतु 1962 में चीन के आक्रमण से यह धारणा टूट गई. हमारे संपूर्ण उत्तरी सीमांत में दो स्थल हमारी प्रभुता के क्षेत्र से बाहर हैं, ये हैं—नेपाल और भूटान. अतीत की तरह अब यह मान कर नहीं चला जा सकता कि एक सी भौगोलिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के उत्तराधिकारी होने के कारण हिमाचल के दक्षिण की ओर समुद्र के उत्तर की ओर स्थित सभी राष्ट्र प्रतिरक्षा कारणों से एकजुट रहेंगे. पाकिस्तान, नेपाल और बंगला देश के विगत वर्षों के आचरण हमारी आखें खोलने के लिए काफी होने चाहिए. इन्हीं देशों की दिशा में कदम बढ़ाता हुआ हमारा अन्य पड़ोसी देश है—भूटान.

नेपाल की तरह ही भूटान भी हिमाचल की गोद में बसा हुआ एक अलग राज्य है. इस समानता के बावजूद दोनों पर्वतीय राष्ट्रों में एक अंतर भी है कि धार्मिक व सांस्कृतिक आधार पर नेपाल हिंदुत्व पर जोर देता है, जब कि भूटान अपने तिब्बती बौद्ध व्यक्तित्व को विकसित करना चाहता है.

भूटान भारत के अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम में, सिक्किम के पूर्व में तथा पश्चिमी बंगाल के उत्तर में स्थित है. भूटान के उत्तर में चीन का तिब्बत क्षेत्र है. कहा जाता है कि भूटान शब्द 'भोटांत' का अपभ्रंश है, जिस का अर्थ होता है—तिब्बत का अंतिम भाग. संस्कृत में तिब्बत को भोट देश कहा जाता रहा था.

हिमालय के जिस खंड में भूटान आबाद है, वहां आदिकाल में कौन लोग रहते

लेख • श्रीधर बर्वे

भारत और भूटान

संबंधों के नए समीकरण

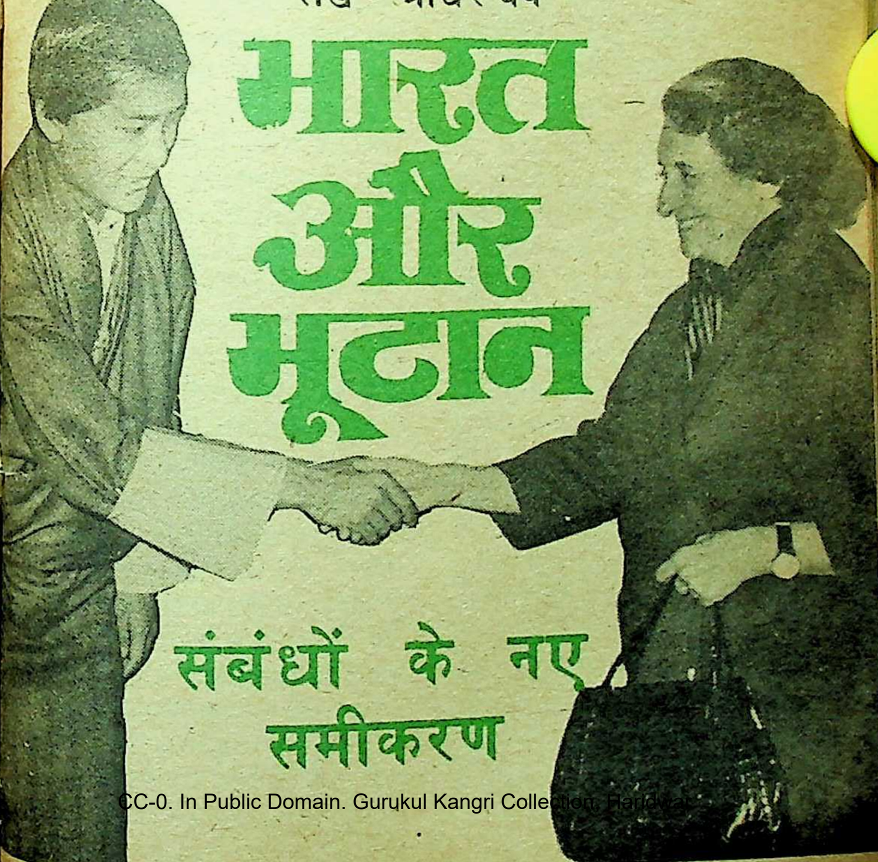

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

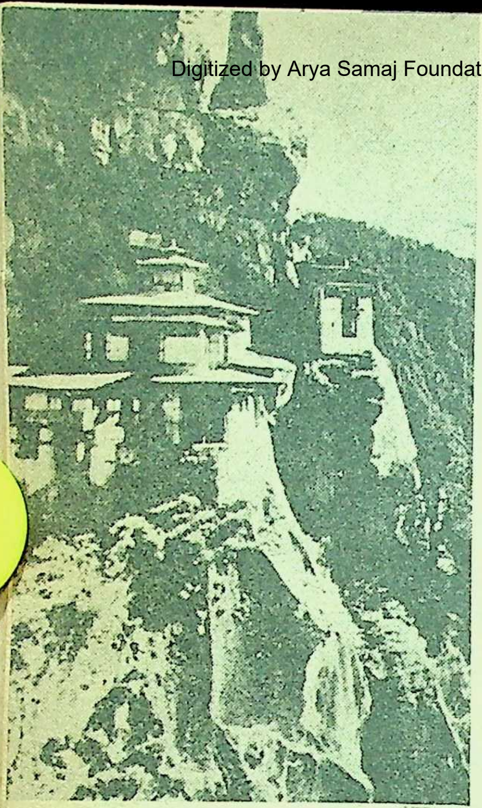

हिमालय की गोद में बसे भूटान देश का प्राकृतिक सौंदर्य भी अत्यंत आकर्षक है.

थे, यह मात्र अनुमान का ही विषय है. किंतु यहां यह उल्लेख करना पर्याप्त होगा कि राजनीतिक दृष्टि से वर्तमान भूटान का निर्माण 'शाब्दुंग नावांग रिंपोछे' ने किया था. सन 1534 में तिब्बत के एक कुलीन परिवार में जन्मे शाब्दुंग ने सन 1557 में भूटान में आ कर एक सुसंगठित राज्य स्थापित किया. शाब्दुंग यद्यपि तिब्बती थे, तो भी अन्य तिब्बती आक्रांताओं ने उन के राज्य पर कई आक्रमण किए, लेकिन शाब्दुंग ने उन्हें सफल नहीं होने दिया. इन्हीं शाब्दुंग के शासन काल में भूटान इतना शक्तिशाली बन गया कि नेपाल तथा अन्य निकटवर्ती राज्यों के राजाओं ने उन से मैत्री संबंध कायम किए.

1592 में मृत्यु होने के समय तक शाब्दुंग भूटान की राजसत्ता और धर्मसत्ता दोनों के प्रमुख बने रहे. शाब्दुंग के देहांत के कुछ वर्षों के

...या. इस के बाद 1717 ईसवी के लगभग तिब्बती सेना ने वर्तमान भूटान को जीत कर नया राज्य स्थापित कर लिया. इस के साथ ही विजयी तिब्बती बड़ी संख्या में यहां आ कर आबाद हो गए. यही लोग भूटान में सर्वाधिक प्रभावशाली हैं. राजकीय एवं धार्मिक सभी क्षेत्रों में इस समुदाय के सदस्य अपना प्रभुत्व जमाए हुए हैं.

भूटान की आदिम जातियों में लेपचा, अका, अबोर, मिरी, दाफला, मिश्मी और बोदो मुख्य हैं.

दक्षिणी भूटान के दुआर और तराई क्षेत्रों में भारतीय मूल के भूटानी नागरिक आबाद हैं. इन के अतिरिक्त भूटान के पश्चिमी और सामची इलाकों में नेपाली मूल के लोग बड़ी संख्या में बसे हुए हैं. इन समस्त विभिन्न जातियों के भूटानवासियों की जनसंख्या लगभग 12 लाख है. इन लोगों की भाषाएं हैं—जोड्खा (डुक-क्ए), रोड-क्ए तथा नेपाली. असमिया और बंगला भाषाओं का भी भूटान की भाषाओं पर काफी असर पड़ा है. इस देश की राज्य भाषा जोड्खा है, जिस की लिपि तिब्बती भाषा की लिपि से बहुत मिलतीजुलती है. जोड्खा तिब्बती मूल की भाषा होने के कारण तिब्बती भाषा से अत्यधिक प्रभावित है.

बौद्ध धर्म की महायान शाखा को भूटान में राज्यधर्म का दरजा प्राप्त है. बौद्धों के अलावा हिंदू लोग भी इस हिमालयी देश में बड़ी संख्या में रहते हैं.

पूर्णरूप से हिमालय की गोद में बसे इस पहाड़ी देश का क्षेत्रफल लगभग 45,500 वर्ग किलोमीटर है. इस में से एक तिहाई भाग में वन हैं. ये वन अत्युत्तम इमारती लकड़ी प्रदान करते हैं. अन्य एशियाई राष्ट्रों की भांति कृषि ही भूटान का मुख्य व्यवसाय है. मुख्य फसलें चावल, मक्का आदि हैं. वनों से इमारती लकड़ी के अतिरिक्त लाख, मोम और कस्तूरी जैसी मूल्यवान वस्तुएं भी प्राप्त की जाती हैं. यद्यपि भूटान के भूगर्भ का व्यापक सर्वेक्षण नहीं हुआ है, फिर भी अनुमान है कि इस ... सोना, तांबा, मैंगनीज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बाक्साइट जैसे बहुमूल्य खनिजों से भरा पड़ा है. इस नैसर्गिक संपदा के साथसाथ हिमालय से निकलने वाली ऐसी नदियां हैं जिन के जल से सिंचाई तथा जलविद्युत उत्पादन की असीम संभावनाएं यहां हैं. जलविद्युत उत्पादन के लिए भूटान और भारत की साझी योजनाएं भी चल रही हैं.

भारत की स्वतंत्रता का एशिया और अफ्रीका के अन्य देशों पर जो प्रभाव पड़ा, उस से भूटान भी अछूता नहीं रह सका. सन 1953 में भूटान के दिवंगत महाराजा जिग्मे दोरजी वांगचुक ने अपने देश में प्रथम राष्ट्रीय विधान सभा (त्सोंग्दू) की स्थापना की. इस के साथ ही महाराजा ने अपने देश को सदियों के मध्ययुगीन एकाकीपन से बाहर निकालने का भी निश्चय किया. इस के लिए उन्होंने भारत से सहायता तथा मार्गदर्शन मांगा.

भारत और भूटान : नया अध्याय

आर्थिक और सामाजिक विकास के कार्यों में भारत भूटान सहयोग का नया अध्याय शुरू हुआ. सन 1961 से भूटान सरकार ने अपने देश के नियोजित आर्थिक विकास का मार्ग अपनाया, भूटान की प्रथम तथा द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं का पूरा व्यय भारत ने ही उठाया, तीसरी योजना में भारत ने 45 करोड़ रुपए की सहायता उपलब्ध कराई. अपनी प्रथम तीनों योजनाओं में भूटान ने कृषि विकास पर ही भरपूर ध्यान दिया. चौथी योजना के अंत तक खाद्यान्न के मामले में वह आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में प्रायः सफल रहा.

केवल कृषि विकास को ही पर्याप्त नहीं मानते हुए उस ने औद्योगिक विकास की दिशा में आगे बढ़ने के लिए भी कदम बढ़ाए हैं. परिणामस्वरूप दक्षिणी भूटान में अनेक लघु औद्योगिक बस्तियां बन गई हैं. औद्योगिक ढांचे का सम्यक विकास हो, इस के लिए ग्रामोद्योग भी वहां 1969 से प्रोत्साहन पा रहे हैं.

अनेक विशेष परियोजनाओं में भारत सभी प्रकार से अपने इस नन्हे पड़ोसी की सहायता कर रहा है. जलढाका पनबिजली योजना भारत की सहायता से ही पूरी हुई. छुका पनबिजली परियोजना में 60 प्रतिशत व्यय भारत ने ही वहन किया है. शेष 40 प्रतिशत भी ऋण के रूप में भारत द्वारा ही दिया गया है. कभी भूटान आधुनिक चिकित्सा तथा शिक्षा सुविधा में एक दम शून्य था, आज भारत की सहायता से पूरे देश में दरजनों हस्पताल स्वास्थ्य केंद्र व स्कूल कार्यरत हैं. सामान्य स्कूलों के अलावा दो बौद्ध अध्ययन केंद्र, शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र भी शिक्षा जगत की सेवा में लगे हैं. सैकडों नवयुवक व नवयुवतियां कोलंबो योजना तथा अन्य योजनाओं के अंतर्गत भारत में विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं. इन समस्त प्रयासों के परिणाम निश्चित रूप से भूटान का भविष्य उज्ज्वल करने में सहायक होंगे.

भूटान के भूतपूर्व नरेश दिग्मे दोरजी वांगचुक जिन्होंने राष्ट्रीय विधान सभा की स्थापना की थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूटान के वर्तमान नरेश जिग्मे सिंग्ये वांगचुक: अधिक राजनीतिक स्वतंत्रता की चाह.

भूटान का वर्तमान शासक वंश (वांगचक वंश) 1907 में शासनारूढ़ हुआ. वर्तमान नरेश जिग्मे सिंग्ये वांगचुक ने 1973 में राज की बागडोर संभाली. इन के पिता श्री जिग्मे दोरजी वांगचुक बड़े उदार और प्रगतिशील विचारों के थे. जिग्मे दोरजी ने ही 1953 में अपने देश में राष्ट्रीय विधान सभा (त्सोंग्दू) की स्थापना की थी. कार्यपालिका और न्यायपालिका की पृथकपृथक भूमिका निर्धारित की थी. भूटान के आर्थिक आधुनिकीकरण की नींव भी सब से पहले उन्होंने ही रखी थी और इस प्राचीन परंपरा प्रेमी देश को 20वीं सदी की आधुनिकता से जोड़ा था.

यद्यपि भूटान में त्सोंग्दू को संसद का दरजा प्राप्त है, फिर भी यह संसद पूर्ण रूप से लोकतांत्रिक नहीं है. त्सोंग्दू के 130 सदस्य एक व्यक्ति–एक वोट के आधार पर निर्वाचित नहीं किए जाते. मत देने का अधिकार केवल परिवार के मुखिया को ही दिया गया है. नेपाल की भांति इस देश में भी दलीय राजनीति पर प्रतिबंध है. आधुनिकता की ओर बढ़ने का भूटान ने प्रयास तो किया है, किंतु आधुनिकता केवल शासकीय स्तर पर ही है. संचार ओर सूचना प्रयास के माध्यम जैसे रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र पत्रिकाएं आदि यहां नदारत हैं. इन की अनुपस्थिति के कारण हमारे इस पड़ोसी देश में सजग जनमत का निर्माण नहीं हो रहा. ऐसी स्थिति में भूटान अपनी जनता को प्रबुद्ध कैसे कर सकेगा, जब कि वह अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अधिक सक्रिय होना चाह रहा है? दूसरी ओर कम्यूनिस्ट चीन तिब्बती राष्ट्र को लीलने के बाद, ललचाई नजरों से भूटान की ओर देख रहा है. चीन भारत और भूटान के संबंधों को भी सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता.

भूटान की नई भूमिका

भारत के स्वाधीन होने तक भूटान एक देशी राज्य की ही स्थिति में था. तिब्बत से उस के व्यापारिक रिश्ते जरूर थे, लेकिन प्रतिरक्षा, संचार और विदेशी मामलों में वह भारत द्वारा ही निर्देशित होता था. भारत की आजादी के बाद, 8 अगस्त 1949 को दोनों देशों में एक नई संधि हुई, जिस के अंतर्गत भूटान ने विदेशी मामलों में भारत का मार्गदर्शन और परामर्श स्वीकार किया. आगे के वर्षों में जब भूटान की सरकार ने चाहा तो भारत ने उसे कोलंबो योजना का तथा 1972 में संयुक्त राष्ट्र का भी सदस्य बनवा दिया. भारत में भूटान ने अपना दूतावास भी स्थापित कर लिया.

किंतु 'द्रुक-ग्याल्पो' (भूटानी अपने देश को द्रुक–ग्याल्पो अर्थात ड्रैगन राज्य कहते हैं) लोग अंतरराष्ट्रीय जगत में और भी व्यापक और सक्रिय भूमिका निभाने को उतावले प्रतीत हो रहे हैं. पिछले कुछ वर्षों से भूटानी शासक इस का निरंतर आग्रह करते आ रहे हैं कि उन्हें जापान, नेपाल और यूरोप के देशों से स्वतंत्र राजनीतिक संबंध स्थापित करने दें, में भारत उदारता बरते. एक प्रकार से भूटान

(आगे पृष्ठ 84 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. आधुनिक
ास तो किया है
नकीय स्तर पर
ास के माध्यम
समाचार पत्र
ा हैं. इन की
स पड़ोसी देश
नहीं हो रहा
नता को प्रबुद्ध
कि वह अब
सक्रिय होना
म्यूनिस्ट चीन
वाद, ललचाई
रहा है. चीन
को भी सम्मान

क.

क भूटान एक
ा. तिब्बत से
र थे, लेकिन
ामलों में वह
था. भारत की
949 को दोनों
स के अंतर्गत
भारत का
र किया. आगे
र ने चाहा तो
ा तथा 1972
बनवा दिया.
दूतावास भी

नी अपने देश
ाज्य कहते हैं)
र भी व्यापक
को उतावले
र्षों से भूटानी
रते आ रहे हैं
ाप के देशों से
ात करने, देने
ार से भूटान

थम) 1982

दिल की गलियों में

दिल की गलियों में तशरीफ तो लाइए
इस तरफ भी कभी आइएजाइए
यूं दीवाने हजारों मिलेंगे मगर
अपनी जानिब जरा गौर फरमाइए

रूप को आईने की जरूरत हुई
तो प्रणय की डगर खूबसूरत हुई
दोष सारा हमीं पर न लगवाइए
आइएजाइए अपने घर जाइए.

जुल्फ की छांव में जो बसेरा किया
लोग गाने लगे, डाह का मर्सिया
अब जमाने को शायद जलन चाहिए
सारे माहौल पर आ के छा जाइए.

हम ने माना कि मन है फिसलती नदी
जिस में डूबी दीवानों की पूरी सदी
एक डुबकी हमें भी तो लगवाइए
आप भी पर जरा होश में आइए
दिन की गलियों में तशरीफ तो लाइए

—प्रवीण तन्मय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ 82 से आगे)

अपने विदेशी मामलों के संचालन में पूर्ण स्वतंत्रता चाहता है.

विदेशी मामलों में भूटान ने भारत से पृथक स्वर में बोलना भी शुरू कर दिया है. कंपूचिया के मामले में दोनों देशों का भिन्न दृष्टिकोण रहा है. अपनी पिछली सिंगापुर यात्रा के दौरान भूटान के विदेश मंत्री ने इस बात का इजहार किया कि उन के देश का दृष्टिकोण भारत की अपेक्षा 'एसियान' देशों के अधिक निकट है. कोई आश्चर्य की बात नहीं, कि देरअबेर चीन, नेपाल और बंगलादेश भी थिंफू में अपने कूटनीतिक मिशन स्थापित करने में सफल हो जाएं. हमें इन नई परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा.

थिंफू भी कमोबेश काठमांडू की राह पर चल निकले तो हम अपने इस संवेदनशील और सुरक्षात्मक स्थल के प्रति भावनिरपेक्ष नहीं रह सकेंगे. चीनी अजदहे का कूटनीतिक और (अगर युद्ध हो तो) सामरिक परिस्थितियों में मुकाबला करने के लिए हमें नेपाल और बंगलादेश के साथ भूटान का सहयोग मिलना अत्यावश्यक है. इन देशों के तटस्थ एवं उदासीन रहने की सूरत में हमारे उत्तरी एवं पूर्वोत्तरी सीमांत सुरक्षित नहीं रह सकेंगे.

यह समय सर्वाधिक निर्णायक मोड़ का है, हमारे शासकों और नीति (विदेश एवं सुरक्षा संबंधी) निर्माताओं को यह दो टूक फैसला कर लेना चाहिए कि क्या भूटान को पूर्ण रूप से (विदेश नीति एवं प्रतिरक्षा के मामलों में) नेपाल और बंगलादेश की तरह मुक्त कर दिया जाए और फिर वैसी ही समस्याओं का सामना करें, जैसी कि ये देश भारत के लिए उत्पन्न कर रहे हैं. अथवा सिक्किम के समान भूटान को भी भारत के संघीय राज्य में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया जाए. इस संबंध में यह तर्क दिया जा सकता है कि भूटान को संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता प्राप्त हो चुकी है और उस की एक पृथक अंतरराष्ट्रीय पहचान कायम हो चुकी है तो इस दिशा में सोवियत संघ के दो घटक राज्य—यूक्रैन और बायलोरशिया हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं. यूक्रैन और बायलोरशिया संयुक्त राष्ट्र के सदस्य भी हैं और वे सोवियत संघ के भाग भी. भारत भी इसी प्रकार की सुविधा भूटान को दे कर अपनी और भारतीय उपमहाद्वीप की सुरक्षा को मजबूत करने में पहल कर सकता है.●

नई दिल्ली में

- अंगरेजी की नवीनतम पुस्तकें
- हिंदी प्रकाशकों की विविध विषयों पर पुस्तकें
- सरिता, मुक्ता, भूभारती, चंपक कैरेवेन, वूमंस ईरा व गृहशोभा का वितरण केंद्र
- सरिता पत्र समूह के लिए विज्ञापन स्वीकार करने का केंद्र

दिल्ली बुक कंपनी

एम/12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीमतें कम करने के लिए :

• सरकारी खर्च कम हो
• करों में कमी हो

बढ़ती हुई कीमतों की मूल वजह (और प्रायः एकमात्र) सरकार द्वारा आवश्यकता से ज्यादा खर्च किया जाना (करों व ऋणों से प्राप्त आय की तुलना में ज्यादा व्यय) और उस घाटे को पूरा करने के लिए नए करेंसी नोट छापना तथा माल व सेवाओं पर नएनए कर थोपना है.

हर नया नोट, हर नया कर माल व सेवाओं की कीमत में तुरंत वृद्धि कर देता है, जिस की वजह से सरकारी खर्च में और अधिक वृद्धि आवश्यक हो जाती है. इस वृद्धि की भरपाई के लिए फिर नए नोट छपते हैं, फिर नए कर लगते हैं और इस से कीमतें लगातार बढ़ती जाती हैं.

राजनीतिबाज बढ़ती हुई कीमतों का सारा दोष उत्पादकों व व्यापारियों के जिम्मे मढ़ कर आम लोगों को धोखा देने की कोशिश करता है, यह अच्छी तरह से जानते हुए भी कि करों द्वारा बढ़ी लागत उत्पादक और व्यापारी अपनी जेब से पूरी नहीं कर सकते. उन्हें चीजों के दाम बढ़ाने ही पड़ते हैं. आम लोगों के हाथ में अतिरिक्त धन आने से भी वस्तुओं की मांग ज्यादा बढ़ जाती है जिस से कीमतें भी और बढ़ जाती हैं.

इस के साथ ही राजनीतिबाजों की अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए, अपनी पार्टियों को चलाने के लिए और चुनाव लड़ने के लिए काले धन की मांग भी जुड़ जाती है. यह रकम सिर्फ माल व सेवाओं की कीमत से ही प्राप्त हो सकती है. इस प्रकार कीमतें और ज्यादा से ज्यादा बढ़ती जाती हैं.

कभीकभी यह कहा जाता है कि ज्यादा उत्पादन से कीमतें बढ़ना रोका जा सकता है. लेकिन अगर कहीं कोई ज्यादा उत्पादन होगा तो वह कच्चे माल और सेवाओं पर बढ़े हुए करों की वजह से ज्यादा कीमत पर ही होगा. **इसलिए बढ़े हुए उत्पादन से भी कीमतें कम नहीं होंगी.**

कीमतें कम करने के लिए:

• करों में कमी कीजिए
• सरकारी खर्च कम कीजिए

इस के अलावा और कोई रास्ता नहीं है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म उद्योग में ऐसे बहुत से सितारे हैं जो फिल्मों से ससम्मान संयास लेने को कतई तैयार नहीं दिखाई देते. भले ही उन्हें अपने चेहरे की झुर्रियां मेकअप की परतें चढ़ा कर और [illegible] का गंजापन कृत्रिम बालों की विग लगा कर ही क्यों न छिपाना पड़े, वे परदे पर कूल्हे मटकाने से बाज नहीं आते. दर्शक इसे कलात्मक रूप में पसंद करें या न

क्या प्रौढ़ फिल्मी सितारे युवा फिल्मी सितारों के लिए संकट हैं?

धर्मेंद्र : कठोर युवक की भूमिकाएं आखिर कब तक.

लेख • नवरूप छाबड़ा

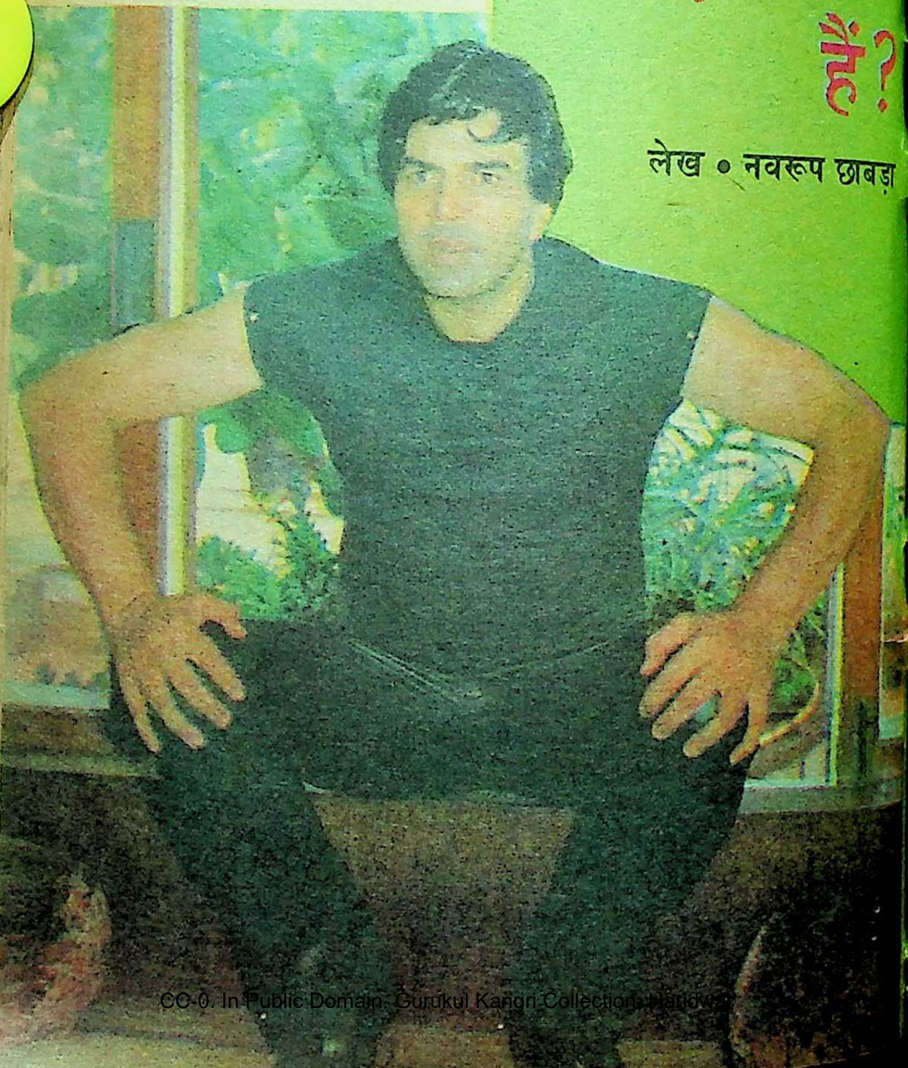

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्मीला टैगोर : अब फिल्मों में रहने की इच्छा नहीं.

प्रौढ़ होते फिल्मी सितारों ने नए लोगों के लिए संकट पैदा कर दिया है. आखिर वे युवा भूमिकाएं निभाना बंद क्यों नहीं करते?

करें, उन की बला से.

जब हम इस प्रकार के अभिनेताओं के बारे में सोचते हैं तो सब से पहले देव आनंद का नाम होठों पर आता है.

एक जमाने में देव आनंद लाखों लोगों के दिलों की धड़कन था पर अब वह दिन केवल यादगार बन कर रह गए हैं. 'जिद्दी' उस की पहली फिल्म थी, जिस में उस ने कामिनी कौशल के साथ काम किया था. कुछ समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टीना मुनीम : देव आनंद का अपनी प्रौढ़ता छुपाने का सहारा.

बाद कामिनी कौशल भी प्रौढ़ भूमिकाएं स्वीकार करने लगी पर देव आनंद नईनई सुंदर लड़कियों के साथ परदे पर प्रेम ही करता रहा. कुछ समय बाद देव आनंद ने अपनी एक फिल्म निर्माण संस्था– 'नवकेतन इंटरनेशनल' बना ली. इस के अधीन उस ने कई अच्छी फिल्में बनाईं. फिल्म 'गाइड' तो संगीत और तकनीक के दृष्टिकोण से काफी सफल रही थी. समालोचकों ने इसे अपनेआप में एक अच्छी फिल्म कहा पर देव आनंद इस से अधिक रुपए नहीं कमा सका था. गाइड जैसी कलात्मक फिल्म की असफलता के बाद देव आनंद ने फारमूला फिल्में बनाना शुरू कीं. इन में 'प्रेम पुजारी,' 'हरे राम हरे कृष्ण,' 'इश्क इश्क इश्क,' 'देस परदेस' और 'मनपसंद' आदि प्रमुख रहीं.

प्रौढ़ता का अहसास

आयु में 50 वर्ष के आसपास होने के कारण देव आनंद अब ज्यादा दिन युवा नहीं दिख सकता, शायद यही समझ कर उस ने प्रेम विषयक फिल्मों को छोड़ कर उद्देश्यपूर्ण फिल्मों की ओर अपना रुझान किया. 'देस परदेस' ऐसी ही फिल्म थी.

फिर भी वह रोमांटिक भूमिकाओं से पूरी तरह निजात नहीं पा सका. पर अपनी प्रौढ़ता छिपाने के लिए उस ने स्वयं को कैमरे के ज्यादा पास लाने में पूरी सतर्कता बरती. यद्यपि वह अपनी फिल्म में छाया रहता था और सब से ज्यादा क्लोजअप उसी के होते थे पर फिल्म 'मनपसंद' में ऐसा नहीं था. उस में उस की हीरोइन टीना मुनीम जैसी कम उम्र की लड़की थी.

इस के बाद धर्मेंद्र को लिया जा सकता है. पर इस का मामला देव आनंद से कुछ भिन्न है. यद्यपि 60 वर्ष के आसपास उम्र होने पर उस की मांसपेशियां अब थुलथुल होने लगी हैं पर लोगों को उस की वही 'फूल और पत्थर' वाली भूमिकाएं पसंद हैं. इस विषय में उस का भी कहना है, "मैं स्वयं भी 'क्रोधी' जैसी गंभीर व प्रौढ़ भूमिकाएं करना चाहता हूं लेकिन दर्शक मुझे एक कठोर युवक के रूप में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखना ही पसंद करते हैं.''

अब यह तो वक्त ही बतलाएगा कि वह अपनी उस छवि को और भुनाएगा या ससम्मान ऐसी भूमिकाओं को तिलांजलि देगा.

अब जब धर्मेंद्र का जिक्र चला है तो हेमा मालिनी का नाम तो जबान पर आ जाना स्वाभाविक ही है.

हेमा का नेक इरादा

हेमामालिनी सब से पहले राजकपूर की फिल्म 'सपनों का सौदागर' में आई थी और 'स्वप्न सुंदरी' के नाम से विख्यात हुई थी. इस के बाद उस ने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा और ख्याति की सीढ़ियां चढ़ती चली गई. फिल्म 'सीता और गीता' में दो भिन्न भूमिकाएं निभाने से तो वह रातोंरात स्टार बन गई.

पर अब वह कुछकुछ प्रौढ़ लगने लगी है. उस की अभी हाल में प्रदर्शित फिल्म 'कुदरत' में उसे एक टीनएज गर्ल के रूप में पेश किया गया था पर उस की 30 के आसपास की उम्र छुप नहीं सकी थी.

इस विषय में उस का कहना है, ''मैं जानती हूं कि एक न एक दिन मेरी स्वप्न सुंदरी की छवि खत्म हो जाएगी, तब मैं इस स्थिति को सहज रूप में स्वीकार करूंगी. और अपनी आयु के अनुसार अपनी भूमिकाएं भी बदल लूंगी. मुझे विश्वास है कि मेरे प्रशंसक मेरे इस रवैए को पसंद करेंगे.''

इस के बाद अब शर्मिला टैगोर का जिक्र करना उचित रहेगा.

बंगाल की इस लड़की ने 17 वर्ष की उम्र में फिल्मों में कदम रखा था. अभिनय प्रतिभा की धनी शर्मिला ने गंभीर व भावनात्मक ('आविष्कार') तथा ग्लैमर वाली ('एन इवनिंग इन पेरिस') भूमिकाएं बखूबी निभाई हैं. 'दूरियां' फिल्म में उस की उम्र उस के चेहरे पर खूब झलक रही है. लगता है, वह या तो इस प्रकार की भूमिकाएं छोड़ कर प्रौढ़ स्त्री की भूमिकाएं करेगी या यह क्षेत्र ही छोड़ देगी. इधर उस का कहना है कि ''मैं ने अभिनय क्षेत्र में खूब सफलता पाई. जिस से

संजीवकुमार : विशेष छवि न होने से फिल्मी जीवन लंबा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम किया उसी से विवाह किया. अब मेरे सुंदर व होनहार बच्चे हैं और मुझे क्या चाहिए. मैं फिल्मों में नई आने वाली लड़कियों के लिए संकट पैदा नहीं करूंगी.'' पर अभी तो वह अपनी आयु को चुनौती देती लगती है?.

इन सब के बाद अगर संजीव की चर्चा भी कर ली जाए तो अच्छा ही रहेगा.

संजीवकुमार ने तो 1965 में अपनी पहली फिल्म में ही स्वयं को अभिनेता मनवा लिया था. वह अपनी युवावस्था में ही प्रौढ़ भूमिकाएं करने लगा था और जब कि अब वह उतना युवा नहीं दिखाई देता, वह युवा भूमिकाएं भी अभिनीत कर रहा है. 'आंधी,' 'शोले' और 'त्रिशूल' फिल्मों में उस ने एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति की भूमिकाएं कीं, तो फिल्म 'लेडीज टेलर' में उस ने एक युवा व

हेमामालिनी : आयु के अनुसार भूमिकाएं बदलने का फैसला.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देव आनंद : प्रौढ़ होने का एहसास हो चला है.

…द्ध की दोहरी भूमिका निभाई. वृद्ध की …मिका में वह ज्यादा सफल रहा है पर युवा …की भूमिका में भी उस ने अपनी स्पष्ट छाप …छोड़ी.

उम्र 40 वर्ष के आसपास होने पर, प्रौढ़ …व वृद्ध व्यक्ति की भूमिकाएं करना उस के …लिए असंतोषजनक नहीं है, क्योंकि दर्शक …उसे इन भूमिकाओं में सहजता से स्वीकार …कर लेते हैं. इस का कारण है उस की किसी भी प्रकार की खास छवि का न बन पाना.

इस प्रकार पता चलता है कि आयु बढ़ने के साथसाथ अभिनेता उसी प्रकार की भूमिकाएं अपनाने पर विवश हो जाते हैं—भले ही देरसवेर सही. और फिल्म उद्योग की तो यह रीति रही है कि अभिनेता आते हैं, जाते हैं पर फिल्म उद्योग हमेशा नया और जवान बना रहता है. ऐसे में भला किस को क्या संकट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता मुक्ता विस्तार योजना में भाग लीजिए

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं किया तो फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. आज भी हजारों वर्ग मील भारतीय भूमि विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए बहुत बड़े पैमाने पर सामूहिक सहयोग और सद्भाव की आवश्यकता होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्थान, बड़े पूंजीपति या राजनीतिक दल से संबंधित नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रकार की सहायता स्वीकार करती है. यह केवल एक ही वर्ग की सहायता और बलबूते पर निर्भर है. और वह हैं सरिता के पाठक. इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्साहन से सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती है.

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी पूंजी, सरकार का और देशी व विदेशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

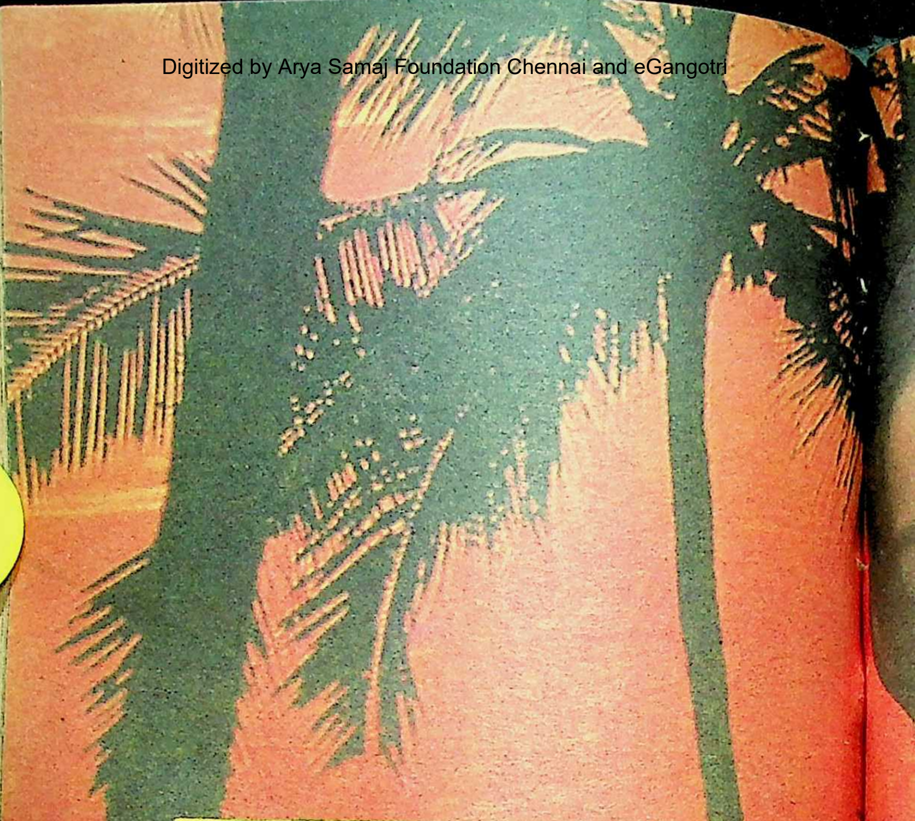

तुम्हारी याद

रेत के घर
आ गई है,
सावनों सी
फिर तुम्हारी याद.

तुम नहीं हो
पर तुम्हारे
देह की खुश्बू
फूल सी
नाजुक उंगलियों से
रही है छू.

आदिवासी
लोक धुन से,
बज उठे हैं
शाम के अवसाद.

पायलें झनकी
कहीं पर
चूड़ियां खनकीं
फिर हुईं
साधें हरी
सूखे हुए वन की
धूप की
जलती कथा से
दिन हुए हैं
चांद के अनुवाद.

—हरीश निगम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दास्ताने दफ्तर

मेरे दफ्तर के एक साथी का नाम खामोश उल्लाह खां है. एक बार उन्हें दूसरे दफ्तर फोन कर के एक व्यक्ति से कुछ बात करनी थी. उन्होंने नंबर मिलाया तो उधर से पूछा गया, ''आप कौन बोल रहे हैं?''

उन्होंने कहा, ''खामोश.''

इस पर उधर से आवाज आई, ''पता नहीं कौन बदतमीज है.'' और फोन रख दिया गया.

तब इन्होंने दोबारा नंबर मिलाया किंतु फिर वही बात हुई. कुछ देर बाद तो वहां से किसी ने फोन उठाना ही छोड़ दिया.

यहां हमारा हंसतेहंसते बुरा हाल हो गया. **—रमेशकुमार श्रीवास्तव**

*

हमारे विभागीय अधिकारी को भोजनावकाश में टेलीफोन की घंटी बजने पर बहुत गुस्सा आता था. क्योंकि वह भोजन करने में उठना बिलकुल पसंद नहीं करते थे.

एक दिन उन्होंने जैसे ही खाने का डब्बा खोला कि टेलीफोन की घंटी बज उठी. उन्हें गुस्से में देख कर मैं जैसे ही रिसीवर उठाने लगा तो वह बोले, ''टेलीफोन मत उठाओ और कह दो कि लंच है.''

—क.स. अवल

*

बैंक में मेरी नियुक्ति नईनई हुई थी. पहले ही दिन बैंक के पास के एक रेस्तोरां से चाय वाला चाय ले कर आया. उस ने मुझे व सब को चाय पिलाई और किसी से भी पैसे नहीं मांगे. मैं ने सोचा, शायद बैंक की तरफ से चाय होती होगी. यह सोच कर मैं चुप रहा.

दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ. लेकिन उस दिन की चाय का पूरा बिल जब चाय वाले ने मेरे सामने रखा तो मैं हैरान रह गया. मैं ने दबे स्वर में उसे जब इस का कारण पूछा तो उस ने कहा, ''कल की चाय अनीताजी की तरफ से थी और आज की आप की तरफ से. आप दोनों नए आए हैं न.''

मेरे पास बिल का भुगतान करने के अलावा कोई चारा न था.

—माणक तुलसीराम गौड़

*

मेरे एक मित्र के वरिष्ठ अधिकारी हमेशा ठीक समय पर कार्यालय पहुंचते थे. कोई कर्मचारी अगर देर से आता था तो उस पर उन की नजर अवश्य पड़ती थी. फिर उस कर्मचारी को उन की डांट सुननी पड़ती थी.

एक दिन मेरे मित्र को कुछ काम की वजह से कार्यालय पहुंचने में देरी हो गई. संयोगवश उस दिन अधिकारी भी किसी कारण से समय पर कार्यालय नहीं पहुंच सके. कार्यालय से कुछ दूर मेरे मित्र ने उन को देख लिया था. वह भी उन के पीछेपीछे ही कार्यालय पहुंच गया. अधिकारी को इस का पता नहीं चला. कुरसी पर बैठते ही उन्होंने मेरे मित्र से पूछा, ''आज देर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से क्यों आए हो?

इस पर मेरे मित्र ने तपाक से कहा, ''श्रीमानजी, मैं देर से कहां आया हूं. मैं तो आप के पीछेपीछे ही आ रहा हूं.''

यह सुन कर उन से कुछ कहते न बना.

—स.च. डवंगे

*

हमारे कार्यालय में एक नया चपरासी नियुक्त हुआ था, जिसे टेलीफोन के बारे में कुछ भी जानकारी न थी. एक दिन साहब के कमरे में टेलीफोन की घंटी बज उठी. उस समय साहब कहीं गए हुए थे. हमारे सुपरवाइजर ने जो उस समय किसी काम में व्यस्त थे, चपरासी से कहा, ''जरा टेलीफोन उठाना.''

चपरासी भाग कर चैंबर में गया और रिसीवर उठाने के बजाए पूरा टेलीफोन ही उठा कर खड़ा हो गया. घंटी बजती रही. तब उस ने धीरेधीरे दोनों हाथों से टेलीफोन को सिर से भी ऊपर उठा लिया.

इधर घंटी बजती देख कर सुपरवाइजर बड़े ही गुस्से में चैंबर में गए तो चपरासी को टेलीफोन ऊपर उठाए देख कर चकित रह गए. फिर वह हंसतेहंसते दोहरे हो गए.

—अवल

*

मेरा एक मित्र पहले हमारे विभाग के मुख्य कार्यालय में कार्यरत था. वह कार्यालय दो मंजिले भवन में है और वहां क्लर्क, टाइपिस्ट आदि ऊपर ही बैठते हैं. ऊपर जाने के लिए जो सीढ़ियां हैं उन्हें अकसर कर्मचारी पान की पीकों से गंदा कर देते थे, जब कि वहां पीकदान भी रखा हुआ था.

इस बात का जब मुख्य अधिकारी को पता चला तो उन्होंने एक लिखित आदेश निकलवाया कि जो कर्मचारी सीढ़ियां गंदी करते पाया जाएगा उस से पूरी सीढ़ियां साफ करवाई जाएंगी.

कुछ ही दिन बाद मुख्य लिपिक ने एक चपरासी को सीढ़ियों पर पीक थूकते देख लिया, उस ने इस की शिकायत भी मुख्य अधिकारी से कर दी. फिर क्या था चपरासी को डांट तो पड़ी ही पूरी सीढ़ियां भी उसे साफ करनी पड़ीं, इस के बाद किसी की भी हिम्मत सीढ़ियों पर पीक थूकने की नहीं हुई.

—विश्वहरि श्रीवास्तव

(सर्वोत्तम)•

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है. क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 और सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माडलिंग से फिल्मों तक का सफर

आरती गुप्ता

उस दिन स्टूडियो में कामिनी कौशल मौजूद थीं और आरती गुप्ता के आने का इंतजार था.

"ट्रैफिक जाम होने की वजह से मुझे देर हो गई." देर होने के लिए माफी मांगती आरती गुप्ता ने यकायक भीतर प्रवेश किया और आते ही फ़िल्म पत्रपत्रिकाओं की

भेंटवार्ता • मोहनदीप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

फिल्म 'नाच [illegible]' के एक दृश्य में आरती गुप्ता.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना करनी शुरू कर दी, "फिल्म पत्रकारों ने मुझे काफी गलत रूप में पेश किया है. कई पत्रिकाओं ने तो मुझ से मिले बिना ही मेरे साक्षात्कार तक प्रकाशित कर दिए. एक पत्रिका ने तो यहां तक लिख दिया कि मैं परदे पर एकदम निर्वस्त्र होने को तैयार हूं. यह एकदम सफेद झूठ है. मेरी उस पत्रकार से कभी मुलाकात तक नहीं हुई."

हालांकि आरती ने इस बात को स्वीकार किया कि उस ने कई बार नग्न तथा अर्धनग्न चित्र खिंचवाए हैं लेकिन उस के अनुसार यह सब विदेशी दर्शकों की कलात्मक अभिरुचि को दृष्टि में रखते हुए उस ने किया था.

आरती गुप्ता भारतीय सेना के अवकाश प्राप्त मेजर ध्यानचंद गुप्ता की पुत्री है. आजकल श्री गुप्ता बंबई में बांद्रा में सी राक होटल के मुख्य सुरक्षा अधिकारी हैं. आरती की मां जेस्सी विदेशी व्यापार मंत्रालय में काम करती हैं [illegible]

और आरती के काम में हाथ बंटाती है.

आरती की बड़ी बहन रीना गुप्ता पेट्रोल पंप चलाती है.

आरती की मां अब सभी पत्रकारों से आग्रह करती हैं कि वे आरती के पिछले नग्न व अर्धनग्न चित्र न छापें. इस का कारण है कि आरती अब अपनी नई छवि बनाना चाहती हैं.

यद्यपि 'तजरबा' आरती की पहली फिल्म थी लेकिन फिल्म के पोस्टरों में उस की सूरत कहीं भी दिखाई नहीं दी. फिल्म में नसीरुद्दीन शाह और स्मिता पाटिल जैसे श्रेष्ठ कलाकार भी कुछ नहीं कर पाए और फिल्म बुरी तरह पिटी.

आरती के अनुसार यह फिल्म ठीक ढंग से बनाई ही नहीं गई. पर इस फिल्म के असफल हो जाने के बावजूद आरती को लगभग एक दरजन नई फिल्में मिल चुकी हैं.

वह अच्छी तरह जानती है कि फिल्मों [illegible] अर्थ नहीं है. कोई भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म बनतेबनते [illegible] है और किसी भी समय उस की जगह किसी अन्य अभिनेत्री को लिया जा सकता है. जब कोई अभिनेता या अभिनेत्री असफल होने लगती है तो निर्माता अनुबंध में दी गई राशि (जो प्राय एक हजार रुपए या इस से कम होती है) की भी परवाह नहीं करते.

"लेकिन मुझे इस की कोई चिंता नहीं है. मेरी कई फिल्में पिछले दोएक सालों से बन रही हैं. पांचछः रीलें बनने के बाद कोई भी निर्माता मुझे फिल्म से निकालने से रहा," आरती ने बड़े विश्वास से कहा.

लड़कियों को मार्डलिंग का काम पाने के लिए विज्ञापन एजेंसियों के कितने ही चक्कर लगाने पड़ते हैं. पर आरती को ऐसा कुछ नहीं करना पड़ा. इसी प्रकार फिल्मों में भी उसे बड़ी आसानी से काम मिल गया.

आरती नहीं जानती कि संघर्ष क्या है. लोगों के सामने आना उस के लिए कोई नया [illegible] नहीं है. वह जब कालिज में प्रथम वर्ष में थी तभी व्यावसायिक माडल बन चुकी थी.

उन दिनों के बारे में आरती ने बताया, "मुझे पढ़ने का बहुत शौक था. मैं ने एकसाथ दो कक्षाएं दो बार उत्तीर्ण कीं. तब मेरी आयु इतनी कम थी कि मुझे कालिज में दाखिला नहीं मिला था. मैं उस समय मात्र 14 वर्ष की थी."

आखिर इतनी मेधावी छात्रा ने कालिज में मुशकिल से तीन माह बिताए बिना ही कालिज क्यों छोड़ दिया. इस का कारण पूछने पर आरती ने बताया, "मैं एल्फिंस्टन कालिज में पढ़ती थी. वहीं एक माडल कार्डिनेटर आया. उस ने मेरा चुनाव कर लिया. उस के बाद से मैं व्यस्त ही रही.

"फिर तो भिन्नभिन्न एजेंसियों से एक के बाद एक अनुबंध मिलने लगे. कई बार तो एक ही दिन में पांचछः विज्ञापन फिल्मों के लिए काम करना पड़ता था. मेरे पास कालिज

मिथुन चक्रवर्ती और आरती गुप्ता फिल्म 'आमनेसामने' में.

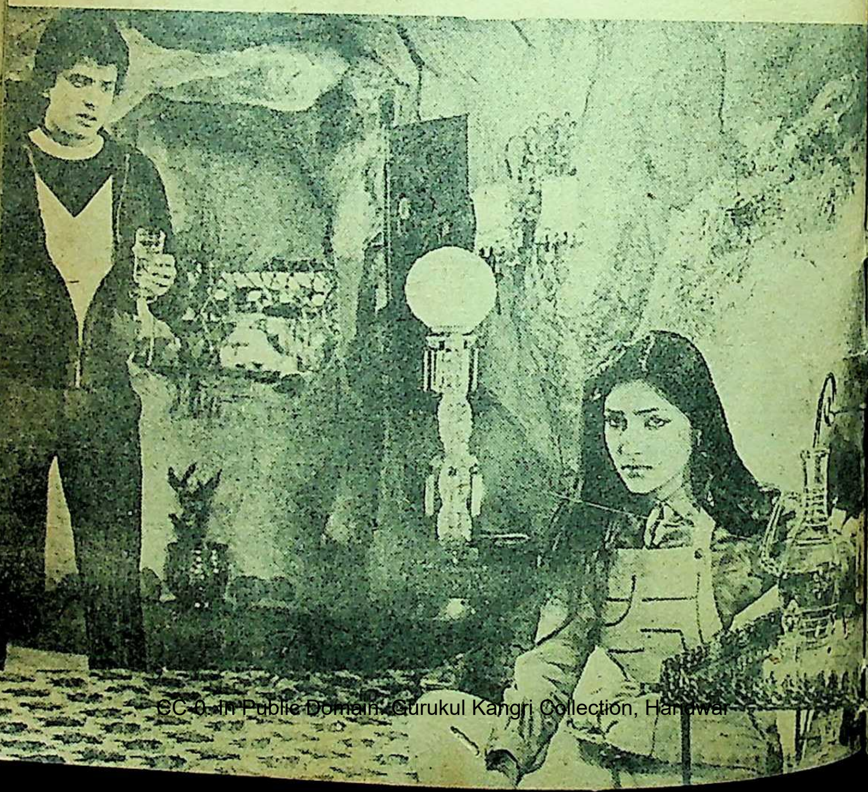

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...का समय ही नहीं बचता था.

"मार्डलिंग का यह सिलसिला पूरे तीन ...तक चलता रहा. मेकअप, फोटोग्राफी, ...रंगे कपड़े, मुसकराहट या थोड़ाबहुत ...र्ताफिरना. जैसे यही जिंदगी का जरूरी ...गा बन गया. देखते ही देखते मैं सब से ...ा महंगी माडल बन गई. मार्डलिंग का ... उन लोगों के लिए है जिन्हें फोटो ...वाने में आनंद आता है. मुझे फोटो ...वाने से ज्यादा किसी भी चीज में मजा ... आता."

अपने फिल्मी जीवन की शुरुआत के ... में उस ने बताया, "मैं फिल्मों में नहीं ...ा चाहती थी क्योंकि मैं इसे एक गंदा ...साय समझती थी.

"मार्डलिंग भी कोई पाक धंधा हो ऐसी नहीं. लेकिन मैं स्थापित होने के कारण ... वाले के सम्मुख निजी शर्तें रख पाने की ...में थी. मुझे हाथ लगाने भर की हिम्मत ...हुत कम लोगों को हो पाती थी. इस के ...क्त स्वभाव से मैं काफी दोस्ती पसंद हूं ...कोई मित्र यदि एकाध चुंबन ले भी ले तो ...रा नहीं लगता. इस संबंध में आप को ...च्ची घटना सुनाती हूं.

"मैं गार्डन साड़ी के लिए मार्डलिंग कर ...ी. प्रसिद्ध फोटोग्राफर सुरेश ने परीक्षण ...पर मेरे 12 फोटो खींचे. कंपनी ने उन ...नौ फोटो पसंद कर लिए, जब कि प्रायः ...ार फोटो पसंद किए जाते हैं.

"जब सुरेश को इस बात का पता चला, ...श में दौड़ता हुआ मेरी ओर आया. उस ...बाहों में उठा लिया और न जाने कितनी ...क मुझे चूमता रहा.

"यदि मित्रता स्वतः इस रूप में ...त होती है तो मुझे प्रसन्नता होती है. ...यदि यह सब शर्त के रूप में हो तो मेरे ...र्य करना असंभव हो जाता है."

...फिल्मों में आने के लिए उसे कमलाजी ...किया. वह प्राणलाल मेहता के साथ ...करती थीं. उन्होंने आरती को बताया ...ल्मों में काम पाने के लिए किसी के साथ ...र होना जरूरी नहीं है और वहां पर शरीफ लोग भी बसते हैं. उन की बात मान कर आरती ने मद्रास के एक कला फिल्म निर्माता की फिल्म का अनुबंध ले लिया. दुर्भाग्य से उस निर्माता की मृत्यु हो गई और फिल्म नहीं बन पाई.

फिल्मों में प्रवेश

अब आरती को फिल्म का चस्का लग चुका था. यह देख कर घर वालों ने उसे इस क्षेत्र में जरा सोचसमझ कर प्रवेश करने की सलाह दी. आरती आशा चंद्रा से मिली. आशा चंद्रा का अभिनय सिखाने में काफी नाम है और उन्होंने ऋषि कपूर, डिंपल, राज किरण जैसे कितने ही सितारों को अभिनय सिखाया है.

अभिनय का कठिन पाठ्यक्रम पूरा हो जाने के बाद परीक्षा के तौर पर आशा चंद्रा ने उसे एक ऐसी स्थिति दी जिस में उसे किसी की हत्या करने के बाद एक साथ रोना और हंसना था. आरती ने यह सब इतने स्वाभाविक ढंग से किया कि आशा चंद्रा तुरंत उसे प्रकाश मेहरा के पास 'स्क्रीन टैस्ट' के लिए ले गईं.

उस समय का संस्मरण सुनाते हुए उस ने बताया, "वहां वहीदा रहमान, अमजद खान जैसे न जाने कितने ही बड़े सितारे उपस्थित थे. उन की उपस्थिति से मेरी हालत काफी खराब हो गई. मेरे चेहरे पर तनाव और परेशानी की रेखाएं खिच गईं. मुझे इस स्थिति में देख कर आशा मुझे अलग ले गईं और मेरी पीठ पर एक हाथ जमाते हुए बोलीं, 'इस स्थिति से बाहर निकलो.'

"प्रकाश मेहरा ने मुझे केवल इसलिए ही अनुबंधित नहीं किया कि मैं उम्र में काफी छोटी थी या मुझ में अभिनय की विलक्षण प्रतिभा थी. इस का एक मात्र कारण काम के प्रति मेरी लगन तथा उत्साह था."

देखते ही देखते यह बात सारे फिल्मी क्षेत्र में फैल गई. आज तक उस की एक भी फिल्म प्रदर्शित नहीं हुई है. फिर भी उस के पास 15 फिल्में हैं. नवंबर में उस की दो फिल्में नौचंदर तथा आमनेसामने प्रदर्शित होंगी.

जब उस से पूछा कि "अभी तक आप ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी नंबर एक अभिनेता के साथ काम नहीं किया." तो उस ने कहा :

"क्यों, मिथुन नंबर एक का अभिनेता ही तो है. मैं ने उस के साथ आमनेसामने में काम किया है."

"लेकिन उसे नंबर दो पर माना जाता है?"

"फिर नंबर एक का कौन माना जाता है?" उस ने गुस्से से पूछा.

"अमिताभ, जितेंद्र, विनोद खन्ना, धर्मेंद्र, राजेश खन्ना."

"अच्छा तो आप इन बुड्ढों की बात कर रहे हैं. उन के हिसाब से मेरी उम्र काफी कम है. मैं देखने में उन की बेटी लगूंगी. मिथुन को मनमोहन देसाई जैसे निर्माता ने अनुबंधित किया है. इस से वह अपनेआप ही नंबर एक पर पहुंच गया है. अमिताभ आदि के लिए तो रेखा, रीना, शबाना आदि ही ठीक हैं," आरती ने चिढ़ कर कहा.

जब उस से कहा गया कि "आज तक जितने भी अभिनेता माडलिंग से फिल्मों में आए हैं, वे भले ही देखने में कितने ही सुंदर हों, अभिनय के क्षेत्र में असफल रहे हैं. जैसे– कबीर बेदी, जीनत अमान, केटी मिर्जा, दीपक पाराशर आदि. इन में से केवल जीनत थोड़ीबहुत सफल हुई है, लेकिन वह अभिनय कम करती है, शरीर प्रदर्शन ज्यादा. आप अपने को इन लोगों से किस तरह अलग मानती हैं?" तो उस ने उत्तर दिया

"मैं मानती हूं कि इन में से कोई भी अच्छा अभिनेता नहीं है लेकिन यह मान लेना गलत होगा कि माडल अभिनय कर ही नहीं सकते. देखना मैं एक दिन इस बात को सिद्ध कर के दिखा दूंगी कि माडल भी अच्छा अभिनय कर सकते हैं."

"क्या कारण है कि आप को एकसाथ इतनी फिल्में मिल गईं जब कि नए लोगों को बड़ी मुश्किल से एकआध फिल्म मिल पाती है..."

"...और वे लोग बहाना बनाते हैं कि वे देखभाल कर फिल्म ले रहे हैं." आरती ने व्यंग्य से बात आगे बढ़ाई और कहा, "मुझे

आरती गुप्ता : मैं सब से पहले नाम और प्रसिद्धि चाहती हूं.

फिल्में मिलीं. मैं ने फिल्में ले लीं. कोई भी आदमी ऐसा ही करेगा. केवल रुपए के लिए ही कोई फिल्मों में काम नहीं करता. मैं 'मझधार' फिल्म मुफ्त में ली है. इसे थिएटर के लोग बना रहे हैं. उन के पास इतना धन नहीं है कि वे मुझे पारिश्रमिक दे सकें. फिल्म काफी अच्छी है और उस में मेरी भूमिका है.

"मैं ने कई अन्य निर्माताओं से काफी कम पैसे लिए हैं. इस क्षेत्र में मुझे सब से पहले स्वयं को जमाना है. रुपया तो बाद में अपनेआप आएगा," कह कर आरती मुसकराई और फिर बोली, "मैं सब से पहले नाम और प्रसिद्धि चाहती हूं. दूसरे नंबर पर पैसा और इन दोनों के बाद कलात्मक संतुष्टि की बात आती है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाबाश

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

पाही को राष्ट्रीय पुरस्कार

केंद्रीय रिजर्व पुलिस के सिपाही श्री चंदगीराम को उस के साहसपूर्ण कार्य के लिए ष्ट्रपति के वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया गया है.

चंदगीराम गत वर्ष दो सितंबर को इंफाल में एक स्कूली बस में बच्चों के साथ सुरक्षा गार्ड रूप में जा रहा था. उस बस में आतंकवादियों ने हथगोला छिपा दिया था.

चंदगीराम ने अपनी बहादुरी प्रदर्शित करते हुए उस हथगोले को पकड़ कर हवा में फेंक या जो हवा में ही फट गया.

इस के बाद बांस की झाड़ियों के बीच छिपे आतंकवादियों ने गोलियां चलाईं लेकिन जांघ चोट लगने के बावजूद चंदगीराम ने बहादुरी से आतंकवादियों के दुष्ट इरादों को नाकाम कर या था.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक : मनोजकुमार शर्मा)

*

टी सी नौकरी में सब से बड़ा काम

आरंग के स्थानीय अरुंधती देवी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के चपरासी रतनलाल हू ने स्वयं के खर्च पर कुआं खुदवा कर विद्यालय को भेंट कर दिया. एक अल्प वेतनजीवी मचारी के इस सेवा कार्य की सर्वत्र सराहना की जा रही है.

उल्लेखनीय है कि विद्यालय में पेयजल का गंभीर संकट था. कई बार इस के निराकरण तु मांग की गई थी, मगर किसी ने ध्यान नहीं दिया था.

—देशबंधु, रायपुर (प्रेषक : सुभाष दुलानी)

*

क में डकैती का प्रयास विफल

जौनपुर में भारतीय स्टेट बैंक की केराकब्र स्थित शाखा में बैंक के चौकीदार और दो माकर्ताओं ने सशस्त्र डकैतों के लूट के प्रयास को विफल कर दिया.

डकैतों ने बैंक कर्मचारियों को आतंकित करने के लिए बमों और रिवाल्वरों का प्रयोग या. डकैतों से संघर्ष के दौरान बैंक का चौकीदार और बैंक में खाता खोलने आए दो जमाकर्ता यल हो गए जिन्हें हस्पताल में भरती करा दिया गया.

पुलिस ने इस असफल डकैती में इस्तेमाल की गई कार और उस के चालक को हिरासत में लिया है.

—अमृत प्रभात (प्रेषक : ज्ञानेश्वरनाथ श्रीवास्तव)

(सर्वोत्तम) •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्वपूर्ण होती है. लेखकों का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दे दिया गया है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इन में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 75 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए
द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए
तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.
इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे.
इस के लिए 50 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विदेशों में कला की कद्र है"

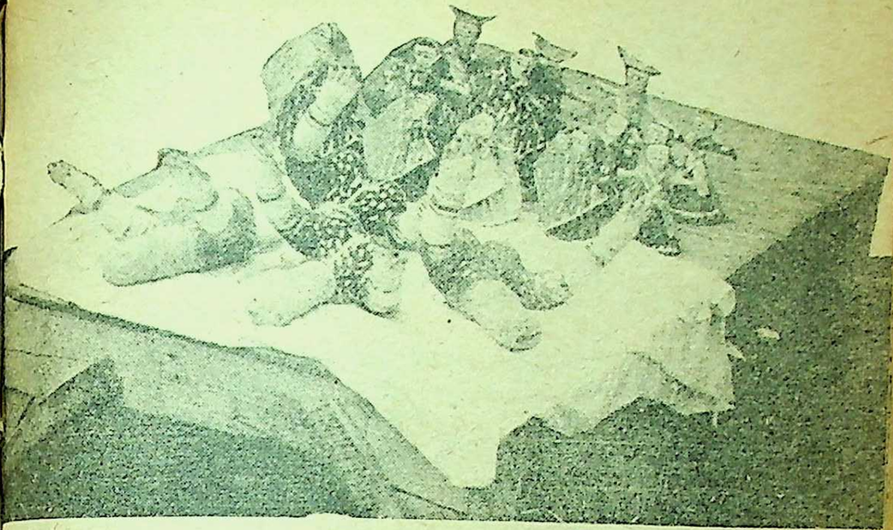

बत्तोबाई

घर की अनुपयोगी चीजों को ले कर आकर्षक गुड़ियां बनाने वाली बत्तोबाई राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त करने के बाद भी उपेक्षा की जिंदगी क्यों जी रही हैं?

बेकार वस्तुओं को ले कर आकर्षक गुड्डेगुड़ियां बनाने वाली 60 वर्षीया बत्तोबाई को अपनी कला के लिए 1967 में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त हो चुका है. वह 1976 में हैंडीक्राफ्ट बोर्ड के सौजन्य से अमरीका, न्यूयार्क और जरमनी की यात्रा भी कर चुकी हैं.

लेकिन गुड़ियों के सहारे सदियों से पलता यह परिवार आज अपने व्यवसाय को

भेंट • हरीश पाठक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रपति पुरस्कार में प्राप्त ताम्रपत्र.

टूटते हुए देख कर परेशान हैं. "पर अब इस बुढ़ापे में हाथपैर काम नहीं देते और मन भी दूसरा धंधा अपनाने की इजाजत नहीं देता," बत्तोबाई कहती हैं.

इकहरा बदन, लंबा शरीर और अनुभवों से तपी हुई बत्तोबाई से भेंट करने जब लेखक उन के घर पर गया तब वे एक निहायत सादी धोती पहने जमीन पर बैठी अधबनी गुड़ियों को सहेज रही थीं.

उन की इस कला व मिले सम्मान के बारे में उन के दृष्टिकोण के बावत जब उन से चर्चा की तो वह लगभग झल्ला उठीं. उन का कहना था, "क्या करूं इस सम्मान का, यह सम्मान लिए कहांकहां जाऊं, कोई नहीं पूछता. अब तो मैं ने लोगों से इस का जिक्र तक करना छोड़ दिया है. इस देश में हम जैसे कलाकारों को, जिन्होंने सब कुछ इस पेशे में मिटा दिया, कौन पूछता है. इस उमर में आ कर तो अब मन पूरी तरह खट्टा हो गया है."

गुड़िया बनाने की कला बत्तोबाई को विरासत में मिली है. यह काम पीढ़ियों से उन के परिवार में होता आया है. पहलेपहल तो यह सब शौकिया तौर पर था, पर बाद में इसे व्यवसाय के रूप में अपना लिया और अब कई पीढ़ियों से यह एक स्थायी पेशा बन गया है.

बत्तोबाई ने गुड़िया बनाना मां से ही सीखा. उन के अनुसार, "मेरे पिता सरकारी नौकरी में थे तो अकसर घर पर नहीं रहते थे. मां गुड़ियां बनाया करती थीं और मैं उन के नजदीक बैठी सब देखा करती थी. बाद में मां का हाथ भी बंटाने लगी."

● "आप की शादी के बाद ससुराल में इस कला का विरोध तो नहीं हुआ? क्या ससुराल वाले यह सब जानते थे?"

"हां, ससुराल में सभी को पता था कि हमारे घर क्या होता है और जब इसे व्यावसायिक तौर पर अपना लिया गया तो फिर किसी को क्या ऐतराज होता?"

● "कैसे बनती हैं बेकार और फालतू चीजों से इतनी आकर्षक गुड़ियां? आप क्याक्या चीजें इस में इस्तेमाल करती हैं?"

"कोई ज्यादा सामान नहीं लगता इसे बनाने में. हां, मेहनत जरूर बहुत ज्यादा लगती है. पहले तो मैं अकेले ही खपा करती थी, पर अब घर के सभी लोग मेरा हाथ बंटाते हैं.

"इस में घर की बेकार व फटी हुई धोतियां, बांस की छोटीबड़ी खपच्चियां, लकड़ी के छोटेबड़े टुकड़े, लालपीली चमकीली पन्नियां, लकड़ी का बुरादा, बस ये ही चीजें उपयोग में लाई जाती हैं.

"सब से पहले धोतियों को आकर्षक रंगों में रंग लिया जाता है. फिर उन्हें सुखा लिया जाता है. खपच्चियों और बुरादे की सहायता से गुड़ियां बन जाती हैं फिर उस के ऊपर रंगीन धोती का टुकड़ा लगा दिया जाता है, नीचे चौकोर लकड़ी का टुकड़ा जो स्टैंड का काम करता है, बस गुड़िया तैयार."

● "एक दिन में कितनी गुड़ियां बन जाती हैं?"

"बस, ज्यादा से ज्यादा दस."

● "इन की बिक्री कैसे होती है, एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

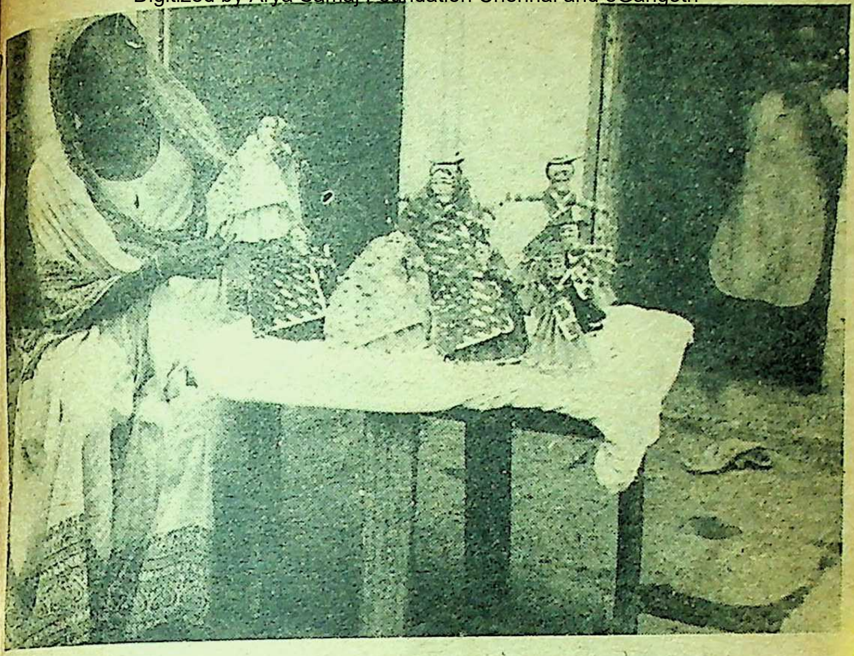

घर के बाहर बिक्री के लिए रखी गुड़ियां व उन्हें संवारते हुए बत्तोबाई.

गुड़िया कितने में बिकती है और ज्यादातर कौन लोग इन्हें खरीदते हैं?'' इस प्रश्न पर बत्तोबाई बोलीं :

''ये जो सामने के तखत पर गुड़ियां रखी हैं न यही इन का बिक्री केंद्र है.''

घर के बाहर चबूतरे पर, तखत पर गुड़ियां सजीसंवरी रखी थीं. अब तो यह जगह इतनी मशहूर हो गई है कि दूरदराज से लोग गुड़ियां खरीदने यहां आते हैं.

''एक गुड़िया दो रुपए से बीस रुपए तक में बिक जाती है. घर की बैठक को सजाने से ले कर बच्चों के खेलने तक के लिए लोग इन का उपयोग करते हैं. पहले तो एक गुड़िया पर बस एक आना मिलता था अब कभीकभी बीस रुपए तक मिल जाते हैं.

''हां, 'अक्ती तीज' (एक त्योहार) के मौके पर बिक्री जरूर अंधाधुंध होती है. लड़कियां खूब उमंग से इस त्योहार को मनाती हैं पर इधर यह उत्साह भी कम होता जा रहा है और बिक्री पर भी इस का असर पड़ा है.''

● ''राष्ट्रपति सम्मान के बाद आप ने कैसा महसूस किया?''

''सब कुछ वैसा ही है भैया, कहीं कोई अंतर नहीं आया. मैं इस शहर (ग्वालियर) में एक संस्था खोलना चाहती थी ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इस कला से जुड़ सकें. इस के लिए बहुत कोशिशें भी कीं. पर सब तरफ से निराशा ही मिली. मेरी बात पर किसी ने भी विचार नहीं किया, सो मैं भी मन मार कर बैठ गई.

''अब सभी बच्चे नातीपोते इस काम को सीख गए हैं, आगे तरक्की कर लेंगे. अगर आसपड़ोस वाले इस कला के बारे में कुछ पूछते हैं तो उन्हें भी बता देती हूं. बुढ़ापे के कारण ज्यादा काम तो कर नहीं पाती फिर भी आठ घंटे तक काम करती हूं.''

● ''विदेश यात्रा के दौरान आप को कैसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लगा, आप ने वहां कैसा महसूस किया?"

"सच पूछो तो दिली तौर पर मैं वहीं बसना चाहती थी. यहां की परेशानियों से तो छुटकारा मिल जाता. पर, माटी का मोह मुझ से नहीं छोड़ा गया सो वापस आ गई.

"वहां कलाकार की बहुत कद्र है. उस यात्रा में मेरे साथ सीतादेवी, विंध्येश्वरी देवी भी गई थीं. जगहजगह हमारा सम्मान हुआ था. बच्चों से ले कर बूढ़ों तक ने हमें घेरे रखा. वे तरहतरह की बातें पूछते, मेरे सम्मान में गाने भी गाते. उन्होंने तरहतरह के कार्यक्रम भी आयोजित किए. पर यहां तो कोने में अलगथलग पड़े हैं, कोई नहीं पूछता.

"मैं ने देखा विदेशों में भारतीय कला का बेहद सम्मान है. लोग कलाकार को आदर की दृष्टि से देखते हैं. मेरी एक गुड़िया वहां कम से कम पांच डालर में बिक जाती थी, पर यहां बड़ी बेकदरी है."

● "बाकी बचे वक्त में आप क्या करती हैं?" पूछने पर उन का जवाब था, "घर का काम करती हूं और बच्चों की देखभाल."

● "आप कुछ और कहना चाहेंगी?"

"कहना क्या, आप हमारे लिए कुछ लिख रहे हो तो शायद सरकारी कागजों में कुछ हरकत हो जाए और हमारे रहने के लिए निजी छत का इंतजाम हो जाए. इस महंगाई में इतने बड़े घर को ले कर हम लोग कहां जाएं?" बत्तोबाई की आंखों में प्रश्न थे. ●

"देखा... मेरे परिचय में क्या लिखा है... मैं ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ, निस्वार्थ कार्य करने वाला, सत्ता से मोह न रखने वाला, राजनीतिज्ञ हूं. यह मेरा चरित्र हनन नहीं तो और क्या है?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये लड़के ये लड़कियां

[illegible] अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी, पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता:
संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

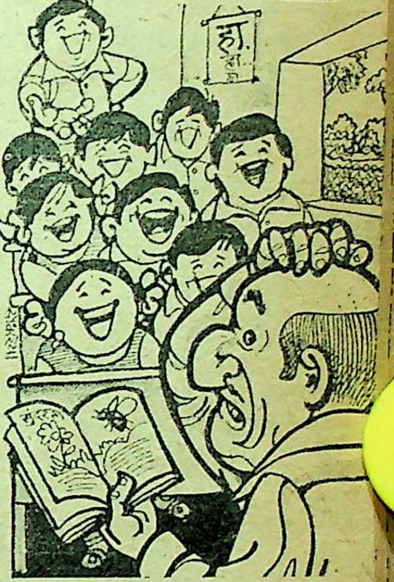

उन दिनों मैं नौवीं कक्षा में पढ़ता था. एक दिन हमारे अंगरेजी के अध्यापक एक अध्याय को उदाहरण दे कर समझा रहे थे, "तुम सुंदरता को छू नहीं सकते."

इस पर एक लड़के ने कहा, "क्यों, हम सुंदरता को छू क्यों नहीं सकते?"

इस पर अध्यापक ने कहा कि तुम सुंदरता को छू दोगे तो तुम्हारे सिर के बाल उड़ जाएंगे.

यह सुन कर पीछे बैठे एक लड़के ने तपाक से पूछा, "श्रीमानजी, आप ने यह भूल कब की थी?"

उस का यह कहना था कि सब की हंसी छूट पड़ी, क्योंकि अध्यापक के सिर पर बाल नहीं थे.

—महेशचंद्र

*

हमारे एक शिक्षक की शादी की पार्टी में कुछ विद्यार्थी भी शामिल थे. पार्टी में छात्रों ने उन शिक्षक से गाना गाने का अनुरोध किया. छात्रों के विशेष अनुरोध पर वह तैयार हो गए और उन्होंने गाना शुरू किया, "हिमालय से ऊंचा, सागर से गहरा मेरा प्यार..."

इतना सुनते ही एक विद्यार्थी बोल उठा, "अभी नयानया प्यार है न, इसलिए ऊंचानीचा है. थोड़े दिन में सब समतल हो जाएगा."

इतना सुनते ही सभी शिक्षक व छात्र हंसे बिना न रह सके.

—नरेशकुमार अग्रवाल

*

हमारे एक प्रोफेसर पढ़ाते समय अपने हाथपांव हिलाते रहते थे. एक दिन एक छात्र को कक्षा में ऊंघते देख कर उन्होंने उस छात्र से पूछा, "क्यों रात भर कठपुतली का नाच देखते रहे थे?" वह छात्र कुछ बोलता, इतने में पीछे से कोई बोल उठा, "श्रीमानजी, रात में तो नहीं, अभी जरूर देख रहे हैं."

इस के बाद प्रोफेसर की अपने हाथपांव हिलाने की आदत जाती रही.

—सुबीररंजन दास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिसते नासूर

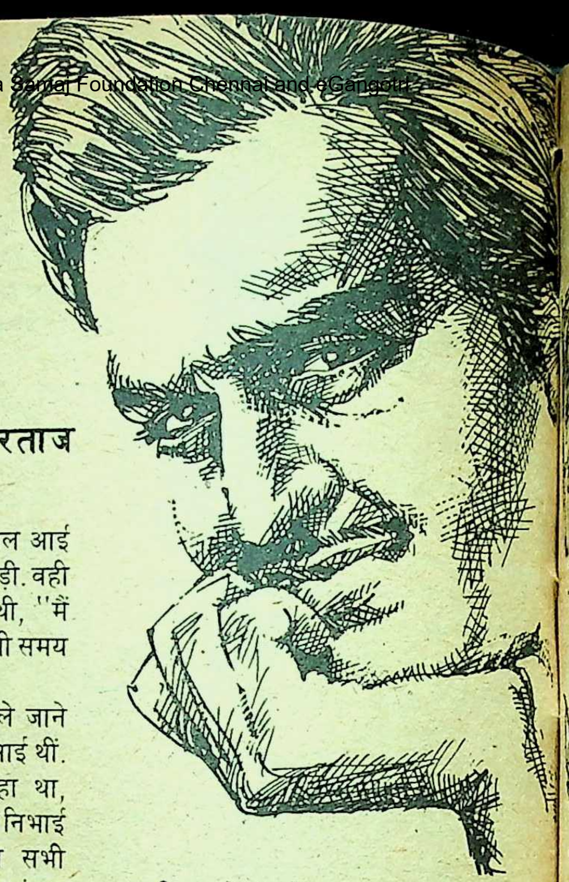

कहानी • बानो सरताज

ख़ालिदा मुझे देखने हस्पताल आई तो फूटफूट कर रो पड़ी. वही ख़ालिदा रो रही थी, जो कहती थी, "मैं जीवन के किसी भी मोड़ पर, किसी भी समय आंसू नहीं बहाऊंगी."

खालिदा का दूल्हा जब उसे ले जाने आया था तब भी उस की आंखें भर आई थीं. पर एकांत में उस ने मुझ से कहा था, "कमाल, मैं रोई नहीं, केवल एक रीत निभाई है. बाबुल का घर छोड़ते समय सभी लड़कियां रोती हैं. मेरी आंखों में लोग आंसू न देखते तो मेरी ससुराल वाली स्त्रियां नाम धरतीं."

मैं मुसकरा कर रह गया था. आज वहीं ख़ालिदा ऐसे रो रही थी, जैसे उस के हृदय में कुछ टूट गया हो. जिस की किरचें चुभ कर आंखों के उस बांध को तोड़ रही हों, जिस ने बचपन से अब तक आंसुओं को भीतर ही रोक रखा था.

मैं ने कहा, "खालिदा, मैं ने तुम से कहा था न कि रोने से दिल का बोझ हलका हो जाता है. किसी के सहानुभूति के दो बोल पीड़ा को कम कर देते हैं. आंसुओं को सहेज कर रखोगी तो एक दिन जब इन्हें बहाव मिलेगा तो कोई न कोई इस में बह जाएगा. कोई क्यों, संभवतः आज मैं ही इस में बह जाऊं."

खालिदा ने मेरे होंठों पर उंगली रख कर आगे बोलने से मुझे रोक दिया. मैं ने बहुत शालीनता से मुंह से उस का हाथ हटाया और पूछा, "तुम्हारे पति किदवई साहब और बच्चे कहां हैं?"

वह धीमे से बोली, "घर पर हैं." फिर ठंडी सांस भर कर बोली, "कमाल, मुझे सब कुछ मालूम हो गया है. तुम्हारी भाभी ने मुझे तुम्हारा हत्यारा कहा है. मुझ पर तुम्हें बरबाद करने का आरोप लगाया है. आज मैं तुम से सब कुछ पूछ कर ही रहूंगी."

"खालिदा, बीती बातों को छोड़ो. सुनहरी धूप में धुलेधुले इन फूलों को देखो. इन फूलों की बातें करो."

खालिदा हठ करने लगी, "मुझे बहलाने के प्रयत्न न करो, कमाल. आज तुम्हें बताना ही होगा कि तुम ने मुझ से खामोश मुहब्बत क्यों की? मुझे क्यों नहीं बताया कि तुम मुझे जीजान से चाहते थे. आज भी भाभी यदि न बतातीं तो मैं अंधकार में ही रहती."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमाल दिली तौर पर खालिदा से मुहब्बत करता था पर वह कभी भी उसे व्यक्त न कर सका, पर अपने दिल में नासूर की तरह पलती इस पीड़ा से उस ने किस तरह निजात पाई?

मैं ने कहा, "मैं ने ही भाभी को बताने से रोक दिया था वरना वह तो तुम्हारे विवाह के दिन ही तुम्हें मेरे अरमानों की सिसकती आग का तोहफा देने वाली थीं. मैं तुम से प्रेम करता था. तुम्हारी खुशी मेरी खुशी थी. किदवई साहब के साथ जीवन का जो हसीन सफर तुम आरंभ करने जा रही थीं, उस के रास्ते में मैं अपनी झोली फैला कर मुहब्बत की भीख मांगने खड़ा हो जाता तो तुम क्या करतीं? तुम एक भारतीय नारी की परंपरा को निभाते हुए मातापिता के पसंद किए हुए लड़के की पत्नी बनने जा रही थीं. मैं तुम्हें तुम्हारे कर्तव्य से कैसे विमुख कर देता? न तो तुम मुझे मुहब्बत की भीख दे सकतीं और न मेरे दुखी मन को शांति मिलती. अलबत्ता तुम्हारे घर की खुशियों को आग जरूर लग जाती. मैं यह कदापि नहीं चाहता था."

"मैं तब की बात नहीं कहती, कमा
बचपन तुम्हारे साथ गुजरा. यौवन
दहलीज पर हम ने साथसाथ कदम रखे.
तुम्हारा साथ दूसरों की तुलना में अधिक प
करती."

"वह बचपन था, खालिदा. बड़ी ह
पर तुम मुझे, खब्ती, झक्की, दार्शनिक अ
न जाने क्याक्या कहती थीं. खैर, छोड़ो, मैं
अभी कहा न कि मेरे जीवन के अंतिम क्ष
को इतना पीड़ादायक न बनाओ कि
मरतेमरते भी यह दुख साथ ले जाऊं कि जि
खालिदा ने मरते समय भी मुझे अपने प्यार
योग्य न समझा."

खालिदा के रुके हुए आंसू फिर
निकले, "कमाल, तुम अपने मन की बात
कहोगे तो मुझे शांति नहीं मिलेगी. तुम ने
लिए संसार भर की खुशियां जुटा दीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पने दिल में ना... अपने पति और बच्चों में मगन जीवन का सुख ...टती रही. मुझे बताओ, कमाल, तुम ने ऐसा ...यों किया? क्यों मुझ से ऐसी खामोश ...हब्बत की? क्यों शमा की तरह पिघल कर ...ह गए?"

"मैं विवश हो गया, "नहीं मानती तो ...मनो. कालिज में एक बार मेरे हाथ में ...मानी उपन्यास देख कर तुम ने मेरी हंसी ...ड़ाई थी. यह कह कर कि 'तुम भी इश्क ...हब्बत की बातों में फंस गए? तब तो कल ...सी लैला किसी हीर का दम भरते नजर ...ओगे.'

"मैं ने जवाब दिया था, 'यह कौन सी ...ी बात होगी? मेरी दृष्टि में प्रेम जीवन का ...ा कर्तव्य है, जिसे कभी न कभी पूरा करना ...है. तो क्यों न अभी कर लूं.'

"तुम ने हंस कर कहा था, 'इश्क ...ब्बत की बातें पुस्तकों ही में अच्छी लगती ...वास्तविक जीवन में इन का कोई महत्त्व ...ीं होता.'

"'कोई तुम से प्रेम करने लगे तो?' मैं ने ...ा था.

"तुम ने उत्तर में कहा था, 'मैं उस से ...गीं, 'और भी गम हैं, जमाने में मुहब्बत के ...ा.' बस मैं ने तभी निश्चय कर लिया था ...अपने प्रेम के रहस्य को रहस्य ही रहने ...ा. तुम जो कहती थीं, वह कर गुजरती थीं. ...र से पत्थर भी पिघल जाते हैं. तुम्हारे सीने ...ह भी न था. वरना मेरे प्यार की आंच से ...पिघल जाता. उन्हीं दिनों तुम्हारी शादी ...हो गई. मैं ने अपने दोनों हाथों से तुम्हें ...ी में सवार कराया, तुम चली गईं. इस ...से अनभिज्ञ रहते हुए कि किसी के हृदय ...यार की जलती चिनगारी छोड़ गई हो. वह ...गारी जो एक दिन उस के वजूद को ही ...कर राख कर देगी. तुम अपनी दुनिया में ...न रहने वालों में थीं."

"तुम ने मुझे समझा नहीं कमाल" ...लिदा बोल पड़ी, दूसरों के ...मैं जिद्दी और उद्दंड रही हूंगी, पर ...उस ... था. तुम मुझ से कह कर तो देखते. तुम्हारे लिए मैं सब से लड़ जाती. अपने सिद्धांतों से, अपने विचारों से. दूर हो कर तुम्हारी हो जाती."

"यह बात अब तुम इतने विश्वास से कह रही हो," मैं ने गौर से उसे देखा. "पर तब तुम्हारा दृष्टिकोण बिलकुल भिन्न था. जिंदगी को देखनेसमझने का अंदाज अलग था. तुम जख्मों से घृणा करती थीं. मुझे स्मरण है, मैं बचपन में एक बार बीमार हो गया था. मेरे पूरे शरीर पर लाल दाने निकल आए थे. तुम मुझे देखने आई थीं और मेरी विचित्र स्थिति देख कर भाग खड़ी हुई थीं. मैं अम्मी से बारबार पूछता था, 'अम्मी, खालिदा मेरे पास क्यों नहीं आती?'

"अम्मी ने कुछ नहीं बताया था. पर मैं जान गया था कि तुम्हें मेरा ऐसा बदशकल दिखाई देना पसंद न था. बचपन में तुम ने मेरे घावों से घृणा की. फिर जवानी में जब तुम्हारा मस्तिष्क परिपक्व हो गया था तो तुम क्योंकर मेरे हृदय के नासूर को सहन करतीं? मुझे विश्वास है, तुम इस रहस्य को जान भी लेतीं तो मेरे हृदय के घावों पर मरहम रखने के बजाए मरहम रखने के मुझे मशवरा देतीं कि दिल से उस याद को निकाल फेंको. मुझे यह कदापि स्वीकार न होता, इसलिए दिल की बात दिल में रखी. आज तुम्हें बता दिया. अब मैं शांति से मर सकूंगा."

"कमाल, आज ही तो मुझे मिले हो. मरने की बात क्यों करते हो?" खालिदा मुझ पर झुक कर सिसकने लगी.

"क्या कहती हो, खालिदा? आज जब तुम्हें सब कुछ बता देने के बाद सदा के लिए खो रहा हूं तो तुम कहती हो, तुम ने मुझे पा लिया है. आज तक तुम मेरी थीं, तुम्हारी यादें मेरी थीं. हमारे दृष्टिकोण के इस अंतर ने मुझे अपने हाथों तुम्हें किदवई साहब के हवाले कर दिया था."

सहसा मुझे किदवई साहब आते दिखाई दिए. मैं ने खालिदा को दूर हटाते हुए कहा, "तुम अपने आंसू पोंछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

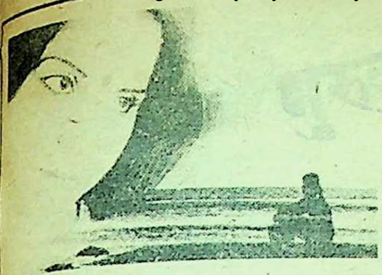

तनहा

क्यूं न इक दूसरे के
हो जाएं,
मैं भी तनहा हूं
आप ही की तरह.

—सलीम अश्क

किदवई साहब देखेंगे तो सोचेंगे, एक पड़ोसी के लिए तुम इतनी चिंतातुर क्यों हो. संदेह का कीड़ा एक बार मन में पैर जमा ले तो जीवन को घुन की तरह खा जाता है."

"हलो, खालिदा, हलो कमाल." किदवई साहब पास आ कर टेपरिकार्डर की तरह बजने लगे. "अचानक बंबई जाने की योजना बनी तो याद आया तुम ने भी साथ चलने को कहा था. बच्चों को फोन कर दिया वे तैयार हो रहे होंगे. अरे, शायद कमाल साहब की तबीयत अधिक खराब है और खालिदा, तुम क्यों रो रही हो? अरे, खालिदा बेगम रो रही हैं? हैरत है भई?"

मैं और खालिदा दोनों अपनेअपने विचारों में खोए हुए थे. उन्होंने क्याक्या कहा, हम ने नहीं सुना. अंतिम शब्द कानों में पड़े तो खालिदा चौंक कर बोल उठी, "कमाल साहब ने अपनी नाकाम मुहब्बत की दास्तान मुझे सुनाई तो मेरे आंसू निकल आए. जिस लड़की से इन्होंने प्यार किया, वह बेवफा निकली. इन्हें मौत के दरवाजे तक पहुंचा दिया."

"आज मैं नईनई बातें सुन रहा हूं," किदवई साहब वास्तव में आश्चर्यचकित थे, "मुहब्बत की कहानी, प्यार में नाकामी, खालिदा बेगम की जबानी. खैर, चलो समय कम है, खालिदा."

"आप कार बाहर तो निकालें, मैं आती हूं." किदवई साहब के जाते ही खालिदा ने मेरे बालों को सहलाते हुए कहा, "कमाल, मैं बंबई से शीघ्र ही लौटूंगी, फिर प्रतिदिन तुम्हारे पास आया करूंगी."

मैं ने दृढ़ता से कहा, "यहां आने की कोई आवश्यकता नहीं, तुम्हें मेरी कसम जो अब यहां आईं."

वह रो पड़ी, "यह कैसी जंजीर मेरे पांव में डाल दी, कमाल? क्या मेरे गुनाहों का प्रायश्चित्त भी नहीं करने दोगे मुझे?"

"वह एक ही प्रकार से हो सकता है, खालिदा. मुझे भूल जाओ. अपने दांपत्य जीवन में विष न घोलो. अपने पति को अपना सब कुछ मान कर अपने बच्चों के लिए जिओ. मेरा क्या है. झूठ न कहूंगा, मुझे तुम से कोई शिकायत नहीं."

खालिदा ने होंठों में ही कहा, 'अलविदा.' फिर मेरी पेशानी को झुक कर चूम लिया. वह भागती हुई बाहर चली गई.

खालिदा जिस दरवाजे से निकल कर गई, उसी दरवाजे से भाभी ने प्रवेश किया. मेरे सिरहाने बैठ कर मेरे बाल सहलाती हुई बोलीं, "कैसा लग रहा है, कमाल? तुम्हारे भाईबहन भी आ रहे हैं."

"बहुत अच्छा लग रहा है, भाभी," मैं ने कहा, "खालिदा बचपन से साथ रही, उस का प्यार न पा सका. आप को बहुत देर में पाया, जब पाया तो ममता के सब रूप मिल गए. मां को बचपन में खो बैठा था. आप के रूप में मां को पा लिया. अब इन कदमों में मौत मिल जाए, यही इच्छा है."

भाभी की आंखों से दो मोटेमोटे आंसू ढुलक कर मेरे चेहरे पर गिर पड़े. मैं ने आंखें बंद कर लीं. ममता के सागर में डूबताउतराता मैं खालिदा को भूल गया. इस समय मेरे मस्तिष्क में दूरदूर तक खालिदा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिला रोजगार

गृह शास्त्री

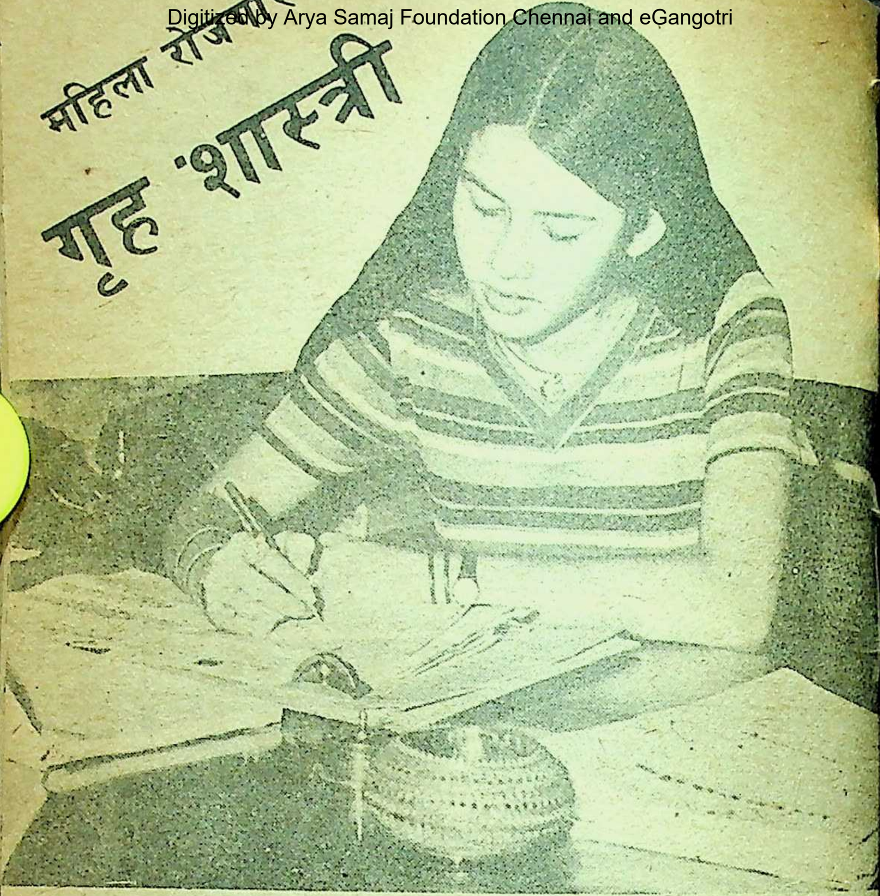

लेख • अजेयकुमार गोयल

आज जब कि खरीदारों का दृष्टिकोण तर्कपूर्ण व अत्यधिक तुलनात्मक होता जा रहा है. तब से गृहशास्त्रियों का क्षेत्र और व्यापक हो गया है.

स्कूलों, कालिजों, बाल केंद्रों, घरेलू जरूरतों में काम आने वाला सामान तथा खानेपीने की वस्तुएं बनाने वाली कंपनियां, पत्रपत्रिकाओं के कार्यालयों, रेडियो व टेलीविजन केंद्र आदि में इन की मांग है.

इस के लिए आप का गृह विज्ञान में स्नातक या स्नातकोत्तर होना जरूरी है. देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में इस की शिक्षा की व्यवस्था है.

गृह शास्त्री का कार्य अनुसंधान व परीक्षण करना, आकर्षक विज्ञापन व निर्देश पुस्तिकाएं तैयार करना, रेडियो व टेलीविजन के लिए कार्यक्रम की रूपरेखा बनाना या वहां बतौर सलाहकार कार्य करना, लोगों को किसी भी वस्तु आदि की जानकारी देना, मजदूरों व विक्रय प्रतिनिधियों को प्रशिक्षण देना तथा निर्माताओं को उन के उत्पादों के बारे में उपयोगी सुझाव देना आदि होता है.

यदि नौकरी की जाए तो शुरू में 500-600 रुपए तक मिल सकते हैं लेकिन नौकरी के लिए इस विषय की पर्याप्त जानकारी व इस में कुशलता जरूरी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एशियाड–82 के अवसर पर दिल्ली में आने वाले पर्यटकों के लिए

सरिता

दिल्ली पर्यटन विशेषांक

नवंबर (प्रथम) 1982

सही मार्गदर्शन करेगा

इस विशेषांक में पर्यटकों के लिए बहूपयोगी सामग्री होगी– कहां ठहरें? कौन से होटल महंगे हैं और कौन से सस्ते? खाना कहां खाएं? शाकाहारी व मांसाहारी होटलों के पते, किनकिन दर्शनीय स्थानों को कम खर्च में कैसे देखें? पैदल कहांकहां घूमें? दिल्ली के मुख्य बाजार, जहां से मनचाही वस्तुएं खरीद सकें, मनोरंजन के साधन, किस तरह के लोगों से सावधान रहें? परिवहन के कौन से साधन प्रयोग करें? इत्यादि की संपूर्ण जानकारी बहुरंगी चित्रों के साथ.

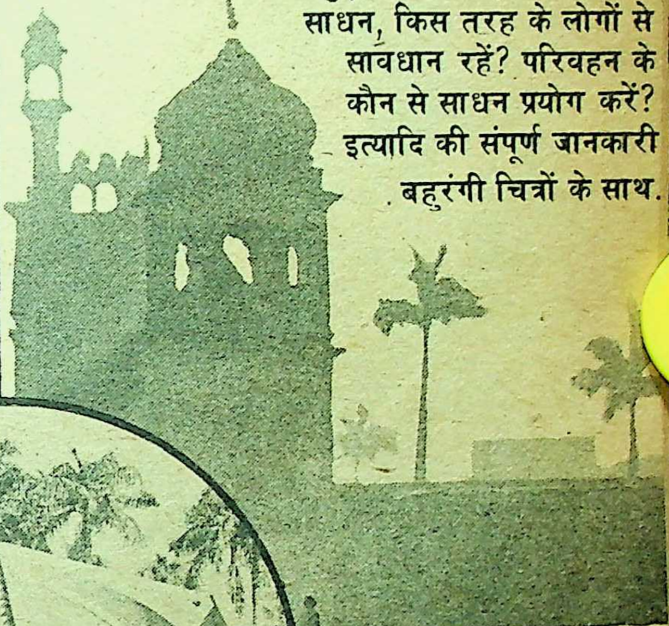

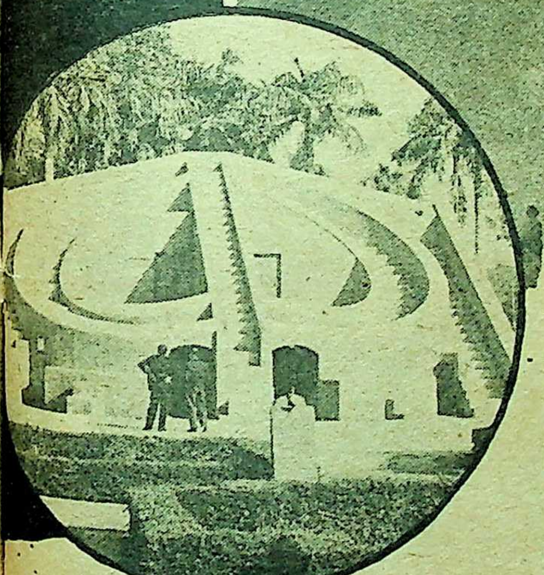

साथ ही सदा की तर
पूरे परिवार व
मनोरंजन करने वाल
8 कहानियां, कई अन
लेख, तथा मर्मस्पश
कविता

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करा लें.

संधान व
व निर्देश
टेलीविजन
ना या वहां
लोगों को
ारी देना,
प्रशिक्षण
उत्पादों के
होता है.
में 500-
न नौकरी
नकारी व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मशीनी मानव जहां कठिन से कठिन कार्यों को अत्यंत सरल कर देगा वहीं इस के अधिक प्रयोग से कई सामाजिक संकट भी पैदा हो जाएंगे.

लेख • अजयकुमार सिन्हा

भविष्य का वफादार घरेलू नौकर

मशीनी मानव

नई दिल्ली के प्रगति मैदान में पिछले वर्ष लगी औद्योगिक प्रदर्शनी में एक मंडप ऐसा था, जिस में प्रवेश द्वार पर खड़ा एक मशीनी मानव (रौबट) अपने हाथों से फूल आप की ओर बढ़ा कर आप का स्वागत करता था. उस दिन की कल्पना कीजिए, जब आप के 'रामू' की जगह एक अजीब प्राणहीन नस्ल का अनोखा जीव आप का घरेलू नौकर होगा. आप के बच्चों की आया भी इसी नस्ल की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

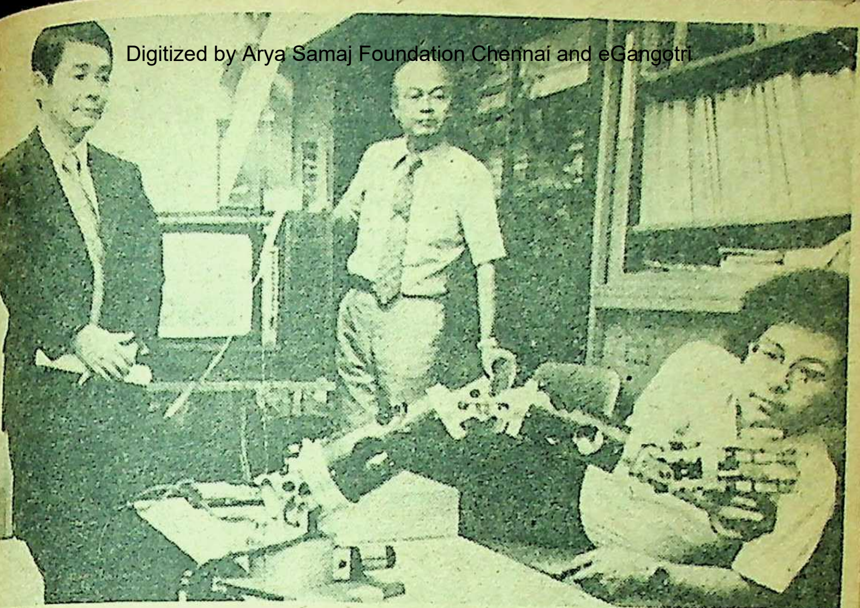

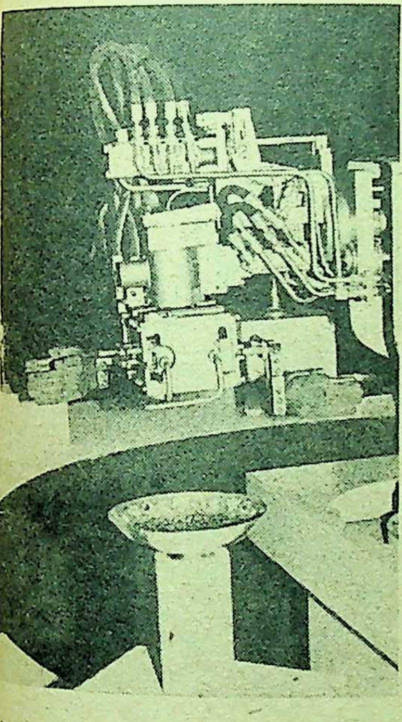

नर्स रौबट : वृद्धों व अपंगों के लिए अत्यंत उपयोगी (ऊपर), अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले '81 का मुख्य आकर्षण–रौबट (बाएं).

होगी. आज के 'रामू' और भविष्य के उस 'रामू' में जमीनआसमान का अंतर होगा.

आप को शिकायत रहती है कि आज का रामू काम ठीक नहीं करता, धीरेधीरे करता है, बताया हुआ काम भूल जाता है, काम पर देर से आता है, कामचोर है, टालमटोल करता है, आलसी है, गंदा है, झूठ भी बोलता है, चोरी भी करता है, हर रोज तनख्वाह बढ़ाने के लिए कहता है. हर साल कई बार घर जाने के लिए छुट्टी मांगता है. मौका मिलने पर घड़ी, रुपया आदि जो भी हाथ लगे, ले कर भाग भी जाता है.

किंतु भविष्य का 'रामू' आप को इस तरह परेशान नहीं करेगा. वह न तो काम पर देर से आएगा, न काम धीरेधीरे करेगा, कभी भी छुट्टी नहीं लेगा, चोरी नहीं करेगा, झूठ नहीं बोलेगा, तनख्वाह बढ़ाने के लिए नहीं कहेगा और गंदा नहीं रहेगा. इस प्रकार कल का रामू आज के रामू से ज्यादा भरोसेमंद व वफादार होगा. उस पर आप पूर्ण विश्वास कर सकेंगे. कितना अच्छा होता यदि यह रामू आज के रामू की जगह जल्दी से आ जाता, ताकि घर के काम और देखभाल की समस्या सुलझ जाती.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जी हां, यह 'रामू' कोई आसमान से नहीं टपकने वाला है, बल्कि यह प्राणहीन 'यंत्रमानव' (रौबट) ही है, जिस को 'रामू' बनाया जा रहा है. जो 'रामू' के काम का प्रशिक्षण ले रहा है. वैज्ञानिक इस काम में काफी सालों से लगे हुए हैं. किंतु यंत्रमानव, 'रामू' होने से पहले उद्योगों में श्रमिकों व तकनीक विशेषज्ञों का काम पहले कर रहे हैं. ये मनुष्य से ज्यादा विश्वसनीय प्रमाणित हो चुके हैं. प्राणहीन होते हुए भी ये ज्यादा कार्यदक्ष हैं. अमरीकी कारखानों में काम करते हुए ये यांत्रिक मानव दानवाकार लगते हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज, रौबट शब्द से जिस का अर्थ है मनुष्य जैसा काम करने वाला यंत्र या यंत्रमानव, प्रायः सभी शिक्षित लोग परिचित हैं. इस शब्द की उत्पत्ति केवल 50 वर्ष पहले हुई. चेकोस्लोवाकिया के नाटककार कैरेल कैपक ने सन 1920 में अपने नाटक 'रोसमस यूनिवर्सल रौबट्स' में इस शब्द का सब से पहली बार प्रयोग किया. रौबट शब्द को उस ने चेकोस्लोवाक शब्द 'रोबोटा' के रूप में

रौबट सिखलाया हुआ काम तो अत्यंत कुशलता से तुरंत कर देता है पर अपनी बुद्धि से कुछ नहीं कर सकता, लेकिन 21वीं सदी के अंत तक यह भी संभव हो सकता है.

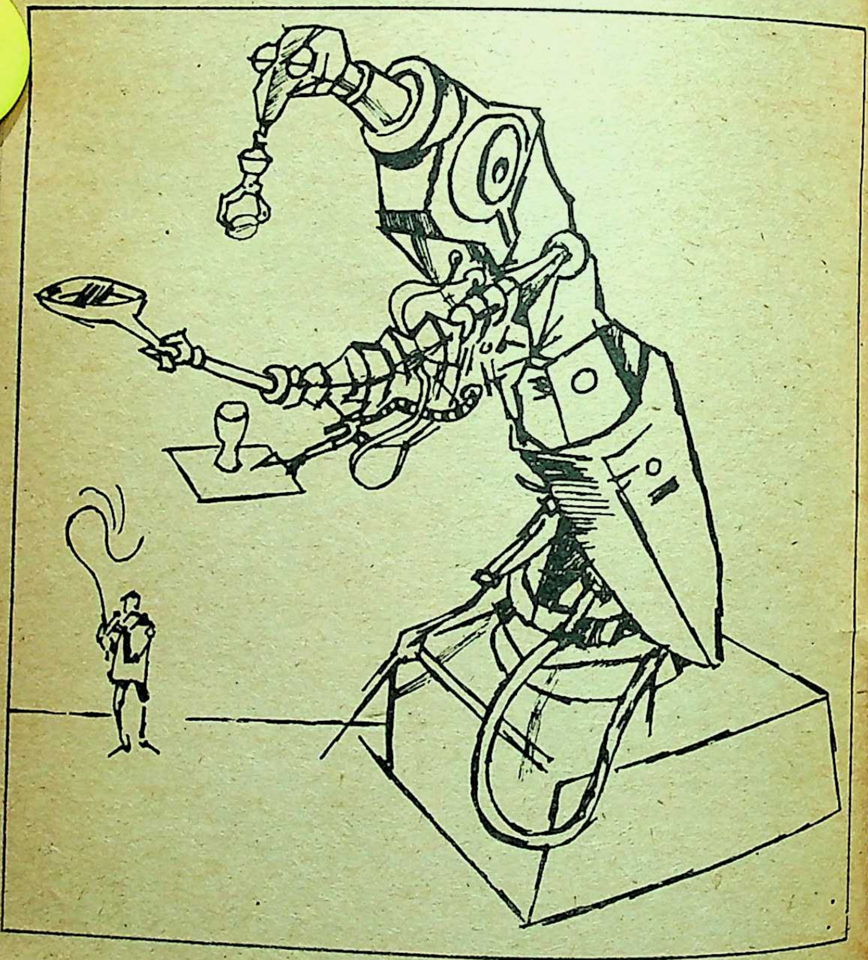

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया. जिस का अर्थ है बंधक मजदूर या गुलाम. तब से रौबट शब्द वैज्ञानिक कथा साहित्य, उपन्यासों व कार्टूनों का चरित्र या पात्र बन गया है. अब तो बच्चे की पुस्तकों में यह बहुत ही लोकप्रिय हो गया है.

किंतु चेकोस्लोवाक नाटककार, कैपक के रौबट की उत्पत्ति से बहुत पहले, मनुष्य ने स्वचालन (आटोमेशन) का आविष्कार कर लिया था. जापान में एनिमेटिड (सजीव सचेत या जीतीजागती) गुड़िया, काराकुरी निगोया में बनी थी. किंतु इस प्रकार के स्वचालन की एक सीमा थी, वह यह कि यह केवल एक ही तरह का वही काम लगातार कर सकती थी. यह न तो व्यावहारिक थी, न ही ऐसा काम कर सकती थी जो मनुष्य की शक्ति से परे है.

सन 1960 के बाद कंप्यूटर के विकास व प्रगति से यंत्र नियंत्रण में बहुत तेजी से प्रगति हुई और रौबट अनुसंधान आगे बढ़ा. नाटककार कैपेक ने जिस मशीनी मानव की कल्पना की थी, 1960 के बाद के अनुसंधान ने उस को और आगे बढ़ाया, कोशिशें की गईं कि रौबट वे तमाम मुश्किल व खतरनाक काम कर सकें जो कारखानों में आदमी के लिए करना असंभव है.

परिकल्पना का विस्तार

शुरू के रौबट यंत्र से चालित मनुष्य की तरह थोड़ा सा ही काम करते थे. किंतु हाल में इस परिकल्पना का विस्तार हुआ है और अब रौबट किसी भी आकार का वह यंत्र है जो आदमी या जानवर जैसे सभी काम कर सके. यह जरूरी नहीं है कि उस का रूप आदमी जैसा ही हो, किंतु रौबट के बारे में जानने वाले आम लोगों के सामने रौबट का वही रूप सामने आता है. रौबटों में ज्ञानेंद्रियों जैसी संवेदनात्मक योग्यता भी होती है. और आकारों को पहचान लेने की योग्यता भी.

ये किसी भी प्रकार का काम कर सकते हैं. आदमी द्वारा किए जाने वाले हर प्रकार के काम और वे काम भी जो आदमी नहीं कर सकता, करने की योग्यता व क्षमता इन में होती है. एक बार शुरू कर के खुद काम करते रहने वाले अथवा हर बार बटन दबा कर काम कराने वाले दोनों ही तरह के मशीनी मानव होते हैं.

इस का अर्थ यह हुआ कि मनुष्य के मस्तिष्क, आंखें या देखने का,स्पर्श या छूने का हाथ का और पैर का काम भी रौबट कर सकता है.

सन 1962 में अमरीका में औद्योगिक रौबट का विकास हुआ जो चीजों को पकड़ कर एक जगह से दूसरी जगह ले जा सकता है. आज अनेक देशों में उद्योगों में रौबटों का बड़ी कुशलता से प्रयोग किया जा रहा है. रौबटों का सब से अधिक प्रयोग अमरीका में ही हो रहा है. उस के बाद दूसरे नंबर पर जापान है. जापान की केवल एक फैक्टरी में ही दो हजार रौबट काम करते हैं.

रौबटों का काम इतना अनुकूल हुआ है कि संसार के सभी उद्योग जोखिम भरा और असंभव औद्योगिक काम कराने के लिए आज रौबटों की मांग कर रहे हैं. रौबटों की संख्या बढ़ रही है. औद्योगिक रौबट ऐसेऐसे कठिन काम कर रहे हैं, जो साधारण मानव नहीं कर सकता, वे चीनी मिट्टी का सांचा बनाते हैं, जिस से सुपरएलाय का टरबाइन का ब्लेड ढाला जाता है. ब्लेड के मोम के सांचे को ले कर वे चीनी मिट्टी के घोल या गारे में डुबो देते हैं और फिर उन्हें ऊपर से गिर रहे रेत के बीच में करते हैं, तह बराबर रखने के लिए उन्हें घुमाते और मोड़ते रहते हैं, फिर उन्हें उस बैल्ट पर लटका देते हैं जो सुखाने वाली भट्टी से हो कर निकलती है.

वे सारी परेशानियां जो उद्योग में काम करने वाले टैक्नीशियनों व मनुष्यों को होती हैं, रौबटों को नहीं होतीं. वे लगातार काम करने से थकते या ऊबते नहीं. वे खतरे में तथा विपरीत परिस्थितियों में भी काम कर सकते हैं, जैसे–दिन भर छत से उलटा लटक कर काम करना. रौबट वह काम भी करते हैं, जिस में असाधारण शक्ति व आकार की आवश्यकता होती है. इस के अतिरिक्त रौबटों में ऐसे गुण होते हैं, जो मनुष्य में नहीं हो सकते जैसे उन के हाथों में आंखें होनी हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन की कलाइयां घूमने वाली होती हैं जो चारों ओर घूम सकती हैं. रौबटों को कहीं भी आसानी से लगाया जा सकता है, उन्हें नया काम मिनटों में सिखाया जा सकता है.

रौबट ऐसा स्वचलित यंत्र हैं, जिस का व्यापक उपयोग है. इस के ठीक विपरीत विशेष काम करने वाले स्वचालित यंत्र होते हैं, जिन को काम पर लगाने में लगभग एक वर्ष लग जाता है. जब उत्पादन की जाने वाली वस्तु का रूप बदल जाता है तब विशेष काम करने वाले इन स्वचालित यंत्रों को या तो बेचना पड़ता है या रद्दी माल की तरह तोड़ देना पड़ता है. जब कि रौबट के साथ ऐसी स्थिति नहीं होती.

रौबट भिन्नभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं. वे घड़ियों के हिस्सों को जोड़ते हैं. और तीन सौ पौंड वजन की दो हजार डिगरी के ताप की झड़न को उठाते और रखते हैं. वे मुख्यतः मशीनों के हिस्सों को उठाने, रखने, पकड़ने, फिट करने, लगाने, जोड़ने तथा सांचा बनाने और ढालने का काम करते हैं.

रौबट के उत्पादन में वृद्धि

इटली की कारें बनाने वाली कंपनी 'फिएट' ने सूचित किया है कि उस के दो कारखानों में रौबटों ने उत्पादन में 15 प्रतिशत वृद्धि कर दी है. अमरीका में 3,500 रौबट उद्योगों में काम कर रहे हैं. इन में से आधे मोटर कारखानों में काम करते हैं. उन का प्रयोग इतना सफल हुआ है कि अन्य उद्योग भी रौबट बनाने वालों के पीछे पड़े हुए हैं. उत्पादन बढ़ाने के लिए नई तकनीक की तलाश करने वाले उत्पादक व उद्यमी, रौबट के मूल्य और इस के संचालन के कम खर्च से बहुत आकर्षित हो रहे हैं. एक रौबट का जीवन प्रायः 10 वर्ष होता है. इस का संचालन का खर्च पांच से 10 डालर प्रति घंटा आता है. सन 1960 से यह इतना ही है. रौबट बनाने वालों ने सूचित किया है कि रौबटों की बिक्री प्रति वर्ष 35 प्रतिशत बढ़ रही है. दोदो साल के लिए आर्डर आए हुए हैं. रौबट बनाने की तकनीक को 'रोबेटिक्स' कहते हैं.

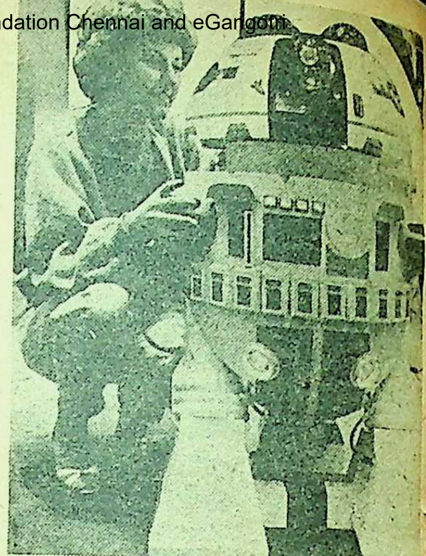

रौबट : जापान के लिए भावी सामाजिक संकट.

शुरू का रौबट संबंधी सारा अनुसंधान व विकास कार्य अमरीका में हुआ. संसार में, रौबट के सब से बड़े उत्पादक भी अमरीकी हैं. किंतु रौबट का सब से अधिक प्रयोग जापान कर रहा है. संसार के आधे रौबट जापान में है. रोबेटिक्स में अब अधिकांश अनुसंधान और विकास कार्य जापान में हो रहा है.

अनुसंधान का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र रौबटों में इंद्रियबोध शक्ति या क्षमता, विशेषकर देखने की योग्यता, और स्पर्श की क्षमता पैदा करना है. अधिकांश रौबटों में इंद्रियबोध शक्ति नहीं होती. यदि कोई चीज अपनी जगह पर नहीं है तो रौबट उसे देख नहीं सकते. स्पर्श द्वारा खोज नहीं सकते, वे इसे नहीं जान सकते कि वह वस्तु गायब है. यदि रौबट के हाथ में बल्ब को उलटा कर दिया जाए तो वह शीशे वाले हिस्से को ही साकेट में फिट करने की कोशिश करेगा. वह बल्ब को सीधा कर के नहीं लगाएगा.

अब ऐसे कार्यकुशल रौबट बनाए जा रहे हैं, जो टोकरी में भरे तमाम बोल्ट, नट,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्क्रू आदि में से अपनी जरूरत का परजा निकाल कर उसे सही जगह पर लगा देगा.

अमरीका की जनरल मोटर्स कंपनी अपने कारखानों में एक ऐसे रौबट को लगाने जा रही है जो तीस भिन्न मोटरों को पहचान कर उन पर उसी हिसाब से मेल खाता रंग करेगा. अगले दशक में आंखों से देख सकने वाले रौबटों का आगमन हो जाएगा, जिस से, ऐसा अनुमान है कि पुरजों को जोड़ने का काम तीन गुना ज्यादा हो सकेगा.

रौबट का मस्तिष्क, कंप्यूटर होता है, जिस में सब से महत्त्वपूर्ण चीज इलेक्ट्रोनिक चिप्स या एक दूसरे से जुड़ी हुई असंख्य तारें होती हैं. इसी के विकास पर आगे का सारा विकास निर्भर करता है. यही भाग काम करने के निर्देश या आदेश लेता है. अमरीका के मोस्टेक कारपोरेशन ने एक वर्ग इंच के बीसवें हिस्से में 140,000 ट्रांजिस्टर व कैपसिटर बनाए हैं जो इन तारों का काम करते हैं. निकट भविष्य में इतनी थोड़ी सी जगह में ये 10 लाख बनाए जा सकेंगे.

रौबटों का प्रयोग परमाणु बिजली घरों तथा अत्यधिक गर्मी व धुएं वाली जगहों पर भी हो रहा है. जहां आदमी ऊब कर गलतियां कर देता है रौबटों को काम पर लगाया जा रहा है.

अब रौबट अनुसंधान का मुख्य लक्ष्य 'कृत्रिम बुद्धि' का विकास करना है. इस का अंतिम उद्देश्य ऐसे रौबटों का निर्माण करना है जो खुद सोच सकें, अध्ययन और अनुभव से सीख सकें.

जुलाई 1979 में इस दिशा में अमरीकी रौबट विशेषज्ञों को पहली किंतु क्रांतिकारी सफलता मिली. उन के बनाए हुए बुद्धिमान कंप्यूटर ने बैकगमन (चौसर या चोपड़ की तरह पासे का एक खेल) के चैंपियन को हरा दिया. इस मैच में विजेता के लिए पांच हजार डालर का इनाम था. विशेषज्ञों का अनुमान है कि पांच वर्ष के भीतर ऐसे बुद्धिमान रौबटों का निर्माण हो जाएगा जो शतरंज के विश्व चैंपियनों को हरा देंगे.

कृत्रिम बुद्धि अनुसंधान का एक नया क्षेत्र है. इस का उद्देश्य है मनुष्य की समस्याओं को सुलझाने की योग्यता का विश्लेषण करना और इस का विकास करना. इस में मनुष्य की सोचने की प्रक्रिया पर प्रकाश डालने के लिए कंप्यूटर का प्रयोग किया जाता है. इस में प्रगति हो रही है और इस से बुद्धिमान रौबटों का निर्माण संभव हो जाएगा. ये रौबट आदमी की तरह अपने को बदल सकेंगे और काम कर सकेंगे. किंतु यह बुद्धि आदमी की बुद्धि जैसी नहीं होगी. इस बुद्धि का अर्थ है आकार व रूप को पहचानना, किसी स्थिति में हुए परिवर्तन को अनुभव कर लेना.

आदमी आंख से देखता है, कान से सुनता है और किसी चीज को स्पर्श से अनुभव करता या पहचानता है, किंतु रौबटों के लिए इन क्रियाओं को करना काफी कठिन होगा. 21 वीं सदी के ये माडेल समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन ला देंगे. यह भी संभव है कि भविष्य के ये 'रामू' आप से बोल और बातचीत कर सकेंगे. यदि आप कोई आदेश देंगे तो वे 'जी सरकार', 'अच्छा सरकार' कह सकेंगे. प्रगति तेजी से हो रही है और वह दिन दूर नहीं है, जब रौबट मानव के दाहिने हाथ होंगे. ●

2,500 साल से अधिक की सजा

लेक चार्ल्स (लुइजियाना) में बेरी साइमोंट्स नाम के एक 30 वर्षीय युवक को नकाब पहन कर बलात्कार करने व डकैती डालने के अरोप में 337 वर्ष की सजा सुनाई गई है.

इस व्यक्ति को 2,500 वर्ष की सजा पहले दी ही जा चुकी है. यदि सजा का समय जोड़ा जाए तो वह 2,500 साल से अधिक समय तक जेल की सजा भुगतता रहेगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षितिज की भरत से अच्छीखासी जानपहचान हो गई थी, पर वह उस के जन्मदिवस पर उस के घर जाना नहीं चाहता था क्योंकि उसे इस प्रकार के आयोजनों आदि में कोई रुचि नहीं रह गई थी. भीड़भाड़, शोरगुल से उस का मन घबराने लगता था. उस को अब बस एकांत अच्छा लगता था.

पर जब भरत ने उसे बातोंबातों में बताया कि उस की बहन शुभा की एक सहेली अल्पना भी उस के घर ठहरी हुई है तो उस के मन में एक तूफान सा उठा. उसे चक्कर सा आया, पर उस ने स्वयं को नियंत्रित कर के भरत से उस के जन्म दिवस पर आने का वादा कर लिया.

तोहफा

कहानी • कुमुद भटनागर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

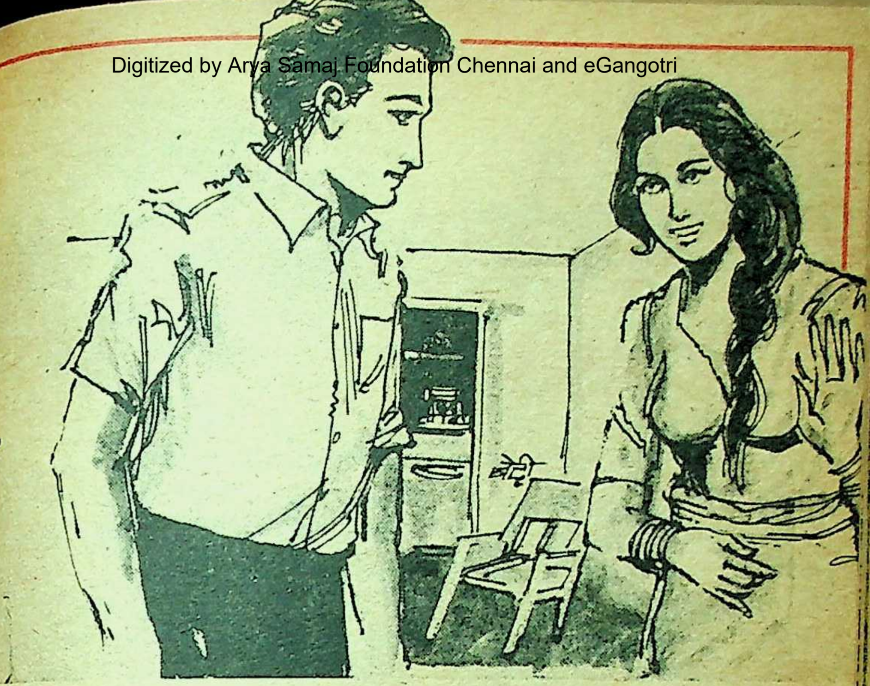

घर बसाने को व्यर्थ का झमेला समझते हुए अल्पना ने क्षितिज से विवाह करने से इनकार कर दिया था पर ऐसा क्या हुआ कि वह उसी से विवाह करने को सहर्ष तैयार हो गई?

अल्पना का नाम, उस का चेहरा और उस की बातें उसे बारबार याद आने लगीं. उस के भीतर पलता एकांत उसे कचोटने लगा.

अल्पना से गहरी मित्रता के कारण उसे दोस्त बनाने की फुरसत ही नहीं थी. साथ ही वह परिवार वालों से भी कट सा गया था. क्योंकि परिवार वालों को अल्पना से उस का मेलजोल पसंद नहीं था. जब तक अल्पना साथ थी उसे किसी की जरूरत महसूस नहीं होती थी और जब अल्पना ने उस से किनारा किया, तब उस की ऐसी स्थिति हो गई कि न तो वह अन्य कोई मित्र बना सका और न ही घर वालों से जुड़ सका, क्योंकि पहले घर वालों का कहना था, "क्यों एक लड़की के चक्कर में अपना भविष्य खराब कर रहे हो?. पढ़ाई में दिल लगाओ."

मगर जब पढ़ाई पूरी कर के अच्छी नौकरी भी लग गई और अल्पना का साथ भी छूट गया तो भी घर वालों के रवैए में ज्यादा फर्क नहीं आया. अब वे लोग कहने लगे, "क्यों उस लड़की की याद में उम्र खराब कर रहे हो, पढ़लिख लिए, नौकरी भी मिल गई अब शादी कर लो."

शादी के लिए तो उस के सहयोगी और थोड़ी सी जानपहचान वाले भी उस से अकसर पूछने लगते, "आप अकेले क्यों रहते हैं? शादी क्यों नहीं कर लेते?"

पर वह इस प्रकार की बातों से ऊब जाता. आखिर वह किसकिस को बताए कि जिस लड़की से वह बचपन से प्यार करता है और शादी करना चाहता है, उसे शादी में ही कोई दिलचस्पी नहीं है. पर उस स्वयं को अल्पना के अलावा और किसी से शादी करने में कोई दिलचस्पी नहीं है. आखिर वह किसी अन्य लड़की से प्यार कैसे कर सकता था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वह अल्पना पर बेवफाई या धोखा देने का इलजाम भी नहीं लगा सकती, क्योंकि

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्पना के विचार ही कुछ ऐसे थे. एक बार एक बढ़िया रेस्तोरां में चाय पीते हुए उस ने अल्पना से पूछा था, ''अल्पना, हम दोनों अपने पांवों पर खड़े हो गए हैं, अब हमें आपस में शादी कर लेनी चाहिए.''

''शादी,'' अल्पना चौंक पड़ी थी, ''मगर मेरा तो शादी करने का इरादा ही नहीं है.''

''क्यों, क्या तुम्हारा दिल नहीं चाहता कि तुम्हारा भी अपना एक घर हो, जहां हमतुम दोनों इकट्ठे बैठें, भविष्य के सपने बुनें और...''

''मैं इस प्रकार सपने देखने में समय नहीं गंवाना चाहती. मैं यथार्थवादी हूं. मैं हमेशा तुम से हमउम्र और हमखयाल दोस्त की हैसियत से मिलती रही हूं. शादीवादी का खयाल तो कभी मेरे दिल में आया ही नहीं. मैं भावुकता से हमेशा बचती हूं. इसी लिए अभी तक प्यारव्यार के चक्कर में नहीं पड़ी हूं. मुझे ये सारे झमेले अटपटे लगते हैं, मैं इन में कभी नहीं पड़ूंगी.''

''मगर क्यों?''

''क्योंकि मेरे खयाल में प्यार या शादी जीवन की अनिवार्यताएं नहीं हैं. और फिर घर बसा कर मैं ऊबना नहीं चाहती. वही घिसापिटा रटारटाया कार्यक्रम... देखो, उन मेजों की ओर वहां जो लोग बैठे हैं न, वे सब अपने घर की घुटन से ऊब कर यहां आए हैं. क्या इस से यह साबित नहीं होता कि कोई माहौल या सपनों का संसार कितना भी रंगीन और खुशनुमा क्यों न हो, एक न एक दिन जरूर उबाऊ हो जाता है.''

''लेकिन तब, जब उसे एक ही ढर्रे पर चलने दिया जाए. पर अगर उस में नवीनता लाते रहें तो घर अच्छा लगता है.''

''लेकिन घर में नवीनता कैसे लाएंगे?'' अल्पना ने मुसकरा कर पूछा, ''शादी के बाद प्यार के एकदो चक्कर और चला कर?''

''नहीं,'' क्षितिज खिसिया कर बोला.

''तो फिर कैसे?'' अल्पना ने पूछा.

''एकदूसरे को और ज्यादा चाह कर, एकदूसरे को और ज्यादा समझ कर, जीवन को एक व्यापक दृष्टिकोण से देख कर, जीवन को दिलचस्प ढंग से जीने के प्रयास कर के?'' क्षितिज ने समझाते हुए कहा.

''ये सब सोचने की ही बातें होती हैं क्षितिज, व्यवहार में ये सब करना मुमकिन नहीं है.''

''तो इस का मतलब क्या मैं यह समझूं कि जो लोग शादी करते हैं वे मूर्ख होते हैं?''

''सभी तो मूर्ख नहीं होते, सिर्फ वे लोग मूर्ख कहे जा सकते हैं जो शादी के लिए मानसिक रूप से तैयार हुए बगैर शादी कर लेते हैं. और लड़कियों को तो शादी तभी करनी चाहिए जब कि वे अपना व्यक्तित्व लुप्त करने को तैयार हों.''

''कैसी बातें करती हो अल्पना, शादी के बाद व्यक्तित्व लुप्त होता है या व्यक्तित्व का विकास होता है?'' क्षितिज ने झुंझला कर पूछा.

''वे पुराने जमाने की बातें हैं जब नारी काफी पिछड़ी हुई थी. तब पति मैट्रिक पास बीवी को बी.ए. पास करवा कर उस के व्यक्तित्व का विकास करता था. लेकिन आजकल... अब तुम ही बताओ, तुम्हारी मेरी शिक्षा और आमदनी तकरीबन बराबर है, अब तुम मेरे व्यक्तित्व का और क्या विकास करोगे?''

''व्यक्तित्व का विकास केवल ज्यादा पढ़ाईलिखाई और ज्यादा कमाने से ही नहीं होता, कुशल गृहिणी और आदर्श मां बनने से भी होता है.''

''मगर यह सब बनने के लिए मुझे अपनी नौकरी और भावी तरक्की की बलि देनी होगी. आजकल मैं फ्रैंच भाषा सीख रही हूं और भी कई भाषाएं, ललित कलाएं सीखने का मेरा विचार है. शादी के बाद तो यह सब मुमकिन नहीं हो सकेगा. फिर तो बच्चे और घरेलू समस्याएं, व्यस्तताएं.'' अल्पना ने कहा.

''मगर एक दिन जब तुम्हारे सब शौक पूरे हो जाएंगे तब क्या करोगी?'' क्षितिज ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोशनी

स्याह अंधेरों में
घिर गए हैं हम,
अब नजर आती नहीं
है रोशनी.

—सुरभि पांडेय

पूछा.

''सीखने को जीवन में बहुत कुछ है क्षितिज, इस के लिए तो सारा जीवन भी कम है.'' अल्पना हंसी और आगे बोली, ''फिलहाल तो मेरा इरादा शादी करने का है ही नहीं.''

अल्पना के उत्तर के बाद भी क्षितिज की आस नहीं टूटी थी, क्योंकि अल्पना ने अपने वाक्य में 'फिलहाल' शब्द कहा था 'कभी नहीं' नहीं.

इस बातचीत के कुछ ही दिनों बाद अल्पना का तबादला हो गया था. क्षितिज ने सुना था कि अल्पना ने तबादला कोशिश कर के करवाया था. फिर भी उस की आंखों में सिवा अल्पना की तसवीर के और किसी की तसवीर उभरती ही नहीं थी.

उस दिन भरत के घर बहुत चहलपहल थी. घर में भीतर घुसते ही उस ने शुभा के साथ मेहमानों की आवभगत करती अल्पना को देखा. उस के कदम यकायक रुके, पर साहस कर के वह आगे बढ़ गया. वह अपनी घबराहट पर काबू पाने की कोशिश करता रहा. बहुत दिनों के बाद अल्पना से मिलने की उसे खुशी थी.

''अरे वाह, क्षितिज तुम, मैं तो कभी सोच नहीं सकती थी तुम यहां मिल सकते हो.'' अल्पना ने यकायक उस के सामने आ कर कहा. उस के स्वर में [illegible] था.

क्षितिज केवल उसे देखता रह गया.

''चलो, कहीं अलग बैठते हैं. इतने दिन बाद मिले हो तो कुछ बातें तो करेंगे ही.''

''मगर तुम तो मेहमानों की देखभाल कर रही हो?'' क्षितिज ने छेड़ा.

''तो क्या हुआ, बहुत लोग हैं काम करने को. मैं तो मेहमानों में किसी को पहचानती भी नहीं हूं.''

वे दोनों बाहर बरामदे में आ कर बैठ गए.

''अल्पना, तुम्हारे बैंक का तो बहुत अच्छा होस्टल है. तुम वहां क्यों नहीं ठहरीं. यहां घर में बच्चों में तुम्हें घुटन नहीं होती?'' क्षितिज ने उसे फिर छेड़ा.

''वास्तव में होस्टल में रहतेरहते तबीयत काफी उकता गई थी और जब शुभा ने अपने घर रहने का आग्रह किया तो न जाने क्यों मैं मना नहीं कर सकी. मुझे घर में रहना अच्छा लगा'' अल्पना झेंपती सी बोली.

''चलो तुम्हें घर अच्छा तो लगा, अच्छा यह बताओ तुम्हारे घर में सब कैसे हैं?''

''ठीक ही है. पर वहां सब को एक बीमारी हो गई है. सब यह कहने लगे हैं कि शादी कर लो. अब मैं घर जाते हुए भी घबराती हूं कि मांबाप, भाईबहन को क्या जवाब दूं.''

''तो शादी कर लो न.''

''मगर किस से?''

''जिस से घर वाले कहें.''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''वाह, एक बिना जानपहचान के व्यक्ति से कैसे निभेगी मेरी?''

''तो किसी जानपहचान वाले से कर लो.''

यह कह कर क्षितिज तो चुप हो गया. पर अल्पना दूर कहीं देख रही थी. वह काफी गंभीर थी.

''मुझ से करोगी शादी?''

''क्या, तुम ने अभी तक शादी नहीं की. मगर तुम तो पिछले वर्ष ही शादी करने वाले थे.''

''हां, करने वाला था, पर करी नहीं. अगर करता तो क्या तुम्हें निमंत्रण पत्र न भेजता.''

''मगर करी क्यों नहीं.''

''जब एक घर में कोई पहले से मौजूद हो तो दूसरे को कैसे लाया जा सकता है?''

''क्या मतलब?''

''जब दिल में एक बसा हो तो फिर दूसरा...''

''अच्छा, समझी. अब क्या इरादा है?''

''अब तो अकेले रहने की आदत पड़ गई है, अब अपना एकांत प्रिय लगता है.''

''अच्छा, लेकिन क्या तुम्हें अपना यह प्रिय एकांत कभीकभी एकदम खोखला और बेमानी नहीं लगता? क्या तुम्हें ऐसा कभी नहीं लगता कि कोई अपना हो, जो सुखदुख बांट सके.''

''यह बात तुम कह रही हो?'' क्षितिज ने आश्चर्य से कहा.

''हां क्षितिज, मैं अब यह महसूस करने लगी हूं,'' अल्पना धीरे से बोली.

''अरे, आप दोनों यहां बैठे क्या कर रहे हैं, चलिए भरत केक काटने वाला है,'' शुभा ने वहां आ कर कहा और उलटे पांव लौट गई.

''आज जन्म दिन भरत का है और तोहफा मिला है मुझे?'' क्षितिज ने कहा.

''क्या मतलब?'' अल्पना ने उस की आंखों में आंखें डाल कर पूछा. वह शरारत से मुसकरा रही थी. उस ने आगे कहा, ''कहां है तुम्हारा तोहफा.''

''यह रहा,'' क्षितिज ने अल्पना की ओर इशारा कर के कहा, ''तुम्हीं तो मेरा तोहफा हो.''

अल्पना आंखें झुकाए मुसकराती रही, फिर चुपचाप क्षितिज के कंधे से लग गई. वह भी क्षितिज को अपने लिए एक तोहफा ही समझ रही थी. ●

अपना पतला स्वरूप देखिए

अगर आप मोटे हैं तो यदाकदा आप के दिमाग में यह कल्पना जरूर उभरती होगी कि आप पतले होने पर कैसे लगेंगे? आप की इसी कल्पना को साकार रूप देने के लिए अमरीका ने एक ऐसे दर्पण का आविष्कार किया है जो आप को यह बता सकता है कि अगर आप पतले हो गए तो कैसे दिखेंगे?

इस दर्पण की विशेषता है कि इस का ऊपरी भाग समतल बनाया गया है जिस में आप का शरीर जैसा है वैसा ही दिखाई देता है, लेकिन इस दर्पण का निचला भाग वक्र है जिस में आप अपने पतले होने की छवि निहार सकते हैं. इस निचले हिस्से को एक बटन से अपनी इच्छानुसार नियंत्रित किया जा सकता है. अगर आप अपने और मोटे होने की कल्पना करें तो उस का साकार रूप भी यह दर्पण आप को दिखा सकता है.

यह दर्पण स्वास्थ्य केंद्रों, चिकित्सकों व मनोवैज्ञानिकों में भी काफी ख्याति पा रहा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये शिक्षक

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए एवं सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

तब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था. पढ़ाई में मेरा मन नहीं लगता था और शरारतें करने में मुझे मजा आता था.

एक दिन भौतिक शास्त्र पढ़ाते हुए हमारे नए शिक्षक ने मुझे शरारत करते हुए पकड़ लिया और सजा के तौर पर उन्होंने मुझे अपनी मोटर साइकिल साफ करने के लिए कहा.

मैं ने उन के इस दंड की शिकायत प्राचार्य से कर दी. थोड़ी देर पश्चात उन शिक्षक को प्राचार्य ने अपने कार्यालय में बुलवा लिया. उन के वार्तालाप को जब हम ने दीवार से सट कर सुना तो हमारे शिक्षक यह कहते सुनाई पड़े, ''श्रीमानजी, मानव जीवन भी तो वाहन की तरह होता है. दुर्गुणों की धूल चढ़ने से यह जीवन रूपी वाहन जल्दी खराब हो जाता है और खराब वाहन से की गई यात्रा कितनी असुविधापूर्ण होती है. शिक्षा रूपी कपड़े से इसे नियमित साफ किया जाए तो जीवन के आनंद की बात ही अलग है.''

उन की यह बात मेरी समझ में आ गई. आज मैं जो कुछ भी हूं उसी शिक्षा के फलस्वरूप हूं.

—प्रदीप मेहता **(सर्वोत्तम)**

*

पिछले वर्ष की बात है, भारत और इंगलैंड के बीच क्रिकेट टैस्ट मैच चल रहे थे. हम में से अधिकांश छात्र जेब के ट्रांजिस्टर साथ में ले कर कालिज आते थे. हमारे रसायन विज्ञान के प्राध्यापक अति विनम्र स्वभाव के हैं, अत: हम छात्रगण उन की कक्षा में पढ़ाई पर ध्यान न दे कर सारा ध्यान क्रिकेट कमेंट्री पर ही देते थे. यह सिलसिला काफी समय तक चलता रहा.

एक दिन जब क्रिकेट मैच चल रहा था, प्राध्यापक महोदय कक्षा में आए तो उन के हाथों में बड़ा सा एक रेडियो सैट था. रेडियो सैट मेज पर रख कर उन्होंने कुछ देर में उसे सेट कर के उस का स्विच आन कर दिया और कमेंट्री लगा दी. हम सभी छात्र बात समझ कर बहुत शर्मिंदा हुए.

—गोपालप्रसाद खेतान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई प्रतिभाएं

नृत्य की मुद्रा में मंजुला तिवारी.

16 वर्षीया मंजुला तिवारी एक प्रतिभाशाली कत्थक नृत्यांगना है. अल्मोड़ा निवासी मंजुला ने नौ वर्ष की अवस्था में प्रारंभिक नृत्य की शिक्षा के बाद लखनऊ स्थित भातखंडे हिंदुस्तानी संगीत महाविद्यालय में कत्थक नृत्य का विधिवत प्रशिक्षण प्राप्त किया है.

उस ने 10 साल की उम्र में नृत्य का पहला कार्यक्रम प्रस्तुत किया था.

उस ने उत्तर प्रदेश के प्रमुख महोत्सव में तीन बार कार्यक्रम दिए, जिस में उसे एक बार स्वर्ण पदक तथा एक बार रजत पदक प्राप्त हुआ.

उस ने दूरदर्शन केंद्र में उभरती प्रतिभा कलाकार कार्यक्रम में भी नृत्य के कई कार्यक्रम दिए हैं.

उस ने उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित संभागीय संगीत नृत्य प्रतियोगिता में भाग ले कर भी कई सम्मान तथा पदक प्राप्त किए है.

उस ने हाई स्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की और अब इंटरमीडिएट अंतिम वर्ष की छात्रा है.

—राकेशचंद्र मिश्र, वि. वि. प्र.

लखनऊ विश्वविद्यालय के 21 वर्षीय अनूपकुमार गुप्ता ने जिला स्तर से ले कर राष्ट्रीय स्तर तक की भारोत्तोलन प्रतियोगिताओं में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है.

उस ने दिसंबर 1977 में प्रथम बार जिला स्तर की प्रतियोगिता में भाग लिया था और प्रथम स्थान प्राप्त किया था. इस में उस ने कुल 350 पौंड भार उठाया था. दिसंबर 1979 में कानपुर में आयोजित प्रादेशिक भारोत्तोलन प्रतियोगिता में उस ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया था. 1980 में आगरा में आयोजित राज्य स्तर की भारोत्तोलन प्रतियोगिता में वह द्वितीय स्थान पर रहा था.

इस के बाद उस ने 1981 में जूनियर राष्ट्रीय भारोत्तोलन प्रतियोगिता में भाग लिया और तृतीय स्थान प्राप्त किया. 1981 में वह अंतरक्षेत्रीय भारोत्तोलन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान पर रहा.

उस ने एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि "विश्वविद्यालय वाले चाहते हैं कि मैं स्वर्ण पदक फिर लाऊं, पर वे इस ओर कोई ध्यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवा गतिविधियां

मंजुला तिवारी अपने सुभाष दीक्षित दीक्षित के साथ.

नहीं देते हैं कि मैं अभ्यास कर रहा हूं या नहीं, कर रहा हूं तो कैसे कर रहा हूं. यहां सामान भी अच्छा नहीं है फिर विश्वविद्यालय भी अकसर हडताल के कारण बंद रहता है.''

अनूप भारोत्तोलन की मुद्रा में.

उस ने एक अन्य प्रश्न के उत्तर में खेद प्रकट करते हुए कहा कि ''अच्छे खिलाड़ी खेलों में घुसी राजनीति, भाईभतीजावाद के कारण उभर कर सामने नहीं आ पाते.''

—अर्जुन कांडपाल, वि. वि. प्र.

इस वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर दिल्ली में घुड़सवारी में प्रथम आने पर जबलपुर की सीमा वर्मा को स्वर्ण पदक व विक्रम पुरस्कार प्राप्त हुआ है. यह पुरस्कार प्राप्त करने वाली वह देश की प्रथम महिला घुड़सवार है.

राजकीय होमसाइंस कालिज की बी. एस. एसी. की

उसे वीरता और साहसपूर्ण कार्य करने के लिए झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से काफी प्रेरणा मिली है. घुड़सवारी के अलावा वह बैडमिंटन और वालीबाल भी खूब खेलती है, वालीबाल में उस ने अंतरविश्वविद्यालय टीम का प्रतिनिधित्व किया है. इस के अतिरिक्त वह भरत नाट्यम नृत्य में भी रुचि रखती है.

वह एक मेधावी छात्रा है, अब तक की परीक्षाओं में वह प्रथम आई है.

उस की माताजी होमसाईंस कालिज में खेलकूद अधिकारी हैं. वह वालीबाल में देश का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं. उस के पिताजी (जो अब जीवित नहीं हैं) राष्ट्रीय कैडेट कोर में मेजर थे और अपने समय के प्रसिद्ध खिलाड़ी थे.

सीमा की छोटी बहन दीपा मध्य प्रदेश महिला वालाबाल टीम की महत्त्वपूर्ण खिलाड़ी है.

घुड़सवारी के प्रशिक्षण के दौरान ऐसे कई कटु अनुभव हुए जब उस ने स्वयं को

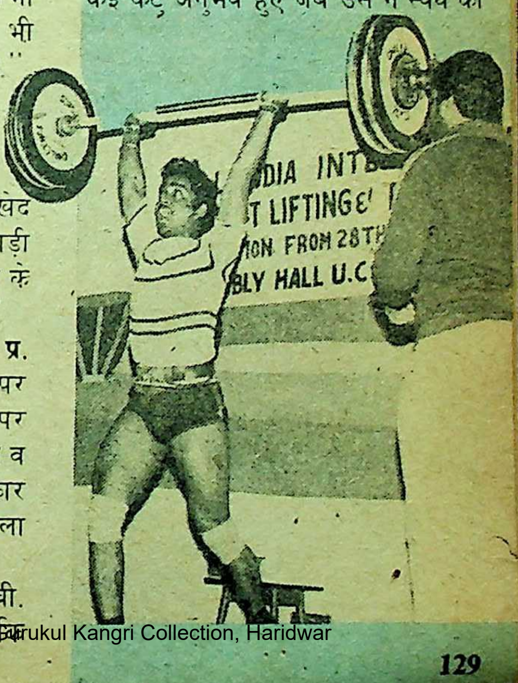

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बहुत ही निरुत्साहित महसूस किया.

"मैं पहले ही दिन जिस घोड़े पर बैठी वह टस से मस नहीं हुआ, जब कि अन्य सब लड़कियों के घोड़े दौड़ पड़े. मैं शर्मिंदा सी हो कर घुड़सवार बनने की इच्छा त्याग कर घर आ गई, पर जब मां के कहने पर दोबारा गई तो पता लगा कि वह घोड़ा अड़ियल था," उस ने बताया.

उस का कहना है कि "घोड़े को काबू में रखने के लिए उस से मनुष्य जैसा स्नेह करना चाहिए. सुबह जाओ तो 'गुडमानिंग', 'हाऊ डू यू डू' जैसे वाक्य कह कर उसे दुलारना, पुचकारना चाहिए. उस के नाराज होने पर उसे मनाना भी चाहिए."

—ओमप्रकाश संघेंद्र, वि.वि.प्र.

स्वर्ण पदक व विक्रम पुरस्कार विजेता सीमा वर्मा (बांए) **व घुड़सवारी के एक दृश्य में** (नीचे).

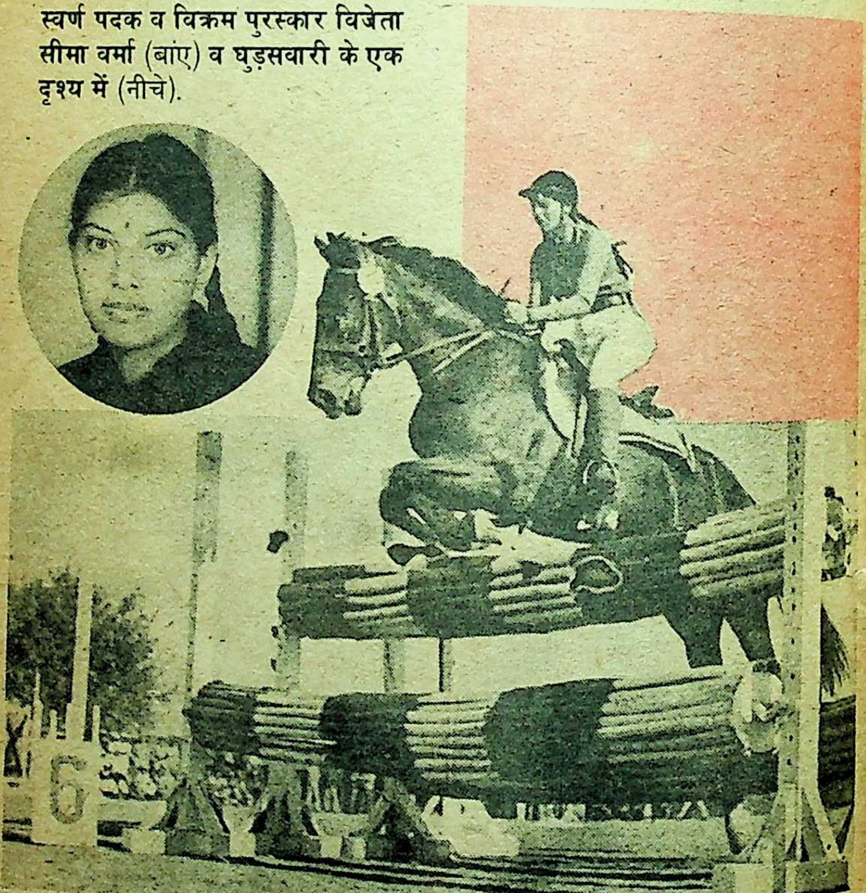

कार रैली

13 सितंबर, 1982 को कानपुर जेसीज की ओर से कानपुर में पहली बार एक कार रैली का आयोजन किया गया. यह रैली शहर के मुख्य मार्ग-माल रोड स्थित नानाराव पार्क से प्रारंभ हो कर नगर के विभिन्न मार्गों से होती हुई नानाराव पार्क में ही समाप्त हुई. 44 किलोमीटर लंबी इस दिलचस्प कार रैली में कुल 28 कारें थीं.

मजे की बात यह है कि नगर महापालिका की कृपा से शहर की सड़कों पर सीवर जाम थे और इस बीच हुई भीषण वर्षा से शहर के मुख्य मार्गों पर भी ढाईढाई फीट तक पानी भरा हुआ था. कानपुर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार रैली में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले शरद सिहानिया (बीच में) **अपने सहयोगियों के साथ.**

पालीटेकनिक के सामने ग्रांड ट्रंक रोड पर पानी भरे होने के कारण रैली की आठ कारें बंद हो गईं. कुछ अन्य कारें पानी के ही कारण कई जगहों पर चल सकने में असमर्थ रहीं.

इस कार रैली में शरद सिहानिया को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ. शरद के साथ उन की एंबेसेडर कार में संजीव झुनझुनवाला तथा प्रहलाद सूतवाला सहयोगियों के रूप में थे.

शरद सिहानिया को एक भी पेनल्टी अंक नहीं मिला. दूसरा स्थान तीन प्रतियोगियों—संजय गुप्ता (एंबेसेडर कार में), विकास चतुर्वेदी (एंबेसेडर कार में) व बलबीर सिंह (फिएट कार में) को संयुक्त रूप से मिला. इन सब ने तीनतीन पेनल्टी अंक प्राप्त किए.

चार पेनल्टी अंक पाने वाले विनीत चंद्रा तीसरे स्थान पर रहे.

प्रतियोगिता की समाप्ति पर हुए पारितोषिक वितरण समारोह में सब से अच्छे रखरखाव का पुरस्कार पंकज अग्निहोत्री की फिएट कार को तथा सब से पुरानी कार का पुरस्कार श्री जौहर की शेवरलेट 1927 माडल कार को मिला. इस के अतिरिक्त मंजु सिहानिया को सर्वश्रेष्ठ महिला चालक का पुरस्कार प्राप्त हुआ.

कार रैली में प्रथम पुरस्कार विजेता शरद सिहानिया 27 वर्षीय नवयुवक हैं. वह भारत के चौथे नंबर के उद्योगपति सिहानिया परिवार के हैं. उन्होंने कार चलाना अल्पायु में ही, अपने घर में सीखा.

कानपुर की सड़कों से खिन्न हो कर उन्होंने कहा, "वास्तव में कानपुर की सड़कों पर कार चलाना अपने हाथपैर तुड़वाना और अपनी गाड़ी को बरबाद करना है..."

—अंकुर, वि. वि. प्र.

फुटबाल प्रतियोगिता

उज्जैन के माधव कालिज प्रांगण में अंतरमहाविद्यालय फुटबाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

इस प्रतियोगिता की उस समय बहुत ही दुर्दशा हुई, जब विश्वविद्यालय के 44 कालिजों में से सिर्फ नौ ने अपनी स्वीकृति दी. छः कालिजों ने ही प्रतियोगिता में भाग लिया. दो टीमें बिना कोई मैच खेले ही सेमीफाइनल में पहुंच गईं.

फाइनल मैच में माधव कालिज ने नीमच को एक गोल से हरा कर प्रतियोगिता जीत ली.

—ललित जैन, वि. वि. प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुटबाल मैच में विजेता टीम पुरस्कार प्राप्त करते हुए.

ग्राफिक प्रदर्शनी

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के दृश्य कला संकाय में, चिली के ग्राफिक कलाकार विक्टर झेमिनास वान विलिंगमैन के 'ग्राफिक कला प्रिंट्स' की प्रदर्शनी आयोजित की गई.

प्रदर्शनी में श्री विलिंगमैन द्वारा निर्मित विभिन्न बड़े आकारों की 12 कलाकृतियां प्रदर्शित की गईं. इन का प्रत्येक प्रिंट्स लिथोग्राफ तथा मिश्रित माध्यमों के द्वारा बनाया गया है. साथ ही इन की कुछ रंगीन कृतियां भी हैं. इन में 'ब्लू सर्कल', 'होमिनिजेशन', 'क्लाउड्स' और' 'थंडर एंड रेन' शीर्षक की कलाकृतियां उल्लेखनीय हैं.

श्री विलिंगमैन की प्रारंभिक शिक्षा चिली में हुई, उन्होंने ग्राफिक कला की उच्च शिक्षा अमरीका में पाई.

उन्होंने जापान, स्पेन, कोरिया एवं नार्वे आदि देशों में आयोजित अंतरराष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों में भाग लिया है.

—अमिता वर्मा, वि.वि.प्र.

विलिंगमैन की एक कृति 'ब्लू सर्कल'.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

50 लाख बच्चों की प्यारी
रंगीन पत्रिका

चंपक

9 भाषाओं में

हर पक्ष चंपक में प्रकाशित मनोरंजन व शिक्षाप्रद कहानियां, कविताएं, पहेलियां, चुटकले और लेख बच्चों को नई जानकारी देते हैं, उन का चरित्र संवारते हैं और नए स्वरूप में ढालते हैं.

चंपक, पंजाबी और बंगाली भाषा के अलावा अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगु और मलयालम भाषाओं में भी प्रकाशित होता है.

अपने बच्चों को चंपक लेकर दें – उन का मनोरंजन भी करें और भविष्य भी संवारें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

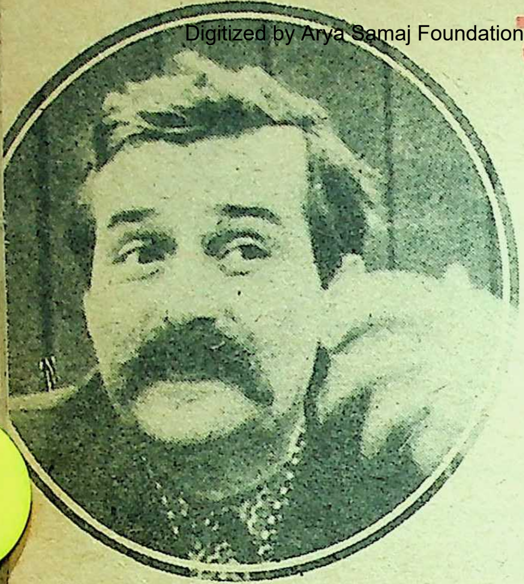

तानाशाही से संघर्ष की अभिनव पोलिश शैली

लेख • विनोदचंद्र पांडेय

पोलैंड में कम्यूनिस्ट शासन के अंदर पनप रहे भ्रष्टाचार, कमरतोड़ महंगाई, रोजमर्रा की वस्तुओं के अभाव व सरकारी तंत्र की अक्षमता के विरुद्ध जब अगस्त, 1980 में वहां की आम जनता एक साधारण से बेरोजगार इलेक्ट्रिशियन लेक वालेसा के नेतृत्व में उठ खड़ी हुई तो पहले तो वहां की सरकार व दुनिया ने यही समझा कि यह भावुक पोलैंडवासियों द्वारा भावुकता में उठाया गया एक कदम है. जैसे भावुकता में किया गया कार्य प्रायः अल्पजीवी होता है, वैसे ही पोलैंड की जनता का अपने देश की कम्यूनिस्ट सरकार के विरोध में यह 'विद्रोह' भी अल्पजीवी होगा.

किंतु जैसेजैसे समय बीतता गया, दुनिया की समझ में आने लगा कि पोलैंड का जन आंदोलन ठोस जमीन पर खड़ा है. इस में भावुकता का पुट तो है ही, साथ ही यथार्थता का बोध भी है. विचार व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्षधर संसार के करोड़ों लोगों की निगाहें पोलैंड की ओर केंद्रित होने लगीं. किंतु इस के साथ ही रूस व उस के प्रभुत्व वाले पूर्वी यूरोप के कम्यूनिस्ट देश में विचार स्वातंत्र्य के लिए आंदोलन होना उन की कल्पना के परे है. ऐसे आंदोलनों को वे अपने अस्तित्व के लिए खतरा जो मानते हैं.

पोलैंड में लेक वालेसा के नेतृत्व में अगस्त, 1980 में प्रारंभ हुआ 'सोलिडेरिटी' आंदोलन शीघ्र ही जनआंदोलन बन गया. 'सोलिडेरिटी' के झंडे तले पोलैंड के तीन चौथाई से अधिक औद्योगिक व खेतिहर मजदूर तथा छात्र संगठित हो गए. कम्यूनिस्ट पार्टी के नीचे से मजदूरों, किसानों व छात्रों का आधार खिसक गया. उन के छात्र, मजदूर व किसान संगठन 'सोलिडेरिटी' के सामने बौनों से भी छोटे दिखाई पड़ने लगे.

'दुनिया के मजदूरो एक हो जाओ' का तोते की तरह रट लगाने वाले कम्यूनिस्टों द्वारा शासित एक देश के अंदर ही जब मजदूर सही मानी में लेक वालेसा के नेतृत्व में 'सोलिडेरिटी' के तहत संगठित हो गए तो पोलैंड के कम्यूनिस्ट सत्ताशाहों व पूर्वी यूरोप के देशों को अपनी जमींदारी समझने वाले रूस के नेताओं की नींद हराम हो गई. उन्हें लगने लगा कि पोलैंड अब उन के हाथ से जाता. अतः ऐसी स्थिति में तानाशाह जो भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

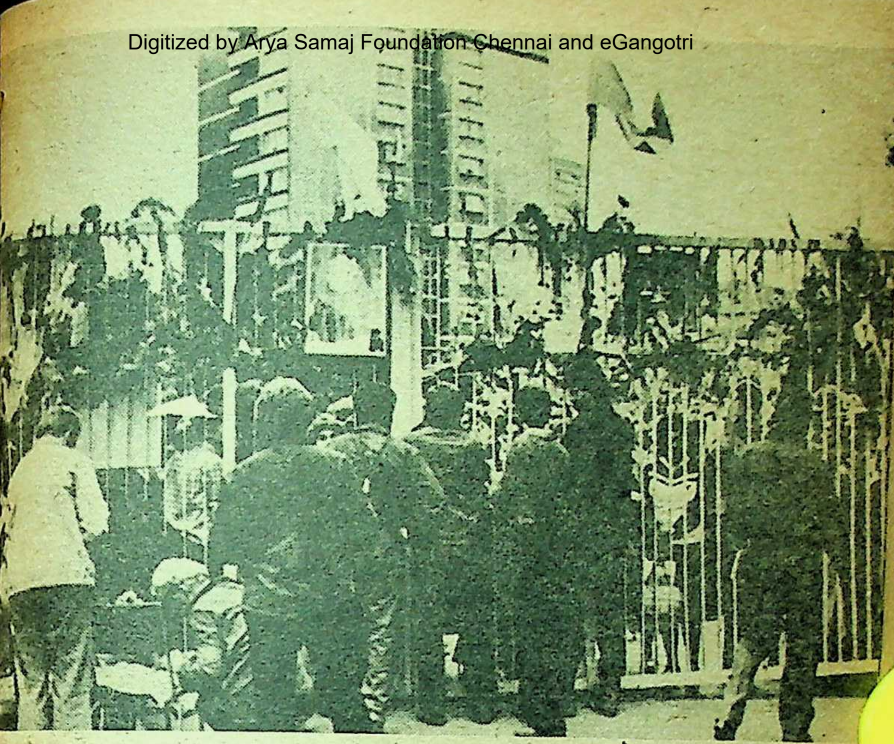

मजदूरों द्वारा काम का बहिष्कार. कम्यूनिस्ट सत्ताशाहों के खिलाफ विद्रोह?

कदम उठाता है, वैसा ही कदम पोलैंड के कम्यूनिस्ट तानाशाहों ने भी उठाया.

13 दिसंबर, 1981 को पूरे पोलैंड में मार्शल ला लागू कर दिया गया. 12-13 दिसंबर की रात्रि को लेक वालेसा सहित 'सोलिडेरिटी' के हजारों नेताओं व कार्यकर्ताओं तथा उन बुद्धिजीवियों को, जो कम्यूनिस्ट शासन में पनपे भ्रष्टाचार व कमरतोड़ महंगाई आदि के विरोध में खुल कर बोलने लगे थे, गिरफ्तार कर जेल के सींखचों के पीछे धकेल दिया गया. यह सब इतनी फुरती व सख्ती से किया गया कि दुनिया स्तब्ध रह गई. एक बार यह लगा कि पोलैंड में स्वतंत्रता की मशाल फौजी टैंकों के तले कुचल कर हमेशा के लिए बुझा दी गई है.

> पोलैंड में कम्यूनिस्ट शासन के भीतर पनप रहे मजदूर असंतोष ने आज यह साबित कर दिया है कि स्वतंत्रता की चाह को मिटा पाना मामूली बात नहीं है. पोलैंड की इस भीतरी लड़ाई का अंत क्या होगा.

स्वतंत्रता की चाह

किंतु कुछ ही सप्ताहों में यह स्पष्ट हो गया कि स्वतंत्रता की चाह को मिटा पाना दुनिया के शक्तिशाली से शक्तिशाली बादशाह या तानाशाह के लिए भी संभव नहीं है. स्वतंत्रता की चाह उस ज्वालामुखी के समान है, जिस की गरमी को समुद्र का पानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी ठंडा नहीं कर सकता. वह समुद्र के अथाह पानी के बीच से भी फूट पड़ता है.

13 दिसंबर, 1981 को मार्शल ला लगने के कुछ ही समय बाद पोलैंड की राजधानी वारसा में एक 30 वर्षीय साधारण से व्यक्ति ने एक पत्रकार को जो कुछ कहा, वह पूरे देश के जनमानस में उमड़ रहे रोष का प्रतीक था. "उन को (पोलैंड के कम्यूनिस्ट शासकों को) यह समझना चाहिए कि वे हमारी इच्छाओं का दमन नहीं कर सकते. हम निश्चित ही फिर वहीं होंगे जहां मार्शल ला लगने के पूर्व थे, भले ही इस में चारपांच साल क्यों न लग जाएं." यद्यपि यह एक युवक का कथन था, किंतु इस में पूरे पोलैंड की जनता की आकांक्षा प्रतिध्वनित हो रही थी.

चारपांच साल तो दूर रहे, चारपांच महीनों में ही पोलैंड की स्वातंत्र्य प्रिय जनता ने अपने देश के मार्शल ला शासकों को यह जताना शुरू कर दिया कि उन की स्वतंत्रता की चाह को वे टैंकों के तले कुचल कर समाप्त नहीं कर सकते. लोगों ने ऐसेऐसे अभिनव तरीकों से मार्शल ला का उल्लंघन कर अपना रोष प्रकट करना शुरू किया कि वहां के कम्यूनिस्ट सैनिक शासक खिसिया गए और आखिरकार उन्हें जुलाई में मार्शल ला में ढील देनी पड़ी.

विरोध का अनूठा तरीका

मार्शल ला लागू होने के बाद पोलैंड के रेडियो व टेलीविजन का एक मात्र काम सरकारी प्रचार करना हो गया था. इस से पूर्व इन प्रचार माध्यमों पर 'सोलिडेरिटी' की गतिविधियों के समाचार कभीकभार आ जाया करते थे. किंतु अब तो इस का प्रश्न ही नहीं उठता था. देशवासी सरकारी प्रचार सुनतेसुनते ऊब गए थे. इस वर्ष मार्च के महीने में एक दिन वारसा से 150 किलोमीटर दूर स्थित औद्योगिक नगर स्विडनिक में शाम को 7.30 बजे जब टेलीविजन पर समाचार आने शुरू हुए तो एक मजदूर ने समाचारों के नाम पर होने वाला सरकारी प्रचार सुनने की अपेक्षा घूमना बेहतर समझा. ठीक 7.30 बजे उस ने अपना टेलीविजन बंद किया और घर से बाहर घूमने निकल गया.

धीरेधीरे ऐसे घूमने वालों की संख्या बढ़ने लगी और कुछ ही दिनों में सायं 7.30 बजे समाचारों के आने के समय टेलीविजन बंद करने वालों की संख्या 30 हजार तक पहुंच गई. सरकारी निरंकुशता के विरोध के इस अनोखे तरीके को 'न्यूजवाक' का नाम दिया गया. नित्य सायं 7.30 बजे स्विडनिक शहर में उमड़ने वाली हजारों की इस भीड़ से घबरा कर वहां के अधिकारियों ने शाम सात बजे से पूरे शहर में कर्फ्यू लगाना शुरू कर दिया.

'न्यूजवाक' करने वाले लोग समझ गए कि वे जो बात सरकारी अधिकारियों तक पहुंचाना चाहते थे, वह उन तक पहुंच गई है. सात बजे का कर्फ्यू इसी का सबूत था. अब यह 'न्यूजवाक' शाम पांच बजे होना शुरू हो गया. पांच बजे रेडियो पर समाचार आने का समय होता था. धीरेधीरे यह 'न्यूजवाक' राजधानी वारसा सहित पोलैंड के कई नगरों में होने लगा.

विरोध करने के नाटकीय और मनोवैज्ञानिक तरीकों में माहिर पोलैंडवासियों ने मार्शल ला व अपनी स्वतंत्रता छीने जाने के विरोध में 'न्यूजवाक' जैसे अभिनव तरीके तो अपनाए ही, साथ ही प्रचलित तरीकों को भी नहीं छोड़ा.

लेक वालेसा और उन का बैज

कुछ ने स्थायी तौर पर काले कपड़े पहनने शुरू कर दिए. बहुतों ने काला फीता बांध कर घर से बाहर निकलना शुरू कर दिया. 'सोलिडेरिटी' का नेता लेक वालेसा जिस लाल व सफेद जमीन पर बने ईसा मसीह की कुंआरी मां के काले चित्र वाले बैज को अपने सीने पर लगाता था, उस बैज को हजारों देशवासियों ने लगाना शुरू कर दिया. यह बैज व लेक वालेसा पोलैंड में एकदूसरे के पर्याय बन गए हैं.

जैसेजैसे यह बैज धारण करने वालों की संख्या बढ़ने लगी, सरकारी अधिकारियों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोलैंड की युवा पीढ़ी : रूसी कब्जे से मुक्ति की चाह.

समझ में आने लगा कि ऐसा कर के देशवासी क्या कहना चाहते हैं. वे इस मौन विरोध के खिलाफ कोई कानूनी कारवाई नहीं कर सकते थे. अतः खिसिया कर यह घोषणा की गई कि इस बैज की लाल व सफेद जमीन पोलैंड के राष्ट्रीय झंडे की नकल है और इस तरह इस बैज को धारण करना राष्ट्रीय झंडे के अपमान के बराबर है, अतः जो भी इस बैज को धारण करेगा, उस पर लगभग 600 रुपए जुरमाना किया जाएगा.

जनता का यह विरोध यहीं तक सीमित नहीं रहा. नाटक दर्शकों ने सरकार के प्रति अपना विरोध जता और खुल कर प्रकट किया, किंतु वह भी अपनी तरह की एक निराली शैली में था. किसी नाटक या संगीत के कार्यक्रम में जैसे ही कोई ऐसा कलाकार या संगीतकार मंच पर आता, जिस ने मार्शल ला लगाए जाने का समर्थन किया था या सोवियत पोलैंड मैत्री संघ के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लिया था, दर्शक भारी शोर मचाने लगते और तब तक शोर मचाते रहते जब तक कि वह मंच छोड़ कर परदे के पीछे नहीं चला जाता था.

बहुत से कलाकारों ने भी सरकार की नीतियों के विरोध में टेलीविजन व रेडियो कार्यक्रमों में हिस्सा लेना बंद कर दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्र भी किसी से पीछे रहने वाले नहीं थे. उन्होंने मार्शल ला व सोवियत रूस का अपने तरीके से विरोध करना प्रारंभ कर दिया. पोलैंड में छात्रों के लिए सैनिक विज्ञान का अध्ययन अनिवार्य है. वारसा विश्वविद्यालय में सैनिक विज्ञान की कक्षाओं में जबजब सोवियत रूस का नाम आता, छात्र जोरजोर से शोर मचाने लगते. पोलैंड की युवा पीढ़ी के लिए सोवियत रूस साम्राज्यवाद का प्रतीक बन गया है, जो येनकेन प्रकारेण उन के देश को अपने कब्जे व प्रभाव में रखना चाहता है.

मार्शल ला लागू होने के साढ़े चार महीनों तक पोलैंडवासी अपनी स्वतंत्रता वापस पाने के लिए सांकेतिक तरीकों से विरोध प्रदर्शन व संघर्ष करते रहे. किंतु इस से उन को संतोष नहीं था. अतः 'सोलिडेरिटी' के भूमिगत नेताओं ने 'मई दिवस' के उपलक्ष्य में आयोजित की जाने वाली सरकारी परेड के समानांतर एक विशाल प्रदर्शन आयोजित करने का निश्चय किया. गुप्त रूप से छपने व प्रसारित होने वाले बुलेटिनों में इस प्रदर्शन की सूचना प्रकाशित की गई और उसे घरघर पहुंचाया गया.

1 मई, को वारसा के विशाल ग्राइजबोस्की चौक में जब ढाई लाख लोग सरकारी परेड देखने व नेताओं के भाषण सुनने के लिए इकट्ठे होने प्रारंभ हो रहे थे, ठीक उसी समय पांच किलोमीटर दूर पुराने वारसा में एक सड़क पर भी लोग इकट्ठे होने शुरू हो गए थे. सभी दिशाओं से आते लोगों की संख्या देखतेदेखते 20 हजार से ऊपर पहुंच गई. इन में से अधिकांश कोई न कोई धार्मिक चिह्न अपने शरीर पर धारण किए हुए थे. ये सभी लोग 'सोलिडेरिटी' के आह्वान पर खुल्लमखुल्ला विरोध प्रदर्शन करने के लिए एकत्र हुए थे. सरकार की कोपदृष्टि व पुलिस की गोली, लाठी व डंडों का उन्हें भय नहीं था.

इन प्रदर्शनकारियों ने सरकार विरोधी गगनभेदी नारे लगाए और कम्यूनिस्ट पार्टी का झंडा तारतार कर दिया. 'लेक वालेसा को रिहा करो,' 'मार्शल ला प्रशासक मुर्दाबाद,' 'रोटी और आजादी ले के रहेंगे,' 'अंतिम विजय हमारी है' आदि नारे लगाते हुए इन प्रदर्शनकारियों ने वारसा की सड़कों का चक्कर लगाया. एक स्थान पर तो सरकारी परेड व इन प्रदर्शनकारियों के बीच कुछ मीटर का ही अंतर रह गया था. जिस समय ये प्रदर्शनकारी विसर्जित हुए, उस समय उन की संख्या 60 हजार तक पहुंच गई थी.

उधर 'न्यूजवाक' के लिए प्रसिद्ध स्विडनिक नगर के निवासियों ने मई दिवस की परेड ही नहीं होने दी. उन्होंने धमकी दी कि यदि मई दिवस की परेड आयोजित की गई तो पूरे नगरवासी उस को देखने के लिए नंगे पैर ही अपने घरों से बाहर निकलेंगे. स्विडनिक के स्थानीय प्रशासक इस धमकी से भयभीत हो गए और उन्होंने मई दिवस को परेड आयोजित न करना ही उचित समझा.

पोलैंड में विरोध प्रदर्शन का सिलसिला आज भी जारी है. सरकार का विरोध करने वाले छात्रों को स्कूल से निष्कासित और मजदूरों को उन की नौकरी से बर्खास्त कर दिया जाता है. ऐसे बेरोजगार लोगों की मदद के लिए पोलैंड भर में धार्मिक स्थानों पर लोग नियमित रूप से खाना, कपड़ा व अन्य न्यूनतम आवश्यकताओं की वस्तुएं पहुंचाते हैं. यहां से नौकरियों से बर्खास्त किए गए लोग व जेलों में बंद 'सोलिडेरिटी' के नेताओं, कार्यकर्ताओं और बुद्धिजीवियों के परिवारों के लोग खाना आदि ले जाते हैं और अपना जीवनयापन करते हैं.

सरकार व जनता के बीच यह संघर्ष समाप्त होने का नाम लेता दिखाई नहीं पड़ रहा है. पोलैंडवासी 'सोलिडेरिटी' पर से पूरी तरह प्रतिबंध समाप्त करने, लेक वालेसा सहित बंदियों की बिना शर्त रिहाई तथा अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता से कम किसी भी बात को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं. जब तक वे इन को पा नहीं लेते, उन का संघर्ष जारी रहेगा. उन की इन मांगों की पूर्ति का अर्थ होगा पोलैंड से कम्यूनिस्ट शासन का अंत. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्दाबाद,'
'अंतिम
हुए इन
ड़कों का
सरकारी
ीच कुछ
समय ये
 उनकी

प्रसिद्ध
ई दिवस
मकी दी
की गई
लिए नंगे
नकलेंगे.
मकी से
वस को
समझा.
लसिला
ध करने
त और
स्त कर
ी मदद
र लोग
अन्य
पहुंचाते
ए लोग
ताओं,
ारों के
अपना

संघर्ष
हीं पड़
से पूरी
ालेसा
ई तथा
किसी
र नहीं
उन का
ी पूर्ति
सन का
•

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनिया भर की

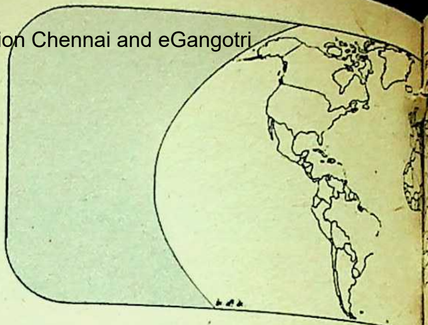

ब्रिटेन में शराबी बढ़ रहे हैं

ब्रिटेन की एक ब्रेवर्स सोसायटी के वार्षिक सर्वेक्षण से इस बात का रहस्योद्‌घाटन हुआ है कि ब्रिटेन में शराबियों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है. यह देश यूरोप के देशों में शराब की सब से अधिक खपत के लिए अब प्रसिद्ध हो गया है. एक अनुमान के अनुसार यहां के शराबी हर वर्ष शराब पर 63,000 लाख पौंड खर्च करते हैं.

ब्रिटेन का बीयर पीने वाले देशों में नौवां, स्प्रिट पीने वाले देशों में 25वां और शराब पीने वाले देशों में 27वां स्थान है.

बीयर पीने वाले देशों में प्रथम बाजी मारी है पश्चिमी जरमनी ने, जहां हर साल 256 गैलन बीयर पी जाती है. शराब की खपत वाले देशों में चेकोस्लावाकिया, पूर्वी जरमनी, आस्ट्रेलिया, बेल्जियम और डेनमार्क का भी नाम आता है. यहां भी लोग खूब शराब पीते हैं.

ब्रिटेन की सरकार को केवल बीयर पर कर के रूप में 24,500 लाख पौंड प्रति वर्ष की आय होती है. लेकिन पिछले कुछ वर्षों से अब यहां बीयर पीने वालों की संख्या घट रही है. यहां 1981 में पिछले वर्ष 206 गैलन के स्थान पर 196 गैलन बीयर का इस्तेमाल हुआ.

स्प्रिट पीने वालों में पोलैंड सब से आगे है. पोलैंडवासियों को स्प्रिट सब से सस्ती और सब से अच्छा नशा करने वाली शराब लगती है. रूस में भी वोदका शराब खूब पी जाती है. रूस के सरकारी डिपार्टमेंटल स्टोरों पर वोदका हर समय उपलब्ध रहती है जब कि आवश्यक वस्तुएं दिक्कत से मिलती हैं.

परेशानी समलैंगिकों की

अमरीका के समलैंगिक समर्थकों में वहां हाल में हुए एक मुकदमे के फैसले से खलबली मची हुई है.

टैक्सास में रह रहे करीब 15 लाख समलैंगिकों को वही अधिकार मिले हुए थे जो विवाहित स्त्रीपुरुषों को होते हैं. पर टैक्सास की एक अदालत ने सन 1973 में बने कानून में संशोधन कर के अब समलैंगिकता को कानूनन दंडनीय अपराध घोषित कर दिया है. अब यदि दो पुरुष आपस में समलैंगिक क्रिया करते पकड़े जाएंगे तो उन को 200 डालर का जुरमाना अदा करना पड़ेगा.

इस फैसले से अमरीका के अनेक समलैंगिक समर्थक संगठनों में रोष की लहर फैल गई है और उन्होंने इस फैसले को उच्च अदालत में चुनौती देने का निर्णय किया है.

एक अनुमान के अनुसार केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

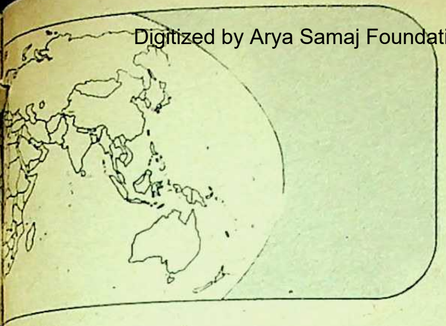

अमरीका में इस समय 10 लाख समलैंगिक समर्थक लोग हैं. पिछले दिनों अमरीका में हुए इन के सम्मेलन में इस बात की भी मांग की गई कि संयुक्त राष्ट्र संघ वर्ष 1983 को समलैंगिक वर्ष घोषित करे और इस विचारधारा के प्रचारप्रसार के लिए आर्थिक सहायता भी दे.

दुश्मनी मरे हुए लोगों से

चीन के पुराने नगरों में होनान प्रांत की राजधानी काइफंग का नाम काफी प्रसिद्ध है. यहां पेड़ों से आच्छादित एक सड़क के किनारे एक खंडहर सी इमारत है जिस में चीन के भूतपूर्व राष्ट्रपति लीओ शाओ ची को कैद किया गया था और यहीं उन की रहस्यपूर्ण ढंग से मृत्यु हो गई थी. लेकिन यहां न तो उन के नाम का कोई नामपट्ट लगा है और न ही उन की कब्र पर उन के बारे में कुछ लिखा हुआ है.

चीन में माओत्से तुंग के बाद दूसरे नंबर पर सब से अधिक शक्तिशाली राजनेता के रूप में विख्यात इस व्यक्ति की काइफंग के इस भवन में नवंबर, 1969 में 71 वर्ष की उम्र में मृत्यु हुई थी, पर उस समय की सरकार की निगाहों में गद्दार समझे जाने वाले इस नेता की मृत्यु को गोपनीय रखा गया.

हाल में जब 'डेली टेलीग्राफ' समाचार पत्र के संवाददाता ने इस नगर में लीओ का समाधिस्थल देखना चाहा तो उसे किसी ने भी उस के बारे में जानकारी नहीं दी. निराश हो कर जब वह वापस लौटने लगा तो उसी सड़क पर घमते हुए एक बूढ़े ने उस को वह जगह दिखलाई जहां लीओ मरा था.

यह एक पुरानी खंडहरनुमा इमारत है जिस के चौक के एक कोने में बनी एक कोठरी में लीओ ने दम तोड़ा था.

इस पुरानी इमारत का मुआयना करते हुए संवाददाता ने वहां अनेक बूढ़े व्यक्तियों को इधरउधर बैठे, अधनंगे पड़े और खांसते हुए देखा.

कहा जाता है कि चीन सरकार के उच्चाधिकारियों ने वहां के लोगों से लीओ के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी देने के लिए मना कर रखा है.

लीओ शाओ ची : राजनेता की करुण मौत.

धार्मिक अनास्था

पूर्वी एशिया में मंचूरिया और जापान के बीच एक प्रायद्वीप पर बसे कोरिया के 1948 में दो टुकड़े हो गए. इन में एक का नाम उत्तरी कोरिया और दूसरे का दक्षिणी कोरिया पड़ा.

दक्षिणी कोरिया के नवयुवक इन दिनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

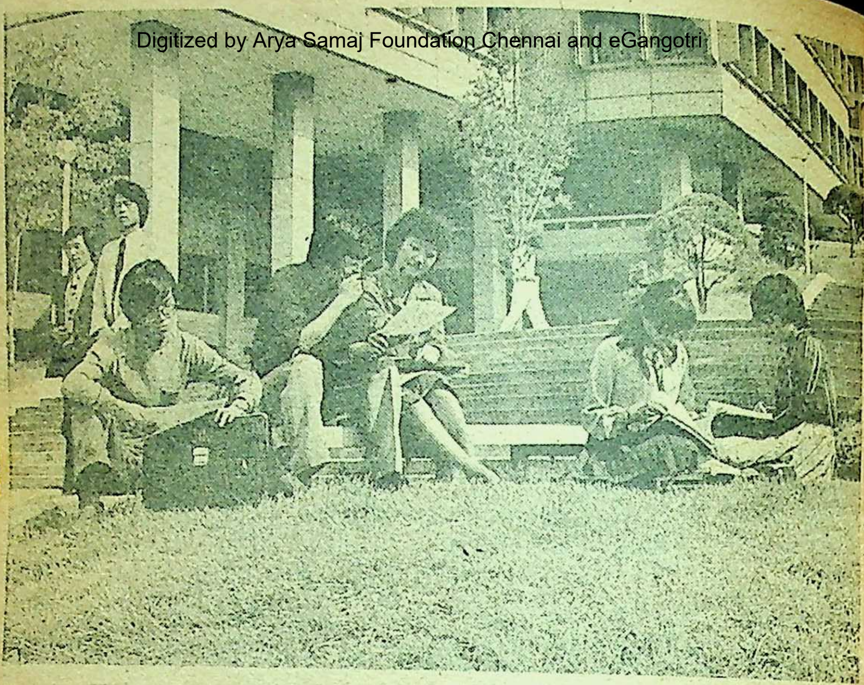

कोरिया की युवा पीढ़ी : धार्मिक शिक्षा का बहिष्कार.

अपना ज्यादातर समय अपने निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के अलावा मनोरंजन में लगा रहे हैं.

हाल में हुए एक सर्वेक्षण से इस बात का पता चला है कि पढ़ाई के दौरान कोरियाई युवकों के अपने अध्यापकों से मधुर संबंध नहीं रहते हैं. इसी तरह नौकरी में भी अपने वरिष्ठ और धार्मिक लोगों से भी नवयुवकों के मधुर संबंध नहीं रहते हैं. सब से आश्चर्य की बात यह है कि यहां के युवक पारिवारिक संबंधों, सेक्स, शादी, धर्म और धार्मिक शिक्षा को कम ही महत्त्व देने लगे हैं.

सर्वेक्षण से इस बात का भी पता चलता है कि 46 प्रतिशत युवक अपनी योजनाओं को पूरा करने में, 30 प्रतिशत मनोरंजन कार्यों में, 19 प्रतिशत सामाजिक क्रियाकलापों में और 5 प्रतिशत आराम से जीवन गुजारने में अपना समय लगाते हैं. युवकों की उम्र ज्योंज्यों बढ़ती जाती है, उन का रुझान मनोरंजन की ओर बढ़ता जाता है.

पश्चिमी देशों का दर्द

भूमध्य सागर के उत्तर और काला सागर के दक्षिणपश्चिम में बसे तुर्की देश का विश्व राजनीति में महत्त्वपूर्ण स्थान था. तुर्की साम्राज्य कभी दक्षिणी पूर्व यूरोप में बलकान के सारे देशों से ले कर मिस्र, अरब और अफ्रीका के देशों तक फैला था. प्रथम विश्व युद्ध के बाद से इस साम्राज्य का पतन होना शुरू हो गया और अब यह एक छोटा देश बन गया है. सैंट्रल संधि संगठन (सैंटो) और उत्तर एटलांटिक संधि संगठन (नाटो) का सदस्य देश होने के नाते इस के अपने पड़ोसी देश रूस से काफी तनावपूर्ण संबंध रहे.

पर हाल के कुछ वर्षों में तुर्की के पश्चिमी देशों से काफी मतभेद बढ़ गए और यह रूस की तरफ झुकने लगा. इन दिनों तुर्की और रूस के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध हैं. यही नहीं पिछले दिनों हुए एक समझौते के अधीन तुर्की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब दोनों देशों के बीच स्थित काला सागर पोर्ट के होपाहोप कसबे के लिए अपनी तरफ से सड़क बना रहा है. उम्मीद है कि यह सड़क इस वर्ष के अंत तक बन कर तैयार हो जाएगी और दोनों देशों के बीच स्थित इस कसबे में भी व्यापार शुरू हो जाएगा. उधर रूस ने कसबे को तुर्की की सीमा से जोड़ने के लिए अपनी तरफ की सड़क का निर्माण कार्य पूरा कर लिया है और यहां व्यापार और यात्रियों से कर वसूल करने के लिए कस्टम हाउस भी बना दिया है. लेकिन यदि कभी रूस और पश्चिमी देशों के बीच युद्ध छिड़ा तो क्या होगा? एक संवाददाता ने होपाहोप में घूमते हुए ऐसा ही प्रश्न वहां के लोगों से किया तो उन्होंने उत्तर दिया— "यह पश्चिमी देशों का सिरदर्द है तुर्की का इस से क्या लेनादेना है."

सफाई अभियान

प्रशात महासागर में स्थित 7,100 द्वीपों के समूह फिलीपीन के 11 द्वीपों को छोड़ कर ज्यादातर द्वीपों पर आबादी नहीं है. पर यहां की राजधानी मनीला में जनसंख्या इतनी अधिक है कि हवाई अड्डे से ले कर राष्ट्रपति निवास के इर्दगिर्द अब भी जगहजगह लोगों की अनधिकृत रूप में बनी झोंपड़ियां दिखलाई देती हैं. मनीला में कारखाने भी काफी हैं.

यहां पिछले कुछ वर्षों से पर्यटक काफी संख्या में आने लगे हैं. पहले हवाई अड्डे पर उतरते ही पर्यटक यह नहीं समझ पाता था कि मनीला एक दर्शनीय पर्यटन स्थल है या मजदूरों का शहर. जगहजगह बने अनधिकृत मकानों व झोंपड़ियों से सरकार काफी परेशान थी.

पर पिछले दिनों वहां के प्रधान मंत्री की पत्नी श्रीमती मारकोस ने सरकार से अनधिकृत मकानों आदि को हटाने का आदेश जारी करवा कर मनीला की काया पलटने का बीड़ा उठाया. अब जगहजगह बने अवैध मकानों, दुकानों, झोंपड़ियों को हटाया जा रहा है. पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए शहर को चमकाया जा रहा है.

मारकोस दंपति : पर्यटकों की चिंता का कारण.

एक ओर शहर चमक रहा है, पर दूसरी तरफ ये लोग कानून और शांति को भंग करने में लगे हैं. एक तिहाई जनसंख्या जो अनधिकृत निर्माण से संबंधित थी, इन दिनों नए घरों की तलाश में शहर में नई समस्याएं पैदा कर रही है. अनेक आर्थिक और धार्मिक समस्याएं खड़ी हो गई हैं, सरकार परेशान है.

पिछले एक वर्ष के दौरान मनीला की आबादी में 38 प्रतिशत की वृद्धि हुई है. पासपड़ोस के द्वीपों के लोग भी रोजगार की तलाश में यहां आ कर बस गए हैं. एक अनुमान के अनुसार गत एक वर्ष में ही यहां 16 लाख लोग आ बसे हैं. मनीला शहर की कुल आबादी 20 लाख 25 हजार है. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

छात्र का करिश्मा

गत वर्ष मेरठ विश्वविद्यालय में धड़ल्ले से चल रही नकल को देख कर एक प्रतिभावान छात्र को बड़ी कोफ्त हुई और उस ने एक अजब करिश्मा कर दिखाया.

उक्त छात्र ने अपनी उत्तर पुस्तिका पर बजाए नकल कर के कुछ लिखने के प्रश्नपत्र में पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों की कतरनें ही चिपकाना उचित समझा. उस ने इतमीनान से गेस पेपरों से प्रश्नों के उत्तरों को काटा और उन्हें उत्तर पुस्तिका में चिपका कर उसे जमा करवा दिया.

कतरनों के साथ उस ने क्रमशः परीक्षक, उपकुलपति एवं कुलपति के नाम अलगअलग पत्र भी लिखे. उस ने परीक्षक को लिखा, "मैं ने बजाए नकल करने के ये कतरनें चिपकाना ही उचित समझा. आप में हिम्मत हो तो इसे जांच कर अंक दे दीजिएगा अन्यथा यह कापी उपकुलपति के पास भेज दीजिएगा."

उस ने परीक्षक के साथसाथ उपकुलपति को भी लिखा, "महोदय, मैं ने अन्य परीक्षार्थियों की तरह नकल न कर के इन कतरनों को चिपकाना ही बेहतर समझा है. आप यदि कुछ निर्णय ले सकें तो ठीक है अन्यथा यह कापी कुलपति महोदय को प्रेषित कर दें."

कापी कुलपति महोदय के पास प्रेषित कर दी गई. कुलपति ने अपने नाम लिखा उस का पत्र पढ़ा. पत्र में लिखा था, "महोदय मेरे कक्ष में सभी छात्र पुस्तकों से नकल कर रहे हैं. मैं ने वक्त और श्रम बेकार करना अच्छा नहीं समझा, इसलिए मैं गैस पेपर्स की कतरने चिपका रहा हूं. मेरे पास कैंची, गेस पेपर्स, गोंद—सभी कुछ हैं. मैं ने यह सब कार्य यहीं बैठ कर किया है. मुझे किसी ने रोका नहीं है. आप जो भी चाहें निर्णय ले लें."

पत्र पढ़ कर कुलपति को असलियत का पता चला तो उन्होंने पूरी परीक्षाएं ही निरस्त कर देने का आदेश दे दिया. उस बार परीक्षाएं निरस्त तो हो गईं, किंतु अन्य छात्रों ने इस के विरोध में हिंसात्मक रुख अपनाने में कोई कसर नहीं उठा रखी.

—दैनिक जागरण, कानपुर (प्रेषक: राजेंद्रकुमार गुप्ता) (सर्वोत्तम)

*

200 युवक कुंवारे रहे

पेयजल के अभाव के कारण राजस्थान के पाली जिले के 200 युवक इस वर्ष भी कुंवारे रह गए.

पता चला है कि पाली जिले के रोहट पंचायत समिति क्षेत्र के 15 गांव ऐसे हैं जहां पेयजल का कोई साधन नहीं है. परिणामस्वरूप इन गांवों के विवाह योग्य 200 युवकों के साथ कोई भी व्यक्ति अपनी कन्या का विवाह करने को तैयार नही है.

इस क्षेत्र के गांवों में महिलाओं को पांच से सात मील दूर पैदल चल कर पानी लाना पड़ता है. महिलाओं का सारा दिन केवल एक घड़ा पानी लाने में ही गुजर जाता है.

बताया जाता है कि 15 दिन पूर्व इन गांवों में दो युवकों का विवाह तो हुआ था लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़कियों के पिताओं ने विवाह में एकएक बैलगाड़ी भी दी थी ताकि इस पर टंकी रख कर पानी लाया जा सके.

—दैनिक प्रतिनिधि, जोधपुर (प्रेषक: नवेंद्र पाल)

*

पेड़ के नीचे थाना

आप माने या न माने किंतु यह सच है कि गत दो वर्षों से इंदौर में एक पुलिस थाना पेड़ के नीचे कार्य कर रहा है.

मध्य प्रदेश के इस सब से बड़े नगर के इस अनोखे थाने में एक नगर निरीक्षक, पांच इंस्पेक्टर, 40 कांस्टेबल तथा आठ हेड कांस्टेबल नियुक्त हैं. इस थाने का कोई भवन नहीं है और रेल की पटरी के पार एक पेड़ के नीचे पुलिस कर्मचारी अपनी ड्यूटी करते आ रहे हैं. इस थाने में कोई मेज, कुरसी भी नहीं है. और न ही कोई फोन अथवा अलमारी ही है. सभी कागजात निकट ही जिला उद्योग कार्यालय के चौकीदार के कमरे में रखे हुए हैं.

कड़कड़ाती धूप हो या वर्षा, रात हो या दिन. यहां सभी कर्मचारी खुले आकाश के नीचे बैठ कर ही कार्य करते हैं. यहां का दिलचस्प नजारा तब देखने को मिलता है जब किसी अभियुक्त को पकड़ कर लाया जाता है. कोई बंदीगृह न होने के कारण अभियुक्त को पेड़ से बांध दिया जाता है. अभियुक्तों को शौच के लिए हथकड़ी पहन कर खुले मैदान में सिपाही के सामने बैठना पड़ता है.

ज्ञात हुआ है कि प्रदेश के पुलिस महानिरीक्षक भी इस अद्भुत थाने का निरीक्षण कर चुके है.

—विश्वमित्र, कलकत्ता (प्रेषक: बल्लभदास बिन्नानी)

*

चूहों की गणना

बिहार में राज्य सरकार ने चूहों की गणना करने का निर्देश दिया है. और चूहे भी वे जिन की उम्र चार महीने से अधिक हरगिज न हो.

बिहार विधान सभा में हो रही एक बहस के दौरान भारतीय जनता पार्टी के इंदरसिंह नामधारी ने 'शर्मशर्म' की आवाज के बीच इस सरकारी आदेश की एक प्रति पेश कर सदन को हतप्रभ कर दिया. उन के अनुसार इस गणना पर लाखों रुपए खर्च होने का अनुमान है.

—दैनिक आर्यावर्त, पटना (प्रेषक: दीपककुमार श्रीवास्तव)

*

पेट या कबाड़खाना

पटियाला के सरकारी राजेंद्र हस्पताल में एक चिकित्सक ने एक नौजवान लड़की के पेट का आपरेशन कर के लोहे की 416 चीजें निकालीं, जिन का वजन 500 ग्राम से अधिक है.

इन चीजों में विभिन्न आकार की कीलें, पेंच, नेलकटर, नटबोल्ट, चबाए हुए ब्लेड, सिलाई की सुइयां. जूतों की कीलें आदि शामिल हैं. चिकित्सकों का कहना है कि यह शायद पहला मौका है कि किसी के पेट में तरहतरह की इतनी चीजें पाई गई हैं.

—दैनिक पंजाब केसरी, जलंधर (प्रेषक: राजेश वर्मा)

*

एक पेड़ से पांच किस्म के आम

इंदौर में आम का एक पेड़ लंगड़ा, चौसा, बंबइया, फजरी और देशी पांचों किस्मों के आमों की फसल दे रहा है.

होशंगाबाद जिले के सिलारी फार्म में कुछ वर्ष पूर्व स्थानीय किस्म के आम के पौधे पर पांचों किस्मों के आमों की कलम लगाई थी. जिस ने अब आमों की फसल देनी शुरू कर दी है.

अब किसानों ने भी कई तरह के आम एक ही पेड़ से पाने के लिए उक्त विधि अपनानी शुरू कर दी.

—दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक: सुरेश अंजुम) •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व सुलभ साहित्य

बेतवा की कसम :

ग्रामीण पृष्ठभूमि पर ग्राधारित बदलते हुए परिवेश, व मान्यताग्रों का दस्तावेज.

प्रमोद — मूल्य : 3.00

कार में हत्या :

कार में लाश मिलने पर देशपांडे उस हत्या को सुलझाने में ग्रौर ग्रधिक उलझता गया. ग्रसली ग्रपराधी को पकड़ने में कैसे सफल हुग्रा ?

जनमित्र — मूल्य : 3.00

ईर्ष्या का ज्वालामुखी :

देशपांडे रहस्यपूर्ण हत्याग्रों को सुलझाने में कैसे उलझता गया. रहस्यरोमांच से भरपूर उपन्यास.

कुसुम गुप्ता — मूल्य : 3.00

इंसानों का व्यापार :

इंसानों के व्यापार के रहस्य का परदा जब देशपांडे ने उठाया तब सभी ग्राश्चर्यचकित रह गए.

जनमित्र — मूल्य : 3.00

पूरा सेट लेने तथा धन ग्रग्रिम भेजने पर डाक खर्च 50 पैसे वी.पी.पी. द्वारा.

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परदे के पीछे

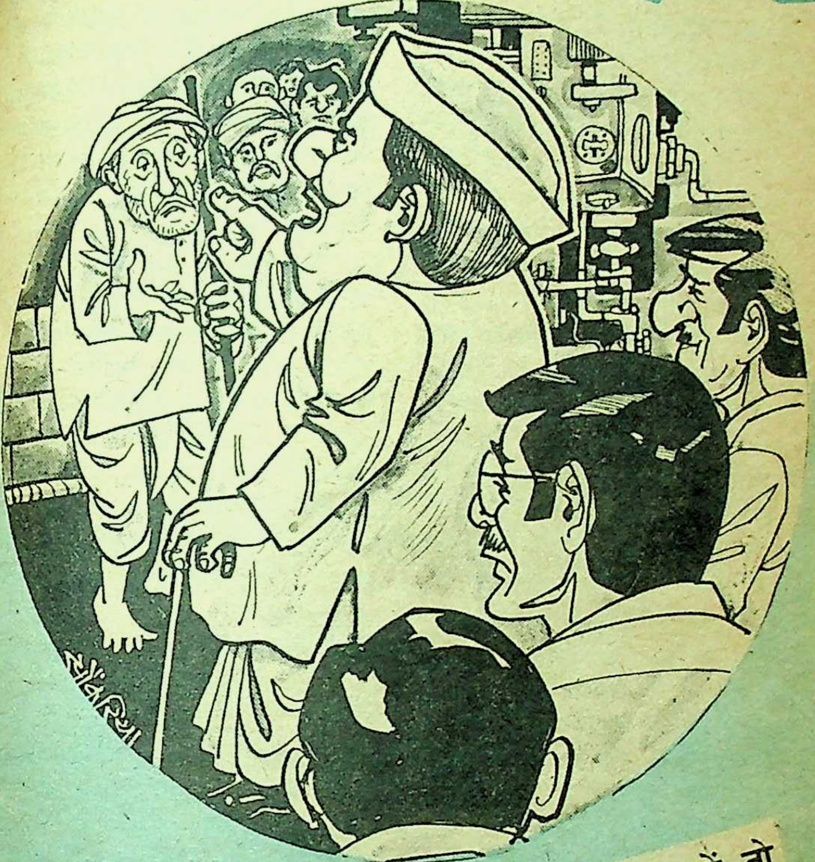

विधायकों का दल यों तो कारखाने के बंद पड़े संयंत्र की जांचपड़ताल करने आया था पर इस के पीछे दल के नेता राममूर्ति का उद्देश्य तो कुछ और ही था......

कहानी • चितरंजन भारती

कारखाने के प्रबंधक वर्ग में सुबह से ही खलबली मची हुई थी कि यकायक ऐसी क्या बात हो गई जो बिना कोई पूर्व सूचना दिए विधायकों का दल राजधानी से वहां आ पहुंचा. इस से प्रधान प्रबंधक हरेंद्रजी की हालत विशेष रूप से पतली हो गई थी क्योंकि हरेक मामले के लिए अंततः वही जिम्मेदार ठहराए जाते.

उन की समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर यह विधायकों का दल क्यों आया है. मजदूरों की तरफ से भी कोई शिकायत नहीं थी. उन्होंने पिछले चुनावों में सभी पार्टियों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन की इच्छानुसार चंदा भी दिया था और बदले में यह आश्वासन पाया था कि वे लोग उन्हें तंग नहीं करेंगे. फिर ऐसा क्या हो गया, जो उन को नहीं मालूम और जिस की जांच करने विधायक गण आए हैं.

शीघ्र ही उन की समस्याओं का समाधान भी हो गया. कारखाने के जनसंपर्क अधिकारी ने उन्हें टेलीफोन पर सूचित किया कि वे विधायक जल प्रदूषण निवारण समिति के सदस्य हैं और यह जांच करने आए हैं कि कारखाने से निकलने वाले जल को सही तरीके से साफ किया जाता है या नहीं.

यह जानते ही उन के हाथपांव फूल गए क्योंकि उन की जानकारी के अनुसार कारखाने के जल को साफ करने वाला संयंत्र बहुत समय पहले से ही बंद था. और उस को चालू करने के लिए स्थानीय लोगों के अलावा प्रशासनिक अधिकारियों ने भी उन का ध्यान उस ओर आकृष्ट किया था. मगर वह उसे नजरअंदाज कर गए थे.

अब उन्होंने अतिथि गृह के अधिकारी को फोन किया और उसे निर्देश दिया कि विधायकों का अच्छी तरह स्वागतसत्कार किया जाए और उन्हें खुश रखने की कोशिश की जाए.

उस अधिकारी ने उन्हें तब यह जानकारी भी दी कि विधायकों ने अतिथि गृह के हाल में आज 10 बजे एक बैठक रखी है जिस में उन विधायकों और कारखाने के अधिकारियों के अलावा जिले के प्रशासक व कुछ अन्य स्थानीय लोग भी होंगे.

निश्चित समय अतिथि गृह के हाल में सब एकजुट हुए. स्वादिष्ट मिष्ठानों एवं फलों के नाश्ते का दौर चला. इस के बाद सब को नए साल के तोहफे के रूप में डायरी, कैलेंडर वगैरा पेश किए गए.

आधे घंटे के बाद जिलाधीश श्रीधरजी की अध्यक्षता में बैठक की कारवाई शुरू हुई. विधायकों के दल ने सर्वप्रथम स्थानीय लोगों के आरोपों को सुना. इस के बाद स्थानीय प्रशासकों की बात सुनी और उस का वे पहले के दिए गए आरोप पत्रों से मिलान करते रहे. इस के बाद जल प्रदूषण निवारण समिति के अध्यक्ष विधायक राममूर्ति ने कारखाने के अधिकारियों की सफाई सुनी, यह देख कर कि सभी उन के विरोध में बोल रहे हैं, अधिकारियों की पहले ही हालत खराब हो गई थी. वे पहले से यह तय नहीं कर पाए थे कि किस बात का क्या जवाब देना है. उन्हें तो इस बात का भी पता नहीं था कि कारखाने से निकलने वाले जल से किसी को किस तरह का नुकसान पहुंच सकता है.

इस बात पर सब की सहमति थी कि जल साफ करने वाला संयंत्र बंद है. मगर वह कब से बंद है, इस पर कोई सहमति नहीं हो पा रही थी. लोगों का कहना था कि वह 10 वर्षों से बंद है, जब कि स्थानीय प्रशासक अपने रिकार्ड के अनुसार उसे पांच वर्षों से बंद पड़ा बताते थे. विधायकों का दल आरोप पत्रों के अनुसार उसे चार वर्ष से बंद पड़े रहने का अनुमान लगा रहा था मगर प्रबंधक वर्ग स्वयं ठीक नहीं बता पाया कि वह संयंत्र कितने दिनों से बंद है.

नगराधीश मुन्नासिंह ने तनिक हिम्मत कर के कहा कि वह कुछ ही महीनों से बंद पड़ा है. किंतु जिलाधीश ने उन्हें डपट कर चुप करा दिया और बताया कि वह स्वयं उस स्थान को कई बार देख चुके हैं और उन्होंने वहां के लोगों की दयनीय हालत का अंदाजा लगाया है. रसायन मिश्रित, जहरीले जल की निकासी के संबंध में वह स्वयं प्रबंधक वर्ग को चेतावनी पत्र दे चुके हैं, मगर उस का जवाब उन्हें केवल स्थिति सुधारने के आश्वासन के रूप में मिला है.

उन्होंने यह भी बताया कि उस रासायनिक जल के नदी में मिलने से नदी का जल जहरीला हो जाता है. उस जल से खेतों की सिंचाई करने पर फसल खराब होती है तथा यह जल स्वास्थ्य के लिए भी बहुत हानिकारक होता है. ग्रामीणों एवं मवेशियों द्वारा उस जल का उपयोग किए जाने पर उन्हें भी विभिन्न प्रकार के रोग हो जाते हैं. बीमारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में रुपया खर्च होने और फसल खराब होने से लोगों में गरीबी फैल रही है. गरीबी अपराध वृत्ति को बढ़ावा देती है. इसलिए इस संयंत्र को बंद रखने वालों के विरुद्ध कोई कारवाई की करनी चाहिए.

उन लोगों को अपने विरोध में बोलते देख प्रबंधक वर्ग को पाला मार गया. अशिक्षित स्थानीय लोगों का मुख तो वे अपने वाकचातुर्य से, पैसा, अथवा ठेकेदारी आदि का लोभ दे कर बंद कर सकते थे, मगर उच्च अधिकारियों के साथ ऐसा कुछ कर पाना कठिन था, इसलिए उन्होंने चुप रहने में ही अपनी भलाई समझी. मगर वे इस बात पर अड़े रहे कि संयंत्र ज्यादा दिनों से बंद नहीं है.

"मेरे मुख्य मंत्री बनने पर तो आप की चांदी रहेगी." राममूर्ति ने महेंद्रजी से कहा.

तब अंत में यही तय हुआ कि उस संयंत्र को देख ही लिया जाए.

दोपहर दो बजे संयंत्र देखने का समय निश्चित कर के 12 बजे बैठक समाप्त कर दी गई. अतिथि गृह में कारखाने की तरफ से राजसी भोजन का प्रबंध किया गया था. बीसों प्रकार के व्यंजन थे. सब ने छक कर भोजन किया. उस के बाद बढ़िया मगही पान खाए, जिस की जुगाली करते हुए सभी आराम करने चल दिए.

दो बजे से लोगों ने आराम छोड़ कर उठना शुरू किया. ज्यादातर लोग आराम नहीं बल्कि राजनीति, देश अथवा समाज आदि पर बहसें (गप्पें) कर रहे थे. संयंत्र देखने के लिए समय पर पहुंचने में किसी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दिलचस्पी नहीं थी. कारखाने ने पांच कारों, दो जीपों एवं दो बसों का प्रबंध कर रखा था.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन बजे गाड़ियों में भर कर काफिला जल साफ करने वाला संयंत्र देखने चला. प्रबंधक हरेंद्रजी ने विधायक राममूर्ति के समक्ष जिले के ऐतिहासिक स्थल एवं कारखाना देखने का भी प्रस्ताव रखा, जिसे उन्होंने नामंजूर कर दिया. वह किसी भी कीमत पर इस संयंत्र वाले मामले को सुलझा कर राजधानी लौट जाना चाहते थे, क्योंकि दूसरे दिन ही विधान सभा का सत्र शुरू होने वाला था और उस में उन्हें जल प्रदूषण निवारण समिति के अध्यक्ष की हैसियत से इस मामले की रिपोर्ट पेश करनी थी, नहीं तो विपक्ष बड़ा हंगामा करने वाला था. हरेंद्रजी अपने हथियार को खाली जाते देख खिसियानी हंसी हंस कर रह गए.

सब से आगे वाली गाड़ी में हरेंद्रजी विधायक राममूर्ति के साथ पीछे वाली सीट पर बैठे थे. राममूर्ति के परममित्र और सहयोगी समझे जाने वाले विधायक देवेन कार चालक के साथ आगे वाली सीट पर बैठे थे. इस के पीछे वाली कार में अन्य विधायकों एवं प्रबंधकों की मिलीजुली चौकड़ी बैठ गई. बसों एवं जीपों में स्थानीय लोगों ने अपना स्थान सुरक्षित कर लिया. स्थानीय प्रशासकों को आवश्यक कार्य था अतः वे इस काफिले में शरीक नहीं हो पाए. संयंत्र वाला स्थान अतिथि गृह से नौ मील दूर था. शीघ्र ही यह काफिला चल पड़ा.

विधायक राममूर्ति सत्तारूढ़ दल के विधायक थे और पार्टी में प्रमुख स्थान रखते थे. मंत्रिमंडल में वह इसी कारण शामिल नहीं हुए थे, क्योंकि वह अपने को मुख्य मंत्री पद का दावेदार मानते थे, मगर आजकल वह मौके की तलाश में थे कि कब वह पांसा फेंके कि बात बन जाए. इस बात को प्रबंधक हरेंद्रजी अच्छी तरह जानते थे.

हरेंद्रजी ने मौका अच्छा जान कर बातचीत करना बेहतर समझा. शायद राममूर्ति भी इसी तलाश में थे. देवेन की तरफ इशारा कर के उन्होंने समझा दिया कि वह अपना आदमी है और कार का चालक बस चालक है. हरेंद्रजी ने बातचीत का सिलसिला शुरू किया, "...और साहब, आजकल सब कुछ ठीकठाक चल रहा है न? राज्य की क्या स्थिति है? अब तो सत्ता आप लोगों के हाथ में है."

"खाक हम लोगों के हाथ में है," तनिक झुंझला कर राममूर्ति बोले, "राज्य की स्थिति क्या आप से छिपी हुई है? चारों तरफ आलोचना हो रही है. क्या व्यवस्था नाम की कोई चीज रह गई है इस मुख्य मंत्री के राज में?"

"अच्छा," तनिक आश्चर्य प्रकट करते हुए हरेंद्रजी बोले, "पता नहीं आप जैसे काबिल आदमी के रहते हुए भी प्रधान मंत्री ने उसे मुख्य मंत्री क्यों बना दिया और सारे विधायक भी कठपुतली की भांति देखते रह गए. आप जैसे बुजुर्ग, अनुभवी और सुयोग्य नेता के रहते प्रधान मंत्री ने उस पिद्दी से अनुभवहीन छोकरे को इतनी महत्त्वपूर्ण गद्दी पर बिठा कर अच्छा नहीं किया."

"यही तो रोना है हरेंद्रजी," एक दीर्घ निश्वास छोड़ते हुए राममूर्ति बोले, "मगर मुख्य मंत्री बनने के लिए तिकड़म व जोड़तोड़ तो करना ही चाहिए. इस के अलावा कुछ और बातें हैं..." उन्होंने अपनी प्रशंसा सुन कर थोड़ा फूलते हुए अपनी बातचीत को बीच में ही जानबूझ कर अधूरा छोड़ दिया.

"ऐसी कौन सी बात है," हरेंद्रजी ने भेद भरे अंदाज में उन से पूछा. तब तक वह स्थान आ गया था जहां उन्हें उतरना था.

"बाद में बताऊंगा," राममूर्ति ने बस इतना ही कहा.

गाड़ी से उतरते ही सब को एक तेज, रसायन मिश्रित दुर्गंध का सामना करना पड़ा. सब ने अपनीअपनी नाक पर रुमाल रख लिए. पास ही एक डेढ़दो सौ घरों का गांव था. वहां से नंगधड़ंग बच्चों के झुंड के झुंड आने शुरू हो गए. इस के बाद बड़ेबूढ़े भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

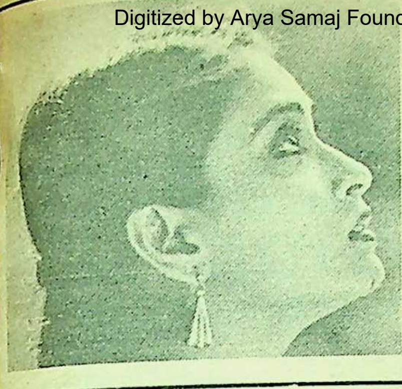

इनकार

बहुत चाहा मगर
हम में न जाने क्या था,
हमारी तिश्नगी से
वह इनकार करते रहे.

—सुरभि पांडेय

फटेचीथड़े कपड़ों में जर्जर शरीर को संभालते आ गए. औरतें भी अपने घरों से मुंह निकाल कर कभीकभी बाहर झांक लेती थीं.

यहां डकैतों अथवा दंगाइयों का तो डर नहीं था. मगर पिछले कुछ समय से राजनीतिबाजों के इधर आने और उन के उकसाए जाने पर गांव विभिन्न गुटों में विभक्त हो गया था और अब उन में आपस में झड़पें भी होने लगीं थी. इसलिए बाहर से आने वाले किसी भी व्यक्ति से वहां की महिलाएं और पुरुष खौफ खाते थे.

लगभग साढ़े तीन एकड़ जमीन में वह संयंत्र लगा हुआ था. संयंत्र को चलाने वाले अधिकांश कलपुर्जे गायब थे. संयंत्र के विभिन्न भाग बुरी तरह जंग खाए हुए थे. उसे देख कर कोई भी बता सकता था कि संयंत्र वर्षों से बंद पड़ा है.

यहां भी वही चखचख होती रही कि संयंत्र कब से बंद हैं, इस के मोटरों को किस ने और कब खोला, ग्रामीणों को क्या परेशानियां हैं. स्थानीय ग्रामीण लोग, यहां तक कि विधायक गण भी प्रबंधक वर्ग को नीच, जालसाज, धोखेबाज, शोषक आदि बता रहे थे.

प्रबंधक वर्ग की स्थिति जाल में फंसे उस जानवर की तरह हो गई थी, जो अपने को असहाय पा कर बगलें झांकता है. एक तटस्थ थे तो विधायक राममूर्ति

वह अच्छी तरह आश्वस्त होने के बाद ही किसी निर्णय पर पहुंचना चाहते थे. उन्होंने अपनी गहरी दृष्टि ग्रामीणों पर डाली. उन्हें देख कर कोई भी बता सकता था कि कुपोषण, गंदे एवं विषैले पानी के सेवन से उन का स्वास्थ्य नष्ट हो चुका है. पेड़पौधों में भी वह हरियाली नहीं रह गई थी. उन्होंने उस स्थान को भी एक नजर देखा, जहां रसायन मिश्रित विषैला दुर्गंध छोड़ता पानी नदी में गिर रहा था.

सब कुछ देख, सुन लेने के बाद भी जब संयंत्र के बंद रहने की अवधि पर कोई मतैक्य नहीं हो सका, तो उन्होंने सीधे ग्रामीणों से ही बातचीत करना उचित समझा. मगर कुछ ग्रामीण संकोच के कारण पीछे हट गए, कुछ उन से बातीचीत करने में गड़बड़ा गए. तो कुछ जरूरत से ज्यादा तेजतर्रार निकले. अंत में उन की नजर कोने में खड़े एक वृद्ध व्यक्ति पर पड़ी. वह एक लाठी पकड़े खड़ा था और सारी काररवाई देख, समझ रहा था.

राममूर्ति बोले, "बाबा, आप तो बूढ़े व्यक्ति हैं. आप सचसच बताइए कि यह संयंत्र कब से बंद है."

उस ने अपनी लाठी पर अपना भार मजबूत किया. फिर निरंतर बहे जा रही अपनी नाक को आस्तीन से पोंछा. फिर संयंत्र की तरफ हाथ उठा कर बोला, "सरकार, इ मशीन आज से नौ बरिस पहिले एही अषाढ़ महीना में बंद हो गईल. हम रोज इधर घूमे आवत रहीं. उ दिन अमावस्या रहे. हम रोज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकर आवाज सुनत रहीं. उ दिन ना सुनलीं. आउर तब से इ बंद पड़ल बा.

''इ मशीन बंद होने से हमनी किसनवन के का हालत भईल, उ रउए आपन आंखि से देख लीहां सरकार, आउर का बताईं, कुआं आउर ट्यूबवेल से भी खराब पानी निकल ला. खराब पानी पीए से आदमी जानवर दुनों सूखा गईलन. बैल के ताकत खतम हो गईल. गाय भैंस के दूध सूखा गईल. खेत के माटी खराब हो गईल. धान गेहूं नीमन नईखे उगत जो होता ओकरा में भी जान नई खे. हम का कहीं इ राज से नीमन अंगरेजी राज रहे. जहां कुछो सुनपाई तो होत रहे. ईहां बड़का लोग बोट के दिन गोड़ पकड़िहें, बाकी दिन गायब रहिहें...''

अभी वह कुछ और अपना गुबार निकालता, मगर विधायक राममूर्ति ने उसे आश्वासन दे कर चुप कर दिया. इस के बाद वह हरेंद्रजी की तरफ मुखातिब हो कर बोले, ''हां, भई अब आप कहिए, क्या कहते हैं. हम आप से केवल यही जानना चाहेंगे कि आप इस संयंत्र को कब चालू कर रहे हैं.''

''मैं ठीक समय बताने के लिए छः महीने का समय चाहूंगा,'' हरेंद्रजी ने कुछ घबराई आवाज में कहा, ''असल में ऐसा है कि इस प्लांट को फिर से चलाने के लिए कुछ नई मशीनें विदेशों से मंगानी पड़ेंगी. इस के लिए हमें छः करोड़ रुपए की आवश्यकता पड़ेंगी और अभी कारखाना घाटे में चल रहा है. कोष में पैसा नहीं है.''

तभी एक दूसरा विधायक गुस्से में बोला, ''मालूम है कि इस विषैले पानी से 35 लाख लोग बुरी तरह प्रभावित हैं. तुम्हारा छः करोड़ रुपया क्या उन 35 लाख लोगों की जान से अधिक कीमत है? और फिर पांच अरब रुपए वाले तुम्हारे कारखाने में जो माल तैयार होता है, क्या हमें नहीं पता कि उस की देश में कितनी कमी है? और तुम लोग उसे ब्लैक में बेच कर पैसा बनाते हो?''

प्रबंधक वर्ग की सिट्टीपिट्टी गुम हो गई. हरेंद्रजी की जबान को ताला लग गया. राममूर्ति ने उस जोशीले, नौजवान विधायक के गुस्से को किसी तरह शांत किया और काफिला लौट पड़ा.

लौटते हुए कार में राममूर्ति और हरेंद्रजी में फिर बातचीत होने लगी. हरेंद्रजी ने फिर पूछा, ''हां साहब, वह कौन सी बात थी, जिसे आप ने बाद में बताने को कहा था.''

''अब आप से क्या छिपाना हरेंद्रजी,'' राममूर्ति ने मायूसी भरे शब्दों में कहा, ''आजकल के विधायकों का नैतिक स्तर इतना गिर चुका है कि वे मेढकों की भांति इधर से उधर, उधर से इधर कूदते रहते हैं. आज के जमाने में मुझ जैसे सीधेसच्चे आदमी को कौन पूछता है? मुझे आधे से कुछ कम का ही समर्थन प्राप्त है. मगर कुछ और विधायकों को अपने पक्ष में करने के लिए पैसे की जरूरत पड़ेगी. इसलिए चुप बैठा हूं.''

''कितना पैसा चाहिए,'' हरेंद्रजी ने अपना जाल फेंका, ''मेरे रहते आप को पैसों की क्या चिंता? आप को पहले ही कहना चाहिए था. पहले भी कई बार मैं आप की सेवा कर चुका हूं.''

''आप की सेवा को क्या मैं कभी भूल सकूंगा, हरेंद्रजी.'' राममूर्ति भावविभोर हो उठे, ''फिर भी लगभग 25 लाख रुपए तो चाहिए ही. इस के बाद तो मुख्य मंत्री बनने पर आप की चांदी ही चांदी रहेगी. जल प्रदूषण निवारण समिति को इधर आने का आदेश इसी कमबख्त मुख्य मंत्री ने दिया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरना क्या जरूरत थी इधर आने की. सभी पूंजीपति को ही कोसते, गालियां देते हैं पर यह नहीं सोचते कि उन्हीं के ऊपर देश का दारोमदार है, यही एक कारखाना है क्या? अरे, बीसों कारखाने हैं, जिन का जल नदी में मिल कर नदी के जल को दूषित कर रहा है. तो तय रहा मैं कल विधान सभा में सब कुछ ठीक कर दूंगा."

इस के बाद गुपचुप कुछ मंत्रणा हुई और विधायकों की टोली अतिथि गृह में भारीभरकम नाश्ता कर के राजधानी लौट गई.

दूसरे दिन विधानसभा में राममूर्ति ने अपनी टिप्पणी पेश की. उन्होंने बताया कि प्रबंधक वर्ग पर लगाए गए आरोप सही थे. मगर वे अत्यधिक व्यस्तता की वजह से इस ओर ध्यान नहीं दे पाए थे और अब उन्होंने यथाशीघ्र ध्यान देने का वचन दिया है. संयंत्र चालू करने के लिए उन्होंने छः महीने का समय मांगा है. इस के कई कारण हैं. प्रथम तो वर्षा शुरू हो गई है. दूसरे उन्हें कुछ मशीनें विदेशों से मंगानी पड़ेंगी, इसलिए मैं ने उन को समय दे दिया है."

उन के बैठते ही एक विपक्षी सदस्य ने प्रश्न किया, "क्या किसी की लापरवाही को किसी की जान पर थोपा जा सकता है? और अगर थोपा जा सकता है तो क्या उस का मुआवजा नहीं देना चाहिए? क्या आप उन ग्रामीणों को मुआवजा दिलवा रहे हैं?"

इस प्रश्न का सभी विपक्षी सदस्यों ने स्वागत किया.

इस पर राममूर्ति बोले, "चूंकि कारखाने को पैसे की तंगी का सामना करना पड़ रहा है, इसलिए उन के सामने ऐसी मांग नहीं रखनी चाहिए."

इस पर विपक्षियों ने बड़ा हंगामा किया. मगर शासक दल के विधायक संख्या में अधिक थे. अतः उन्होंने राममूर्ति का समर्थन करते हुए उस से भी ज्यादा हंगामा मचा कर उन का मुंह बंद कर दिया. और इस हंगामे के बीच राममूर्ति और मुख्य मंत्री एकदूसरे को आंखों ही आंखों में तोलने लगे थे. ●

लेखकों के लिए सूचना

● सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.

● प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.

● प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.

● प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.

● स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.

● मुक्ता और सरिता में पूर्णविराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें
संपादकीय विभाग
मुक्ता, दिल्ली प्रेस,
नई दिल्ली-110055

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

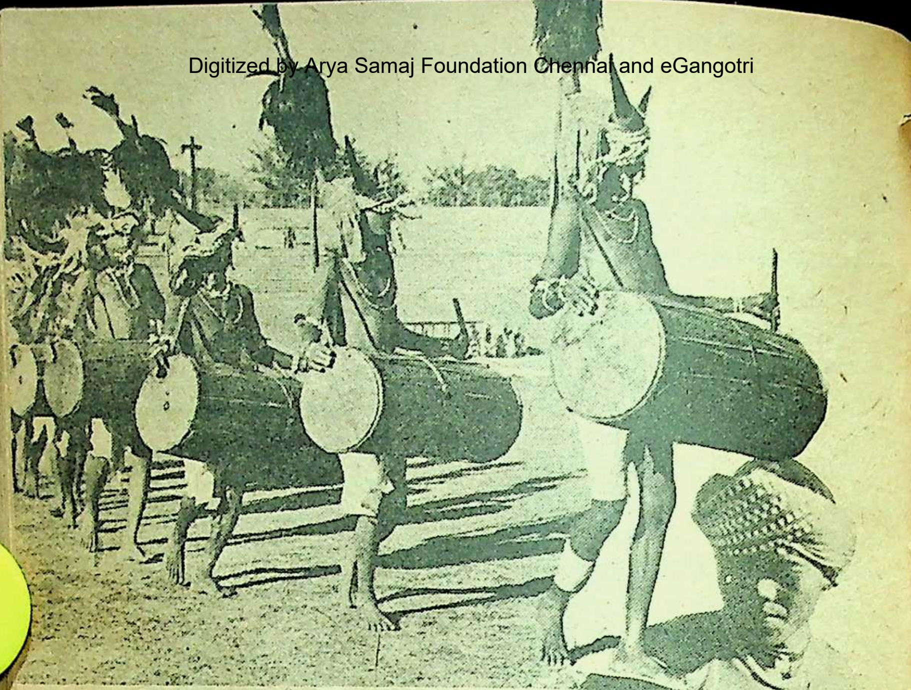

आदिवासी नृत्यों का संसार

लेख • शिवप्रसाद 'कमल'

यद्यपि भारत के आदिवासियों को अपनी जीविका के लिए कड़ा श्रम करना पड़ता है. शताब्दियों से वे शोषण के शिकार रहे हैं. परंतु उन की मस्ती,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परंपरागत मौजमेलों और उत्सवों में अव भी कोई अंतर नहीं आया है. ये वनवासी आखिर कहां से पाते हैं इतनी ऊर्जा कि माथे पर सजा कर इंद्रधनुष, कमर में लटका कर कोंपलों की ललछोंही करधनी, पांवों में गूंथ कर घुंघरू और होठों से लगा कर बांसुरी, रचा लेते हैं इंद्र लोक का रास रंग. सिंदूरी सांझ की अरुणिमा में इन की बांसुरी, नगाड़ा, ढाक और ठेचका की लयताल पर थिरकने लगते हैं इन के पांव, गूंजने लगते हैं, कंठ. इस रास रंग का तब समापन होता है, जब रात का चंद्रमा बंसवाड़ी की ओट में भार की ओर सरकने लगता है. चांदनी अपना दूधिया आंचल समेटने लगती है.

फिर घोटुल (नृत्य के बाद विश्राम करने वाली झोंपड़ी) के किसी कोने में निःशब्द थकी पड़ी देह, मोरपंखी पलकों पर सजाने लगती है सपनों का सतरंगा संसार. सांसें झलती हैं पंखा, धड़कने गुनगुनाती हैं लोरियां और फिर जब तैरने लगता है, पूरब के क्षितिज पर भोर का तारा [illegible] प्रकाश तो सूरज की पुखराजी किरणों के गुदगुदाते ही धुंधलाने लगते हैं इन

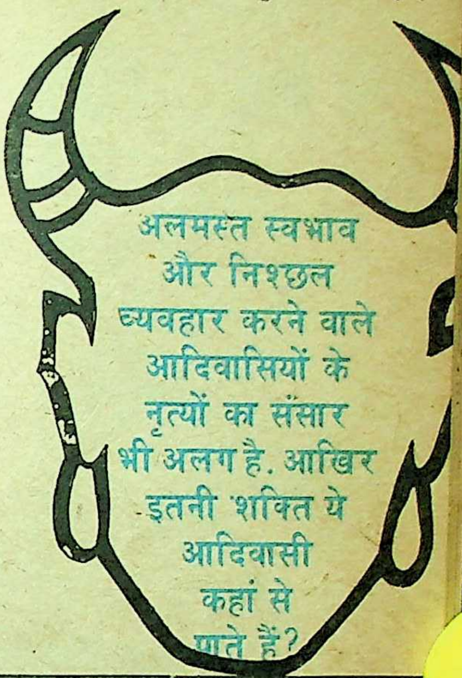

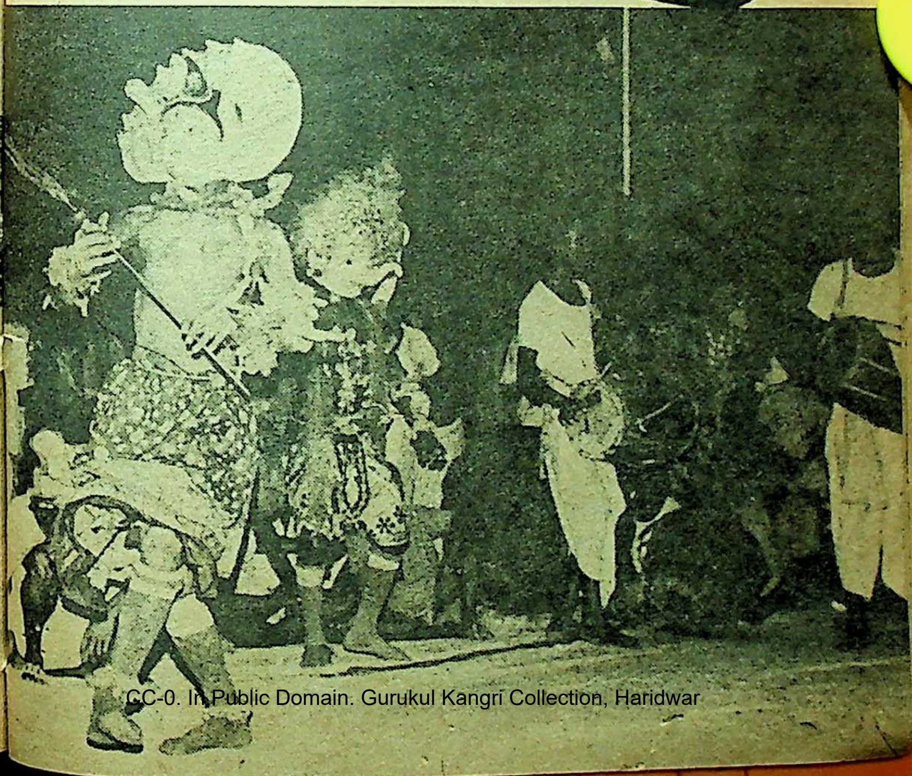

भिन्नभिन्न वेशों में आदिवासी नृत्य का संसार रचते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

के सपने. हौलेहौले खुलने लगती हैं माड़ी (चावल की शराब) के खुमार से भरी उनींदी आंखें. आलस तन जाग उठता है. भादों की भरी नदी की तरह ले कर अंगड़ाई कानों में गूंजने लगते हैं, उस के अपने ही गाए गीत.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हां...हां यही है वह लड़की,
दीए की तरह
घर में जो करती है उजास,
कांसे की कटोरी जैसी
दमकती है सुंदरता इस की,
यौवन भर गया है जामुनी रंग
गले में झूलती है
कौड़ियों की माला,
गाती है तो जैसे
कूकने लगती है कोयल,
हंसती है तो जैसे
बजने लगते हैं घुंघरू.

अनोखे रीतिरिवाज

इन वनवासियों की बंजर जमीन में कैसे उगते होंगे सुख के अंकुर, गम के जहरीले

रणभूमि में हर्षोंमत्त गणेश.

युद्ध की आक्रामक मुद्राएं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागों की बस्ती में किस तरह चमकती होंगी खुशी की मणियां, जीवन के कठिन कंकड़पत्थर भरे मार्गों पर कैसे खिलतेमहकते होंगे मन के गुलाब? कौन देगा इन के उत्तर... शायद अनुत्तरित ही रहेंगे ये प्रश्न.

आधुनिक समाज से पृथक, इन के अपने रीतिरिवाज हैं. इन की अलग अस्मिता

आदिवासी युवक: खूबसूरत सपनों से भरी आंखें.

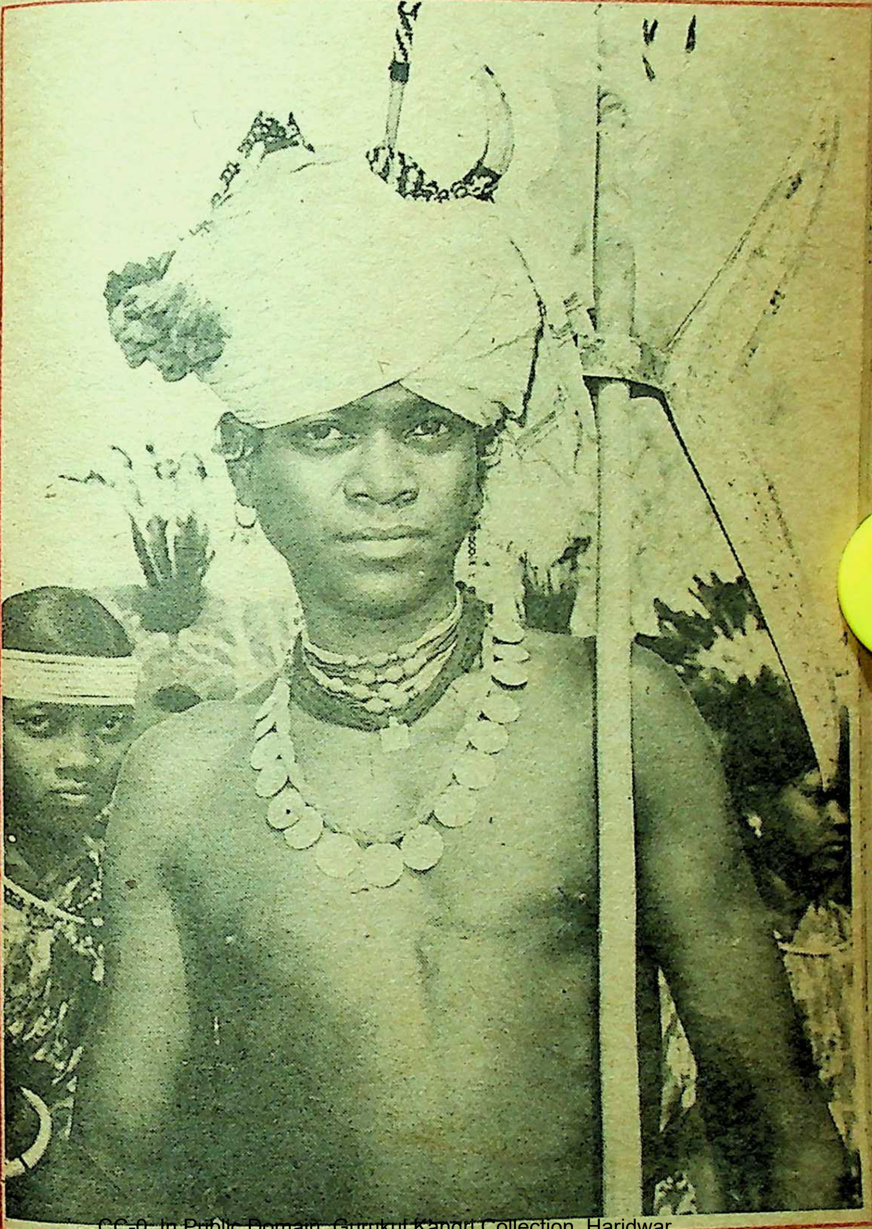

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. कहीं मातृसत्तात्मक तो कहीं पितृ-सत्तात्मक व्यवस्था है. विवाह के भी अनोखे तरीके हैं. कहीं लड़के वाले खुद लड़की वाले के यहां जाते हैं. पशुओं, अनाजों के उपहार ले जाते हैं और बदले में मांगते हैं लड़की का हाथ, तो कहीं मड़ई (मेला) के अवसर पर साथसाथ नृत्य करते हुए, कर लेते हैं किशोरकिशोरियां एकदूसरे को पसंद और बंध जाते हैं परिणय बंधन में. तब कईकई कंठ एकसाथ गानेगुनगुनाने लगते हैं.

हां...यही है वह लड़की,
देख कर नृत्य इस का
झील के जल में
लहरियां लेती हैं हिलकोरें,
हवा के झकोरों से
अमलतास की फूलों भरी डाली
लगती है झूमने,
यह असाढ़ के कारेकजारे
बादलों जैसी भरी हुई है.

सारे दिन कठिन श्रम करने के बाद, जब सूरज पश्चिमी क्षितिज की ओर झुकने लगता है और सिंदूर उलीच कर सागर की गोद में छिप जाता है, तब कहीं ढलने लगती है सलफी (ताड़ी) और कहीं माड़ी (चावल की शराब). माड़ी जब उतरती है गले के नीचे तो जैसे सारा आलम हो जाता है नशीला तथा रंगीन. यही होते हैं वे मस्ती भरे क्षण, जो भर देते हैं पांवों में थिरकन, गले में गीतों का गुंजन.

हां...हां यही है वह लड़की,
बिजली की चमकती डोर से
बांध कर लाया हूं चांद
भाग्य को मेरे
देखने वाले जी भर कर देखें,
भोर आ गई है मेरी देहरी पर,
सांझ उतरी है आंगन में,
मेरे आकाश में खिले हैं सितारे,
मेरे बादलों में चमकी है बिजली
बहुत से इंद्रधनुष दिख रहे हैं
धरती से आसमान तक,
इन्हें पार करते हुए
हम बढ़ रहे हैं आगे...

नृत्य एवं रंगों का संयोजन

भावों का कितना मोहक गुंफन है. सौंदर्य की कैसी उपमाएं हैं. जीवन में घुले रंगों की कितनी सार्थक अभिव्यक्ति है. शब्दों में

करमा: मिर्जापुर के आदिवासियों का एक सुप्रसिद्ध नृत्य.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी कार्तिकेय नृत्य मुद्रा में.

मर्म को छूने की कैसी अद्भुत शक्ति है. अभावों के अंधेरे में दपदप जल पड़ने वाले संतुष्टि के दीपों की कैसी अनोखी जगमगाती कतार है. कहां से जुटाया होगा इतना आमोद वनवासी लोक कवियों ने... शायद प्रकृति से. किंतु किस साहित्यशास्त्र के अध्ययन से प्रसूत हुई हैं, इतनी मार्मिक कविताएं? जंगली जीवन की मरुभूमि पर खिलनेमहकने वाले हजार रंगों के ये वनफूल क्यों नहीं कभी मुरझाते?

जहां यह शाश्वत सत्य है कि इन के नृत्य, गीत, संगीत में प्रेम की अनादि, अनंत, अखंड अमृतधारा सर्वदा प्रवाहमान रहती है, वहीं यह देख कर भी सुखद आश्चर्य होता है कि इन के प्रायः लोक नृत्य देव.तथा पुराण कथाओं पर आधारित हैं. देवकथाओं पर आधारित होते हुए भी ये नृत्य बड़े मोहक एवं मनोमुग्धकारी होते हैं. जहां एक तरफ इन के परिधानों में विविध रंगों का विस्मयकारी संयोजन है, वहीं दूसरी ओर देवताओं के रूपोंमुखौटों की संरचना भी अत्यंत कलात्मक तथा प्रभावशाली है, यहीं एक प्रश्न उठता है, इन आदिवासियों को कहां से मिलीं देवकथाएं, देवताओं के स्वरूपोंवाहनों की जानकारी, कहां से इन्होंने सीखी मुखौटों, परिधानों को रंगने संवारने की कला? निश्चय ही इन्हें इन के मध्य तपस्यारत ऋषियोंमुनियों ने दिया होगा इतना ज्ञान.

नृत्य और संगीत की कोई भाषा नहीं होती. श्रोता एवं दर्शक मात्र इन के प्रदर्शन और प्रस्तुतीकरण से ही अभिभूत हो उठता है. इस के विपरीत गीत की एक भाषा होती है. किंतु मिठास तथा दर्द गीतों को भाषातीत बना देते हैं. इन की छुअन से ही मन के तार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

झनझना उठते हैं. तब भाषा बाधा नहीं बनती. वनवासी लोक गीतों की यही सब से बड़ी विशेषता है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्वों को मनाने का इन का अपना अनूठा और रोमांचकारी तरीका है. उमंग उत्सव से लबालब होते हैं इन के पर्व. कहीं फर्ज अदायगी नहीं, ऐसे अवसरों पर अपनी आत्मा को घोल देते हैं ये गिरिजन. अंधविश्वासों तथा परंपराओं पर, अंगद के पांव की तरह अडिग निष्ठा रखने वाले निश्छल आदिवासी इसी लिए अपनी अस्मिता अक्षुण्ण रखे हुए हैं. क्योंकि इन के रक्त के कणकण में लोक कला हिलकोरें लेती रहती हैं. लोककला और वनवासी एकदूसरे के पर्यायवाची हैं.

विभिन्न अवसरों पर शस्त्रों का प्रदर्शन करने वाले ये गिरिजन प्रेम के गायक हैं तो उतने ही कुशल वीरधीर नायक भी हैं. अपने समक्ष हिंस्र से हिंस्र पशु को देख कर भी भयभीत नहीं होते. पलक झपकते ही अपने विषैले बाणों से उसे बींध देते हैं.

धर्म से जुड़े पर्व जहां इन्हें जीने की जिजीविषा प्रदान करते हैं, कहीं फसलों के कटने पर 'सरहुल' जैसे पर्व इन्हें संघर्षरत रहने की प्रेरणा भी देते हैं. ऐसे पर्वों पर सलफी तथा माड़ी की महक के साथ खनक उठते हैं वाद्य एवं घुंघरू, कंठ की मेड़ों पर गमकने लगते हैं गीतों के फूल.

हां...यही है वह लड़की
आज हम खेतों की गंध में उतरेंगे
फूलों के जंगलजंगल भटकेंगे,
हमें एक रास्ता मिल गया है
हम चले जा रहे हैं
प्रेम की रस गागरी पी कर
नशे में हैं हम.

दूरी नापने के लिए अतिआधुनिक यंत्र

तकनीकी दृष्टि से भी एशियाई खेलों के लिए आधुनिक उपकरणों की व्यवस्था की गई है. लगभग ऐसे सारे उपकरण जापान, हंगरी, पूर्वी जरमनी आदि से मंगाए जा रहे हैं. इन में से कुछ उपकरण खरीदे गए हैं, कुछ उपहारों के रूप में मिले हैं और कुछ काम चलाने के लिए उधार लिए गए हैं.

समयांकन और स्कोर सूचक यंत्र सीको और इलैक्ट्रो इंपैक्स कंपनियों के माध्यम से क्रमशः जापान और हंगरी से प्राप्त किए जा रहे हैं. पूर्वी जरमनी की जैना कंपनी से प्रिज्मीय मापन उपकरण प्राप्त हुआ है जिस में इलैक्ट्रोआप्टीकल टेकियो मीटर शामिल है. मास्को में 1979 के स्पार्टाक्याड तथा 1980 के ओलंपिक और अन्य प्रमुख अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में इस का परीक्षण किया गया था.

प्रिज्म में, मूलकोण और दूरी संबंधी आंकड़े इलैक्ट्रोआप्टीकल मीटर द्वारा नापे जाते हैं. नापी जाने वाली दूरी के पैने सिरे (अंतिम सिरे पर वह बिंदु जहां चक्का, हैमर या भाला जमीन पर पड़ता है.) वाली छड़ के साथ बंधा एक विशेष परावर्तक जमीन में गड़ जाता है जो इस यंत्र से निकली अनवरक्त किरण संग्राहक यंत्र को परिवर्तित कर देता है और प्रेषित तथा प्राप्त किरण के बीच के फेज अंतर से सही दूरी मालूम हो जाती है.

इस यंत्र में एक माइक्रोप्रोसेसर लगा होता है जो मापन प्रक्रिया का नियंत्रण करता है और कोण से फेंक की लंबाई और दूरी नापता है. यह यंत्र सूचित किए गए सभी आंकड़ों को नियंत्रण भी करता है.

हालांकि यह सब बहुत पेचीदा लगता है मगर प्रिज्म के कारण दूरी नापने में गलती होने की संभावना कतई नहीं रहती. इस प्रकार के दो यंत्र तो बहुत जरूरी होते हैं ताकि उन के मापन की भी परस्पर जांच की जा सके. इस प्रकार के तीन यंत्रों की व्यवस्था की गई है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावधान

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

कारनामा फाइनेंस कंपनी का

श्रीगंगानगर में एक निजी फाइनेंस कंपनी द्वारा आसान शर्तों पर ऋण और वित्तीय सहायता देने के नाम पर 20 लाख रुपए हड़पने का सनसनीखेज मामला प्रकाश में आया है.

पता चला है कि एक प्राइवेट लिमिटेड फाइनेंस कंपनी लंबे समय से जालसाजी का धंधा कर रही थी. पिछले दिनों उस के सभी कर्मचारी कंपनी के कार्यालय में ताला लगा कर गायब हो गए.

मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी ने उक्त कंपनी के पांचों निदेशकों के खिलाफ धोखाधड़ी के आरोप में पुलिस को मुकदमा दर्ज करने के निर्देश दिए हैं.

—अमरज्योति, अजमेर (प्रेषक : हरीशकुमार) (सर्वोत्तम)

*

ठगी ऐसे भी

खरगोन के देवता गांव में पुलिस ने एक ऐसे युवक को गिरफ्तार किया है, जो अपने को इंदिरा कांग्रेस के विधायक का पुत्र बता कर भोलेभाले ग्रामवासियों से रुपए ऐंठता था.

पुलिस के अनुसार शंकर राठौर नाम के इस युवक ने अपने को विधायक साधोराम का पुत्र बता कर 15 हजार रुपए ठग लिए. उस युवक ने साढ़े ग्यारह हजार से अधिक रुपए समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम के अंतर्गत लोगों को पशु दिखाने के नाम पर लिए हैं.

—दैनिक नवभारत, रायपुर (प्रेषक : हबीब खान)

*

फरजी डाक्टर गिरफ्तार

नई दिल्ली में सेना के एक भूतपूर्व सिपाही को फरजी डाक्टर बन कर धोखा देने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है.

पुलिस को जब इस फरजी डाक्टर की जानकारी मिली तो उस ने एक फरजी मरीज भेजा. उस डाक्टर ने फीस ले कर उसे पैर दर्द का इलाज बिस्तर पर आराम करना बताया.

वह अपने को चंडीगढ़ पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल संस्थान का चिकित्साधिकारी भी बताता था.

पुलिस की अपराध शाखा द्वारा पकड़े जाने पर उस ने स्वीकार किया कि वह पटेलनगर के एक स्कूल से आठवीं पास है तथा उस की नियुक्ति सेना में मिजोराम में चिकित्सा विभाग में हुई थी. वहीं उस को कुछ दवाओं के नाम रट गए थे.

पुलिस ने उस के पास से एक ऐसी डिग्री भी बरामद की है जिस के अनुसार वह शल्य चिकित्सा में भी महारथ हासिल कर चुका है.

—दैनिक भास्कर, ग्वालियर (प्रेषक : कमलेशकुमार शर्मा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

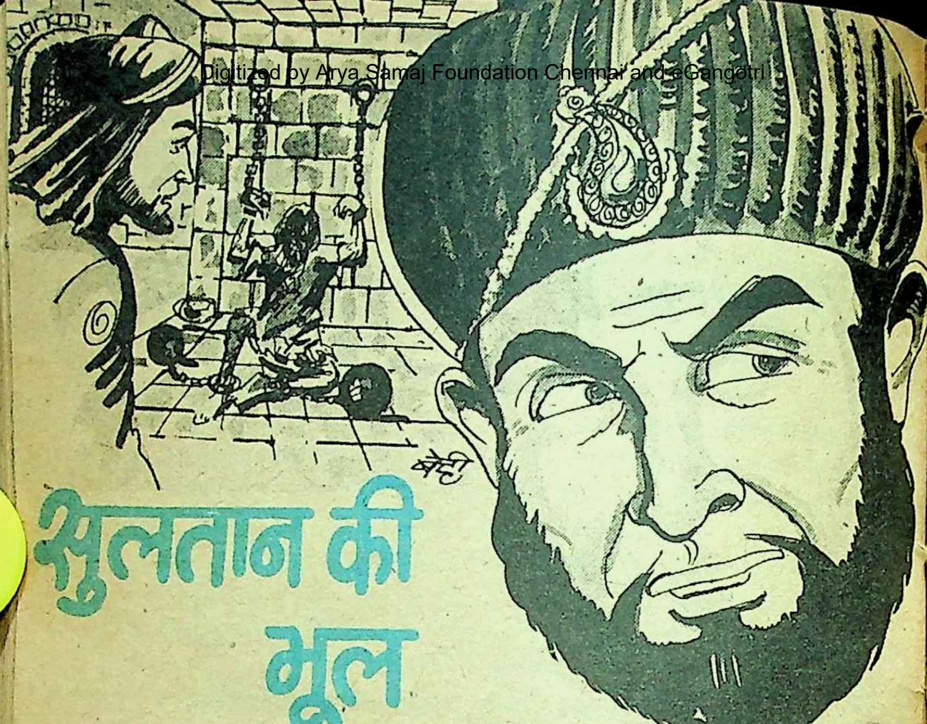

सुलतान की भूल

कहानी • मुकारबखान आजाद

अप्रैल 1526, सूरज डूब चुका था और शाम के काले साए महलों में उतर आए थे. मगरिब की नमाज के बाद शमादान रोशन किए जा रहे थे कि सुलतान इब्राहीम लोदी अपनी बेगम नाजिमा की कोठरी की तरफ आया. वह बेहद बेचैन था.

नाजिमा ने अपने पति का स्वागत किया और पूछा, ''खुदावंद, आज रास्ता कैसे भूल गए. मुझ नजरबंद कैदी पर अचानक यह रहमोकरम कैसे?''

''सवाल रहमोकरम का नहीं, सल्तनत की हिफाजत का है.'' इब्राहीम लोदी गंभीर था, ''अगर दौलत खान को समझा सको तो मैं तुम्हारा कुसूर माफ कर सकता हूं... तुम्हारी जान बख्शी जा सकती है, नाजिमा.''

बेगम सारा माजरा समझ गई. मुगल बादशाह बाबर पेशावर से हिंदुस्तान में दाखिल हो गया था. अब वह लाहौर से आगे बढ़ कर पंजाब में पहुंच गया था. वह आंधी की तरह पानीपत के मैदान की ओर बढ़ा आ रहा था और अब दिल्ली उस के लिए दूर नहीं रह गई थी.

नाजिमा ने पूछा, ''दौलत खान को क्या समझाना है?''

''उसे समझाना है कि वह बाबर का साथ न दे वरना अंजाम बहुत बुरा होगा.''

''लेकिन इस मामले में मैं क्या कर सकती हूं.'' नाजिमा उलझन में पड़ गई.

''बात टालने की कोशिश मत करो. दिलावर खान पर तुम्हारा एहसान है. उसे दिल्ली से तुम्हीं ने फरार करवा दिया था.''

''यह झूठ है आलीजाह.''

''चुप रहो. भले ही सबूत मेरे पास नहीं हैं, मगर तुम बरी नहीं हो सकतीं. बेगम, तुम शाही मुलजिमा हो, नजरबंद हो... इसे मत भूलो,'' इब्राहीम लोदी झल्लाया.

''आप का शक गलत है खुदावंद. मुझ पर गलत इलजाम लगाया गया है,'' नाजिमा तड़प उठी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है, दौलत खान तुम्हारा खालू है और उस का बेटा दिलावर खान तुम्हारा खालाजाद भाई. इस नाते ही उन से बात कर लो."

"दौलत खान आप के भी चचा हैं."

"बहस मत करो. वह मेरा दुश्मन है. मुझे खत्म करने के लिए काबुल से बाबर को बुला लाया... और मैं उस से सुलह की बात करूं? नामुमकिन...मैं इतना कमजोर नहीं..."

"यकीन न करना और शक करना तो आलमपनाह की कमजोरियां हैं."

"जबान मत चलाओ. इस से तो मैं खुद ही निबट लूंगा. कुछ फुरसत मिलने दो नाजिमा, तुम्हें इस बदजबानी की सजा दी जाएगी."

इब्राहीम लोदी सचमुच हर वक्त शक और अविश्वास का शिकार रहता. जहां कोई सरदार जरा चमका कि उसे लगता यह मेरे लिए खतरा बन रहा है. बस, इतना सोचते ही वह उसे मरवा डालता या फिर अपने कैदखानों में ठूंस देता.

लाहौर का वृद्ध सूबेदार दौलत खान उस का चाचा था. वह तीन साल से सुलतान को लगान नहीं भेज पाया था. पंजाब के विकास कार्यों पर उस ने इतना धन खर्च किया था कि खजाना खाली हो गया. इस पर इब्राहीम लोदी नाराज हुआ और उस ने उसे तलब किया.

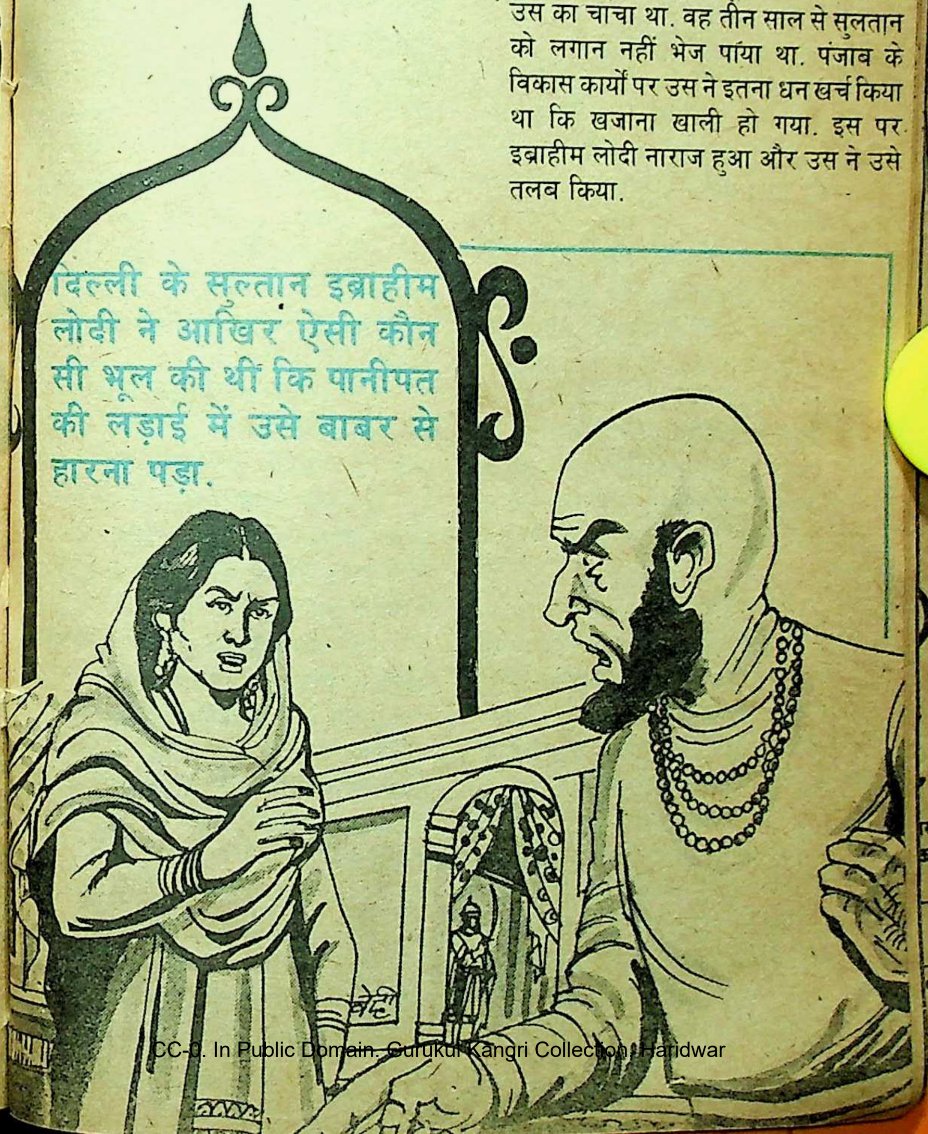

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दौलत खान ने तब अपने पुत्र दिलावर खान को दिल्ली पेश कर सुलतान के सामने
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वस्तुस्थिति रखी, मगर सुलतान ने ज्यों ही लाहौर के शहजादे दिलावर खान को देखा, क्रोध से उबल पड़ा, "शहजादे, आप के अब्बा हुजूर क्यों नहीं आए? क्या यह सलतनत की तौहीन नहीं है?"

दिलावर खान उस के सम्मान में झुक गया. पेट के बल लेट कर फर्श चूमते हुए बोला, "जहांपनाह, वह जल्द ही हाजिर होंगे. फिलहाल मैं दरबार की खिदमत में हाजिर हूं."

"तुम्हारी हाजिरी के हम भूखे नहीं. लगान कहां है? हमें रकम चाहिए."

"जहांपनाह, दरअसल बात यह है..." शहजादे ने लाहौर की अपनी मजबूरी बयान की, लेकिन सुलतान संतुष्ट न हो सका. उस ने पैर पटके, आंखें चढ़ाईं. यह देख कर दिलावर खान कांप उठा.

"मेरी मुखालफत का अंजाम बहुत बुरा होता है. चाहो तो अपनी आंखों से देख लो और अपने अब्बा हुजूर को लिख भेजना ताकि वह भी मेरे रवैए से वाकिफ हो लें," सुलतान ने कहा और आवाज लगाई, "महमूद खान."

"जी, आलीजाह," महमूद खान तलवार संभाले आगे बढ़ आया. इब्राहीम लोदी कुटिलता से मुसकराया और बोला, "शहजादे को बेवफा सरदारों से मिला लाओ."

दो घोड़े दौड़ते हुए दिल्ली के बाहर एक खंडहर के करीब आ कर हिनहिनाए. महमूद खान मुस्तैदी से घोड़े पर से कूदा और दिलावर खान को इशारा किया. वह घोड़े से उतर कर उस के पीछेपीछे चलने लगा.

एक सड़ांध मारते तहखाने में घुसते वक्त महमूद खान कह रहा था, "शहजादे, यह दिल्ली के सुलतान का अजायबघर है."

मशाल की रोशनी में दिलावर खान ने इस खौफनाक कैदखाने का जो मंजर देखा तो उस की घिग्घी बंध गई. यह कैसा अजायबघर था जहां जिंदा सरदार जंजीरों में बंधे मुर्दों की तरह औंधे मुंह पड़े थे.

दिलावर खान ने तलवार की मूठ कस कर पकड़ ली और महमूद खान की तरफ पलटा. पर अब महमूद खान वहां नहीं था. हां कैदखाने का खूंखार दारोगा वहां था. काला, बदसूरत यह हब्शी दारोगा देखने में बेहद डरावना लग रहा था.

"शहजादे दिलावर खान, अच्छी तरह से देख लो. यह जिंदा लोगों का कब्रिस्तान है. यहां वे लोग हैं जिन्होंने सुलताने हिंद की फरमाबरदारी में कोताही बरती... इन से मुलाकात करो..." और एक क्रूर अट्टहास के साथ ही वह तहखाने से बाहर हो गया.

दिलावर खान सकते की हालत में खड़ा था. धड़कते दिल से वह आगे बढ़ा और एक कैदी को पहचानते हुए फुसफुसाया, "चचाजान!"

"तुम ने मुझे पहचान लिया, मैं ही आजम हुमायूं हूं—बंगाल का सूबेदार. अभीअभी दारोगा ने तुम्हारा नाम लिया था, तुम दिलावर खान हो न."

"जी चचाजान, मैं लाहौर के सूबेदार दौलत खान का बेटा हूं."

"आह, करीब तो आओ. ओह, मैं तुम्हें देख भी नहीं सकता... इब्राहीम लोदी ने मेरी आंखें निकलवा दी हैं... हाय..."

दिलावर खान पसीने में नहा उठा. सूखते होंठों पर जीभ फिरा कर वह बुदबुदाया, "आप तो बहलोल लोदी के हिमायती रहे थे...फिर यहां?"

"मैं और मेरा बेटा फतह खान जरूर बहलोल लोदी के यहां गए थे. मगर फिर हम ने इब्राहीम के झंडे के नीचे आ कर वफादारी की कसम ली. हमीं ने बहलोल को कत्ल करवाया, लेकिन उस नमकहलाली का फल सुलतान ने यह दिया. ओह..." आजम हुमायूं कराह उठा.

दिलावर खान, हक्काबक्का खड़ा उस कैदखाने के अन्य कैदियों को कराहतेतड़पते देखता रहा. उन की शक्लसूरतें बिगड चुकी थीं और वे मात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गुनाहगार मैं हूं. मेरा सलूक इनसानियत से कोसों दूर न होता तो तुम यहां नहीं आते." दम तोड़ते हुए इब्राहीम लोदी ने बाबर से कहा.

कंकाल बन कर रह गए थे.

क्या सभी सुलतान के शक के शिकार हो गए? दिलावर खान सोच कर चिंतित हुआ.

"क्या सोचने लगे." महमूद खान ने कंधे पर हाथ मारा तो दिलावर खान चौंक कर उछला, "अब इन एहसान फरामोश सरदारों से मिलने का वक्त खत्म हुआ, आओ चलो."

दोनों बाहर निकले. तहखाना बंद हो गया. घोड़े फिर दौड़ने लगे. हांसी के किले के सामने घोड़ा रोक कर महमूद खान मुसकराया, "यही वह जगह है जहां बहलोल की गरदन उड़ा दी गई थी. बाकी जिंदा मेहमानों से खुद मिल लेना."

दिलावर खान का चेहरा उतर गया. सिकंदर लोदी की मृत्यु के बाद मुल्लाओं ने सल्तनत को दो भागों में बांट दिया था. जौनपुर का प्रदेश बहलोल लोदी को तथा दिल्ली का इब्राहीम लोदी को दे दिया गया था. किंतु यह निर्णय अव्यावहारिक था और उस का शिकार हुआ बेचारा बहलोल लोदी.

..."शहजादा दिलावर खान अंधेरे में भेड़ों की तरह बंधे इब्राहीम लोदी के रिश्तेदारों की दुर्दशा देख कर सन्न रह गया. सामने ही सुलतान के भाई इसमाईल खान, हुसैन खान तथा शेखजादा, सईद खान आदि सरदार भी थे.

इन कैदियों ने दिलावर खान को देखा और एक ने पूछा, "आखिर तुम भी सुलतान की गिरफ्त में आ गए न. वह शक का मारा उड़उड़ कर लोगों को खाने लगा है."

"नहीं, मैं तो वैसे ही आप लोगों को देखने..."

"गलत बात है. इस खुशफहमी में न रहना शहजादे. मुमकिन हो तो यहां से भाग जाओ वरना..."

हुसैन खान बोला, "नेक नीयती और वफादारी का नतीजा क्या होता है, यह तुम देख ही चुके. मियां भाग जाओ और अपने अब्बा से कहना कि भूल कर भी दिल्ली न आएं. सुलतान के अपनी कोई औलाद नहीं, लिहाजा उसे लग रहा है कि दौलत खान साजिश कर के दिलावर खान को दिल्ली सौंप देगा..."

दौलत शेखजादा भी चुप न रहा. उस ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शहजादे को आगाह करते हुए कहा, "इब्राहीम को अपने रिश्तेदारों से खतरा दिखने लगा है और इसी बेहूदा शक की वजह से वह कमीनी हरकतों पर उतारू है, समझे?"

"जी," शहजादे ने थूक निगला.

"याद रखो शहजादे, सुलतान खुशामदियों और चापलूस भांडों से घिर गया है, जो उस के शक को हवा देते रहते हैं. दिल्ली से भाग कर भी तुम लोग अपनी हिफाजत की सोच लेना वरना यह लाहौर का रास्ता भी जानता है." एक अन्य स्वर उस के कानों में पड़ा.

शहजादा दिलावर खान भय से पीला पड़ गया. उस ने इधरउधर देख कर सोचा कि अब दिल्ली से पीछा कैसे छूटेगा?

महमूद खान उसे वापस दिल्ली ले आया. जहां से किसी तरह दिलावर खान फरार होने में कामयाब हो गया. उस ने लाहौर पहुंच कर ही दम लिया.

दौलत खान ने जब अपने बेटे के मुंह से सुलतान इब्राहीम लोदी की कारगुजारियां सुनी तो सोच में पड़ गया कि उस का बेटा कैसे भाग सका.दिलावर खान ने उसे बताया, "अब्बा हुजूर, मुझे आपाजान ने निकलवाया. रात के अंधेरे में वह आई और घोड़ा दे कर मुझे इधर दौड़ा दिया."

"नाजिमा ने अपना फर्ज निभाया. वह तेरी खालाजाद बहन है." दिलावर खान की मां ने अपने बेटे के सिर पर हाथ फेरा. "सुलतान को भले ही रिश्तेनाते वालों से नफरत हो लेकिन नाजिमा लाखों में एक है. वह रिश्तेदारी की अहमियत समझती है".

"अब उस की जान खतरे में जरूर पड़ गई होगी. सुलतान उसे कभी माफ नहीं करेगा." दौलत खान ने गहरी सांस छोड़ कर कहा और सिर थाम लिया.

मरता क्या न करता. अपमानित और असुरक्षित दौलत खान तब यह कदम उठाने पर मजबूर हो गया. उस ने बाबर से संपर्क किया. वह भारत आने की उधेड़बुन में था ही. दौलत खान की शह पर वह [illegible] से [illegible] पड़ा.

दौलत खान की सेना उस की सेना से जा मिली. चुगताई योद्धाओं के घोड़ों की टापें जब पंजाब में गूंजीं तो इब्राहीम लोदी की आंखें खुलीं. वह आगरे से फौरन दिल्ली आया. उस ने अपनी विशाल सेना पर एक दृष्टि डाल कर गहरी सांस ली क्योंकि सेना के नाम पर एक भीड़ थीं, जहां अनुशासन का कहीं नामोनिशान भी न था. योग्य योद्धा और जांबाज सरदार तो उस के शक के शिकार हो चुके थे.

सुलतान घबराया. उसे शाही मुलजिमा नाजिमा का फिर ख्याल आया. छः माह तक उस की सुनवाई चली थी. इसी बीच बाबर ने पेशावर पार कर लिया. ऐसे में सुलतान ने बेगम को इस शर्त पर बाइज्जत बरी करने का आश्वासन दिया कि वह दौलत खान को समझाए. यदि वे बाप बेटे मुगलों का साथ न दे कर सुलतान का साथ दें तो सब का कुसूर माफ कर दिया जाएगा.

किंतु नाजिमा ने साफ इनकार करते हुए कहा, "आप ने जो बोया है वही अब आप काटेंगे. सुना है रुपयों की थैलियां फौजी सरदारों में तकसीम की गई हैं?"

"मैं अपनी सलतनत की हिफाजत के लिए सोनाचांदी और जवाहरात तो क्या इज्जत भी दांव पर लगा सकता हूं."

"मुझे अफसोस है कि खुदावंद फिर गलती कर रहें हैं?"

"वह क्या?"

"रुपए से एतबार नहीं खरीदा जा सकता, जहांपनाह. आप के लालची सरदार पैसा ले कर क्या खाक लड़ेंगे? मुझे लगता है कि वे पहले हमले में ही भाग उठेंगे." नाजिमा जंगले के पास जा कर उत्तरपश्चिम में देखने लगी. उस की आंखें भर आई थीं.

"कोई कारगर तरीका जहन में आता है ...?"

"बस एक ही रास्ता है आलीजाह, और वह यह कि आप दौलत खान से माफी मांग लें."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

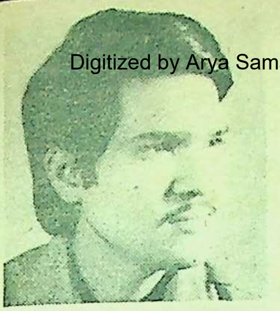

बादल

प्यास धरती की हमें
पहचानती है,
हम कभी पानी भरे
बादल रहे हैं.

—सलीम अश्क

इस पर सुलतान तिलमिला कर बोला, "एक सुलतान की तौहीन करने का नतीजा जानती हो? यह दूसरा कुसूर पहले से ज्यादा बड़ा है. मैं मैदाने जंग से लौट कर तुम्हें इस की वह सजा दूंगा कि सुनने वाले भी थर्रा उठेंगे."

"आप तो नाहक चिढ़ने लगे. दौलत खान आप का चचा है. चचा से भतीजा मांफी मांगे तो बुराई क्या है? अगर यह बदजबानी है तो आप मुझे जो चाहें सजा दें, मैं वैसे ही कौन सी एशोआराम की जिंदगी जी रही हूं."

नाजिमा ने आंसू पोंछे और पलट कर देखा, किंतु तब तक सुलतान जा चुका था.

इब्राहीम लोदी ने लाहौर के सूबेदार को मार्मिक खत लिखा. पर उस का माकूल जवाब न पा कर बौखला उठा. अपनी भूल उस की समझ में आ गई. किंतु अब उसे सुधारने का वक्त ही कहां था.

जैसेतैसे फौज को तरतीब दे कर वह सजायाफ्ता सरदारों से मिलने सड़ांध मारते कैदखानों में जा पहुंचा. उस ने शक के शिकार सभी योद्धाओं को संबोधित करते हुए कहा, "शेर घायल हो कर भी शेर ही रहते हैं. मैं बेशक गलत काम कर चुका हूं, मगर अब अपने किए पर पछता रहा हूं. तुम लोग गिलाशिकवा भूल कर इस इब्राहीम के वास्ते नहीं, अपने मुल्क के वास्ते मदद करो. चाहो तो तुम सभी लोगों को बाइज्जत बरी किया जा सकता है, बोलो?"

सजा भोग रहे बेकुसूर सरदार सुलतान की इस गुजारिश पर चौंके. उन्होंने इसे साजिश का एक नया अंदाज समझा. फिर भी एक ने जवाब दिया, "जहांपनाह, आप ने मेरी आंखें निकलवा दीं, अब अंधा क्या मदद कर सकता है...मुझे तो कुछ सुझाई नहीं पड़ता."

"और मेरे हाथ कटवा डाले.... मैं लाचार हूं..." दूसरे ने कहा.

"मेरे पांव कटवा डाले. अब यह लंगड़ा क्या जंग करेगा...." तीसरा व्यंग्य से बोला.

और इसी तरह मौत से जूझते सरदारों के जवाब सुन कर इब्राहीम की आह निकल गई. वह अपमान का घूंट भर कर बोला, "तुम लोग नाकारा हो चुके हो लेकिन अपने खानदानों और दोस्तों को समझाओ अगर सभी मेरी मदद को आ जाएं तो मैं मुगलों से टक्कर ले सकूंगा. मेरे पास फौज तो है मगर काबिल फौजी सरदार नहीं हैं."

"**सब** फौजी सरदार कहां गए?" बंगाल के सूबेदार ने व्यंग्य किया तो इब्राहीम लोदी निरुत्तर हो गया. सूबेदार की आंखें नहीं थीं पर वह सुलतान की बदहवासी भांप रहा था.

"इस का जवाब मैदाने जंग से लौट कर दूंगा" इब्राहीम लोदी बड़बड़ाया और तहखाने से बाहर आ गया.

12 अप्रैल 1526. बाबर पानीपत के मैदान में आ गया. उस ने मोर्चाबंदी की, खाइयां खुदवाईं और पेड़ काटकाट कर रुकावटें बनवाईं पर इब्राहीम लोदी अभी तक मोर्चे पर नहीं पहुंचा था अतः मुगलों ने पर्याप्त विश्राम किया.

21 अप्रैल की सुबह तपता सूरज उगा. हवा बंद थी, वातावरण में उमस थी और आसमान जमीन पर निगाहें गड़ाए जंग का मंजर देखने को जैसे बेचैन था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंद के सुलतान इब्राहीम लोदी की विशाल सेना अपने हाथियों सहित युद्ध के लिए तैयार खड़ी थी. और तब 12,000 मुगलों ने 700 तोपों के मुंह उठा दिए. कोलाहल हुआ, सैनिकों के निडर घोड़े हवा में उड़ने लगे. छः घंटे घमासान युद्ध हो कर नतीजा सामने आया. अहं, शक और अविश्वास इब्राहीम लोदी को ले डूबे.

युद्ध के अंतिम क्षणों में चाचाभतीजा आमनेसामने थे. दोनों ही जख्म खा कर घोड़ों से गिरे. सेना में भगदड़ मच गई. इब्राहीम ने धूल से सिर उठा कर रक्त रंजित दौलत खान को देख कर कहा, ''अब तो हो गए निहाल, मुगलों को हिंदुस्तान में ले आए...गद्दार... बेवफा...''

दौलत खान ने कराह कर हिचकी ली उस का मुंह खून से भरा था. फिर भी चाचा ने भतीजे को जवाब दिया, ''मैं बाबर को नहीं लाया, बल्कि तुम्हारे अपने कारनामे उसे हिंद में बुला लाए.''

''आह, यह सही है...'' सुलतान बुदबुदाया, ''काश, मैं पागल न होता, मेरी बदसलूकी ही वतन की बदकिस्मती बन गई. चचाजान माफ करोगे? मैं, मैं... आप का ही नहीं, पूरे मुल्क का गुनहगार हूं...आह.''

सुलतान घिसटता हुआ दौलत खान तक आया. मगर वह ठंडा हो चुका था.

तभी बाबर को ले कर दिलावर खान वहां आ गया. वे दोनों घोड़ों से कूदे. बाबर ने झट से सुलतान को संभाला. उस की दाढ़ी झाड़ी और चेहरे का खून पोंछा. इब्राहीम लोदी की सांसें उखड़ रही थीं.

जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर ने अपना परिचय दिया और बोला, ''सुल्तान देख लो तुम्हारा गद्दार सूबेदार दौलत खान यहीं पहलू में पड़ा है. चाहो तो सजा दे डालो.''

''नहीं...'' इब्राहीम ने अस्पष्ट सा प्रतिवाद किया, ''गुनहगार तो मैं हूं. मेरा सलूक इनसानियत से कोसों दूर न होता तो तुम यहां नहीं आते...खैर...अलविदा...बाबर अलविदा... मैं यह मुल्क तुम्हें सौंप कर गहरी नींद सो जाना चाहता हूं. इसे अपना वतन मानना. लूटना नहीं, बसाना. आबाद करना...'' और इब्राहीम लोदी ने दम तोड़ दिया. बाबर उठ खड़ा हुआ. उस ने सुबक रहे दिलावर खान को दिलासा दिया, ''सब्र करो शहजादे,'' फिर अपने सैनिकों को हुक्म दिया, ''यहां सुलताने हिंद की यादगार में कच्ची ईंटों की एक कब्र बना दी जाए.''

''और मेरे वालिदे बुजुर्गवार दौलत खान के वास्ते?''

''कुछ नहीं. वह शहीदाने वतन की हैसियत नहीं रखता. वह गद्दार है.'' और बाबर उछल कर घोड़े पर सवार हो तेजी से दूसरी ओर चला गया. दिलावर खान की गरदन झुक गई. ●

चुटकले सुनाने का रिकार्ड

लास ऐंजलस में कामिक रिक बुकबेल नामक व्यक्ति ने चुटकले सुनाने का नया रिकार्ड स्थापित किया है. उस ने लगातार 24 घंटे, छः मिनट तक चुटकले सुना कर विश्व के पिछले 24 घंटे पांच मिनट के रिकार्ड को तोड़ दिया. न्यूयार्क स्थित कलीफटन पार्क में पिछली बार यह रिकार्ड बाब कैरोल ने 1979 में स्थापित किया था.

नया रिकार्ड कायम करने वाला 25 वर्षीय कामिक रिक भूतपूर्व पेशेवर हाकी खिलाड़ी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एफ-16 विमान का हौवा

लेख • दीपक

एफ-16 विमानों को ले कर तरहतरह की अटकलें लगाई जा रही हैं. पर क्या ये विमान वास्तव में भारत के लिए खतरनाक साबित होंगे?

अमरीका ने पाकिस्तान को एफ-16 विमान देने का निर्णय क्या किया कि इस उपमहाद्वीप के राजनीतिक क्षेत्रों में खलबली मच गई. अखबारों और अन्य पत्रिकाओं में इस विषय में अब तक जो कुछ छपा उस से आम आदमी की यह धारणा बन चुकी है कि पाकिस्तान को ऐसी खतरनाक चीज मिल रही है जिस से हमारे देश की सुरक्षा विशेष कर हमारे परमाणविक केंद्रों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है. आम आदमी की यह धारणा भी बन चुकी है कि हमारी वायु सेना के विमान उस का मुकाबला नहीं कर पाएंगे.

दरअसल यह एफ-16 विमान बने ही बिक्री के लिए हैं. विमान निर्माण में अग्रणी अमरीका की एक कंपनी मैक्डानेल डगलस ने एक विमान बनाया—एफ-15 'ईगल'. एफ-16 विमान इसी विमान का जरा सा परिवर्तित रूप है. लेकिन फिलहाल एफ-16 के नवीनतम माडल—एफ-16 ए का उत्पादन एक दूसरी कंपनी 'जनरल डायनेमिक्स' कर रही है.

एफ-16 की सब से बड़ी विशेषता यह है कि उस में वैमानिकी से संबंधित हर टेक्नालाजी जैसे—इलेक्ट्रानिक्स, संचार, प्रक्षेपास्त्र परिचालन आदि का नवीनतम और श्रेष्ठतम रूप इस्तेमाल हुआ है. इसी कारण इस की इस कदर धूम है कि 'साइंटिफिक अमरीकन' में मैक्डानेल डगलस कंपनी के विज्ञापन इसी विमान के हवाले से छपते हैं. जब कि यह कंपनी नागरिक उड्डयन के विमान भी बनाती है.

लेकिन इस से यह समझ लेना कि एफ-16 अमरीकी वायुसेना का सब से अच्छा विमान है, भारी भूल होगी. आजकल किसी भी देश की वायुसेना किसी एक किस्म के विमान से कई तरह के काम लेने की उम्मीद नहीं रखती. अतः हर किस्म का विमान किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

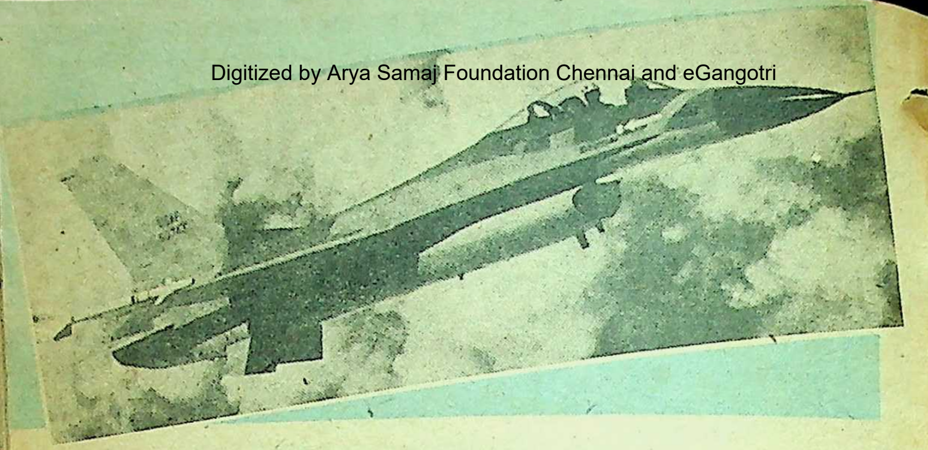

आवाज से भी तेज गति का लड़ाकू विमान एफ-16

खास कार्य के लिए ही बनाया जाता है.

एफ-16 विमानों की 'एयर सुपीरियारिटी फाइटर्स' की श्रेणी में रखा जाता है. इस श्रेणी के विमानों का उपयोग छोटे ठिकानों पर आक्रमण करने, भारी बमवर्षकों की सुरक्षा करने और युद्धक बमवर्षकों का मुकाबला करने में किया जा सकता है. इन विमानों का मुख्य उद्देश्य है—किसी भी मौसम में, किसी भी ऊंचाई पर (मामूली पेड़ों की ऊंचाई से ले कर बमवर्षक विमानों के उड़ने की ऊंचाई तक) किसी भी प्रकार के विमान को दूर से ही खोज कर और फिर पकड़ में ला कर नष्ट करना.

अमरीकी वायुसेना के दूसरे 'एयर सुपीरियारिटी फाइटर्स' हैं. एफ-14 (टामकैट) और एफ-111 ए हैं. ये दोनों विमान एफ-16 से उन्नीस नहीं पड़ते. दोनों ही वेरिएबल स्वीप विंग' यानी रफ्तार के हिसाब से कंप्यूटर नियंत्रण द्वारा स्वतः ही डैनों का विस्तार बदलने वाले विमान हैं. एफ-111 ए तो खड़ेखड़े ही उड़ान भरने में सक्षम है और विशेषज्ञों का खयाल है नौसेना के विमान वही पोतों पर आर एफ-4 'फैंटम' के साथ इस का प्रयोग अमरीकी बेड़ों को अजेय बना देगा. ये दोनों ही विमान अन्य देशों को नहीं बेचे गए हैं.

मूलतः युद्धक विमान होने के कारण एफ-16 विमान आकार में बड़ा नहीं है. वस्तुतः एफ-86 सैबरजेट विमान, जिन के बूते पर पाकिस्तान ने सन 1965 में भारत पर हमला किया था, इस से कहीं बड़ा विमान है. यह बोझ भी ज्यादा ले जा सकता है.

सैबरजेट में सिर्फ एक टर्बोजेट इंजन है जो सिर्फ 5,000 पौंड का धक्का उत्पन्न करता है. पर एफ-16 में दो टर्बोफैन इंजन लगे हैं जो 30,000 पौंड का धक्का उत्पन्न करते हैं. इसी वजह से यह ध्वनि से ढाई गुना तेज उड़ सकता है. इस रफ्तार को पकड़ने में इसे आधा मिनट भी नहीं लगता. अल्युमिनियम और टाइटेनियम की मिश्र धातुओं का बना इस का ढांचा मजबूत और अत्यंत हल्का है. ढांचे की धातु का निर्माण 'होमोजीनियस मेटल्स इनकार्पोरेटेड' नामक कंपनी करती है.

शास्त्रसज्जा

एफ-16 की शस्त्रसज्जा का आरंभ होता है छः बेरेल वाली एम-61 ए-1 तोप से. इस तोप का आकार 20 मिलीमीटर है ज्यादातर जहाजों में यह 12.5 मिलीमीटर ही होता है) और यह प्रति सैकंड 100 राउंड फायर कर सकती है. इस को 'वल्कन' कंपनी ने बनाया है.

इस के बाद आते हैं—हवा में और हवा से भूमि पर मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र. इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

समय एफ-16 में ए-1 एम-7 एफ 'स्पेरो'-3 नामक प्रक्षेपास्त्र का प्रयोग हो रहा है. विमान को दूर से ही खोज कर और उस के पीछे लग कर उस पर अचूक मार करने के लिए यह प्रक्षेपास्त्र कांटिन्युअस वेव सेमी एक्टिव राडार गाइडेंस प्रणाली और इंफ्रारेड होमिंग प्रणाली का प्रयोग करता है.

लक्ष्य के मीलों दूर रहने पर भी विमान का राडार उस पर निशाना साध कर प्रक्षेपास्त्र छोड़ देता है. यह प्रक्षेपास्त्र ध्वनि से तीन गुना तेज उड़ता है, फिर भी इस बीच यदि लक्ष्य दिशा बदल दे या कलाबाजी खाने लगे तो यह उस के इंजन से निकलती इनफ्रारेड विकिरण द्वारा उस के पीछे लग जाता है, फटने के लिए यह प्रक्षेपास्त्र, लक्ष्य से टकराने का इंतजार नहीं करता. अपने खास 'प्राक्सिमिटी फयूज' द्वारा यह लक्ष्य के करीब होते ही फटता है ताकि अगर निशाने में जरा चूक रह भी जाए तो भी काम तमाम हो जाए. प्रक्षेपास्त्रों की मार 48 किलोमीटर से ज्यादा है. लंबाई 3.60 मीटर और कुल वजन 450 पौंड होने के बावजूद इस के विस्फोटक का वजन 10 पौंड से थोड़ा ज्यादा होता है.

जाहिर है कि ऐसे प्रक्षेपास्त्रों की विस्फोटक शक्ति केवल वायुयान या भूमि के छोटे और अपेक्षाकृत कमजोर लक्ष्यों जैसे टैंक, प्रेट्रोल टंकियां या राडार केंद्र आदि ध्वस्त करने में ही सक्षम है. परमाणविक केंद्रों और रिएक्टरों आदि की विकिरण से सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार ही कई फुट मोटी और कंकरीट की बनी होती है. इस के अलावा खुद रिएक्टर ही 0.90 मीटर मोटी स्टील की और 1.80 मीटर मोटी कंक्रीट की दीवार से ढका होता है.

मार्डर चेसिस पर रोलैंड विमान बेधी प्रक्षपास्त्रः विमान एफ-16 इस की मार में नहीं आता

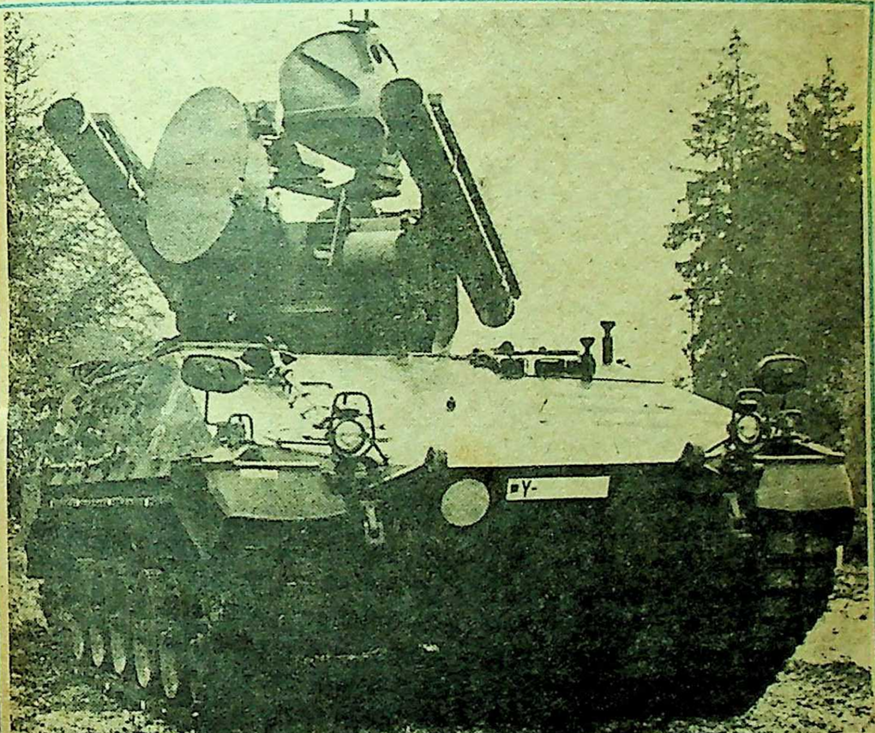

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

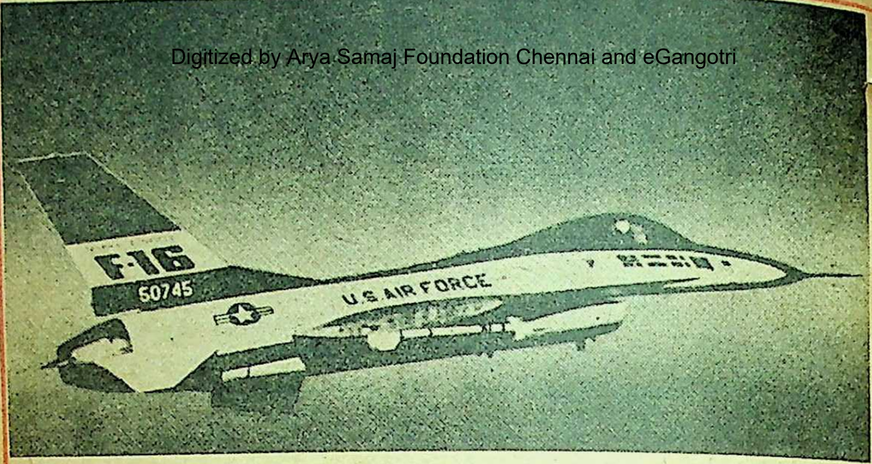

अमरीका के लिए प्रतिष्ठा के प्रतीक एफ-16 विमान का एक अन्य माडल

ये दीवारें 100 पौंड के बम से भी ध्वस्त नहीं हो सकतीं. हालांकि यह सच है कि एफ-16 विमान पाकिस्तान के किसी निकटवर्ती हवाई अड्डे से उड़ने पर एक झपाटे में बंबई में ट्रांबे पहुंच सकता है लेकिन हमारे पारमाणविक केंद्रों को विशेष नुकसान नहीं पहुंचा सकता, क्योंकि वह ऐसे काम के लिए बनाया ही नहीं गया है.

'टामकैट' और एफ- 111 ए की तुलना में एफ-16 स्थिर डैनों वाला विमान है. एक चालक वाले इस विमान में ऐसा राडार लगा है जो विमान के चारों और स्थित या गतिमान वस्तुओं को चालक की आंखों के ठीक सामने एक परदे पर बताता है. युद्ध के समय चालक इस परदे की मदद से इस प्रकार कार्य कर सकता है जैसे वह सब तरफ देख रहा हो. इस के अलावा इस में एक आई.एफ.एफ. (इंटेरोगेशन, फ्रेंड आर फ्रो) प्रणाली लगी हुई है, जो प्रक्षेपास्त्र छोड़ने वाले कंप्यूटर को लगातार सूचित करती रहती है कि कौन सा विमान मित्र है और कौन सा शत्रु. ज्ञातव्य है कि 1973 के अरब इजराइल युद्ध में ऐसी प्रणाली के अभाव में रूस से प्राप्त 'सैम' प्रक्षेपास्त्रों ने मिस्र के ही 40 विमान मार गिराए थे.

इस में शक नहीं कि एफ-16 एक बेहद खतरनाक विमान है. लेकिन भारत को इस से विशेष चिंता नहीं होनी चाहिए क्योंकि हमारे पास हाल में प्राप्त रूसी मिग-25 हैं. विशेषज्ञों की राय है कि विश्व में अगर एफ-16 का कोई मुकाबला कर सकता है तो वह है मिग-25. इस विमान में भी दो आफटर बर्निंग टर्बोजेट इंजन है. इन में से प्रत्येक इंजन की शक्ति 24,250 पौंड है

यह विमान अत्यंत उडानकुशल है. इस की रफ्तार तीन मैक है. कोई छःसात साल पहले एक रूसी चालक ने ऐसे ही विमान में भाग कर अमरीका में शरण मांगी थी. तब अमरीका को उस विमान की पड़ताल का मौका मिल गया था. एफ-16 के निर्माताओं का कहना है कि जगुआर तथा मिराज वगैरा तो इस के सम्मुख कहीं टिक ही नहीं सकते.

यह तय है कि अगर भारत के पास लगभग उतने ही मिग-25 हों जितने पाकिस्तान के पास एफ-16 तो खतरे की कोई बात नहीं. मिग-25 को तो खुद भूतपूर्व एयरमार्शल लतीफ उड़ा चुके हैं. पर इस बात पर विशेष ध्यान देना होगा कि ऐसे अधुनातन विमान के लिए न केवल चालक विशेष रूप से प्रशिक्षित हों बल्कि अड्डे पर उस की देखभाल (सर्विसिंग) भी उसी स्तर की हो जैसे रूस में होती है. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले छः महीनों की फिल्में

निर्देशिका — उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए; स. : समय काटिए/चलताऊ; म. : मनोरंजक/देख लें; अ. : अपव्यय/समय की बरबादी; नि. : निर्देशक; मु. पा. : मुख्य पात्र

सुन सजना : एक गायक व ग्रामीण बाला की सामान्य प्रेम कहानी जिस का दुखद अंत होता है. गीतसंगीत प्रधान इस फिल्म में कोई भी खास विशेषता नहीं है. **नि.**: चंदर बहल. **मु.पा**: मिथुन, रंजीता. **स.**

राजमहल : दुष्ट सेनापति राजा की हत्या कर, खुद राजा बन जाता है. उस के खोए हुए बच्चे बड़े हो कर उस से बदला लेते हैं. बेतुकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर बनी सामान्य फिल्म. **नि.**: परवेज, **मु.पा.** : विनोद खन्ना, नीतूसिंह, अमजद. **स.**

गंगाधाम: ईश्वरीय सत्ता को चमत्कारों व अंधविश्वासों से मनवाने की कोशिश करने वाली बेतुकी फिल्म जो हर दृष्टि से कमजोर है. **नि.**: थापा, **मु.पा** : नमिता चंद्र, अरुण गोविल, शक्ति. **अ.**

फर्ज और कानून : ईमानदार पुलिस अधिकारी द्वारा फर्ज की रक्षा के लिए खुद को गिरा देने की अस्वाभाविक कहानी. जिस में जितेंद्र की दोहरी भूमिका है. **नि.**: राघवेंद्र राज, **मु.पा**: जितेंद्र, हेमा, रति. **स.**

अपराधी कौन : हत्याओं और रहस्य रोमांच में उलझी हुई अनमेल विवाह की बेसिरपैर की कहानी. विधुर दीनदयाल जवान अरुणा से शादी कर लेता है और उस के परिणाम भुगतता है. **नि.** : मोहन भाकड़ी. **मु.पा.** : जावेद खान, रजनी शर्मा, अर्पणा चौधरी रजा मुराद, मदन पुरी. **अ.**

संबंध : प्रकाश के मन में बचपन में पिता द्वारा मां की हत्या के कारण कुछ ऐसी गांठें बन जाती हैं कि वह जब भी पत्नी के पास जाता है, उन्मत्त हो कर सुधबुध खो बैठता है. एक नए विषय को निर्माता ने केवल सैक्स प्रदर्शन के लिए इस्तेमाल किया है. **नि.** : शिबू मित्रा, **मु.पा.** : अशोककुमार, विनोद मेहरा, रति अग्निहोत्री, तेज सप्रू, अर्पणा चौधरी. **अ.**

डायल 100 : हीरों की चोरी की मारधाड़ से भरपूर सामान्य अपराध कथा. हीरे गिटार में छिपा दिए जाते हैं. बाद में गिटार की खोज की कहानी बन जाती है. **नि.**: रामनाथन, **मु.पा.**: अशोककुमार, बिंदिया, विनोद मेहरा, रणजीत. **अ.**

मेहंदी रंग लाएगी : एक युवती की कहानी जो अपने पति को छोड़ कर दूसरी स्त्री का घर बसाती है और बाद में एक अन्य लड़की के लिए अपने प्रेम का भी बलिदान कर देती है. तर्कहीन कहानी. **नि.**: दासारी नारायण राव. **मु.पा.**: अशोककुमार, जितेंद्र, रेखा, अनिताराज, अरुणा ईरानी. **अ.**

बगावत : राजसिंहासन का उत्तराधिकारी अमर एक कबीले में पलता है. दुष्ट विक्रम को सिंहासन से उतारने और राजकुमारी पद्मा से प्रेम की बेसिरपैर की कहानी. सभी कलाकार फीके. फिल्म हर दृष्टि से ऊबाऊ. **नि.**: रामानंद सागर. **मु.पा.**: धर्मेंद्र, हेमा, अमजद, रीना राय, सुजीतकुमार. **अ.**

खुद्दार : गरीब टैक्सी ड्राइवर छोटू उस्ताद परिश्रम से भाई को पढ़ाता है. मैरी से प्रेम करता है और खलनायक बंसी के षड्यंत्रों का मुकाबला करता है. फिल्म में सभी रस भरने की कोशिश की गई है. **नि.**: रवि टंडन, **मु.पा.**: अमिताभ, संजीवकुमार, परवीन बाबी, विनोद मेहरा, तनूजा, बिंदिया, महमूद. **स.**

मेहरबानी : धर्मेंद्र के परिवार द्वारा डूबे गए सितारों को ले कर बनी इस फिल्म में न तो कोई रोचकता है और न ही नवीनता. हर दृष्टि से फिल्म इतनी लचर है कि सिर्फ बोरियत पैदा करती है. **नि.**: अजीतसिंह, **मु.पा.**: महेंद्र संधु, सारिका, नरेंद्रनाथ. **अ.**

बेगुनाह कैदी : अपराधी के हृदय परिवर्तन की पुरानी जानीपहचानी विषय वस्तु के आधार पर बनी इस फिल्म में वही पुराने मसाले हैं. जिन्हें दर्शक कईकई बार ठुकरा चुके हैं. **नि.**: वी.के. सोवती, **मु.पा.**: राकेश रोशन, आरती, शक्ति कपूर. **अ.**

पांच कैदी : अपराधी लोगों को ले कर उन से कानून की रक्षा करवाने की पुरानी कहानी इस फिल्म में भी है. कुछ घटनाएं अच्छा असर डालती हैं. वैसे फिल्म सामान्य ही है. **नि.**: शिबू मित्रा, **मु.पा.**: गिरीश कारनाड, अमजद, जरीना. **स.**

घमंडी : दौलत के नशे में अमीर पत्नी का पति के घर से चला जाना और बाद में आंखें खुल जाने पर वापस आ जाना—इस फिल्म का विषय है. लेकिन बेहद घटिया ढंग से इसे फिल्माया गया है. **नि.**: रमेश बेदी, **मु.पा.**: मिथुन, सारिका, रंजीत. **अ.**

बाजार : मुसलिम समाज में प्रचलित कुरीतियों पर चोट करने वाली फिल्म. इस में दिखाया है कि समाज में एक स्त्री का बाजार में आम बिकाऊ माल से अधिक महत्त्व नहीं है. **नि.** : सागर सरहदी, **मु.पा.** : स्मिता पाटिल, सुप्रिया पाठक, सुलभा देशपांडे, नसीरुद्दीन शाह, फारुख शेख. **म.**

इनसान : किसी व्यक्ति को महान सिद्ध करने का नरेंद्र बेदी का बेतुका फार्मूला. रवि विधवा सोना से शादी कर लेता है. जब उसे पता चलता है कि सोना का पति शंकर मरा नहीं था, बल्कि जिंदा है तो वह उस के लिए बलिदान हो जाता है. **नि.** : नरेंद्र बेदी, **मु.पा.** : विनोद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

खन्ना, जितेंद्र, रीना, अमजद, [illegible] दीवान. अ.

मैं इंतकाम लूंगा : शीर्षक के अनुरूप प्रतिशोध की कहानी. मुक्केबाज कुमार गोवर्धनदास से अपने पिता की हत्या का बदला लेता है. **नि.** : रामा राव, **मु.पा.** : धर्मेंद्र, रीना राय, दारासिंह, श्रीराम लागू, निरूपा, अमरीश पुरी, शारदा. **अ.**

हमकदम : एक दकियानूसी परिवार की कहानी, जिस में नारी द्वारा नौकरी करना पसंद नहीं किया जाता. घिसापिटा पुराना विषय ले कर बनाई गई फिल्म. **नि.** : अनिल गांगुली, **मु.पा.** : राखी, परीक्षित साहनी, विश्वजीत, हंगल, मदनपुरी. **स.**

ईंट का जवाब पत्थर : प्रसिद्ध लेखक अलैक्जैंडर ड्यूमा के उपन्यास का भारतीयकरण कर के बनाई गई एक घटिया फिल्म. कुछ लोगों के षड्यंत्र का शिकार हो कर माधोसिंह जेल जाता है. जेल से भाग कर वह एकएक कर के सब से बदला लेता है. **नि.** : पाछी, **मु.पा.**: नीता मेहता, सुरेंद्रपाल, प्रेमनाथ, अमजद, ओम प्रकाश, **म.**

गजब : आत्मा जैसी अविश्वसनीय बातों को ले कर गढ़ी गई कहानी, जिस में मानसिक रूप से विकलांग एक व्यक्ति की आत्मा अपने पिता की जायदाद हथियाने वालों से अपने जुड़वा भाई के जरिए बदला लेती है. अविश्वसनीय घटनाओं से भरपूर एक बेतुकी फिल्म. **नि.**: सी.पी. दीक्षित, **मु.पा.** : धर्मेंद्र, रेखा, मदनपुरी, रंजीत. **अ.**

सितारा : गांव की गरीब लडकी की नामी हीरोइन बनने की कहानी. चोटी पर पहुंच जाने के बाद वह सच्चा प्यार नहीं पाती और वापस अपनी दुनिया में लौट जाती है. कुछ दिलचस्प प्रसंग होने के बाद भी यह एक सतही **नि.** : मेराज, **मु.पा.** : मिथुन, जरीना, कन्हैयालाल. **स.**

आधारशिला : क्षेत्र चाहे कोई भी क्यों न हो, हर युवा को सफलता पाने के लिए संघर्ष की कई बाधाएं पार करनी होती हैं. 'आधारशिला' में इसी विषय को उठाया गया है. कमजोर व प्रतीकात्मक प्रस्तुतीकरण की वजह से फिल्म कोई असर नहीं छोड़ पाती. **नि.** : अशोक आहूजा, **मु.पा.** : नसीरुद्दीन शाह, अनिता. **अ.**

शौकीन : एक कामेडी फिल्म जिस में तीन बूढ़े मौज करने के लिए हमेशा लड़कियों की तलाश में रहते हैं. लेकिन बाद में उन्हें अहसास होता है कि उन की उम्र काफी आगे निकल चुकी है. **नि.** : वासु चटर्जी, **मु.पा.** : मिथुन, रति, उत्पल दत्त, अवतारकृष्ण हंगल, अशोककुमार. **म.**

बदले की आग : भाईबहनों का अपने परिवार से बिछुड़ना, बदला लेना और डाकुओं वाले प्रसंगों से भरपूर इस फिल्म में कदमकदम पर बेतुकी हिंसा है, कहानी कहीं भी नहीं है. **नि.** : राजकुमार कोहली, **मु.पा.** : धर्मेंद्र, सुनील दत्त, जितेंद्र, रीना, स्मिता. **अ.**

अंगूर : विलियम शेक्सपीयर के नाटक 'कामेडी आफ एरर्ज' पर आधारित एक बेहतरीन हास्य फिल्म जिस में दो जुड़वां जोड़ों की हरकतें गुदगुदा जाती हैं. काफी समय बाद बनी एक अच्छी फिल्म, जिसे पूरे परिवार के साथ देखा जा सकता है. **नि.**: गुलजार, **मु.पा.**: संजीव, मौसमी, दीप्ति, देवेन वर्मा. **म.**

दासी : अंधविश्वासों का शिकार हो नायिका को अंधे नायक से विवाह करना पड़ जाता है. फिल्म की घटनाएं बेतुके प्रेम त्रिकोण की वजह से असहज हो जाती हैं, गीतसंगीत की दृष्टि से भी कमजोर फिल्म. **नि.**: राज खोसला, **मु.पा.**: संजीव, मौसमी, रेखा, विक्रम. **अ.**

हीरों का चोर : आम स्टंट फिल्मों के जानेपहचाने ढर्रे पर बनी फिल्म जिस में फार्मूले तो तमाम हैं लेकिन कहानी कोई नहीं. अभिनय व तकनीकी हिसाब से फिल्म सामान्य है. **नि.**: स.क. कपूर, **मु.पा.**: मिथुन, बिंदिया, अशोक. **अ.**

दिल का साथी दिल : कमला हासन की हिंदी में डब की गई चौथी फिल्म. 'बाबी' और 'जूली' की कहानियों के जोड़ से बनी कहानी. दोषपूर्ण डबिंग के कारण बेकार. **नि.**: शंकरन नायर, **मु.पा.**: जरीना वहाब, कमल हासन. **अ.**

तीसरी आंख : तीन भाइयों की कहानी. एक भाई बचपन में बिछुड़ जाता है और अंत में लाकेट की निशानी से मिलता है. आम फार्मूला फिल्म. **नि.**: सुबोध मुखर्जी, **मु.पा.**: धर्मेंद्र, शत्रुघ्न सिन्हा, जीनत, नीतूसिंह, सारिका, राकेश रोशन, अमजद. **स.**

दो उस्ताद : 'दो चोर' और 'दो ठग' आदि की शैली पर बनी आम फार्मूला फिल्म. बेजान और ऊबाऊ फिल्म. **नि.**: एस.डी. नारंग, **मु.पा.**: शत्रुघ्न सिन्हा, रीना, डैनी, विक्रम, जगदीप, नाजनीन. **अ.**

अशांती : चोटी के कलाकारों को ले कर बनाई गई अपराध फिल्म. फिल्म में तीन नायक और तीन ही नायिकाएं हैं. सभी मिल कर राजा भीष्म बहादुरसिंह और उस के गिरोह को समाप्त करते हैं. घटनाओं में गति. **नि.**: उमेश मेहरा, **मु.पा.**: राजेश खन्ना, जीनत, शबाना, परवीन बाबी, मिथुन, कंवलजीत, **स.**

नमकहलाल : एक सीधेसादे ग्रामीण की कहानी जो शहर में जा कर एक होटल मालिक की उस के मैनेजर के षड्यंत्रों से रक्षा करता है. अपराध फिल्म होते हुए भी हास्य का रोचक वातावरण छाया रहता है. **नि.**: प्रकाश मेहरा, **मु.पा.**: अमिताभ, शशि कपूर, वहीदा, परवीन बाबी, स्मिता पाटिल, ओम प्रकाश. **म.**

सवाल : अपराध जगत का बादशाह सेठ धनपतराय तस्करी और अवैध धंधों का बहुत बड़ा साम्राज्य स्थापित करता है, पर मकड़ी के जाले की तरह खुद ही उस में फंस कर रह जाता है. **नि.**: रमेश तलवाड़, **मु.पा.**: शशि कपूर, संजीवकुमार, वहीदा, रणधीर कपूर, पूनम ढिल्लों. **स.**

दो दिल दीवाने : मूल रूप से तमिल में बनी फिल्म का हिंदी संस्करण. एक सीधीसादी प्रेम कहानी में विदेश भ्रमण का गैर जरूरी प्रसंग जोड़ दिया गया है. 'एक दूजे के लिए' की कमल व रति की जोडी कहीं भी प्रभावित नहीं करती. डबिंग में काफी खराबियां हैं. **नि.**: कै. बालाचंदर, **मु.पा.**: कमल हासन, रति. **अ.** ●

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

10688

अनशन

कहानी • संतोषकुमार

"**मजदूर** एकता जिंदाबाद, जो हम से टकराएगा, चूरचूर हो जाएगा."

मुख्य अभियंता की गाड़ी आती देख कर मदन जोरजोर से नारे लगाने लगा.

मदन मजदूर संघर्ष वाहिनी का महामंत्री था. तीन साल पहले ही बिजलीघर में उस की नियुक्ति हुई थी. इस से पहले वह सार्वजनिक निर्माण विभाग में कार्य करता था. उस के अनुसार वहां उसे चार सौ रुपए महीना वेतन मिलता था, पर विद्युत विभाग में जब उस ने मजदूरों का शोषण होता देखा तो वहां की नौकरी छोड़ कर वह यहां चला आया. वह यह भी कहा करता था कि उस की नौकरी का असली उद्‌देश्य समाज सेवा है. इसी लिए वह यहां एक सौ अस्सी रुपए मासिक वेतन पाने वालों में भर्ती हो गया था. और यहां आ कर उस ने जो सब से पहला

मदन की मजदूरों के हितों के नाम पर बनी यूनियन और उस के अनशन से वास्तव में किसे लाभ पहुंचा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम किया, वह था– अपनी नई यूनियन बनाने का.

यहां पर वैसे पहले से ही मजदूरों की दो यूनियनें– 'बिजली कर्मचारी संघ' और 'बिजली मजदूर संघ' मौजूद थीं, पर मदन को उन दोनों में से किसी में भी कोई पद नहीं मिल सका था. इसलिए उस ने अपनी डेढ़ ईंट की मसजिद के रूप में 'मजदूर संघर्ष वाहिनी' अलग खड़ी कर ली थी.

जैसा प्रायः होता है कि हर जगह बजाए संतुष्टों के असंतुष्टों की संख्या अधिक होती है, यहां भी था और उस ने इसी का फायदा उठा कर तीनतीन असंतुष्ट दोनों यूनियनों से तोड़ लिए थे और अपनी यूनियन बना ली थी. मजे की बात यह थी कि उस की यूनियन में कुल सात सदस्य थे और सभी कार्यकारिणी में थे. उस की यूनियन रजिस्टर्ड भी नहीं हो पाई थी.

मदन ने अपनी यूनियन की कार्यकारिणी के चुनाव की सूचना मुख्य अभियंता को भेज दी थी. कार्यकारिणी के चुनाव का पत्र पाते ही मुख्य अभियंता ने मजदूर संघर्ष वाहिनी के महामंत्री को बुलवाया था. पर वह काम करना तो दूर कार्यालय में रहना भी अपना कर्तव्य नहीं समझता था और छुट्टा सांड की तरह इधरउधर घूमता रहता था. जब वह नहीं मिला तो हार कर मुख्य अभियंता ने नोटिस चिपकवा दिया– 'मजदूर संघर्ष वाहिनी के चुने गए प्रतिनिधियों को बधाई. एतद्वारा हर मास की सात तारीख को चार से पांच बजे तक का समय वार्ता हेतु निर्धारित किया जाता है.'

तीन दिन बाद सात तारीख थी. मदन अपने पांच सदस्यों को ले कर वार्ता के लिए पहुंच गया.

औपचारिक अभिवादन के बाद मुख्य अभियंता ने पूछा, "आप की क्याक्या समस्याएं हैं?"

मदन बोला, "मैं आप के पास कोई अधिक गंभीर समस्या ले कर नहीं आया हूं. हमारी समस्या यह है कि हमारी यूनियन के दो

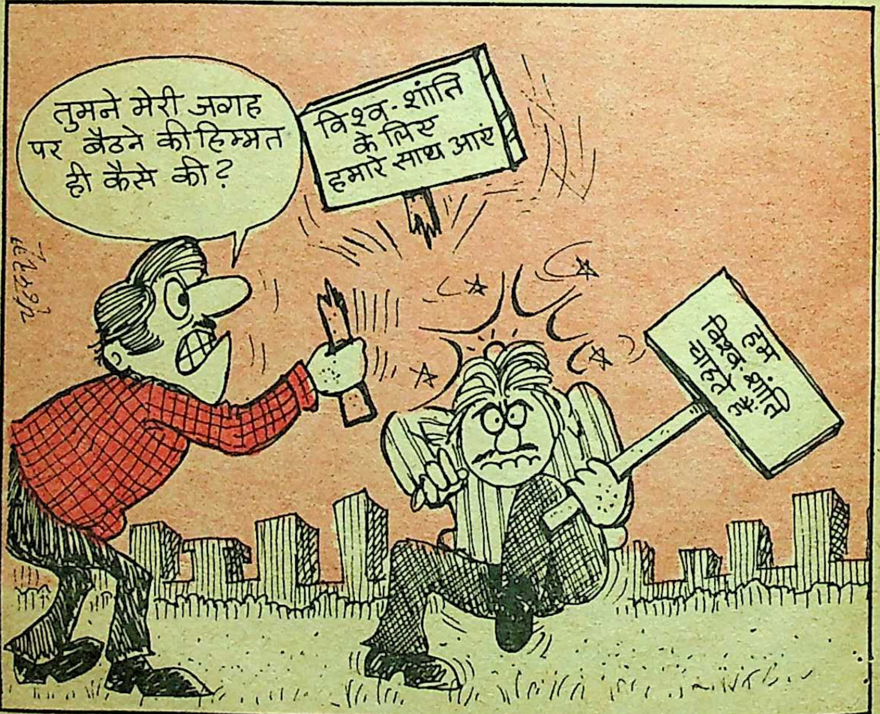

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

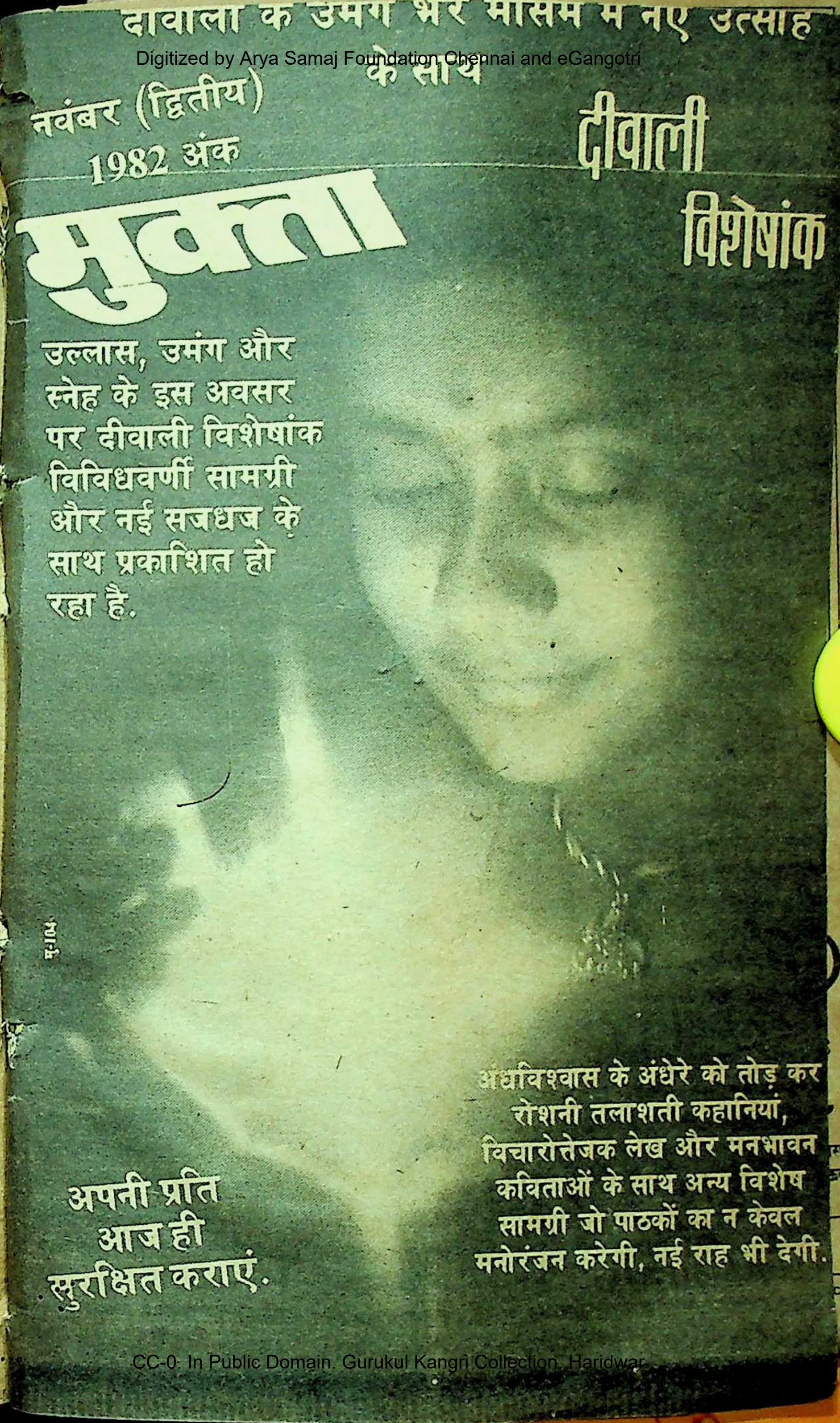

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सदस्यों से अधिकारी लोग घर का भी काम लेते हैं. उन्हें इस प्रकार घर के काम करने से मुक्ति दिला कर कहीं और भेजा जाए."

मुख्य अभियंता ने पूछा, "किस अधिकारी के यहां हैं ऐसे आदमी?"

मदन ने कहा, "कार्यकारी अभियंता के यहां पर जो दो माली हैं वे हमारी यूनियन के सदस्य हैं और उन्होंने मुझ से कहा है कि मैं उन्हें घर के कामों से छुड़ा कर कहीं अन्य जगह लगवाऊं."

लेकिन वास्तविकता यह थी कि मदन जिन दो व्यक्तियों की समस्या ले कर गया था उन्हें कार्यकारी अभियंता के घर का काम करने में कोई परेशानी नहीं थी, बल्कि वे कार्यकारी अभियंता के घर पर ही बने रहना चाहते थे. वे सोचते थे, 'अधिकारी हैं. कभी भला करेंगे.'

मुख्य अभियंता ने उसे आश्वासन दिया कि यदि वे दोनों व्यक्ति वहां काम करना नहीं चाहते तो उन्हें वहां से हटा दिया जाएगा.

शाम को ही मुख्य अभियंता ने उन दोनों को कार्यकारी अभियंता के यहां से हटा दिया. उन की जगह नए आदमी रख लिए गए.

अब मदन ने पैंतरा बदला. अब वह उन के हटाए जाने के विरोध में भूखहड़ताल पर बैठ गया. यद्यपि मुख्य अभियंता ने उन व्यक्तियों को दूसरी जगह लगा दिया था पर अब मदन कह रहा था कि 'गरीबों के साथ खिलवाड़ क्यों किया गया? उस के समर्थन में दोनों यूनियनों के नेताओं ने भी एक दिन की सांकेतिक हड़ताल कर दी, क्योंकि एक बार मदन ने अपने पांच सदस्यों के साथ उन यूनियनों के समर्थन में सांकेतिक हड़ताल की थी.

मुख्य अभियंता के आते ही 'तानाशाही नहीं चलेगी. मजदूर एकता जिंदाबाद' जैसे नारे लगने लगे. मुख्य अभियंता ने मदन को बुलवाया. उन दोनों यूनियनों के पदाधिकारी भी चाह रहे थे कि हड़ताल में साथ देने की तरह वार्ता में भी वे सब साथ चलें पर मदन ने उन्हें बाहर ही रोकते हुए कहा, "जब बात मुझ से संभलने लायक न रहेगी तो आप लोगों को बुला लूंगा." और वह अंदर चला गया.

वहां उस को कार्यालय से जारी एक आदेश की प्रति दी गई जिस में लिखा था, "श्री मदनलाल, जो अधिशासी अभियंता खंड-10 में बेलदार के पद पर कार्यरत थे, के अथक परिश्रम व कार्यनिष्ठा को ध्यान में रखते हुए उन्हें ट्यूबवेल आपरेटर के पद पर नियुक्त किया जाता है. अब उन का वेतन 360 रुपए प्रतिमाह..."

मदन जब बाहर निकला तो बहुत खुश था. वह कह रहा था, "मुख्य अभियंता से बात हो गई, यह महीना बीतते ही वे फिर अपनी पुरानी जगह वापस आ जाएंगे. घर का काम कोई आदमी नहीं करेगा."

यह सुन कर सभी लोग संतुष्ट हो कर चले गए. दरी उठ गई. मुख्य अभियंता ने चैन की सांस ली. मदन ने वाहवाही लूटी. अनशन खत्म हो गया. ●

दूर संचार सुविधाएं

एशियाड खेल ग्राम में 300 लाइनों वाला एक निजी टेलीफोन केंद्र होगा. इस के अलावा यहां 48 सीधी लाइनें और 12 सार्वजनिक टेलीफोन केंद्र होंगे.

स्वागत कक्ष के पहले तल पर एक डाकघर होगा, किंतु बड़ा डाकघर बाजार के बीच होगा. डाकघर में चार सार्वजनिक ट्रंक टेलीफोन केंद्र, चार अंतरराष्ट्रीय ट्रंक टेलीफोन केंद्र, दो स्थानीय तारघर और दो अंतरराष्ट्रीय तारघर होंगे. इन सुविधाओं के अतिरिक्त तीन राष्ट्रीय और तीन अंतरराष्ट्रीय टैलक्स कनेक्शन भी उपलब्ध होंगे. खेल ग्राम में ठहरने वाले विदेशी खिलाड़ियों और अन्य अधिकारियों को यह सभी सुविधाएं अदायगी के आधार पर दी जाएंगी.

भोजन कक्ष के पास भी एक [illegible] होगा.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Sonotone

where musical fantasy becomes music fantastic

on pre-recorded STEREO CASSETTE TAPES

फिल्मी गीत और धुनें

हवाईयन गिटार और शहनाई पर हिन्दी, सिंधी और अंग्रेजी डिस्को, पंजाबी गीत, शास्त्रीय, मजाकिया, बंगाली, राजस्थानी, हरयाणवी और भोजपुरी गीत

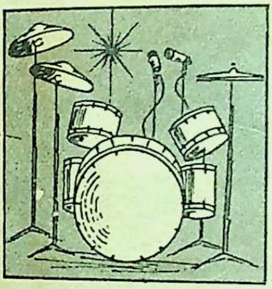

गजलें कव्वालियां

कव्वालियां:
जानी बाबू और प्रभा भारती

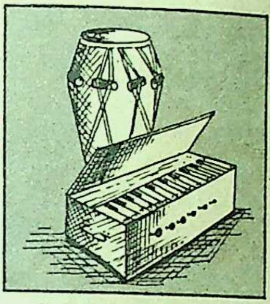

गजलें:
जसपिन्दर नरूला, सलाउद्दीन अहमद, गुलाम अब्बास और शब्बीर हुसैन (पाकिस्तान)

नर्सरी राईम्स व चुनमुन कविता

सभी मुख्य म्यूजिकल स्टोरों पर उपलब्ध

भजन, शब्द गुरबाणी

खुदरा मूल्य 25 रुपये कर अतिरिक्त

नक्कालों से सावधान खरीदते समय सोनोटोन का ट्रेड मार्क देखें।

उत्पादक:
सरस्वती इलेक्ट्रोनिक्स, नयी दिल्ली

व्यापारिक पूछताछ:
अल्फा रेडियो एण्ड टेलीविजन कंपनी
116, लाजपत राय मार्किट, दिल्ली - 110006

वितरक:
दिल्ली: इलेक्ट्रोनिक्स कोर्नर, 154 पालिका बाजार,
पंजाब: अल्फा इलेक्ट्रोनिक्स, बाजार माई सेवान, अमृतसर।
मध्य प्रदेश: सेल मोर, 9 शास्त्री मार्किट, इन्दौर संगम रेडियो हाउस, शारदा चौक, रायपुर

इसके अलावा लिस्ट अपने नज़दीकी म्यूजिकल स्टोर से लें

adcircle/D

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri